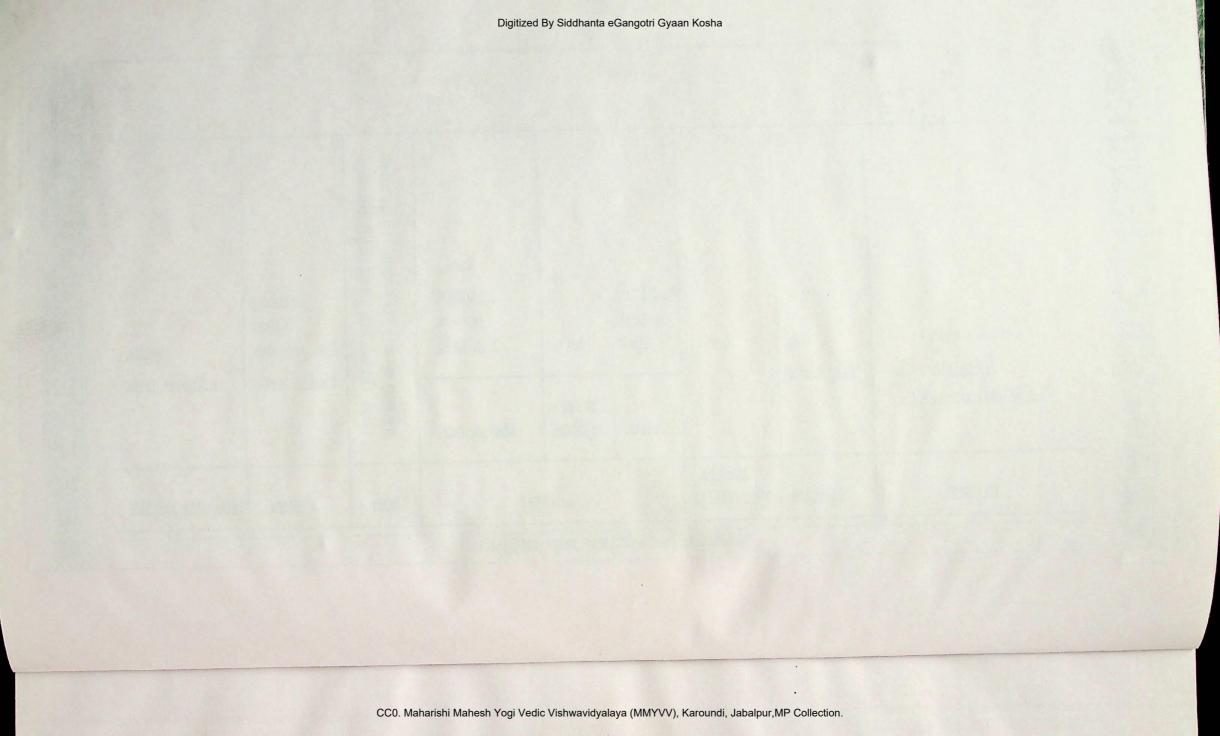


शान्ति का नाम	फल	मन्त्रः		सोम सर्वा धान		पंडितों की संख्या	सामग्री	उद्धरग
		भवा हूत्रम् गृ.प.	जप संख्या	न्नाहुति संख्या	समय	संख्या		ग्राश्वलायन गृह्य सूत्रम् गृह्य परिशिष्टम्
सोम सर्वाद्धत शान्ति	नक्षत्र उल्का पात एवं पशु व्याधि निवारगा	ॐ स्राप्यास्व समेतुते विश्वतः सोम वृष्यम्। भवा वाजस्य संनधे।। (सग्वेद १.११.१६)सागृद्य सूत्रम् गृ.प.	कुल जप	T00	श्घंटे प्रतिदिन (६ दिन)	4+7	म्राज्य एवं चरु	्रमृष्ट्य पारास्थः (मृग्वेद १.£१.१६)
				7				



प्रथम दिन प्रथम प्रहर **মু**शुद्धिः.... देहशुद्धिः.... ग्राचमन मन्त्र:.... पवित्रधारगम् शिखावंधनम् प्राशायाम् करन्यास-ग्रङ्गयास-हृदयादिन्यास..... क्षेत्र देवता पूजनम्..... गरोश प्रार्थना.....

नदी की स्रोर प्रस्थान,नदी पर पहुंचकर

देहशुद्धिः.... ग्राचमन मन्त्र:....

शिखावंधनम् :....

प्राशायाम्.....

महासकल्प + हेमाद्रि संकल्प......

गगपित प्रार्थना.....

पवित्रधारग्रम्

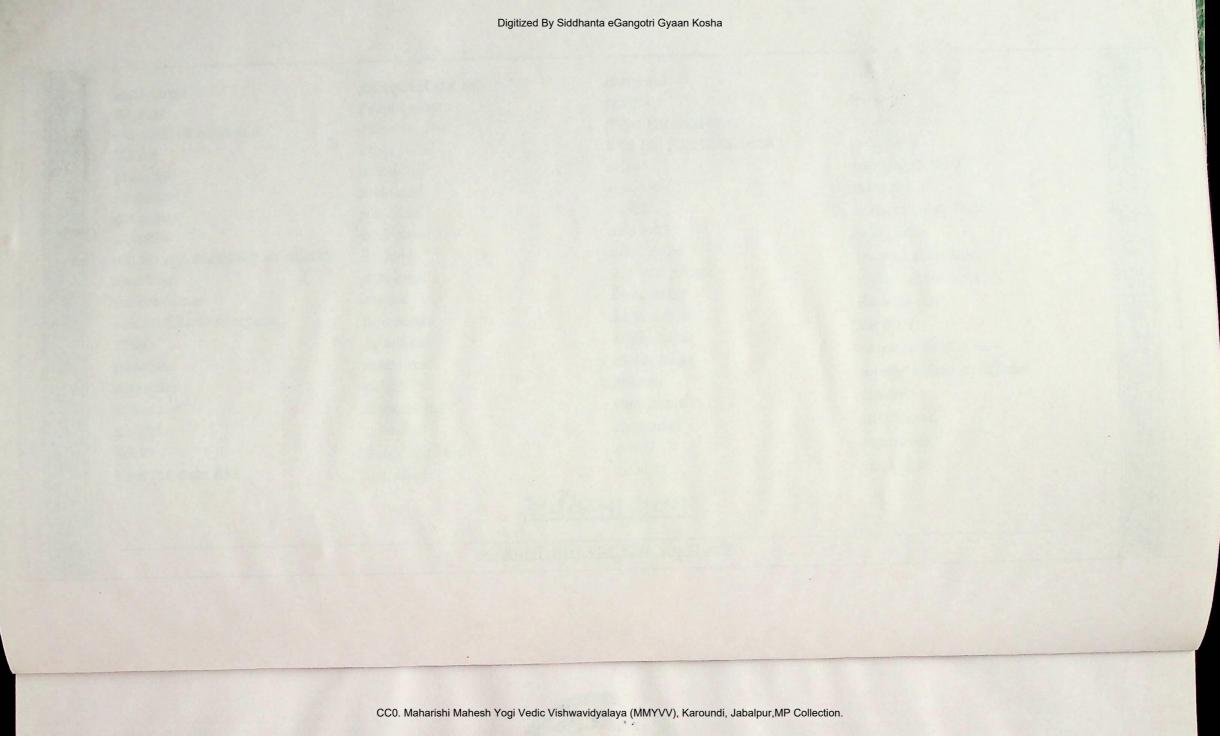
गुख प्रार्थना

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धृत शान्ति यज्ञ

ताथ पूजनम्
कलशेषु तीर्थपूजनम्
म्रासन शुदिः
भूतोच्चाटन मन्त्र:
देहशुद्धिः
ग्राचमन मन्त्रः
पवित्रधारगम्
शिखा बन्धनम
प्रागायाम्
गरोश प्रार्थना
गुरू प्रार्थना
कलश पूजनम्
शंख पूजनम्
त्र्रात्माराधनम्
मंडप पूजनम् अस्ति स्वर्धाः
गरापति पूजनम् 🗆 🕾 🕾 🖰
गरोश मंडल रचना
ग्रङ्गन्यास करन्यास
प्रथम दिन द्वितीय प्रहर

दह शुन्धः
ग्राचमन्
पवित्रधारराम्
शिखा बन्धनम्
प्रारायाम्
पञ्चगव्य प्राशनम्
पञ्चगव्य मगडल
पुरायाह प्रकरराम्
पुरायाह मराडल
नान्दी श्राद्ध प्रकरणम्
मातृका पूजनम्
नान्दी श्राद्धः
देवनान्दी
मृत्विग्वरराम्
मधुपर्क:
प्रथम दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न
द्वितीय दिन प्रथम प्रहर
देहशुद्धिः
ग्राचमन मन्त्रः

म्रासन शुद्धिः.... पवित्रधारराम् शिखा बन्धनम्..... प्राशायाम् करन्यास-ग्रङ्गयास-हृदयादिन्यास..... महासंकल्प हेमाद्रि संकल्प..... गुरू प्रार्थना.... भूतोच्चाटन मन्त्रः.... गरापित पंचोपचार पूजनं..... त्रिवाक्येशा पुरायाह वाचन मातृका पूजनम् म्रावाहित देवनान्दी पूजनम् ब्राह्मरा वन्दनम्..... सर्वतोभद्र मराङल में पञ्चगव्य प्रोक्षा..... जलकलेश पूजन शंख पूजन



म्रात्माराधनम् मगडप पूजनम् म्रङ्गन्यास करन्यास सर्वतोभद्र मगडल पूजनम् सर्वतोभद्रमगडल में देवता म्रावाहन ...

षोडशोपचार पूजनम् द्वितीय दिन द्वितीय प्रहर

प्रधान देवता सोम पूजनम्....देह शुद्धिः..... ग्राचमन मन्त्र.....

शिखा बन्धनम्
प्राण्णायाम्
ग्रासनशुद्धिः
संकल्पः
गुरू प्रार्थना
भूतोच्छाटन मन्त्र
गणपति प्रार्थना
जलकलश पृजनम्
ग्रात्माराधनम्
कलश स्थापना विधान
पञ्चभूत सृष्टिः
ग्रङ्गन्यास

कलश प्रसङ्गे ग्रात्माराधन

पवित्रधारराम्

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धृत शान्ति यज्ञ

कलशे प्रधान देवता सोम ग्रावाहन
कलशे पञ्चामृत क्षेप:
कलशे पञ्चगव्य क्षेपरा
कलशे ग्रौषध क्षेपग
कलशे कलाग्रावाहन
कलशे न्यास विधान
कलशे लिपिन्यासः
प्रतिमा शुद्धिः कलशे सोम ग्रावाहन
कलशे सोम ग्रावाहन
नवशक्ति पूजा षोडशोपचार पूजन्
षोडशोपचार पूजन्
पीठ पर नवग्रह पूजन
संकल्प:
पीठ पूजा
पीठ पर नवग्रहों की स्थापना
नवग्रह प्रतिमाम्रों का ऋग्न्युतारण
कर्म सादुराय देवता ग्रावाहन
क्रतु संरक्षक देवता ग्रावाहन
नवग्रह षोडशोपचार पूजनम्
नाम पूजां
कुशकरिडका प्रकररा
स्थंडिल निर्माग विधान्
स्थंडिल शुद्धिः अस्तर्भे स्थंडिल
त्र्राग्र प्रतिष्ठा विधानः

ऋग्रिमूर्ति ध्यान
भ्रन्वाधान
परिसमूहन एवं पर्युक्षरा विधान
ब्रह्मा वरग
उत्पवनम् शुद्धीकरणम्
स्रुवादि संस्कार
चरु शुद्धिः
ग्राघार होम:
व्याहृति होम:
नवग्रह होम:
कर्म साद्गुराय देवता होम:
क्रतु संरक्षक देवता होम:
प्रधान देवता सोम होम:
स्विष्टकृत होम:
ब्रह्म प्रायश्चित होम:
षोडशोपचार पूजन (कुराड में)
पूर्शाहुति:
द्वितीय दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न
तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन प्रथम प्रहर
देहशुद्धिः
त्राचमन मन्त्र
ग्रासन शुद्धिः

शिखा बन्धनम्
प्रागायाम:
करन्यास-म्रङ्गयास-हृदयादिन्यास
म्रासन शुद्धिः
महासंकल्प
गुरू प्रार्थना
भूतोच्चाटन मन्त्र
गरापति पंचोपचार पूजन
त्रिवाक्येरा पुरायाह वाचन
मातृका पूजनम्
म्रावाहित देवनान्दी पूजनम्
ब्राह्मरा वन्दन
सर्वतोभद्र मगडल में (षोडशोपचार पूजन)
प्रधान देवता सोम (षोडशोपचार पूजन)
नवग्रह षोडशोपचार पूजनम्
तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन द्वितीय
प्रहर
देहशुद्धिः
ग्राचमन मन्त्र
पवित्रधारगम्
शिखा बन्धनम्
प्रासायाय्
शिखा बन्धनम् प्रासायाम् श्रासन शृद्धिः शिखा बन्धनम्

पवित्रधारगम्

	ऋग्वेद्गीक सोम	संब्राद्धते शासित यज्ञ	
महासंकल्प गुरु प्रार्थना हवन कुराड में स्थंडिल शुद्धिः ग्रिग्र प्रतिष्ठा ग्रिग्रमूर्ति ध्यान ग्रन्वाधान परिसमृहन एवं पर्यूक्षरा ब्रह्मा का ग्रावाहन (कुशकरिका) उत्पवनम् शुद्धिकरराम् स्रुवादि संस्कार चरु शुद्धिः	सम्पन्न षष्ठ दिन प्रथम प्रहर देह शुद्धिः ग्राचमन मन्त्र ग्रासन शुद्धिः पवित्रधारणम् शिखा बन्धनम् प्राणयाम् करन्यास-ग्रङ्गयास-हृदयादिन्यास हेमाद्रि संकल्प गुरु प्रार्थना भूतोच्चाटन मन्त्रः	देह शुद्धिः ग्रेन्याम् ग्रास्तयाम् ग्रासन शुद्धिः शिखा बन्धनम् हेमाद्रि संकल्प गुरु प्रार्थना हवन कुराड में स्थंडिल शुद्धिः ग्रिग्र प्रतिष्ठा ग्रिग्र प्रतिष्ठा ग्रिग्रमूर्ति ध्यान ग्रन्वाधान	प्रधान देवता सोम होम: स्वष्टकृत होम: ब्रह्म प्रायश्चित्त होम: बोडशोपचार पूजन (कुग्ड में) बिल प्रदान विधान कर्म साद्गुग्य देवता बिलदान नवग्रह बिलदान प्रधान देवता सोम बिलदान (सपिरवार) कूष्माग्ड बिलदान पूर्ण फल होम: पूर्णाहुति संकल्प
ग्रिग उपस्थानम् ग्राघार होमः नवग्रह होमः कर्म साद्गुरय देवता होमः कर्त संरक्षक देवता होमः प्रधान देवता सोम होमः स्वष्ट कृत होमः ब्रह्म प्रायश्चित्त होमः वोडशोपचार पूजनम् (कुराड में) पूर्णाहुतिः (संक्षेप में) नृतीय/चतुर्थ/पञ्चम दिन द्वितीय प्रहर	गरापित पंचोपचार पूजन* त्रिवाक्येश पुर्याह वाचन मातृका पूजन ग्रावाहित देवनान्दी पूजन ब्राह्मश वन्दन सर्वतोभद्र मर्गडल पूजन षोडशोपचार पूजन प्रधान देवता सोम पूजन नवग्रह षोडशोपचार पूजन नवग्रह षोडशोपचार पूजनम्	परिसमूहन एवं पर्यूक्षण ब्रह्मा का ग्रावाहन उत्पवनम् शुद्धीकरणम् स्रुवादि संस्कार चरु शुद्धिः ग्रिग्न उपस्थानम् ग्राघार होमः नवग्रह होमः कर्म साद्गुण्य देवता होमः कर्तु संरक्षक देवता होमः	वसोधीरा कुराड में शोडषोचपार पूजनम् कलश जल मार्जन विधान. प्रधान कलश दान. ग्रिग्न पूजन. ग्रिग्न विसर्जन. अह्माग्रर्पण. शोभायात्रा. घष्ठ दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न परिशिष्ट



याज्ञिकों के लिए भ्रनिवार्य कुछ विचार

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धुत शान्ति यज्ञ

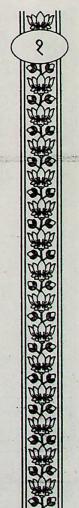
याज्ञिकों के लिए ग्रनिवार्य कुछ विचार

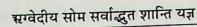
प्रयोग सीखने के उपयोग—सभी यज्ञ कार्यों का प्रयोजन, देवताओं को प्रसन्नकर उनसे विश्व, राष्ट्र, प्रदेश, परिवार या स्वयं के लिए अपेक्षित फल प्राप्ति है। सामान्य पूजनादियों से सीमित फलप्राप्ति होती है। परन्तु यज्ञ सामूहिक, गहन एकाग्र विधान होने के कारण इसका फल भी अनन्त है। एक सफल शस्त्रचिकित्सक जिस प्रकार लगन से कठिन शारीरिक कष्ट को दूर करता है, उसी प्रकार एक सफल प्रयोगकर्ता अपने शास्त्रोक्त अनुभव सिद्ध (ऋषियों से) प्रयोग द्वारा वांछित फल दिलाने में समर्थ होता है। इसके अतिरिक्त प्रयोग सीखने का एक और भी उपयोग है, वह है देवताओं के क्रोध से अपने को बचाना। शास्त्रातिक्रमण कर यज्ञ कराने वाला आचार्य ''यज्ञकर्ता विनश्यित'' विनाश को प्राप्त होता है। अतः प्रयोग की शुद्धता अत्यन्त अपेक्षित है। प्रयोग सीखने के लिए अर्हता—प्रयोग में जिन वैदिक मन्त्रों का उपयोग होता है उन सभी मन्त्रों का गुरुमुख से उच्चारण अनिवार्य है। प्रयोग कर्ता निष्पाप हो इसलिए त्रिकाल सन्ध्यावन्दन करने वाला हो। आडम्बर की और महत्व न देकर शास्त्राधारित सामग्रियों के प्रयोग में निष्ठा रखने वाला हो अधिक समय तक बैठने एवं समय–समय पर स्नानादि कर्म करने की क्षमता हो। प्रयोग कर्ता निरन्तर त्रिकालसन्ध्यादि से शुद्ध हो एवं जिस देवता सम्बन्धी यज्ञ करते है, उस देवता विषयक मन्त्र, जप आदियों से उस देवता के निकट हो एवं शक्तिमान भी हो।

प्रयोगकर्ता की दिनचर्यां—दिनचर्या का ग्रत्यधिक महत्व है। दिनचर्या शुद्ध होने से प्रयोगकर्ता निष्पाप एवं शक्तिसंपन्न होता है। सुबह उठते ही प्रात: स्मरण स्वपरम्परानुसार करना चाहिये।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती। करमूले स्थिता गौरी प्रभाते करदर्शनम्।। समुद्रवसने देवि पवर्तस्तन मगडले। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।। (गौराणिक,संग्रह स्मृति)

प्रात: स्मरण के बाद शौच, दन्त धावनादि से निवृत्त होकर स्नान के लिए चलना चाहिये। शौच के समय यज्ञोपवीत दक्षिण कर्ण में लपेटना चाहिये,





याज्ञिकों के लिए म्रनिवार्य कुछ विचार

कारण दक्षिण कर्ण में गङ्गादि सभी तीर्थ वास करते हैं। उसके संसर्ग से यज्ञोपवीत पवित्र रहता है।

स्नान विधि—वारुगोनैव विप्रस्तु स्नातस्सर्वत्र शस्यते। स्रशिरस्कं भवेत् स्नानं स्नानाशक्तौ विधीयते॥ (म्राश्चलायन स्मृति)

नदी जल में ब्राह्मशों को स्नान करना श्रेष्ठ है। यदि शरीर स्नान में ग्रारोग्य न रहे तो कराड तक के भाग का स्नान करना चाहिये।

स्नानं तु द्विविधं प्रोक्तं गौरां मुख्य प्रभेदतः। तयोस्तु वारूरां मुख्यं तत् पुनः षड्विधं स्मृतम्॥ (स्मृतिमुक्तावली शंखः)

स्नान के दो भेद हैं, एक गौरा ग्रौर दूसरा मुख्य। इसमें नदी स्नान मुख्य है। उसके छ: भेद है।

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं क्रियाङ्गं मलकर्षगाम्। क्रियास्त्रानं तथा षष्ठं षोढाः स्त्रानं प्रकीर्तितम्॥ (स्मृतिमुक्तावली शंखः)

१. नित्य स्नान — प्रतिदिन करने वाला स्नान।

४. क्रियाङ्ग स्नानं — विशेष कार्य के ग्रङ्गभूत दुबारा स्नान।

२. नैमित्तिक — विशेष पूजन ग्रादि से पूर्व करने वाला स्नान। ५. मलकर्षराम् — शरीर ग्रशुद्धि निवाररा के लिए।

३. काम्यं — इच्छापूर्ति के लिए तीर्थ स्नान।

६. क्रिया स्नानं — ग्रवभृथ स्नान ग्रादि।

शीतमुष्शोदकात् पुरायं स्रपारक्यं परोदकात्। भूमिष्ठमुधृतात् पुरायं ततः प्रस्त्रवर्शोदकम्॥ (निर्णय सिन्धौ मार्कराडेयः)

गरम पानी से ठराडा पानी श्रेष्ठ है। दूसरे के कुन्नों न्नादि के जल से ऋपने घर का जल श्रेष्ठ है। कुऐं से खींचे गये पानी से भूमि पर स्थित जल में स्नान श्रेष्ठ है।

ततोऽपि सारसं पुरायं ततः पुरायं नदी जलम्। तीर्थतोयं ततः पुरायं महानद्यम्बु पावनम्॥ (निर्णय सिन्धौ मार्कराडेयः)

उससे सरोवर का जल पुरायकर है, उससे नंदी जल पुराय है, उससे तीर्थ जल (पुष्करादि) पवित्र है, उससे भी श्रेष्ठ महानदियों का जल है। (जो नदियाँ समुद्रो में जाती हैं वे महानदियाँ हैं। उदाहररा—गङ्गा-कावेरी ग्रादि।) सिर डुबोकर किया स्नान श्रेष्ठ है, ग्रनिवार्य में कराठ तक का स्नान कर सकते



याज्ञिकों के लिए भ्रनिवार्य कुछ विचार

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

हैं। स्नान के समय ग्रघमर्षरा मन्त्रों का पाठ कर सकते हैं।

वस्त्र धारगा विधि: - याज्ञिकों के लिए, प्रयोग कर्त्ताम्रों के लिए वस्त्र के नियम भी हैं।

वस्त्र विधि:—स्वयं धौतेन कर्तव्याः क्रियाधर्म्याः विपश्चिता। न तु नेजक धौतेन नाहतेन न कुत्रचित्।। (स्मृतिमुक्तावल्यां पुलस्त्यः)

ऋपने धुले वस्त्र क्रियाओं में श्रेष्ठ माना गया है। धोबी द्वारा धुला वस्त्र एवं नाहत वस्त्र का प्रयोग नहीं करना चाहिये। (नाहत वस्त्र का विवरण ऋगो है)

क्षौमं वासः प्रशंसन्ति तर्परो सदृशं तथा। काषाय धौतवस्त्रं च नोल्बरां तत्र कर्हिचित्।। (स्मृति संग्रह)

पूजन एवं तर्परा कार्यों में रेशम के मडी वस्त्र, एवं ग्रॉचल युक्त गेरुए रंग के धुले वस्त्र, नीले वस्त्र श्रेष्ठ है, ग्रॉंखों को चुंधियाने वाले रंग के वस्त्र निषिद्ध हैं।

त्राहतं वस्त्रम्—ईषाद् धौतं नवं श्वेतं सदृशं यन्न धारितम्। त्राहतं तद् विजानीयात् सर्व कर्मसुपावनम्।। (याजुष प्रयोगरत्ने कपिर्दि)

एक बार धुला हुम्रा नया सफेद वस्त्र, म्राँचल वाला, जो कभी न पहना हो ऐसे वस्त्र म्राहत वस्त्र कहलाता है सभी कर्मों में यह वस्त्र श्रेष्ठ हैं।

म्रलाभे धौतवस्त्रस्य शाराक्षौमाविकानि च। (स्मृति मुक्तावत्यां वस्त्र धाररा प्रकररा)

धुले वस्त्र के प्राप्ति न होने पर बोरे के धागों से बना वस्त्र, रेशम का वस्त्र ग्रथवा ऊनी वस्त्र पहन सकते हैं।

होम देवार्चनाद्यासु क्रियासु पठने तथा। नैक वस्त्रः प्रवर्तेत द्विजो नाचमने जपे॥ (स्मृति मुक्तावत्यां वस्त्र धारण प्रकरण)

होम, देवतापूजन, यज्ञादि, ऋध्ययन में, ऋाचमन करते समय एवं जप करते समय पिराडत को दो वस्त्र धारण करना चाहिये एक ऋधोवस्त्र एक उत्तरीय, शीतप्रदेश में उत्तरीय, के ऊपर ऊनी वस्त्र ऋोढ सकते हैं।

ग्राचमन विधि:—ग्राचमन किसी भी क्रिया से पूर्व ग्रात्म शुद्धि के लिए किया जाता है। १. श्रौताचमन, २. स्मार्ताचमन, ३. पौराशिकाचमन। स्मार्ताचमन

याज्ञिकों के लिए भ्रनिवार्य कुछ विचार

एवं पौराशिकाचमन ऋधिक प्रचलित है।

'विप्रस्य दक्षिरो पाराौ मूलेङ्गुष्ठस्य नित्यदा। स्याद् ब्रह्मतीर्थ मध्ये च त्राग्नेय मघनाशनम्॥ (प्रश्वलायन स्मृति)

ब्राह्मणों के दाहिने हाथ के अङ्गुष्ठ के नीचे मणि बन्ध के ऊपर सर्वदा ब्रह्मतीर्थ रहता है। दाहिने हाथ के बीच में पापों को नाश करने वाला आग्नेय तीर्थ

मध्ये चाङ्गुष्ठ तर्जन्योः पैत्रं तीर्थं द्विजस्य तु। स्रार्षं किनिष्ठिकामूले दैवमग्राङ्गुलीषु वै॥ (स्थलायन समृति) है। (म्रग्निका) दाहिने हाथ के अझुठे एवं तर्जनी के बीच में पितृ तीर्थ है। पितरों को जल यहाँ से देते हैं। किनिष्ठिका के नीचे ऋषि तीर्थ है। ऋषियों को गुरुओं को जल

इसी से दिया जाता है। सभी अङ्गुलियों के अग्र भाग से देवताओं को जल देते हैं। वहाँ देव तीर्थ है।

प्रिपिबेत् ब्रह्मतीर्थेन जलेनाचमनं चरन्। पीत्वान्येन जलं पाप्मा तीर्थेनेति मितर्मम।। (म्रथलायन स्मृति)

ग्राचमन करने वाले परिडत को ब्रह्मतीर्थ से ही ग्राचमन करना चाहिये, दूसरे तीर्थ से ग्राचमन करने पर परिडत पापभाजन होता है। कुछ लोग ग्राचमन करते समय अग्नि तीर्थ का जल पीते हैं। यह सर्वथा उचित नहीं है। ऋचमन का जल हृदय तक पहुँचे इतना होना चाहिये। ऋचमन में स्वाहा से अन्त होने वाले मन्त्रों से जल पीया जाता है। नमः शब्द से मन्त होने वाले मन्त्रों से जल छोड़ा जाता है।

ग्रासनम् — ग्रास्यते यस्मिन् इति ग्रासनम्।

सन्ध्यादि नित्य कर्मों के लिये, पूजन, यज्ञादि कर्मों के लिए प्रयोगकर्ता के बैठने का ग्रासन का भी शास्त्रोक्त महत्व है।

श्रेष्ठ ग्रासन—चैलाजिन कुशोत्तरम्।



याज्ञिकों के लिए म्रनिवार्य कुछ विचार

भग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

पहले कुशासन, उसके ऊपर कृष्णाजिन (काले हिरण का चर्म), उसके ऊपर वस्त्र। ग्रगर ये ग्रासन उपलब्ध न हो तो— कौशेयं कंबलं वापि ग्रजिनं पट्टमेव च। दारुजं तालपत्रं च ग्रासनं षड्विधं स्मृतम्॥ (ब्रह्मकर्मसमुञ्जय)

१. कुश से बना दर्भासन, २. कम्बल, ३. हिरण का चर्म, ४. रेशम का वस्त्र,

५. लकड़ी का ग्रासन, ६. ताडपत्र का ग्रासन इनमें किसी का भी उपयोग कर सकते हैं।

म्रासनारूढ पादस्तु प्रौढपादस्स उच्यते। प्रौढपादैः कृतं कर्म सर्वं तत् निष्फलं भवेत्।। (वीरिमित्रोदयपरिभाषा)

त्रासन के ऊपर किसी भी स्थिति में चरण स्पर्श नहीं होना चाहिये। चरण स्पर्श होने पर संपूर्ण कर्म निष्फल हो जायेगा। बैठने पर चरण ग्रासन से बाहर होना चाहिये। पांव रखने के लिए ग्रलग से चौकी रख सकते हैं। पूर्णाहुति ग्रादि के समय एवं सन्ध्या में खड़े रहते समय भी ग्रासन पर पैर नहीं रखना चाहिये। पूजन के समय, सन्ध्या के समय एवं यज्ञों में इसका विशेष रूप से पालन करना चाहिये।

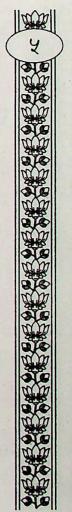
प्रागायाम—यह शरीर एवं मन की शुद्धि के लिए हैं।

सव्याहृतिं सप्रगावां सावित्रीं शिरसा सह। त्रिःपठेदायत प्रागाः प्रागायामस्स उच्चते॥ (म्रश्वलायन स्मृति-४-६५)

इसके दो भेद ग्रौर तीन ग्रङ्ग है।

- **१. समन्त्रक प्रागायामः**—यह केवल सन्ध्यावन्दन करने वाले द्विजों के लिए है। इसमें सप्तव्याहृति, प्रगाव, गायत्री एवं शिरस् मिलाकर प्रागायाम करते हैं। (त्रागे गगोश पूजन में इसका मन्त्र है।)
- २. ग्रमन्त्रक प्रांगायामः ग्रौर सभी के लिए मन्त्र रहित यह प्रांगायाम है।

इसके पूरक, कुम्मक, एवं रेचक ग्रङ्ग है। ग्रशौच में समन्त्रक प्राणायाम परिडत के लिए निषिद्ध है। प्राणायाम मन्त्रों की ग्रावृत्ति एक ही स्थिति में होनी



चाहिये। रेचक एवं पूरक में कठिन होने के कारण कुम्भक में (जब श्वास रुका रहता है) ग्रावृत्ति करना उचित है। सम्भव हो तो शेष ग्रवस्थाग्रों में भी कर सकते हैं। एक मन्त्र को दो ग्रवस्थाग्रों की सन्धि में नहीं जपना चाहिये।

सस्या वन्दनः — सन्ध्याहीनोऽशुचिनित्यं भ्रनर्हः सर्वकर्मसु। (भ्रश्वलायन स्मृति-४-१४५) त्रिकाल सन्ध्या न करने वाला ऋशुचि है। सभी कार्यों के लिए ऋनई है। ऐसे व्यक्ति द्वारा किये गये ऋथमेधादि यज्ञ भी निरर्थक होते हैं। स्व स्वशाखानुसार सन्ध्यावन्दन करना चाहिये। उसमें कुछ ज्ञातव्य विषय—

कृताञ्जलिर्जपेद् देवीं सावित्रीं वाग्यतः स्थितः। (अश्वलायन स्मृति ४-१४५)

स्ताने दाने जपे होमे विवाहे भोजने जुधः। (यश्वलायन स्मृति ४-०६)

विरामूत्रोत्सर्जनेऽर्चाया मौनी स्यात् दन्तधावने॥ (यानुष प्रयोग रत्नाकर-प्रयोग प्रारावल्लमे)

मौन भाव से अञ्जली बाँधकर सावित्री का स्मरण करना चाहिये, स्नान, दान, जप, होम, भोजन, शौच, पूजा एवं दन्तधावन में मौन रहना चाहिये।

निषराणो यो जपेत् प्रातः प्रलपन् प्रह्ववानिप। तत्काले नान्य मन्त्रांश्च तस्य निष्फलतामियात्।। (अश्वलायन स्मृति ४-१००) प्रातः जो परिडत बैठकर, परस्पर बात करते हुए, भुककर, बीच-बीच में दूसरे मन्त्र जपते हुए जो गायत्री जप करते है उनका सम्पूर्ण कर्म निरर्थक हो जाता है।

त्रापन्नश्चाशृचिः काले तिष्ठन्नपि जपेद् दश। नक्षत्रास्तमये प्रातः सावित्रीं मनसा सकृत्।। (अश्वलायन स्मृति ४-१०१)

जब कोई ग्रापत्ति हो तब भी खड़े रहकर दस गायत्री करना चाहिये। नक्षत्र ग्रस्त हो गये हो ऐसी स्थिति में भी कम से कम एक बार सावित्री को

ग्रापद्ग्रस्त द्वारा स्मरण ग्रवश्य करना चाहिये। न प्रावृतः शयानश्च नोष्गीषी न च पादुकी। शूद्राद्यैः प्रेक्षितश्चेक्षन् नान्तरिक्षं जपेन् मनुम्। (प्रश्वलायन स्मृति ४-१०३)

गायत्री जाप करते समय न तो मुँह ढकना चाहये, न हि लेटे हुए जप करना चाहिये, न पगडी बाँधकर जप करना चाहिये, शूद्रादियों को देखते हुए जप



याज्ञिकों के लिए ग्रनिवार्य कुछ विचार

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ

नहीं करना चाहिये।

उत्तमा तारकोपेता मध्यमाऽव्यक्त तारका। ग्रथमा सूर्यसहिता प्रातः सन्ध्या त्रिधा मता।। (ब्रह्मकर्म समुञ्जय-सन्ध्या प्रकरण) नक्षत्र युक्त समय प्रातः उत्तम है, नक्षत्र लुप्त होने पर मध्यम एवं सूर्य उदित होने पर की गयी संध्या ऋधम है।

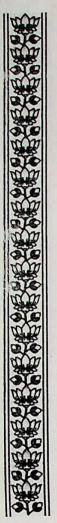
उत्तमा सूर्यसहिता मध्यमाऽव्यक्ततारका। ग्रंधमा तारकोपेता सायं सन्ध्या त्रिधा मता॥ (ब्रह्मकर्म समुञ्जय-सन्ध्या प्रकरण) सूर्य के रहते की गयी सायं सन्ध्या उत्तम है, नक्षत्र प्रकट होने से पूर्व की गयी सन्ध्या मध्यम है। नक्षत्रों के रहने पर की गयी सन्ध्या ग्रधम है। सन्ध्या में जप विधान एवं जप संख्या—

जपेद् द्विजः सदा मौनी पवित्रःस्यात्तु जापकः। ऋजुर्नैश्चल्यवान् तिष्ठन् जपेत् प्रातः कृताञ्जलिः॥ (ऋश्वलायन स्मृति ४-६६) जप करते समय हमेशा मौन रहना चाहिये। पवित्र रहना चाहिये, सीधे रहकर निश्चल स्थिति में स्थिर रहकर, हाथ जोड़कर खड़े होकर प्रात: काल में जप करना चाहिये।

सहस्रं वा तदर्धं वा शक्त्यात्वष्टोत्तरं शतम्। एकपादेन वा तिष्ठन् एकाङ्गृष्ठेन वा जपन्॥ (म्रश्वलायन स्मृति ४-६७) एक हजार जप, पाँच सौ जप, शक्ति कम रहने पर १०८ जप खड़े रहकर म्रथवा एक पैर पर खड़े रहकर या मङ्गठे के माधार पर खड़े होकर जप करना चाहिये। भस्मादि धारराम्-

माध्व सम्प्रदाय वाले मस्तक में सिर के दाहिने ग्रोर एवं कराठ में गोपि चन्दन से मुद्रा धाररा करना चाहिये। यजुर्वेदियों के लिये भी ''मानस्तोके'' ग्रादि मन्त्रों से ग्रिमिमन्त्रितकर धारण करें। स्मार्त सम्प्रदाय वाले को तिर्यक् त्रिपुराड्र धारण करना चाहिये। मानस्तोके ग्रादि मन्त्रों से भस्म को ग्रिमिमन्त्रित कर धारग करना चाहिये। श्रीवैष्णव सम्प्रदाय वाले तिरुमग (पवित्र मिट्टी) से उर्ध्व पुगड़ लगाना चाहिये।

T



भग्वेदीय सोम सर्वाद्भत शान्ति यज्ञ

याज्ञिकों के लिए भ्रनिवार्य कुछ विचार

ऋपवित्रेन यज्जप्तं ऋस्नातेन कृतं हुतम्। यच्य शून्य ललाटेन तदत्यल्प फलं भवेत्॥ (ऋशलायन स्मृति १०-१२५) अपवित्र व्यक्ति द्वारा किया गया जप, स्नान न किये व्यक्ति द्वारा किया होम, मस्तक में स्वसम्प्रदाय चिह्न से रहित व्यक्ति द्वारा किये गये सभी पूजन ऋत्यल्प फल देने वाले होते हैं।

सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्ध शिखेन च। विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत् कृतम्।। (अधलायन स्मृति) प्रयोगकर्ता को सर्वदा यज्ञोपवीत एवं शिखा धारण करना चाहिये। ऐसा न करने पर जो कर्म किया गया वह न करने के बराबर ऋर्थात् व्यर्थ है। यज्ञोपवीते द्वे धार्ये श्रौते स्मार्ते च कर्मिशा। तृतीयमुत्तरीयार्थे वस्त्राभावे चतुर्थकम्।। (स्मृतिमुक्तावल्यां पुलस्त्यः)

श्रौत-स्मार्त कर्म करने वाले ब्रह्मचारियों को एक यज्ञोपवीत भ्रौर गृहस्थों को दो यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये। उत्तरीय के न रहने पर उत्तरीय के बदले तीसरा यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये।

दैवकर्म उपवीति, पितृकर्म प्राचीनावीति। ऋषिकर्म मानुषे कर्म निवीतिः॥ (वचन)

दैवकर्म करते समय यज्ञोपवीत बायें मुजापर, पितृकर्म करने पर यज्ञोपवीत दाहिने मुजा पर एवं ऋषि मनुष्य कर्म में निवीति याने हार जैसे डालना चाहिये। जप माला—ऋङ्गुलीभिः प्रजयतस्त्वेकस्यैक गुरां भवेत्। ब्रह्मैरानन्यमाप्रोति रौद्रेश्च मिराभिर्द्विजः॥ (मधलायन स्मृति ४-६४) अङ्गुलियों से जप करने पर एक जप का एक फल मिलता है। ब्राह्मै एवं रुद्र मिणयों से जपने पर अनन्त फल मिलता है। ब्राह्मः कुशमयो रौद्रो रुद्राक्षः पापनाशनः। सावित्र्यास्तु जपस्ताभ्यां मेकस्त्वानन्त्यमृच्छति।। (म्रश्वलायन स्मृति ४-६४)

कुश से बनी माला ब्राह्म कहलाता है, रुद्राक्ष से बनी माला रौद्र कहलाता है। इन दो मालाओं से किया गया गायत्री जप अनन्त फल देता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur, MP Collection.

प्रथम दिन

पिवत्र नदी, जलाशय या तीर्थ से जल भरने जाने से पहले यज्ञ मगडप में—भू-शुद्धि, देह शुद्धि, ग्राचमन, पिवत्र धारण, प्राणायाम, क्षेत्र देवता प्रार्थना, गरापित प्रार्थना, नदी की ग्रोर प्रस्थान नदी पर पहुँचकर: देह शुद्धि, ग्राचमन, पिवत्र धारण, प्राणायाम, शिखाबन्धन, संकल्प, गुरु प्रार्थना, गरापित प्रार्थना, नदी में पूजन, षोडशोपचार पूजन (श्रीसूक्त विधान से) ध्यान, ग्रावाहन, ग्रासन, पाद्य, ग्राचमन, स्त्रान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, ग्राभरण, गन्ध, ग्राक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, नीराजन, मन्त्र पुष्प, नमस्कार, प्रसन्नार्घ्य, प्रार्थना, सर्वोपचार पूजा, इसके पश्चात नदी से कलश में जल भरना है। उस कलश में वरुण का ग्रावाहन, उसके बाद शान्ति पाठ करते हुए मगडप प्रवेश।

भू-शृद्धि—ॐ स्योना पृंथिवि भवानृक्ष्रा निवेशंनी। यच्छां नः शर्मं सप्रर्थः।' (१४ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मगडल) इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारग्रो विनियोगः।

ॐ येभ्यों मातामधुंमृत् पिन्वंते पर्यः पीयूषं द्यौरिदंतिरिद्रिबर्हाः। उक्थशुंष्मान् वृषभ्रान्त्वप्रंस्ताँ ग्रांदित्याँ ग्रनुंमदास्वस्तये॥ (मक्वेद १०.६३.३) ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय् वृष्णें युज्ञैर्विधेम् नमंसा हविभिः।





बृहंस्पते सुप्रजा वीरवंन्तो वयं स्यांम् पतंयो रयीगाम्॥ (मक्वेद ४.४०.६) **स्राचमन मन्त्र**—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) ऋथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराग्रोभ्यो नमः। ऋग्नये नमः। वायवे नमः। प्राग्राय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। ग्रन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मरो नमः। विष्णावे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इसं प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये। पवित्र धारगाम्—पवित्रन्त इत्यनयोः म्राङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रगो, धारगो विनियोगः।

ॐ प्वित्रंन्ते वितंतं ब्रह्मरास्पते प्रभुगित्रांशि पर्येषि विश्वतंः। स्रतंप्ततनूर्न तदामो स्रंश्नुतेशृता स्इद्वहंन्तस्तत् समाशत ॥ (मावेद १. ५३.१) अ तपोष्यवित्रं वितंतं दिवस्पदे शोचंन्तो सस्य तन्तवो व्यस्थिरन्। स्रवंत्यस्य पवीतारं माशवों दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतंसा ॥ (मण्वेद र. =३.२)

उभूभुर्व: स्व: कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये ग्रासन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्रागायाम—प्रगावस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्रागायामे विनियोगः।

अभूः अभुवः अस्वः अमहः अजनः अतपः असत्यं। अतत्संवितुर्वरेग्यं भगों देवस्यं धीमहि। धियों यो ने: प्रचोदयात्। अ स्रापो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भवस्वरोम्। (भावेद ३.६२.१०)

करन्यासः अ ग्रङ्गुष्ठाभ्यां नमः। अ तर्जनीभ्यां नमः। अ मध्यमाभ्यां नमः। अ ग्रनामिकाभ्यां नमः। अ किनिष्ठिकाभ्यां नमः। अ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। **ग्रङ्गन्यास-हृदयादिन्यास** ङ हृदयाय नमः। ङ शिरसे स्वाहा। ङ शिखायै वषट्। ङ कवचाय हुम् । ङ नेत्रत्रयाय वौषट्। ङ ग्रस्त्राय फट्। अ भूर्भृवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

क्षेत्र देवता पूजनम्

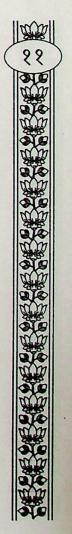
परिवार में या सामूहिक रूप में जो भी शुभकार्य किया जाता है, वह निर्विघ्नतया समाप्त हो उसके लिए क्षेत्र देवता पूजन सबसे पहले करना चाहिये। प्रत्येक क्षेत्र के प्रधान देवता ऋलग है। ऋतः उस क्षेत्र के जो देवता है उनका प्रथम पूजन ऋवश्यक है। उस क्षेत्र के ऋर्चक स्वतः पूजन करते हैं, ऋतः हमें केवल फल समर्पण कर प्रार्थना करनी चाहिये। पूर्ण फल में—दो नारियल, दो केले, पुष्प एवं दक्षिणा, मङ्गलद्रव्य। ऋर्पण मन्त्र—याः फलिनीरित्यस्य मन्त्रस्य ऋष्यंशो भिषक् ऋष्येथोऽनुष्टुप् फल समर्पणे विनियोगः।

ॐ याः फ्लिनी्र्या स्रंफ्ला स्रंपुष्पायाश्चं पुष्पिग्रीः। बृहस्पतिं प्रसूता स्तानों मुऋत्वं हंसः॥ (मण्वेद १०.६७.१४) इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेद् जन्मनि जन्मनि॥ (प्रयोग संग्रह) ॐ स्थान देवताभ्यो नमः। पूर्शफलं समर्पयामि।

तीर्थ गमन से पहले इसे संपन्न करना चाहिये। किसी भी स्थिति में इसका निराकरण नहीं करना चाहिये।

गरोश प्रार्थना—सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्राकः। लम्बोदरश्च विकटो विघराजो विनायकः॥ धूम्रकेतुर्गगाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेत् श्रृगुयादिप॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सङ्गामे संकटेचैव विघस्तस्य न जायते॥ शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्गां चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यातेत्सर्व विघ्रोपशान्तये॥ (याजुषपूर्वप्रयोगरप्राकर)

्ग्गानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदग्नृषि:। गगापतिर्देवता। जगती छन्दः। गगापति प्रार्थने विनियोगः।



अ गुगानान्त्वा गुगापंतिं हवामहे कृविं कंवीनामुंपुमश्रंवस्तमं। ज्येष्ठराजं ब्रह्मंगां ब्रह्मगस्पत् म्रानंः शृगवन्नृतिभिः सीदुसादंनम्॥ (म्रावेद २.२३.१)

(इन मन्त्रों से गरापित प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।) नदी की ग्रोर प्रस्थान, नदी पर पहुँचकर-देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात भृषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषि:। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारगो विनियोगः।

ॐ येभ्यों माताम्धुंमृत् पिन्वंते पर्यः पीयूषं द्यौरदिंतिरद्रिंबर्हाः। उक्थशुंष्मान् वृषभुरान्त्स्वप्रंस्ताँ स्राद्धित्याँ सनुंमदास्वस्तयं ॥ (ऋषेद १०.६३.३) ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे युज्ञैर्विधेम् नमंसा ह्विभिः। बृहंस्पते सुप्रजा वीरवंन्तो वयं स्यांम् पतंयो रयीगाम्॥ (मार्वेद ४.४०.६)

(इन मन्त्रों से देहशुद्ध कर ग्रागे ग्राचमन से गरोश पूजन प्रारम्भ करें।)

स्राचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

ऋथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुरारोभ्यो नमः। ऋगूये नमः। ऋगूये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्यो नमः। दिग्यो नमः। इन्द्राय नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मरो नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारराम्—पवित्रन्त इत्यनयोः त्राङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्ररो, धाररो विनियोगः।



ॐ प्वित्रंन्ते वितंतं ब्रह्मशस्पते प्रभुगित्रांशि पर्येषि विश्वतः । त्रतंप्ततनूर्न तदामो त्रंश्नुतेशृता सइद्वहंन्तस्तत् समांशत ॥ (भवेद ६. ५३१) । ॐ तपोष्प्वित्रं वितंतं द्विस्पदे शोचंन्तो स्रस्य तन्तंवो व्यंस्थिरन् । स्रवंन्त्यस्य पवीतारं माशवो द्विस्पृष्ठमिधितिष्ठन्ति चेतंसा ॥ (भवेद ६. ५३.२)

ॐभूभुर्व: स्व: कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये ग्रासन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।) प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषि:, दैवी गायत्री छन्द:, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोग:।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्संवितुर्वरेरेख्यं भर्गों देवस्यं धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयांत्। ॐ म्रापो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। (ऋषेद ३.६२.१०)

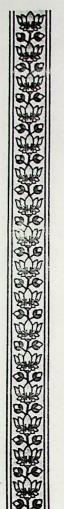
(रेखङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।) शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोगित भक्षगो। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुगडे ह्यपराजिते॥ (ब्रह्मकर्म समुश्रय) (इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महासंकल्प-हेमाद्रि संकल्प

उन्स्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारगस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षगस्य प्रगतपारिजातस्य ग्रशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायगस्य ग्रचिन्त्यापरिमितिशक्त्या ध्रियमागानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् ग्रनेक कोटि ब्रह्मागडानाम् एकतमे ग्रव्यक्त- महादहंकार - पृथिव्यसेजो वाय्वाकाशाद्याव

भ्रग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ



रशैरावृते ग्रस्मिन् महति ब्रह्माग्डखग्डे ग्राधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म शंखाद्यष्टमहानागैध्रियमारो ऐरावत-पुराडरीक-वामन-कुमुद-ग्रञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् ग्रतल-वितल-सुतल-तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकनामुपरिभागे भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लोक - जनोलोक - तपोलोक - सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लोके चक्रवाल शैल - महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफर्शि राजशेषस्य सहस्रफगामिशामगडल मिराडते दिग्दिन्तशुगडादगाडोद्दगिडतेग्रमरावत्यशोकवती भोगवती - सिद्धवती- गान्धर्ववती - काशी- काञ्ची - ग्रवन्ती ग्रलकावती यशोवतीतिपुर्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलियते लवरोक्षु- सुरा सिर्प - दि धक्षीरोदकार्रावपरिवृते जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च - शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गमस्ति-नाग-सौम्य-गन्धर्व-चारराभारतेतिनव-खरांडमरिडते सुवर्णागिरिकार्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्जाशत् कोटि योजनविस्तीर्णभूमराडले त्रयोध्या मधुरा-माया-काशी-काञ्जी-ग्रवन्तिकापुरी द्वारा वतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिरो नवसहस्रयोजन विस्तीर्गो मलयाचल-सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्गाप्रस्थ-चगडप्रस्थ-चान्द्र-सूक्तावान्तक-रमगक महारमगक-पाञ्चजन्य-सिंहल लंङ्केति-नवखराडमरिडते गंगा-भागीरथी-गोदावरी- क्षिप्रा-यमुना- सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा-कावेरी-पयोष्णी-कृष्णवेग्गी-भीमरथी-तुंगभद्रा-ताम्रपर्गी- विशालाक्षी- चर्मरावती-वेत्रवती- कौशिकी-गरडकी- विश्वामित्रीसरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुरायनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखराडे जम्बूद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ आर्यावर्तान्तरगते ब्रह्मावर्तेकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्गीक्षेत्रे,ज्ञानयुगप्रवर्तकानां महर्षि महेशयोगिवर्यागां परमाराध्यगुरुदेवै : ग्रनन्तश्रीविभूषितै: ज्योतिष्पीठाधीश्वरै: जगद्गुरु श्री मच्छङ्कराचार्य ब्रह्मानन्दसरस्वतीमहाभागै: सम्पादितशतमखकोटि होम महायज्ञपावितायां भूमौ...... सकलजगत्स्रष्टः परार्धद्वय जीविनो ब्रह्मणः द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे ग्रहस्तृतीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये ग्रष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे

प्रथम दिन

सम्बदाय साम सवाद्धत शान्त यज्ञ
कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्गां युगानां मध्ये वर्तमाने ऋष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमपादे प्रभवादि षष्टि सम्वत्सरागां मध्ये
तिथौ वासरे नक्षत्रे योगे कररो राशि स्थिते श्रीसूर्य
राशि स्थिते श्रीचन्द्रे राशि स्थिते श्रीकुजे राशि स्थिते श्रीबुधे
राशि स्थिते श्रीदेवगरौ राशि स्थिते श्रीशुक्रे राशि स्थिते श्रीशनौ राशि
स्थिते श्रीराहौ राशि स्थिते श्रीकेतौएवं गुरा विशेषरा विशिष्टायां पुरायायाम् महापुराय शुभ तिथौ
गुरू प्रोर्थना —
नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
त्र्याचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्य: ॥ (श्रृङ्गेरी मठीय ग्राचार्य प्रार्थनम्)
श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सदुगुरु पादुकाभ्यो नमो नम:। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरी रुष्टे
गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।
भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ त्रपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।। (ब्रह्मकर्म समुञ्चय-ग्रासन विधि प्रकरण) ॐ त्रपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामिवरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे।। (ब्रह्मकर्म समुञ्चय-ग्रासन विधि प्रकरण) ॐ तीक्ष्यादंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं त्रनुज्ञां दातुमर्हसि।। (ब्रह्मकर्म समुञ्चय)

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)
गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदग्चिः। गणपतिर्देवता। जगती छन्दः। गणपित प्रार्थने विनियोगः।
ॐ गृणानान्त्वा गृणपितं हवामहे कविं किवीनामुंप्सश्चंवस्तमं।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मंगां ब्रह्मगस्यत् स्नानंः शृगवत्रृतिभिः सीदसादनम्॥ (भग्वेद २.२३.१)

(इन मन्त्रों से गरापित प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

तदनन्तरं तीर्थपूजनम् — तत्वायामीत्यस्य शुनः शेपः ऋषिः। वरुगो देवता त्रिष्टुप् छन्दः कावेरी तीर्थे वरुगावाहने विनियोगः।

ॐ तत् त्वां यामि ब्रह्मंगा वन्दंमान्स् तदा शांस्तेयजंमानो हिविभिः। ऋहंळमानो वरुगोह बोध्युर्रुशंस् मा न् यायुः प्र मोंषीः॥ (भग्वेद १०.२४)

म्रिस्मन् कावेरी तीर्थे ॐ भूः वरुगमावाहयामि। ॐ भुवः वरुगमावाहयामि।

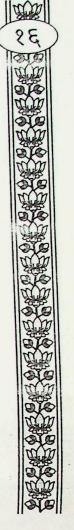
ॐ स्वः वरुरामावाहयामि। ॐ भूर्भुवस्वः वरुरामावाह यामि। श्री वरुरा मूर्तये नमः।

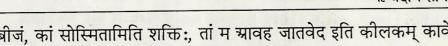
ध्यायामि-''इमं में गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुंद्रि स्तोमं सचता परुषाया।

म्रुस्सिक्न्या मंरुद्वृधे वितस्त्याऽऽजींकीये शृगुह्या सुषोमंया॥ (मण्वेद १०.७५.५)

ध्यानं समर्पयामि। श्री वरुगा मूर्तये नमः।

हिरगयवर्गामिति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य, भ्रानन्द कर्दम चिक्लीतेन्दिरासुता ऋषयः। श्रीरग्निश्च देवते। सूक्तेस्मिन् भ्राद्याः तिस्रोनुष्टुभः, कां सोस्मीति चतुर्थी बृहती, चन्द्रां प्रभासां, भ्रादित्यवर्गो इति पञ्चमी षष्ट्यौ त्रिष्टुभौ, ततोष्टावनुष्टुभः, तां म भ्रावह जातवेद इति पञ्चदशी प्रस्तार पंक्तिश्छन्दस्का, हिरगयवर्गामिति





बीजं, कां सोस्मितामिति शक्तिः, तां म ग्रावह जातवेद इति कीलकम् कावेरी तीर्थपूजने विनियोगः।

ॐ हिरंगयवर्गाा हिरंगीं सुर्वर्गारज्तस्रंजाम्। चुन्द्रां हिरगमंयीं लुक्ष्मीं जातंवेदो मु स्ना वंह।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्ठम्)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नम: ग्रावाहयामि।

ॐ तां मु स्रा वंह जातवेदो लुक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंगयं विन्देयं गामश्चं पुरुषानुहम्।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्ठम्)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः। ग्रासनं कल्पयामि।

. ॐ ऋश्वपूर्वां रंथम्थ्यां हस्तिनांदप्रमोदिंनीम्। श्रियंं देवीमुपं हृये श्रीर्मादेवी जुंषताम्।। (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्ठम्)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः। पादारविन्दयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ॐ काुं सोस्मितां हिरंगयप्राकारांमार्द्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तुर्पयंन्तीम्। पुद्मेस्थितां पुद्मवंर्गाां तामिहोपं ह्वये श्रियंम्॥

(पञ्चम मगडलस्य परिशिष्ठम्)

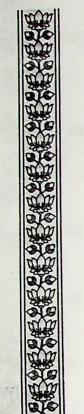
श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः। हस्तयोः ग्रर्ध्यमर्ध्यं समर्पयामि।

ॐ चुन्द्रां प्रभासां युशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनींमीं शरंगामहंप्रपंद्येऽलुक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृंगो।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्ठम्)

श्री वरुगश्रित कावेर्ये नमः, मुखे ग्राचमनीयं समर्पयामि।

ॐ ग्रादित्यवंर्गे तपुसोऽधिंजातो वनुस्पतिस्तवं वृक्षोऽथिबुल्वः।





तस्य फलांनि तपसा नुंदन्तु मायान्तंरा याश्चं बाह्या स्रंलुक्ष्मीः। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

श्रीवरुगाश्रित कावेर्ये नमः, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

ॐ उपैतु मां देवस्रवः कीर्तिश्च मिशांना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं दुदातुं मे॥ (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुगाश्रित कावर्ये नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

ॐ क्षुत्पिपासामंलां ज्येष्ठामंल्क्ष्मीं नांशयाम्यंहम्। ऋभूंतिमसंमृद्धिं च सर्वान्निर्गीद मे गृहांत्।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः, उपवीतं समर्पयामि। वस्त्रोपवीतान्ते ग्राचमनीयं समर्पयामि। हिरगय रूप इत्यस्य शौनको गृत्समद ऋषिः। ग्रपात्रपात् देवता।

त्रिष्टुप् छन्द:। म्राभरगार्पगो विनियोग:।

ॐ हिरंगयरुपः स हिरंगय संदृग्पां नपात् सेदु हिरंगयवर्गाः। हिर्गययात् परि योनेनिषद्यां हिरगयदादंदुत्यन्नंमस्मै॥

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः, ग्राभरगं समर्पयामि।

ॐ गन्धंद्वारां दुंराध्रषां नित्यपुंष्टां करीषिशींम्। ईश्वरीं सर्वं भूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्॥ (पश्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः, गन्धं समर्पयामि।

हारिद्रवेव इति मन्त्रस्य ग्रात्रेय श्यावाश्व ऋषिः। ग्रिश्वनौ देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। हरिद्रार्परो विनियोगः।

ॐ हारि द्ववेवं पततो वनेदुप सोमं सुतं महिषेवावं गच्छथः। स्जोषंसा उषसा सूर्येगा च त्रिर्वृतियीत मश्चिना॥

श्री वरुगाश्रित कावैर्ये नमः, हरिद्राचूर्णं समर्पयामि। या गुङ्गूरिति मन्त्रस्य शौनको गृत्समद ऋषिः। सिनीवाली देवता। ऋनुष्टुप्छन्दः। कुंकुमार्पग्रे विनियोगः।

ॐ या गुङ्गूर्या सिनीवाली या राका या सरंस्वती। इन्द्रांशीमंह ऊतये वरुशानीं स्वस्तयें॥ (भावेद २३२ =)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः, कुंकुमचूर्णं समर्पयामि। ऋर्चतेति मन्त्रस्य प्रियमेधा ऋषिः। इन्द्रो देवता। ऋनुष्टुप् छन्दः। ऋक्षतार्परो विनियोगः।

ॐ म्रर्चेत् प्रार्चेत् प्रियंमेधासो म्रर्चत। म्रर्चेन्तु पुत्रका उत पुरन्न धृष्यवंर्चत।। (भ्रावेद =.६६.=)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः, ग्रक्षतान् समर्पयामि।

ॐ मर्नसः कामुमाकूंतिं वाचः सत्यमंशीमहि। पृश्नुनां रुपंमन्नस्य मिय श्री श्रंयतां यशः।। (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्ठम्)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः, पुष्पागि समर्पयामि। गङ्गायै नमः। यमुनायै नमः। गोदावर्ये नमः। सरस्वत्यै नमः नर्मदायै नमः। सिन्धवे नमः। कावेर्ये नमः।

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः। नामपूजां समर्पयामि।

ॐ कर्दमेन प्रंजा भूता मृिय संम्भव कर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्ठम्)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः, धूपमाध्रापयामि।

ॐ स्रापः सृजंन्तु स्त्रिग्धांनि चिक्लीत् वसं मे गृहे। निचंदेवीं मात्रं श्रियं वासयं मे कुले॥ (पञ्चम मर्गडलस्य परिशिष्ठम्) श्री वरुगाश्रित कावेरों नमः, दीपं दर्शयामि। धूप दीपानन्तरं स्राचमनीयं समर्पयामि। निवेदनार्थे, गाथिनो विश्वमित्र ऋषिः। सविता देवता। गायत्री छन्दः। निवेदने विनियोगः। चतुरस्र मराडल करके उसके ऊपर नैवेद्य रखें।

公里多里里里 六



ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्संवितुर्वरेरायं भर्गो देवस्यं धीमित। धियो योनंः प्रचोदयांत्॥ (मण्वेद ३.६२.१०) उप्सत्यंत्वर्तेन परिषिञ्चामि। श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः। कदलीफल नैवेद्यं निरीक्षस्व। सुरिभमुद्रां प्रदर्श्य। ग्रमृतोपस्तरग मसि। उपाणाय स्वाहा।

अग्रपानाय स्वाहा। अव्यानाय स्वाहा। अउदानाय स्वाहा। असमानाय स्वाहा। अदेवेभ्य: स्वाहा।

ॐ ऋार्द्रां पुष्करिंशीं पुष्टिं पिङ्गलीं पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिररामंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो मु ऋावंह।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्) श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः, कदलीफल नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। उत्तरापोशनार्थे जलं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। ग्राडूषार्थे जलं समर्पयामि । शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि । करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ।

पूगीफल समायुक्तं नागवलीदलैर्युतम्। चूर्यां कर्पूरसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

मङ्गल नीराजनम्—

ॐ ऋार्दां युः करिंगीं यृष्टिं सुवर्गां हेम्मालिनीम्। सूर्यां हिररामंयीं लुक्ष्मीं जातंवेदो मु ऋा वंह।। (पज्जम मगडलस्य परिशिष्टम्)

ॐ श्रिये जातः श्रिय मानिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति।

श्रियं वसांना चमृत्त्वमांयन् भवंन्ति स्त्या संमिथामितद्रौं॥ (भवंद ६.६४.४)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः, मङ्गल नीराजनम् समर्पयामि।

मन्त्रपुष्पम् — जातवेंदसे सुनवाम् सोमंमरातीय तो निदंहाति वेदः।

स नंः पर्षदितं दुर्गाशि विश्वां नावेव सिन्धुं दुरितात्य्यिः॥ (मावेद १.६६.१)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिगा—ॐ तां म् स्नावंह जातवेदो लृक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंगयं प्रभूतं गावों दास्योऽश्चांन् विन्देयं पुरुषान्हम्॥ (पञ्चम मर्गडलस्य परिशिष्ठम्)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नम:। प्रदक्षिगां समर्पयामि।

ॐ यः शुच्चि प्रयंतो भूत्वा जुहुयांदाज्य मन्वंहम्। सूक्तंपुंचदंशर्चं च श्रीकामः सतृतं जंपेत्॥ (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्ठम्)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः। नमस्कारान् समर्पयामि।

ॐ जुल बिम्बायं विदाहें, नील पुरुषायं धीमहि। तन्नंस्त्वम्बु प्रचोदयांत्॥ (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्ठम्)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः। इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना—ॐ याः प्रवतोनिवतं उद्वतं उदुन्वतीं रनुदकाश्च याः।

या ग्रुस्मभ्यं पर्यसा पिन्वंमानाः शिवा देवी रशिपदा भंवन्तु सर्वी नृद्यो ग्रशिमिदा भंवन्तु ॥ (म्रावेद ७.४०.४)

श्री वरुगाश्रित कावेर्ये नमः, प्रार्थनां समर्पयामि। पुनः पूजां करिष्ये। छत्रं धारयामि। चामरेगा बीजयामि। गीतं नाट्यं नटामि। ग्रान्दोलिकामारोहयामि। ग्रायश्चमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्तराजोपचार देवोपचार वेदोपचार पुजां समर्पयामि। ग्रायश्च श्री वरुगाश्रित कावेरी प्रीयताम्। लोपदोष प्रायश्चितार्थं नामत्रय मन्त्रजपमहं करिष्ये। अग्रन्युताय नमः। अग्रनन्ताय नमः। अगोविन्दाय नमः। त्रिवारं जिपत्वा। तद् विष्णोरिति मन्त्रस्य कारावो मेधातिथिः ग्रिषः। विष्णुर्देवता। गायत्री छन्दः। पूजान्ते विष्णुस्मरगो विनियोगः।

ॐ तद् विष्णों: प्रमं पुदं सदां पश्यन्ति सूरयं:। द्विवीव् चक्षुरातंतम्।



तद्विप्रांसोविपुन्यवों जागृवांसः समिन्धते। विष्णोर्यत् पंरमं पुदम्॥ (ऋषेद १.२२.२०-२१)

ॐ स्वस्ति। यहाँ पर तीर्थ पूजन संपन्न हुग्रा। समयाभाव में श्री सूक्त मन्त्रों के बिना भी कर सकते हैं। कावेरी के स्थान पर गङ्गादि नदियों का नाम उन-

उन प्रदेशों में जोड़ना चाहिये। कलशों में मरने के लिए जितनी तीर्थ जल की ग्रावश्यकता है, एवं पूजन के लिए जितना जल ग्रपेक्षित है, कलशों के ग्रावमन के लिए जितना जल ग्रपेक्षित है उतना जल कुम्मों में मरकर लाना चाहिये। तीर्थ जल पूजन के पश्चात् जल भरने की प्रक्रिया प्रारम्भ होती. है। कलशों को पहले स्वच्छ कर लेना चाहिये। पहले तीर्थ की स्तुति करनी चाहिये। उदाहरण कावेरी—

कवेरकन्यकेगस्त्ये जाये देवी सरिद्वरे। ब्रह्मकुराड समुद्धृते लोपामुद्रे नामोस्तु ते॥ सह्यशैल समुद्धृते रंगक्षेत्र निवासिनि। त्वामहं प्रार्थये देवि कावेरि प्ररामाम्यहम्॥ (स्मृति संग्रह)

कावेर राज की पुत्री, महर्षि ग्रगस्त जी की पत्नी लोपामुद्रा नाम वाली तुम लोककल्याण के लिए ब्रह्मकुगड से कावेरी नदी के रूप में परिवर्तित होकर रंगनाथ जी के क्षेत्र में बहती हो ऐसे तम्हें नमस्कार है। ग्रन्थ निदयों में जल भरते समय उनकी स्तुति करनी चाहिये। निम्नलिखित मन्त्रों से धीरे-धीरे शुद्ध जल भरना चाहिए। प्रसुव इति नवर्चस्य सूक्तस्य सिन्धुक्षित् प्रैयमेधो ग्रिषि:। नद्यो देवता:। जगती छन्द:। उदकपूरणे विनियोग:।

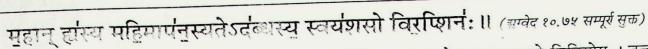
प्रसुवं स्नापो महिमानंमुत्तमं कारुवींचाति सदंने विवस्वंतः। प्रसप्तसंप्त त्रेधा हि चंक्रमुः प्र सृत्वंरीगामिति सिन्धु रोजंसा॥ प्रतेऽरदुद्वरुंगो यातंवे पृथः सिन्धो यद्वाजं स्रभ्यद्रं वस्त्वं। भूम्या स्रिधं प्रवतां यासि सानुंना यदंषामग्रं जगंतामिर्ज्यसिं॥



द्विव स्वनो यंतते भूम्योपर्यन्नतं शुष्मुमुदियर्ति भानुनां। म्र्यभ्रादिंव प्रस्तंनयन्ति वृष्ट्यः सिन्धुर्यदेतिं वृष्यो न रोरुंवत्।। म्युभित्वां सिन्धो शिशुमिन्न मातरों वाश्रा म्रंषिन्त पर्यसेव धेनवंः। राजेंव युध्वां नयसि त्विमत् सिचौ यदांसामग्रं प्रवतामिनंक्षसि॥ इमं में गङ्गें यमुने सरस्वति श्तुंद्रि स्तोमं सचता परुष्या। ऋसिक्या मंरुद्वृधे वितस्त्याऽऽजीकीये श्रुशाह्या सुषोमंया॥ सितासिते सरिते यत्रं सङ्गर्थे तत्नांप्लुतासो दिव्मुत्पंतन्ति। येवै तुन्वश्विसृजिन्त् धीरास्ते जनोंसो स्रमृत्त्वं भंजन्ते। तृष्टामंया प्रथमं यातंवे स्जूः सुसर्त्वी रसयां श्वेत्यात्या। त्वं सिन्धो कुभंया गोमृतीं कुर्मु मेहत्वा सुरथं याभिरीयंसे॥ ऋजीत्येनी रुशती महित्वा परिजयांसि भरते रजांसि। ऋदंब्धा सिन्ध्रंपसांम्पस्तमाऽश्चा न चित्रा वपुंषीव दर्शता॥ स्वश्चा सिन्धुः सुरथां सुवासां हिरराययीसुकृता वाजिनीवती। ऊर्गा वती युव्तिः सीलमांबत्युताधि वस्ते सुभगां मधुवधम्।। सुखं रथं युयजे सिन्ध्र्रिश्चनं तेन् वाजं सनिषद्सिम्नाजौ।



भग्वेदीय सोम सर्वाद्धुत शान्ति यज्ञ



इन दस मन्त्रों से जल भरकर कलशों का संक्षेप पूजन करना चाहिये। एषु कलशेषु वरुगावाहने विनियोग:। तत्वायामीत्यस्य शुन: शेप: ऋषि:। वरुगो देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। कलशेषु वरुगावाहने विनियोगः।

अ तत्वांयामि ब्रह्मंशा वन्दंमानुस् तदा शांस्ते यजंमानो हिविभिः। ऋहेंळमानो वरुगोह बोध्युरुंशं समान् घायुः प्र मोषीः ॥ (ऋगवेद १.२४.११)

ऐषु कलेशेषु। अभूः वरुगमावाहयामि। अभुवः वरुगमावाहयामि। अस्वः वरुगमावाहयामि। अभूर्भुवस्वः वरुगमावाहयामि। श्री वरुगमूर्तये नमः। अलं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। अहं ग्राकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। अयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। अरं ग्रग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। अवं ग्रवात्मने नैवेद्यं कल्पयामि । ॐपं. परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि ।

यह पञ्चोपचार पूजन जहाँ भी समय कम हो वहाँ कर सकते हैं। इसके पश्चात् पिरडत जी के द्वारा सिर पर कुम्भ धारण कर यज्ञशाला तक शान्ति सूक्तों का पाठ करते हुए यात्रा के रूप में चलना चाहिये। शान्तिसूक्त बह्मकर्म समुच्चय में है।

नदी से कलशों में जल शान्तिसूक्तों का पठन करते हुए पूजा स्थल में लाये। पूर्व दिशा के पवित्र जगह पर सभी कलशों को रखना चाहिये। गरापित मगडल एवं गुरु मगडल की रचना करनी चाहिये। जिसका विवरण तीसरे ऋध्याय में है। गुरुमगडल पर गुं गुरवे नमः कहकर पुष्प माला चढ़ायें। त्रशेश

मराडल पर गं गरापतये नमः कहकर पुष्पाक्षत चढायें।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽघ्रियुगं स्मरामि॥ ॐ देवीं वार्चमजनयन्त देवा स्तां विश्वरूपाः प्शवीं वदन्ति। सानोंमुन्द्रेषु मूर्जुं दुहांना धेनुर्वा गुस्मानुपुसुष्टुतैतुं॥

प्रथम दिन

(ग्रग्वेद ८.१००.११)

ॐ ध्रुवं ते राजा वर्रुगो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्चं राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (भग्वेद १०.१७३.५)

सुमुहूर्तोस्तु। सुप्रतिष्ठितमस्तु। (ऊपर के मन्त्रों से मुहूर्त में जो भी दोष हैं उनके निवारण की प्रार्थना है।)

म्रासन शृद्धि— अपृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः म्रादि कूर्मो देवता म्रासन शुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः

ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

(ब्रह्मकर्म समुच्चये-संकल्प प्रकरणे)

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ म्रपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।। (ब्रह्मकर्म समुञ्चय-म्रासन विधि प्रकरण)

ॐ ऋपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे।। (ब्रह्मकर्म समुञ्चय-म्रासन विधि प्रकरण)

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं त्रनुज्ञां दातुमर्हिस ॥ (ब्रह्मकर्म समुज्ञय)

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोगित भक्षगो। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुगडे ह्यपराजिते॥ (ब्रह्मकर्म समुञ्जय)

(इस पन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य



गन्ध निवारगो विनियोग:।

ॐ येभ्यों माताम्धुंमृत् पिन्वंते पर्यः पीयूषं द्यौरिदंतिरिद्रिबर्हाः। उक्थशुंष्मान् वृषभ्रान्त्स्वप्रंस्ताँ स्नांदित्याँ स्ननुंमदास्वस्तये॥ (भावेद १०,६३.३) ॐ ए्वापित्रे विश्वदेवाय् वृष्णे युज्ञैर्विधेम् नमंसा ह्विभिः। बृहंस्पते सुप्रजा वीरवंन्तो व्यं स्यांम् पत्यो रयीगाम्॥ (भावेद ४.५०.६)

(इन मन्त्रों से देहशुद्ध कर ग्रागे ग्राचमन से गरोश पूजन प्रारम्भ करें।)

स्राचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुरागेभ्यो नमः। अग्नये नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्रागाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तिरक्षाय नमः। अन्तिरक्षाय नमः। दिवे नमः। अह्मगो नमः। विष्णावे नमः। सदािशवाय

नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारराम्---पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्रामिमंत्ररो, धाररो विनियोगः।

ॐ प्वित्रंन्ते वितंतं ब्रह्मशस्पते प्रभुगित्रांशि पर्योषे विश्वतः। ग्रतंप्ततनूर्ने तदामो ग्रंश्नुतेशृता सइद्वहंन्तस्तत् समांशत॥ (भ्रावेद ६.८३.१) ॐ तपीष्प्वित्रं वितंतं दिवस्पदे शोचंन्तो ग्रस्य तन्तंवो व्यंस्थिरन्। ग्रवंन्त्यस्य पवीतारं माशवो दिवस्पृष्ठमिधितिष्ठन्ति चेतंसा॥ (भ्रावेद ६.८३.२) उन्भूमुर्व: स्व: कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये ग्रासन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।) प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषि:, दैवी गायत्री छन्द:, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोग:।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्संवितुर्वरेरायं भर्गों देवस्यं धीमिह। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ ऋापो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। (ऋग्वेद ३.६२.१०)

(रेखङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

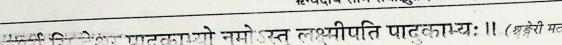
गगोश प्रार्थना—सुमुखश्चैकदन्तश्च किपलो गजकर्गाकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः॥ धूम्रकेतुर्गगाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेत् श्रृगुयादिप॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सङ्गामे संकटेचैव विघ्नस्तस्य न जायते॥ शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्गां चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यातेत्सर्व विघ्नोपशान्तये॥ (याजुषपूर्वप्रयोगरप्राकर)

गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गणपितर्देवता। जगती छन्दः। गणपित प्रार्थने विनियोगः। ॐ गृणानान्त्वा गृणपितिं हवामहे कृविं किवीनामुप्मश्रंवस्तमं। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् स्नानंः शृणवन्नृतिभिः सीदसादनम्।। (स्रावेद २.२३.१)

(इन मन्त्रों से गरापित प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।



यांचार्य सिद्धेशर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ (शृङ्गेरी मटीय ग्राचार्य प्रार्थनम्)

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाम्यो नमो नमः। कलश पूजनम् — कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों ग्रोर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ा चाहिया गायत्रा मन्त्र स तान बार कलरा छूकर जप करना चाहिया।
ॐ कलशस्य मुखे विष्णाः कराठे रूद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगर्गाः स्मृताः॥
ॐ कलशस्य मुखे विष्णाः कराठे रूद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगर्गाः स्मृताः॥
कुश्नौ तु सागराःसर्वे सप्तद्वीपा वसुन्थरा। ग्रत्र गायत्री सावित्री छान्तिः पृष्टिकरी तथा॥
चान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥
ग्राचान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥
ग्रहे च यमुने चेव गोदाविर सरस्वित। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सिन्निधंकुरु॥ (ब्रह्मकर्म ममुश्रय-देवपूजा प्रकरण)
ॐ दृमं में गङ्गे यमुने सरस्वित शुतुंद्विस्तोमं सचता परुष्ण्या।
ग्रह्मिक्न्या मरुद्वृधे वितस्त्याऽऽजीकीये श्रुगुद्धा सुषोमंया॥
मृत्वित्रे स्रिते यत्रं संगुथे तत्रांप्लुतासो दिव् मुत्पंतिन्त।
येवै तन्वं रेविसृंजिन्त् धीरास्ते जनासो अमृतृत्वं भंजन्ते॥ (भ्रवेद १०.७५.७)
ॐ या प्वतो निवर्त उद्दे उद्दन्वती रनदकाश्रयाः। ता ग्रम्मार्थं पर्यमा ॐ याः प्रवतो निवतं उद्वतं उदुन्वतीं रनुदकाश्चयाः। ता श्रूस्मभ्यं पर्यसा पिन्वंमानाः शिवा देवी रंशिपदा भंवन्तु सर्वी नृद्यो श्रशिमिदा भंवन्तु॥ (ऋग्वेद ७.४०.४)

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।) सितमकरिनषणां शुभ्रवर्गां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्यंकजाभीत्यभीष्टाम्। विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भिसतिसतदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि॥ (स्मृति संग्रह)

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।)

शङ्खपूजन—शंख को पहले धोकर, उसमें जल भरकर, शंख को गन्ध पुष्प ग्रक्षत लगाकर पीठ के ऊपर रखना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार शंख

छूकर जप करना चाहिये।

ॐ शङ्खं चन्द्रार्कदैवत्यं वारुगञ्चाधि दैवतम्। पृष्ठे प्रजापितं विद्यात् ग्रग्रे गङ्गा सरस्वती।। त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खेतिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्।। विलयं यान्ति पापानि हिमवत् भास्करोदये। दर्शनादेव शङ्खस्य किं पुनः स्पर्शने भवेत्।। पाञ्चजन्यं महात्मानं पापग्नं तु पवित्रकम्। शंखमध्यस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपिर।। ग्रङ्गलग्नं मनुष्यागां ब्रह्महत्यायुतं दहेत्। गर्भादेवादि नारीगां विशीर्यन्ते सहस्त्रधा।। तव नादेन पाताले पाञ्चजन्य नमोस्तुते।। ॐ पाञ्चजन्याय विद्यहे, पद्मगर्भाय धीमहि। तन्नः शङ्खः प्रचोदयात्॥

(ब्रह्मकर्म समञ्चय-देवपृहा प्रकररा)

ऊपवनायै नमः ऊपाञ्चजन्यायै नमः। ऊपर्जन्यायै नमः ऊम्रम्बुराजायै नमः। ऊकम्बु राजायै नमः। ऊपद्मबान्धवायै नमः। ऊधवलाय नमः। ऊनिस्स्वनाय नम:। अदिव्य भोगदाय नम:।

ॐ शङ्खमूले परब्रह्मा शङ्खाग्रे तु सरस्वती। यः स्नापयित गोविन्दं तस्य पुरायमनन्तकम्।। (स्मृतिमुक्तावल्यां शङ्खपूजा प्रकररा) (इतना कहकर शंख को नमस्कार करना चाहिये।) शंख के जल को कलश में डालना चाहिये। पुनः शंख में कुछ जल लेकर भगवान् के सिर पर तीन बार प्रोक्षरा करना चाहिये। यज्ञशाला या पूजास्थल का प्रोक्षरा करें। पूजा की सामग्रियों का सिञ्चन करें। पूजा में प्रयुक्त सभी वस्तुम्रों का प्रोक्षरा करें। शेष



जल नीचे छोड़ दे। शंख को धोकर पुन: पानी मरकर यथा स्थान रख देना चाहिये।

ग्रात्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं किर्णांकमध्यनाळम्।

ग्राह्मप्रमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णां पुरुषं पुरागाम्।

हृदयकमल मध्ये सूर्य बिम्बासनस्थं सकल मुवन बीजं सृष्टिसंहारहेतुम्।

निरितशयसुखात्मज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम्।।

ग्राराधयामि मिशा सिन्नभमात्मिलङ्गं मायापुरी हृदय पंकजसिन्नविष्टम्।

श्रद्धा नदी विमलचित्त जलाभिषेके नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय।।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः। त्यजेदज्ञान निर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्।।

स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्यूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन कुम्भेऽस्मिन् सिन्निधं कुरुषा।

अप्रात्मने नमः। अप्रन्तरात्मने नमः। अपरमात्मने नमः। (इससे प्रात्मशुद्धि होती है। इन मन्त्रों को कहकर प्रपने सिर पर प्रक्षत डालना चाहिये।)

मगडप पूजनम्—उत्तर्भाज्वल काञ्चनेन रचितं तुङ्गाङ्गरंगस्थलम्। शुद्धस्फाटिक भित्तिकाविरचितै स्तम्भेश्च हैमैः शुभैः॥
द्वारेश्चामर रत्नराजस्वचितैः शोभावहैर्मगडपैः। तत्रान्यै रिपचित्र शङ्ख्यवलैः प्रभ्राजितं स्वस्तिकैः॥

मुक्ताजाल विलम्बिमगडपयुतैर्वजैश्च सोपानकैः। नानारत्न विनिर्मितेश्च कलशैरत्यन्त शोभावहम्॥

माशावयोज्वल दीपदीप्तिखचितं लक्ष्मीविलासास्पदम्। ध्यायेन् मगडपमर्चनेषु सकलेष्वेवं विधं साधकः॥

(ग्रनुष्ठान पद्धति-यगडप संस्कारे)

नवरत्रखचित श्री सौभाग्य मराडपाय नमः। मराडपपूजां सर्मपयामि। (उपरोक्त चार मन्त्र कहते हुए मराडप का पूजन करना चाहिये।)

गरापित पूजनम्

गरोश मरडल रचना—भूमि के शुद्ध होने पर उस पिवत्र भूमि पर गरोश मरडल का निर्मार्श करना चाहिये। दिक्षिश में भूमि पर रंगोली से रेखाओं को खींचकर उसमें रंग (निर्दिष्ठ) भरते हैं। उत्तर में पीठ (चौकी) पर सफेद वस्त्र बिछाकर हल्दी कुंकुम मिश्रित जल से रेखाओं को खींचकर चावलों को रंगकर सुखाकर भरते हैं। भूमि पर बने मरडल प्रतिदिन विसर्जित स्वयं होता है। ग्रगले दिन फिर से बनाना पड़ता है। चौकी पर बने मरडल यज्ञ की समाप्ति पर्यन्त रहता है। इस मरडल में लकीरों को निर्दिष्ट दिशा में ही खींचना चाहिये।

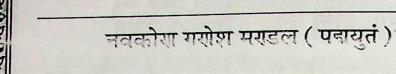
शक्रासुरानिलहुताशन वारुगोश। भागाश्रितं परिलिखेत् रसकोगामन्तः॥ (प्रयोग दीपिका)

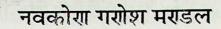
पहले शक्र (इन्द्र) की दिशा पूर्व से, ऋसुर (नैऋत्य) नैऋत्य दिशा की ऋरे वहाँ से ऋनिल (वायव्य) दिशा की ऋरे वहाँ से पूर्व मिलाना चाहिये (पहला त्रिकोण) दूसरा त्रिकोण हुताशन ऋर्थात् ऋग्नेय से प्रारम्भ कर वरुण ऋर्थात् पश्चिम दिशा तक एवं वहाँ से ईश (ईशान) तक खीचें। पुन: ऋग्नेय में मिलायें यह षट्कोण हुआ।

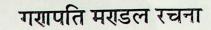
पाशीश पावक दिशाभ्युदितं त्रिकोराम्। विघ्वार्चनेषु रचितं नवकोरा चक्रम्।। (प्रयोग दीपिका)

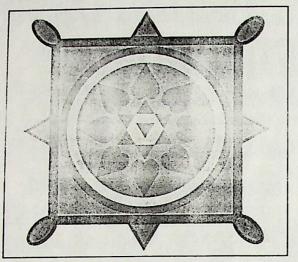
पहले बने षट्कोरा के अन्दर एक त्रिकोरा बनाना चाहिये। इस प्रकार नवकोरा चक्र बनता है, त्रिकोरा पाशी (वरुरा) पश्चिम से प्रारम्भ कर, ईश (ईशान्य) तक खीचें पुन: ईशान्य से पावक आग्नेय तक खीचें।

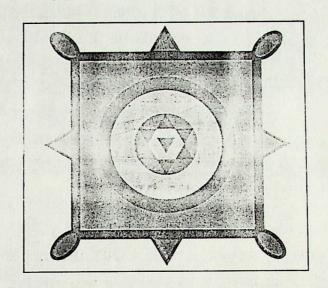
प्रादेश प्रमितियुतं गरोश बिम्बं। षट्कोगाकृति वर्तुलित्रिराढ्यम्।। (प्रयोग दीपिका) तद् बाह्यं चतुरस्त्रमग्डलं लिखित्वा। तन्मध्ये यजतु गरोश्वरं विपश्चित्।। (प्रयोग दीपिका)

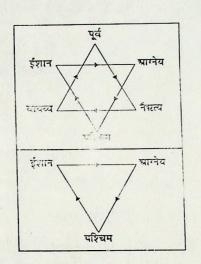












लकीर खींचते समय दक्षिण से कोई लकीर खींचना प्रारम्भ न करें।



नवकोश चक्र बनांकर तीन वर्तुल; तवनदकद्ध लगांकर उसके बाहर दो चौकांकार बनायें, पीठ बनायें, इन सबका सिम्मिलित मंगडल ऋगले पन्ने में उल्लिखित है। उसमें भरने योग्य रंगों का निरूपश भी उसी पन्ने में है।

इस प्रकार मगडल बनाकर उसमें गगोश जी का पूजन करना चाहिये। दो प्रकार के मगडलों का चित्र प्रेषित है। इन दोनों में किसी एक का प्रयोग कर सकते हैं।

ऋड़-यास-करन्यास—शरीर में गरापित का म्रावाहन करने से पूर्व न्यास करना चाहिये। गराकमृषिः। निचृद् गायत्री छन्दः। गरापितर्देवता। न्यासे विनियोगः। ऊगां म्रङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ऊगीं तर्जनीभ्यां नमः। ऊगूं मध्यमाभ्यां नमः। ऊगैं म्रनामिकाभ्यां नमः। ऊगौं किनिष्ठिकाभ्यां नमः। ऊगः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ऊगां हृदयाय नमः। ऊगीं शिरसे स्वाहा। ऊगूं शिखायै वषट्। उगैं कवचाय हुम्। उगौं नैत्रत्रयाय वौषट्। अगः मस्त्राय फट्। हाथों में पृष्य लेकर म्रपने शरीर में विद्यमान गरोश जी को निःश्वास द्वारा पृष्पो में किल्पत करके ध्यान मन्त्र से ध्यान कर उन फूलों को मराडल में या मूर्ति के चरगों में मूर्पण करना चाहिये।

ध्यान मन्त्र—गजवदनमचिन्त्यं तीक्ष्णादंष्ट्रं त्रिनेत्रं, बृहदुदरमशेषं भूतिरूपं पुरागं। ग्रमास्यर सुपूज्यं रक्तवर्शं पुरागं। पशुपित सुतमीशं विघ्वराजं नमामि॥ (स्मृति संग्रह) अ गुगानान्त्वा गुगापंतिं हवामहे कृविकंवीनामुंपुमश्रंवस्तमं। ज्येष्ठराजं ब्रह्मगां ब्रह्मगास्यत् ग्रानं:शृगवन्नृतिभि:सीदुसादनम्॥ (म्म्वेद २.२३.१)

गं गरापतये नमः। ध्यायामि, ध्यानं समर्पयामि।

म्रावाहनम्—ॐ सहस्त्रंशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रंपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यंतिष्ठिद् दशाङ्गुलम्।। (मानेद १०.६०)

ॐ हिरंगयवर्गां हरिंगीं सुवर्गीरजुतस्त्रंजाम्। चुन्द्रां हिरगंमयीं लुक्ष्मीं जातंवेदो मु स्रावंह ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

गङ्गरापतये नमः। स्रावाहयामि। स्रावाहनं समर्पयामि। द्वारपाल पूजनम्— अपूर्वद्वारे द्वारिश्रयै नमः। धात्रे नमः विधात्रे नमः। अदिक्षग्रद्वारे द्वारिश्रयै नमः। जयाय नमः। विजयाय नमः। अपश्चिमद्वारे द्वारिश्रयै नमः। अचराडाय नमः। अप्रचराडाय नमः। अउत्तरद्वारे द्वारिश्रयै नमः। अशंङ्खनिधये नमः। अपुष्पनिधयेनमः। अअर्ध्व द्वारिश्रयै नमः। अत्राकाशाय नमः। ॐग्रन्तरिक्षाय नमः। ॐग्रधोद्वारे द्वारिश्रयै नमः। ॐभूम्यै नमः। ॐपातालाय नमः। ॐपूर्व समुद्राय नमः। ॐदिक्षरासमुद्राय नमः। ॐपश्चिम समुद्राय नमः। ॐउत्तर समुद्राय नमः। ॐऋग्वेदाय नमः। ॐयजुर्वेदाय नमः। ॐसामवेदाय नमः। ॐऋथर्ववेदाय नमः। ॐकृतयुगाय नमः। ॐत्रेतायुगाय नमः। ऊद्वापरयुगाय नमः। ऊकलियुगायनमः। इति द्वारपालपूजां समर्पयामि। (इन मन्त्रों से मराडप के द्वारों की पूजा होती है।) ग्रापित पीठ पूजनम्—गुं गुरुम्यो नमः। गं ग्रापतये नमः। स्राधारशक्त्ये नमः। मूलप्रकृत्ये नमः। स्रादि कूर्माय नमः। स्रनन्ताय नमः। पृथिव्ये नमः।

धर्माय नमः। ज्ञानाय नमः। वैराग्याय नमः। ऐश्वर्याय नमः। ऋधर्माय नमः। ऋज्ञानाय नमः। ऋवैराग्याय नमः। ऋनैश्वर्याय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। मं मायायै नमः। विं विद्यायै नमः। पं पद्माय नमः। ऋं ऋर्क मगडलाय नमः। उं सोममगडलाय नमः। मं विह्नमगडलाय नमः। ऋं

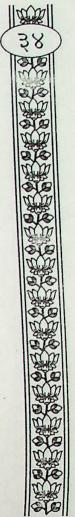
ग्रात्मने नमः। उं ग्रन्तरात्मने नमः। पं परमात्मने नमः। ॐषीं ज्ञानात्मने नमः। (इन मन्त्रों से गरापित मराडल की पूजा करना चाहिये।) नवशक्ति पूजा—तीव्रायै नमः। ज्वालिन्यै नमः। नन्दायै नमः। भोगदायै नमः। कामरूपिगयै नमः। उग्रायै नमः। तेजोवत्यै नमः। सत्यायै नमः। विघ्ननाशिन्यै

नमः। अषीं गं सर्वशक्तियुक्त कमलासनाय नमः। (इन मन्त्रों से गरापित मराडल में विद्यमान नौ शक्तियों का पूजन करना चाहिये।)

स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य गरानायक। ऋररायामिव हव्याशं मूर्ती (बिम्बे, कुम्भे) ऋावाहयाम्यहम्॥ (देवपूजा)

मराडल में या मूर्ति में या कुम्म में गरोश जी का आवाहन कर उसमें प्राशाप्रतिष्ठा मन्त्रों से प्राशाप्रतिष्ठा करनी चाहिये। उद्भव या प्रतिष्ठापित मूर्तियों में भी

प्राराप्रतिष्ठा कर सकते हैं। इससे उन मूर्तियों की शक्ति बढ़ती है।



प्रागप्रतिष्ठा

ग्रस्य श्री प्राराप्रतिष्ठा महामन्त्रस्य ब्रह्म विष्णुरुद्राग्चषय:। गायत्रयुष्णिक् बृहती छन्दांसि प्राराशक्ति: परा देवता ग्रां बीजं ह्रीं शक्ति क्रों कीलकं। श्रीमहागरोश्वर प्राराप्रतिष्ठापने विनियोग:।

ध्यानम्— रक्तांबोधिस्थपोतोल्लसदरुशा सरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदराड मिक्षूद्भवमथ गुरामप्यंकुशं पञ्चबाराान् ॥ विभ्रागासृक्कपालं त्रिनयन लिसता पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालर्कवर्गा भवत सुखकरी प्रागशक्ति परानः ॥ (स्मृति संग्रह)

उन्मां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंस: महागरोश्वर प्राराा: इह प्राराा:। उन्मां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंस: महागरोश्वर जीव इह स्थित:। उन्मां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंस: महागरोश्वरस्य सर्वेन्द्रियारिंग वाक् मन: चक्षु: श्रोत्र घ्रारा प्राराा: इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ऋसुंनीते पुन्रस्मासु चक्षुः पुनः प्रारामिह नों धेहि भोगं। ज्योक्पंश्येम् सूर्यमुच्चरंन्त मनुमते मूळयांनः स्वस्ति॥

(मृग्वेद १०, ५£.६)

ॐ पुनर्नों ऋसुं पृथिवी दंदातु पुन्द्योंर्देवी पुनर्नतरिक्षम्। पुनर्नुः सोमस्तुन्वं ददातु पुनः पूषा पृथ्यां ३ या स्वस्ति॥

सशक्ति साङ्ग सायुध सवाहन सपरिवार श्री महागरोश्वर भगवन् ग्रत्रैवागछागच्छ ग्रावाहियष्ये। ग्रावाहियामि। ग्रावाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। ग्रव कुरिठतो भव। ग्रमृती कृतो भव व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। एकुदुन्तार्यं विद्महें वक्रतुराडार्यं धीमहि। तन्नों दन्तिः प्रचोदयांत्॥ गराक ऋषिः निचृद् गायत्री छन्दः गरापितिर्देवता अ गां हृदयाय नमः। अ गीं शिरसे स्वाहा। अ गूं शिखायै वषट्। अ गैं क व चा य हुं। अ गौं ने त्र त्र या



य बौ ष ट् ङ गः ग्रस्त्राय फट्। भूर्मुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः। (इन मन्त्रों से गणपित जी को छूकर उनमें प्राणप्रतिष्ठा की कल्पना करनी चाहिये।)
ध्यान— ॐ रक्तो रक्ताङ्गरागांशुककुसुमयुतस्तुन्दिलः चन्द्रमौळि। नेंत्रैर्युक्तस्त्रिभिर्वामन करचरणो बीजपूरात्तनासः।।
हस्ताग्राक्लृप्तपाशांकुशरद वरदो नागवक्त्रोऽहिभूषो। देवः पद्मासनो नो भवतु नतसुरो भूतये विघ्नराजः॥ (स्मृति संग्रह)
ङगं गणपनये नमः। ध्यानं सपर्मयामि। (लाल रंग वाले, लाल ग्रङ्गरागधारण करने वाले, लाल वस्त्र वाले, लाल पुष्पवाले, मोटे पेट वाले, चन्द्र को

ऊग गरापनय नमः। ध्यान सपमवानि । (सारा राजार, सारा अम्म पाया करने वाले हाथों में पाश ग्रंकुश दान्त वरमुद्रा धारण करने वाले। हाथि मुखवाले, सर्पभूषण पद्मासन सिर पर धरे, त्रिनेत्र वाले, सूंढ में बीजपूरफल धारण करने वाले हाथों में पाश ग्रंकुश दान्त वरमुद्रा धारण करने वाले। हाथि मुखवाले, सर्पभूषण पद्मासन में बैठकर देवताग्रों से स्तुति कराने वाले गरोश जी हमारा मङ्गल करें।) अगं गरापतये नमः। (इस मूल मन्त्र को ग्राठ बार जप करें एवं संक्षेप में पञ्च पे बैठकर देवताग्रों से स्तुति कराने वाले गरोश जी हमारा मङ्गल करें।) अगं गरापतये नमः। (इस मूल मन्त्र को ग्राठ बार जप करें एवं संक्षेप में पञ्च पे पे वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। अगं ग्राप्तात्मने दीपं कल्पयामि। अवं ग्रबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। अपं. परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि। वर्षे वाय्वात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। अपं. परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि।

कल्पयामि। अव अबात्मन नवध कल्पवामि। उप. नर्पाली निज्ञा निर्मात्ति । अवस्थिन निर्माति । (भग्वेद १०.६०) स्थासनम् अ पुर्नषं एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भव्यम्। उतामृत्तत्वस्येशानो यदन्नेना तिरोहंति॥ (भग्वेद १०.६०)

ॐ तां मु स्रावंह जातवेदो लुक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंगयं विन्देयं गामश्रृं पुरुषानुहम्।। (पञ्चम मणडलस्य परिशिष्टम्)

अगं गरापतये नमः। स्रासनं समर्पयामि।

द्रव्याभावेतु पूजायां पुष्पैरिप समर्पयेत्। पुष्पाभावेतु तोयेन तोयाभावे तु चेतसा॥ (तन्त्र संग्रहे)

पूजन करते समय जब किसी द्रव्य की कमी होती है, तो उसके स्थान पर पुष्पों से पूजन कर सकते हैं, ग्रगर पुष्प भी नहीं है तो जल से पूजन करना चाहिये। पानी भी न हो तो मन से पूजा की कल्पना करनी चाहिये। द्रव्याभावे ग्रक्षतान् समर्पयामि यह गलत् परम्परा है। इसे नहीं करना चाहिये।

उद्वाहावाहने नस्तः स्थिरायामुद्भवार्चने। ग्रस्थिरायां विकल्पः स्यात् तराडुलेतु भवेद् द्वयम्॥ (लक्षण संहिता)

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भृत शान्ति यज्ञ

प्रथम दिन

प्रतिष्ठित एवं उद्भव मूर्तियों के पूजन मे ग्रावाहन विसर्जन दोनों की ग्रावश्यकता नहीं है। ग्रस्थिर मूर्ति ग्रादि में दोनों कर सकते हैं। परन्तु धरती पर बने मगरडलों में नित्य ग्रावाहन विसर्जन करना चाहिये। तािक वे दूषित न हो। उपरोक्त दो श्लोक पूजा के नहीं है। केवल प्रयोग विधान है। ग्रपवृत्ते कर्मिण लौकिक: सम्पद्यते। इस सूत्र से पूजा समाप्ति के बाद स्वतः देवता विसर्जन हो जाता है।

पाद्यम् अ एतावांनस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पूर्रुषः। पादोंऽस्य विश्वांभूतानि त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ (मानेद १०.६०)

ॐ ऋृंश्वपूर्वां रंथम्ध्यां हुस्तिनांदप्रमोर्दिनीम्। श्रियं देवीमुपंह्वये श्रीमि देवी जुंषताम्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

उन् गं गरापतये नमः। पादारिवन्दयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। (दो पैर होने के काररा पाद्यं-पाद्यं कहकर दो बार पाँव धोने के लिये जल दिया जाता है।) पर्वत की मिट्टी, दूर्वा, सरसो, तिल, पानी का मिश्ररा पाद्यं कहलाता है।

अर्थं— ॐ त्रिपाद्र्ध्वं उद्वैत् पुर्रुषः पादोऽस्येहाभंवत् पुर्नः। ततो विष्वङ् व्यंक्रामत् साशनानश्नने स्रभि॥ (सम्वेद १०.६०) ॐ कां सोस्मितां हिरंगयप्राकारांमार्द्रां। ज्वलंन्तीं तृप्तां तुर्पयंन्तीम्। पुद्मोस्थितां पुद्मवंगाां तामिहोपंह्वये श्रियंम्॥

(पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

ॐगं गरापतये नम:। हस्तयो: ऋर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि। (दहि-पानी, दूध-ऋक्षत, गोधूम, तिल, सरसूँ एवं कुश का ऋग्रभाग ये ऋष्ठाङ्ग मिलकर ऋर्घ्य जल होता है।)

त्राचमन—ॐ तस्मांत् विराळंजायत विराजो ऋधिपूर्रुषः । सजातो ऋत्यंरिच्यत पृश्चाद् भूमिमथोपुरः ॥ (ऋग्वेद १०.६०) ॐ चुन्द्रां प्रभामां यशसा ज्वलंन्तीं श्रियं लोके देवजुंष्ट्रमुदाराम् । तां पद्मिनीमीं शरंशामृहं प्रपंदोऽलुक्ष्मीमेनश्यतां त्वां वृंशो ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)



अगं गरापतये नमः। मुखे ग्राचमनीयं समर्पयामि। (जाफल, लौंग, तक्कोला इन्हें ग्राचमन जल में डालना चाहिये।) पञ्चामृत स्नान—साधन उपलब्ध हो गरोश जी प्रधान देवता हो तो इसे कर सकते हैं। (पञ्चामृत स्नान से पहले मूर्ति को शुद्ध कर लें।) १. पयः (दूध)—ॐ ग्राप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतंः सोम्वृष्यं। भवावाजंस्य संगुथे।। (भ्रावेद १.६१.१६)

अगं गरापतये नमः। क्षीर स्नानं समर्पयामि। पय स्नान के बाद शुद्धोदक से स्नान।

अ गुगानांन्त्वा गुगापंतिं हवामहे क्विं कंवीनामुंपुमश्रंवस्तम्।

ज्येष्ट्राराजं ब्रह्मंशां ब्रह्मशास्पत् स्नानंःशृ्यवत्रुतिभिंस्सीदुसादंनम्।। (सम्बेद २.२३.१) ॐगं गरापतये नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

२. दिध (दही)—ॐ दुधिक्रव्णों स्रकारिषं जिष्णोरर्श्वस्य वाजिनं:। सुर्भिनोमुखां करत्प्रगा स्रायूँषितारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३६.६)

उन्गं ग्रापतये नमः दिध स्नानं सपर्मयामि। दिध स्नान के बाद शुद्धोदक से स्नान

अ निषुसींद गरापते ग्राोषु त्वामांहुर्विप्रंतमं कवीनां। न ऋते त्वत् क्रियते किंचनारे महामुर्कं मंधवन् चित्रमंर्च॥

(मृग्वेद १०.११२.£)

रनं भागतंत्रा े

अग्गापतये नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि। ३. घृत (घी)—ॐ घृतं मिंमिक्षे घृतमंस्य योनिंधृते श्रितो घृतम्वंस्य धामं। स्रमुख्यधमावंह मादयंस्व स्वाहांकृतं वृषभवक्षि हृव्यम्॥ (स्वेद २.३.११)

अगं गरापतये नमः। घृतस्नानं समर्पयामि। घी से स्नान कराने के बाद शुद्ध जल से स्नान।

ॐ म्रुभिख्यानों मघवुन्नाधंमानान्त्सरवें बोधि वंसुपते सरवींनाम्। ररां कृधि रराकृत् सत्यशुष्माऽभंक्ते चिदाभंजारायं ऋस्मान्।। (ऋग्वेद १०.११२.१०) ॐगं गरापतये नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

४. मधु (शहद)—ॐ मधुवातां ऋताय ते मधुंक्षरन्ति सिन्धंवः । माध्वीर्नः सुन्त्वोषंधीः ॥ मधुनक्तंमुतोषसो मधुंमृत् पार्थिवं रर्जः। मधु द्यौरंस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ ग्रस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ (मावेद १.६०.६-७-६)

ऊगं गरापतये नमः, मधु स्नानं समर्पयामि। शहद के स्नान कराने के बाद शुद्ध जल से स्नान।

ॐ स्रातृनं इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभंसंगृंभाय। मृहाहुस्ती दक्षिंगोन।। (ऋग्वेद इ.इ११) उन्गं गरापतये नमः, शुद्धोदकस्त्रानं समर्पयामि।

४. शर्करा (शकर) - ॐ स्वादुः पंवस्व दुव्याय जन्मंने स्वादुरिन्द्रांय सुहवीतु नाम्ने। स्वादुर्मित्राय वर्रगाय वायवे बृहस्पतंये मधुमाँ ऋदांभ्यः ॥ (मावेद £. =४.६)

उन्गं गरापतये नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि । शर्करा स्नान के पश्चात् शुद्ध जल से स्नान कराये ।

ॐ विद्याहित्वां तुविकूर्मिं तुवि देंष्णं तुवीमंघं। तुविमात्र मवोभिः॥ (मानेद = = १२)

अगं गरापतये नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फलम् अयाः फुलिनीर्या त्रंफुला त्रंपुष्पायाश्चं पुष्पिगीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानों मुञ्चन्त्वं हंसः॥ (मानेद १०.६७.१४)

उन्गं गरापतये नमः फल स्नानं समर्पयामि। फल स्नान के बाद शुद्ध जल से स्नान करायें।



ॐ त्रापोहिष्ठा मंयोभुवःस्तानं ऊर्जे दंधातन। महेरणांय चक्षंसे॥ यो वंः शिवतंमोरसस्तस्यं भाजयते हनंः। उश्तीरिंव मातरंः॥ तस्मान्त्ररंङ्गमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। त्रापों जनयंथाच नः॥ (म्नवेद १०.६.१-२-३) ॐ यत्पुर्त्रषेण हिवषां देवा यज्ञमतंन्वत। वस्नतो त्र्यस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः श्रारद्धविः॥ (म्नवेद १०.६०) ॐ त्रादित्यवंर्गो तप्सोऽधिंजातो वनस्पित्स्तवं वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तप्सा नुंदन्तु मा यान्तरा याश्चं ब्राह्या स्रंलक्ष्मीः॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

(अगर गरोश जी का ही होम या पूजा हो तो अथर्वशीर्ष एवं गरोश सूक्त के मन्त्रों से अभिषेक करना चाहिये।)

अ तच्छंय्योरावृंगीमहे। गातुं युज्ञायं गातुं युज्ञपंतये। दैवीं स्वस्तिरंस्तु नः स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः॥

ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम् शंनों ऋस्तु द्विपदे शं चतुंष्पदे॥ (ऋग्वेद परिशिष्ट १० मराडल) उन्गं गरापतये नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

वस्त्रम् ॐ युवं वस्त्रांशा पीवसावंसाथे युवोरिच्छंद्रा मन्तंवोहसर्गाः।

स्रवातिरतुमनृतानि विश्वं सृतेनं मित्रा वरुगा सचेथे॥ (सग्वेद १.१५२.१)

ॐ तं युज्ञं बहिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा श्रंयजन्त साध्या ऋषंयश्च ये॥ (ऋषेद १०.६०)

ॐ उपैतु मां देवस्यः कीर्तिश्च मिशाना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मिं राष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं दुदातुं मे।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

अगं गरापतये नमः वस्त्रं समर्पयामि। (रूई का वस्त प्रतिदिन बदलना चाहिये। पीताम्बर, रेशम या मिंड वस्त्र पूजा में रखने पर दूसरे दिन भी उसे

भाडकर पुन: गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण कर दुबारा उस उपयोग में ला सकते हैं।)



यज्ञोपवीतम्—ॐ यज्ञोपवीतं प्रंमं प्वित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तांत्।

स्रायुष्यम्ग्र्यं प्रतिमुंञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमंस्तु तेजः ॥ (मञ्जम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ तस्मांद् यज्ञात् संर्वृहुतः संभृंतं पृषद्गज्यम्। पृशून्ताँश्चंके वाय्व्यानार्गयान् ग्राम्याश्च ये॥ (मण्वेद १०.६०)

ॐ क्षुत् पिपासामंलां ज्येष्ठामंलुक्ष्मीं नांशयाम्यहम्। स्रभूंतिमसंमृद्धिं च सर्वा न्निर्शींद मे गृहांत्॥ (मञ्जम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐगं गगापतये नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। दो यज्ञोपवीत। वस्त्र एवं यज्ञोपवीत। देने के बाद स्राचमनम्। ॐगं गगापतये नमः स्राचमनं समर्पयामि।

स्राभरगाम्—ॐ हिरंगयरूपः स हिरंगय सन्दृग्पान्नपात् सेदु हिरंगय वर्गाः।

हिर्गययात् परियोने निषद्यां हिर्गय् दा दंदुन्यन्नंमस्मै॥ (मण्वेद २.३५.१०) ॐगं गगापतये नमः। स्राभरगं समर्पयामि।

गन्धम् ॐ गन्धंद्वारां दुंराध्रषां नित्यपुंष्टां करीषिशांं। ईश्वरीं सर्वीभृतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) ॐ तस्मांद् यज्ञात् संर्वहृत् ऋचः सामांनि जिज्ञरे। छन्दंांसि जिज्ञरे तस्माद् यजुस्तस्मांदजायत।। (ऋग्वेद १०.६०) अगं गणपतये नमः गन्धं सम्प्रियोम।

त्रक्षताः—ॐ ऋर्चेत् प्रार्चेत् प्रिंयमेधासो ऋर्चेत। ऋर्चेन्तु पुत्रका उतपुरन्न धृष्यवर्चेत ॥ (ऋग्वेद =.६६.=)

अगं गरापतये नमः ऋक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ स्रायंने ते प्रायंग्रे दूर्वारोहन्तुपुष्पिग्रीः। हृदाश्चं पुगडरीकाणि समुद्रस्यं गृहा इमे ॥ (म्मवेद १०.१४२ =)
ॐ तस्मादश्चां स्रजायन्त ये के चों भ्यादंतः। गावोंहजज़िरे तस्मात् तस्मांजाता स्रंजावयः॥ (ममवेद १०.६०)
ॐ मनंसः कामुमाकूंतिं वाचः स्त्यमंशीमहि। पृशूनां रूपंमन्नस्य मिय् श्रीः श्रंयतां यशः॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ



ऊगं गरापतये नमः पुष्पाणि समर्पयामि। इसके पश्चात् गरोश मराडल के अङ्गपूजा
प्रथमावररा पूजनम्—(पुष्प चढ़ायें)—आग्नेय में—ऊ गां हृदयाय नमः। ईशान में—ऊ गीं शिरसे स्वाहा नमः। नैर्मृत्य में—ऊ गूं शिखाये वषट् नमः।
वायव्य में— ऊगें कवचाय हुं नमः। अग्नेय में ऊ गीं नेत्रत्रयाय वौषट् नमः। ऊ गः अस्त्राय फट् नमः। गङ्गरापतये नमः। प्रथमावररापूजां समर्पयामि।
सूत्र—पूज्य पूजकयोर्मध्ये या सा प्राची प्रकीर्तिता। प्रतिष्ठित देवता जिस भी दिशा को देख रहे हैं। शास्त्रों के अनुसार वही पूर्व दिशा मान्य है। इसी के आधार पर शेष दिशाओं का निर्धारण करना चाहिये। जहाँ देवता पूर्वाभिमुख है वहाँ दिशाये यथावत् रहेंगे।

द्वितीयावरण पूजा—ॐगं गरांजयाय नमः—(पूर्व में)। ॐगिं विघ्नेशाय नमः—(ग्राग्नेय में)। ॐगुं एकदंष्ट्रय नमः—(दक्षिण में)। ॐगृं वीराय नमः—(नैर्ग्नृत्य में)। ॐग्लृं गजवक्त्राय नमः—(पश्चिम में)। ॐगें लम्बोदराय नमः—(वायव्य में)। ॐगों वरदाय नमः—(उत्तर में)। ॐगं मक्तप्रियाय नमः—(ईशान में)। ॐगं गरापतये नमः। द्वितीयावरणपूजां समर्पयामि।

तृतीयावरण पूजा—इस पूजन के समय दिक्पाल भ्रपनी—भ्रपनी दिशा में ही रहते है। ग्रतः वास्तव दिशाओं में ही इनका पूजन करना चाहिये। तृतीयावरण पूजा—पूर्वे इन्द्रं—ॐलं इन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय शची समेनाथ वज्रहस्ताय ऐरावतवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेश मूर्ति पार्षदाय नमः। भ्राग्नेये भ्रिग्नं—ॐरं भ्रग्नये तेजोधिपतये पिंङ्गल वर्णाय स्वाहा समेताय शक्तिहस्ताय मेषवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। दक्षिणे यमं—ॐडं यमाय प्रेताधिपयते श्यामला समेताय, कृष्णावर्णाय, दग्रडहस्ताय, महिषवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्मृत्ये, निर्मृति—ॐक्षं निर्मृतये रक्षोधिपतये रक्षा समेताय, रक्तवर्णाय खङ्गहस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय, साङ्गाय, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय सर्वलंकार भूषिताय गणेशमूर्मि पार्षदाय नमः।

पश्चिमें वरुराम् — उन्वं वरुराय जलाधिपतये सिद्धा समेताय, शुभ्रवर्शाय, पाशहस्ताय, मकरवाहनाय संशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय



सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गरोशमूर्ति पार्षदाय नमः। वायव्ये वायुं— ॐयं वायवे प्राशाधिपतये, धूम्रवर्शाय ग्रंजना समेताय, श्रङ्कुशहस्तायय वाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय, सर्वालंकार भूषिताय गरोशमूर्ति पार्षदाय नमः। उत्तरे सोमं— ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्शाय गदाहस्ताय रोहिशी समेताय ग्रश्ववाहनाय सशक्तिकाय, साङ्गाय, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय, सर्वालंकार भूषिताय गरोशमूर्ति पार्षदाय नमः। ईशाने ईश्वरं— ॐहं ईशानाय विद्याधिपतये पार्वती समेताय, स्फटिकवर्शाय, त्रिशूलहस्ताय, वृषमं वाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय स वाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गरोशमूर्ति पार्षदाय नमः। ग्राकाशे ब्रह्माशां— ॐयं ब्रह्मशो लोकाधिपतये सरस्वतीसमेताय शुभ्रवर्शाय पाशहस्ताय हंस वाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गरोशमूर्ति पार्षदाय नमः। पाताले ग्रनन्तं (विष्णुं)— ॐऐं ग्रनन्ताय नागाधिपतये क्षीरवर्शाय चक्रहस्ताय लक्ष्मी समेताय गरुडवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय स वाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गरोशमूर्ति पार्षदाय नमः। तृतीयावरण पूजां सर्मपयामि।

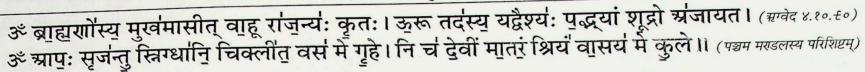
चतुर्थावरशा पूजनम्— अवज्ञाय नमः। अशक्तये नमः। अद्राह्मय नमः। अखङ्गाय नमः। अपाशाय नमः। अग्रंकुशाय नमः। अगदायै नमः। अत्रिशूलाय नमः। अचक्राय नमः। अपाषाय नमः। ईशाने ब्रह्माशां नैर्म्यत्ये ग्रन्तं पूजयेत्। ग्रग्ने—कुम्भोदराय नमः। (कुम्भोदर गरोश जी के नैमलिय धारण करने के

मधिकारी है। उत्तर ईशान के बीच इनका वास है।) (गरोश जी के पूजन प्रधान होने पर यहाँ फूलों से या दूर्वा से सहस्रनामादि कर सकते हैं।)

धूपम्— वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनो हरः। श्राघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्।। (प्रयोगरताकर) ॐ यत्पुरु'षुं व्यदंधुः कितिधा व्यंकल्पयन्। मुख्ं किर्मस्य कौ बाहू का ऊरु पादां उच्येते।। (म्रावेद ४.१०.६०) ॐ कर्दमेन प्रंजा भूता मृिय संम्भव कर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

अगं गरापतये नमः धूपं स्राघ्नापयामि।

दीपम्— साज्यं चिवर्ति संयुक्तं विह्नना योजितं मया। गृहारा मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह ॥ (ब्रह्मकर्म समुञ्जय)



अगं गरापतये नमः। दीपं दर्शयामि। धूपं दीपानन्तरं ऋाचमनीयं समर्पयामि। नैवैद्यम्—नैवेद्य रखने के स्थल पर मगडल बनायें। विश्वामित्र ऋषिः। देवी गायत्री छन्दः। सविता देवता। निवेदने विनियोगः। एक बार गायत्री मन्त्र से नैवेद्य पर प्रोक्षरा करें। सृत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि, इन मन्त्र से दिन में, एवं सृतं त्वांसत्येन परिषिञ्चामि, इन मन्त्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें। यथा सम्भव नैवेद्यं निरीक्षस्व, कहकर प्रार्थना करें। स्रमृतोपस्तरगागिस मन्त्र से जल छोडें। बायें हाथ में ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं दाहिने हाथ से निम्न मुद्राम्नों से देवता को नैवेद्य ग्रर्पण करें। मन में कल्पना करें कि भगवान् को खिला रहे हैं।

प्रागाय स्वाहा—ग्रङ्गुष्ठ एवं कनिष्ठिका मिलाकर, ग्रपानाय स्वाहा—ग्रङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर व्यानाय स्वाहा—ग्रङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, उदानाय स्वाहा — अङ्गृष्ठ एवं अनुमिका मिलाकर, समानाय स्वाहा — सभी अङ्गुलियों को मिलाकर

ताम्बूल के पश्चात् नीराजन (स्रारती)

ॐ स्रर्चेत् प्रार्चेत् प्रियंमेधासो स्रर्चेत्। स्रर्चेन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्यवंचित ॥ (स्रिवेद = ६६.=)
ॐ ध्रुवाद्योर्धुवा पृथिवीध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगंद् ध्रुवो राजां विशाम्यम्॥
ॐ ध्रुवं ते राजा वर्रुगो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः ध्रुवं त् इन्द्रश्चाग्निश्चं राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (स्रिवेद १०.१७३.४-६)

अगं गरापतये नमः। मङ्गल नीराजनं दर्शयामि। कुर्यादारार्तिकं पञ्चवर्तिका मनुसंख्यया पादयोश्च चतुर्वारं द्विः कृत्वोनाभि मराडले। एककृत्वो मुखे सप्त कृत्वः सर्वाङ्ग एव हि॥ नीराजन में पाँच बाती हो पादो को चार बार नाभि मगडल में दो बार, मुख को एक बार एवं सम्पूर्ण शरीर को सात बार ग्रारती करनी चाहिये।



मन्त्र पुष्पम् — ॐ गुगुानांन्त्वा गुगापंतिं हवामहे कृविं कंवीनामुंप्मश्रंवस्तमम्।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मंगां ब्रह्मग्रास्पत् स्नानंः शृ्यवन्नूतिभिस्सीद्धादंनम्॥ (मण्वेद २.२३.१)

ॐ निष्प्रसीद गगापते गुगोषुत्वामांहुर्विप्रतमं कवीनां।

न सृते त्वित्क्रियते किंचनारे महामुक्तं मधवन् चित्र मर्च॥ (मण्वेद १०.१४.६)

ॐ स्रृमिख्यानों मधवन् नाधंमानान् त्सखें बोधि वंसुपते सखीनाम्।

रगांकृधि रगाकृत् सत्यशुष्माऽभंक्ते चिदाभंजा राये स्रस्मान्॥ (मण्वेद १०.१४.१०)

ॐ विद्याहित्वां तुवि कूर्मिं तुवि देषां तुवीमंघम्। तुविमात्र मवोभिः॥ (मण्वेद ६.६१.१)

ॐ स्रात् नं इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्रामं संगृमाय। महाहस्ती दिक्षंगोन॥ (मण्वेद ६.६१.१)

ॐ नाभ्यां स्रासीदन्तिरक्षं शीष्णों द्यौः समंवर्तत।

पुद्धयां भुमिर्दिशः श्रोत्रात् तथां लोकाँ स्रंकल्पयन्॥ (मण्वेद १०.६०)

ॐ स्राद्रां युः करिगीं युष्टिं सुवर्गां हेम्मालिनीम्।

सूर्यां हिरग्मंयीं लुक्ष्मीं जातंवेदो म् स्रावंह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

अगं गरापतये नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। (इन मन्त्रों से गरोश जी पर फूल चढायें।)

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे।। (स्मृति संग्रह) ॐ सप्तास्यां सन् परिधयुस्त्रिः सप्तस्मिर्धाः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वाना ऋबंधन् पुरुषं पुशुं।। (स्मृते संग्रह) ॐ तां मु ऋविहं जातवेदो लुक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंशयं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानुहम्।। (स्मृति संग्रह)

(इन मन्त्रों से प्रदक्षिणा करनी चाहिये।) उन्गं गणपतये नमः। प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। प्रसन्नार्घं—ॐ ए्कुदुन्तायं विदाहेंवक्रतुराडायं धीमहि। तन्नों दन्तिः प्रचोदयांत्।। (स्मृति संग्रह) इदमर्घ्यम्, इदमर्घ्यम्, इदमर्घ्यम्॥ (इस पूरी प्रक्रिया को तीन बार करना चाहिये, जल छोड़ना चाहिये।) उत्तरपूजनम्—ॐछत्रं समर्पयामि, चामरेगावीजयामि, गीतं गायामि, नाट्यं नटामि, म्रान्दोळिकामारोहयामि। म्रश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्तराजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

अ यज्ञेनं यज्ञमंयजन्त देवास्तानि धर्मांगि प्रथमान्यांसन्।

तेह नाकं महिमानंः सचन्त्यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ (मण्वेद १०.६०) ॐ यः शुचिः प्रयंतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वंहम्। सूक्तं पंचदंशर्चं च श्रीकामंः सत्तं जंपेत्॥(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

प्रार्थना—ॐ वक्रतुगड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ। निर्विधं कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्वदा।। (याजुपपूर्व प्रयोग रताकर)

कायेन वाचा मनसेन्द्रियेर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परम्मे नारायगायेति समर्पयामि॥ (स्मृति संग्रह)

ब्रह्मार्पगां ब्रह्महिवः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मगा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ (भगवद्गीता)

उन् गं ग्यापतये नमः अनेन कृत पूजनेन महाग्यापितः प्रीयताम्। (यहाँ पर ग्योश पूजन संपन्न हुआ।)

प्रथम दिन द्वितीय प्रहर पञ्चगव्य मगडल (प्रथम विधान)

१-पूर्व में गोमूत्र

२-पश्चिम में दूध

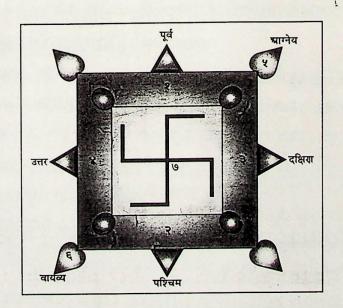
३-दक्षिरा में गोमय

४-उत्तर में दहि

५-ऋाग्नेय में घी

६-वायव्य में कुशोदक

७-प्रधान पात्र मध्य में







पञ्चगव्य प्राशन—

मङ्गलार्थं शुभार्थं च त्रारम्भे पुरायकर्मसाम्। निर्विध्नेन फलावाप्त्यै पुरायाहं कथ्यते बुधैः॥ (लक्षम संहिता)

मङ्गल के लिए, शुभ के लिए, निर्विघ्नता से फल प्राप्ति के लिए, सभी पुराय कार्यों के त्रारम्भ में पुरायाह करना त्रावश्यक है। पञ्चगव्य विधनस्य लक्षरां कथ्यतेऽधुना। शैवे च वैष्णावे चैव साधाररामतः परम्।। (लक्षरा संहिता)

शैव एवं वैष्णव सभी संप्रदायों में समान पञ्चगव्य विधान बता रहे हैं।

स्वस्तिके व्रीहिसंपूर्गो न्यस्त्वा पात्रमधोमुखम्। मन्थानं चोपरि न्यस्य सकूर्च फलपुष्पकम्॥ (लक्ष्म संहिता)

स्वस्तिक मगडल में चालों को एक केले के पत्ते में रखें। पात्र को नीचे मूँह करके रखें। मथनी को उसके ऊपर रखें। कूर्च एवं फल पुष्प को भी उस उल्टे किये बर्तन पर रखें। स्वस्तिक मगडल ग्रलग पन्ने में लिखा है। चार दिशाओं में एवं ग्राग्नेय वायव्य में छ: कटोरे उल्टा कर रखें। करशुद्धिं पुराकृत्य प्राणायाम त्रयं चरेत्। पहले हाथें को धोकर उसके बाद तीन बार प्राणायाम करें। (प्राणायाम विधान गरोश पूजन में है।)

स्ववामाग्रे गुरुं पूज्य दक्षिरा गरानायकम्। (लक्षरा संहिता)

(पहले हि गुरु गरोश पूजन हुम्रा है। म्रत: अगुं गुरवे नम: कहकर गुरुमराडल पर एवं अगं गरापतये नम: कहकर गरोश जी पर फूल चढ़ायें।)

त्रस्त्रेशा प्रोक्ष्य पात्रं तदुपिर विशदानक्षतान् क्षिप्य। तारेशास्मिन् मूलेन पुष्पं पृथगारिमनुना धूपदीपौ प्रदर्श्य॥ उत्तानीकृत्य पुष्पाक्षतमिप विधिना सोक्तमन्त्रेश्च गव्या। नेकैकान् प्रोक्त संख्यान्यिप च करमनुक्षाल्य संपूजयेत् च॥ (लक्ष्ण संहिता) पहले उल्टा किये सात बरतनों पर ॐग: ग्रस्त्राय फट् कहकर पानी छोड़े उसके ऊपर ग्रक्षता डालें। फिर पुष्प धूप दीप का ग्रर्पण करें। फिर एक-एक को उल्टा कर सही रूप में रखें। एवं उनका भी ग्रक्षत पुष्प धूप दीप से पूजन करें।

गोमूत्रं स्थापयेत् पूर्वं गोमयं दक्षिशो स्मृतम्। क्षीरं तु पश्चिमे स्थाप्य उत्तरे दिध संस्मृतम्। त्राग्नेयान्तु घृतं प्रोक्तं वायव्यान्तु कुशोदकम्। (स्मृति संग्रह)

गोमूत्र के बरतन को पूर्व दिशा में रखें, गोमय बरतन को दक्षिण में रखें, दूध के बरतन को पश्चिम दिशा में, उत्तर में दिह के बरतन को ग्राग्नेय दिशा में घी के बरतन एवं वायव्य दिशा में कुशोदक के बरतन को रखें।

पात्र में डालने योग्य पञ्चगव्यों का प्रमारा-

गोमूत्रमेकमानं स्यात् ऋर्धमानं तु गोमयम्। क्षीरं सप्तगुर्णां प्रोक्तं दिध त्रिगुर्णामुच्यते॥ सिपिरेकगुर्णां तद्वत् कुशोदकमुदीरितम्। गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दिधसिपः कुशोदकम्॥ द्रव्याणि क्रमशः प्रोक्तं लक्ष्मणानि च संग्रहेत्। रक्तगोमूत्रमुद्दिष्टं कृष्णगोर्गोमयं स्मृतम्। पयः पल्लवयाम्रायाः श्वेतगोर्दिध संग्रहेत्॥ किपलाया घृतं ग्राह्यं कुशाग्राभ्यां कुशोदकम्॥ (लक्ष्मण संहिता)

यहाँ पर प्रत्येक गव्य संग्रह के लिए निर्दिष्ट गाय बताये गये है सम्भव न होने पर देशी गायों से संग्रह कर सकते हैं।

रक्त वर्गीय गाय से संगृहीत गोमूत्र एक प्रमाण — ५० ग्राम काली गाय से संग्रहीत गोमय (गोबर) ऋष्ठं प्रमाण — २५ ग्राम

पत्ते के साम्रवर्शीय गाय से संगृहीत दूध सात प्रमा्श — ३४० ग्राम

DOROR OF DESCRIPTION OF DESCRIPTION

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

प्रथम दिन

सफेद गाय से संगृहीत दिध का तीन प्रमाण — १५० ग्राम कपिला (सफेद रक्त वर्श मिश्रित) गाय से संगृहीत घी एक प्रमाण — ५० ग्राम कुश के ऋग्रों के दो टुकड़े एक प्रमाण पानी मे — ५० ग्राम कुल — ६७५ ग्राम

इस प्रमारा से वस्तुओं का सङ्गह करें। एवं पहले पात्रों में इन द्रव्यों को भरें। प्रधान पात्र खाली रखें। एक-एक पात्र में देवताओं का आवाहन करें। गोमूत्रे देवतादित्यः गोमये वायुरीरितः। सोमं तु क्षीरे ह्यावाह्य दिश्च शुक्रं समर्चयेत्।।

घृते त्विग्निं तु संस्थाप्य गंधर्वं तु कुशोदके। (बोधायनीय प्रयोगमाला)

गोमूत्र में सूर्य का ग्रावाहन— अभूः गोमूत्रे ग्रादित्याय नमः ग्रादित्यं ग्रावाहयामि। अभुवः ग्रादित्याय नमः ग्रादित्यं ग्रावाहयामि। अभूवः ग्रादित्याय नमः ग्रादित्यं ग्रावाहयामि। अभूर्भूवः स्वः ग्रादित्याय नमः ग्रादित्यं ग्रावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

गोमय मे वायु का ऋावाहन—ॐभूः वायवे नमः वायुं ऋावाहयामि। ॐभुवः वायवे नमः वायुं ऋावाहयामि। ॐस्वः वायवे नमः वायुं ऋावाहयामि।

अभूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं ग्रावाहयामि। स्थापयामि पूजयामि।

गोदुग्ध में सोम का स्रावाहन—अभूः सोमाय नमः सोमं स्रावाहयामि। अभुवः सोमाय नमः सोमं स्रावाहयामि। अस्वः सोमाय नमः सोमं स्रावाहयामि।

उभूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोममावाहयामि । स्थापयामि । पूजयामि ।

दिह में शुक्र का स्रावाहन—अभू: शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि। अभुवः शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि। अस्वः शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि।

ॐभूर्भुवस्वः शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि । स्थापयामि । पूजयामि ।

घी में ऋग्नि का ऋगवाहन करें। ॐभूः ऋग्नये नमः ऋग्निमावाहयामि। ॐभुवः ऋग्नये नमः ऋग्निमावाहयामि। ॐस्वः ऋग्नये नमः ऋग्निमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः ऋग्नये नमः ऋग्निमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

कुशोदक में गन्धर्व का ग्रावाहन करें। ॐभूः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि। ॐभुवः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि। ॐस्वः गन्धर्वमावाहयामि। ॐस्वः गन्धर्वमावाहयामि। ॐस्वः गन्धर्वमावाहयामि। एजयामि। छ कटोरियों में देवताग्रों का ग्रावाहन संपन्न हुग्रा। ग्राव्य संक्षेप में सब का पूजन करें। ॐग्रावाहित देवताभ्यो नमः। ॐलं पृथिव्यात्मना गन्धं कल्पयामि। ॐहं ग्राकाशात्मना पृष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐरं ग्रान्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐवं ग्रंबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मना पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि। इसके पश्चात् निम्न मन्त्रों से प्रधान पात्र में प्रणा करें। भरें।

गोम्य पूर्ण मन्त्र—ॐ शन्नी देवीरिभष्टंय स्रापी भवन्तु पीतये। शंय्यो रिभस्नंवन्तुनः ॥ (म्रावेद १०.६.४)
गोमय पूर्ण मन्त्र—ॐ गन्धंद्वारां दुंराध्रषां नित्यपुंष्टां करीषिशीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
दूध भरने का मन्त्र—ॐ स्राप्यांयस्व समेतुते विश्वतः सोम्वृष्णयं। भवावार्जस्य संग्धे। (म्रावेद १.६१.१६)
दिह भरने का मन्त्र—ॐ दुधि क्राव्यां स्रकारिषं जिष्णोरश्वंस्य वाजिनः ।सुरिभनो मुखांकरत्प्रण स्राय्ंषि तारिषत्॥ (म्रावेद ४.३६.६)
धी भरने का मन्त्र—ॐ शुक्रमंसि ज्योतिरिस तेजोऽसि देवो वः सिवतोत्पुना त्विच्छंद्रेश प्वित्रेंश वसोः सुर्यस्य रृष्टिमिभः।

(यजुर्वेद १-काराड १-प्रश्न १० ग्रनुवाक २०-मन्त्र)

वुशोदक भरने का मन्त्र—ॐ देवस्यंत्वा सवितुः प्रंस्वेंऽश्विनोंर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्तांभ्यां।। (यजुर्वेद १-काग्रड १-प्रश्न ४ ग्रनुवाक १०-मन्त्र) ग्रब मन्त्रों से प्रधान पात्र में भरने के बाद निम्नमन्त्रों से मन्थन करें। (मथनी से)



ः देवस्यंत्वा सिवृतुः प्रंसवेंऽश्विनोंर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्तांभ्यां। ॐ मन्थंता नरः क्विमद्वंयन्तं प्रचेतसम्मृतं सुवतींकं। युज्ञस्यं केतुं प्रंथमं पुरस्तांदुग्निं नंरो जनयता सुशेवंम्॥ (सम्बेद ३.२६.४)

उपरोक्त मन्त्रों से मन्थन करना चाहिये। तदनन्तर प्रधान पात्र में ग्रावाहन करें। इरावती विसष्ठो विष्णुस्त्रिष्टुप्। पञ्चगव्यमध्ये विष्णुवावाहने

विनियोगः।

ॐ इरांवती धेनुमती हि भूतं सूंयव्सिनी मनुंषे दश्स्या। व्यंस्तभ्रा रोदंसी विषावे ते दाधर्थं पृथिवीम्भितों म्यूरखैं:।। (ऋग्वेद ७.६६.३) ॐ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे प्दम्। समूंळहमस्यपांसुरे।। (ऋग्वेद १.२२.१७)

ॐ विष्णुवे नमः। ॐभूः विष्णुमावाहयामि। ॐभुवः विष्णुमावाहयामि। ॐस्वः विष्णुमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। ॐ मार्नस्तोके तनंये मार्न ऋायौ मानो गोषुमानो ऋश्वेषु रीरिषः। वीरान्मानो रुद्रभामितो वंधीर्दृविष्मंन्तः सद्मित्त्वां हवामहे॥ (ऋषेद १.११४. =)

अरुद्राय नमः। अभूः रुद्रमावाहयामि। अभुवः रुद्रमावाहयामि। अस्वः रुद्रमावाहयामि। अभूर्भुवः स्वः रुद्रमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। अर् शंवतीः पारंयन्त्ये ते तं पृच्छिन्ति वचो युजां। स्थम्यारं तं युमाकेतुं य ए्वेदिमिति ब्रवंन्।। (स्पवेद ७.३५ परिशिष्ट)

ॐ विश्वेदेवेभ्यो नमः। ॐभूः विश्वेदेवमावाहयामि। ॐभुवः विश्वेदेवमावाहयामि। ॐस्वः विश्वेदेवमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः विश्वेदवमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। कलश छूकर ग्राठ बार या एक सौ ग्राठ बार गायत्री मन्त्र का जप करें। ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, षोडशोपचार पूजां समर्पयामि। (यहाँ पर संक्षेप में षोडशोपचार पूजन करना चाहिये—इसका विधान गरोश पूजन में है) इसके बाद निम्न मन्त्र से प्राशन (सेवन) करें।

ॐ यत्वगस्थि गतं पापं देहे तिष्ठति मामके।

प्राशनं पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्। (स्मृति संग्रह) यहाँ पर पञ्चगव्यप्राशन संपन्न हुमा। इसके प्रमागा श्लोक—शन्नो देवीति गोमूत्रं गन्धद्वारेति गोमयम्। म्राप्यायस्वेति चक्षीरंदिधक्राव्यो दिधि क्रमात्॥ म्राज्यं शुक्रमसीत्युक्तं देवस्यत्वा कुशोदकम्। पूरगो पञ्चगव्यानामिति मन्त्राः प्रकीर्तिताः॥ गाय त्र्यावाह्य पूजादि सर्वकर्म समाचरेत्। इरावती इदं विष्णुर्मानस्तोकेति शंवति॥ (लक्षण संहिता)

पुरायाह प्रकरराम् मङ्गलार्थं शुभार्थं तदारम्भे पुरायकर्मशाम्। निर्विघ्नेन फलावाप्त्ये पुरायाहः कथ्यते बुधैः॥ (लक्ष्या संहिता)

संपन्न किये जाने वाले कार्य मङ्गलमय हो, शुलफल देने वाला हो, एवं निर्विघ्नता से फल प्राप्ति हो इसितए सभी कार्यो में पुरायाह वाचन अनिवार्य है।

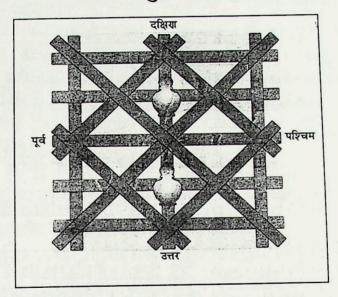
स्रत्र हेमाद्रौ दानकाराडे बह्वचपरिशिष्टत्वेनोक्तः

सकल साधारण शिष्टाचार प्राप्तश्च पुगयाह वाचन प्रयोगो लिख्यते। हेमाद्रि ग्रन्थ के दानकाग्रड में बहुत से ऋषियों के मत से कहा गया ऋधिक रूप से समाज में प्रचलित पुग्याहिवधान बता रहे है। कृतमङ्गलस्नानः = पहले मङ्गल स्नान करें। स्वलंकृतः = मस्तक में सप्रदाय चिन्हों से ऋलंकृत हो। संभृत मङ्गल संभारोः = सभी मङ्गल द्रव्यों को एकत्र करें। मङ्गलल रंगवल्ली मंडित शुद्ध स्थलेः = मङ्गलमय रंगोली से सुशोभित पवित्र स्थल पर। प्राङ्मुखो यजमानः = यजमान पूर्व दिशा की ग्रोर मूँह कर बैठें। ऊर्ण वस्त्राद्याच्छादिते पीठे उपविश्यः = ऊनी वस्त्रादि से ग्राच्छादित पीठ पर बैठकर। यदि गृहस्थ हो तो—पत्नीं स्वदक्षिणतः प्राङ्गमुखीमुपवेश्यत्न=दाहिनी ग्रोर पूर्विभिमुख पत्नी को बैठाकर। यह गृहस्थों के द्वारा करने वाले विवाहादि में—संस्कार्य च तथैवोपवेश्यः=उनका भी स्नानादि से शुद्धि हो।

तदनन्तर—बाह्मगौ: = ब्राह्मगों के द्वारा ''यशस्करं बलवन्तं किनकदज्जनुष'' म्रादि माङ्गल्य मन्त्रों से मङ्गल तिलक धारग करें। इसके बाद दो बार म्राचमन करें। एवं प्रागायाम करें। गगोश जी की प्रार्थना करें। हाथ में पवित्र को धारग करें। स्थान देवता का पूजन करें। इसके पश्चात् गगोशपूजन

करें। इतना हम पहले ही कर चुके हैं। पञ्चगव्य प्राशन (पुरायाहवाचन के बाद) (पञ्चगव्यपीना चाहिये)।

ऋग्वेदीय पुरायाह मराडल



यहाँ से पुरायाहवाचन प्रारम्भ—कर्ता स्वपुरतः=पुरायाहवाचन करने वाले अपने आगे भूमि पर— अ महीद्यौः पृथिवीचंन इमंयुज्ञंमिंमिक्षतां। पिपृतां नोभरींमिभः॥ (सप्वेद २२.१३)

इस मन्त्र को पढकर भूमि को उत्तर एवं दक्षिण दिशा में स्पर्श करें।



ॐ स्रोषंधयुः संवंदंते सोमेनसहराज्ञां। यस्मैकृशोतिं ब्राह्यशस्तं राजन्पारयामसि॥ (भ्रावेद १०.६७.२२)

इस मन्त्र से पत्तल ग्रादि बिछाकर दो चावल की राशी उत्तर एवं दक्षिण में बनाना याहिये।

ॐ म्राक्लशेषु धावति प्वित्रे परिषिच्यते। उक्यैर्य्ज्ञेषुं वर्धते॥ (मण्वेद ६.१७.४)

इस मन्त्र को पढ़कर चावल पर दो कलशों को स्थापित करें।

ॐ इमं में गङ्गेयमुने सरस्वतिशुतुंद्रि स्तोमं सचतापरुष्या। त्रसिक्न्या मंरुद्वधेवितस्त्या जींकीये श्रगुह्यासुषोमंया॥ (ऋग्वेद १०.५७.५)

इस मन्त्र से कलशों में तीर्थ जल भरें।

ॐ गंधंद्वारांदुंराधुर्षांनित्यपुंष्टांकरीषिर्गीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

इस मन्त्र से गंध (चन्दन) कलश में डालें।

ॐ काराडांत्काराडात्प्ररोहंन्ती पर्मषः पर्मषः परि। ए वानो दूर्वे प्रतंनुसहस्त्रेंगाश्तेनं च।। (यजुर्वेद-महानाराययोपनिषत्) इस मन्त्र से दुर्वा (दुब) कलश में डालें।

ॐ ऋश्वत्थेवोनिषदंनं पुर्गोवोवस्तिष्कृता। गोभाज् इत्किलां सत्यत्सनंवंथपूर्रुषं॥ (ऋग्वेद १०.५७.४)

इस मन्त्र से कलश पर ऋश्वत्थ, बरगद, ग्राम, जामुन, कटहल के पत्तों को रखें। (पञ्च पल्लव)

ॐ याः फुलिनी र्या ऋंफुला ऋंपुष्पायाश्चंपुष्पिगाीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानों मुञ्चंत्वं हंसः॥ (भग्वेद १०.६७.१४)



इस मन्त्र से द्राक्षा ग्रादि छोटे फलों को कलश में डालें।

ॐ सृहिरत्नांनिदाशुषें सुवातिंसविताभगं:। तं भागं चित्रमींमहे ॥ (ऋग्वेद ५. =२.३)

इस मन्त्र से रत्नों को (पुष्प को) कलश में डालें।

ॐ हिरंगयरूपः सहिरंगयसंदृगपान्नपात्सेदुहिरंगयवर्गाः । हिरगययात्परियोनेर्निषद्यांहिरगयदादंदुत्यन्नंमस्मै ॥ (मावेद २.३५.१०)

इस मन्त्र से हिरएय या सिक्का कलश में डाले।

ॐ युवांसुवासाः परिवीत् श्रागात्सङ्ग्रेयांभवित् जायंघानः। तं धीरांसः कृवय् उन्नयंति स्वाध्योर्भमनंसा देव्यंतंः॥

(ऋग्वेद ३.८.४)

इस मंत्र से वस्त्र को कलश पर लपेटें या मौली से कलश पर बांधे।

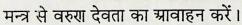
कलशों को वस्त्र बाँधने का विधान-प्रमारा श्लोक-

कलशान् वेष्ट्येत् सर्वान् सूत्रेनैकेन बुद्धिमान्। वर्धिनी सूत्रयुग्मेन शिवकुम्भान् त्रिसूत्रकैः॥ (क्रियासार)

सामान्यतः सभी कलशों को मौली से एक बार लपेटना चाहिये। वर्धिनी कलश जो कि ग्रस्त्र कलश भी कहलाता है यह यज्ञ की रक्षा के लिए रखा जाता है इसे मौली से दो बार लपेटना चाहिये। शिवकुम्भ ग्रर्थात प्रधान कलश को तीन बार मौली से लपेटना चाहिये।

ॐ पूर्गादंर्विपरांपत् सुपूंर्गा पुन्रापंत। वृस्नेव विक्रींगावहा इष्मूर्जंशतक्रतो।। (यनुर्वेद-१ कारड- = प्रश्र-४ अनुवाक-२ मन्त्र)

इस मन्त्र से चावल से भरे पात्र को कलश के मुख पर रखना चाहिये। उत्तरकलशे वरुगावाहने विनियोग:। उत्तर दिशा में जो कलश है उसमें नीचे लिखे



ॐ तत्वांयामि ब्रह्मंशावन्दंमान्स्तदाशांस्ते यजंमानो ह्विभिः। त्रहेळमानो वरुशोहबोध्युरुशंस्मान् स्रायुः प्रमोधीः॥ (सम्बेद १.२४.११)

कलशे वरुगं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं ग्रावाहयामि। (ग्रावाहन करें)

ऊ भूर्भुवः स्वः वरुगाय नमः। चन्दनं समर्पयामि। अभूर्भुवः स्वः वरुगाय नमः। पुष्पं समर्पयामि। अभूर्भुवः स्वः वरुगाय नमः। धूपं समर्पयामि। अभूर्भुवः

स्वः वरुगाय नमः। दीपं समर्पयामि। अभूर्भुवः स्वः वरुगाय नमः। नैवेद्यं समर्पयामि। इन पञ्चोपचारों से पूजन करें।

ॐ तत्वांयाम् ब्रह्मंशा वन्दंमानुस्तदाशांस्ते यजंमानो हुविभिः। अहंळमानो वरुशोहबोध्युरुशंसमानु आयुः प्रमोषीः॥ (समेद १४४११)

ङभूर्भुवः स्वः वरुगाय नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। ग्रनेन पूजनेन वरुगाः प्रीयताम्। इसके पश्चात् कलश छूकर मन्त्र पाठ करें।

कलशस्य मुखेविष्णुः कंठेरुद्रः समाश्रितः। मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगरााः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथयजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वगः॥

ग्रङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥

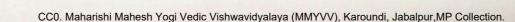
स्रत्रं गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा। स्रायान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः ॥ (ब्रह्मकर्म समुञ्च-देवपूजा प्रकरण)

उत्तर कलश में ग्रक्षत डालें। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। ग्राचार्य देवो भव। ग्रातिथिदेवो भव। सर्वेभ्यो ब्राह्मरोभ्यो नमो नमः। इसके बाद घुटने टेककर बैठें, ग्रंजिल में उत्तर दिशा के कलश को ग्रहण करें। ब्राह्मर्शों से ग्राशीर्वाद की प्रार्थना करें। ब्राह्मण्या—सत्या म्राशिष सन्तु (म्रापकी इच्छा पूर्ण हो)। दीर्घानागानद्योगिरयस्त्रीिण विष्णुपदानि च तेनायुः प्रमाणेन पुग्याहं दीर्घमायुरस्तु (म्रापको दीर्घायुष्य प्राप्त हो) (यजमान ब्राह्मणे के हाथ में जल देते हैं)। ब्राह्मणहस्ते शिवा म्रापः सन्तु। ब्राह्मण कहते हैं—सौमनस्यमस्तु (म्रापका मन स्वस्थ हो)। म्रक्षतं चारिष्टं चास्तु (दिये गये म्रक्षतों से म्रिष्ट निवारण हो)। गंधाः पान्तु (कहकर गन्ध देवे)। सौमंगल्यं चास्तु (म्रापको मङ्गल हो)। म्रक्षताः पान्तु (कहकर म्रक्षत देवे)। म्रायुष्यमस्तु (म्रापको दीर्घायुष्य हो)। पुष्पाणि पान्तु (कहकर फूल देवें)। सौश्रियमस्तु (उत्तम संपत् प्राप्त हो)। तांबूलानि पान्तु (कहकर ताम्बुल देवें)। ऐश्वर्यमस्तु (ऐश्वर्य प्राप्त हो)। दिक्षिणाः पान्तु (कहकर दिक्षणा सिक्का दें)। बहुदेयं चास्तु (भगवान् म्रापको बहुत देने योग्य बनायें)। दीर्घमायुः श्रेयः शान्तिः पृष्टिस्तुष्टिश्चास्तु (म्रापको दीर्घायुष्य, श्रेय, शान्ति, पृष्टि एवं सन्तोष प्राप्त हो)।

श्रीर्यशोविद्याविनयोवित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु।

यं कृत्वा सर्ववेद यज्ञ क्रिया करणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंकारमादिंकृत्वा ऋग्यजुः सामाशीर्वचन बह्वषिमतं सं विज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुर्ग्यं पुर्ग्याहं वाचियव्ये। (ब्राह्मणा यजमान से कहते हैं जिसके करने से सभी वेदों का यज्ञ कार्यों का ग्रारम्भ शुभ होता है ऐसे अकार से प्रारम्भ कर बहुत से ऋषियों के द्वारा ग्रच्छी तरह से विचार कर ऋग्वेद यजुर्वेद एवं सामवेदोक्त ग्राशीर्वाद मन्त्रों से (हम-ब्राह्मण) ग्रापका पुर्ग्याह करना चाहते हैं। यजमान कहते हैं—विप्राः ग्रों वाच्यतां।

ॐ भृद्रं कर्गोभिःशृगायामदेवा भृद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरेरंगैस्तुष्टुवांसंस्तुनूभिर्व्यशेमदेविहंतं यदायुः। (मानेद १.५-१.५) ॐ द्रविगोदा द्रविंगासस्तुरस्यं द्रविगोदाः सनंरस्य प्रयंसत्।



द्विशाोदावीरवंतीमिषंनोद्रविशाोदारांसतेदीर्घमायुः॥ (भग्नेद १.६६.८)
ॐ स्वितापृश्चातांत्सवितापुरस्तांत्सवितोत्तरात्तांत्सविता ध्रात्तांत्।
स्वितानंः स्वतु सर्वतांतिं चिवतानोरासतां दीर्घमायुः॥ (भग्नेद १०.३६.१४)
ॐ नवो नव पर्वाद गार्यमानोहं केतुरु वर्तामेत्यग्रम्।
भागं देवेम्यो विदंध गाय अवंक प्रास्ति ते दीर्घमार्थः॥ (भग्नेद १०.८५.१६)
ॐ उच्चाद्वित दक्षिशावंतो अस्थुर्येश्रंशदाः सहतेस्येशा।
हिर्गयदा संमृत्त्वं भंजंतेवासोदाः सोध्यतिरन्त् आर्युः॥ (भग्नेद ६.६५.६)
ॐ आपंउंदंतु जीव से दीर्घायुत्वाय वर्चसे।
यस्त्वीहृदा कीरिगामन्यमानो मंत्र्यं मत्यों जोहंवीिम॥ (यनुनंद १ काण्ड-२ प्रश्न-१ भनुवाक-१ मन्त्र)

शादीरं व वाटा. १००० हु। स वह

्र अजातंबेद्रोयशों ऋस्मासुं धेहि प्रजाभिरग्ने ऋमृतृत्वमंश्याम्। यस्मैत्वं सुकृतें जातवेद उल्लोकमंग्ने कृरावंस्योनम्। या ऋश्चिन्ं सपुत्रिराां वीरवंतं गोमंतंर्यिनंशते स्वस्ति। संत्वां सिञ्चाम् यजुषा प्रजामायुर्धनं च।।

(यजुर्वेद १ कागड-६ प्रश्न-१ मन्त्र)

व्रतियम् तपः स्वाध्याय क्रतुदमदान विशिष्टानां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् (यह वाक्य यजमान कहते है कि ब्राह्मणों का मन स्थिर हो)। विप्राः-समाहित

मनसः स्मः (हम स्वस्थ मनवाले हैं)। यजपानः - प्रसीदन्तु भवन्तः (ग्राप प्रसन्न हो)। विप्राः - प्रसन्नाः स्मः (हम प्रसन्न है)। यहाँ से प्रत्येक पंक्ति के बाद उत्तर कलश के जल को बड़े बरतन छोड़े। शान्ति रस्तु (शान्ति हो)। पृष्टिरस्तु (पृष्टि हो)। तुष्टिरस्तु (बुंष्टि हो)। वृद्धिरस्तु (वृद्धि हो)। ग्राविष्नमस्तु (निर्विष्न हो)। ग्रायुष्यमस्तु (ग्रायुष्य हो)। ग्रारोग्यमस्तु (ग्रारोग्य हो)। शिवं कर्मास्तु (कर्म में मङ्गल हो)। क्रान्तिस्मृद्धिरस्तु (कर्म में समृद्धि हो)। धर्म समृद्धिरस्तु (धर्म में समृद्धि हो)। वेदासमृद्धिरस्तु (वेद समृद्ध हो)। शास्त्रसमृद्धिरस्तु (शास्त्रसमृद्धिरस्तु (ग्रारायसमृद्धिरस्तु (धर्म एवं धान्य की समृद्धि हो)। इष्ट संपदस्तु (इच्छित ऐश्वर्य मिलें)।

ऐशान्यां बहिर्देशे सर्वारिष्टनिरसन मस्तु (बाहर देश में सभी प्रकार के ऋरिष्टों का निवारण हो)। यत्पापं तत् प्रतिहतमस्तु (जो भी पाप है वह दूर हो)। यच्छ्रेय: तदस्तु (जो श्रेयस्कर हो वह मिले)। उत्तरोत्तरा: क्रिया: शुभा: शोभना: संपद्यंताम् (ऋगो-ऋगो करने वाले कार्य शुभ एवं सुन्दर हो)। इष्टा: कामा: संपद्यंताम् (इच्छित कामनाऐं पूर्ण हो)। तिथिकरणमुहूर्त नक्षत्र संपदस्तु (तिथि, करण, मुहूर्त एवं नक्षत्र संपत्ति हो—ऋथीत् ये सब श्रेष्ठ हो)।

तिथिकररणमुहूर्त नक्षत्र ग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् (तिथिकररण मुहूर्त एवं नक्षत्र ग्रहों के सिहत एवं देवतात्रों के सिहत प्रसत्र हों)। दुर्गा पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् (दुर्गा एवं पाञ्चाली प्रसत्र हो)। त्रिप्रोप्ताम् विश्वेदेवाः प्रीयंताम् (त्रिप्रिकररण मुहूर्त एवं नक्षत्र ग्रह्म हो)। इन्द्र पुरोगाः मरुद्गरणाः प्रीयंताम् (इन्द्रपुरोगाः मरुद्गरण प्रसत्र हो)। ब्रह्मपुरोगाः सर्वेवेदाः प्रीयन्ताम् (ब्रह्मा जी के साथ विद्यमान सभी वेद प्रसत्र हो)।

विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयन्ताम् (विष्णु के साथ विद्यमान सभी देवता प्रसन्न हो)। माहेश्वरी पुरोगा उमामातरः प्रीयंताम् (माहेश्वरी देवी के साथ विद्यमान उमामातर प्रसन्न हो)। विसष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयंताम् (विसष्ठ जी के साथ विद्यमान ऋषिगणा प्रसन्न हों)। ऋरुंधतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयंताम् (ऋरुंधती के साथ विद्यमान एकपती देवियाँ प्रसन्न हो)। ऋषयश्छंदास्याचार्यावेदादेवायज्ञाश्च प्रीयंताम् (ऋषिगणा, छन्द, ऋग्चार्य, वेद, देवता एवं यज्ञ प्रसन्न हो)। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्



(ब्रह्मा एवं ब्राह्मण प्रसन्न हो)। श्री सरस्वत्यौ प्रीयेताम् (लक्ष्मी एवं सरस्वती प्रसन्न हो)। श्रद्धामेधे प्रीयेताम् (श्रद्धा एवं मेधा देवी प्रसन्न हो)। भगवती कात्यायनी प्रीयताम् (भगवती कात्यायनी देवी प्रसन्न हो)। भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् (भगवती माहेश्वरी प्रसन्न हो)। भगवती पृष्टिकरी प्रीयताम् भगवती तृष्टिकरी प्रीयताम् । भगवती ऋदिकरी प्रीयताम् (भगवती ऐश्वर्यदेनेवाली प्रसन्न हो)। भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् (भगवती वृद्धि करने वाली प्रसन्न हो)। भगवंतौ विञ्चविनायकौ प्रीयेताम् (भगवान् विञ्चेश एवं विनायक प्रसन्न हो)। भगवान् स्वामी महासेनः सपत्नीकः स सुतः सपार्षदः सर्वस्थानगतः प्रीयताम् (भगवान् कार्तिकेय सपरिवार प्रसन्न हो)। हिर हर हिरएयगर्भाः प्रीयंताम् (विष्णु, शिव, ब्रह्मा जी प्रसन्न हो)।

सर्वा: ग्रामदेवता: प्रीयताम् (सभी ग्राम देवता प्रसन्न हो)। सर्वा: कुलदेवता: प्रीयताम् (सभी कुल देवता प्रसन्न हो)। सर्वा: वास्तुदेवता: प्रीयताम् (सभी वास्तु देवता प्रसन्न हो)। बहिरप: (नैमृत्य में बड़े बरतन से बाहर कलश जल छोडें)। हताब्रह्मद्विष: (ब्रह्मद्वेषियों का नाश हो)। हता: परिपन्थिन: (शत्रुम्मों का नाश हो)। हता म्रस्य कर्मगोविघ्नकर्तार: (इस कर्म के विघ्न करने वाले का नाश हो)। शत्रव: पराभवं यातु (शत्रु पराजित हो)।

शाम्यन्तु घोराणि (सभी घोर शान्त हो)। शाम्यन्तु पापानि (सभी पाप शान्त हो)। शांम्यंत्वीयतः (सभी उत्पातों की शान्ती हो)। (ग्रंतः) शुभानिवर्धताम् (मङ्गल ग्रामिवृद्धि हो)। शिवा ग्रापः सन्तु (जल मङ्गलमय हो)। शिवाग्रतवः सन्तु (ग्रतियां मङ्गलमय हो)। शिवा ग्रापः सन्तु (ग्राप्तियां मङ्गलमय हो)। शिवा ग्राहितयां सन्तु (ग्राणिवा ग्राहितयां मङ्गलमय हो)। शिवा ग्राहितयां मङ्गलमय हो)। शिवा ग्रातिथयः सन्तु (ग्राणिवा मङ्गलमय हो)।

मृहोरात्रे शिवेस्याताम् (रातिदन मङ्गल हो)। निकामेनिकामेनः पुर्जन्यो वर्षतु (समय पर बारीश होवे)। फुलिन्यो न ग्रोषंधयः पच्यंताम्।

योगक्षेमो नं: कल्पताम् (हमारा योगक्षेम हो)। शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चर राहुकेतु सोम सहिता: ग्रादित्य पुरोगा: सर्वे ग्रहा: प्रीयंताम् (सूर्यादि शुक्र,

कुज, बुध, गुरु, शनि, राहु, केतु, चन्द्र ग्रह प्रसन्न हों)। भगवानारायगाः प्रीयताम् (भगवान् नारायगा प्रसन्न हो)। भगवान् पर्जन्थः प्रीयताम् (भगवान पर्जन्य प्रसन्न हो)। प्रीयतां भगवान् स्वामी महासेनः (भगवान सुब्रह्मगय प्रसन्न हो)। पुगयाहकालान्वाचियाष्ये। वाच्यतां इति विप्राः ब्राह्मगा कहते हैं—पढें।

ॐ उद्गातेवशकुनेसामंगायिस ब्रह्मपुत्र इंव सर्वनेषु शंसिस।
वृषेव वाजीशिशुंमतीरपीत्यां सर्वतोनः शकुनेभ्द्रमावंद विश्वतोनः शकुनेपुर्य मावंद ॥ (मण्वेद २.४२.२)
व्याज्यरायजितिप्रत्तिवैयाज्यापुर्येवलक्ष्मीः पुर्यामेवतल्लक्ष्मीं संभावयित पुर्यां लक्ष्मीं संस्कुरुते ॥
यत्पुर्यं नक्षत्रं। तद्वट्कुंवीं तोपव्युषं। यदावसूर्यं उदेतिं। ऋथ् नक्षत्रं नेतिं। यावंति तत्र सूर्यो गच्छेत्।
यत्रं जघन्यं पश्येत्। तावंतिकुर्वीतयत्कारीस्यात्। पुर्याह एव कुंरुते। तानि वा एतानि यमनक्षत्रागिं।
यान्येव देवनक्षत्रागिं। तेषुं कुर्वीत यत्कारीस्यात्। पुर्याह एव कुंरुते। (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

सर्वेषांमहाजनात्रमस्कुर्वाणाय त्राशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणासोमाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः पुगयाहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिवंदेत्। (यजमान ऋपने सकुटुम्ब प्रणाम करते हुए ऋज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुगयाह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मण तीन बार देते हैं।)

१. अपुर्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु । अग्रस्तु पुर्याहम् । २. अपुर्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु । अग्रस्तु पुर्याहम् । ३. अपुर्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु । अग्रस्तु पुर्याहम् । अस्तु पुर्याहम् । अग्रस्त्ये वायुमुपं ब्रवामहे सोमं स्वस्तयं मुवनस्य यस्पतिः । विक्षेत्र १.४१.१२)

म्रादित्य उदयनीयः पथ्यैवेतः स्वस्त्याप्रयंतिपथ्यांस्वस्तिमभ्युद्यंतिस्वस्त्येवेतः प्रयंतिस्वस्त्युद्यंति स्वस्त्युद्यंति ॥ (स्मृति संग्रह) ॐ स्वस्तिन् इन्दोंवृद्धश्रंवाःस्वस्ति नंः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्तिन्स्ताक्ष्यों म्रिरिष्टनेमिःस्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु । (भग्वेद १.==.६)

ॐ सृष्ट्रौ देवा वसंव: सोम्यासं:।। चतंस्रोदेवीरुजगुश्रविष्ठाः।

ते युज्ञं पींतु रजीसः पुरस्तीत्। संवृत्सरीराममृतँ स्वृस्ति। (यजुर्वेद - ब्राह्मरा)

इसके बाद नीचे लिखा वाक्य का तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय ग्राशीर्वचनमपेक्षमाणयसोमाद्भुतशान्त्यारु याय कर्मण: स्विस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—अग्रायुष्मते स्वित्ति। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुन: पहले जैसे उत्तर कलश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा-थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।

ॐ सृध्याम्स्तोमं सनुयाम्वाज्मानो मंत्रं स्रथे होपयांतं। यशोनपृक्कं मधुगोष्वंतराभूतांशों ऋश्विनोः कामंमप्राः॥ (स्वेद १०.१०६.११) सर्वामृद्धिमृधुयामितितं वैतेजसैवपुरस्तात् पर्यभवच्छन्दोभिर्मध्यतोक्षर रुपरिष्टाद्गायत्र्या सर्वतो द्वादशाहंपरिभूयसर्वामृद्धिमार्धोत्सर्वामृद्धिमृधोति य एवं वेद॥ सृध्यास्मंहृव्यैर्नमंसोपसद्यं॥ मित्रं देवं मित्र्धेयंनो ऋस्तु॥ ऋनूराधान् हृविषांव्धयंतः। शृतंजींवेमश्ररदः सर्वीराः। त्रीणिं-त्रीणि वै देवानांमृद्धानिं। त्रीशिच्छन्दाः सित्रीशि सर्वनानि त्रयं इमे लोकाः। मध्यामेवतद्वीर्यं एषु लोकेषु प्रतितिष्ठति॥ (यनुर्वेद - ब्राह्मण)

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मशा प्रत्युत्तर दें। सर्वेषांमहाजनान्नमस्कुर्वाशाय ऋशीर्वचनमपेक्षमाशायाद्य करिष्यमाश

सोमाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मगाः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

(ब्राह्मरा कहते हैं)—अमध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बार मन्त्र पाउ करते हुए उत्तरकलश से नी चे एखे पात्र में जल छोड़ना चाहिये।

ॐ श्रिये जातः श्रियऽमानिरियाय श्रियंवयोजितिम्योदधाति।

श्रियुं वसांना त्रमृत्त्वमांयुन् भवंतिस्त्यासंमिथामितद्रौं ॥ (मावेद £. £४.४)

श्रिय एवैनं तिच्छ्रयामादधाति संततमृचा वषट् कृत्यं संतत्यैसंधीयते प्रजया पशुभिर्यएवं वेद।

यस्मिन्ब्रह्माभ्यजंय त्सर्वंमेतत् ॥ ऋमुञ्चलोकमिद्मूंच्संवं ॥ तन्नो नक्षंत्रमभिजिद्विजित्यं॥

श्रियं दधात्वहंशीयमानं ॥ ऋहें बुंधिय मंत्रंमे गोपाय। यमृषंयस्त्रयीविदाविदुः॥

सृचुः सामांनि यज्ँषि। सा हि श्रीरुमृतांसृतां। (यजुर्वेद - ब्राह्मरा)

इसके बाद पुन: नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनात्रमस्कुर्वाणाय ग्राशीर्वचनमपेक्षमाणायसोमाद्भुत शान्त्याख्याय कर्मगाः श्रीरस्त्वित भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मगा कहते हैं) — अग्रस्तु श्रीः। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं परि पूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मरा स्राशीर्वाद देते हैं सो साल पूर्ण हो। अप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता आप पर प्रसन्न हो।) the complete property is a superior of the contract of the con

ॐ शुक्रेभिरंगैरजं स्नातत्त्वान् क्रतुं पुनानः क्विभिः पवित्रैः।

शोचिर्वसांनः पर्यायुर्पां श्रियोंमिमीते बृहतीरनूंनाः ॥ (मावेद ३.१.४)

तदप्येषः श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे ॥ त्राविक्षितस्य कामप्रे विश्वेदेवाः सभासद इति ॥

इसके पश्चात् उत्तरकलश को दाहिने हाथ में एवं दक्षिण दिशा में रखे कलश को बायें हाथ में लेकर दोनों की धाराग्रों को मिलाकर नीचे रखें पात्र में मन्त्रोच्चारण करते हुए छोड़ना चाहिये। वास्तोष्पत इति चतसृणां विसष्टो वास्तोष्पति स्त्रिष्टुबंत्यागायत्री उदकसेचने विनियोग:।

ॐ वास्तोंष्यते प्रतिंजानीह्यस्मान्स्वांवेशो स्रंनमीवो भंवानः।

यत्त्वेमंहे प्रतितन्नोंजुषस्वशंनोंभवद्विपदेशं चतुंष्पदे॥ (मण्वेद ७.४४.१)

ॐ वास्तोंष्पते प्रतरंशोन एधिगयु स्फानोगोभिरश्वेंभिरिंदो।

त्रुजरांसस्ते सुख्ये स्यांमिपतेवं पुत्रान् प्रतिनो जुषस्व ॥ (म्रावेद ७.४४.२)

ॐ वास्तोष्यते श्रामयां संसदांतेसक्षीमहिंर्रवयांगातुमत्यां।

पाहिक्षेमंउतयोगेवरंनोयूयंपांतस्वस्तिभिः सदांनः ॥ (म्रावेद ७.४४.३)

ॐ स्रुमीवृहा वांस्तोष्पते विश्वांरूपारायांविशन्। सरवांसुशेवंएधिनः।। शिवं शिवं शिवं।। (भावेद ७.४५.१)

इसके पश्चात् पात्र में स्थित जल से यजमान का ग्रमिषिञ्चन नीचे लिखे मन्त्रों से करना चाहिये।

समुद्रज्येष्ठा इति चतसृगां वसिष्ठ ग्रापस्त्रिष्टुप्। त्रायंतामिति तिसृगां विश्वमित्र जमदग्निवसिष्ठा ग्रापोनुष्टुप्। इमा ग्राप इति तिसृगामैतरेय ग्रापोनुष्टुब्जगत्यनुष्टुभः।

देवस्यत्वेत्यस्यैतरेयः सविताश्विनो पूषाच यजुः। समस्त व्याहृतीनां परमष्टी प्रजापितः प्रजापितर्बृहृती। स्रभिषेके विनियोगः।

अ समुद्रज्येष्ठाः सल्तिलस्य मध्यांत्पुनानायंत्यनि विशमानाः। इद्रोया वृजी वृष्मोररादुता स्रापों देवीरिहमामंवंतु ॥ (ऋग्वेद ७.४६.१) ॐ या त्रापों दिव्या उतवास्त्रवंति ख्नित्रिमा उतवायाः स्वयंजाः। सुमुद्रार्थायाः शुचंयः पावकास्ता स्रापों देवीरिहमामंवंतु॥ अ यासां राजा वर्रुगो याति मध्ये सत्यानृते ऋवपश्यं जनानाम्। म्धुश्चृतः शुचंयो याः पांवकास्ता स्रापों देवीरिहमामंवंतु॥ अ यासां राजा वर्रुगो यासु सोमो विश्वेदेवायासूर्जं मदंति। वैश्वान्रोयास्वृग्निः प्रविष्टस्ता स्रापों देवीरिहमामंवंतु ॥ (म्रावेद ७.४६.२-३-४) अ त्रायंतामिहदेवास्त्रायंतां मुरुतां गुराः। त्रायंतां विश्वांभूतानि यथायमंरूपा ऋसंत्॥ ॐ त्राप् इद्वा उंभेषुजीरापों त्रमीवचातंनीः। त्रापः सर्वस्य भेषुजीस्तास्तेंकृरावन्तु भेषुजम्॥ ॐ हस्तांभ्यां दशंशाखाभ्यां जिह्वावाचः पुंरोग्वी। ऋनाम्यित्नुभ्यांत्वाताभ्यांत्वोपंस्पृशामसि॥ (ऋषेद १०.१३७.५-६-७) ॐ इमा ग्रापं: शिवतंमा इमा: सर्वंस्य भेषजी:। इमा राष्ट्रस्य वर्धंनीरिमाराष्ट्रभृंतोमृतां:॥ ॐ याभिरिन्द्रमभ्यिषंचत्प्रजापंतिः सोम्राजानं वर्रुगां यम् मन्।

ताभिरुद्धिरभिषिञ्चाम् त्वाम्हं राज्ञां त्वमंधि राजो भंवेह॥

- ॐ मुहांतंत्वामुहीनांसुम्राजंचर्षराीुनां देवीजनित्र जीजनद्भद्राजनित्र्यजीजनत्॥
- ॐ देवस्यं त्वा सवितुः प्रंस्वेशिृनोंर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्तांभ्याम्ग्रेस्तेजंसा सूर्यस्य वर्च्सेद्रंस्येंद्रियेगााभिषिंचामि॥ (यजुर्वेद १ काराड-१ प्रश्न-४ अनुवाक-१० मन्त्र)

बलायिश्रयैयशसेन्नाद्याय। अभूर्भुव: स्व: ग्रमृताभिषेकोग्रस्तु॥ शान्ति: पृष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। इसके बाद दो बार ग्राचमन करें। पुरायाह वाचन पवित्रता के लिए किया जाता है। इसके चार विभाग कर सकते हैं (प्रयोग की दृष्टि से)—

- १. मगडलरचना-कलशस्थापन।
- २. ब्राह्मगों को द्रव्यादि दान—खडे होकर उत्तर कलश से जल छोड़ते हुए मन्त्र पठन।
- ३. दोनों कलशों को दोनों हाथों मे लेकर उन्हे नीचे रखे पात्र में छोड़ते हुए करने वाले मन्त्र पठन।
- ४. पात्र में स्थित जल से यजमान, उपस्थित ब्राह्मण, यज्ञस्थल एवं सामग्रियों पर प्रोक्षण विशेषत: यजमान का ग्रिभिषञ्चन। इसके ४-५ प्रकार प्रचलित है। परन्तु उपरिलिखित विधान वैदिकों में ग्रिधिक मान्यता प्राप्त है।

पुरायाह वाचन प्रकररा समाप्त

पुर्याह बाचन में कर्माङ्ग देवता प्रीयतां कहना पड़ता है। विवाह में पुर्याह करने पर कर्माङ्ग देवता—ग्रिगः प्रीयताम्। ग्रीपासन होम में पुर्याह करने पर कर्माङ्ग देवता—ग्रिगः प्रीयताम्। गर्भाधान संस्कार में पुर्याह करने पर कर्माङ्ग देवता ग्रिगः प्रीयताम्। गर्भाधान संस्कार में

पुरायाहकरने पर कर्माङ्ग देवता ब्रह्मा प्रीयताम्। पुंसवन संस्कार में पुरायाह करने पर कर्माङ्ग देवता प्रजापितः प्रीयताम्। सीमांत संस्कार में पुरायाह करने पर कर्माङ्ग देवता धाता प्रीयताम्। जातकर्म संस्कार में पुरायाह करने पर कर्माङ्ग देवता मृत्युः प्रीयताम्। नामकरर्गा, निष्क्रमर्गा (बच्चे को घर से पहली बार बाहर लाना) अत्र प्राशन संस्कार में पुरायाह करने पर कर्माङ्ग देवता सिवता प्रीयताम्। चौल संस्कार में पुरायाह करने पर कर्माङ्ग देवता केशिनः प्रीयताम्। उपनयन संस्कार में पुरायाह करने पर कर्माङ्ग देवता इन्द्रः श्रद्धा मेधाः प्रीयंताम्। मेघाजनन (उपनयन के चीथे दिन) पुरायाह करने पर कर्माङ्गदेवता सुश्रवाः प्रीयताम्। पुनरुपनयन (प्रायश्चित) संस्कार में पुरायाह करने पर कर्माङ्ग देवता ऋग्निः प्रीयताम्। समावर्तन संस्कार में पुरयाह करने पर कर्माङ्ग देवता **इन्द्रः प्रीयताम्।** उपाकर्म, महानाम्नि, महाव्रत, उपनिषत्, गोदान इन कर्मी में पुरायाह करने पर कर्माङ्गदेवता—सविता प्रीयताम्। वास्तुहोम में दो बार पुरायाह होता हैं—पहले बार कर्माङ्ग देवता-वास्तोष्पतिः प्रीयताम्। दूसरी बार पुरायाह के कर्माङ्ग देवता-प्रजापतिः प्रीयताम्। त्राग्रयरा (नूतन धान्य खाने से पूर्व करने वाला) संस्कार में कर्माङ्गदेवता-त्राग्रयरा देवता: प्रीयताम्। सर्पबलि संस्कार में पुरायाह करने पर कर्माङ्गदेवता सर्पाः प्रीयंताम्। तडागादि (तालाब म्रादि निर्माश में) पुरायाह करने पर कर्माङ्ग देवता (वरुराः प्रीयताम्।) ग्रह यज्ञ में पुरायाह करने पर कर्माङ्ग देवता नवग्रहाः प्रीयंताम्। कूष्मांड होम, चान्द्रयरा एवं ग्रग्न्याधान में पुरयाह करने पर कर्माङ्ग देवता-ग्रग्न्यादयः प्रीयंताम्। (दक्षिराग्रि म्राईपत्य म्राहवनीय तीन म्रिग्नयों को म्रिग्नमन्थन से म्रिग्न को प्रज्वलित कर विधि पूर्वक स्थापित करने का विधान मग्न्याधान कहलाता है। म्रिग्निष्टोम (सोमयाग) में पुरायाह करने पर कर्माङ्ग देवता **ऋग्निः प्रीयताम्।** शेष सभी काम्य कर्म वाले यज्ञों में पुरायाह करने पर कर्माङ्ग देवता-प्रजापितः प्रीयताम्। उदाहररा—सर्वाद्भुत शान्ति में कर्माङ्गदेवता-प्रजापतिः प्रीयताम्।

पुरायाह प्रकररा समाप्त

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भत शान्ति यज्ञ

प्रथम दिन

नान्दि श्राद्ध प्रकरगा

देव कार्य करने से पूर्व पितृ कार्य करना ग्रावश्यक है। ग्रत: सभी यज्ञों में एवं सभी संस्कारों में जहाँ भी पुरायाह वाचन होता है वहाँ नान्दी श्राद्ध ग्रावश्यक है।

कुर्याच्य कर्ता स्वयमेव तत्र नान्दीमुख श्राद्धमथोपचारै:। उद्दिश्य देवान् पितृभिः समेतानावाह्य विप्रद्वितये यथोक्तान्।। त्रर्चासनावाहन सार्घ्यतोय गन्धाक्षतैः पुष्पसपाद्यधूपैः। दीपांजनाच्छादन नत्युपेतैः कराम्बुधारान्तरितैर्ययावत्।। (लक्षण संहिता)

यजमान सभी कर्मों के प्रारम्भ में पितरों से युक्त देवताओं को लक्ष्य करके स्वयं नान्दी श्राद्ध करना चाहिये। इसमें किनष्ट दो ब्राह्मशों को ग्रासन, ग्रावाहन, ग्रर्ध्य, ग्राचमन, गन्ध, ग्रक्षत, पुष्प, धूप, ग्रंजन, ग्राच्छादन, नमस्कारों से पूजन करना चाहिये। में जल देते हुए करना चाहिये।

पितृगां च गगाः सप्त त्रिषु लोकेषु विश्रुताः। ग्रमूर्ताश्च समूर्ताश्च द्विधा भिन्नाः प्रकीर्तिताः॥ ग्रिया घ्वात्ताबर्हिषदः ग्राज्यपाः सोमपा इति। ग्रमूर्तास्तेषु चत्वारः पितरश्च पितामहाः॥ प्रिपतामहास्तथा प्रोक्ता समूर्तास्तेष्वितित्रयः। ग्रमूर्ता देवकार्येषु समूर्ताः पितृकर्मसु॥ ग्रिपिजह्वा विश्रवेवा द्विधा स्मृताः। नान्दीमुखे सत्यवसू काम्यके धुरिलोचनौ॥ कृतुदक्षावुत्सवे तु पार्वगो च पुरूरवौ। सिपगडीकरण श्राद्धे ग्रष्टकायां तथैव च॥

190

विश्वेदेवाः कालकामौ विप्रजिह्या दशस्मृताः। अग्रिजिह्यास्त्रयः प्रोक्ता विह्नस्थास्ते त्रयः स्मृताः॥ (लक्षण संहिता) इत्येते तिद्वशेषज्ञैर्विश्वेदेवास्त्रयोदश। तीनों लोको में सात पितृगण (समूह) प्रसिद्ध है। उनमे दो भाग है एक-अमूर्त (शरीर हीन) दूसरा-समूर्त (आकार युक्त)। उनमें—अमूर्त के चार भाग है। १. अग्रिष्वात्ता (अग्रि में वास करने वाले), २. बर्हिषदः (कुश में रहने वाले), ३. आज्यपाः (घी पीने वाले), ४. सोमपाः (सोमपान करने वाले)

पिता-पितामह एवं प्रिपतामह समूर्त वर्ग में त्राते हैं। देवकार्य में (यज्ञ यागादियों में) त्रमूर्त पितरों का पूजन करना चाहिये। पितृकार्यों में समूर्तों को (पिता-पितामह-प्रिपतामह) पूजन करना चाहिये। विश्वेदेवों का दो भाग है। ये हमेशा पितरों के साथ रहते है। उनके रक्षक देवता है। इनके दो भाग है—

- १. म्रिग्निह्या—मृग्निद्धारा हिवस् स्वीकार करने वाले विश्वदेव। ये तीन हैं। ये मृग्नि में वास करते हैं। इनहें मृग्निजिह्वा नाम से ही जाना जाता है।
- २. विप्रजिह्वा ब्राह्मशों के मुख (जिह्वा) द्वारा आहर स्वीकार करने वाले विश्वदेव। इनके दस देवता हैं। नान्दीमुख में सत्य एवं वसु, काम्य श्राद्ध में धूरि एवं लोचन, रथोत्सव म्नादियों में क्रतु एवं दक्ष, पार्वश (विशेष समय पर-मासिक म्नादि) पुरु एवं रव, सिपरडीकरश श्राद्ध में काल एवं कामयेदस विश्वदेवता विप्रजिह्व कहलाते हैं।

दत्वा तराडुलपूर्रापात्रयुगले संकल्य भुक्तिं तयोः। ताम्बूलादि सुदक्षिगान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्।। (लक्षण संहिता) चावल से भरे दो पात्रों मे उनके भोजन का संकल्प करके ताम्बूल दक्षिगादि सभी देकर ग्रन्त में विसर्जन करना चाहिये। (इनमें ग्राहार के बदले कच्चा पदार्थ ग्रर्थात् चालव, सब्जी, दाल ग्रादि कच्चे पदार्थ ब्राह्मगों को संकल्प करके दिया जाता है।) प्रयोग ग्रागे है। यह मात्र विषय की जानकारी है। नान्दि श्राद्ध के दो प्रकार है—

१. स्वार्थ — ग्रपने लिए जब करते हैं। तब समूर्त पितरों का श्राद्ध ग्रर्थात् पिता-पितामह-प्रपितामह माता-पितामिह-प्रपितामिह सपत्नीक मातामह-

सपत्नीक मातृपितामह, सपत्नीक मातृप्रपितामह (इन नौ पितरों को पूजना चाहिये)।

- २. विश्वकल्यागार्थं या परार्थ, उत्सवादि में स्रमूर्त पितरों का पूजन—
- १. ग्रिग्रिष्वात्ता, २. बर्हिषद:, ३. ग्राज्यपा:, ४. सोमपा इन पितरों का पूजन करना चाहिये।

 संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य (देश काल को बताकर)करिष्यमार्गा मंगलकार्याङ्गभूतं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धं च

 करिष्ये। (मातृका पूजन एवं नान्दी श्राद्ध करना है)। पुर्याह कलश के दक्षिर्गा में नान्दी दो मर्गडल

 दो पात्रों में भोजन के लिए ग्रावश्यक चावल, सब्जी, दाल, मेवा दक्षिर्गा रखें।

 मातृका पूजनम्—पान सुपारी दक्षिर्गा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका ग्रावाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये।

 नान्दी मर्गडल के ग्रागे मातृका पूजन करना चाहिये।

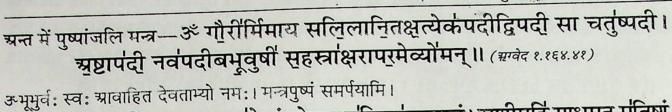
ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णावी तथा। वाराही तथेन्द्राग्गी चामुग्रडाः सप्तमातरः॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

सात मातृकायें।

गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः

धृतिः पुष्ठिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः (गौर्यादि षोडश मातृकायें)॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः ग्रावाहयामि । विनायकं ग्रावाहयामि । दुर्गा ग्रावाहयामि । क्षेत्रपालं ग्रावाहयामि । ग्रापतिं ग्रावाहयामि । मातृस्वसारं ग्रावाहयामि । एताभ्यो देवताभ्यो नमः । ध्यायामि । ध्यानं समर्पयामि । इनका षोडशोपचार पूजन करना याहिये । उदाहररा — ग्रावाहित देवताभ्यो नमः । ग्रासनं समर्पयामि ग्रादि । षोडशोपचार पूजन संक्षेप में करें । (गरोश पूजन में है ।)

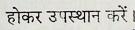


तदंस्तु मित्रावरुगा तद्री शं योरूसमभ्यंमिदमंस्तुशस्तं। ऋशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नेमोदिवे बृंहते सादंनाय॥ (ऋखेद ४.४७.७)

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तंतत्प्रतिष्ठि ततमयावाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पश्ँक्षभते गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठाप्रतिष्ठा। इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढ़ायें।

नान्दी श्राद्ध—ॐ ग्रानों भुद्राः क्रतंवो यंतुविश्वतोऽदंब्धासो ग्रपंरीतास उद्भिदंः। देवानो यथासदुमिद्धधे ग्रसन्नप्रायुवोरिक्षतारों दिवेदिवे॥ (मण्वेद १. = £.१)

असत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। अभूभुवंः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। सोमयाग, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, ग्राधान इन कर्मों के प्रङ्गभूत नान्दी श्राद्ध में क्रतु दक्ष संज्ञक विश्वेदेव ग्रन्य सभी संस्कारों में सत्यवसु संज्ञक विश्वेदेव कहना चाहिये। मातृपितामहोप्रपितामहाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। अभूभुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। अभूभुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। सपत्नीक मातामह मातृपितामहाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। अभूभुवः स्वः इयं च उस पर से जल छोडें। सपत्नीक मातामह मातृपितामह मातृपितामहाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। अभूभुवः स्वः इयं च



- ॐ उपांस्मै गायतान्रः पर्वमानायेन्द्वे। स्रुभिदेवाँऽइयंक्षते॥
- ॐ मुभिते मध्नापयोथंवींगो म्रशिश्रयुः। देवं देवायं देव्यु॥
- ॐ सर्नः पवस्व शंगवे शंजनांयशमवीते। शंरांजुन्नोषंधीभ्यः॥
- ॐ ब्रुभ्रवेनुस्वतंवसे रूगायंदिविस्पृशे । सोमांय गाथमंर्चत ॥ (म्रावेद ६.११.सम्पूर्ण सूक)
- ॐ हस्तंच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावाधांवता मधुं॥ ॐ म्रक्षुन्नभी मदन्तह्यवंप्रिया म्रंधूषत म्त्रस्तोषत् स्वभांनवो विप्रा नविष्ठया मृती योजान्विन्द्र ते हरीं॥ (ऋखेद १. =२.२)
- ॐ प्रजांपतेनत्वदेतान्य न्यो विश्वांजातानि परिताबंभ्व।
- यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों ऋस्तु व्यं स्यांम्पतंयोरयी्गाम्॥ (भावेद १०.१२१.१०)

कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य प्रतिष्ठाफलिसद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये। कहकर हाथ में दक्षिण लेकर उस पर जल छोड़कर नीचे रख दें।

प्रार्थना— मातापितामही चैव तथैव प्रपितामही। पितापितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः॥

मातामहस्तित्पताच प्रमातामहकादयः। एतेभवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्।।

कहकर जल छोड़े। ग्रनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंतां। ग्राचम्यमंगलाक्षतकुंकुमादि धारण करें। विसर्जन — यज्ञ पर ग्रन्तिम दिन में, उपनयन में व्रत समाप्ति पर विवाह में व्रतसमाप्ति पर प्रायः हर कर्म की समाप्ति पर विसर्जन निम्न मन्त्र से करना चाहिये।



वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें। सपत्नीक मातामह मातृपितामह मातृप्रपितामहाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मशाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। अभूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, ग्रक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोड़ें। मातृपितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूभुवः स्वः इयं च वृद्धिः। हाथ में गंध ग्रक्षत पुष्प दूर्वा लेकर उस पर जल छोडें।

सपत्नीक माता मह मातृपितामह मातृपितामहाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। हाथ में गंध ग्रक्षतपुष्पदूर्वा लेकर उस पर जल छोडें।

ॐभूभुर्व: स्व: सत्यं त्वर्तेनपरिषिञ्चामि कहकर मगडल पर रखें दोनो पात्रों को परिषेचनकर दक्षिण दिशा के पात्र को ''इदं विश्वेभ्यो देवेभ्य:। उत्तर दिशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्य:। कहकर दान संकल्प कर—ब्राह्मणों को दे देवें।

सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बुल दक्षिण पर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये।

मातृपितामहीप्रिपितामह्यः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदिक्षणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दिक्षणा पर जल छोड़कर नीचे रखें। पितृपितामहप्रिपतामहाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदिक्षणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। सपत्नीक मातामह मातृपितामह मातृप्रिपतामहाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बुलं सदिक्षणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दिक्षणा पर जल छोडकर नीचे रखें। ग्रागे लिखें मन्त्रों से खड़े



ॐ इळांमग्रेपुरुदसंसिनिंगोः शश्चित्तमं हवंमानायसाध।

स्यान्नः सूनुस्तनंयोविजावाग्ने सातेंसुमृतिर्भूत्वस्मे॥ (म्रावेद ३.१५.७)

ॐ इळामुपह्वयतेपशवोवा इळापशूनेवतदुपह्वयते पशून्यजमानेदशातिदधाति। (ऋग्वेद ब्राह्मण)

यथाचारं हिरएयेन भाराडवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घराटावादन के बदले)

ॐ उत्तिष्ठब्रह्मरास्पते देवयन्तंस्त्वेमहे। उपुप्रयंन्तु मुरुतः सुदानंव इन्द्रंप्राशूर्भवासचा ॥ (सम्वेद १.४०.१)

ॐ ऋभ्यार्मिदद्रयो निषिक्तंपुष्करे मधुं। ऋवतस्यं विसर्जने। (ऋग्वेद =.७२.११)

यान्तु देवगरााः सर्वे पूजामादायमत्कृतां। इष्टकामार्थसिद्धयर्थं पुनरागमनाय च।। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

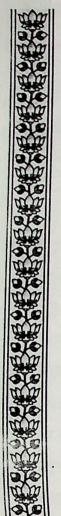
इन मन्त्रों से ग्रावाहित देवताग्रों को उठाना चाहिये।

प्रमारा (विचार)—गौर्यादि मातृकापूजनं नान्दी श्राद्धाङ्गम्।

गौर्यादि मातृकापूजन नान्दी श्राद्ध के ग्रङ्ग है, स्वतन्त्र नहीं। **यत्र नान्दी श्राद्धं न क्रियते तत्र मातृकापूजनमपि न कार्य** जहाँ नान्दी श्राद्धं नहीं करते हैं वहाँ मातृकापूजन भी न करें।

स्वार्थ नान्दी श्राद्ध करने वालों के कुछ नियम। ये यज्ञ में ऋवश्यक नहीं है ऋतः ऋर्थ नहीं लिखा है।

तत्रपूर्वं मातृपार्वगां ततः पितृपार्वगां ततः सपत्नीक मातामह पार्वगां इति पार्वगा त्रयात्मकं नान्दी श्राद्धं। मातृजीवने सपत्नमातृमरगोपि न मातृपार्वगां। एवं मातामहीजीवने मातामहीसपत्नीमरगोपि न मातामहादेः सपत्नीकत्वं। स्रत्र कर्तुजीवित्पतृकत्वे निर्गयः। जीवेन्तु यदि वर्गाद्यस्तंवर्गं तुपरित्यजेदितिन्यायेन



जीवित्पतृकः स्वापत्संस्कारेषु मातृमातामहपार्वगायुतं नान्दी श्राद्धं कुर्यात्। मातारि जीवत्यां मातामहपार्वगामेकमेव। मातामहे जीवित मातृपार्वगामेकमेव। केवल मातृपार्वगो विश्वेदेवा न कार्याः। वर्गत्रयाद्योषु मातृपितृ मातामहेषु जीवस्तु नान्दी श्राद्ध लोप एव सुतसंस्कारेषूचितः। द्वितीय विवाहाधानपुत्रेष्टि सोमयागादिषु स्व संस्कार कर्मसु येभ्य एव पितादद्यात्तेभ्योदद्यातुतस्सुतः। तथा च मृतमातृमातामह कोपिजीवित्पत्रृक स्वसंस्कारे पित्मातिपितामही प्रपितामहाः पितुः पितृपितामहप्रपितामहाः पितुर्मातामहमातृपितामह मातृपितामहा इत्येव पार्वग त्रयुमुद्दिश्यश्राद्धं कुर्यात्। न तु

द्वितीय विवाहाधानपुत्रीष्ट सामयागादिषु स्व सस्कार कमसु यस्य एवं पितादिद्यातम्बद्धातुतस्तुतः। तथा च नृतनातृनातान् वर्णा प्राप्तानाः पृत्तानित्र प्राप्तामहाः पितुर्मातामहाः पित्तामहोप्रितामहाः इत्याद्यदेशः। एवं प्रितामहेपियोज्यं। पितुर्मात्रादि जीवने तत्पाविण लोप एव। तथा च येभ्य एव पितादद्यादितिपक्षस्य वर्गाद्य जीवने तत्पाविण लोप इति द्वारलोपपक्षस्य च स्वसंस्कार स्वापत्यसंस्कार भेदेन व्यवस्था सिद्धांतितेति ज्ञेयं। केचिन्तु पक्षद्वस्यस्यैच्छिकोविकल्पो न तु व्यवस्थित इत्याहुः। एवं मृत पितृकस्य जीवन्मातृमातामहस्य पितृपार्वगोनैव नांदी श्राद्धसिद्धर्ज्ञेया। समावर्तनस्य मागावक कर्तृत्वेपितदंगभूत नान्दी श्राद्धे पितुस्तदभावे ज्येष्ठभ्रात्रा देरिधकार इति केचित्। तत्र पितापुत्र समावर्तने स्विपतृभ्यो नान्दी श्राद्धं कुर्यात्। पिताजीवित्पतृकश्चेत्सुत संस्कारत्वात् द्वारलोप पक्षेयुक्त इतिभाति।

मागावकिपतुः प्रवासादिना ग्रसंनिधाने भ्रात्रादिर्मागावकस्य पितुर्मातृपितामहीप्रिपितामह्य इत्याद्युच्चार्यश्राद्धंकुर्यात्। मृत पितृक मागावक समावर्तने पितृव्य भ्रात्रादिरस्य मागावकस्य मातृपितामहीत्याद्युच्चारयेत्। भ्रात्रादेरभावे स्वयमेव पितृभ्यो दद्यात्। एवं जीवित्पतृकोपिपितुरसित्रधाने भ्रात्रादेरभावे पितृः पितृभ्यः स्वयमेव नांदीमुखं कुर्यात्। उपनयनेनकर्माधिकारस्य जातत्वात्। एवं विवाहे पि द्रष्टव्यं।

मृत पितृकस्य चौलोपनयनादिकं पितृव्यमातुलादिः कुर्वन् ग्रस्य संस्कार्यस्य पितृपितामहेत्याद्युच्चार्य श्राद्धं कुर्यात्। जीवतः पितुरसिन्नधानेन कुर्वन् मातुलादिरस्य संस्कार्यस्य पितुर्जनकादीनुद्दिश्य कुर्यात्रतु संस्कार्यस्य मृतानिप मात्रादीनिति संक्षेपः।

नान्दी श्राद्धं प्रकरश समाप्त

90

देवनान्दी — देवनान्दी में मातृका पूजन ग्रावश्यक नहीं है। यज्ञ,(ग्रतिरुद्र, सहस्रचर्गडी) रथोत्सव ग्रादि सार्वजनिक ग्राचरगों में देवनान्दी ही करना चाहिये। क्रुतुदक्षावुत्सवे तु। इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। ग्रमूर्त्य।

१. ग्रिष्यात्ता, २. बर्हिषद:, ३. ग्राज्यपा:, ४. सोमपा:

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमारा कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मराडल बनायें।

दत्वातराडुलपूर्रापात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः। ताम्बूलादि सुदक्षिरान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्।। (लक्ष्या संहिता)

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, म्रादि दो मगडलों पर रखें।

ॐ म्रानों भुद्राः क्रतंवो यंतुविश्वतोदंब्धसो म्रपंरीता स उद्धिदंः। देवानो यथासदुमिद्वधे ऋसून्न प्रांयुवोरिक्षतारों दिवे दिवे। (ऋषेद १. = £.१)

ॐ क्रतुदक्षसंज्ञका विश्वेदेदेवा:—नान्दीमुखा: ठभाभ्यां ब्राह्मशाभ्यां इदं व: पाद्यं इदं नम:। भूभुर्वस्व: इयं च वृद्धि:। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। त्रग्निष्वात्ताः पितृगर्गाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मशाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

विहिषदः पितृगरागः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मशाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **म्राज्यपा: पितृगराा:**—नान्दीमुखा: उभाभ्यां ब्राह्मरााभ्यां इदं व: पाद्यं इदं नम:। भूभ्व: स्व: इयं च वृद्धि:। इससे भी दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। सोमपा: पितृगराा: नान्दीमुखा: उभाभ्यां ब्राह्मर्शाभ्यां इदं व: पाद्यं इदं नम:। भूर्भुव: स्व: इयं च वृद्धि:। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस



पर से जल छोडें।

ॐ क्रतुदक्ष संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध म्रक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ॐ म्राग्निष्वाः पितृग्गाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदं म्रासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध म्रक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। बिहिषदः पितृगगाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध म्रक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। म्राज्यपाः पितृगगाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, म्रक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।

सोमपा: पितृगरा: नान्दीमुखा: उभयो: ब्राह्मरायो: इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नम:। भूर्भूव: स्व: इयं च वृद्धि:। गन्ध, ग्रक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। अभूर्भुव: स्व: सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मरहल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिगादिशा के पात्र को ''इदं विश्वेभ्यो देवेभ्य:'' उत्तरदिशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्य:'' कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मराों को दे देवें।

क्रतुदक्षसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदिक्षणाकं स्वाहा नमः। भूर्मुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दिक्षणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। अग्निप्रवाः पितृगर्गाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदिक्षणाकं स्वाहा नमः। भूर्मुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दिक्षणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये। बिहंषदः पितृगर्गाः नान्दीमुखाः गुग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदिक्षणाकं स्वाहा नमः। भूर्मुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दिक्षणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। आज्यपाः पितृगर्गाः नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदिक्षणाकं स्वाहा नमः। भूर्मुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दिक्षणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये।

सोमपाः पितृगरााः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मरा भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिराकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिरा। पर जल छोड्कर नीचे रखना चाहिये। स्रागे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

- ॐ उपांस्मै गायता न्रः पर्वमानायेन्दंवे। स्रुभिदेवाँऽइयंक्षते। (सप्वेद £.११.१)
- ॐ स्रुभिते मध्ना पयोर्थर्वासाो स्रशिश्रयुः। देवं देवायं देव्यु। (सप्वेद £.११.२)
- ॐ स नं: पवस्व शंगवे शंजनांयशमवीते। शंरांजुन्नोषंधीभ्यः। (सप्वेद £.११.३)
- ॐ बुभ्रवेनु स्वतंवसेरुगायं दिविस्पृशें। सोमांय गाथमंर्चत ॥ (मग्वेद £.११.४)
- ॐ हस्तंच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावाधांवता मधुं॥ (ऋषेद £.११.५)
- ॐ ऋक्षुन्नमीं मदन्तुह्यवंप्रिया ऋंधूषत । ऋस्तोंषतु स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मृती यो जान्विन्द्र ते हरीं ॥ (ऋखेद १. =२.२)
- ॐ प्रजांपृतेनत्वदेतान्युन्यो विश्वांजातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों ऋस्तु वृयं स्यांमुपतंयोरयी्गाम्॥

(स्ग्वेद १०.१२१.१०)

कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिशीं दक्षिशां दातुमहमुत्सृजे। कहकर हाथ में दक्षिशा लेकर उस पर जल छोडकर नीचे रख दें।

प्रार्थना—ग्रिग्रिष्वात्वा बर्हिषदः ग्राज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्।। कहकर जल छोड़ें। ग्रनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। ग्राचम्य—मंगल तिलक रकें। विसर्जन—यज्ञ के ग्रन्तिम दिन विसर्जन करें।

ॐ इळांमग्नेपुरुदंसंसिनिंगोः शश्चत्तंमं हर्वमानायसाध। स्यान्नः सूनुस्तनंयो विजावाग्ने सातेंसुमृतिर्भूत्वस्मे॥ (सप्वेद ३.१५.७)

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

अ इळामुपह्यते पशवो वा इळापशूनेवतदुपह्यते। पशून्यजमानेद्धाति द्धाति ॥ (मण्वेद ब्राह्मण)

यथाचारं हिरग्येन भागडवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घगटा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१—म्राचाय, एक कुगड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिण में १-इतर पूजन, पश्चिम में १-तर्पण के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मण-कुल ५ पंगिडत रहने पर

१५ परिडत से संपन्न कर्म में—२-१५ परिडत कर्म में (एक कुराड में), २-१५ परिडत से संपन्न याग में—१ म्राचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्परा पूजन, १-परिचारक ब्राह्मरा, £-मृत्विज होम के लिए

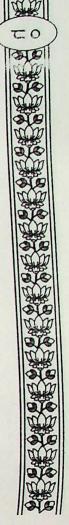
३-५५ परिडत से संपन्न याग में—१- ग्राचार्य (५ कुराड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पर्श के लिए, १-परिचारक ब्राह्मरा, ४५-मृत्विज होम के लिए, ४-ग्रिगुख जानकार उप ग्राचार्य (£×५)

४-१०० परिडत से संपन्न या में—१-ग्राचार्य (£ कुराड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्परा के लिए, ५-परिचारक ब्राह्मरा, ८१-मृत्विज होम के लिए, ६-ग्रिग्निख जानकार उपग्राचार्य (£×£), इसी ग्रनुपात में ग्रिधक संख्या में कर सकते हैं।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मशस्पते देव्यन्त्रंत्वेमहे। उप्प्रयंन्तु मुरुतः सुदानंव इन्द्रंप्राशूर्भवा सर्चा॥ (मावेद १.४०.१) ॐ श्रुभ्यार्मिद द्रंयो निषिक्तं पुष्कंरे मधुं। श्रृवतस्यं विसर्जने॥ (मावेद म.७२.११) यान्तु देवगशाः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्धयर्थं पुनरागमनाय च॥ (ब्रह्मकर्म समुच्य)

(इन मन्त्रों से ग्रावाहित देवताग्रों को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समाप्त



यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि। ऋत्विग्वररणम्—ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्। यूयं तथा मे भवत ऋत्विजोर्हथसत्तमाः॥ (ब्रह्म कर्म समुच्य)

ग्रमुक प्रवरान्वितः ग्रमुक गोत्रः ग्रमुक शर्माहं ग्रमुक प्रवरान्वितं ग्रमुक गोत्रोत्पन्नं ग्रमुकवेदान्तगत ग्रमुकशाखाध्यायिनं ग्रमुकशर्मागां ग्रत्विक्त्वेन त्वां वृरो। वृतोस्मि। यथा ज्ञानतः कर्म करिष्यामि। ऋत्विजो वृत्वा मधुपर्कमाहरेत्। ऋत्विग् वररा के पश्चात् मधुपर्क देना चाहिये।

मधुपर्क मे देय वस्तु (संग्रह)—पाद्यार्थं, ऋर्ध्यार्थं मंत्रवत्त्रिराचमनीयार्थं, शुद्ध ऋष्ट ऋचमनीयार्थं च जलपात्रचृतुष्ट्यं, मधुपर्क कांस्यपात्रं गां, विष्टरं (भ्रासन) च संपाद्य कर्ता ग्राचम्य, प्राणानायम्य, देशकालौ स्मृत्वा, ऋत्विग्म्यः मधुपर्क पूजां करिष्ये। विष्टरः पाद्यं ग्राचमनीयं मधुपर्कः गौः इत्येतेषां त्रिः त्रि एकैकं वेदयन्ते। विष्टरो विष्टरो विष्टरः। प्रतिगृह्यतां। प्रतिगृग्ण्हामि। (ग्रासन, ग्रासन, ग्रासन) स्वीकार करता हूँ।

२५ दर्भाम्रों से बना म्रासन विष्टर कहलाता है। महंवर्ष्मेत्यस्य वामदेवो विष्टरोनुष्टुप् विष्टरोपवेशने विनियोगः।

ॐ म्नहं वर्ष्म सजतानां विद्युतामिव सूर्यः। इदं तमधितिष्ठामियोमाकश्चाभिदासित।। (माश्वलायन गृह्य सूत्र)

इति उदगग्रे विष्टर उपविशेत्। दर्भाग्र उत्तराभिमुख हो। उस पर बैठें। **पाद्यं पाद्यं पाद्यं।** प्रतिगृह्तां। प्रतिगृग्(हामि। (पैरों के लिए जल) (स्वीकार करें)(स्वीकार करता हूँ।) दाहिने पाँव धोयें।

ॐ श्रुस्मित्राष्ट्रे श्रिय् मावेशयाम्यतों देवीः प्रतिपश्याम्यापः॥ दुक्षि्गां पादम्वने निजेऽस्मिन् राष्ट्र इन्द्रियं देधामि॥ (ऋग्वेद ऐतरेय ब्राह्मण) बायें पाँव धोये। ॐ सव्यं पादम्वने निजेऽस्मिन् राष्ट्र इंन्द्रियंवंर्धयामि॥ पूर्वम्न्यमपंरमन्यं पादा्ववंनेनिजे॥



चृत्विग्वरराम् (संकल्प लेकर)—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमारा कर्मीरा ग्राचार्यादि चृत्विग्वररां करिष्ये। ब्राह्मरां संपूज्य ग्रमुक प्रवारान्वितं ग्रमुक गोत्रोत्पन्नं ग्रमुक वेदान्तर्गत ग्रमुख शाखाध्यायिनं ग्रमुक शर्मारां ब्राह्मरां ग्रस्मिन् यज्ञे–

স्राचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पति:। तथा त्वं मम यागेस्मिन् त्र्राचार्यो भव सुव्रत।। त्वां वृग्रो। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

विप्र:-वृतोस्म (मैनें स्वीकार किया है) यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि (यथा ज्ञान कर्म करुँगा)

ब्रह्मवरग—यथा चतुर्मुखोब्रह्मा स्वर्गे लोके पितामहः। तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम।। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

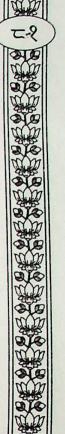
त्रमुकप्रवरान्वितः ग्रमुकगोत्रः ग्रमुकशर्माहं ग्रमुक प्रवरान्वितं ग्रमुकगोत्रोत्पन्नं ग्रमुक वेदान्तर्गत ग्रमुक शाखाध्यायिनं ग्रमुक शर्मागं ब्रह्मागं त्वां वृगो। वृतोस्मि। यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि॥

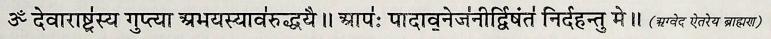
सदस्य वरणम्—त्वंनो गुरु: पितामातात्वं प्रभुस्त्वं परायगं। त्वत्प्रसादाच्चविप्रर्षे सर्वं मेस्यान्मनोगतम्॥ स्नापद्विमोक्षगार्थायकुरुयज्ञमतिन्द्रतः। ऋत्विग्भिः सहितः शुद्धैः संयतैः सुसमाहितैः॥ स्नाचार्येगा च संयुक्तः कुरु कर्म यथोदितं॥ (ब्रह्म कर्म समुच्चय)

अमुकप्रवरान्वितः अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं अमुकप्रवरान्वितं अमुकगोत्रोत्पन्नं अमुकवेदान्तर्गत अमुकशाखाध्यायिनं अमुकशर्मागं सदस्यत्वेन त्वां वृगो। वृतोऽस्मि। यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि।

उपद्रष्ट्वररा—भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतांवर । वितते ममयज्ञेस्मिन्नुपद्रष्टाभवद्विज ॥ (ब्रह्म कर्म समुच्चय)

अमुकप्रवरान्वितः अमुक गोत्रः शर्माहं अमुकप्रवरान्वितं अमुकगोत्रत्पत्रं अमुकवेदान्तर्गत अमुकशाखाध्यायिनं अमुकशर्मागं उपद्रष्टृत्वेन त्वां वृगो। वृतोस्म।





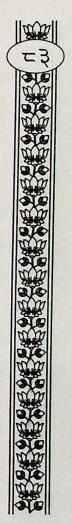
इन मन्त्रों को पढ़कर यजमान जल डालकर हाथ से ऋत्विगों का चरण धोवें।

सकृदाचम्य—एक बार ग्राचमन करके उन्मृग्वेदाय स्वाहा। उन्यजुर्वेदाय स्वाहा। उन्मामवेदाय स्वाहा। उन्म्रथर्व वेदाय नमः। (हाथ धोले) पुनः ग्रध्यमर्ध्यमर्ध्यं। प्रतिगृह्यतां। प्रतिगृह्यतां। (ग्रध्यंजल स्वीकार करें) स्वीकार करता हैं। ग्रध्यं जल को मृत्विक् ग्रञ्जलि में स्वीकार करना चाहिये। ग्राचमनीयं ग्राचमनीयं प्रतिगृह्यतां। प्रतिगृह्यतां। (ग्राचमनीय जल पात्र देवें। स्वीकार करता हूँ।) ग्राचमनीय पात्र को नीचे रखकर एक चमच जल ग्रमृतोपस्तरग्रामिस कहकर पीना चाहिये। पुनः पहले वाले पात्र से एक बार ग्राचमन करना चाहिये। मधुपर्कमािषयमाग्रामीक्षयते मधुपर्क लाते हुए देखना चाहिये। अभित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे॥ (मधुपर्क लाते हुए देखना चाहिये।) मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः। प्रतिगृह्यतां। (मधुपर्क को स्वीकार करें।)

ॐ देवस्यंत्वासिवतुः प्रंस्वेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णो हस्ताभ्यां। प्रतिगृह्णामि। (यनुर्वेद १ काराड-१ प्रश्न-४ मन्त्र)

(मधुपर्क स्वीकार करता हूँ कहकर दोनो हाथों की ग्रञ्जली से मधुपर्क स्वीकार करना चाहिये।) मधुवाता इति तिसृगां राहूगगोगौतम ग्रृषि:। विश्वेदेवा देवता:। गायत्रीच्छन्द:। मधुपर्कावेक्षग्रो विनियोग:।

- ॐ मधुवातां ऋताय ते मधुंक्षरन्ति सिन्धंवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषंधीः॥
- ॐ मधुनक्तं मुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः। मधुद्यौरंस्तु नः पिता॥
- ॐ मधुमान्नो वनस्पित्मिधुमा ऋस्तु सूर्यीः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ (ऋखेद १.६०.६-७-८)





इन मन्त्रों को कहते हुए मधुपर्क देखें। उस पात्र को बाये हाथ में रखकर अङ्गुली पर लगे मधुपर्क को " अवसवस्त्वा गायत्रेग छन्दसा मक्षयन्तु " कहकर उसे पूर्व की ओर उछालना चाहिये। अग्नादित्यास्त्वा जागतेन छन्दसा मक्षयन्तु कहकर उसे पश्चिम दिशा में उछालना चाहिये। अविश्वेत्वादेवा आनुष्टुभेन छन्दसा मक्षयन्तु कहकर उत्तर दिशा में उछालना चाहिये। एक बार लेकर चार दिशाओं में उछालाना चाहिये।) पुनः तीन बार उसी मुद्रा में लेकर (अंगुष्ठ अनामिका मिलाकर) तीन बार अभूतेम्यस्त्वा, अभूतेम्यस्त्वा, अभूतेम्यस्त्वा, अभूतेम्यस्त्वा, कहकर तीन बार अपर उछालना चाहिये। मधुपर्क पात्रं भूमौ निधाय। (मधुपर्क पात्र को भूमि पर रखना चाहिये।) मधुपर्क के एक भाग को हाथ में लेवें।

ॐ विराजोदोहोसि कहकर उसका प्राशन करें। लौकिक उदक (सामान्य पात्र के जल से एक बार ग्राचमन करें।) पुनः एक भाग मधुपर्क (एक चमच) को हाथ में लेवें। ॐ विराजो दोहमशीय कहकर उसका प्राशन करें। लौकिक उदक सामान्य पात्र के जल से एक बार ग्राचमन करें। पुनः एक भाग मधुपर्क को हाथ में लेवें। ॐ मिय—दोहः पद्यायै विराजः कहकर उसका प्राशन करें। लौकिक उदक (सामान्य पात्र के जल से) एक बार ग्राचमन करें।

मधुपर्कशेषं उदगुपविष्टायब्राह्यशाय दद्यात् लोकवि द्विष्टत्वात् ऋप्सु वा क्षिपेत्।

मधुपर्कशेष को उत्तर में बैठे ब्राह्मण को देना चाहिये, नहीं तो उसे जल में छोड़ना चाहिये। मधुपर्क स्वादिष्ट होता है, फिर भी म्रल्प ही लेना चाहिये। ततः पूर्विनिवेदित म्राचमनीयैकदेशं-अमृतापिधानमिस इति पीत्वा लौकिक उदकेन म्राचम्य म्राचमनीय जलशेषं सर्वं गृहीत्वा असत्यं यशः श्री मीय श्रीः श्रयतां इति प्राश्य लौकिकेन उदकेन द्विराचमेत्।

स्रग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

प्रथम दिन

इसमें मन्त्राचमन के लिए एक पात्र होता है, एवं लौकिक ग्राचमन के लिए एक पात्र होता है। मन्त्राचमन तीन बार होता है। १. ग्रमृतोपस्तरणमित। २. ग्रमृतापिधानमित। ३. असत्यं यश: श्री मीय श्री: श्रयतां। इन तीन मन्त्रों से मन्त्राचमन होता है। ग्राठ स्थल पर लौकिक ग्राचमन इस प्रयोग में होता है। ग्रानत्तर पहले बताये गये मन्त्राचमन के भाग—अ ग्रमृतापिधानमित कहकर पीना चाहिये, फिर लौकिक जल से ग्राचमन करना चाहिये। फिर मन्त्राचमन पात्र में शेष सभी जल को हाथ में लेकर ''असत्यं यश: श्रीमीय श्री: श्रयतां' कहकर पी लेना चाहिये। पुन: लौकिक जल से दो बार ग्राचमन करना चाहिये।

ततः दात्रा गौः गौः गौः इति त्रिर्निवेदितां गां निष्क्रयं वा। इसके पश्चात् यजमान तीन बार गाय का नाम लेना चाहिये। गोमूल्य दान देना चाहिये। उस समय कहने वाले मन्त्र—मातारुद्राशामित्यस्य भार्गवो जमदग्निर्गोस्त्रिष्टुप्। गोरुत्सर्जनेविनियोगः।

ॐ मातारुद्रागांदुहितावसूनांस्वसांदित्यानांममृतंस्य नाभिः। प्रनुवोचंचिकितुषेजनांयमागामनांगामदितिं विधष्ट।। (भावेद =.१०१.१५)

कहकर गो को छोड़ना चाहिये। (अउत्मृजत इति विसृजेत्) ततो दाता गंधमाल्यवस्त्र युगोपवीतयुगाभरशादिभिर्यथाविभवं ब्राह्मशान् पूजयेत्॥ ग्रनन्तर दाता पं को देने वाले वस्त्रादि देकर गन्ध पुष्पों से ब्राह्मशों का पूजन करना चाहिये।

मधुपर्क बनाने का विधान—

मया संपूजितैरत्र दक्षिशाभिश्चतोषितै:। क्रियतां (इष्ट) यागो मे प्रार्थयामि प्रसीदत। (मनुष्ठान पद्धति-क्रियासार)

दधनिमध्वानीय सर्पिर्वा मध्वलामे। दही में शहद मिलायें, शहद के ग्रभाव में घी डालें दही न मिलने पर दूध एवं घी मिलाकर मधुपर्क तैयार करें। घी न



मिलने पर दूध एवं गूड मिलाकर मधुपर्क तैयार करें। सभी दानों में यजमान पूर्वाभिमुख बैठें दान लेने वाले उत्तराभिमुख बैठें।

वरस्य या भवेच्छाखा तच्छाखागृह्यचोदितः। मधुपर्कः प्रदातव्यो ह्यन्यशाखेपि दातरि॥ (म्रनुष्ठान पद्धति-क्रियासार)

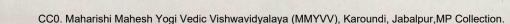
मधुपर्क: देते समय लेने वाले ब्राह्मण के शाखनुसार ही मन्त्रोच्चारण करें उस शाखा के मंत्र न ग्राने पर यजमान की शाखा का मंत्रोच्चारण करें। तात्पर्य ग्राचार्य को जिस शाखा के मन्त्र ग्राते हैं उसी का प्रयोग कर सकते हैं।

पञ्चाशता भवेद्ब्रह्मातदर्धेन तु विष्टरः। ऊर्ध्वकेशो भवेद् ब्रह्मा लम्बकेशस्तु विष्टरः॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय टिप्पणी)

दक्षिणावर्तको ब्रह्मा वामावर्तस्तु विष्टर:। ५० कुशाओं से ब्राह्मासन, २५ कुशाओं से विष्टर तैयार होता है। ब्रह्मासन में अग्रमाग ऊपर होना चाहिये, एवं प्रदक्षिणाकार में इसे लपेटना चाहिये। विष्टरासन में अग्रमाग नीचे होना चाहिये, एवं अप्रदक्षिणाकार में लपेटना चाहिये। ब्रह्मासन में अग्र दिक्षणाभिमुख होना चाहिये। विष्टरासन में अग्रमाग उत्तरिभमुख होना चाहिये। यह आसन की प्राचीन परंपरा है।

मधुपर्क प्रकरश समाप्त

प्रथम दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न





द्वितीय दिन प्रथम प्रहर

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गय:प्लात ऋषि:। विश्वेदेवा देवता:। जगतीछन्द:। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषि:। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्द:। मनुष्य गन्ध निवारगे विनियोग:।

ॐ येभ्यौं मातामध्रमृत् पिन्वंते पर्यः पीयूषं द्यौरदिंतिरद्रिंबर्हाः।

उक्थश्ंष्मान् वृषभ्रान्त्वप्रंस्ताँ ग्रांदित्याँ ग्रनुंमदास्वस्तयें॥ (मक्वेद १०.६३.३)

ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे युज्ञैर्विधेम् नमंसा हविर्भिः।

बृहंस्पते सुप्रजा वी्रवंन्तो व्यं स्यांम् पतंयो रयी्गाम्।। (सक्वेद ४.४०.६)

म्राचमन मन्त्र—मृग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

ऋथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुरारोभ्यो नमः। ऋग्नये नमः। वायवे नमः। प्राराय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै

नमः। ग्रन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मर्रो नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारराम् — पवित्रन्त इत्यनयोः म्राङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्ररो, धाररो विनियोगः।

ॐ पुवित्रंन्ते वितंतं ब्रह्मरास्पते प्रभुगित्रांशि पर्येषि विश्वतं:। ऋतंप्ततनूर्न तदामो ऋंश्नुतेशृता सुइद्वहंन्त्स्तत् समांशत ॥ (स्वेद र. = र.१)





ॐ तपोंष्यिवत्रं वितंतं दिवस्पृदे शोचंन्तो अस्य तन्तंवो व्यंस्थिरन्। स्रवंन्त्यस्य पवीतारं माशवों दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतंसा॥ (ऋषेद ६. =३.२)

ङभूभुर्व: स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये ग्रासन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।) प्रारणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्रारणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्संवितुर्वरेरायं भर्गों देवस्यं धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ ऋापो ज्योती्रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। (ऋग्वेद ३.६२.१०)

करन्यासः ॐ श्रङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रनामिकाभ्यां नमः। ॐ किनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। श्रङ्गन्यास-हृदयादिन्यास ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट्। ॐ कवचाय हुम्।ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ श्रस्त्राय फट्। ॐ भूभृंवः स्वरोमिति दिग्बन्थः।

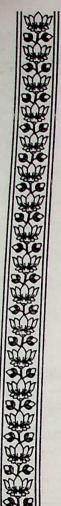
म्रासन शुद्धि—ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशंनी। यच्छां नः शर्मं सप्रथः।' (१४ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मराडल) इस मन्त्र से जल प्रोक्षरा करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्-

ऊर्ध्वकेशि विरूपिक्षि मांसशोगित भक्षगो। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुगडे ह्यपराजिते।। (ब्रह्मकर्म समुञ्जय) (इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महासंकल्प-हेमाद्रि संकल्प

ॐस्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारगस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षगस्य प्रगतपारिजातस्य ग्रशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायगस्य रशैरावृते ग्रस्मिन् महति ब्रह्माग्रङखग्रङे ग्राधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म – शंखाद्यष्टमहानागैध्रियमारो ऐरावत-पुराडरीक-वामन-कुमुद-ग्रञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् ग्रतल-वितल-सुतल-तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकनामुपरिभागे भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लोक - जनोलोक - तपोलोक - सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लोके चक्रवाल शैल - महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफिशा राजशेषस्य सहस्रफशामिशामगडल मिरडिते दिग्दिन्तशुगडादगडोद्दगिडतेग्रमरावत्यशोकवती भोगवती - सिद्धवती- गान्धर्ववती - काशी- काञ्ची - ग्रवन्ती ग्रलकावती यशोवतीतिपुर्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवरोक्षु- सुरा सिर्प - दि धक्षीरोदकार्रावपरिवृते जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च - शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गमस्ति-नाग-सौम्य-गन्धर्व-चारराभारतेतिनव-खरडमरिडते सुवर्रागिरिकार्रिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्जाशत् कोटि योजनविस्तीर्राभूमरुडले ऋयोध्या मथुरा-माया-काशी-काञ्जी-ऋवन्तिकापुरी द्वारा वतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिगो नवसहस्रयोजन विस्तीर्गे मलयाचल-सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्गप्रस्थ-चगडप्रस्थ-चान्द्र-सूक्तावान्तक-रमग्रक महारमग्रक-पाञ्चजन्य-सिंहल लंङ्रेति-नवखराडमरिडते गंगा-भागीरथी-गोदावरी- क्षिप्रा-यमुना- सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा-कावेरी-पयोष्णी-कृष्णवेराी-भीमरथी-तुंगभद्रा-ताम्रपर्गी- विशालाक्षी- चर्मरावती-वेत्रवती- कौशिकी-गरडकी- विश्वामित्रीसरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुरायनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखराडे जम्बूद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ ग्रार्यावर्तान्तरगते ब्रह्मावर्तेकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्गोक्षेत्रे,ज्ञानयुगप्रवर्तकानां महर्षि



महेशयोगिवर्यागां परमाराध्यगुरुदेवै : ग्रन	न्तश्रीविभूषितै: ज्योतिष्पीठाधीश्वरै:	जगद्गुरु श्री मच्छङ्कराचार्य ब्रह्मा	नन्दसरस्वतीमहाभागै:	सुम्पादितशतमखकोटि
होम महायज्ञपावितायां भूमौ	सकलजगत्स्रष्टः परार्थे	द्विय जीविनो ब्रह्मणः द्वितीये पर	ार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे	प्रथम मासे प्रथम पक्षे
प्रथम दिवसे ग्रह्नस्तृतीये पामे तृतीये मुह	तें रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये	ऋष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवा	दि मन्बन्तरासां मध्ये	सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे
कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्गां युग	ानां मध्ये वर्तमाने ऋष्टाविंशतितमे	कलियुगे प्रथमपादे प्रभवादि ष	ष्ठि सम्वत्सरागां मध्ये	••••
संवत्सरे	ऋयने	ऋतौ	मासे	पक्षे
तिथौ	वासरे नक्षत्रे	योगे	करगो	राशि स्थिते श्रीसूर्ये
tıl	शे स्थिते श्रीचन्द्रे	राशि स्थिते श्रीकुजे		राशि स्थिते श्रीबुधे
राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ राशि स्थिते श्रीशुक्रे राशि स्थिते श्रीशनौ राशि				
स्थिते श्रीराहौ राशि स्थिते श्रीकेतौएवं गुरा विशेषरा विशिष्टायां पुरायायाम् महापुराय शुभ तिथौ				
गुरू प्रार्थना —				
नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।				

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः। स्राचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ (श्रृङ्गेरी मठीय स्राचार्य प्रार्थनम्)

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

द्वितीय दिन

£8

ॐ ऋपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।। (ब्रह्मकर्म समुञ्चय-ग्रासन विधि प्रकरण)

ॐ ऋपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे।। (ब्रह्मकर्म समुञ्चय-न्नासन विधि प्रकरण)

ॐ तीक्ष्गादंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं ऋनुज्ञां दातुमईसि॥ (ब्रह्मकर्म समुञ्जय)

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गरापित प्रार्थना — गरानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गरापितिर्देवता। जगती छन्दः। गरापित प्रार्थने विनियोगः।

ॐ गर्गानान्त्वा गरापितं हवामहे कविं कवीनाम्पमश्रवस्तमं। ज्येष्ठराजं ब्रह्मंशां ब्रह्मशास्पत् न्नानंः शृशवन्नृतिभिः सीदुसादंनम् ॥ (भावेद २.२३.१)

(इन मन्त्रों से गरापित प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

त्रिवाक्येशा पुरायाह वाचन—

ॐ भुद्रं कर्गोभिःशृगुयामदेवा भुद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजत्राः।

स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसंस्तुनूभिर्व्यशेमदेविहंतं यदायुः। (ऋषेद १. ६-६. ६) ॐ द्रविगोदा द्रविंगासस्तुरस्यं द्रविगोदाः सनंरस्य प्रयंसत्।

द्रविराोदावीरवंतीमिषंनोद्रविराोदारांसतेदीर्घमायुः ॥ (म्रावेद १. ६६. =)

ॐ स्वितापृश्चातांत्सवितापुरस्तांत्सवितोत्त्तरात्तांत्सविता ध्रात्तांत्। स्वितानं: सुवतु स्वतांतिं सवितानोरासतां दीर्घमायुं: ।। (म्रावेद १०.३६.१४)



ॐ नवो नवो भवति जायंमानोह्नांकेतुरुषसांमेत्यग्रम्। भागं देवेभ्यो विदंधात्यायन्प्रचंन्द्रमांस्तिरते दीर्घमार्युः॥ (मार्ग्वेद १०. =५.१६)

ॐ उच्चाद्विव दक्षिंगावंतो ऋस्थुर्येऋंश्वदाः सहतेसूर्येगा। हिर्गयदा ऋंमृत्त्वं भंजंतेवासोदाः सोमप्रतिंरन्त ऋायुंः॥

(मृग्वेद ६.६५.६)

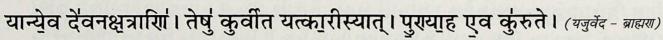
ॐ ऋापंउंदंतु जीव सें दीर्घायुत्वाय वर्चंसे। सस्त्वांहृदा कीरिशामन्यंमानो मंर्त्यं मर्त्योजोहंवीमि॥

(यजुर्वेद १ काराड-२ प्रश्न-१ ग्रनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ जातंवेदोयशों ऋस्मासुं धेहि प्रजाभिरग्ने ऋमृतत्वमंश्याम्। यस्मैत्वं सुकृतें जातवेद उलोकमंग्ने कृरावंस्योनम्। ऋश्विनं सपुत्रिरांं वीरवंतं गोमंतंरियंनंशते स्वस्ति। संत्वां सिञ्चाम् यजुषा प्रजामायुर्धनं च॥

(यजुर्वेद १ कागड-६ प्रश्न-१ म्रनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ उद्गातेवंशकुनेसामंगायसि ब्रह्मपुत्र इंव सर्वनेषु शंसिस। वृषेव वाजीशिश्रुंमतीर्पीत्यां सर्वतोनः शकुनेम्द्रमावंद विश्वतोनः शकुनेपुराय मावंद।। (मावेद २.४२.२) याज्ययायजितप्रित्तर्वेयाज्यापुरायैवलक्ष्मीः पुरायामेवतल्लक्ष्मीं संभावयित पुरायां लक्ष्मीं संस्कुरुते।। यत्पुरायं नक्ष्मं तो तद्वद्कुंवीं तोपव्युषं। यदावैसूर्यं उदेतिं। ऋथ् नक्ष्मंत्रंनितं। यावंति तत्र सूर्यो गच्छेत्। यत्रं जघन्यं पश्येत्। तावंतिकुर्वीतयत्कारीस्यात्। पुरायाह एव कुंरुते। तानि वा एतानि यमनक्षत्रार्शि।



सर्वेषां महाजनात्रमस्कुर्वागाय ग्राशीर्वचनमपेक्षमागायाद्यकरिष्यमागासोमाद्भुतशान्त्याख्यायकर्मगाः पुग्याहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिवंदेत्। (यजमान ग्रपने सकुटुम्ब प्रगाम करते हुए ग्राज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुग्याह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मग तीन बार देते हैं।)

१. अपुरायाहं भवन्तो ब्रुवन्तु । अग्रस्तु पुरायाहम् । २. अपुरायाहं भवन्तो ब्रुवन्तु । अग्रस्तु पुरायाहम् । ३. अपुरायाहं भवन्तो ब्रुवन्तु । अग्रस्तु पुरायाहम् अस्वस्तये वायुमुपंब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवंनस्य यस्पतिः ।

बृहस्पतिं संर्वगरां स्वस्तयं स्वस्तयं त्रादित्या सो भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद ४.४१.१२)

श्रादित्य उदयनीयः पश्येवेतः स्वस्त्याप्रयंतिपश्यांस्विस्तिमभ्युद्यंतिस्वस्त्येवेतः प्रयंतिस्वस्त्युद्यंति स्वस्त्युद्यंति।। (स्मृति संग्रह) ॐ स्वृस्तिन् इन्दोंवृद्धश्रंवाःस्वृस्ति नंः पूषा विश्ववेदाः। स्वृस्तिन्स्ताक्ष्यों श्रारष्ट्रिनेमिःस्वृस्तिनो बृह्स्पितंर्दधातु। (म्मवेद १. = =.६) ॐ श्रृष्टौ देवा वसंवः सोम्यासंः।। चर्तस्त्रोदेवीस्त्रजराश्रविष्ठाः। ते युज्ञं पांतु रर्जसः प्रस्तांत्। संवृत्स्ररीर्गामृताँ स्वृस्ति। (यज्वेद - ब्राह्मण) इसके बाद नीचे लिखा वाक्य का तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनात्रमस्कुर्वाणाय श्राशीर्वचनमपेक्षमाणयाद्यकरिष्यमाण सोम । द्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः स्विस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐश्रायुष्मते स्वित्त। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुनः पहले जैसे उत्तर कलश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा–थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।

ॐ ऋध्याम्स्तोमं सनुयाम्वाज्मानो मंत्रं सुरथे होपंयांतं। यशोनपृक्कं मधुगोष्वंतराभूतांशों ऋश्विनोः कार्ममप्राः॥ (ऋग्वेद १०.१०६.११)



सर्वामृद्धिमृधुयामितितं वैतेजसैवपुरस्तात् पर्यभवच्छन्दोभिर्मध्यतोक्षरै रुपिरष्टाद्गायत्र्या सर्वतो द्वादशाहंपिरभूयसर्वामृद्धिमार्ध्रोत्सर्वामृद्धिमृधोति य एवं वेद ॥ ऋध्यास्मृहव्यैर्नम्सोपसद्यं॥ मित्रं देवं मित्र्धेयंनो ऋस्तु॥ ऋनूराधान् हिवषांवर्धयंतः। शृतंजींवेमश्रदः सर्वीराः। त्रीशिं-त्रीशि वै देवानांमृद्धानिं। त्रीशिच्छन्दाः सित्रीशि सर्वनानि त्रयं इमे लोकाः। ऋध्यामेवतद्वीर्यं पूषु लोकेषु प्रतितिष्ठति॥ (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

इसके बाद पुन: नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय ग्राशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्य माणसोमाद्भुतशान्त्याख्याय ग्रस्य कर्मण: ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

(ब्राह्मण कहते हैं)—अमध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद मन्त्र पाठ करते हुए उत्तरकलश से नीचे रखे पात्र में जल छोडना चाहिये।

ॐ श्रिये जातः श्रियऽत्रानिरियाय् श्रियंवयोजिर्तृभ्योदधाति। श्रियं वसाना त्रमृत्त्वमायन् भवंतिस्त्यासंम्थिशिम्तद्रौ॥ (स्मनेद ६.६४.४) श्रिय एवैनं तिच्छ्रयामादधाति संततमृचा वषट् कृत्यं संतत्यैसंधीयते प्रजया पशुभिर्यएवं वेद। यस्मिन्ब्रह्माभ्यजयं त्सर्वमेतत्॥ त्रमुर्ञ्चलोकिमिद्मूंचसंवैं॥ तन्नो नक्षंत्रमिभिजिद्विजित्यं॥ श्रियं दधात्वहंशीयमानं॥ त्रहें बुध्रिय मंत्रंमे गोपाय। यमृषंयस्त्रयीविदाविदुः॥ त्रम्चः सामानि यजुँषि। सा हि श्रीरुमृतांस्तां। (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

£A

इसके बाद पुन: नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय ग्राशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण सोमाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मण: श्रीरिस्त्वित भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—अग्रस्तु श्री:। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं परि पूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मण ग्राशीर्वाद देते हैं—सौ साल पूर्ण हो। ग्राप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता ग्राप पर प्रसन्न हो।)

ॐ शुक्रेभिरंगैरजं त्रातत्वान् क्रतुं पुनानः क्विभिः प्वित्रैः। शोचिर्वसानः पर्यायुर्पां श्रियोमिमीते बृह्तीरनूंनाः॥ (भावेद ३.१.४)

तद्प्येषः श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे ॥ त्राविक्षितस्य कामप्रेः विश्वेदेवाः सभासद इति ॥

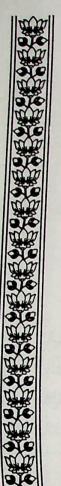
पुरायाह वाचन फल समृद्धिरस्तु—पुरायाहे कर्माङ्ग देवताः प्रीयन्ताम्।

मातृका पूजनम्—पान सुपारी दक्षिगा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका त्रावाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये। नान्दी मगडल के ग्रागे मातृका पूजन करना चाहिये।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णावी तथा। वाराही तथेन्द्राग्गी चामुगडाः सप्तमातरः॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

सात मातृकायें।

गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)



धृतिः पुष्ठिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः (गौर्यादि षोडश मातृकायें)। ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः म्रावाहयामि। विनायकं म्रावाहयामि। दुर्गा म्रावाहयामि। क्षेत्रपालं म्रावाहयामि। गगपितं म्रावाहयामि। मातृस्वसारं म्रावाहयामि। पितृस्वसारं म्रावाहयामि। एताभ्यो देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। इनका षोडशोपचार पूजन करना याहिये। उदाहरगा—म्रावाहित देवताभ्यो नमः। म्रासनं समर्पयामि म्रादि। षोडशोपचार पूजन संक्षेप में करें। (गगोश पूजन में है।)

त्र्यत्त में पुष्पांजिल मन्त्र—ॐ गौरींर्मिमाय सिल्लानितक्षृत्येकंपदीद्विपदी सा चतुंष्पदी। त्रृष्टापंदी नवंपदीबभूवुषीं सहस्त्रांक्षरापरमेव्योंमन्॥ (सग्वेद १.१६४.४१)

ऊभूभुर्वः स्वः स्रावाहित देवताभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

तदंस्तु मित्रावरुगा तदंग्ने शं योरस्मभ्यंमिदमंस्तुश्स्तं। ऋशीमहिं गाधमुत प्रतिष्ठां नंमोदिवे बॄंहते सादंनाय।। (ऋग्वेद ५.४७.७)

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तंतत्प्रतिष्ठि ततमयावाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्वपिदूर इव पश्ँक्लभते गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठाप्रतिष्ठा। इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढ़ायें।

मातृका पूजन समाप्तम्

स्रावाहित देवनान्दी पूजन—देवनान्दी में मातृका पूजन स्रावश्यक नहीं है। यज्ञ,(स्रतिरुद्र, सहस्रचराडी) रथोत्सव स्रादि सार्वजनिक स्राचरगों में देवनान्दी ही करना चाहिये। कुतुदक्षावुत्सवे तु। इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। समूर्त्य।

१. ग्रग्निष्वात्ता, २. बर्हिषद:, ३. ग्राज्यपा:, ४. सोमपा: संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमारा कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मराडल बनायें।



दत्वातगडुलपूर्गापात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः। ताम्बूलादि सुदक्षिगान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्॥ (लक्ष्म संहिता)

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, ग्रादि दो मगडलों पर रखें।

ॐ म्रानों भुद्राः क्रतंवो यंतुविश्वतोदंब्थसो म्रपंरीता स उद्धिदंः। देवानो यथासदुमिद्वधे म्रसन्न प्रांयुवोरिक्षतारों दिवे दिवे। (म्रावेद १. = £.१)

ॐ कुतुदक्षसंज्ञका विश्वेदेदेवाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वस्वः इयं च वृद्धिः। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। ग्रिग्रिष्वाताः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

बिहिषदः पितृगगाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। ग्राज्यपाः पितृगगाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। सोमपाः पितृगगाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

ॐ क्रतुदक्ष संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध ग्रक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ॐ ग्रियाचाराः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदं ग्रासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध ग्रक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। बिहंषदः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं



स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध ग्रक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ग्राज्यपाः पितृगरााः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मरायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, ग्रक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।

सोमपाः पितृगराः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मरायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्मूवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, ऋक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। अभूर्मुवः स्वः सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मगडल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिगादिशा के पात्र को ''इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः'' उत्तरदिशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्यः'' कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मशों को दे देवें।

क्रतुदक्षसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदिक्षणाकं स्वाहा नमः। भूर्मुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दिक्षणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। अग्निष्वाः पितृगणाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदिक्षणाकं स्वाहा नमः। भूर्मुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दिक्षणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। बिह्मिदः पितृगणाः नान्दीमुखाः गुग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदिक्षणाकं स्वाहा नमः। भूर्मुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दिक्षणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। आज्यपाः पितृगणाः नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदिक्षणाकं स्वाहा नमः। भूर्मुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दिक्षणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये।

सोमपाः पितृगरााः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मरा भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिराकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिरा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। स्रागे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

ॐ उपांस्मै गायता नरः पर्वमानायेन्दंवे। ऋभिदेवाँऽइयंक्षते। (स्पवेद £.११.१) ॐ ऋभिते मध्नंना पयोर्थर्वागो ऋशिश्रयः। देवं देवायं देव्यु। (स्पवेद £.११.२)



- ॐ स नं: पवस्व शंगवे शंजनांयुशमर्वते। शंरांजुन्नोषंधीभ्यः। (भग्वेद £.११.३)
- ॐ बुभ्रवेनु स्वतंवसेरु शायं दिविस्पृशें। सोमांय गाथमंर्चत।। (भावेद ६.११.४)
- ॐ हस्तंच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावाधांवता मधुं॥ (सप्वेद £.११.४)
- ॐ ऋक्षुन्नमीं मदन्तुह्यवंप्रिया ऋंधूषत । ऋस्तोंषत् स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मृती यो जान्विन्द्र ते हरीं ॥ (ऋग्वेद १. =२.२)
- अ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वांजातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नो ऋस्तु वयं स्यांम्पतंयोरयी्गाम्॥

(भग्वेद १०.१२१.१०)

कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलिसद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिशों दक्षिशां दातुमहमुत्सृये। कहकर हाथ में दक्षिशा लेकर उस पर जल छोडकर नीचे रख दें।

प्रार्थना—ग्रिग्निष्वात्वा बर्हिषदः ग्राज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्।। कहकर जल छोड़ें। ग्रनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। ग्राचम्य—मंगल तिलक रकें। विसर्जन—यज्ञ के ग्रन्तिम दिन विसर्जन करें।

- ॐ इळांमग्नेपुरुद्ंसंस्निंगोः शश्चत्तमं हर्वमानायसाध्। स्यान्नः सूनुस्तन्यो विजावाग्ने सातेसुम्तिभूत्वस्मे॥ (मानेद ३.१५.७)
- ॐ इळामुपह्वयते पशवो वा इळापशूनेवतदुपह्वयते। पशून्यजमानेदधाति दधाति॥ (सप्वेद ब्राह्मण)

यथाचारं हिररायेन भाराडवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घराटा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१—ग्राचाय, एक कुराड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिरा में १-इतर पूजन, पश्चिम में १-तर्परा के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मरा-कुल ४ पंरिडत रहने पर



१५ परिडत से संपन्न कर्म में -- २-१५ परिडत कर्म में (एक कुराड में), २-१५ परिडत से संपन्न याग में -- १ ग्राचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्परा पूजन, १-परिचारक ब्राह्मरा, ६-ऋत्विज होम के लिए

३-५५ परिडत से संपन्न याग में—१- म्राचार्य (५ कुराड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूर्जन, १-इतर पूजन, १-तर्परा के लिए, १-परिचारक ब्राह्मरा, ४५-मृत्विज होम के लिए, ४-अग्निमुख जानकार उप माचार्य (£×५)

४-१०० परिडत से संपन्न या में—१-म्राचार्य (£ कुराड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्परा के लिए, ४-परिचारक ब्राह्मरा, ८१-मृत्विज होम के लिए, ६-म्रिग्नुख जानकार उपमाचार्य (£×€), इसी म्रनुपात में म्रिधक संख्या में कर सकते हैं।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मरास्पते देव्यन्त्स्त्वेमहे। उपुप्रयंन्तु मुरुतः सुदानंव् इन्द्रंप्राशूभैवा सर्चा॥ (सप्वेद १.४०.१) ॐ ग्रुभ्यार्मिद द्रंयो निषिंक्तं पुष्कंरे मधुं। ग्रुवतस्यं विसर्जेने॥ (मण्वेद ६.७२.११) यान्तु देवगरााः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्धयर्थं पुनरागमनाय च॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

(इन मन्त्रों से ग्रावाहित देवताग्रों को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समाप्त

ब्राह्मरा वन्द्रन— ॐ नमों मृहद्भ्यो नमों ऋर्भकेभ्यो नमो युर्वभ्यो नमं ऋशिनेभ्यं:। यजांम देवान् यदि शुक्रवांम्माज्यायंसः शंसमा वृक्षि देवाः। सर्वेभ्यो ब्राह्मराभ्यो नमः॥ (मण्वेद २७.१३) इस मन्त्र से ब्राह्मरा पूजा करें। "करिष्यमारा कर्मराः स्नारम्भमुहूर्तः सुमुहुर्ती स्नस्तु इति स्ननुगृश्हन्तु"। यजमान पूछते है॥ "सुमुहूर्तमस्तु"।

सर्वतोभद्र मराडल में — पञ्चगव्य प्रोक्षरा —

- ॐ शन्नों देवीर्भिष्टंय स्रापों भवन्तु पीतयें। शृंय्यो रिभस्नंवन्तुनः॥ (ऋषेद १०.६.४)
- ॐ गन्धंद्वारां दुंराध्रषां नित्यपुंष्टां करीषिशाीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्।। (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)
- ॐ म्राप्यांयस्व समेंतुते विश्वतं: सोमुवृष्णयं। भवावार्जस्य संगुथे। (ऋग्वेद १.£१.१६)
- ॐ दुधि क्राव्यों त्रकारिषं जिष्योरश्वंस्य वाजिनं: ।सुरिभनो मुखांकर्त्प्रग् त्रायूंषि तारिषत्।। (ऋग्वेद ४.३£.६)
- ॐ शुक्रमंसि ज्योतिरसि तेजोंऽसि देवो वंः सवितोत्पुना त्विच्छिद्रेश प्वित्रेश वसोः सुर्यस्य रुश्मिभिः।

(यजुर्वेद १-काराड १-प्रश्न १० मनुवाक २०-मन्त्र)

कुशोदक प्रोक्षरा—ॐ देवस्यंत्वा सवितुः प्रंस्वेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्तांभ्यां ॥ (यनुर्वेद १-काराड १-प्रश्न ४ मनुवाक १०-मन्त्र)

ॐ देवस्यंत्वा सिवृतुः प्रंस्वेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्तांभ्यां। ॐ मन्थंता नरः कविमद्वंयन्तं प्रचेतसम्मृतं सुप्रतीकं। यज्ञस्यं केतुं प्रंथमं पुरस्तांदुग्निं नरो जनयता सुशेवंम्।। (ऋखेद ३.२६.४)

जल कलश पूजन—कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध ग्रक्षत पुष्प कलश के ग्रन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों ग्रोर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कराठे रूद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगर्गाः स्मृताः॥ कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वराः॥

7

ऋङ्गेश्चसिहतास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्चिताः। स्रत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पृष्टिकरी तथा॥ आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥ गङ्गे च यमुने चैव गोदाविर सरस्वित। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सिन्निधिंकुरुः॥ (ब्रह्मकर्म समुञ्चय-देवपूजा प्रकरण) ॐ इमं में गङ्गे यमुने सरस्वित् शुतुंद्विस्तोमं सचता परुष्यया। ऋषिक्त्या मरुद्वृधे वितस्त्याऽऽर्जींकीये श्रुगुह्या सुषोमंया॥ सितासिते सिरते यत्रं संगुथे तत्रांप्लुतासो दिव मुत्यंतन्ति। सितासिते सिरते यत्रं संगुथे तत्रांप्लुतासो दिव मुत्यंतन्ति। चित्रं वस्त्रं जिन्ते धीरास्ते जनासो स्रमृत्त्वं भंजन्ते॥ (मिन्वेद १०.७५.७) ॐ याः प्रवतों निवतं उद्वतं उदन्वती रनुदकाश्चयाः। ता स्रस्मिम्यं पर्यसा पिन्वंमानाः शिवा देवी रिशिपदा भंवन्तु सर्वां नृद्यों स्रिशिम्दा भंवन्तु॥ (मिन्वंद ७.५०.४)

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

सितमकरिनषणां शुभ्रवर्गां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्यंकजाभीत्यभीष्टाम्। विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भिसतिसतदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि॥ (स्मृति संग्रह)

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।)

शृङ्खपूजन—शंख को पहले धोकर, उसमें जल भरकर, शंख को गन्ध पुष्प ग्रक्षत लगाकर पीठ के ऊपर रखना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार शंख छूकर जप करना चाहिये।



ॐ शङ्खं चन्द्रार्कदैवत्यं वारुगां चाधिदैवतम्। पृष्ठे प्रजापितं विद्यात् ऋग्रे गङ्गा सरस्वती।।
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्।।
विलयं यान्ति पापानि हिमवत् भास्करोदये। दर्शनादेव शङ्खस्य किं पुनः स्पर्शने भवेत्।।
पाञ्चजन्यं महात्मानं पापग्नं तु पवित्रकम्। शंखमध्यिस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपिर।।
ऋङ्गलग्नं मनुष्याग्गां ब्रह्महत्यायुतं दहेत्।। गर्भादेवािर नारीग्गां विशीर्यन्ते सहस्रक्षा।
तव नादेन पाताले पाञ्चजन्य नमोस्तुते॥ ॐ पाञ्चजन्याय विद्यहे पद्मगर्भाय धीमिह। तन्नः शङ्खः प्रचोदयात्।(देवपूजा)

अपवनायै नमः। अपाञ्चजन्यायै नमः। अपर्जन्यायै नमः। अग्नम्बुराजायै नमः। अकम्बुराजायै नमः। अपषबान्धवायै नमः। अधवलायै नमः। अनिःस्वनायै नमः। अधवलायै नमः। अपिकलायै नमः। अधिवलायै नमः। अधिवलाये विकाये ।

त्रथ नामपूजा— अपवनाय नमः। अपाञ्चजन्याय नमः। अपषगर्भाय नमः। अग्रम्बुराजाय नमः अकम्बुराजायै नमः। अधवलाय नमः। अनिस्सवनाय नमः। अदिव्यभोगदाय नमः।

शंखमूले परब्रह्मा शङ्खाग्रे तुं सरस्वती। यः स्नापयित गोविन्दं तस्य पुरायमनन्तकम्॥ (स्मृति मुक्तावल्यां शङ्खपूजा प्रकरणम्)

(इतना कहकर शंख को नमस्कार करना चाहिये।)

शंख के जल को कलश में डालना चाहिये। पुनः शंख के कुछ जल लेकर तीन बार प्रोक्षण करना चाहिये। यज्ञशाला एवं पूजास्थल का प्रोक्षण करें। पूजा के सामग्रियों का प्रोक्षण करें। एवं तदनन्तर ऋपने को प्रोक्षण करें। एवं ब्राह्मणों का भी प्रोक्षण करें। शेष जल नीचे छोड़ देवें। शंख को धोकर पुनः पानी भरकर यथा स्थान रख देना चाहिये।

म्रात्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्गिक मध्यनालं॥ ऋङ्गष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुरागाम्॥ हृद्यकमलमध्ये सूर्यिबम्बासनस्थं सकलभुवनबीजं सृष्टिसंहारहेतुम्। निरतिशयसुरवात्म ज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम्॥ त्राराधयामि मिरा सन्निभमात्मलिङ्गम्। मायापुरीरहृदय पंकज सन्निविष्टम्॥ श्रद्धा नदी विमलचित्त जलभिषेकै। र्नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय॥ देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः। त्यजेदज्ञानिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥ स्वामिन् सर्वं जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ (देवपूजा)

अम्रात्मने नमः। अमन्तरात्मने नमः। अपरमात्मने नमः। अज्ञानात्मने नमः। म्रात्मपूजां समर्पयामि। इससे म्रात्मशुद्धि होती है। (इन मन्त्रों को कहकर ग्रपने सिर पर ग्रक्षत डाल लेवें।)

मराडप पूजनम् - उत्तप्तोज्वल काञ्चनेन रचितं तुङ्गाङ्ग रंगस्थलं। शुद्धस्फाटिक भित्तिका विरचितैस्तभैश्च हैमै: शुभै:। द्वारश्चामर रत्नराजखिततैः शोभावहैर्मराठपैः। तत्रान्यैरपि चित्र शंखधवलैः प्रभ्राजितं स्वस्तिकैः॥ मुक्ताजाल विलम्बिमग्टपयुतैर्वज्रेश्च सोपानकैः। नानारत्नविनिर्मितैश्च कलशैरत्यन्त शोभावहम्। मािशाक्योज्वलं दीपदीप्तिरवचितं लक्ष्मीविलासास्पदम्। ध्यायेत् मगटपमर्चनेषु सकलेष्वेवं विधं साधकः॥

(स्मृति सङ्गह - ग्रनुष्ठान पद्धति)

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

द्वितीय दिन

नवरत्न खचित श्री सौभाग्य मराटपाय नमः मराटपपूजां समर्पयामि। (उपरोक्त मन्त्रों से सर्वतोभद्रमराडल एवं नवग्रह मराडल एवं प्रधान कलश रखने वाला मराठप का पूजन करना चाहिये।)

ऋङ्गन्यास करन्यास—(शरीर में शंकर जी का म्रावाहन करने से पूर्व में ये न्यास करना चाहिये।) वामदेव: ऋषि: पंक्तिश्छन्द:, सदाशिव रुद्रो देवता न्यासे विनियोग:।

१. अम्ब्रङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

२. ॐनं तर्जनीभ्यां नमः।

३. उभं मध्यमाभ्यां नमः।

४. अशिं ग्रनामिकाभ्यां नमः।

५. अवां कनिष्ठिकाभ्यां नमः। वौषट्।

६. अयःकरतल करपृष्टाभ्यां नमः। ऋस्त्राय फट्।

७. ॐहृदयाय नमः।

□. ॐनं शिरसे स्वाहा।

£. उमं शिखायै वषट्।

१०. अशिं कवचाय हुम्।

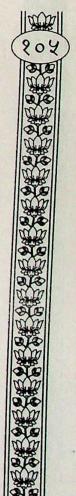
११. अवां नेत्रत्राय।

१२. ॐय:।

इतना करने के पश्चात पहले सर्वतोभद्र मगडल की पूजा करें।

सर्वतोभद्र मराडल पूजन—ग्राचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्य करिष्यमारा सग्रहमख सर्वाद्धतशान्ति होमाङ्गत्वेन ऐशान्यां कलशार्चनं करिष्ये।

ग्राचमन कर, प्राग्गायाम करें। देशकाल संकीर्तनपूर्वक ग्रहसहित सर्वाद्भुत शान्ति याग के ग्रङ्ग के रूप में ईशान्य दिशा में कलशपूजन करुंगा कहकर संकल्प लेवें।





यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः। स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥१॥ अपक्रामन्त् भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशं। सर्वेषां ऋविरोधेन यज्ञकर्म समारभे॥ २॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

इति गौरसर्षपान् विकीर्य-इतना कहकर सफेद सरसूँ को चारों ग्रौर कलशार्चन स्थल में बिखेरना चाहिये। शुचीवो हव्येति तिसृगां मैत्रावरुगि: विसष्ठो मरुतस्त्रिष्टप्। ऋग्निः शुचिव्रततम इति द्वयोराङ्गिरसो विरूपाग्निर्गायत्री एतोन्विन्द्रमिति तिसृणां ऋांगिरसः तिरश्चीन्द्रोनुष्टप् भूमि प्रोक्षण विनियोगः।

ॐ शुचींवो हव्या मंरुतः शुचींनां शुचिंहिनोम्यध्वरं शुचिंभ्यः।

ऋतेर्न सत्यमृत्सापं श्रायुन्छुचिजन्मानुः शुचंयः पावकाः ॥ (ऋग्वेद ७.४६.१२)

श्रुग्निः शुचिव्रततमः शुचिविप्रः शुचिः कविः। शुचीरोचत् स्राहुतः॥

उद्गे शुचंयस्तवं शुक्रा भ्राजन्त ईरते। तव्ज्योतींष्युर्चयः॥ (म्रावेद ६.४४.१७)

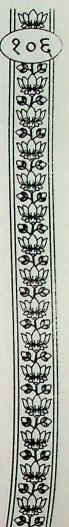
एतोन्विद्वंस्तवाम शुद्धं शुद्धेन् साम्ना । शुद्धैरुक्थैवीवृध्वांसं शुद्ध ऋशीवीनममत्तु ॥

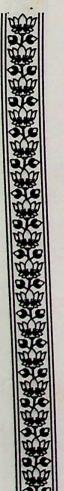
इन्द्रं शुद्धोन्ऽत्रागंहिं शुद्धः शुद्धाभिंकुर्तिभिः। शुद्धोरियं निधारयशुद्धोर्ममंद्धिसोम्यः॥ (म्रावेद म. १४.७-म)

इन्द्रंशुद्धो हिनोंर्यिं शुद्धो रत्नोनि दाशुषे। शुद्धो वृत्राशि जिघ्नसे शुद्धोवाजं सिषासिस।। (सावेद =. £४. £)

इन मन्त्रों से कुशों से प्रोक्षण करें। पञ्चगव्य से भूमि प्रोक्षण निम्नलिखित मन्त्र से करें। म्रापोहिष्ठेति सृचस्यांबरीष: सिंधुद्वीप म्रापो गायत्री भूमि प्रोक्षणे विनियोग:।

ॐ त्रापोहिष्ठा मंयोभुवस्तानं ऊर्जे दंधातन। महेरणांय चक्षंसोयोवं: शिवतंमोरसस्तस्यं भाजयते हर्नः उशतीरिव मातरं:॥





तस्मा ऋरंगमामवो यस्य क्षयांयुजिन्वंथ। ऋषों जुनयंथाचनः ॥ (ऋषेद १०.६.१-२-३)

कुशोदकेन च प्रोक्षेत्। कुश जल से प्रोक्षरा करें।

ऋपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुराडरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

इतना कहकर हाथ जोड़कर खड़े हो। इतना करने के बाद मगडल रचना करें। दोनों मगडल बनायें। पहले कलश पूजन करें। (यहाँ भी कलश पूजन करना चाहिये।) कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध ग्रक्षत पुष्प कलश के ग्रन्दर डालना चाहिये। बाहर भी चारों ग्रोर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर पज करना चाहिये।

सर्वतोभद्र मगडल में देवता पूजनम्—मध्ये ब्रह्माग्रां, (मध्य में ब्रह्मा का ग्रावाहन करें।) ब्रह्मजज्ञानं वामदेवो ब्रह्मात्रिष्टुप् ब्राह्मावाहने विनियोग:।

ॐ ब्रह्मं जज्ञानं प्रंथमं पुरस्ताद्विसींमृतः सुरुचोंवेन ऋांवः। सबुध्रियां उपमार्ऋस्यिवृष्ठाः सृतश्चयोनिमसंतश्चविवः॥ (यनुर्वेद ४ कारड-२ प्रश्न-= अनुवाक-४ मन्त्र)

ङभूर्भुवः स्वः ब्रह्मरो नमः। ब्रह्मारामावाहयामि। भो ब्रह्मन् इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहारा। वरदो भव। उत्तरे सोमं—(उत्तर में सोम का स्रावाहन करें।) स्राप्यायस्व गोतमः सोमोगायत्री सोमावाहने विनियोगः।

ॐ म्राप्यांयस्व समेंतुते विश्वतं:सोम्वृष्ययं। भवावाजंस्यसङ्ग्थे॥ (भग्वेद १.६१.१६)

अभूर्भुवः स्वः सोमय नमः। सोमं स्रावाहयामि। भो सोम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहारा। वरदो भव। **ईशान्यं ईशानं**—(ईशान्य दिशा में ईशन का



म्रावाहन करें।) म्रिभत्वा शुनः शेप ईशानो गायत्री ईशानावाहने विनियोगः।

ॐ म्रुभित्वां देव सवित्रीशांनं वायींगां। सदांवन्भागमींमहे॥ (म्रावेद १.२४.३)

अभूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि। भो ईशान इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजा गृहागा वरदो भव। **पूर्वे इन्द्रं—(** पूर्व में इन्द्र का स्रावाहन करें।) इन्द्र वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री इन्द्रावाहने विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हर्वामहे जनेंभ्यः। श्रुस्माकंमस्तु केवंलः॥ (स्रावेद १.७.१०)

ॐभूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि। भो इन्द्र इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहारा। वरदो भव॥ **म्राग्नेयामग्नि—(** म्राग्ने दिशा में म्रिग्न का म्रावाहन करें।) म्रिग्नं दूतं मेधातिथिरग्निर्गायत्री म्रग्न्यावाहने विनियोगः।

ॐ ऋग्निं दूतं वृग्गीमहे होतांरं विश्व वेंदसम्। ऋस्य यु ज्ञस्यं सुक्रतुं॥ (मग्वेद १.१२.१)

अभूर्भुवः स्वः। अग्रेय नमः। अग्रिमावाहयामि। भो अग्रे इहा गच्छ इह तिष्ठ। पूजां गृहागा। वरगो भव। **दक्षिगो यमं—(** दक्षिगा दिशा में यम का आवाहन करें।) यमाय सोमं यमोयमोनुष्ठुप् यमावाहने विनियोगः।

ॐ युमाय सोमं सुनुत युमायं जुहुता हुवि:। यमंहं युज्ञो गंच्छत्युग्नि दूंतो ऋरंकृत:॥ (ऋग्वेद १०.१४.१३)

ॐभूर्भुवः स्वः यमाय नमः। यममावाहयामि। भो यम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहारा। वरदो भव। नैसृत्यां निसृतिं—(नैसृत्य दिशा में निसृति को।) मोषुराः करावो निसृतिर्गायत्री निसृत्या वाहने विनियोगः॥

ॐ मोषुराः परांपरा निर्मृतिंर्दुर्हराांवधीत्। पृद्धिष्ठतृष्णांयासुह।। (सग्वेद १.३ =.६)

अभूर्भ्वः स्वः निर्मृतये नमः। निर्मृतिमावाहयामि। भो निमृति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहागा। वरदो भव। पश्चिमे वरुगां—(पश्चिम दिशा में वरुगा का

म्रावाहन करें।) तत्वायामि शुनःशेपो वरुगस्त्रिष्टुप् वरुगावाहने विनियोगः।

ॐ तत्वांयाम् ब्रह्मंगा वन्दंमान्स्तदा शांस्ते यजंमानो हिविभिः। ऋहेंळमानो वरुगोह बोध्युर्रुशं समान् ऋायुः प्रमोषीः॥ (सम्बेद १.२४.११)

ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि। भो वरुण इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। वायव्यां वायुं—(वायव्य दिशा में वायु का स्रावाहन करें।) वायोशतं वामदेवो वायुरनुष्टुप् वाय्वावाहने विनियोगः।

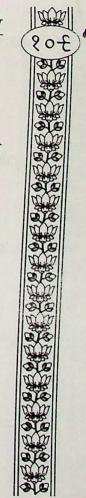
ॐ वायोशृतं हरींगां युवस्व पोष्यांगां। उतवांते सहस्त्रिगो रथुत्रायांतुपाजंसा। (मण्वेद ४.४६.५)

ॐभूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुमावाहयामि। भो वायो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहागा। वरदो भव। वायुसोममध्ये ऋष्टवसून्—वायु एवं सोम के बीच में ऋष्ठ वसुग्रों को (वायव्य एवं उत्तर के बीच में) ज्मया ऋत्र विसष्ठों वसविस्त्रिष्टुप् व स्वावाहने विनियोगः।

ॐ ज्म्या ऋत्र् वसंवो रन्तदेवाउरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभाः। ऋविक्पथ उरुज्रयः कृशुध्वं श्रोतांदूतस्यंज्ग्मुषोंनो ऋस्य॥ (ऋखेद ७.३६.३)

ङभूर्भुवः स्वः ग्रष्टवसुभ्यो नमः। ग्रष्टवसून् ग्रावाहयामि। भो ग्रष्टवसवः इहा गच्छ। इह तिष्ठतः। पूजां गृहारा। वरदो भवत। सोमेशानयोर्मध्ये एकादशमरुद्रान्—(सोमन एवं ईशान के बीच में एकादश रुद्रों का ग्रावाहन करें।) (उत्तर एवं ईशान के बीच में) ग्रारुद्रा सः श्यावाश्व एकादश रुद्रों जगती। एकादशरुद्रावाहने विनियोगः।

ॐ त्रार्रुदास्इन्द्रंवन्तः स्जोषंस्रो हिरंगयरथाः सुवितायंगंतन। इयं वो त्रुस्मत्प्रतिहर्यतेमृतितृष्णजेन दिवउत्साउदुन्यवे। (मण्वेद ५.४७.१)



ङभूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः। एकादश रुद्रानावाहयामि। भो एकादशरुद्राः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। **ईशानेन्द्रयोर्मध्ये** द्वादशादित्यान्—(ईशान्य एवं पूर्व के बीच में द्वादशादित्यों का ग्रावाहन करें।) त्यांनुमत्स्योमान्योवा द्वादशादित्यागायत्री द्वादशादित्या–वाहने विनियोगः। अत्यानुश्चित्रया ग्रावेद्या ग्रावेद्या ग्रावेद्यान्यांचिषामहे। सुमृळीकाँग्रुभिष्टंये॥ (यजुर्वेद-२ काग्ड-१ प्रश्न-११ ग्रनुवाक-१ मन्त्र)

ङभूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः। द्वादशादित्यानावाहयामि। भो द्वादशादित्याः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृम्हीत। वरदो भवत। इन्द्राग्निमध्ये मश्चिनौ—(पूर्वा एवं म्राग्नेय के बीच में मश्चिनी देवताम्रों को म्रावाहन करें।) म्रश्चिनावर्तिर्गोतमोश्चिनावुष्णिक् म्रश्व्यावाहने विनियोगः।

ॐ म्रिंवनावृर्तिरुस्मदागोमंदस्त्राहिरंगयवत्। स्रुवीग्रथंसमंनसानियंच्छतं॥ (मावेद १.६२.१६)

ॐभूर्भुवः स्वः ग्रिथिम्यां नमः। ग्रिथिनौ ग्रावाहयामि। भो ग्रिथिनौ इहा गच्छतं। इह तिष्ठतं पूजां गृषीतं। वरदौ भवतं। ग्रिश्चियम मध्ये विश्वेदेवान् स्पैतृकान्—(ग्राग्नेय एवं दक्षिण के बीच में पितृसाहित विश्वेदेवों का ग्रावाहन करें।) ग्रोमासोमधुच्छंदाविश्वेदेवा गायत्री। विश्वेदेवावाहने विनियोगः। ॐ ग्रोमास्थर्षगीधृतोविश्वेदेवा स् ग्रागंत। दाश्वांसोदाशुषंः सुतं॥ (भ्रावेद १.३.७)

अभूर्भुवः स्वः विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः विश्वान् देवान् ग्रावाहयामि। भो विश्वेदेवाः इहा गच्छत। इह तिष्ठंत पूजां गृग्चीत। वरदा भवत। यम निग्नतिमध्ये सप्तयक्षान्—(दक्षिण एवं नैग्नत्य के बीच में सप्त यक्षों का ग्रावाहन करें।) ग्राभित्यं वामदेवः सप्तयक्षा ग्रष्टी। सप्तयक्षावहने विनियोगः।

ॐ ऋभित्यं देवं संवितारंमो्गयों: क्विक्रंतुर्चीम सृत्यसंवसं रत्नुधामुभिप्रियंमृतिमूर्ध्वा यस्यामित्भा ऋदिंद्युतृत्सवींमिनिहिरंगयपागिरिममीत सुक्रतुं: कृपासुर्वः ॥ (यजुर्वेद-१ कागड-२ प्रश्न-६ यनुवाक)

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान् ग्रावाहयामि। भो सप्तयक्षाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृग्गीत। वरदा भवत। निर्मृति वरुण मध्ये भृतनागान्—(नैर्मृत्य एवं पश्चिम के बीच में भुतगरा एवं नागों का ग्रावाहन करें।) ग्रायङ्गो सार्पराज्ञी सर्पा गायत्री। सर्पावाहने विनियोगः।

स्रायं गौ: पृश्निरक्रमीद संदन्मातरं पुर:। पितरं च प्रयन्त्स्वं:॥ (मावेद १०.१ = £.१)

ॐभूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः। सर्पान् ग्रावाहयामि। भो सर्पाः इहागच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। वरुणावायुमध्ये गंधर्वाप्सरसः—(पश्चिम एवं वायव्य के बीच में गन्धर्व एवं ग्रप्सराग्रों का ग्रावाहन करें।) ग्रप्सरसामृष्यशृङ्गोगंधर्वाप्सरसोनुष्टुप्। गन्धर्व ग्रप्सरावाहने विनियोगः।

ॐ म्रुप्सरसीं गन्धर्वांशां मृगाशां चरंशोचरंन्। केशीकेतंस्य विद्वान्त्सरवीस्वादुर्मेदिन्तंमः॥ (मानेद १.१६३.६)

ङभूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। गन्धर्वाप्सरस म्रावाहयामि। भो गन्धवाप्सरसः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत।

ब्रह्म सोममध्ये स्कन्दं नन्दीश्वरं शूलं महाकालं च

(मध्ये में स्थित ब्रह्मा एवं सोम (उत्तर) के मध्य में स्कन्द नन्दीश्वर शूल एवं महाकाल का ग्रावाहन करें।) यदक्रंदो दीर्घतमास्कंदस्त्रिष्टुप्। स्कंदावाहने विनियोगः।

ॐ यदक्रेंदः प्रथमं जायंमान उद्यन्संमुद्रादुतवा पुरीषात्। श्येनस्यंपृक्षा हरिगास्यं बाहू उंपुस्तुत्यं महिजातंते ऋर्वन्।। (भगवेद १.१६३.१)

ॐभूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः। स्कन्दमावाहयामि। भो स्कन्द इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहारा। वरदो भव। ऋषभमृषभो नन्दीश्वरोनुष्टुप्। **नन्दीश्वरावाहने विनियोगः।**

ॐ ऋषुभं मांसमानानां सुपत्नांनां विषासिहं। हंतारं शत्रूंशां कृधि विराजं गोपंतिं गवां।। (ऋग्वेद १०.१६६.१)

अभूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वरं स्रावाहयामि। भो नंदीश्वर इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहारा। वरदो भव। कदुद्राय घौरः करावः शूलो गायत्री

शूलावाहने विनियोग:।

ॐ कद्गुद्रायु प्रचेतसेमीृह्ळुष्टंमायृतव्यंसे। वोचेमुशतंमंहृदे॥ (म्यवेद १.४३.१)

器器器器器器

अभूर्भुवः स्वः शूलायनमः शूलमावाहयामि। भो शूल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहागा। वरदो भव। कुमारं माता कुमारी महाकालस्त्रिष्टुप्। **महाकालावाहने** विनियोगः।

ॐ कुमारं मातायुंवतिः समुंब्ध्ङ्क्षृहांबिभर्ति न दंदातिपित्रे। ऋनीकमस्य निमनज्जनांसः पुरः पंश्यंति निर्हितम्रतौ॥ (ऋग्वेद ४.२.१)

अभूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः। महाकालमावाहयामि। भो महाकाल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूहां गृहारा। वरदो भव। ब्रह्मेशानमध्ये दक्षं—(बीच में विद्यमान ब्रह्मा एवं ईशान्य दिशा के बीच में दक्ष का आवाहन करें।) अदितर्बृहस्पितर्दक्षोनुष्टुप्। दक्षावाहने विनियोगः।

ॐ ऋदिंतिहां जीनष्टदक्षयादंहितातवं। तां देवा अन्वंजायन्त भुद्रा ऋमृतंबंधवः॥ (ऋषेद १०.७२५)

अभूर्भुवः स्वः दक्षाय नमः। दक्षमावाहयामि। भो दक्ष इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहारा। वरदो भव। ब्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गां विष्णुं च (ब्रह्मा एवं इन्द्र के बीच में अर्थात् बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पूर्व के बीच में दुर्गा एवं विष्णु का आवाहन करें।) तामग्रिवर्गां सौभरिदुर्गात्रिष्टुप्। दुर्गावाहने विनियोगः।

ॐ ताम्ग्रिवंशार्षं तपंसाज्वलंतीं वैरोच्नीं कंर्मफ्लेषुजुष्टां।

दुर्गा देवीं शरंगमृहंप्रंपद्ये सुतरंसितरसे नमं: ॥ (यजुर्वेद-दुर्गाष्ट्रक)

उभूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः। दुर्गां त्रावाहयामि। भो दुर्गे इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहारा। वरदा भव। इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुगायत्री। विष्णवावाहने विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुंर्विचंक्रमेत्रेधानिदंधेपदं। समूहमस्य पांसुरे॥ (मण्वेद १.२२.१७)

उभूर्भुवः स्वः विष्णवेनमः। विष्णुं स्रावाहयामि। भो विष्णो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहारा। वरदो भव। ग्रह्माग्नि मध्ये स्वधां (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं

ग्राग्नेय दिशा के बीच में स्वधा को) उदीरतां शंख: स्वधा त्रिष्टुप्। स्वधावाहने विनियोग:।

ॐ उदीरता मर्वरउत्परांस्उन्मंध्यमाः पितरः सोम्यासः। ऋसुंय ईयुरंवृकाऽऋंत्ज्ञास्तेनोवंतु पितरो हवेषु॥

(मृग्वेद १०.१५.१)

उभूर्भुवः वः स्वधायै नमः। स्वधामावाहयामि। भो स्वधे इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहागा। वरदा भव। **ब्रह्म यममध्ये मृत्युरोगान्**—(बीच में स्थित **ब्रह्म** एवं दक्षिगा दिशा के बीच में मृत्यु एवं रोगों का ग्रावाहन करें।) परं मृत्यो संकुसुकोमृत्युरोगास्त्रिष्ठुप्। मृत्युरोगावाहने विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो ऋनुपरेहिपंथांयस्तेस्व इतरोदेवयानांत्। चक्षुंष्मते शृगवृतेते ब्रवीमिमानं: प्रजारींरिषोमोत वीरान्॥

(भग्वेद १०.१ =.१)

अभूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः। मृत्यरोगान् ग्रावाहयामि। भो मृत्युरोगाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। ब्रह्म निर्मृतिमध्ये गर्णपितं (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं नैमृत्य दिशा के बीच में गर्णपित का ग्रावाहन करें।) गर्णानान्त्वा शौनकोगृत्समदो गर्णपितर्जगती। गर्णपत्या वाहने विनियोगः।

ॐ गृगानांत्वाग्गापंतिं हवामहे कृविं कवीनामुंपमश्रंवस्तमं। ज्येष्ठराजुंब्रह्मंगां ब्रह्मगस्पत् स्नानंः शृगवन्नृतिभिः सीदुसादंनं॥ (भग्वेद २.२३.१)

अभूर्भुवः स्वः गरापतये नमः। गरापितमावाहयामि। भो गरापित इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहारा। वरदो भव। **ब्रह्मवरुरामध्ये ग्रपः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पश्चिम दिशा के बीच में जल का ग्रावाहन करें।) शंनोदेवीः सिंधुद्वीप ग्रापो गायत्री। ग्रप् ग्रावाहने विनियोगः।

ॐ शंनोंदेवीर्भिष्टय स्रापों भवंतु पीतयें। शंयोर्भिस्त्रंवंतु नः ॥ (म्रावेद १०.६.४)

(998

अभूर्भुवः स्वः ऋद्भयो नमः। ऋपः ऋवाहयामि। भो ऋपः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृऋीत। वरदा भवत। **ब्रह्मवायुमध्यं मरुतः**—(बीच में स्थित अस्पूर्भुवः स्वः ऋद्भयो नमः। ऋपः ऋवाहयामि। भो ऋपः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृऋीत। वरदा भवत। **ब्रह्मवायुमध्यं मरुतः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं वायव्य दिशा के बीच में मरुत् का ऋवाहन करें।) मरुतोयस्यगोतमो मरुतो गायत्री। मरुदावाहने विनियोगः

ॐ मर्फतोयस्य हि क्षयेपाथा दिवोविंमहसः। स सुंगोपातंमोजनः (भगवेद १. ६६.१)

उभूर्भुवः स्वः मरुद्भयो नमः। मरुतः स्रावाहयामि। भो मरुतः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहगीत। वरदा भवत। ब्रह्मगाः पादमूले कर्गिकाधः पृथिवीं (बीच में स्थित ब्रह्मा जी के नीचे पादमूल में पृथिवी का स्रावाहन करें।) स्योना पृथिवी मेधातिथिर्भूमिर्गायत्री। भूम्यावाहने विनियोगः।

ॐ स्योना पृंथिवि भवानृक्षुरानिवेशंनी। यच्छानुः शर्मं सुप्रर्थः॥ (ऋग्वेद १.२२.१४)

ङभूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः। भूमिं ग्रावाहयामि। भो भूमे इहा गच्छा। इह तिष्ठ। पूजां गृहागा। वरदा भव। तत्रैव गङ्गादिसर्वनद्यः—(उसी स्थान पर ग्रर्थात पृथिवी पर ही गङ्गादि सभी निदयों का ग्रावाहन करें।) इमं मे गङ्गे सिंधुक्षित्प्रैयमेधानद्यो जगती। गङ्गादिनद्यावाहने विनियोगः।

ॐ इमं में गङ्गेयमुनेसरस्वित्शुतुंद्रिस्तोमं सचताप्रुष्या। ऋसिक्यामं रुद्वधेवितस्त्या जींकीयेशृगुह्या सुषोमंया॥

(स्ग्वेद १०.७५.५)

अभूर्भुवः स्वः गङ्गादि नदीभ्यो नमः। गङ्गादि नदीः त्रावाहयामि। भो गङ्गादिनद्यः इहागच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहगीतां। वरदा भवत। तत्रैव सप्तसागराः। (वहीं पर सात सागरों का त्रावाहन करें।) धाम्रो धाम्रो वामदेवः सप्तसागरा त्रष्टी। सप्त सागरावाहने विनियोगः।

ॐ धाम्नों धाम्नो राजन्तितो वंरुगानोमुञ्च। यदापो ऋध्या इति वरुगोतिशपांमहेततों वरुगांनोमुञ्च। मियवापोमोषंधीहिं सीरतों विश्वव्यंचा भूस्त्वेतों व्रुरुगांनो मुञ्च॥ (यजुर्वेद-१ काण्ड-३ प्रश्न-११ मज्ज)



उन्भूर्मुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः। सप्तसागरान् ऋवाहयामि। भो सप्तसागराः इहागच्छत। इह तिष्ठतः। पूहां गृहश्गीत। वरदा भवत। तदुपिर भेरवे नमः। मेरं ऋवाहयामि। (उसके ऊपर मेरु पर्वत का ऋवाहन करें।) (भूमि पर) सोमसमीपे गदायै नमः। गदां ऋवाहयामि। (सोम के पास (उत्तर) गदा का ऋवाहन करें।) ईशान समीपेत्रिशूलाय नमः। त्रिशूलं ऋवाहयामि।। (ईशान के पास ईशान में त्रिशूल का ऋवाहन करें।) इन्द्रसमीपे वज्राय नमः। वज्रं ऋवाहयामि। (इन्द्र के पास पूर्व में वज्र का ऋवाहन करें।) ऋग्नि समीपे शक्तये नमः। शिक्तं ऋवाहयामि। (ऋग्नि के पास आग्नेय में शिक्त का ऋवाहन करें।) यम समीपे दराडाय नमः। दराड ऋवाहयामि। (यम के पास दक्षिरा में दराड का ऋवाहन करें।) निर्ऋति समीपे खड्गय नमः। खड्गमावाहयामि। (निर्ऋति के पास नैऋत्य के खड्ग का ऋवाहन करें।) वरुरा समीपे पाशाय नमः। पाशं ऋवाहयामि। (वरुरा के पास पश्चिम में पाश का ऋवाहन करें।) वायु समीपे ऋंकुशाय नमः। ऋंकुशं ऋवाहयामि। (वायु के पास वायव्य दिशा में ऋंकुश का ऋवाहन करें।)

तद्वाहये उत्तरादि क्रमेगा (मगडल के बाहर) गौतमाय नमः। गौतमं ग्रावाहयामि। (उत्तर में गौतम जी का ग्रावाहन करें।) भारद्वाजाय नमः। भरद्वाजं ग्रावाहयामि। (ईशान में भरद्वाजं जी का ग्रावाहन करें।) विश्वामित्राय नमः। विश्वामित्रं ग्रावाहयामि। (पूर्व में विश्वामित्रं जी का ग्रावाहन करें।) कश्यपाय नमः। कश्यपं ग्रावाहयामि। (ग्राग्रेय में ग्रश्यपं जी का ग्रावाहन करें।) जमदग्रये नमः। जमदग्रिं ग्रावाहयामि। (दक्षिण में जमदग्रिं जी का ग्रावाहन करें।) विश्वाय नमः। व्यावहन करें।) ग्राव्यय नमः। ग्राव्याय नमः। व्यावहयामि। (वायव्ये में ग्राव्यय नमः। ग्राव्यय नमः। ग्राव्ययमें ग्राव्ययमें ग्राव्ययमें प्राव्ययमें का ग्रावाहन करें।) ततः पूर्वादि क्रमेण मातृः। (पूर्वादि क्रम से मगडल के बाहर मातृग्याों का ग्रावाहन करें।) पूर्व्य नमः। ऐन्द्रीं ग्रावाहयामि। (पूर्व में ऐन्द्री का ग्रावाहन करें।) कौमार्थें नमः। कौमारीं ग्रावाहयामि। (विश्वाय में विश्वावीय का ग्रावाहन करें।) वाग्रहीं ग्रावाहयामि। (वायव्य में विश्वावीय का ग्रावाहन करें।) विश्वावीय नमः। वाग्रहीं ग्रावाहयामि। (वायव्य में विश्वावीय का ग्रावाहन करें।) विश्वावीय नमः। वाग्रहीं ग्रावाहयामि। (वायव्य में वेष्यावीय का ग्रावाहन करें।) वेष्यावीय नमः वेष्यावी ग्रावाहयामि। (वायव्य में वेष्यावीय का ग्रावाहन करें।) वेष्यावीय नमः वेष्यावीय ग्रावाहयामि। (वायव्य में वेष्यावीय का ग्रावाहन करें।) वेष्यावीय नमः वेष्यावीय नमः। वाग्रहीं ग्रावाहयामि। (वायव्य में वेष्यावीय का ग्रावाहन करें।) वेष्यावीय नमः वेष्यावीय नमः। वाग्रहीय नमः। वाग्



का ग्रावाहन करें।) वैनायक्यै नमः वैनायकों ग्रावाहयामि। (ईशान्य में वैनायको का ग्रावाहन करें।) इति सर्वतो भद्र देवताः। (यहाँ पर सर्वतोभद्रमगडल में विद्यमान सभी देवताग्रों का ग्रावाहन संपन्न हुग्रा।)

ॐ तदंस्तु मित्रावरुगातदंग्रेशंयोर्स्मभ्यंमिदमंस्तु श्रस्तं। ऋशीमिहं गाधमुतप्रंतिष्ठां नमों दिवे वृहते सादंनाय।। (ऋषेद ४.४७.७) गृहावै प्रतिष्ठासूक्तं तत् प्रतिष्ठिततमया वाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूलभते गृहानेवै नानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा॥

ॐ नर्यपूजां में गोपाय ।। श्रुमृतुत्वायं जीव से ।। जातां जिनुष्यमांगां च ।। श्रुमृतें सत्वे प्रतिष्ठितां ।। (यजुर्वेद-ब्राह्मण)

एताः ब्रह्मादि देवताः सुप्रतिष्ठिताः सन्तु। (इन मन्त्रों को कहकर ग्रावाहित ब्रह्मादि देवताग्रों का प्रतिष्ठा करें।)

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचोवेन ऋवः। सुबुधियां उपमा ऋस्य विष्ठाः सृतश्च

योनिमसंतश्चिववं: ॥ (यजुर्वेद-४ काराड-२ प्रश्न- प्रमुवाक-४ मन्त्र)

ऋनेन मंत्रेग पूजयेत्। (इस मन्त्र से पूजन करें।) ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। ऋवाहयामि। ऋब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्वागतं समर्पयामी। पादारविन्दयोःपाद्यं पाद्यं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। हस्तयोः ऋध्यं समर्पयामि।

अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। मुखे ग्राचमनीयं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ स्रापोहिष्ठा मयोभुवः तानं ऊर्जे दंधातन। महेरणांय चक्षंसे॥

यो वंः शिवतंमोरसस्तस्यं भाजयते हनंः। उशातीरिव मातरंः॥

तस्मा ऋरंगमामवो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। ऋषोंजनयंथा च नः॥ (ऋषेद १०.६.१)

स्त्रानं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्त्रानाङ्ग ग्राचमनं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

880



ॐ युवं वस्त्रांशि पीवसा वंसाथे युवोरिच्छंद्रामन्तंवोहसर्गाः। ग्रवां तिरतमनृंतानि विश्वं ग्रतेनं मित्रा वरुगा यचेथे॥ (भग्वेद १.१४२.१) वस्त्रयुग्मं समर्पयामि। वस्त्रान्ते ग्राचमनं समर्पयामि। अब्बह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ यज्ञोपवीतं परंमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। ऋायुंष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमंस्तु तेर्जः॥ (ऋषेद)

यज्ञोपवीतं समर्पयामि । अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः । ॐ हिरंगयरूपुः स हिरंगय संदृगपान्नपात् सेदु हिरंगयवर्गाः । हिरगययात् परियोनेर्निषद्यांहिरगय दादंदुत्यन्नंमस्मै ॥ (भग्वेद २.३५.१०)

म्राभारगां समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ गन्धं द्वारां दुंराधृषां नित्यपुंष्टां करीषिशांिं। ईश्वरीं सर्वीभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

गन्धं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ म्रर्चेत् प्रार्चेत् प्रियंमेधासो मर्चेत। मर्चेन्तु पुत्रका उतपुरन्न धृष्यवंर्चत।। (मानेद =.६६.=)

म्रक्षतान् समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ त्र्यायंने ते प्रांयगो दूर्वीरोहन्तु पुष्पिगीः। हृदाश्चं पुगडरींकागि समुद्रस्य गृहा इमे। पुष्पागि समर्पयामि। (सप्वेद १०.१४२.५)

नाम पूजां करिष्ये — अब्रह्मणो नमः। असोमाय नमः। अईशानाय नमः। अइन्द्राय नमः। अब्रह्मप्ये नमः। अयमाय नमः। अनिर्मृतये नमः। अवरुणाय नमः। अव

285



सागरेभ्यो नमः। अभरवे नमः। अगदायै नमः। अत्रिशूलाय नमः। अवज्ञाय नमः। अशक्तये नमः। अद्राह्यय नमः। अवह्याय नमः। अपाशाय नमः। अग्रेकुशाय नमः। अगौतमाय नमः। अभरद्वाजाय नमः। अविश्वामित्राय नमः। अकश्यपाय नमः। अजमदग्रये नमः। अविश्वाय नमः। अग्रत्रये नमः। अग्रत्यये नमः। अग

वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढयः सुमनोहरः। स्राघ्नेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्।। धूपं स्राघ्नापयामि। (प्रयोगरताकर)

अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

त्राज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहारा मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह ॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

दीपं दर्शयामि धूपदीपानन्तरं स्नाचमनं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। (नैवेद्य को गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण करें नैवेद्य मगडल पर रखें। सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि। इस मन्त्र से परिषिञ्चन करें।) स्रमृतोपस्तरगामिस कहकर जल छोड़ें। अप्राणाय स्वाहा (स्रङ्गुष्ठ एवं किनिष्ठिका मिलाकर) अस्रपानाय स्वाहा (स्रङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर) अव्यानाय स्वाहा (स्रङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर) अउदानाय स्वाहा (स्रङ्गुष्ठ एवं स्वाहा (स्रम्भि सङ्गुष्ठ एवं स्वाहा नैवेद्यं निवेदयामि। स्रमृतापिधानमिस कहकर जल छोड़ें। नैवेद्यं विसर्जयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। गगडूषं समर्पयामि। पुनराचमनं समर्पयामि। (कहकर जल छोड़ें) अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

पूगीफल समायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्रा कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यतां। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि।

(देवपूजा)

अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ ग्रर्चित् प्रार्चेत् प्रियंमेधा सो ग्रर्चित। ग्रर्चेन्तु पुत्र का उत पुरं न धृष्यवंचित। (भावेद =.६६.=)
ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवापृंथिवीध्रुवासः पर्वेता इमे। ध्रुवं विश्वंमिदं जगद् ध्रुवो राजां विशाम्यम्।।
ॐ ध्रुवं ते राजा वर्रगो ध्रुवं देवो बृंहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रंश्चाग्निश्चं राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्।। (भावेद १०.१७३.४)

मङ्गलनीराजनं समर्पयामि । नीराजनान्ते परिमल पत्र पुष्पाणि समर्पयामि । मन्त्रपुष्पं समर्पयामि । प्रदक्षिणं समर्पयामि । नमस्कारान् समर्पयामि ।

(युद्ध भूमि में कायर जैसे देखते ही भीत हो जाते हैं, वैसे ही मगडल को देखते ही सभी ऋरिष्ट दूर हो जाते हैं।) ऋनया पूजया ब्रह्मादि मगडल देवता: प्रीयन्तां यहाँ पर सर्वतोभद्र मगडल पूजन संपन्न हुऋ।

द्वितीय दिन द्वितीय प्रहर

प्रधानदेवता सोम पूजनम्-

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।



अ येभ्यों मातामधुंमृत् पिन्वंते पर्यः पीयूषं द्यौरिदंतिरिद्रंबर्हाः।

उक्थशृंष्मान् वृषभुरान्त्वप्रंस्ताँ ऋांदित्याँ ऋनुंमदास्वस्तयें॥ (सक्वेद १०.६३.३)

अ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे युज्ञैर्विधेम् नमंसा हिविभिः।

बृहंस्पते सुप्रजा वी्रवंन्तो वृयं स्यांम् पतंयो रयीगाम्॥ (सक्वेद ४.४०.६)

माचमन मन्त्र—मृग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

ऋथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुरागोभ्यो नमः। ऋग्नये नमः। वायवे नमः। प्रागाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै

नमः। ग्रन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मगो नमः। विष्णावे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारगाम्—पवित्रन्त इत्यनयोः म्राङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रगो, धारगो विनियोगः।

ॐ प्वित्रंन्ते वितंतं ब्रह्मगस्पते प्रभुगात्रांशि पर्येषि विश्वतं:।

ऋतंप्ततनूर्न तदामो ऋंश्नुतेशृता स्इद्वहंन्त्स्तत् समांशत ॥ (भावेद ६. =३.१)

ॐ तपोंष्यिवित्रं वितंतं द्विस्पदे शोचंन्तो अस्य तन्तंवो व्यंस्थिरन्।

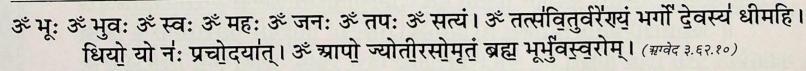
स्रवंन्त्यस्य पवीतारं माशवों दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतंसा॥ (मावेद £. =३.२)

अभूभुर्वः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये ग्रासन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्रासायाम—प्रसावस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्रासायामे विनियोगः।







स्रासन शुद्धि—ॐ स्योना पृंथिवि भवानृक्ष्रा निवेशंनी। यच्छां नः शर्मं सप्रथंः।' (१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मगडल) इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपक्षि मांसशोगित भक्षगो। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुग्रडे हापराजिते॥ (ब्रह्मकर्म समुज्जय)

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प -.....

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः। स्राचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ (श्रृङ्गेरी मठीय स्राचार्य प्रार्थनम्)

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नम:। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरी रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है। भूतोच्चाटन मन्त्र—



ॐ ऋपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।। (ब्रह्मकर्म समुञ्चय-म्रासन विधि प्रकरण)

ॐ ऋपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे।। (ब्रह्मकर्म समुञ्चय-म्रासन विधि प्रकरण)

अ तीक्ष्यादंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमईसि॥ (ब्रह्मकर्म समुश्रय)

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गरापित प्रार्थना — गरानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गरापितिर्देवता। जगती छन्दः। गरापित प्रार्थने विनियोगः।

अ ग्राानांन्त्वा ग्रापंतिं हवामहे कविं कवीनाम्पमश्रवस्तमं।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मंगां ब्रह्मगस्पत् मार्नः शृरावन्नृतिभिः सीदुसादंनम् ॥ (भग्वेद २.२३.१)

(इन मन्त्रों से गरापित प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

जल कलश पूजनम् — कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध म्रक्षत पुष्प कलश के म्रन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों म्रोर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कराठे रूद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगर्गाः स्मृताः॥ कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वगाः॥ त्रङ्गेश्चसहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। त्रत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पृष्टिकरी तथा॥ त्रायान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानिजलदा नदाः॥



गङ्गे च यमुने चैव गोदाविर सरस्वित। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सिन्निधिंकुरु ॥ (ब्रह्मकर्म समुञ्चय-देवपूजा प्रकरण) ॐ इमं में गङ्गे यमुने सरस्वित शुतुंद्विस्तोमं सचता परुष्णया। ऋसिकन्या मरुद्वृधे वितस्त्याऽऽर्जींकीये श्रुशुद्धा सुषोमंया॥ सितासिते सिरते यत्रं संग्थे तत्रांप्लुतासो दिव मृत्यंतिन्त। येवै तन्वं र्विसृंजिन्त धीरास्ते जनांसो ऋमृत्त्वं भंजन्ते॥ (ऋग्वेद १०.७४.७) ॐ याः प्रवतो निवतं उद्वतं उदुन्वती रनुदुकाश्च्याः। ता ऋस्मभ्यं पर्यंसा पिन्वंमानाः शिवा देवी रंशिपदा भंवन्तु सर्वां नृद्यो ऋशिमिदा भंवन्तु॥ (ऋग्वेद ७.४०.४)

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

सितमकरिनषणां शुभ्रवर्गां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्यंकजाभीत्यभीष्टाम्। विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भिसतिसतदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि॥ (स्मृति संग्रह)

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।



श्रात्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्शिक मध्यनालं॥
श्रङ्गुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुरागाम्॥
हृदयकमेलमध्ये सूर्यिबम्बासनस्थं सकलभुवनबीजं सृष्टिसंहारहेतुम्।
निरतिशयसुखात्म ज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम्॥
श्राद्यामि मिशा सन्निभमात्मिलङ्गम्। मायापुरीरहृदय पंकज सन्निविष्टम्॥
श्रद्धा नदी विमलचित्त जलाभिषेकै:। नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय॥
देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥
स्वामिन् सर्व जुगन्नाथ यावत्यूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ (देवपूजा)

अग्रात्मने नमः। अग्रन्तरात्मने नमः। अपरमात्मने नमः। अज्ञानात्मने नमः। ग्रात्मपूजां समर्पयामि। इससे ग्रात्मशुद्धि होती है। (इन मन्त्रों को कहकर ग्रपने सिर पर ग्रक्षत डाल लेवें।)

कलश स्थापन विधान — तत्र षोडश प्रस्थ परिमितान् शालीन् निक्षिप्य तदर्धं तर्रे तर्रे तिलं तदर्धं सर्षपं इति वस्त्रान्तरितैः द्रव्यैः पीठं विरचय्य तिस्मिन् कूर्च न्यस्य ग्रन्यत्र उपकलशार्थं पीठान् विरचय्य तिस्मिन् सौवर्गादि कुम्भान् ग्रस्त्र मन्त्रेग जलैः क्षालियत्वा सूत्रवेष्टितान् ग्राधोमुखान् न्यस्येत्।

सर्वतोभद्रमगडल के ऊपर एक वस्त्र बिछाना चाहिये। उस पर १६ सेर धान, पुन: उस पर वस्त्र डालें ८ सेर चावल, पुन: उस पर वस्त्र डाले। उस पर ४ से तिल, पुन: वस्त्र डालें। उस पर २ सेर सफेद सरसों (ग्रभाव में काला सरसों) उस पर दो कुश रखें (कुर्च) सोना चान्दी कॉच ताम्र पात्र (कलश)

स्ग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

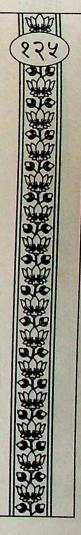
द्वितीय दिन

रखें। इसके ४ प्रकार हैं-

- १. सर्वतोभद्र मगडल में देवताओं के ४७ ग्रावाहन है। ग्रतः ४७ कलश रख सकते हैं।
- २. ऋष्टिक्पालों के ऋाठ एवं शेष के लिए एक प्रधान कलश-कुल ६
- ३. चार दिक्पालों के चार एवं शेष के लिए एक प्रधान कलश कलश कुल ५ कलश।
- ४. १ कलश (सभी देवताओं का एक ही पूजन।)

ग्रस्त्र मन्त्रों से कलशो को धोना चाहिये। ॐहीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर तर तनूरूप चट चट प्रचट प्रचट कर कह वम वम बन्ध बन्ध घातय घातय हुं फट्॥ इस मन्त्र को कहते हुए कलशों को स्वच्छ करें। उसे सूत्रों से बॉधकर, प्रधान कलश को तीन सूत्र से शेष कलशों को एक सूत्र से पंजर बॉधना चाहिये। (पंजर का ग्रर्थ धागों से कलश के चारों ग्रोर लपेटने का विधान) फिर कलशों को उलटा करके रखना चाहिये। दक्षिणभागे पुष्पचन्द क्षतादीन् न्यस्य ग्राग्रेय भागे दीपादिकं न्सस्य, वामभागे स्वस्तिके वस्त्र गालितं जलं संस्थाप्य गुरु: नववस्त्रं संवेष्ट्य ग्राचम्य उपवीतवत् उत्तरीयं वस्त्रं धृत्वा देवं संवंद्य प्रधान द्वारे मग्रटपं प्रविशय कलश समीपे स्वासने उपविशय पवित्रपाणि: गुरून् गग्रापतिं च संवंद्य ग्रस्त्रेग करशोधनं कृत्वा ताळत्रयादिग्बन्धन ग्राग्रिप्राकारांश्च कुर्यात्।

दाहिने ग्रोर फूल चन्दन ग्रक्षतादिकों को रखकर, ग्राग्रेय भाग में दीप रखें। बायें भाग में स्वस्तिक चिन्ह लिखकर उस पर धान डालकर उस पर शुद्ध पात्र रखें। पात्र का मुख वस्त्र से बन्द रखें। उसमें जल भरें। ग्राचार्य नवीन वस्त्र को धारण करें। उत्तरीय को यज्ञोपवीत के समान पहनें (ब्रह्म वस्त्र) भगवान का स्मरण ग्रपने ग्रासन पर बैठें। ग्राचमन करें। पवित्र धारण करें। गुरु गणेश को नमस्कार करें। पहले लिखित "क हही स्फुर स्फुर-ग्रस्त्र मन्त्र से हाथ धो लेवें। तीन बार ताल (हाथ) से हाथ मिलाने पर होन वाला) शब्द करें। फिर दिग्बन्ध ग्राग्राकार को करें।



सुक्ष्म मध्य महाशब्दाः दक्षसव्योभ्योद्भवाः। बोधासेचिनकोद्दीप्ति करा वह्नेस्त्रितालकाः॥ (म्रनुष्टान पद्धति-टिप्पणी)

तीन प्रकार के ताळ (ताली) शब्द पहले सूक्ष्म, फिर मध्यम, एवं फिर ग्रधिक शब्द का होना चाहिये। सूक्ष्म ताल दाहिने हाथ नीचे रखें उस पर बायें हाथ से ताली बजायें। इससे दाहिने हाथ में ऋग्नि उत्पन्न हुऋ। मध्यम ताल में बायें हथेली नीचे उस पर दाहिने हाथ से ताल करें। तब दाहिने हाथ की म्रिया बायें हाथ में रखकर उसमें घी की हवन की कल्पना करनी चाहिये। फिर महाताल से दोनों हाथ को मिलाने से म्रिया प्रज्वलन की कल्पना करनी चाहिये। यह ऋग्नि का त्रिताल कहलाता है।

इसके पश्चात् दश दिशास्रों का दिग्बन्धन करें ताकि कोई स्रसुर यज्ञ में बाधा न पहुँचा सके। जहाँ बैठे हैं हवीं पर स्रस्त्र मन्त्र को पढते हुए चिटकी बजाकर दस दिशाओं का दिग्बन्धन करें। '' अहीं स्फुर स्फुर मन्त्र को पढकर ग्रन्त में प्राचीं दिशं बक्षामि कहकर चिटकी बजायें। फिर अहीं स्फुर स्फ़र प्रस्फ़र प्रस्फ़र घोर घोर तरतन्रूकप चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बन्ध बन्ध घातय घातय हुँ फट्'' त्राग्नेयीं दिशं बध्नामि कहकर चिटकी बजायें (प्रपञ्चसार)। फिर याम्यां दिशं बध्नामि। नैर्सृतीं दिशं बध्नामि। वारुगीं दिशं बध्नामि। वायवीं दिशं बाध्नामि। साम्यं दिशं बध्नामि। ऐशानीं दिशं बध्नामि। ऊर्ध्वा दिशं बध्नामि। ग्रथरां दिशं बध्नामि। प्रत्येक दिशा में इन मन्त्रों में पहले ग्रस्त्र मन्त्र पढें एवं दिशं बध्नामि कहकर उस-उस दिशा में चिटकी बजायें। करयो: उद्दीत ऋग्निं दशदिक्षु विकिरेत्। हथ में उत्पन्न ऋग्नि को चारों ऋोर फेंकना चाहिय। (इसकी कल्पना करनी चाहिये) इससे यज्ञ एवं यज्ञशाला की रक्षा संपन्न हुन्ना।

अब अपने शरीर शुद्धि के लिए **नाडी शोधन करें।** इसके लिए द्वादशवारं प्रगावं संजप्य प्रागायामान् कृत्वा स्वस्य विराङ्रूपं संकल्प्य ग्रं इति त्रिवारुमुच्चार्य पिङ्गलया वायु विमुच्य ष्ज्ञडवारेगा पिङ्गलया प्रपूर्य द्वादशवारेगा परिकुम्प्य इडया तं वायुं विमुञ्चेत् पुनः उं इति त्रिवारमुच्चार्य इडया वायुं विमुच्य षड्वारेगा वायुं इडया प्रपूर्य द्वादशवारेरा इडां प्रकुम्भ्य तं वायुं पिङ्गलया मुञ्जेत्। पुनः तद् वायुं सुषुम्ना मुखे म्राकृष्य मं इति षड्वारं प्रजप्य म्रं उं इति षड्वारं प्रजाय

पिङ्गलया इडया च प्रपूर्य पुन: सुषुम्नां ऋापूर्य द्वादशवारं प्रजप्य सुषुम्नां परिकुम्म्य तद्वायुं व्यत्यस्य बहिस्त्यजेत्। इति नाडी शुद्धि प्रकारः।

१२ बार उकार का जप करें। प्राशायाम (संमंत्रक) करें। यहाँ मन्त्र केवल उकार। ग्रपने को विराट पुरुष की कल्पना करें। ग्रं को तीन बार कहते हुए पिङ्गला से (नाक के दाहिने छिद्र से) ६ बार ग्रं कहते हुए वायु को ग्रन्दर लेना चाहिये। १२ बार ग्रं कहते हुए उस वायु का कुम्भक (स्तम्भन) करें। इडा से (बायें नाक के छिद्र से) बाहर छोडें। फिर उं का तीन बार कहते हुए इडा से (नाक के बायें छेद से) वायुं को छोडें। फिर ६ बार उं कहते हुए इडा से वायु को ग्रन्दर लेना चाहिये। १२ बार उं कहते हुए उस वायु का कुम्भक (स्तम्भन) करें। उस वायु को पिङ्गल से (नाक के दाहिने छिद्र से)बाहर करें। फिर ग्रं उं कहकर छ: बार पिङ्गल एवं इडा दोनों नाक के छिद्रों से वायु को खीच, फिर उस वायु को ब्रह्मरन्ध्र के सुषुम्ना में खींचकर ग्रर्थात् मस्तिष्क नाडि से वायु को भरें। १२ बार मं का जप करते हुए सुषुम्ना में कुम्भक (स्तम्भन करें) उस वायु को उलटी नाक से। दाहिने नाक से खीचे वायु को बाये छिद्र से एवं बायें छिद्र से खीचें वायु को दाहिने छिद्र से छोडें।

यहाँ पर नाडि शोधन संपन्न हुमा। इससे शरीर शुद्धि होती है। जब तक शरीर शुद्धि नहीं होती है तब तक शरीर में देवता नहीं माते हैं। कर्म सफल नहीं होता है। मत: नाडी शोधन मावश्यक हैं। म्रभ्यास से यह क्रिया बहुत सरल है। प्रगावेन षोडशवारं प्रागायामं कृत्वा पिङ्गलया वायुं विमुच्य द्वात्रिंशद्वारं प्रागायामं कृत्वा इडया वायुं प्रपूर्य चतुःषष्टिवारेगा सुषुम्ना नाड्यां कुम्भकं कुर्यात्।।

इति रेचक पूरक कुम्भक प्रकारः

अकार से १६ बार कहते हुए पिङ्गल। (नाक से दाहिने छिद्र से) वायु को बाहर छोडे। ३२ बार अकार कहते हुए इडा से नाक के बायें छिद्र से ..वायु

को अन्दर भर लेवें। ६४ बार अकार कहते हुए सुषुम्ना नाडि में (ब्रह्मरन्ध्र मस्तिष्क में) कुम्भक (स्तम्भन) करें। साधना करने से यह सम्भव है। अनेन अत्यन्त दुरितनिवृत्तिः स्यात्। इसके अत्यधिक पापों का निवारण होता है।

एवं रेचकादिना जीवपरमात्मनोः ऐक्यं मनसा ध्यात्वा पुनः ॐ ग्रीं हं सः इत्यनेन मूलाधारस्थं जीवं, सुषुप्रा मार्गेरा द्वादशांतस्थ परमात्मिन संयोज्य लं इति पादाग्रं वं इति नाभिं रं इति हृदयं यं इति कर्राठं हं इति तालुदेशं संस्पृश्य क्रमेरा पृथ्वी ग्रप् तेज वायु त्राकाशानां मराडलानि संकल्प्य ह्वां इति पञ्चिवंशित संख्यं पञ्चप्रासायामान् कृत्वा ह्वां हुं फट् इति पादागादि नाभ्यन्तं व्याप्य पृथिवीं ग्रप्सु संहरामि। पुनः ह्वीं इति पञ्चिवंशित संख्य चतुर्वारं प्रासायामान् कृत्वा ह्वीं हुं फट् इति नाभ्यादि हृदयान्तं व्याप्य ग्रपः ग्रग्नौ संहरामि। पुनः ग्रूं इति पञ्चिवंशित संख्यं त्रिवारं प्रासायामान् कृत्वा ग्रूं हुं फट् इति हृदयादि कराठां व्याप्य ग्रिग्नं वायौ संहरामि। पुनः ह्यौं इति पञ्चिवंशित संख्यं द्विवारं प्रासायामं कृत्वा ह्यौं हुं फट् इति कराठादि ताल्वन्तं व्याप्य वायुं ग्राकाशे संहरामि। पुनः ह्यौं इति पञ्चिवंशित संख्यं सकृत् प्रासायामं कृत्वा ह्यौं हं फट् इति ताल्वादि द्वादशान्तं व्याप्य ग्राकाशं परमात्मिन संहरामि। (अनुशान प्रवित)

इति भूत संहारः

यह भूत संहार प्रक्रिया यह महत्व पूर्ण ग्रङ्ग है। इसमें पञ्च महाभूतों का संहार कर उन्हें परमात्मा में लन करा देते हैं। तब शरीर में केवल परमात्मा का शुद्ध रूप मात्र रहता है। कोई कश्मल नहीं। रेचक पूरक कुम्भकों से जीव एवं परमात्मा की एकता का चिन्तन करना चाहिये। फिर अग्नीं हं स: कहते हुए मूलाधार .. शरीर के नीचले हिस्से में विद्यमान जीव को सुषुम्ना मार्ग से ब्रह्मरन्ध्र में स्थित परमात्मा में मिलाना चाहिये। लं कहकर पैर के ग्रग्न भाग को, वं कहकर नाभि को, रं कहकर हृदय को, यं कहकर कराठ को एवं हं कहकर तालु प्रदेश को स्पर्श करें। फिर मन में पृथ्वी, जल, तेज, वायु एवं

अपवेदीय सोम स द्वितीय दिन

त्राकाश मगडलों का चिन्तन करें।

२५ बार ह्रां कहते हुए ५ प्राणायाम करते हुए ह्रां हुं फट् कहते हुए पैर से नाभि तक हाथ फिराते हुए वायु तत्व को नाभि में स्थित जल तत्व में मिलाने का संकल्प करना चाहिये। २५ बार ह्रां करते हुए ४ प्राणायाम करते हुए ह्रां हुं फट् कहते हुए नाभि से हृदय तक हाथ फिराते हुए जल तत्व को हृदय स्थित अग्नितत्व में मिलाने का संकल्प करना चाहिये। फिर २५ बार ह्रां कहते हुए ह्रां हुं फट् कहते हुए ह्रदय से कराउ तक हाथ फिराते हुए अग्नितत्व को वायु तत्व में (कराउ में स्थित) मिलाने का संकल्प करना चाहिये। फिर २५ बार ह्रां कहते हुए दो प्राणायाम करते हुए ह्रां हुं फट् कहते हुए कराउ से तालु प्रदेश तक हाथ फिराते हुए वायु तत्व को तालु स्थित आकाश तत्व में मिलाने का संकल्प करना चाहिये। फिर २५ वा ह्रां कहते हुए एक प्राणायाम करते हुए ह्रां हुं फट् कहते हुए तालु प्रदेश से ब्रह्मरन्ध्र तक फिराते हुए आकाश तत्व को ब्रह्मन्ध्र स्थित परमात्म तत्व में लीन करना चाहिये। अब मात्र निर्विकार परमात्मा शरीर में है।

शोषरा विधान—इस विधान से शरीर में विद्यमान सभी कल्मशों का शोषरा होता है।

यं इति वायु बीजेन षोडशवारं प्राणायामं कृत्वा वायुं इडया विमुच्च इडामुखे नाभिपषे च षड् बिन्दु सिहतं धम्रं वायुमगडलं तिस्मन् धुम्रं यं बीजं च ध्यात्वा, तद् बीजेन द्वात्रिंशद्वारं प्राणायामं कृत्वा इडया तद् वायुमगडलेन सह वायुमापूर्य मगडल द्वयं एकीकृतं ध्यात्वा, चतुःषष्टि वारं प्राणायामं कृत्वा पिरकुम्भ्य एकीकृत वायुमगडलात् संजातेन वायुना देहं संशोषितं ध्यात्वा तद् वायुं पिङ्गलया मुञ्जेत। (भनुष्ठान पद्धति)

इति शोषरां

यं नामक वायुतत्व के बींच मन्त्र को १६ बार कहते हुए इडा (नाक के बायें छिद्र) से सॉस छोड़ते हुए प्राशायाम करें। बायें नाक के छेद में एवं नाभि

के नंध्र में छ: बिन्दु युक्त वायुमगडल को एवं उसमें धूम्र वर्गा के यं बीच का ध्यान करें उस बीजमन्त्र को ३२ बार कहते हुए प्रागायाम करें। इडा (बायें नाक के छेद) से वायु को भरकर दोनों मगडलों का एकीकृत मानकर इडा मगडल यानि बायें नाक के छिद्र में स्थित मगडल एवं नाभिप) यानि नाभि में स्थित मगडल) फिर ६४ बार बीज मन्त्र को जपते हुए कुम्भक (स्तम्भन) करते हुए एकीकृत वायुमगडल से उत्पन्न वायु से देह सूख गया है समफकर उस वायु को पिङ्गला (दाहिने नाक के छिद्र) से छोडना चाहिये। इससे शरीर में विद्यमान समस्त कश्मलों का शोषगा होता है।

दाहन—इस विधान से शरीर में शोषित (सुखाये गये) सभी कश्मलों का दहन हो जाता है।

पुनरग्निबीजेन षोडशवारं प्राणायामं विधाय पिङ्गलया वायुं विमुच्य पिङ्गलामुखे हृदिपषे च स्वस्तिकसिहतं त्रिकोणं रक्तं ग्रियामगडलं तन्मध्ये रक्तं रं इति च ध्यात्वा, तद् बीजेन द्वात्रिंशद्वारं प्राणायामं कृत्वा पिङ्गलया तद् ग्रिग्मगडलेन सह वायुमापूर्य मगडलद्वयं एकीकृतं ध्यात्वा, चतुःषष्टिवारं प्राणायामं कृत्वा पिरकुम्प्य एकीकृत ग्रिग्मगडलात् संजातेन ग्रिग्मना देहं दग्धं ध्यात्वा तद् वांयु इडया विमुञ्जेत्। (भनुष्ठान पद्धित)

इति दाहानं

पिर रं नामक ग्रिग्न बीज मन्त्र को १६ बार जपते हुए पिङ्गला से (नाक के दाहिने छिद्र) साँस छोड़ते हुए प्राशायाम करें। नाक के दक्षिश छिद्र में एवं हृदय प.. में स्विस्तिक सिहत त्रिकोशाकार रक्तवर्शीया ग्रिग्निगडल को एवं उसमें रक्त वर्शीय रं बीज मन्त्र का ध्यान रकें। उस बीज मन्त्र का ३२ बार जप करते हुए प्राशायाम करें। पिङ्गला से वायु को भरकर दोनों मगडलों को एकीकृत मानकर (पिङ्गला मगडल यानि दाहिने नाक के छिद्र का मगडल एवं हिद पद्म यादि हृदय में स्थित मगडल, फिर ६४ बार बीज मन्त्र को जपते हुए, कुम्भक (स्तम्भन) करते हुए, एकीकृत ग्रिग्निगडल से उत्पन्न ग्रिग्नि से देह जल गया है समभक्तर उस वायु को इडा नाक के बायें छिद्र से छोडना चाहिये। इससे शरीर में विद्यमान समस्त कल्मश जो पहले सूख गये थे ग्रब जल गये है।

द्वितीय दिन

प्लावन—इस विधान में शरीर में दग्ध (जलायें गये सभी कल्मशों का) निराकरण हो गया है। साथ ही शरीर भी जल गया है। फिर से कश्मल रहित शरीर का निर्माण करने का विधान है।

वं इति त्रमृतबीजेन षोडशवारं प्राशायामं कृत्वा इडया वायुं विमुच्य इडामुखे द्वादशांतपद्मे च पद्म सिहतं ऋधचन्द्रात्मकं सितं ऋष्यं मगडलं तन्मध्ये शुभ्र वं इति च ध्यात्वा, तद् बीजेन द्वात्रिंशद्वारं प्राशायामं कृत्वा इडया तद् ऋमृतमगडलेन सह वायुमापूर्य मगडलद्वयं एकीकृतं ध्यात्वा, चतुःषष्टिवारं प्राशायामं कृत्वा परिकुम्भ्य एकीकृत ऋमृतमगडलात् संजातेन ऋमृतेन देहं द्वादशांतपऋत् गिलतैः परचैतन्यामृतजलैः प्रपञ्चैकीकृतं ऋप्लावितं ध्यायेत्। (अनुष्ठान पद्धति)

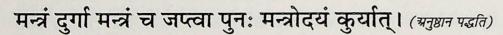
वं नामक ग्रमृत तत्व के बीज मन्त्र को १६ बार जपते हुए इडा से सॉस छोडते हुए प्राणायाम करें। इडा में एवं द्रादशान्त पद्म (ब्रह्मरन्ध्र) में पद्म सिहत ग्रर्धचन्द्रकार शुक्ल (सफेद) रंग का ग्रमृत मण्डल को, एवं उसके बीच में शुक्ल वर्ण के वं बीज मन्त्र का ध्यान रकें। फिर उस बीज से ३२ बार जपते हुए इडा एवं ग्रमृत मण्डल से वायु को भरकर प्राणायाम करते हुए, दोनों मण्डलों को एकीकृत मानकर (इडा मण्डल एवं पद्म सिहत ग्रर्धचन्द्रकार ग्रमृत मण्डल) फिर ६४ बार वं बीजाक्षर को जपते हुए कुम्भक (स्तम्भन) करें। एकीकृत ग्रमृत मण्डल से उत्पन्न ग्रमृत से देह को, द्वादशान्त (सहस्रार) पद्म से गिर रहे परमात्म वस्तु ग्रमृत जल से ग्राप्लावित शरीर ग्रमृतमय हो गया है। इस प्रकार पहले कश्मलों का विनाश होकर फिर ग्रमृतमय शरीर की प्राप्ति हो गयी।

यहाँ पर ऋमृतमय शरीर प्राप्त हुआ

स्रागे पञ्चभूतसृष्टि—लं इति पृथ्वी बीजेन बुद्बुदाभं ब्रह्माग्रडं संकल्प्य हं इति सुरीकरगांकृत्वा सोहं इति द्वादशान्तपन्धात् जीवं स्वहृदये संयोज्य, हौं इति पञ्चविंशति संख्यं सकृत प्रागायामं कृत्वा, हौं नमः इति द्वादशान्तादि ताल्वन्तं व्याप्य स्रात्मनः स्राकाशं सृजामि, पुनः हौं इति पञ्चविंशति संख्यं द्विवारं प्रागायामं कृत्वा हौं नमः इति ताल्वादि कगठान्तं व्याप्य त्राकाशात् वायुं सृजामि, पुनः ऋं इति पञ्चविंशति संख्यं त्रिवारं प्रागायामं कृत्वा ऋं इति पञ्चविंशति संख्यं चतुर्वीरं प्रागायामं कृत्वा ह्वीं नमः इति हृदयामि नाभ्यन्तं व्याप्य ऋग्नेः ऋपः सृजामि, पुनः ह्वां इति पञ्चविंशति संख्यं पञ्च प्रागायामान् कृत्वा ह्वां नम इति नाभ्यादि पादान्तं व्याप्य ऋद्यः पृथिवीं सृजामि। (अनुष्ठान पद्धति)

इस प्रक्रिया में नष्ट हुए शरीर की पञ्चभूत सृष्टि विधान है। लं नामक पृथ्वी बीज से बद्बुदाकार के ब्रह्मायड सृष्टि का चिन्तन करें। हं नामक ग्राकाश बीज का स्मरण करते हुए उसमें ग्राकाश का चिन्तन करें। मैं परमात्मा हूँ मानते हुए सहस्रार से (ब्रह्ममरन्थ्र) जीव को हृदय पद्म में स्थिपित करें। हौं ग्राकाश बीज का २४ बार जप करते हुए एक प्राणायाम करें। हौं नमः कहकर ब्रह्मरन्थ्र से तालु पर्यन्त हाथ फेरते हुए परमात्मा से ग्राकाश सृष्टि की कल्पना करें। फिर ह्याँ नमः वायु बीज का २४ बार जप करते हुए दो प्राणायाम करें। ह्याँ नमः कहकर तालू से कराड तक हाथ फेरते हुए ग्राकाश से वायु सृष्टि का चिन्तन करें। फिर हूं ग्राग्नि बीज का २४ बार जप करते हुए तीन प्राणायाम करें। ह्याँ नमः कहकर कराड से हृदय तक हाथ फेरते हुए वायु से ग्राग्नि सृष्टि का चिन्तन करें। फिर ह्याँ जल बीज का २४ बार जप करते हुए चार प्राणायाम करें। ह्याँ नमः कहकर हृदय से नामितक हाथ फेरते हुए ग्राग्नि से जल सृष्टि का चिन्तन करें। फिर ह्यां पृथ्वी बीज का २४ बार जप करते हुए पाञ्च प्राणायाम करें। ह्यां नमः कहकर नामि से पाँव तक हाथ फेरते हुए जल से पृथ्वी सृष्टि का चिन्तन करें।

पुनः षष्ट्युत्तर त्रिशत प्रगाव प्रागायामं कृत्वा, संवत्सरोषितं संकल्प्य फडन्त प्रगावेन ग्रगड भेदं कृत्वा तत् शकले द्यावापृथिव्यो ध्यात्वा तदन्तर्वितनं जीवं विराड्रूपं ध्यात्वा पुनः लिपि प्रागायामं कृत्वा पीठन्यासं कृत्वा स्वहृदये लिपि ग्रावाह्य तत्रैव सकलीकृत्य मानसपूजां विधय पुनः प्रागायामं कृत्वा लिप्या करन्यासं कृत्वा देहे व्याप्य लिपिन्यासं कृत्वा ग्राजन्वित गरापित



३६० बार ॐकार का जप करते हुए प्राग्गायाम करें एक वर्ष बीता है समफ्तकर (ब्रह्मागड सृष्टि का) ॐफट् कहते हुए ब्रह्मागड भेदन की कल्पना कर उन दो टुकडो को भूमि एवं म्राकाश मानते हुए उसके बीच में स्थित जीव को विराट् स्वरूप मानते हुए लिपि प्राग्गायाम को करें। ''म्रं म्रां इं ई उं ऊँ मृं मृं लं लृं एं ऐं म्रों म्रों म्रं मृं। कं खं गं घं मृं। चं छं ज फं मृं। टं ठं ड ढं गं। तं थं दं धं नं। पं फं ब मं मं। यं र लं वं शं षं सं हं ळं क्षं'' यह लिपि प्राग्गायाम मन्त्र है। फिर पीठ न्यास करें। गुं गुरवे नम:—इति मूर्धिन (मस्तक में) गं गग्गपतये नम:—इति मूलाधार में (मूल में)

ग्राधारशक्त्यै नमः। मूल प्रकृत्यै नमः। ग्रादि कूर्माय नमः। ग्रनन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः। कहते हुए मूलाधार से नाभितक न्यास करें।

धर्माय नम:-दक्षिण ऊरु (दाहिना जॉघ), ज्ञानाय नम:-दिक्षिण ग्रंसे (दाहिनी भुजा), वैराग्याय नम:-वाग ग्रंसे (बायें भुजा), एैश्वर्याय नम:-वाम ऊरु (बायें जॉघ), ग्रंधर्माय मन:-नामि मूले (नामि के मूल में), ग्रंज्ञानाय नम:-दिक्षिण पार्श्वे (दाहिने पार्श्व में), ग्रंवेराग्याय नम:-मुखे (मुख में), ग्रंनेश्वर्याय नम:-नामि मूले (नामि के मूल में), ग्रंज्ञानाय नम:-दिक्षण पार्श्वे (दाहिने पार्श्व में), ग्रंवेराग्याय नम:-मुखे (मुख में), ग्रंनेश्वर्याय नम:-वाम पार्श्वे (बायें पार्श्व में), मं सत्वाय नम:-मध्ये सूत्ररूपेण (बीच में धागे के रूप में नामि के पास), मं मायाये नम:-वितान रूपेण (छत के रूप में सिर के ऊपर), विं विद्यायें नम:-वितान रूपेण (छत के रूप में सिर के अपर), पं पद्माय नम:-हृदय (हृदय में), ग्रंग्वं ग्रंनेस्वर्य पद्म के ज्ञाठ दलों में, अन्तरात्मने नम:-(हृदय में), मं विह्नमण्डलाय नम:-हृदय (हृदय में), ग्रंग्वं ग्रंत्वर्य नम:।हृदय पद्म के ग्राठ दलों में, अन्वल्य नम:।हृदय पद्म के ग्राठ दलों में, अन्वल विक्रिलन्यें नम:।हृदय पद्म के ग्राठ दलों में, अन्वल विक्रिलन्यें नम:।हृदय पद्म के ग्राठ दलों में, अन्वल प्रमिथन्यें नम:।हृदय पद्म के ग्राठ दलों में, अन्वल प्रमिथनें नम:।हृदय पद्म के ग्राठ दलों में, अन्वल प्रमिथन्यें नम:।ह्रांच पद्म के ग्राठ दलों में, अन्वल प्रमिथन्य नम:।ह्रांच पद्म के ग्राठ दलों में, अन्वल प्रमिथनेंंच नम:।ह्रांच पद्म के ग्राठ दलों में, अन्वल प्रमिथनेंच नम:।ह्रांच पद्म के ग्राठ दलोंच मेंच प्रमेथनेंच नम:।ह्रांच पद्म के ग्राठ दलोंच मेंच पद्म के ग्राठ दल्य प्रमेथनेंच नम:।ह्रांच पद्म के ग्राठ प्रमेथनेंच प्रमेथनेंच नम:

2000年的中国中国中国中国中国中国

भग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

नमः (हृदय पद्म कर्शिकायां), अनमो भगवते सकल गुशात्म शक्ति युक्ताय ग्रनन्ताय येगपीठात्मने नमः। (ग्रनुष्ठान पद्धति)

पीठ न्यास पूरा हुन्या

अपने हृदय में अकारादि सभी लिपियों का आवाहन करें। वहीं पर सभी का मानस पूजा करें। उससे पूर्व सकलीकरण न्यास कर लें। अहदयाय नमः। अशिरसे स्वाहा। अशिखाये वषट्। अकवचाय हुम्। अनेत्रत्रयाय वौषट्। अग्रस्त्रायफट्। न्यास के बाद ग्रात्मा का मानस पूजन करें। अलं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। अहं ग्राकाशात्मने पृष्णं कल्पयामि। अयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। अरं ग्रग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। अवं ग्रबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। अमं परमात्मने सर्वोपचार पूजां कल्पयामि। फिर प्राणायाम करें। पिपि से करन्यास करें

ॐ मंं कं खं गं घं छं मां-म्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ इञ्चं छं जं भं जं ई-तर्जनीभ्यां नमः। ॐ उं टं ठं छं ढं गां ऊं- मध्यमाभ्यां नमः। ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं-म्रनामिकाभ्यां नमः। ॐ म्रों पं फं बं मं मं ग्रों - किनिष्टिकाभ्यां नमः। ॐ म्रं यं रं लं वं शं षं हं ळं क्षं मः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। फिर पिपि को देह में व्याप्य करें।

अंनमः आं नमः इं नमः उं नमः ऊं नमः करतलपृष्ठपार्श्वेषु न्यासं कुर्यात्। ऋं नमः-दाहिना स्रङ्गुष्ठा, ऋं नमः-दाहिना तर्जनी, लृं नमः- दाहिना मध्यमा, लृं नमः- दाहिना स्रनामिका, एं नमः-दाहिना किनिष्ठिका (अनुष्ठान पद्धित), ऐं नमः-वाम किनिष्ठिका, स्रों नमः-वाम स्रनामिका, स्रों नमः-वाम मध्यमा, स्रं नमः- वाम तर्जनी, स्रां नमः-वाम सङ्गुष्ठ, कं नः-दाहिने हाथ के तर्जनी मूल से अग्र तक (पर्व सन्धियों के अग्र में।), खं नमः-दाहिने हाथ के तर्जनी मूल से अग्र तक (पर्व सन्धियों के अग्र में।), घं नमः-दाहिने हाथ के तर्जनी मूल से अग्र तक (पर्व सन्धियों के अग्र में।), इं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, चं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, चं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, चं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, जं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, मं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, जं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, मं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, जं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, मं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, जं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, मं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, जं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, मं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, जं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, मं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र

द्वितीय दिन

तक, म्रां नमः-दाहिने हाथ के म्रनामिका के मूल से भ्रग्र तक, टं नमः-दाहिने हाथ के म्रनामिका के मूल से भ्रग्र तक, ठं नमः-दाहिने हाथ के म्रनामिका के मूल से भ्रग्र तक, ढं नमः-दाहिने हाथ के कि मूल से भ्रग्र तक, ढं नमः-दाहिने हाथ के कि कि मूल से भ्रग्र तक, तं नमः-दाहिने हाथ के कि कि मूल से भ्रग्र तक, तं नमः-दाहिने हाथ के कि कि मूल से भ्रग्र तक, तं नमः-वाये हाथ के कि कि मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के कि कि मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के कि म्रनामिका मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के म्रनामिका मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के भ्रनामिका मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के भ्रनामिका मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के मध्यमा के मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के मध्यमा के मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के तर्जनी के मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के तर्जनी के मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के तर्जनी के मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के तर्जनी के मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के तर्जनी के मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के तर्जनी के मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के तर्जनी के मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के तर्जनी के मूल से भ्रग्र तक, वं नमः-वाये हाथ के मूल, (दोनों हाथ), छं नमः-भ्रङ्गुष्ठ के भ्रग्र, (दोनों हाथ)

ऋड़्न-यास — अग्रं कं खं गं घं ग्रं ग्रां – हृदयाय नमः, अइं चं छं जं भं ग्रां ई-शिरसे स्वाहा, अउं टं ठं डं ढं गां ऊं-शिखायै वषट्, अऐं तं थं दं धं नं ऐं-कवचाय हुम्, अग्रों पं फं बं मं मं ग्रों –नैत्रत्रयाय वौषट्, अग्रं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ग्रः-ग्रस्त्रायट्

ऋषि छन्द देवता न्यास—शब्द ब्रह्म ऋषि: गायत्री छन्द: मातृका सरस्वती देवता शिरिस ऋषि:, मुखे छन्द:, हृदये देवता का स्मरण कर लेवे। ऋषि देवता छन्द न्यास करने के बाद यथा शक्ति लिपि का पजकर उसे समस्त शरी में व्याप्तकर ग्रङ्गन्यास का लयाङ्ग यानि उलटा करके न्यास करें।

अम्रं यं रं लं वं षं षं सं हं ळं क्षं म्न: – म्रस्त्राय फुट्, अम्रों पं फं बं भं मं म्रों – नेत्रत्रयाय वौषट्, अपें तं थं दं धं नं ऐं – कवचाय हुम्, अउं टं ठं डं ढं गां ऊं – शिखायै वषट् , अइं चं छं जं भं मृां ईं – शिरसे स्वाहा, अम्रं कं खं गं घं डं म्रां–हृदयाय नमः (मृनुष्ठान पद्धति)



ॐ गृगानांन्त्वा गृगापतिं हवामहे कृविं कंवीना मुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजुं ब्रह्मंगां ब्रह्मगस्पत् स्नानंः शृगवन्नृतिभिः सीदुसादंनम्॥ (मावेद २.२३.१)

इस मन्त्र से गरापित की प्रार्थना करें।

ॐ जातवेंदसे सुनवाम् सोमंमराति यतो निदंहाति वेदः। स नः पर्षदिति दुर्गाशि विश्वां नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥

(मृग्वेद १.££.१)

इस मन्त्र से दुर्गा देवी की प्रार्थना करें।

मन्त्रोदय विधान—ह ह ह इति प्रजप्य मूलाधारस्थं पीवंपरमात्मिन लाप्य तन्मंत्रात्मकं ध्यात्वा पुनः प्रगावसिहत मूलमन्त्रं उक्त्वा हृदय प.. सुयोज्य मूल मंत्रेग पञ्चविशति संख्यं प्रागायाम त्रयं कृत्वा क्रमेग पर सूक्ष्म स्थूलात्मकं ध्यात्वा तस्य विराङ्क्षपस्य त्राधारार्थं पीठन्यासं कृत्वा स्वहृदये मूर्ति संकल्प्य त्रावाह्य सकलीकृत्य मानस पूजां विधाय पूज्य पूजकयोः ऐक्यं संभाव्य मूलेन पञ्च विंशति संख्यं प्रागायामं कृत्वा तेजः कग्रां पिङ्गलया ग्रंजलो निपात्य करन्यास कृतवा ताभ्यां हस्ताभ्यां मूलेन देहे त्रिवारं व्याप्य तत्वन्यासं कुर्यात्। (भ्रनुष्ठान पद्धति)

ह ह ह इसका जप कर मूलाधार में स्थित जी को परमात्म में मिलाना चाहिये। ऋब जीव मन्त्रात्मक हो गया मानना चाहिये। फिर प्रगाव सिहत मूल मन्त्र का जप करें। अधिशास्त्र सूर्यग्रादित्य:। देवता को हृदय में स्थापित करें। फिर २४ बार मूल मन्त्र का जप करते हुए तीन बार प्राग्गायाम करें। पहले प्राग्गायाम से परब्रह्म रूपी, दूसरे प्राग्गायाम से जीव सूक्ष्मरूप, एवं तीसरे प्राग्गायाम से जीव स्थूल रूप को प्राप्त करता है। उस विराट् स्वरूप के जीव के ग्राधार के लिए पीठ न्यास करें पं पद्माय नम: कहकर पीठन्यास करें। ग्रपने हृदय में सूर्य मूर्ति का चिन्तन करें, ग्रावाहन करें ''अधिशाः सूर्यग्रादित्य:। सूर्यं

द्वितीय दिन

ग्रावाहयामि।'' सकलीकरण कर अह्दयाय नमः। अशिरसे स्वाहा। अशिखायै वषट् अकवचाय हुम् अनेत्रत्रयाय वौषट् अग्रस्त्राय फट्। मानस पूजां कृत्वा—अलं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। अग्राकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। अयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। अरं ग्रग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। अवं ग्रबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। अमं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। (ग्रनुष्ठान पद्धित)

पूजन करने वाला एवं पूजित देवता दोनों उपरोक्त क्रियाम्रों से एक हुए मानकर मूल मन्त्र ''ॐ घृिणः सूर्यम्रादित्यः'' इसे २५ बार जपते हुए प्राणायाम करें। तेज कशों को पिङ्गला से (नाक के दाहिने छिद्र से) ग्रंजली में भरकर सूर्य मूल मन्त्र से करन्यास करें।

अघृिशाः सूर्यम्रादित्यः म्रङ्गुष्ठाभ्यां नमः। अघृिशाः सूर्यम्रादित्यः तर्जनीभ्यां नमः। अघृिशाः सूर्यम्रादित्यः मध्यमाभ्यां नमः। अघृिशाः सूर्यम्रादित्यः म्रण्यमाभ्यां नमः। अघृिशाः सूर्यम्रादित्यः किनिष्ठिकाभ्यां नमः। अघृिशाः सूर्यम्रादित्यः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथों से तीन बार देह पर हाथ फिराये तत्वन्यास को करें।

तत्वन्यास-कलाध्वा— उन्हों नमः पराय शान्त्यतीत कलात्मने नमः मूर्धनि। उन्हों नमः पराय शान्तिकलात्मने नमः मुखे। उन्हों नमः पराय विद्या कलात्मने नमः हिदये। उन्हों नमः पराय प्रतिष्ठा कलात्मने नमः गुह्ये। उन्हां नमः पराय निवृत्ति कलात्मने नमः पादयोः कहकर कला न्यास करें। उन्मं नमः पराय जीवात्मने नमः सर्वाङ्गे, उन्मं नमः पराय प्राणात्मने नमः हृदये, उन्बं नमः पराय बुध्यात्मने नमः हृदये, उन्मं नमः पराय प्रहंकारात्मने नमः हृदये, उन्मं नमः पराय मन ग्रात्मने नमः हृदये, उन्वं नमः पराय शब्दतन्मात्रात्मने नमः मूर्धनि, उन्धं नमः पराय स्पर्शतन्मात्रात्मने नमः मुखे, उन्दं नमः पराय स्पर्शतन्मात्रात्मने नमः हृदये, उन्धं नमः पराय रस तन्मात्रात्मने नमः गृह्ये, उन्तं नमः पराय गन्ध तन्मात्रात्मने नमः पादयोः, उन्धं नमः पराय श्रोत्रात्मने नमः श्रोत्रयोः

ऊढं नमः पराय त्वगात्मने नमः त्वचि। ॐडं नमः पराय चक्षुरात्मने नमः चक्षुषि। ॐठं नमः पराय जिह्वात्मने नमः जिह्वायां। ॐटं नमः पराय ध्राशात्मने

नमः नासिकायोः। अग्नां नमः पराय वागात्मने नमः वाचि। अभं नमः पराय पारायात्मने नमः हस्तयोः। अजं नमः पराय पादात्मने नमः पादयोः। अछं नमः पराय पाय्वात्मने नमः ग्रपाने। ॐचं नमः पराय उपस्थात्मने नमः गुह्ये। ॐड. नमः पराय ग्राकाशात्मने नमः मूर्धनि। ॐघं नमः पराय वाय्वात्मने नमः मुखे। ॐगं नमः पाया तेज ग्रात्मने नमः हृदये। ॐखं नमः पराय ग्रबात्मने नमः हृह्ये। ॐकं नमः पराय पृथिव्यात्मने नमः पादयोः। ॐशं नमः पराय हृत्पुरुडरीकात्मने नमः हृदये। ॐ हं नमः पराय सूर्यमराडलाय द्वादशकलात्मने नमः हृदये। ॐ सं नमः पराय सोममराडलाय षोडशकलात्मने नमः हृदये। ॐ रं नमः पराय वह्निमग्डलाय दशकलात्मने नमः हृदये। ॐहौं पराय शान्त्यतीतात्मने नमः मूर्धनि। ॐहौं नमः पराय शान्त्यात्मने नमः मुखे ॐहं नमः पराय विद्यात्मने नमः हृदये। अह्वीं नमः पराय प्रतिष्ठात्मने नमः गुह्ये। अह्वां नमः पराय निवृत्यात्मने नमः पादयोः (अनुष्ठान पद्धति)। इति तत्व न्यासः। शंखपूराराम्—स्रग्रतः गोमय जलेन चतुरस्त्र मराडलं कृत्वा प्ररावेन तत्र गन्धपुष्पाक्षतान् न्यस्य स्रस्त्रेरा शंखं शंखपादमपि प्रक्षाल्य विह्न मग्रडलेन शंखपादं, सूर्य मग्रडलेन शंखं च न्यस्य हृदय मन्त्रेग शंखे गन्धपृष्पाक्षतान् न्यस्य शिरोमन्त्रेगा शृद्धजलै: शंखमापूर्य गन्धपूष्पं निक्षिप्य विह्न मराडलेन शंखपादं सूर्यमराडलेन शंखं, सोम मराडलेन जलं संपूज्य, शिखा मन्त्रेगा गालिनी मुद्रया जल्स्य उत्पवनं कृत्वा स्नालोढ्य स्नापूर्य गुरुड मुद्रया निर्विषीकृत्य, सुरिभमुद्रया स्मृतीकृत्य, नेत्र मन्त्रेगा जल निरीक्ष्य कवचमन्त्रेगा हस्ताभ्यां ऋच्छाद्य, ऋस्त्र मन्त्रेगा संरक्ष्य, गङ्गे इत्यादिना तीर्थमावाह्य किंचित् पीठं संपूज्य मूलेन स्वहृदयात् देवमावाह्य सकलीकृत्य निवेद्य मुद्रा प्रदर्श्य वारं मूलमन्त्रं प्रजप्य वर्धन्यां किंचित् परिषिच्य

सामने गोमय जल से चतुरस्र मराडल को बनाकर ॐ कार जपते हुए गन्ध पुष्प ग्रक्षतों को डालकर ॐ ग्रस्त्राय फट् करते हुए शंख को एवं खंख के ग्रासन को धोवें। ॐ रं विह्नमराडलाय दश कलात्मने नमः कहकर शंख पाद को

शिष्टजलेन प्रगावेन पूजा द्रव्यागि स्नात्मानं च त्रिः प्रोक्षेत्। (मनुष्ठान पद्धित)

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मगडल पर रखें। ॐ हं सूर्यमगडलाय द्वादश कलात्मने नमः ''कहकर शंख को मगडल पर रखें।

ॐ हृदयाय नमः कहते हुए शंख पर गन्ध पुष्प एवं ग्रक्षत चडाये। ॐ शिरसे स्वाहा कहते हुए शुद्ध जल से शंख में जल भरें। उसमें गन्ध पुष्प डालें। ॐ रं विह्नमगडलाय नमः कहकर शंख का पूजन करें। ॐ सं सोममगडलाय नमः कहकर जल का पूजन करें। ॐ शिखाय वषट् कहकर गालिनी मुद्रा से जल का उत्पवन (शुद्धीकरण करना) कर, हिलाकर, भरकर, गरुड मुद्रा से जल के विष का निवारण कर, सुरिभमुद्रा से ग्रमृत बनाकर। ॐ नेत्रायाय वौषट् कहकर जल को देखें। ॐ कवचाय हुम् कहकर दोनों हाथों से उसे ढककर ॐ ग्रस्त्राय फट् कहकर उसकी रक्षा की कल्पना करें। ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदाविर सरस्वित। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सिन्धिं कुरु। (भ्रनुष्ठान पद्धित) कहकर जल में तीर्थ का ग्रावाहन करें। पं पद्माय नमः कहकर पीठ का पूजन करें।

शंख तीर्थ में अपने हृदय से सोम देवता का आवाहन कर ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखाये वषट्। ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्रात्रयास वौषट् ॐ ऋस्त्राय फट् कहकर सकलीकरण कर नैवेद्य मुद्रा को दिखाकर ॐचं चंद्राय नमः इस मूल मन्त्र को ८ बार जपने हुए कलश जल में किचित् शंख जल को डालें शेष जल से तीन बार पूजा सामग्रियों को एवं अपने को ॐकार कहते हुए प्रोक्षण करें।

कलश प्रसङ्गे स्रात्माराधनम्—हृदये पीठं संपूज्य प्रगावाक्षरैः मूलाधार हृदय द्वादशान्त स्थित तेजांसि संपूज्य प्रगावेद तानि हृदयपग्ने नियोज्य मूलेन प्रागायामं कृत्वा व्याप्य स्नास्तिदं स्वागतिमदं पाद्यमिदं स्नाधिमदं स्नामिदं वस्त्रमिदं स्नाभारगमिदं इत्यादि उपहारान् दत्वा जलगन्धाभ्यां स्नात्मानं संपूज्य सद्योजातादि पञ्च ब्रह्मभिः ललाट कग्रठ संसद्वय हृदय उदरेषु स्रष्टगंधेन तिर्यग् पुगड़ािश विलिप्य स्थागा मंत्रग मूिध पञ्चवारं पुष्पांजिल विधाय स्रं स्रकद्वयं कल्पयािम, इति पादाग्रदिनाभ्यन्तं कंलल्प्य पुष्पाजिलं कुर्यात्। अकरवीर द्वयं कल्पयािम इति नाभ्यादि

द्वितीय दिन

हृदयान्तं संकल्प्य पुष्पांजिलं कुर्यात्। ॐ षट् कुसुमानि कल्पयामि इतिशिरिस। शेष कुसुमानि कल्पयामि इति सर्वाङ्गे च पुष्पांजिलं कुर्यात्। धूपं मुद्रां दीप मुद्रां प्रदर्श्य नैवेद्य काले ऋर्ध्यं दत्वा प्रसन्न पूजां विधाय पूजां समापयेत्। इति

स्रात्मपूजा। (मनुष्ठान पद्धति)

हृदय में पी पूजा करें। पं पद्माय नमः इस मन्त्र से पीठ पूजा करें। प्रगावाक्षर ग्रं उं मं इसी क्रम से मूलाधार हृदय एवं द्वादशान्त पत्र के तेज का पूजन करें। उन्कार से तीनों को मिलायें। उन्चं चंद्राय नमः इस मूल मन्त्र से प्रागायाम करके ग्रासनं समर्पयामि। स्वागतं समर्पयामि। ग्रध्यं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। ग्राचमनं समर्पयामि। ग्राचमनं समर्पयामि। ग्राचमनं समर्पयामि। ग्राध्यं समर्पयामि

ॐ सुद्योजातं प्रपंद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवेभवेनाति भवे भवंस्व मां भवोद्धं वाय नमः। (यर्जुर्वेद-महानारायर्गोपनिषद्)

कहकर ललाट में गन्ध धारग करें।

ॐ वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमें श्रेष्ठाय नमों रुदाय नमः कालांयनमः कलंविकरणय नमो बलंप्रमथनाय नमें सर्वभूतदमनाय नमों मुनोन्मंनाय नमः। (यजुर्वेद-महानारायशोपनिषद्)

कहकर कराट में तिर्यक् त्रिपुराड्र गन्ध धाररा करें।

ॐ ऋघोरेंभ्योऽश्र घोरेंभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्व्शर्वेभ्यो नमंस्ते ऋस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ (यजुर्वेद-महानारायगोपनिषद्)

कहकर दोनों भुजाम्रों पर गन्ध धाररा करें।

ॐ तत्पुर्भषाय विद्महें महादेवायं धीमिह। तन्नों रुद्रः प्रचोदयांत्। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)

888

कहकर हृदय में गन्ध धाररा करें।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वं भूतानां ब्रह्माधिपित् ब्रह्मशोधि पितुर्बह्मां शिवो में स्रस्तु सदाशिवोऽम्।

(यजुर्वेद-महानारायगोपनिषद्)

कहकर उदर में अष्टगन्ध धारण करें। स्थाणु मन्त्र से पाँच बार पुष्पांजित सिर पर डाल लेवे। स्थाणुमन्त्र—नमोस्तु स्थाणु भूताय ज्योतिर्लिगावृतात्मने चतुर्मूर्तिवपुच्छाया भासिताङ्गाय शंभवे॥ (क्रियासर) अ अं अर्क द्वयं कल्पयामि कहकर पैरों के तले से नाभिपर्यन्त कल्पना कर सि पर पुष्पांजित डाल लेवें। अ उं करवीर द्वयं कल्पयामि कहकर नाभि से हृदय पर्यन्त कल्पना करें सिर पर पुष्पांजित डाल लेवें। अ मं पद्मद्वयं कल्पयामि कहकर हृदय से भू मध्य तक कल्पना करें सिर पर पुष्पांजित डाल लेवें। अ षट् कुसुमानि कल्पयामि कहकर पुष्पांजित करें। शेष कुसुमानि कल्पयामि कहकर सिर पर एवं सभी अंङ्गों पर पुष्पांजित करें। धूप मुद्रा-(अङ्गुष्ठाग्र एवं अनामिकाग्र मिलाने से दीप मुद्रा) इन्हें दिखाकर। नैवेद्य के बदले अर्ध्य देवें। प्रसन्न पूजां समर्पयामि कहकर आत्मापूजा को संपन्न करें। इसके बाद संकल्प करें (प्रमाण श्लोक)

फलिभसंधानबुद्धिस्थिरीकरगासिद्धये। संकल्पस्तु पुराकार्यः श्रोते स्मार्ते च कर्मिशा। (प्रयोगरताकरः)

श्रौत स्मार्त कर्म करने से पहलें फल सिद्धि की स्थिर भावना की प्राप्ति के लिए कर्म से पहले संकल्प करना चाहिये।

संकल्प्यैव च कर्तव्यं स्नानदान व्रतादिकम्। ग्रन्यथा पुरायकर्मारिश निष्फलानि भवन्ति हि।। (प्रयोगरताकरः)

स्नान दान कर्मादियों को संकल्प लेकर ही करना चाहिये। नहीं तो पुगयकर्म फल रहित हो जाते हैं। मास पक्ष तिथीनां च निमित्तानां च सर्वशः। उल्लेखन कुर्वागो न तस्य फलभाग् भवेत्॥ सभी कर्मो में महिना,पक्ष,तिथि, एवं किस लिए कर रहे हैं (निमित) इसका जो उल्लेख नहीं करते हैं वे फल को प्राप्त नहीं करते हैं।

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य विश्वशान्त्यर्थं सर्वाद्भुत उत्पात जनित दोष परिहारार्थं त्रादित्यादि नवानां ग्रहागां शुभ एकादश स्थान फलावाप्यर्थ कलशस्थापनं नवग्रहाराधनं यथाशक्ति कल्पोक्त षोडशोपचार पूजां करिष्ये।

गुरु पूजन—गुं गुरुभ्यो नमः। लं पृथिव्यात्मने गन्थं कल्पयामि। हं ग्राकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। यं वाय्वात्मने धृपं कल्पयामि। रं ग्रग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। वं ग्रमृतात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। पं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। गुं गुरवे नमः सुवर्गा दक्षिगां समर्पयामि।

गरोश पूजन—गं गरापतये नमः। ॐलं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐहं त्राकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं त्रान्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं त्रमृतात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। गं गंरापतये नमः सुवर्रापुष्पं समर्पयामि।

ॐ ग्रानांन्त्वा ग्रापंतिं हवामहे कृविं कंवीना मुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मंशां ब्रह्मशास्पत् स्नानंःशृरावन्नृतिभिः सीदुसादंनम्। (स्रावेद २.२३.१)

वक्रतुगड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ। निर्विधं करु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा गं गगापतये नमः प्रार्थयामि। नमस्करोमि। दीपाराधनम्—ॐ ऋग्निदूतं वृंगाीमहे होतांरं विश्ववेदसं। ऋस्य युज्ञस्यं सुक्रतुंम॥ (ऋग्वेद १.१२.१)

उन्हें नमः इति दीपमाराधयामि। कहकर पुष्प से दीप का पूजन करें।

पीठपूजनम् — अग्नाधार शक्त्यै नमः। अग्नज्ञानाय नमः। अमूल प्रकृत्यै नमः। अग्नवैराग्याय नमः। अग्नादिकूर्माय नमः। अग्ननैश्वर्याय नमः। अग्ननेश्वर्याय नमः। अग्ननेश्वर्याय नमः। अग्ननेश्वर्याय नमः। अग्ननेश्वर्याय नमः। अग्नेराग्याय नमः। अविं विद्यायै नमः। अपेश्वर्याय नमः। अपं पद्माय नमः। अग्नधर्माय नमः। अवामायै नमः। अज्येष्ठायै नमः। अग्नं ग्रक्तमगडलाय नमः। अग्नैद्रयै नमः। अग्ने



द्वितीय दिन

सोममग्रलाय नमः। ॐकालयै नमः। ॐरं विह्नमग्रडलाय नमः। ॐबल विकलिन्यै नमः। ॐग्रं ग्रात्मने नमः। ॐकलिविकलिन्यै नमः। ॐउं ग्रन्तरात्मने नमः। ॐबल प्रमिथन्यै नमः। ॐमं परमात्मने नमः। ॐसर्वभूतदमन्यै नमः। ॐग्रीं ज्ञानात्मने नमः। ॐमनोन्मन्यै नमः।

ॐ नमो भगवते सकलगुशात्म शक्तियुक्ताय ऋन्तंताय योगपीठात्मने नमः। (अनुष्ठान पद्धित)

यहाँ पर कलश रखने वाला पीठ का पूजन पुष्पों से ऋक्षतों से करें।

भुवनेश्वरी पूजन (पीठ मध्ये) — ॐहां हृदयाय नमः। ॐहीं शिरसे स्वाहा। ॐहूँ शिखायै वषट्। ॐहैं कवचाय हुम्। ॐहीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐहाः ग्रस्त्राय फट्। ॐलं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐहं ग्राकाशात्मने पृष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं ग्रग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं ग्रमृतात्मने नैवैद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। ॐहीं भुवनेश्वर्ये नमः सुवर्णपृष्पं समर्पयामि। ॐहीं भुवनेश्वर्ये नमः प्रसन्नाध्यं समर्पयामि। वरांकुशौ पाशमभीतिमुद्रां करैर्वहन्तीं कमलासनस्थां। बालार्क कोटिप्रतिमां त्रिनेत्रां भजेहमाद्यां जगदीश्वरीं तां॥ पृष्पांजिल समर्पयामि। नमस्करोमि।

पद्मपुद्रां पदर्श्य, कलशं सङ्गृह्म, ऋस्त्रेशा संक्षाल्य कवचेन त्रिगुशािकृत सूत्रेशा वेष्टयित्वा मूलमन्त्रेशा ऋष्टागन्धेन लेपयित्वा प्रशावेन धूपयित्वा मूलेन पीठे ऋधोमुखं न्यसेत्। (अनुष्ठान पद्धित)

पद्ममुद्रा (कमलाकार) को दिखाकर, प्रधान एवं शेष कलशों को हाथ में लेवें। ॐ ऋस्त्राय फट् कहते हुए तीन धागों वाले सूत्र से उसे लपेटना चाहिये। ॐचं चंद्राय नमः इस मूल मन्त्र से ऋष्टगंध से लेपन करें। ॐकहते हुए धूप दिखायें। ॐचं चंद्राय नमः कहते हुए उस कलश को पीठ पर उल्टा करके रखें।

शोषरा दाहन प्लावन काठिन्य सुषरीकरराानि कृत्वा—यं बीजमन्त्र को षोडश बार जपकर शोषरा की कल्पना करें। रं बीजमन्त्र से षोषश (१६) बार

जपकर दाहन की कल्पना करें। रं बीजमन्त्र से षोडश बार जपकर प्लावन की कल्पना करें। लं बीजमन्त्र से षोडश बार जपकर काठिन्य की कल्पना करें। हं बीजमन्त्र से षौडश बार जपकर सुषरीकरण की कल्पना करें। (सुषरीकरण यानि ब्रह्माग्रड के बीज में जगह बनाना।) इन सभी क्रियाओं को कुशों से कलशों का छूकर करना चाहिये। हों नमः पराय शान्त्यतीतात्मने नमः।

इति दर्भ विन्यासं

जहाँ प्रधान कलश रखना है वहाँ उपरोक्त मन्त्र कहकर दो कुशा बिछायें। ग्रन्य कलशों के पास भी कुश बिछायें। ह्यों नमः पराय शान्त्यात्मने नमः। इति प्रष्टगंध प्रोक्षणं कहकर कुशों पर ग्रष्टगंध का प्रोक्षण करें। हूं नमः पराय विद्यात्मने नमः इति प्रथतं विकीर्य कहकर कुशों पर ग्रक्षात डालें। उन्हों वैश्रवणाय नमः कहकर कलशों की पुष्पाक्षतों से पूजन करें। उन्हों नमः पराय प्रतिष्ठात्मने नमः। कहकर कलशों को उठायें। उन्हों नमः पराय निवृत्यात्मने नमः अहीं नमः शिवाय कहकर कलशों को पीठ पर कुशों के ऊपर रखें। प्रणावेन घट मुखं प्रोक्ष्य उन्कारसे कलशों के मुख को प्रोक्षण करें। कुम्भस्य मूले दश विह्नकलाः न्यस्य म्हणा च व्यापयेत्। उन्हों यं धूम्नार्चिषे नमः। उन्हों रं ऊष्मायै नमः। उन्हों लं ज्वलिन्यै नमः। उन्हों वं ज्वालिन्यै नमः। उन्हों शं विष्फुलिंगिन्यै नमः। उन्हों षं सुश्रियै नमः। उन्हों सं सुरूपायै नमः। उन्हों हं किपलायै नमः। उन्हों वं ह्ययवाहायै नमः। उन्हों के कलश के मूल में स्थापना की

ॐ जातवेंदसे सुनवाम् सोमंमराती य तो निदंहाति वेदः। स नः पर्षदिति दुर्गाशिविश्वांनावेव सिन्धुं दुरितात्युग्निः॥ (ऋवेद १.६६.१)

कल्पना करें।

कहते हुए कलश के मूल को कुशा से छूऐं। अ मं विह्नमगडलाय दश धर्मप्रद कलात्मने नमः। कहकर समष्टि व्यापन यानि कुशों से कलश के चारों

(885

कहते हुए कलशों के मध्य में कुशा से छुऐं।

ॐ ग्रं सूर्यमगडलाय वसुप्रद कलात्मने नमः।

कहकर समष्टि व्यापन यानि कुशों से कलश के चारों ग्रोर छूना चाहिये।

कुम्भस्य मुखे षोडशदलं पद्म संकल्प्य प्रागादि दलेषु षोडश सोमकलाः न्यस्य तत् ऋचा समष्ट्र्या व्यापयेत्। (अनुष्ठन पद्धित) कुम्भों के मुख में षोडशदल पद्म की कल्पना करें पूर्वीदि क्रम से दलों में सोलह सोमकलाओं को रखने की कल्पना करें। फिर ऋक् एवं समष्टि से व्याप्त करें। अहीं ग्रं ग्रमृतायै नमः। अहीं ग्रं ग्रमृतायै नमः। अहीं ग्रं ग्रमृतायै नमः। अहीं ग्रं पृषायै नमः। अहीं हैं तुष्टयै नमः। अहीं कें रत्यै नमः। अहीं ग्रं पृत्यै नमः। अहीं ग्रं शिवयै नमः। अहीं ग्रं प्रात्यै नमः। अहीं ग्रं प्रात्ये नमः। अहीं ग्रं प्राप्ति नमः।

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुंष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव् बन्धंनान्मृत्योर्मृक्षीयमामृतांत्।। (ऋग्वेद ७.४६.१२) कहते हुए कलशों के मुख में कुश से छूऐं। ॐ उं सोममराडलाय षोडश का मप्रद कलात्मने नमः। कहकर समष्टि व्यापन यानि कुशों से कलश के चारों

१४६

म्रोर छूना चाहिये। ॐ ह्रीं हं सः इति मन्त्रेश कुम्भावाहनं कृत्वा। इस मन्त्र से कुम्भा का म्रावाहन कर षडंग न्यास करें। ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ हूँ शिखायै वषट्। ॐ हैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रः मस्त्राय फट्। कहकर कलश को न्यास करें। कुम्भस्य मुखे — कुम्भ के मुख में पाञ्च कलाम्रों का म्रावाहन करें। ॐ ह्रौं शं पीतायै नमः। ॐ ह्रौं सं श्वेतायै नमः। ॐ ह्रौं हं म्ररुशायै नमः। ॐ ह्रौं छं म्रितायै नमः। ॐ ह्रौं शं नन्तायै नमः। ॐ तत्संवितुर्वरंगयं भगों देवस्यं धीमिह। धियो यो नंः प्रचोदयांत्॥ (म्रावेद ३.६२.१०)

कलशों के मुख में कुशों से छूकर बोलें।

कुम्भमुद्रां प्रदर्श्य कुम्भं जगदराडं ध्यात्वा पञ्चविंशति दर्भैः कुर्चं बध्वा तस्य शोषरा, दाहन प्लावनानि कृत्वा ऋष्टगंधं विलिप्य ऋष्टवारं प्ररावं संजप्य कूर्च कुम्भे न्यस्य प्ररावेन संपूज्य नवरतादि द्रव्यं ॐ ऋीं हं सः सोहं स्वाहा इति कुम्भे न्यस्य संपूज्य मानस पूरगां कुर्यात्। (अनुष्ठान पद्धित)

कुम्भमुद्रा (पद्मपुद्रा) को दिखाकर कुम्भ को ब्रह्माग्रड मानें। २५ कुशाम्रों से कूर्च बनायें।

उस कूर्च को — यं बीच मन्त्र को सोलह बार जप करते हुए शोषरा की कल्पना करें। रं बीज मन्त्र से १६ बार जप करते हुए दाहन की कल्पना करें। वं बीज मन्त्र से १६ बार जपकर प्लावन की कल्पना करें। कूर्च को कुम्म में डालें फिर अकार से पूजन करें। नवरतादियों को ''अही हं स: सोहं स्वाहा'' कहकर उन्हें कुम्म में डालकर पूजा करें। फिर मानस पूररा करें। (मन में कलश भरने की कल्पना करें।)

करे अमृत बीजं विलिख्य तेन करेगा कुम्भ मुखमाच्छाद्य कूर्चमूलस्थित चैतन्यं द्वादशान्त पद्म स्थित परमात्मनि विलाप्य प्रगावं शिरोमन्त्रं च उक्त्वा द्वादशान्त पद्म स्थित परमात्मनः परचैतन्यरूपं अमृतजलं कुम्भे पातयेत्। (अनुष्ठान पद्धित)

दाहिने हाथ में वं बीज मन्त्र को लिखकर उसी दाहिने हाथ से कलशों के मुख को ढक देवें। कूर्च के मूल में स्थित चैतन्य को द्वादशान्त पद्म (ब्रह्मरन्ध्र)

द्वितीय दिन

में स्थित पामात्मा में मिलाने की कल्पना करें। अशिरसे स्वाहा कहकर-(प्रगाव-अशिरोमन्त्र-शिरसे स्वाहा) द्वादशान्तपग्नस्थित परमात्मा के परचैतन्य रूप ग्रमत जल को कुम्भ में गिराने की कल्पना करें।

यत् किंचित् पत्रेशा कुम्भमुखमाच्छाद्य ग्रन्यस्मिन् पात्रे स्वस्तिकोपिर गालितजलं उत्तरभगे न्यस्य जलस्य शोषशा दाहन प्लावनानि कृत्वा पीठं संपूज्य तत्र वरुशमावाद्य संपूज्य मूलेन च ग्रावाद्य सकलीकृत्य संपूज्य नैवेद्य काले ग्रर्ध्य दत्वा पुष्पांजिलं कृत्वा पञ्चवारुशां प्रजप्य तज्जलं शंखे ग्रादाय ग्रष्टगंधं विलिप्य पग्नंमूर्ति च संकल्प्य मूलेन स्वद्दयात् ग्रावाद्य किंचित् संपूज्यतज्जलं कुम्भे निषिच्य शेष जलै: कुम्भं ग्रधींत्तरं पिरपूर्य लिपि पंकजं पूजयेत्। (मनुष्ठान पद्धित)

यज्ञीय वृक्ष के पत्ते से कलशों के मुख को ढकें ताकि कलश में विद्यमान ग्रमृत बाहर न जा सकें। उत्तर दिशा में एक स्वस्तिक मगडल बनायें। उस पर एक ताम्र पात्र रखें। उसका मुख वस्त्र से बांधें। उसमें तीर्थ जल भरें।

ताम्र पात्र मे स्थत जल का शोषण दाहन प्लावन करें। यं बीजमन्त्र को १६ बार जपकर शोषण की कल्पना करें। रं बीजमन्त्र को १६ बार जपकर दाहन की कल्पना करें। वं बीज मन्त्र को १६ बार जपकर प्लावन की कल्पना करें। पं पद्माय नमः कहकर ताम्रपात्र के पीठ का पूजन करें। ॐ वं वरुणाय नमः कहकर वरुणा देव का ताम्रपात्र में म्रावाहन करें। ॐ चं चंद्राय नमः कहकर प्रधान देवता रुद्र का मूल मन्त्र से म्रावाहन करें। सकली करणा कर ॐ हृदयाय नमः। ॐशिरसे स्वाहा। ॐशिखायैं वषट्। ॐकवचाय हुम्। ॐनेत्रत्रयाय वौषट्। ॐम्रस्त्राय फट्। पूजन करें। लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। हं म्राकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। यं वाय्वात्मनो धूपं कल्पयामि। रं म्रगन्यात्मने दीपं कल्पयामि। वं म्रमृतात्मने नैवेद्य काले म्रध्यं समर्पयामि। पं परमात्मने सर्वोपचार पूजां कल्पयामि। ॐवं वरुणाय नमः। ॐचं चंद्राय नमःपुष्पांजिलं समर्पयामि। कहकर पुष्पांजिल देवें। पात्र को छूकर मन्त्रों को (वारुणा) पढें।



द्वितीय दिन

ॐ उदुंत्तमं मुंमुग्धि नो विपाशं मध्यमं चृंत। स्रवांध्मानिं जीवसें॥ (स्रवेद १.२४.२१)

ॐ ऋवते हेळोंवरुगानमोंभि रवं युज्ञेभिरीमहे हविभिः।

क्षयंत्रस्मभ्यंमसूर प्रचेता राज्नेनांसि शिश्रर्थः कृतानिं। (मण्वंद १.२४.१४)

ॐ इमं में वरुण श्रुधी हंवम्द्या चं मृळय। त्वामेवस्युराचंके ॥ (भग्वेद १.२५.१६)

अ तत्वांयामि ब्रह्मंगा वन्दंमानुस्तदां शांस्ते यजंमानों हविभि:।

त्रहेंळमानो वरुगोह बोध्युर्रुशं समान् त्रायुः प्रमोषी: ॥ (मण्वेद १.२४.११)

ॐ त्वन्नों ऋग्ने वर्फगस्य विद्वान्देवस्य हेळोऽवं यासिसीष्ठाः।

यजिष्ठो वह्नितमः शोश्ंचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुंमुग्ध्यस्मत्॥ (भग्वेद ४.१.४)

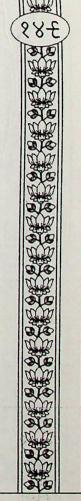
इमा ग्रापः शिवाः सन्तु शुभाः शुद्धाश्च निर्मलाः। पावन नाः शीलताश्चेव पूताः सूर्यस्य रिशमिः। इससे पात्र जल शुद्ध हुग्रा। उस पात्र जल को शंख में भर लेवें। ऋष्टगंध डालें। पं पद्माय नमः। कहकर पद्मका पूजन करें। अ**चं चंद्राय नमः**। कहकर सोम मूर्ति का पूजन करें। अ**चं चंद्राय नमः**। कहकर ग्रपने हृदय में स्थित प्रधान देवता को जल में स्थापित करें। ॐपं परमात्मने नमः। सर्वोपचार पूजां कल्पयामि। कहकर शंख जल को कलशों में भरें फिर कलशों में मन्त्रोंच्चार पूर्वक जल भरें।

अ प्रसुवं ग्रापो महिमानंमुत्तमं का्रुवींचाति सदंने विवस्वंतः। प्रसप्तसंप्त त्रेधा हि चंक्रमुः प्रसृत्वंरीगा मित सिन्धु रोजंसा॥ प्रतेऽरदुद्वर्रुगो यातंवे पृथः सिन्धोः यद्वाजां स्रुभ्यद्रं वस्त्वं।

Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur, MP Collection

द्वितीय दिन

भूम्या ऋधिं प्रवतां यासि सानुंना यदेषामग्रं जगंतामिर्ज्यसिं॥ द्विव स्वनो यंतते भूम्योपर्यनुन्तं शुष्मुमुदिंयर्ति भानुनां। स्रभादिंव प्रस्तंनयन्ति वृष्ट्यः सिन्धुर्यदेतिं वृष्भो न रोरुंवत्।। ऋभित्वां सिन्धो शिशुमित्र मातरो वाश्रा ऋषिन्तिपयंसेव धेनवं:। राजेंवु युध्वां न यसि त्विमत् सिचौ चदांसामग्रं प्रवतामिनंक्षसि॥ इमं में गङ्गे यमुने सरस्वित् शुतुंद्वि स्तोमं सचता परुष्या। म्रमिक्या मंत्रद्वधे वितस्त्याऽऽजींकीये श्रुगुह्या सुषोमंया॥ सितासिते सरिते यत्रं सङ्गथे तत्रांप्लुतासो दिव्मुत्पंतन्ति। एवै तुन्वं र् विसृजिन्त धीरास्ते जनासो ग्रमृत्त्वं भंजन्ते॥ तृष्टा मंया प्रथमं यातंवे स्जूः सुसर्त्वा रसयां श्वेत्यात्या। त्वं सिन्धो कुभंया गोमृतीं कुर्मु मे हत्वा सुरथं याभिरीयंसे॥ ऋजीत्येनी रुशंती महित्वा परिजयांसि भरते रजांसि। ऋदंब्धा सिन्ध्रुरपसांम्पस्त्माऽश्चान चित्रा वपुंषीव दर्शता॥ स्वश्चा सिन्धुः सुरथां सुवासां हिर्राययो सुकृंता वाजिनींवती। ऊर्गावती युव्तिः सीलमांवत्युताधिं वस्ते सुभगां मधुवृधंम्॥





सुखं रथं युयुजे सिन्धुंरश्चिनं तेन वाजं सनिषदस्मित्राजौ। महान ह्यंस्य महिमापंनस्यतेऽदंब्धस्य स्वयंशसो विरुष्शिनं:॥ (ऋग्वेद १०.७५ सम्पूर्ण सूक्त)

कलशों में जल भरने के बाद लिपि पंकज यानि ग्रक्षरों से बने कमल की कल्पना कर कलश का पूजन करें। ॐक्षं नम: पराय मूर्त्यात्मने नम:। ॐळं नमः पराय शिफात्मने नमः। ॐहं नमः पराय नाळात्मने नमः। ॐसं नमः पराय सर ग्रात्मने नमः। ॐषं नमः पराय कगटकात्मने नमः। ॐशं नमः पराय रंध्रात्मने नमः। अवं नमः पराय धर्माय स्राग्नेय ग्रन्थ्यात्मने नमः। अलं नमः पराय ज्ञानाय नैर्मृत्य ग्रन्थ्यात्मने नमः। अरं नमः पराय वैराग्याय वायव्य ग्रन्थ्यात्मने नमः। अयं नमः पराय ऐश्वर्याय ऐश ग्रन्थ्यात्मने नमः। अग्नं नमः पराय ग्रज्ञानाय दक्षिण ग्रन्थ्यात्मने नमः। अलुं नमः पराय ग्रवैराग्याय वारुण ग्रन्थ्यात्मने नमः। अलं नमः पराय ग्रनैश्वर्याय सौम्य ग्रन्थ्यात्मने नमः। अकं खं गं नमः पराय पूर्वपत्रात्मने नमः। अघं डं च नमः पराय ग्राग्नेय पत्रात्मने नमः। ॐ छं जं भंत नमः पराय याम्य पत्रात्मने नमः। ॐ ऋां टं ठं नमः पराय वारुण पत्रात्मने नमः। ॐ ढं ढं गां नमः पराय वारुण पत्रात्मने नमः। ॐ तं थं दं नमः पराय वायव्य पत्रात्मने नमः। अफं बं भं नमः पराय ऐश पत्रात्मने नमः। अमं नमः पराय कतिर्शाकात्मने नमः। अग्नः ग्रां नमः पराय पूर्वकेसरात्मने नमः। ॐइः ईं नमः पराय त्राग्नेय केसरात्मने नमः। ॐउः ऊं नमः पराय याम्य केसरात्मने नमः। ॐऋं नमः पराय नैर्ऋतय केसरात्मने नमः। ॐलृः लृं नमः पराय वारुग केसरात्मने नमः। अपेः एैं नमः पराय वायव्य केसरात्मने नमः। अग्रोः ग्रौं नमः पराय सौम्य केसरात्मने नमः। अग्रः ग्रं नमः पराय ऐश केसरात्मने नमः। अग्नं नमः पराय ग्रात्मतत्वात्मने नमः। अउं नमः पराय विद्यातत्वात्मने नमः। अमं नमः पराय विद्यातत्वात्मने नमः। असं नमः पराय बिन्द्वात्मने नमः। अहं नमः पराय नादात्मने नमः। अग्नीं नमः पराय शक्त्यात्मने नमः। अनमः पराय शान्त्यात्मने नमः। (अनुष्ठान पद्धित)

इति लिपि पंकंजम्

वैदिक परम्परा में पिपियों का ऋत्यिधक महत्व है। लिपियों में ही सभी मन्त्र एवं सभी वेद है। उनमें सभी देवता भी विद्यमान है। कलश में लिपि पुद्म की

द्वितीय दिन

कल्पना कर उसमें सभी मन्त्रों का, सभी वेदों का एवं सभी देवताग्रों का पूजन होता है। लिपि का ऋत्यधिक महत्व होने के कारण पिपिन्यास विस्तार से किया जाता है। बड़े यज्ञों में इनका करना ऋनिवार्य है। पहले दिन ये सभी करते हैं। दूसरे दिन से पूजन कुछ कम होता है। बड़े यज्ञों में कलश पूजन के लिए एक पंशिडत ऋलग रहते हैं। ऋतः शेष कार्य में विलम्ब नहीं होता है। ऋभ्याय हो जाने पर इन सभी को करने में ऋधिक समय नहीं लगता है। कलशे प्रधान देवता सोम ऋावाहन—ॐ चंद्राय नमः। श्री सोम मूर्तिये नमः। ॐभूः सोम मूर्तिमावाहयामि। ॐभुवः सोम मूर्तिमावाहयामि। ॐभवः सोम मूर्तिमावाहयामि। ऋवाहितो भव। सिश्चितो भव। सिश्चितो भव। ऋवितो भव। ऋपृतीकृतो भव। च्यासो भव। सुप्रसन्नो भव। इतना कहकर विविभन्न मुद्राग्रों से प्रधान देवता का ऋवाहन करें। मूलाक्षराणि न्यस्य। मूलक्षरों से न्यास करें। ॐ कं नमः। ॐचं नमः। ॐचं नमः। ॐचं नमः। ॐचं नमः। कहकर पुष्पों से पूजन करें। ॐ चं चंद्राय नमः। इदं प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि। कहकर प्रसन्नार्घ्यं जल छोडें। ॐ चं चंद्राय नमः। पृष्पांजिलं समर्पयामि। कहकर पुष्पोंजिल देवें। कल्लशे पञ्चामृत क्षेपः—कलश में पञ्चामृत डाले।

ॐ म्राप्यांयस्वसमेंतु ते विश्वतः सोम्वृष्यं। भवा वार्जस्य सङ्ग्थे॥ (मग्वेद १.६१६) कहकर कलशों में दूध डालें। ॐ दुधि क्राव्यों म्रकारिषं जिष्योरश्चंस्य वार्जिनः। सुरभिनो मुर्खाकर्त्रण् म्रायूंषितारिषत्॥ (मग्वेद ४.३६.६) कहकर दिह डालें। ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमंस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धामं।

स्नुच्ख्धमार्वह माद्यस्व स्वाहांकृतं वृषभविक्षहंव्यम्।। (स्वेद २.३.११) कहकर घी डालें।

ॐ मधुवातां ऋतायते मधुंक्षरिन्त् सिंधंवः। माघ्वीर्नः संत्वोषंधीः॥

मधुनक्तं मुतोषंसो मधुंमृत्पार्थिवं रजः। मधुद्यौरंस्तु नः पिता।।



मधुंमात्रो वन्स्पित्मिधुंमाँ त्रस्तु सूर्यः। माध्वी र्गावों भवन्तु नः॥ (मग्वेद १.६०.६-७-६) कहकर शहद डालें। अ स्वादुः पंवस्व दिव्याय जन्मंने स्वादुरिद्रायसुहवींतुनाम्ने। स्वादुर्मित्राय वर्रुगाय वायव बृह्स्पतंये मधुंमाँ त्रदांभ्यः॥ (मग्वेद ६.६२.६) कहकर शकर डालें।

कलशे पञ्चगव्य क्षेपरा--

ॐ तत्संवितुर्वरेरायं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयांत्॥ (मानेद ३.६२.१०) कहकर कलशों में गोमूत्र डालें। ॐ गंधंद्वारां दुराध्वां नित्यपुष्टां करीषिशाींम्।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्यये श्रियम्॥ (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्) कहकर गोमय डालें।

ॐ स्राप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम्वृष्यं। भवा वार्जस्य सङ्ग्थे॥ (सम्बेद १.६१.१६) कहकर कलशों में दूध डालें।

ॐ दुधि क्राव्याों स्रकारिषं जिष्याोरश्वस्य वाजिनं:।

सुरभिनो मुरवांकरत्प्रगा स्रायूं षितारिषत्।। (सग्वेद १४.३£.६) कहकर दिह डालें।

ॐ शुक्रमंसि ज्योतिरसि तेजोंसि देवो वंः सिवतोत्पुनात्विच्छिद्रेशा

प्वित्रेंग् वसोः सूर्यस्य रिश्मिभः॥ (यजुर्वेद १ कागड-१० म्रनुवाक-१ प्रश्न) कहकर घी डालें।

ॐ देवस्यं त्वा सर्वितुः प्रंस्वेंश्विनों पूष्णो हस्तांभ्यां ॥ (यनुर्वेद १ काराड-४ अनुवाक-१ प्रश्न) कहकर कुशोदक डालें।

कलशे स्रोषध क्षेप:—ॐ काराडात् काराडात् प्ररोहंन्ती पर्मष: परुष:परिं।

एवानों दूर्वे प्रतंनु सहस्रेंगा श्तेनं च॥ (यजुर्वेद-महानारायगोपनिषत्-ग्रारायक) कहकर - दूर्वा तुलसी, बिल्वपत्र, ग्रादि डालें।

\$383838 \$38388



द्वितीय दिन

ॐ या त्रोषंधीः पूर्वी जाता देवेभ्यंस्त्रियुगं पुरा।

मनैन बुभूशांमहंशृतं धामांनि सप्त चं॥ (मग्वेद १०.६७.१) कहकर दूर्वा, तुलसी, बिल्वपत्र मादि डालें।

ॐ स्वितं भीमो वृष्यस्तं विश्यया श्रृङ्गे शिशांनो हिर्रिशी विचक्ष्याः।

ग्रा योनिं सोमः सुर्कृतंनिषींदित गृव्ययी त्वग्भंवित निर्शिगव्ययीं॥ (मग्वेद ६.७०.७) कहकर दुर्वा, तुलसी, बिल्वपत्र मादि डालें।

ॐ गंधंद्वारां दुंराध्षां नित्यपुंष्टां करीषिशींम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्॥ (पञ्चम परिशिष्टम्)

कहकर पवित्र मृत्तिका (मिट्टी) गन्ध, इलायची, लोंग, पच्चकर्पूर, केसर मादि सुगंध द्रव्य डालें।

कलशे कलावाहन—कलश में प्रधान देवता सूर्य कलावाहन करें। प्रधान देवता के £६ कलायें हैं। इन कलाओं को शंख में आवाहन करना चाहिये। शंख प्रक्षाल्य शंखे जलमापूर्य हृदय मन्त्रेशा ऋष्टगंधं विलोड्य प्रशावाक्षरैः प्रशावेन च संपूज्य तत्र कलाः पृथक् आवाहयेत्। पहले शंख को धो लेवें, शंख में जल भरें, अधृशाः सूर्यग्रादित्यः कहकर ऋष्टगंध को जल में मिलाकर ऋं नमः। उं नमः। मं नमः। अनमः। कहकर शंख में स्थित जल का पूजन करें। फिर उस जल में कलाओं का अलग-अलग आवाहन करें।

उन्हों ग्रां ग्रमृतायै कलाशक्त्यै नमः। ग्रमृतकला ग्रावाहयामि। उन्हों ग्रां मानदायै कलाशक्त्यै नमः। मानदा कला ग्रावाहयामि। उन्हों इं पूषायै कलाशक्त्यै नमः। पूषा कला ग्रावाहयामि। उन्हों ई तुष्ट्यै कलायै कलाशक्त्यै नमः। तुष्टिकला ग्रावाहयामि। उन्हों उं पुष्टयै कलाशक्त्यै नमः। पुष्टिकला ग्रावाहयामि। उन्हों उं रत्यै कलाशक्त्यै नमः। रितकला ग्रावाहयामि। उन्हों ग्रां धृत्ये कलाशक्त्यै नमः। धृतिकला ग्रावाहयामि। उन्हों ग्रां शिशन्यै कलाशक्त्यै नमः। शिशनी कला ग्रावाहयामि। उन्हों लृं चन्द्रिकायै कलाशक्त्यै नमः। चन्द्रिका कला ग्रावाहयामि। उन्हों लृं कान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। कान्तिकला ग्रावाहयामि। उन्हों ऐं ज्योत्स्रायै कलाशक्त्यै नमः। ज्योतस्रा कला ग्रावाहयामि। उन्हों ऐं श्रियै कलाशक्त्यै नमः। श्रीकला ग्रावाहयामि। उन्हों ग्रों प्रीत्यै कलाशक्त्यै नमः।

प्रीतिकला ग्रावाहयामि। अहीं हों ग्रङ्गदायै कलाशक्त्यै नमः। ग्रङ्गदा कला ग्रावाहयामि। अहीं ग्रं पूर्णायै कलाशक्त्यै नमः पूर्णा कला ग्रावाहयामि। अहीं ग्रः पूर्णामृतायै कलाशक्त्यै नमः पूर्णामृत कला ग्रावाहयामि (ग्रनुष्टान पद्धित)। यहाँ तक सोमकलाग्रों का ग्रावाहन हुग्रा।

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतांत्।। (ऋग्वेद ७.४६.१२)

उं सोममराडलाय षोडश कामप्रद कलात्मने नमः। अग्रां हीं क्रों यर लवशष सहों संहंसः सोम कलानां प्राराग इह प्रारागः। अग्रां हीं क्रों यलवशष सहों संहंसः सोम कलानां जीव इह स्थितः। अग्रां हीं क्रों यर लवशष सहों संहंसः सोम कलानां सर्वेन्द्रियािश वाड्मनः चक्षुश्रोत्र घ्राराप्रारागः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राराप्रतिष्ठां कृत्वा।

यहाँ पर सोमकलाओं की प्राग्णप्रतिष्ठा हुई। ॐहीं कं मं तिपन्ये कलाशक्त्ये नमः। तिपनी कला ग्रावाहयामि। ॐहीं खं बं तिपन्ये कलाशक्त्ये नमः। तिपनी कला ग्रावाहयामि। ॐहीं खं पं मरीच्ये कलाशक्त्ये नमः। मरीचिकला ग्रावाहयामि। ॐहीं ड. नं ज्वालिन्ये कलाशक्त्ये नमः। ज्वालिनी कला ग्रावाहयामि। ॐहीं चं धं रुच्ये कलाशक्त्ये नमः। रुचि कला ग्रावाहयामि। ॐहीं छं दं सुषुम्राये कलाशक्त्ये नमः। सुषुम्रा कला ग्रावाहयामि। ॐहीं जं थं मोगदाये कलाशक्त्ये नमः। मोगदा कला ग्रावाहयामि। ॐहीं फं तं विश्वाये कलाशक्त्ये नमः। विश्वा कला ग्रावाहयामि। ॐहीं ग्रां जं बोधिन्ये कलाशक्त्ये नमः। बोधिनी कला ग्रावाहयामि। ॐहीं टं ढं धारिग्ये कलाशक्त्ये नमः। धारिगी कला ग्रावाहयामि। ॐहीं ठं डं क्षमाये कलाशक्त्ये नमः। क्षमा कला ग्रावाहयामि। अहीं ठं डं क्षमाये कलाशक्त्ये नमः। क्षमा कला ग्रावाहयामि। अहीं

ॐ तत्संवितुर्वरेरायं भर्गों देवस्यं धामिह। धियो यो नं: प्रचोदयांत्॥ (ऋग्वेद ३.६२.१०)

ॐ म्रं सूर्यमगडलाय द्वादश वसुप्रद कलात्मने नम:। ॐ म्रां हीं क्रों य र ल व श ष स होसं हंस: सूर्य कलानां प्रागा इह प्रागा:। ॐ म्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हो सं हं स: सूर्यकलानां जीव इह स्थित:। ॐ म्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंस: सूर्यकलानां सर्वेन्द्रियािग वाङ्गमन: चक्षुश्रोत्र ध्रागप्रागा:

द्वितीय दिन

इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा इति प्राग्णप्रतिष्ठां कृत्वा यहाँ पर १२ सूर्य कलाग्नों का ग्रावाहन प्राग्णप्रतिष्ठा संपन्न हुग्ना। अहीं यं धूम्राचिषे कलाशक्त्यै नमः। धूम्रचिः कला ग्रावाहयामि। अहीं रं ऊष्मायै कलाशक्त्यै नमः। ऊष्माकला ग्रावाहयामि। अहीं लं ज्वलिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ज्वलिनी कला ग्रावाहयामि। अहीं वं ज्वालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ज्वालिनी कला ग्रावाहयामि। अहीं शं विष्फुलिंगिन्यै कलाशक्त्यै नमः। विष्फुलिङ्गिनी कला ग्रावाहयामि। अहीं षं सुश्रियै कलाशक्त्यै नमः। सुश्रियै कला ग्रावाहयामि। अहीं सं सुरूपायै कलाशक्त्यै नमः सुरूपा कला ग्रावाहयामि। अहीं हं कपिलायै कलाशक्त्यै नमः। कपिला कला ग्रावाहयामि। अहीं ळं हव्यवाहायै कलाशक्त्यै नमः। कव्यावाह कला ग्रावाहयामि। (ग्रनुष्ठान पद्धित)

ॐ जातवेंदसे सुनवाम् सोमंमराती यतो निदंहाति वेदः। सनः पर्षदिति दुर्गाशिविश्वां नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः॥

(म्रग्वेद १.££.१)

ॐमं विह्नमगडलाय दश धर्मप्रद कलात्मने नम:। ॐग्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंस: विह्न कलानां प्राणा इह प्राणा:। ॐग्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: विह्न कलानां जीव इह स्थित:। ॐग्रां हीं क्रों च र ल व श ष स हों सं हं स: विह्न कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्गमन: चक्षुश्रोत्रध्राणप्राणा: इहैवागत्य सखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राणाप्रतिष्ठां कृत्वा।

यहाँ पर १० विह कलाग्रों का ग्रावाहन प्राराप्रतिष्ठा संपन्न हुग्रा। ॐहीं ग्रं निवृत्यै कलाशक्त्यै नमः। निवृत्ति कला ग्रावाहयामि। ॐहीं ग्रां प्रतिष्ठायै कलाशक्त्यै नमः। प्रतिष्ठा कला ग्रावाहयामि। ॐहीं इं विद्यायै कलाशक्त्यै नमः। विद्या कला ग्रावाहयामि। ॐहीं ई शान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। शन्ति कला ग्रावाहयामि। ॐहीं उं इन्धिकायै कलाशक्त्यै नमः। इं धिका कला ग्रावाहयामि। ॐहीं ऊं दीपिकायै कलाशक्त्यै नमः। दीपिका कला ग्रावाहयामि। ॐहीं ग्रं रेचिकायै कलाशक्त्यै नमः। मोचिका कला ग्रावाहयामि। ॐहीं लृं परायै कलाशक्त्यै नमः। परा कला ग्रावाहयामि। ॐहीं लृं सूक्ष्मायै कलाशक्त्यै नमः। सूक्ष्मा कला ग्रावाहयामि। ॐहीं ऐं सूक्ष्मामृतायै कलाशक्त्यै नमः। सूक्ष्मामृता कला ग्रावाहयामि। ॐहीं ऐं ज्ञानमृतायै कलाशक्त्यै नमः। ज्ञानामृता कला

द्वितीय दिन

म्यावाहयामि। अहीं भ्रों भ्राप्यायिन्यै कलाशक्त्यै नमः। भ्राप्यायिनी कला भ्रावाहयामि। अहीं भ्रौं व्यापिन्यै कलाशक्त्यै नमः। व्यापिनी कला भ्रावाहयामि। उन्हों ग्रं व्योमरूपायै कलाशक्त्यै नमः। व्योमरूपा कला ग्रावाहयामि। अहीं ग्रः ग्रनन्तायै कलाशक्त्यै नमः। ग्रनन्ता कला ग्रावाहयामि। (ग्रनुष्टान पद्धित) ॐ विष्णूर्योनिं कल्पयतु त्वष्टांरूपारिां पिंशतु। म्रासिंञ्चतुप्रजापंतिर्धाता गर्भं दधात् ते॥ (भग्वेद १०.१=४.१)

असदाशिवाय नमः। अत्राकाशात्मने नमः। अशब्द तन्मात्रात्मने नमः। अश्रोत्रात्मने नमः। अवाग् वचनात्मने नमः। अत्रनुग्रहात्मने नमः। अशान्त्यतीतात्मने नमः। अन्त्रां हीं क्रों यर लवशष सहों संहं सः नादकलानां प्राणा इह प्राणाः। अन्त्रां हीं क्रों यर लवशष सहों संहं सः नादकलानां जीव इह स्थित:। अग्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: नादकलानां सर्वेद्रियाणि वाङ्गमन: चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणा: इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राराप्रतिष्ठां कृत्वा।

यहाँ पर १६ नादकलात्र्यों का त्रावाहन प्रारा प्रतिष्ठा (अकार की ध्वनि) संपन्न हुन्ना। अहीं षं पीतायै कलाशक्त्यै नमः।पीताकला स्नावाहयामि। अहीं सं श्वेतायै कलाशक्त्यै नमः। श्वेता कला ग्रावाहयामि। अहीं हं ग्ररुणायै कलाशक्त्यै नमः। ग्ररुणा कला ग्रावाहयामि। अहीं ळं ग्रसितायै कलाशक्त्यै नमः। ग्रसिता कला ग्रावाहयामि। अहीं क्षं ग्रनन्तायै कलाशक्त्यै नमः। ग्रनंता कला ग्रावाहयामि। (ग्रनुष्ठान पद्धति)

ॐ तत्संवितुर्वरेरायुं भर्गों देवस्यं धीमहि। धियो यो नं: प्रचोदयांत्।। (भग्वेद ३.६२.१०)

अईश्वराय नमः। अवाय्वात्मने नमः। अस्पर्शतन्मात्रात्मने नमः। अत्वगात्मने नमः। अपारायादानात्मने नमः। अतिरोभवात्मने नमः। अशान्त्यात्मने नमः। अभां हीं क्रों यर लवश ष सहों संहंस बिन्दुकलानां प्राणा: इह प्राणा:। अभां हीं क्रों यर लवश ष सहों संहंस: बिन्दुकलानां जीव इह स्थित:। ॐग्रां हीं क्रां च र ल व श ष स हों सं हं स: बिन्दु कलानां सर्वेन्द्रियािशा वाङ्गमन: चक्षुश्रोत्रघ्रागाप्रागा: इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। (ग्रन्छान पद्धित)

इति प्राराप्रतिष्ठां कृत्वा

द्वितीय दिन

यहां पर ५ विन्दुकलाग्रों का ग्रावाहन प्राग्णप्रतिष्ठा संपन्न हुग्रा। ये बिन्दुकलायें ॐकार के वर्ग (रंग) है। ॐहीं पं तीक्ष्णाये कलाशक्त्ये नमः। तीक्ष्णा कला ग्रावाहयामि। ॐहीं फं रौद्र्ये कलाशक्त्ये नमः। रौद्री कला ग्रावाहयामि। ॐहीं बं भयाये लाशक्त्ये नमः। भया कला ग्रावाहयामि। ॐहीं भं निद्राये कलाशक्त्ये नमः। निद्रा कला ग्रावाहयामि। ॐहीं मं तन्द्रये कलाशक्त्ये नमः। तन्द्री कला ग्रावाहयामि। ॐहीं यं क्षुघाये कलाशक्त्ये नमः। क्षुघा कला ग्रावाहयामि। ॐहीं लं क्रियाये कलाशक्त्ये नमः। क्रिया कला ग्रावाहयामि। ॐहीं वं उत्कार्ये कलाशक्त्ये नमः। उत्कारी कला ग्रावाहयामि। ॐहीं शं मृत्युरूपाये कलाशक्त्ये नमः। मृत्युरूपा कला ग्रावाहयामि। (ग्रनुष्ठान पद्धित)

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुंष्टिवर्धंनम्। उर्वारुकिमंव बन्धंनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतांत्।। (ऋग्वेद ७.४६.१२)

ङसूर्याय नमः। ङस्रग्न्यात्मने नमः। ङरूप तन्मात्रात्मने नमः। ङचक्षुरात्मने नमः। ङपाद गमनात्मने नमः। ङसंहारात्मने नमः। ङिवद्यात्मने नमः। ङस्रां हीं क्रों य र ल व श ष सं हो सं हं सः मकार कलानां प्राणा इय प्राणाः। ङ म्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः मकार मलानां जीव इह स्थितः। ङम्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः मकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वास्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिन्तु स्वाहा। कहकर रुद्र कलाग्रों (मकार कला) का ग्रावाहन प्रतिष्ठा करें। ङहीं टं जरायै कलाशक्त्यै नमः। जरा कला ग्रावाहयामि। ङहीं टं पालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। पालिनी कला ग्रावाहयामि। ङहीं डं शान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। शांति कला ग्रावाहयामि। ङहीं ढं एश्वर्ये कलाशक्त्यै नमः। ऐश्वरी कला ग्रावाहयामि। ङहीं यं तर्त्यै कलाशक्त्यै नमः। रित कला ग्रावाहयामि। ङहीं तं कामिकायै कलाशक्त्यै नमः। वरदाकला ग्रावाहयामि। ङहीं थं वरदायै कलाशक्त्यै नमः। वरदाकला ग्रावाहयामि। ङहीं वं ह्यादिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ह्यादिनी कला ग्रावाहयामि। ङहीं धं प्रीत्यै कलाशक्त्यै नमः। प्रीतिकला ग्रावाहयामि। ङहीं नं दीर्घायै कलाशक्त्यै नमः। दीर्घाकला ग्रावाहयामि। (भ्रनुष्ठान पद्धित)

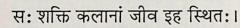
ॐ प्रतिद्वर्षणुंस्तवते वीर्येग मृगो न भीमः कुंचरो गिंग्छाः। यस्योरुषुं त्रिषु विक्रमंगोष्विधक्षियन्ति भुवनानि विश्वां॥ (ऋग्वेद १.१४४.२)

अविष्णवे नमः। अस्वात्मने नमः। अस्ततन्मात्रात्मने नमः। अजिह्वात्मने नमः। अपायुविसर्गात्मने नमः। अस्थित्यात्मने नमः। अप्रतिष्ठात्मने नमः। स्वित्र कला प्रावाह्याणि वास्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कहकर विष्णु कला (उकार कला) का स्रावाहन प्रतिष्ठा करें। अहीं कं सृष्ट्यै कलाशक्त्यै नमः। सृष्टिकला स्रावाहयामि। अहीं खं सृध्यै कलाशक्त्यै नमः। सृष्टिकला स्रावाहयामि। अहीं खं सृध्ये कलाशक्त्यै नमः। स्वित्र कलाशक्त्यै नमः। स्वित्र कलाशक्त्यै नमः। कान्ति कला स्रावाहयामि। अहीं खं लक्ष्मयै कलाशक्त्यै नमः। लक्ष्मीकला स्रावाहयामि। अहीं खं ह्यत्यै कलाशक्त्यै नमः। स्थिति कला स्रावाहयामि। अहीं अं सिद्घ्यै कलाशक्त्यै नमः। सिद्धिकला स्रावाहयामि। (अनुष्ठान पद्धित)

ॐ हंसः शुंचिषद्वसुंरंतिरक्ष्म सद्धोतांवेदिषदितिथिर्दुरोगासत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसद्वा गोजा ऋत्जा ऋद्विजा ऋतम्॥ (ऋषेद ४.४०.४)

अब्रह्मणो नमः। अपृथिव्यात्मने नमः। अगंध तन्मात्रात्मने नमः। अग्राणात्मने नमः। अग्राणात्मने नमः। अग्राणात्मने नमः। अग्राणात्मने नमः। अग्राणात्मने नमः। अग्राणात्मने नमः। अग्राणाः। अग्राणां हीं क्रों य र ल व श ष स हो सं हं सः प्रकार कलानां जीव इह स्थितः। अग्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः प्रकार कलानां जीव इह स्थितः। अग्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः प्रकारकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाड़मनः चक्षुःश्रोत्र घ्राणा प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कहकर ब्रह्म कला को (प्रकार कला) का प्रावाहन प्रतिष्ठा करें। अहीं इच्छायै कलाशक्त्यै नमः। इच्छा कला प्रावाहयामि। अहीं ज्ञानायै कलाशक्त्यै नमः। ज्ञान कला प्रावाहयामि। अहीं क्रियायै कलाशक्त्यै नमः। क्रिया कला प्रावाहयामि। अश्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं

द्वितीय दिन



उन्मां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शक्ति कलानां सर्वेन्द्रियाणि वास्मनः चक्षुश्रोत्रघाण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा कहकर शक्ति कलाशों का अवाहन प्रतिष्ठा करें। उन्हीं चिदात्मने कलाशक्त्यै नमः। चित्कला आहर्यामि। उन्हीं सदात्मने कलाशक्त्यै नमः। सत् कला आवाहयामि। उन्हीं आनंदात्मने कलाशक्त्यै नमः। आनंद कला आवाहयामि। उन्हांत्यात्मने नमः। उन्मां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शान्ति कलानां जीव इह स्थितः। उन्मां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शान्ति कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्गमनः चक्षुःश्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कहकर शान्ति कलाओं का आवाहन प्रतिष्ठा करें। उन्धृणिः सूर्यम्यादित्यः। सूर्यमावाहयामि। उन्लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। उन्हं स्राकाशात्मने पृष्णं कल्पयामि। उन्हं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। उन्हं स्रान्यात्मने दीपं कल्पयामि। उन्वं स्रमृतात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। उन्हं प्रमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। कहकर शंख जल का पूजन करें। उन्धृणिः सूर्यमादित्यः। कहते हुए शंख जल को प्रधान कलशा में डालें। यहाँ पर कला आवाहन संपन्न हुआ। (अनुष्ठान पद्धित)

प्रमारा-कलावाहन के तीन प्रकार है। १. सृष्टि क्रम। २. स्थिति क्रम। ३. संहार क्रम

सृष्टि क्रम—नूतन विग्रह प्रतिष्ठा में। इसमें क्रम से। १ सोम कला। २. सूर्य कला। ३. ग्रिग्निकला। ४. नाद कला। ५. बिंदु कला ६. मकार कला। ७. उकार कला। ८. ग्रिक कला। १०. शान्ति कला। इस क्रम से कलावाहन करें।

स्थिति क्रम—उत्सवादिकों में, कुम्माभिषेक ग्रादि निश्चत् कार्यक्रमों में (नित्य कार्यों में)।१. सूर्य कला।२. सोम कला।३. ग्रग्निकला।४. बिंदु कला। ५. नाद कला।६. मकार कला।७. उकार कला। ८. ग्रकार कला।६. शक्ति कला।१०. शान्ति कला इस क्रम से कला वाहन करें।

संहार क्रम—प्रायञ्चित्त, दोषपरिहारादिकों में, १. ग्रग्निकला। २. सूर्य कला। ३. सोमकला। ४. ग्रकार कला। ५. उकार कला। ६. मकार कला। ७. बिन्दु

कला। =. नाद कला। £. शक्ति कला। १०. शान्ति कला इस क्रम से कलावाहन करें।

तत्वकलावाहनम्—शंखं प्रक्षाल्य पूजितं जलं शंखे ग्रादाय ग्रष्ट गंधं विलोड्य किंचित् संपूज्य तत्र तत्व कलावाहनं कुर्यात्। शंख को धोकर ताम्र पात्र में स्थित जल से शंख को भरें, ऋष्टगंध मिलाएं फिर पुष्पाक्षत डालकर शंख में तत्वावाहन करें। ॐमं नम: पराय पीवात्मने नम:। जीव तत्वमावहयामि। ॐभं नमः नमः पराय प्रागात्मने नमः। प्रागतत्वमावाहयामि। ॐबं नमः पराय बुध्यात्मने नमः। बुद्धितत्वमावाहयामि। ॐफं नमः पराय ग्रहंकारात्मने नमः। ग्रहंकार तत्वमावाहयामि। अपं नमः पराय शब्द तन्मात्रात्मने नमः। शब्दतन्मात्र तत्वं ग्रवाहयामि। अधं नमः पराय स्पर्श तन्मात्रात्मने नमः। स्पर्श तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐदं नमः पराय रूप तन्मात्रात्मने नमः। रूप तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐथं नमः पराय रस तन्मात्रात्मने नमः। रस तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐतं नमः पराय गंध तन्मात्रात्मने नमः। गंध तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐगं नमः पराय श्रोत्रात्मने नमः। श्रोत्रतत्वमावाहयामि। ॐढं नमः पराय त्वगात्मने नमः। त्वक्तत्वमावाहयामि। ॐडं नमः पराय चक्षुरात्मने नमः चक्षतत्वमावाहयामि। ॐठं नमः पराय जिह्वात्मने नमः। जिह्वातत्वमावाहयामि। ॐ टं नमः पराय घ्रागात्मने नमः। घ्रागातत्वमावाहयामि। ॐ ऋं नमः पराय वागात्मने नमः। वाक् तत्व मावाहयामि। ॐ भं नमः पराय पार्यात्मने नमः। पार्शि तत्वमावाहयामि। ॐजं नमः पराय पादात्मने नमः। पादतत्वमावाहयामि। ॐछं नमः पराय पाय्वात्मने नमः। पायुतत्वमावाहयामि। ॐचं नमः पराय उपस्थात्मने नमः। उपस्थतत्वमावाहयामि। ॐऋं मः पराय ग्राकाशात्मने नमः। ग्राकाशतत्वमावाहयामि। ॐघं नमः पराय वाय्वात्मने नमः। वायु तत्व मावाहयामि। ॐगं नमः पराय तेज ग्रात्मने नमः। तेजस्तत्वमावाहयामि। ॐखं नमः पराय ग्रबात्मने नमः। ग्रप्तत्वमावाहयामि। ॐकं नमः पराय पृथिव्यात्मने नमः। पृथिवी तत्वमावाहयामि। ॐहं नमः पराय सूर्यमगडलाय द्वादश कलात्मने नमः। सूर्यमगडलमावाहयामि। ॐसं नमः पराय सोममग्रडलाय षोडशकलात्मने नमः। सोममग्रडलमावाहयामि। अरं नमः पराय विह्नमग्रडलाय दशकलात्मने नमः। विह्नमग्रडलमावाहयामि। अहौं नमः पराय शान्त्यतीतात्मने नमः। शान्त्यतीततत्वमावाहयामि। अहीं नमः पराय शान्त्यात्मने नमः। शान्तित्वमावाहयामि। अर्गः नमः पराय विद्यात्मने

Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection

द्वितीय दिन

नमः। विद्यातत्वमावाहयामि। ॐ ह्वीं नमः पराय प्रतिष्ठात्मने नमः। प्रतिष्ठा तत्वमावाहयामि। ॐ ह्वां नमः पराय निवृत्यात्मने नमः। निवृत्ति कलामावाहयामि। इत्यावाह्य इतना कहकर शंख तें तत्वों का ग्रावाहन करें। संक्षेप में पूजन करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐ हं ग्राकाशात्मने पृष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं ग्रग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं ग्रबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि। शंखजलं कलशे निक्षिपेत्। ॐ हीं नमः शिवाय। कहकर शंख जल को कलश में डालें। यहाँ पर तत्वकलावाहन संपन्न हुग्रा। (ग्रनुष्ठानं पद्धित)

कलशेन्यास विधानम्

ऋगि कला न्यास विधान — मूलाधारे दशदल पद्मं संकल्प्य अग्न्यादि दलेषु आग्नेय कला: न्यस्य तत् स्थाने जातवेदस इति ऋचा मं विह्मगडलाय नम: इति समिष्टमन्त्रेशा ॐ म्रां हीं क्रों इति प्राराप्रतिष्ठामन्त्रेशा च व्याप्य ऊर्वी: संस्पृश्य, त्रिवारं प्रशावं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ हीं हं सं: सो हं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था: देवता: सर्वा हृदये नित्य संश्रिता:। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्रारो प्रतिष्ठिता:।। इति जपेत्। (अनुष्ठान पद्धति) कलश के मूलाधार में दशदल पद्म का संकल्प कर आग्नेयादि दलों में आग्नेय कलाओं का न्यास करके उस स्थान पर ''जातवेदसे ऋक् से'' एवं मं विह्मगडलाय नम: इस समष्टि मन्त्र से ॐ म्रां हीं क्रों प्राराप्रतिष्ठा मन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर, कलश के निचले भाग को कुशाओं से छूकर, तीन बार प्रशाव को जपकर ॐ हीं हं स: सो हं स्वाहा, जपकर, हृदिस्था मन्त्र का जप करें।

ऋग्नि कला न्यास—ॐ हीं यं धूम्रचिष कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं रं ऊष्मायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं लं ज्वलिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं वं ज्वालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं शं विष्फुलिंगिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं षं सुश्रियै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं सं सुरूपायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं हं किपलायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं ळं हव्यवाहायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं क्षं कव्यवाहायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ जातवेंदसे सुनवाम् सोमंमराती यतो निदंहाति वेदः॥ स नः पर्षदिति दुर्गाशि विश्वांनावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः॥

(मृग्वेद १.££.१)

उन्मं विह्नमग्रडलायदश धर्मप्रद कलात्मने नमः। अभां हीं क्रों यर लवशष सहों संहंसः। अमं विह्नकलानां प्राणाः इह प्राणाः। अभां हीं क्रों यर लवशष सहों संहंसः विह्नकलानां जीव इह स्थितः।

अम्रां हीं क्रों यर लवशष सहों संहं सः विह्निकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाडमनः चक्षुश्रोत्रघ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए बोले फिर अअअकहें। हृदय को छूकर (कलश के मध्य भाग को अहीं हं सः सोहं स्वाहा कहें।

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्रागो प्रतिष्ठिताः। (अनुष्ठान पद्धित)

कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

सूर्यकला न्यास विधान—हृदये द्वादशदल पभं संकल्प्य पूर्वीदि दलेषु सूर्यकलाः न्यस्य तत् स्थाने गायत्री ऋचा ऋं सूर्य मराडलाय नमः इति समष्टिमन्त्ररा ॐ ऋां हीं क्रों इति प्राराप्रतिष्ठा मन्त्रेरा च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रवारं प्ररावं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ हीं हं संः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा ''हृदिस्था देवताः सर्वा हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राराो प्रतिष्ठिता॥ (अन्ष्रान पद्धित) इति जपेत्।

कलश के मध्य (हृदय भाग) में द्वादश दल पद्म की संकल्प करें। पूर्वीद दलों से सूर्य कलाग्नों को न्यास करके, उस स्थान पर गायत्री मन्त्र से एवं ग्रं सूर्यमगडलाय नम: इस समष्टि मन्त्र से अग्नां हीं क्रों प्राग्रप्रतिष्ठामन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर, कलश के निचले भाग को कुशाग्नों से छूकर तीन बार अकार का जपकर। अहीं हं स: सो हं स्वाहा तीन बार जपकर हृदिस्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

सूर्यकला न्यास—ॐ हीं कं मं तिपन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं खं बं तािपन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं गं फं धूम्रायै कलाशत्वयै नमः। ॐ हीं घं पं मरीच्यै

१६२









द्वितीय दिन

कलाशक्त्यै नमः। अहीं ड. नं ज्वालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। अहीं चं धं रुच्यै कलाशक्त्यै नमः। अहीं छं दं सुषुम्नायै कलाशक्त्यै नमः। अहीं जं थं भोगदायै कलाशक्त्यै नमः। अहीं भं तं विश्वायै कलाशक्त्यै नमः। अहीं ग्रां बोधिन्यै कलाशक्त्यै नमः। अहीं टं ढं धरिगयै कलाशक्त्यै नमः। अहीं ठं डं क्षमायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ हीं तत्संवितुर्वरें एयं भर्गों देवस्यं धीमहि। धियो यो नं: प्रचोदयांत्। (मानेद ३.६२.१०)

असं सूर्यमगडलाय द्वादश वसुप्रद कलात्मने नमः असां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सूर्यकलानां प्राग्ण इह प्राग्गाः। असां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सूर्यकलानां जीवइहास्थितः असां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सूर्यकलानां सर्वेन्द्रियागि वाडमनः चक्षु श्रोत्र प्राग्राग्रागाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचल भाग को छूते हुए बोलें। फिर अअ अकहें। हृदय को छूकर (कलश के मध्य को) अहीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहें।

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राग्ने प्रतिष्ठिताः।। कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें। सोमकला न्यास विधान—द्वादशान्ते षोडश दल पद्मं संकल्प्य दलेषु सोमकलाः न्यस्य तत् स्थाने त्र्यंबक ऋचा व्याप्य उं सोममगडलाय नमः इति समष्टि मन्त्रेगा ॐ ऋां हृीं क्रों इति प्राग्नप्रतिष्ठामन्त्रेगा च व्याप्य ऊर्वोः संम्पृश्य त्रिवारं प्रगावं संजप्य हृदि सम्पश्य ॐ हृीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्रागो प्रतिष्ठिताः॥ (अनुष्ठान पद्धति) इति जपेत्। कलश के मुख (द्वादशान्त) में १६ दल के पद्म की संकल्प करें। उसमें सोमकलाग्नों का न्यास करके उस स्थान पर त्र्यंबंकं यजामहे मन्त्र से एवं उं सोम मगडलाय नमः इस समष्टि मन्त्र से एवं उन्त्रां हीं क्रों प्राग्ग प्रतिष्ठा मन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर कलश के निचले भाग को कुशाग्नों से छूकर तीन बार



ॐ कार का जप करें। ॐ हीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहकर हिद्स्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

ॐ कार का जप करें। ॐ हीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहकर हिद्स्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

ॐ हीं ग्रं ग्रमृतायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं ग्रां मानदायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं इं पूषायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं ई तुष्टयै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं जं रत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं ग्रं धृत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं ग्रं शित्रयै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं जं रत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं ग्रं पृत्रये कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं ग्रं प्रार्थि कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं ग्रं पूर्णायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं ग्रं पूर्णाये कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं ग्रं पूर्णायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ हीं ग्रं पूर्णाये कलाशक्त्यै नमः।

ॐ त्र्यंबकं याजमहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमंव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीयमामृतात्। (ऋग्वेद ७.४६.१२)

उसोममगडलाय षोडश काम प्रद कलात्मने नमः। अग्रां हीं क्रों यर ल वश ष स हों सं हं सः सोमकलानां प्रागाः इह प्रागाः। अग्रां हीं क्रों यर ल वश ष स हों सं हं सः सोमकलानां प्रागाः इह प्रागाः। अग्रां हीं क्रों यर ल वश ष स हों सं हं सः सोमकलानां सर्वेन्द्रियाि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्रागप्रागाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा (अनुष्ठान पद्धित)। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए बोलें। फिर अं अं कहें। कलश के मध्य भाग को छकर तीन बार 'अं हीं हं सः सोहं स्वाहा' कहें।

हृदिस्थ देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्रागो प्रतिष्ठिताः।। कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें। स्रिकार कला न्यास—पादयोः संध्यग्रेषु स्रकार कलान्यस्य तत् स्थाने हंसः शुचिष इत्यादि सचा व्याप्य ॐ ब्रह्मगो नमः इत्यादि समष्टि मन्त्रेगा ॐ स्रां हीं क्रों इति प्रागा प्रतिष्ठा मन्त्रेगा च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रगावं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ हीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्वा 'हृदिस्था'' इति जपेत्। (अनुष्ठान पद्धित)

कलश के पाद में ग्रकार कला का न्यास करें। उस स्थान पर हंस: शुचिष इति ऋक् से, अब्रह्मरों नम: इत्यादि समष्टि मन्त्रों से, एवं अग्रां ऋीं क्रों

द्वितीय दिन

प्रागाप्रतिष्ठा मन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर कलश के निचले भाग को कुशाओं से छूकर तीन बार ॐकारं का जप करें। ॐहीं हं स: सोहं स्वाहा तीन बार कहकर हृदिस्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

अहीं कं सृष्ट्ये कलाशक्त्ये नमः। अहीं खं मध्ये कलशशक्त्ये नमः। अहीं गं स्मृत्ये कलाशक्त्ये नमः। अहीं घं मेधाये कलाशक्त्ये नमः। अहीं ङ कान्त्ये कलाशक्त्ये नमः। अहीं चं लक्ष्म्ये कलाशक्त्ये नमः। अहीं छं धृत्ये कलाशक्त्ये नमः। अहीं जं स्थिराये कलाशक्त्ये नमः। अहीं मं स्थित्ये कलाशक्त्ये नमः। अहीं जं सिद्ध्ये कलाशक्त्ये नमः।

ॐ हंसः शृंचिषद्वसुंरंत रिक्षसद्धोतां वेदिषदितिथिर्दुरोग्।सत्। नृषवंरसदृत् सद्व्यों मुसद्ब्जागोजा ऋंतजा ऋंद्रिजा ऋतम्॥ (ऋग्वेद ४.४०.४)

अब्रह्मणे नमः। अपृथिव्यात्मने नमः। अपंधतन्मात्रात्मने नमः। असृष्ट्यात्मने नमः। अनिवृत्यात्मने नमः। अस्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः स्रकार कलानां प्राणा इह प्राणाः। अस्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः स्रकार कलानां जीव इह स्थितः।

अमां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: मकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मन: चक्षुश्रोत्र घ्राणप्राणा: इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए बोलें। फिर ॐ ॐ कहें। कलश के मध्य भाग को छूकर तीन बार ॐ हीं हं स: सोहं स्वाहा कहें।

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्रागो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें। म्रकार कला न्यास—हस्तयोः संध्यग्रेषु उकार कलाः न्यस्य तत् स्थाने ॐ प्रतिद्वष्णु इति ऋचा व्याप्य ॐ विष्णावे नमः इत्यादि समष्टिमन्त्रेगा ॐ ऋां हीं क्रों इति प्रागाप्रतिष्ठा मन्त्रेगा च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रगावं संजप्य ''ॐ हीं हं सः सोहं स्वाहा'' इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था''। (अनुष्ठान पद्धित) इति जपेत्

द्वितीय दिन

कलश के मूल में उकार कला का न्यास करें। उस स्थान पर प्रतिद्वष्णु इस ऋक् से अविष्णवे नमः इत्यादि समष्टि मन्त्रों से एवं अग्नां हीं क्रों ग्नादि प्राराप्रतिष्ठा मन्त्रों से व्यापन करें। कलश के निचले भाग को कुशाम्रों से छूकर तीन बार अकार का जप करें। अहीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहकर हृदिस्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

अहीं टं जरायै कलाशक्त्यै नमः। अहीं ठं पालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। अहीं डं शान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। अहीं ढं ऐश्वर्ये कलाशक्त्यै नमः। अहीं ग्रां रत्यै कलाशक्त्यै नमः। अहीं तं कामिकायै कलाशक्त्यै नमः। अहीं थं वरदायै कलाशक्त्यै नमः। अहीं दं ह्लादिन्यै कलाशक्त्यै नमः। अहीं धं प्रीत्यै कलाशक्त्यै नमः। अहीं नं दीर्घायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ प्रतिद्विष्णुंस्तवते वीर्येंग मृगो न भीमः कुंच्रो गिंग्छिः। यस्योरुषुं त्रिषु विक्रमंगोष्विधिक्षयिन्त भुवंनानि विश्वां॥ (मावेद १.१४४.२) अविष्णावे नमः। अस्रात्मने नमः। अस्सतन्मात्रात्मने नमः। अजिह्वात्मने नमः। अपायुविसर्गात्मने नमः। अप्रतिष्ठात्मने नमः। अस्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: उकार कलानां प्रागा। इह प्रागा:। अन्यां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: उकार कलानां जीव इह स्थित:। अन्यां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: उकार कलानां सर्वेन्द्रियािश वाडमन: चक्षुश्रोत्र घ्रागा प्रागा: इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए ॐ हीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहें।

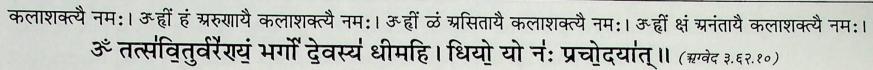
हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्रागो प्रतिष्ठिताः।। कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें। मकार कला न्यास—पायू वृषरा ग्रन्थुनाभि कुक्षि हृदय पार्श्वद्वय पृष्ठ ककुत्सु मकार कलाः न्यस्य तत् स्थाने त्र्यंबकं इति ऋचा ॐ सूर्याय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रेरा ॐ ऋां हीं क्रां इति प्राराप्रतिष्ठा मन्त्रेरा च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रगावं संजप्य हृदि संस्पृश्य 'ॐ हृीं हं सः सोहं स्वाहा' इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था इति जपेत्। (अनुष्ठान पद्धित)



कलश के मध्य में मकार कला का न्यास करें। उस स्थान पर त्र्यंबकं इस त्रकृ से असूर्याय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रों से एवं अन्नां हीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रों से व्यापन करें। कलश के मूल को छूकर तीन बार अं अं कं का जप करें। अहीं हं सः सोहं स्वाहा'' इसे तीन बार जपकर। ''हृदिस्था'' कहकर प्रार्थना करें।

उन्हीं पं तीक्ष्णायै कलाशक्त्यै नमः। उन्हीं फं रौद्र्यै कलाशक्त्यै नमः। उन्हीं बं भयायै कलाशक्त्यै नमः। उन्हीं मं निद्रायै कलाशक्त्यै नमः। उन्हीं वं उत्कार्यें कलाशक्त्यै नमः। उन्हीं यं क्षुधायै कलाशक्त्यै नमः। उन्हीं रं क्रोधिन्यै कलाशक्त्यै नमः। उन्हीं लं क्रियायै कलाशक्त्यै नमः। उन्हीं वं उत्कार्यें कलाशक्त्यै नमः। उन्हीं शं मृत्युरूपायै कलाशक्त्यै नमः। उन्हीं त्र्यंबकं यजामहे सुगंधि पृष्ट्विधीनम्। उर्वाक् किमिव् बंधीनान्मृत्योमुक्षीय मामृतात्॥ उन्सूर्याय नमः। उन्हीं ग्रग्न्यात्मने नमः। उन्हां ग्राण्याः। उन्मां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः मुकार कलानां प्राणा इह प्राणाः। उन्मां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः मकार कलानां जीव इह स्थितः। उन्मां हीं क्रां य र ल व श ष स हों सं हं सः मकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वडमनः चक्षुश्रोत्र प्राणा प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के मध्य भाग को छूते हुए बोलें। फिर अ अ अ कहें। कलश के मध्य को छूकर "अहीं हं सः सोहं स्वाहा" तीन बार कहें।

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्रागो प्रतिष्ठिताः। कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें। कर्गठास्य भ्रृद्धय मूर्धसु बिन्दुकलाः न्यस्य तत् स्थाने तत्सवितुरिति ऋचा अईश्वराय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रेण अग्रां हीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामंत्रेण च व्याप्य कर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य अहीं हंसः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था इति जपेत्। कलश के मुख में बिंदु कला का न्यास करें। उस स्थान पर तत्सवितुः इस ऋक् से अईश्वराय नमः इत्यादि समष्टि मंत्र से अग्रां हीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मंत्र से व्यापन करें। अहीं हं संः सोहं स्वाहा इसे तीन बार जपकर ''हृदिस्था'' कहकर प्रार्थना करें। अहीं षं पीतायै कलाशक्त्यै नमः। अहीं सं श्वेतायै



ॐईश्वराय नमः। ॐवाय्वात्मने नमः। ॐस्पर्शतन्मात्रात्मने नमः। ॐत्वगात्मने नमः। ॐपाग्यादानात्मने नमः। ॐतिरोभवात्मने नमः। ॐशान्त्यात्मने नमः। ॐस्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बिन्दुकलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐस्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बिन्दुकलानां जीव इह स्थितः। ॐस्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बिन्दुकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के मुख भाग को छूते हुए बोलें फिर ॐ ॐ कहें। कलश के मध्य को छूकर ''ॐ हीं हं सः सोहं स्वाहा'' तीन बार कहें। हिद्स्था देवता सर्वाः हृद्धे नित्य संश्रिताः। हृद्धि सर्व सपर्मयामि हृद्धि प्रारो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

नाद कला न्यास—प्रतिलोम स्वरस्थानेषु नादकलान्यस्य तत् स्थाने विष्णुर्यो निमिति ऋचा ॐ हीं सदाशिवाय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रेशा ॐ ग्रां हीं क्रों इति प्राराप्रतिष्ठा मंत्रेशा च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्ररावं संजप्य हदि संस्पृश्य ''ॐ हीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्वा हदिस्था इति जपेत्। (भनुष्ठान पद्धति)

संपूर्ण कलश को कुशाओं से छूते हुए नाद कलाओं का न्यास करें। उस स्थान पर विष्णुर्योनीति मृक् से असदाशिवाय नमः इत्यादि समष्टिमंत्रों से अम्रां हीं क्रों इति प्राणप्रितिष्ठामंत्र से व्यापन करके कलश के मृल को छूकर अअअकहें। कलश के मध्य को छूकर "अहीं हं सः सोहं स्वाहा" इसे तीन बार जप करें। कलश के मध्य को छूकर हिदस्था कहकर प्रार्थना करें। अहीं म्रं निवृत्ये कलाशक्त्ये नमः। अहीं म्रां प्रतिष्ठाये कलाशक्त्ये नमः। अहीं हं विद्याये कलाशक्त्ये नमः। अहीं हं शांत्ये कलाशक्त्ये नमः। अहीं हं हिधकाये कलाशक्त्ये नमः। अहीं म्रं रेचिकाये कलाशक्त्ये नमः। अहीं म्रं मोचिकाये कलाशक्त्ये नमः। अहीं लृं प्राये कलाशक्त्ये नमः। अहीं लृं सूक्ष्माये कलाशक्त्ये नमः। अहीं ऐं सूक्ष्मामृताये

ROPEROR BOROTOR

कलाशक्त्यै नमः। अहीं ऐं ज्ञानामृतायै कलाशक्त्यै नमः। अहीं ग्रों ग्राप्यायिन्यै कलाशक्त्यै नमः। अहीं ग्रों व्यापिन्यै कलाशक्त्यै नमः। अहीं ग्रं व्योमरूपायै कलाशक्त्यै नमः। अहीं ग्रः ग्रनन्तायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टांरूपारिांपिंशतु। म्नासिंञ्चतु प्रजापंति र्धाता गर्भं दधातु ते॥ (मण्वेद १०.१८४.१)

असदाशिवाय नमः। अम्राकाशात्मने नमः। अशब्दतन्मात्रात्मने नमः। अश्रोत्रात्मने नमः। अवाग् वचनात्मने नमः। अम्रनुग्रहात्मने नमः। अशान्त्यतीतात्मने नमः। अम्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः नादकलानां प्राणा इह प्राणः। अम्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः नादकलानां जीव इह स्थितः। अम्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः नादकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाडमनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः। इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वहा। (मनुष्ठान पद्धति) कुशों से कलश के सर्वाङ्ग को छूकर बोलें। फिर अअअक कहें। कलश के मध्य को छूकर ''अहीं हं सः सोहं स्वाहा'' तीन बार कहें

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्रागो प्रतिष्ठिताः।। कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें। शिक्त कला न्यास — मूलाधार हृदय मूर्धसु शिक्तकला न्यस्य अशक्त्यात्मने नमः इति समष्टि मन्त्रेग अग्रां हीं क्रों इति प्राग्ग प्रतिष्ठामंत्रेग च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रगावं संजप्य हृदिसंस्पृश्य अहीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा "हृदिस्था" इति जपेत्। कलश के सर्वाङ्ग को कुशों से छूकर न्यास करें। अशक्त्यात्मने नमः। इस समष्टिमंत्र से अग्रां हीं क्रों इत्यादि प्राग्गप्रतिष्ठा मंत्र से व्यापन करें। कलश के मूल को कुशों से छूकर तीन बार अअअक जप करें। अहीं हं सः सोहं स्वाहा" इसे तीन बार जपकर

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिता। हृदि सर्वं समर्पयामि हृदि प्रागो प्रतिष्ठिताः॥

कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें। अहीं इच्छायै कलाशक्त्यै नमः। अहीं ज्ञानायै कलाशक्त्यै नमः। अहीं क्रियायै कलाशक्त्यै नमः। अश्वत्यात्मने नमः। अग्रां हीं क्रों यर लवशष सहों संहं सः शक्ति कलानां प्राणा इह प्राणाः। अग्रां हीं क्रों यर लवशष सहों संहं सः शक्ति कलानां जीव

द्वितीय दिन

इह स्थित:। ॐग्गां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: शिक कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मन: चक्षुश्रोत्रघ्नाण प्राणा:। (ग्रनुष्ठान पद्धित) इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा कुशों से कलश के सर्वाङ्ग को छूकर बोलें। फिर ॐ ॐ कहे। कलश के मूल को छूकर ''ॐ हीं हं स: सोहं'' स्वाहा तीन बार कहें॥ हिदस्था देवता सर्वा: हृदये नित्य संश्रिता:। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिता:।। कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें। शान्ति कला न्यास—हृदये शान्तकला: न्यस्य ॐ शान्त्यात्मने नम: समष्टि मन्त्रेण ॐ ग्रां हीं क्रों इति प्राणाप्रतिष्ठामंत्रेण च व्याप्य ऊर्वो: संस्पृश्य त्रिवारं प्रणावं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ हीं हं स: सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था इति जपेत्। (ग्रनुष्ठान पद्धित)

कलश के मध्य में कुशों से छूकर न्यास करें। "अशान्त्यात्मने नमः" समष्टि मंत्र से अहीं क्रों इत्यादि प्रागप्रतिष्ठा मन्त्र से व्यापन करें। कलश के मूल को कुशों से छूकर तीन बार अअअक का जप करें। "अहीं हं सः सोहं स्वाहा" इसे तीन बार कहकर हदिस्था इससे प्रार्थना करें। अहीं चिदात्मने कलाशक्त्यै नमः। अहीं सदात्मने कलाशक्त्यै नमः। अहीं मानंदात्मने कलाशक्त्यै नमः। अशांत्यात्मने नमः। अमां हीं क्रों यर ल वश ष स हों संहं सः शान्ति कलानां प्रागा इह प्रागाः। अमां हीं क्रों यर ल वश ष स हों संहं सः शांति कलानां जीव इह स्थितः। अमां हीं क्रों यर ल वश ष स हों संहं सः शांनि कलानां सर्वेन्द्रियािण वाड्मनः चक्षु श्रोत घ्रागप्रागाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा। कुशों से कलश के सर्वाङ्ग को छूकर बोलें। फिर अअअक कहें। कलश के मूल को छूकर "अहीं हं सः सोहं" स्वाहा तीन बार कहें।

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्प्यादि हृदि प्रागोः प्रतिष्ठिताः॥ (अनुष्ठान पद्धित)

कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

कलशे लिपि न्यासः — अग्रं नमः। अग्रं नमः। अइं नमः। अईं नमः। अउं नमः। अउं नमः। अग्रं नमः। अग्रं नमः। अपं नमः। अपं नमः। अपं



नमः। ॐ भ्रों नमः। ॐ भ्रों नमः। ॐ भ्रं नमः। ॐ भ्रः नमः। ॐ कं नमः। ॐ खं नमः। ॐ पं नमः। ॐ पं नमः। ॐ दं नमः। ॐ पं नमः। ॐ वं नमः। ॐ दं नमः। ॐ दं नमः। ॐ पं नमः। ॐ पं नमः। ॐ कं नमः। ॐ पं नमः।

कलशे तत्व न्यासः— ॐमं नमः पराय जीवातमे नमः। ॐमं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐबं नमः पराय बुध्यात्मने नमः। ॐफं नमः पराय म्रहंकारात्मने नमः। ॐपं नमः पराय मन म्रात्मने नमः। ॐनं नमः पराय शब्द तन्मात्रात्मने नमः। ॐघं नमः पराय स्पर्श तन्मात्रात्मने नमः। ॐदं नमः पराय रूप तन्मात्रात्मने नमः। ॐवं नमः पराय रस तन्मात्रात्मने नमः। ॐवं नमः पराय गंध तन्मात्रात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय चक्षुरात्मने नमः। ॐवं नमः पराय जिह्वात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय वागात्मने नमः। ॐवं नमः पराय पायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय उपस्थात्मने नमः। ॐवं नमः पराय उपस्थात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्राय वाय्वात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय व्यातमने नमः। ॐवं नमः पराय व्यातमने नमः। ॐवं नमः पराय विव्यात्मने नमः। ॐवं नमः पराय विव्यात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्राय विव्यात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्राय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्राय विव्यात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्राय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्राय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्रायात्मने नमः। ॐवं नमः पराय प्राय प्राय प्रायात्मने नमः। अवित्यात्मने नमः। अवित्यात्मने नमः। अवित्यात्मने नमः। अवित्यात्मने नमः। अवित्यात्मने नमः। सित्रवित्यात्मने नमः। सित्रवित्यात्मने नमः। सित्रवित्यात्मने नमः। सित्रवित्यात्मने नमः। सित्रवित्यात्मने नमः। सित्रवित्यात्मने नमः। सित्यात्मने नमः। सित्यात्मने नमः। सित्यात्मने नमः। सित्रवित्यात्मने नमः। सित्यात्मने नमः। सित्यात्मने नमः। सित्यात्यात्मने नमः। सित्यात्मने नमः। सित्यात्मने नमः। सित्या

द्वितीय दिन

ॐ पूर्गा दिर्वि परांपत्सुपूर्गापुन्रापंत। वस्तेविक्रींगावहाइष्मूर्जं शतक्रतो।। (यनुर्वेद-१ कागड- = प्रश्न-४ यनुवाक-२ मन्न) स्त्रनेन कलशे शेषं संपूर्य। (उपरोक्त मन्त्र को कहकर कलश में जल भरें। ॐ स्रस्त्राय फट् इति।) ॐ प्रवों युज्ञेषुं देवयन्तों स्रर्चुन् द्यावा नमोभिः पृथ्विवी दृषध्यै। येषां ब्रह्मार्यसंमानि विप्रा विष्वंग्वियन्तिंवनिनो न शाखाः।। (स्रावेद ७.४३.१)

इति पल्लवादिकं न्यस्य (कहकर कलश में पल्लव ग्राम, पीपल, पलाश के पते रखें।) पूर्णपात्रे शुक्लतगडुलान् प्रयूर्य कलशे स्थाप्य (पूर्णपात्र में) (बड़ी कटोरी) में सफेद चावलों को भरकर कलश के ऊपर रखें।

प्रतिमा शृद्धि विधान (ब्रह्मकर्म समुच्चय) इसमें पूजन में रखने वाला प्रतिमा का शुद्धीकरण होता है।

देशकालों संकीर्त्य ऋस्याः प्रतिमायाः ऋंग प्रत्यंग संधि समुत्पन्न वास्यिग्न कुद्दालाग्नि टंकाग्न्यातप निरासार्थे ऋग्न्युत्तारणं करिष्ये इति संकल्प्य देशकालों का स्मरण कर इस प्रतिमा के ऋंग प्रत्यंगों के जोड में बनाते समय लगे विभिन्न उपकरणों के चोट से एवं बनाते समय तपाने से एवं धूप में सूखाने से उत्पन्न सभी दोषों के निवारण के लिए शुद्धि करने का संकल्प लेवें।

ऋग्नि: सिप्तिमिति वर्गेशा ऋग्निपदत्यागेन पिठतेन पुनः ऋग्निपदसिहतेन पिठतेनैक मार्वतनं भवित एवं ऋष्टशतवारं ऋष्टिवंशितवारं वा पिठत्वा संततं जल धारां कुर्यात्। ऋग्नि: सिप्त इस वर्ग से (सात मंत्र) पहले ऋग्निपद छोडकर पढें फिर उन मन्त्रों को ऋग्नि पद जोडकर पढें। तब एक ऋगवर्तन हुऋ। ऐसे १०० ऋगवर्तन या २० ऋगवर्तन करें ऋगे मन्त्र लिखा है वह ऋगवर्तन का है। ऋग्नि सिप्तिमिति सप्तर्चस्य सूक्तस्य सौचिको वैश्वानर स्त्रिष्टुप्। ऋग्न्युत्तारशे विनियोगः।

ॐ सर्प्तिवाजं भ्रंदंदाति वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठाम्। रोदंसीविचरत्सम्जन्नारीवीर कुंक्ष्मिं पुरंधिं॥

द्वितीय दिन

114 (803

ॐ स्रप्नंसः स्मिदंस्तु भ्राम्ही रोदंसी स्राविवेश। एकं चोदयत्स्मत्सुंवृत्राशिदयते पुरूशि। । ॐ हृत्यं जरंतः कर्शमावादभ्योनिरंदहुज्जर्र्लथं। स्रित्रं धर्मर्डंरुष्य दंतर्नृमेधं प्रजयां सृज्तसं।। ॐ द्याद्रविशां वीरपेशा सृषिं यः स्हस्तां स्नोति। दिविह्व्यमातंतान् धामांनिविभृंता पुरुत्रा।। ॐ उक्थेर्स्ययोविह्वंयंते नरोयामंनि बाधितासः। वयो स्रृंतिरक्षे पतंतः सहस्ता परियातिगोनां॥ ॐ विश्राईळते मानुंषीर्यामनुंषोन हुंषोविजाताः। गांधंवीं पृथ्यांमृतस्य गव्यूंति धृत स्नानिषंत्ता॥

ॐ ब्रह्मं ऋभवंस्ततक्षुर्मृहामंवो चामासुवृक्तिं। प्रावंजितारंय विष्ठ मिहद्रविंगामायंजस्व।। (ब्रह्मकर्म समुच्चय-ग्रग्न्युतारण विधान)

यहाँ पर त्रियपद रहित सूक्त संपन्न हुए त्रागे त्रिय पद सहित सूक्त-

ॐ ऋग्निः सप्तिं वाजं भृरं दंदात्यग्नि वींरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठां। ऋग्नेरोदंसी विचरत्सम्जन्नग्निर्गां वीर कुंक्षिं पुरिंधं॥ ॐ ऋग्नेरप्रंस स्मिदंस्तु भृद्राग्निर्महीरोदंसी ऋविंवेश। ऋग्निरेकं चोदयत्समत्स्वृग्नि वृत्राणिंदयते पुरूणिं॥ ॐ ऋग्निर्हत्यं जरंतः कर्णमावाग्निरद्भ्योनिरंदहज्जर्र्लथं। ऋग्निरितं धर्म उरुष्ट्यदंत रग्निनृमेधं प्रजया सृज्तसं॥ ॐ ऋग्निर्ह् द्रविंशां वीरपेंशा ऋग्निर्मिष्ठं यः सहस्रां स्नोति। ऋग्निर्दिवह्व्यमातंतानाग्ने धीमानिविभृता पुरुत्रा॥ ॐ ऋग्निमुक्थैर्स षंयोविह्वंयतेृग्नं नरोयामंनिबाधितासः।ऋग्निं वयों ऋंतरिक्षे पत्तेंतोऽग्निः सहस्रा परियातिगोनां॥ ॐ ऋग्निर्ववर्शंकिते मानुषीर्याऋग्निमनुषोन हुषोविजाताः। ऋग्निर्गांधंवीं पृथ्यांमृतस्या ग्नेर्गव्यूति धृत ऋगिषत्ता॥ ॐ ऋग्नये ब्रह्मं स्भववंस्ततक्षुरिग्नं महामंवोचामासुवृक्तिं। इत्रक्षित्रारंगितिरियविष्ठाग्नेमहिद्रविंश्मायंजस्व॥ (ब्रह्ममं समुच्य-अप्युत्तरण विधान)

द्वितीय दिन

8618

इन अग्न्युत्तारण सूक्तों से प्रतिमा पर सतत जल धारा करने से प्रतिमा की शुद्धि होती है। उस प्रतिमा को चावल से भरे पूर्ण पात्र में रखें। या: फुलिनीर्या अंफुला अंपुष्पायाश्चं पुष्पिगी:। बृहस्पितं प्रसूतास्तानों मुचंत्वं हंस:॥ (ऋग्वेद १०.६७.१४)

कहकर चावल से भरे पात्र में प्रतिमा के ऊपर नारियल रखें। अग्रस्त्राय फट्। अकवचाय हुम्।

ॐ युवं वस्त्रांशि पीवसावंसाथे युवोरिच्छंद्रामंतंवोहसर्गाः। ग्रवातिरतमनृंतानि विश्वं ऋतेनं मित्रावरुशासचेथे॥ (ऋवेद १.१४२.१) कहकर दो वस्त्रों से लपेटें सभी कलशों को वस्त्र लपेटें।

ॐ गंधं द्वारां दुराध्वां नित्यपुष्टां करीषिशाीम्। ईश्वरीं सर्वीभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) गंधं समर्पयामि। कहकर चन्दन चढायें।

ॐ ऋर्चेत् प्रार्चेत् प्रियंमेधासो ऋर्चेत। ऋर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्नघृष्यंवर्चत॥ (ऋग्वेद =.६£.=)

ग्रक्षतान् समर्पयामि। कहकर ग्रक्षत से पूजन करें।

ॐ स्रायंनेते प्रायंग्रो दूर्वीरोहंतु पुष्पिग्री:। हृदाश्च पुगडरीकाग्रि समुद्रस्यं गृहा इमे॥ (ऋग्वेद १०.१४२.=)

पुष्पाणि समर्पयामि। कहकर फूल चढायें।

ॐ प्वित्रं ते वितंतं ब्रह्मशास्पते प्रभुर्गात्रांशि पर्योषेविश्वतं:। ऋतंप्ततून्नं तदामो ऋंश्रुते शृतास् इद्वहंन्तस्तत् समांशत।। (ऋग्वेद £. =३.१) पिवत्रं समर्पयामि। कहकर दो कुशा को बाँधकर रखें। ॐ चं चंद्राय नमः। सोममूर्तिमावाहयामि। ऋगवाहितो भव संस्थापितो भव। सित्रिहितो भव। सित्रिरुद्धो भव। ऋगुर्गुठितो भव। ऋगुतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव।

ॐ ऋत्रिपुत्राय विदाहें। ऋमृतोद्भवायं धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयांत्।। गौतम ऋषिः सोमो देवता गायत्री छन्दः।



ॐ ग्राप्यायस्व हृदयाय नमः। ॐ समेतु ते शिरसे स्वाहा। ॐ विश्वतः शिखायै वषट्। ॐ सोमवृष्णियं कवचाय हुम्। ॐ संगधे ग्रस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यान—त्रात्रेयं यमुनाप्रभुं ग्रहगरास्याग्नेय भागस्थितं। श्वेतं श्वेतसुगंधमाल्यवसनं श्वेतांबुजोद्यत् करं। श्वेतच्छत्रविभूषरां ध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिराकरं सेवामहे शीतलम्।

ॐ चं चंद्राय नमः। इस मूल मंत्र को ग्राठ बार जप करें। ॐलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ग्रंगुष्ठाग्र किनिष्ठिका मूल। ॐहं ग्राकाशात्मने पृष्पं कल्पयामि। ग्रंगुष्ठ ग्रग्र तर्जनी मूल मध्यमा। ॐरं ग्रग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ग्रंगुष्ठा ग्रग्र मध्यमा ॐवं ग्रबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ग्रंगुष्ठ ग्रग्र ग्रनामिका मूल ॐपं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रथमावररा पूजनम्— अहृदयाय नमः। अशिरसे स्वाहा नमः। अशिरखायै वषट् नमः। अकवचाय हुम् नमः। अनेत्रत्रयाय वौषट् नमः। अग्नस्त्राय फट् । (श्रनुष्ठान पद्धति)

द्वितीयावररा पूजनम् — अबाह्ययै नमः। अमाहेश्वर्ये नमः। अकौमार्ये नमः। अवैष्णव्यै नमः। अवाराह्यै नमः।

तृतीयावरगा पूजनम्—ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। ॐग्रग्रये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। ॐयमाय प्रेताधिपतये कृष्णावर्णाय दग्रड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। ॐनिर्मृतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खङ्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः।

द्वितीय दिन

308

ॐवरुगाय जलाधितये कुंदवर्गाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये धूम्रवर्गाय ग्रंकुश हस्ताय हिरगावाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्गाय गदा हस्ताय ग्रश्च वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। ॐग्रंनाय विद्याधिपतये स्फिटिकवर्गाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। ॐग्रंनाय नागाधिपतये क्षीरवर्गाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्मृत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में ग्रनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्गाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। (अनुष्ठान पद्धित)

चतुर्थावररापूजनम्—ॐवज़ाय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (ग्राग्नेय में) ॐदराडाय नमः। (दक्षिरा में) ॐखड्गाय नमः। (नैर्म्वत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐग्रंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैर्म्वत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) (ग्रनुष्ठान पद्धित)

कलशे सोम त्रावाहनम्-ग्राप्यायस्व गोतमः सोमो गायत्री सोमावाहने विनियोगः।

ॐ भाष्यांयस्व समेतुते विश्वतं: सोम्वृष्ययं। भावाजंस्य संगुथे।। (भगवेद १.६१.१६) भाग् सूत्रम्

क सोमाय नमः। कभूःसोममावाहयामि। कभुवःसोममावाहयामि। स्वःसोममावाहयामि। भूर्भुवःस्वःसोममावाहयामि। कनक्षत्राधिपतये नमः। कनक्षत्राधिपतिमावाहयामि। कशीतपारये नमः। कशीतपारिगमावाहयामि। कईश्वराय नमः। कईश्वरमावाहयामि। कसर्वोत्पातशमनाय नमः। कसर्वोत्पातशमनं म्रावाहयामि। म्रथ कल्पोक्त षोडशोपचार पूजां करिष्ये (यहाँ से मराडल में एवं कलश में म्रावाहित देवताम्रों का पूजन प्रारंभ।)

नवशक्ति पूजन

अराकायै नमः। अकुमुद्दत्यै नमः। अनंदायै नमः। असंध्यायै नमः। असंजीविन्यै नमः। अक्षमायै नमः। अज्योत्स्त्रायै नमः। अनित्यायै नमः। अप्रभायै नमः। अनमो भगवते सकलगुर्शात्मशक्तियुक्ताय ग्रनंताययोगपीठात्मने नमः। सुवर्श पीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य परमेश्वर। ग्ररखयामिव हव्याशं कुम्मे ग्रावाहयाम्यहम्॥ अग्रां हीं क्रों यर लवशष सहों संहंस: सोमस्य प्राग्राइह प्राग्रा:। अग्रां हीं क्रों यर लवशष सहों संहं सः सोमस्य जीवइहस्थितः अग्नां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सोमस्य सर्वेन्द्रियाणि वाडमनः चक्षुश्रोत्र घ्राणा प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंत् स्वाहा। (ऋनुष्ठान पद्धति)

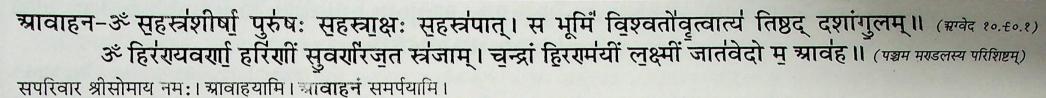
ॐ ऋसुंनीते पुन्रसमासु चक्षुः पुनः प्रारामिह नौ धेहि भोगं । ज्योक्पंश्येम् सूर्यमुच्चरंन्त मनुमते मूळयांनः स्वस्ति। (मानेद १०.५६.६) ॐ पुनर्नों ऋसुं पृथिवी दंदातु पुनुद्योंदेवी पुन्रंन्तरिक्षम्। पुनर्नुः सोमस्तुन्वं ददातु पुनः पूषा पृथ्यां ३ या स्वस्तिः। (मानेद १०.५६.७)

सशक्ति सांग सायुध सवाहन सपरिवार श्रीसोम भगवन् ऋत्रैवागच्छागच्छ ऋवाहियष्ये। ऋवाहितो भव। संस्थापितो भव। सित्रिहितो सित्रिहिते सित्रिहिते सित्रिहितो सित्रिहितो सित्रिहितो सित्रिहिते सित्रिह भव। अवगुरिठतो भवः। अमृतीकृतो भव। व्यासो भव। सुप्रसन्नो भव। ॐ अत्रिपुत्राय विद्यहें। अमृतोद्भवायं धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयांत्।। गौतम ऋषिः सोमो देवता गायत्री छन्दः। ॐग्राप्यायस्व हृदयाय नमः। ॐसमेतु ते शिरसे स्वाहा। ॐविश्वतः शिखायै वषट्। ॐसोमवृष्णियं कवचाय हुम्। ॐसंगथे ग्रस्त्राय फट्। अभूर्भ्वः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

षोडशोपचार पूजनम्—

ध्यान—स्रात्रेयं यमुनाप्रभुं ग्रहगरास्याग्नेय भागस्थितं। श्वेतं श्वेतसुगंधमाल्यवसनं श्वेतांबुजोद्यत् करं। श्वेतच्छत्रविभूषगां ध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरे: प्रदक्षिगाकरं सेवामहे शीतलम्। अ चं चंद्रायनमः।

266



म्रासनम्—ॐ पुरुष ए्वेदं सर्वं यद्भूतं यंच्य भव्यंम्। उतामृंतृत्वस्येशांनो यदन्नेना तिरोहं ति॥ (मग्वेद १०.६०.२) ॐ तां मु म्रावंह जातवेदो लुक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंगयं विंन्देयं गामश्वं पुरुषानृहम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

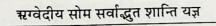
सपरिवार श्रीसोमाय नमः। ग्रासनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ ए्तावांनस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुंषः। पादोंऽस्य विश्वांभूतानिं त्रिपादंस्यामृतं दिवि।। (भगवेद १०.६०.३) ॐ ऋश्वपूर्वा रंथम्ध्यां हस्तिनांद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपंह्वये श्रीमीं देवी जुंषताम्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घं— ॐ त्रिपादूर्ध्व उद्देत् पुरुंषुः पादों ऽस्येहा भंवत्पुनंः। ततो विश्वं व्यंक्रामत् साशनानश्नने स्रुभि॥ (मण्वेद १०.६०.४) ॐ कां सोस्मितां हिरंगय प्राकारांमार्द्रां ज्वलेन्तीं तृप्तां तुर्पयंन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवंगां तामिहो पंह्नये श्रियंम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) सपरिवार श्रीसोमाय नमः। हस्तयोः स्रर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

स्राचमनम्—ॐ तस्मांद्विराळंजायत विराजो स्रिधिपूर्रुषः। स जातो स्रत्यंरिच्यत पृश्चाद् भूमिमथोंपुरः। (म्मवेद १०.६०.५) ॐ चंद्रां प्रभासां युशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्। तां पुद्धिनींभीं शर्रगामुहं प्रपंद्येऽलुक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृंगो॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)



सपरिवार श्रीसोमाय नमः। मुखे ग्राचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध) — ॐ स्राप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतः सोम्वृष्यिः । भवावार्जस्य संग्थे। (मावेद १०.६१.१६)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल-ॐ सुद्योजातं प्रंपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भुवे भवेनाति भुवे भवस्वमाम् भुवोद्धवाय नर्मः॥

(यजुर्वेद-महानारायगोपनिपत् ग्रारगयक)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दिधकाव्यों स्रकारिषं जिष्योरश्चंस्य वाजिनं:। सुरिभनोमुखां कर्त्प्रगा स्रायूंषितारिषत्।। (म्रावेद ४.३£.६)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। दिध स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल-ॐ वामुद्रेवाय नमों ज्येष्ठाय नमंश्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमुः कालांय नमुःकलंविकरशाय

नमोबलांय नमो बलंप्रमथनाय नम्स्संर्वभूतदमनाय नमों मुनोन्मंनाय नमेः। (यजुर्वेद-महानारायशोपनिषत्-श्रारायक)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

वी— ॐ घृतं मिंमिक्षे घृतमंस्ययोनिंधृंते श्रितो घृतं वंस्य धामं।

स्मनुष्वधमार्वह मादयंस्व स्वाहांकृतं वृषभवक्षि हृव्यम्।। (सग्वेद २.३.११) सपरिवार श्रीसोमाय नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल-ॐ ऋघोरेंभ्योऽथ घोरेंभ्यो घोरघोरं तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्व्शर्वेभ्यो नमंस्ते ऋस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

(यजुर्वेद-महानारायशोपनिषत्-म्रारखक)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मध् (शहद)—ॐ मधुवातां ऋतायते मधुंक्षरंति सिंधंवः। माध्वीर्नः संत्वोषंधीः॥ मधुनक्तंमुतोषसो मधुंमृत् पार्थिवं रजंः। मधुद्यौरंस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ ऋस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवंतु नः ॥ (मग्वेद १.६०.६) सपरिवार

श्रीसोमाय नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुंषाय विदाहें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयांत्।। (यजुर्वेद-महानारायगोपनिषत्-ग्रारायक)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शकर) - ॐ स्वादुः पंवस्व दिव्याय जन्मंने स्वादुरिद्रांय सुहवींतु नाम्ने।

स्वादुर्मित्राय वर्रुशाय वायवे बृहस्पतंये मध्माँ ऋदांभ्यः ॥ (भग्वेद £. =४.६)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

श्द्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वे विद्यानामीश्वरस्सर्वे भूतानां बृह्याधिपतिर्ब्रह्यगोऽ

धिंपतिर्ब्रह्मां शिवो में ग्रस्त् सदाशिवोऽम्।। (यजुर्वेद-महानारायगोपनिषत्-ग्रारण्यक)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल- ॐ याः फुलिनी र्या ऋंफुला ऋंपुष्पायाश्चं पुष्पिगाीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानों मुञ्चन्त्वं हंसः॥ (मावेद १०.६७.१४)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। फल स्नानं समर्पयामि

200



शुद्धोदक—ॐ ग्रापो॒हिष्ठा मंयो॒भुवस्तानंऊर्जे दंधातन। मृहेरगाांय चक्षंसे॥ यो वं: शिवतंमोरसस्तस्य भाजयते हनं:। उश्तीरिंव मातरं:॥ तस्मा ग्ररंगमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। ग्रापों जनयंथा च नः। (मावेद १०.६.१-२-३)

ॐ कद्भुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टंमाय तव्यंसे। वोचेम् शंतंमं हृदे॥ (भगवेद १.४३.१)

ॐ यथां नो ऋदिंतिः कर्त्पश्चे नृभ्यो यथा गर्वे। यथां तोकायं रुद्रियंम्।। (भग्वेद १.४३.२)

ॐ यथां नो मित्रो वर्रु गो यथां रुद्रश्चिकंति। यथा विश्वे सुजोषंसः।

ॐ गाथपंतिं मेधपंतिं रुद्रं जलांषभेषजम्। तच्छं योः सुम्रमींमहे॥

ॐ यः शुक्र इंव सूर्यो हिरंगयमिव रोचंते। श्रेष्ठों देवानां वसुः।

अ शं नी करत्यर्व ते सुगं मेषायं मेष्ये। नृभ्यो नारिभ्यो गर्वे॥

ॐ ग्रस्मे सोम् श्रियमध्य नि धेहि श्तस्यं नुगाम्। महिश्रवंस्तुविनृम्गम्।।

ॐ मार्नः सोमपरिबाधो मारांतयो जुहुरंत। स्रा नं इंदो वाजें भज।।

ॐ यास्ते प्रजा ग्रुमृतंस्य परंग्मिन्धामंत्रृतस्यं। मूर्धा नाभां सोमवेन ग्रा भूषंतीः सोम वेदः॥ (ऋवेद १.४३.३-४-४-६-७-८-१)

ॐ नमः सोमांय च रुद्रायं च नमंस्ताम्रायं चारुणायं च नमंः शुंगायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों म्रग्रेव्धायं च दूरेव्धायं च नमों हन्त्रे च हनीयसे च नमों वृक्षेभ्यो हिर्तिकेशेभ्यो नमंस्ताराय नमः शुंभवें च मयोभवें च नमः शंक्रायं च मयस्क्रायं च नमः शिवायं च शिवतंराय च नमः स्तीर्थ्यायच कूल्याय च नमः पार्याय चावार्यायं च नमः प्रतिशाय चोत्तरंणाय च नमं म्रातार्याय चालाद्याय च नम्शर्ष्याय च फेन्यांय च नमः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय

चि । (यजुर्वेद-४ काराड-४ प्रश्ने-= ग्रनुवाक)

ॐ तच्छुंयोरावृंगीमहे। गातुं युज्ञायं। गातुं युज्ञ पंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषुजम्। शं नो स्रस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ (यजुर्वेद-स्रारायक) ॐ यत्पुर्रु षेशा हिवषा देवा युज्ञमतंन्वत । वसंतो ऋस्यासीदा ज्यं ग्रीष्म इध्मः शुरुद्धविः ॥ (ऋखेद १०.६०.६) अ स्मादित्यवंशीं तपुसोऽधिजातो वनुस्पतिस्तवं वृक्षोऽथं बिल्वः। तस्य फलांनि तपुसा नुंदंतु मायांतरा याश्चं बाह्या स्रंलुक्ष्मीः। (म्रावेद पश्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— अ युवं वस्त्राशि पीवसावंसाथे युवोरिच्छंद्रा मंतंवो हसर्गीः। स्रवातिरमुमन्तानि विश्वं सृतेनं मित्रा वरुगा सचेथे॥ (मण्वेद १.१४२.१) ॐ तं युज्ञं बहिषि प्रौक्ष्न् पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा स्रयजंत साध्या ऋषंयश्च ये॥ (सप्वेद १०.६०.७) ॐ उपैतु मां देवस्रवः कीर्तिश्च मिर्गाना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं दुतदातुं मे॥

(भृग्वेद पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। वस्त्रं समर्पयामि। यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं प्रमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरास्तात्। ऋायुष्यम्ग्रयं प्रतिमुंञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमंस्तु तेजंः॥ ॐ तस्मांद्यज्ञात् संर्वृहुतुः संभृतं पृषदाज्यम्। पुशून्ताँश्चक्रे वायुव्यानार्गयान् ग्राम्याश्च ये॥ (मानेद १०.६०.६)



ॐ क्षुत् पिंपासामंलां ज्येष्ठामंलक्ष्मीं नांशयाम्यहंम्। ऋभूंतिमसंम्ब्द्धं च सर्वान्निर्गींद मे गृंहात्।। (पञ्चम मण्डलस्य

परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

ग्राभरगा—ॐ हिरंगयरूपुः स हिरंगय संदृग्पान्नपात् सेदु हिरंगयवर्गाः। हिर्गययात् परियोने र्निषद्यां हिरग्यदा दंदत्यन्नंमस्मै॥

(मृग्वेद २.३४.१०)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। ग्राभरगं समर्पयामि।

गन्थ— ॐ गंधं द्वारां दुंराध्रषां नित्यपुंष्टां करीषिशाीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) ॐ तस्मांद्यज्ञात् संर्वृहुत् ऋचः सामांनि जिज्ञरे। छन्दांसि जिज्ञरे तस्माद्य जुस्तस्मांदजायत।। (भ्रावेद १०.६०.६) सपरिवार श्रीसोमाय नमः। गन्धं समर्पयामि।

यक्षत—ॐ स्रर्चेत् प्रार्चेत् प्रियंमेधासों स्रर्चेत। स्रर्चेन्तु पुत्रका उतपुरंत्र धृष्यवंर्चत॥ (स्रवेद न.६६.न)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। ग्रक्षतान् समर्पयामि।

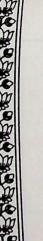
पुष्पाणि—ॐ म्रायंने ते प्रायंग्रे दूर्वीरोहंतु पुष्पिग्रीः। हृदाश्चं पुगडरींकािग समुद्रस्यं गृहा इमे ॥ (म्रावेद १०.१४२.=) ॐ तस्मादश्चां म्रजायन्त ये के चों भ्यादंतः। गावोंहजिज्ञे तस्मात् तस्मांजाता म्रंजावयः॥ (म्रावेद १०.६०.१०) ॐ मनंसः कामुमाकृतिं वाचः सत्यमंशीमहि। पुशूनां रूपंमन्नस्य मियु श्रीः श्रयतां यशः॥ (म्रावेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) सपरिवार श्रीसोमाय नमः। पुष्पाशि समर्पयामि।

प्रथमावरगा पूजनम्— अहृदयाय नमः। ग्राग्नेय दिशि। अशिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। अशिखायै वषट् नमः। नैर्मृत्यां दिशि। अकवचाय हुम् नमः। वायव्यां दिशि। अनेत्रत्रयाय वौषट् नमः। ग्रग्ने अग्रस्त्राय फट् नमः। ग्राग्नेयादि कोगोषु पूजयेत् (ग्रनुष्ठान पद्धित)। पूजन करे।

द्वितीयावरगा पूजनम् — अब्बाह्ययै नमः। पूर्वे अमाहेश्वर्ये नमः। स्राग्नेय दिशि। अकौमार्ये नमः। दक्षिण दिशि। अवैष्णव्यै नमः। नैसृत्यां दिशि। अवाराह्यै नमः पश्चिम दिशि। अइन्द्राग्यै नमः। वायव्यां दिशि। अचामुगडायै नमः। उत्तरस्यां दिशि। अगिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि। (स्रनुष्ठान पद्धित)

तृतीयावरगा पूजनम्— अइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्गाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। अभ्रग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्शाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। अयमाय प्रेताधिपतये कृष्णावर्णाय दराड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ निर्मृतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खङ्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नम:। ॐवरुणाय जलाधितये कुंदवर्गाय पाशहस्ताय मकरवाहुनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। अवायवे प्रागाधिपतये धूम्रवर्णाय ग्रंकुश हस्ताय हरिरावाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। असोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्शाय गदा हस्ताय ग्रश्च वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। अईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। अग्रनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिाकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्भृत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में ग्रनन्त का पूजन करें। अब्रह्मरो लोकाधिपतये कंजवर्शाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.



पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। (अनुष्ठान पद्धित)

चतुर्थावररापूजनम्— अवज्ञाय नमः। (पूर्व में) अशक्त्यै नमः। (आग्नेय में) अदराडाय नमः। (दिक्षिरा में) अखड्गाय नमः। (नैर्मूत्य) अपाशाय नमः। (पश्चिम में) अग्नंकुशाय नमः। (वायव्य में) अगदायै नमः। (उत्तर में) अत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) अचक्राय न मः। (पश्चिम नैर्मूत्य के बीच में) अपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) (अनुष्ठान पद्धित)

सोम ऋष्टोत्तर शतनाम पूजा

अश्रीमते नमः। अशिधराय नमः। अचन्द्राय नमः। अताराधीशाय नमः। अनिशाकराय नमः। असुधानिधये नमः। असदाराध्याय नमः। अस्यत्यये नमः। अस्यार्थेशाय नमः। अजितेन्द्रियाय नमः। अज्योत्योगाय नमः। अज्योतिश्चक्ष प्रवित्तकाय नमः। अविकर्त्तनानुजाय नमः। अविश्वेशाय नमः। अविदुषांपतये नमः। अद्वेषाकरये नमः। अदुष्ट्रद्राय नमः। अपृष्टिमते नमः। अशिष्टपालकाय नमः। अश्वष्टमूर्ति प्रियाय नमः अश्वनत्ताय नमः। अक्ष्टद्रारुकुठारकाय नमः अस्वप्रकाशाय नमः। अप्रकाशात्मने नमः। अदु चराय नमः। अदेव भेजनाय नमः। अकलाधराय नमः। अकालहेतवे नमः। अकामकृते नमः। अकामदायकाय नमः। अभृत्यु संहारकाय नमः। अश्वर्याय नमः। अनित्यानुष्ठानदायकाय नमः। अक्षपा कराय नमः। अश्वर्यापाय नमः। अश्वर्यवृद्धि समन्विताय नमः। अजैवातृकाय नमः। अश्वर्य नमः। अश्वर्य नमः। अभ्वर्याय नमः। अभक्तापिद्र्य भञ्जनाय नमः। असामगानिप्रयाय नमः। अस्वरंश्वकाय नमः। अस्वरंश्वकाय नमः। असामगानिप्रयाय नमः। अस्वरंश्वकाय नमः। असामगोत्मवाय नमः। अस्वरंश्वकाय नमः। असामगोत्मवाय नमः। अस्वरंश्वकाय नमः। अस्वरंश्वविताय नमः। अस्वरंश्वविताय नमः। अस्वरंश्वविताय नमः। अस्वरंश्वविकाय नमः। अस्वरंश्वविकाय नमः। अस्वरंश्वविकाय नमः। अस्वरंश्वविकाय नमः। अस्वरंश्वविकाय नमः। अस्वरंश्वविकाय नमः। अस्वरंश्वय नमः। अस्वरंश्वय नमः। अस्वरंश्वयय नमः। अस्वरंश्वययय नमः। अस्वरंश्वयय नमः। अस्वरंश्वययय नमः। अस्वरंश्वययय नमः। अस्वरंश्वययय नमः। अस्वरंश्वययय नमः। अस्वरंश्वययय नमः। अस्वरंश्वययय नमः। अस्वरंश्वयययययय नमः। अस्वरंश्वयययययययययययययय

द्वितीय दिन

3=8

नमः। ॐभुवनप्रतिपालकाय नमः। ॐसजलार्तिहराय नमः। ॐसौम्य जनकाय नमः। ॐसाधुनन्दिताय नमः। ॐसर्वागमज्ञाय नमः। ॐसर्वज्ञाय नमः। ॐसर्वज्ञाय नमः। ॐसितम्ष्रणाय नमः। ॐसितम्ष्रणाय नमः। ॐसेतमाल्यांबरधराय नमः। ॐश्वेतगन्धात्मलेपनाय नमः। ॐदशाश्वरथसंरूढाय नमः। ॐदराडपार्ये नमः। ॐधनुर्धराय नमः। ॐ कुन्दपुष्पोज्वलाकाराय नमः। ॐनयनाब्ज समुद्भवाय नमः। ॐग्रात्रेयगोत्रजाय नमः। ॐ प्रत्यन्त विनयाय नमः। ॐप्रिय दायकाय नमः। ॐकरुरणरस संपूर्णाय नमः। ॐ कर्कट प्रभवे नमः। ॐग्रव्याय नमः ॐचतुरश्रासनारूढाय नमः। ॐचतुराय नमः। ॐविव्यवाहनाय नमः। ॐविवस्वन्मराडलाज्ञेयवासाय नमः। ॐवसुसमृद्धिधाय नमः। ॐमहेश्वरप्रियाय नमः। ॐदान्ताय नमः। ॐमरुगोत्रप्रदक्षिरणाय नमः। ॐग्रहमराडलमध्यस्थाय नमः। ॐग्रसितार्काय नमः। ॐग्रहाधिपाय नमः। ॐद्विजराजाय नमः। ॐद्वितलगाय नमः। ॐद्विभुजाय नमः। ॐग्रहिर्णपृजिताय नमः। ॐग्रुनिरनुत्याय नमः। ॐनित्यानन्दफलप्रदाय नमः। ॐसकलाह्वादनकराय नमः। ॐपलाशेत्मप्रियाय नमः। ऋष्ठोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। (ग्रनुष्ठान पद्धित) धृपम् — ॐवनस्पित रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आग्नेयः सर्वदेवानां धृपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुर्रुष् व्यद्धः कित्धा व्यंकल्पयन्। मुख्ं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादां उच्येते।। (मानेद १०.६०.११) ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मृयि संभवं कर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। (मानेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। धूपं ऋाघ्रापयामि।

दीपम् ग्राज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं विह्नना योजितं मया। गृहागा मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह।। (स्मृति संग्रह)
ॐ ब्राह्मगोऽस्य मुर्खमासी बाहू राजिन्यः कृतः। ऊरू तदंस्य यद्वैश्यः पृद्धयां शूद्रो ग्रंजायत।। (म्म्वेद १०.६०.१२)
ॐ ग्रापः सृजंतु स्त्रिग्धांनि चिक्लीत् वस मे गृहे। नि चं देवीं मात्रं श्रियं वासर्य मे कुले।। (म्म्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)



सपरिवार श्रीसोमाय नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं ग्राचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मग्रडलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य ग्रभिघार्य निर्मलं हिव तदुपिर न्यस्य ग्राज्येन द्रवीभूतं कृत्वा ''ॐ भू भुंवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यात्रं संशोध्य इक्षिगाहस्ते ग्रग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते ग्रमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हिवराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरिममुद्रां बध्वा ग्रमृतमयं भावियत्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहगोच्छां कुर्यात्। (ग्रनुष्ठान पद्धित)

''सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि'' इत्यनेन

परिषच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः ''देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हिवर्विभो'' इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्शयत्। प्रासमुद्रा प्रदर्शयत्। प्रासमुद्रा प्रदर्शयत्। प्रासमुद्रा प्रदर्शयत्। प्रासमप्राप्ति पुद्राः प्रदर्शयत्। प्रासमप्राप्ति प्रासमप्राप्ति जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः विधितं देवं ह्रन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा। कलश के आगे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्र मगडल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल हिवस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हिवस् को घी से मिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं'' इस वायु बीज को जपकर हिवस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) ग्रिग्न बीज को लिखकर उस ग्रिग्न से हिवस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में ग्रमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हिवस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। ॐ चं चंद्राय नमः। इस मन्त्र का ग्राठ बार जप करें। हिवस् को मत्रमय एवं ग्रमृतमय होने की कल्पना करें। सुरिम मुद्रा से ग्रमृतमय हुग्ना है मानकर मलांश, धातु ग्रंश एवं रसांश को ग्रलग-ग्रलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। ''सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि'' इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में

द्वितीय दिन

पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। ''निवेदयामि भवते जुषाग्रा हिवर्विभो'' कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्राशाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ किनिष्ठिका मिलाकर, ऋपानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, व्यानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, उदानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, समानाय स्वाहा। सभी अङ्गुलियों को लिकर। अञ्च से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को अपित करने की कल्पना करें। "वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि" कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति ॐ चं चंद्राय नमः। "इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादुः पंवस्व द्वियाय जन्मंने स्वादुरिद्रांय सुहवींतुनाम्ने। स्वादुर्मित्राय वरुंगाय वायवे बृहस्पतंये मधुंमां ऋदांभ्यः॥ (म्रावेद स. १४.६)

ॐ चन्द्रमा मनंसो जातश्रक्षोः सूर्यो त्रजायत। मुखादिन्द्रंश्चाग्निश्चं प्रा्णाद्वायुरंजायत॥ (मानेद १०.६०.१३)

ॐ ऋार्दां पुष्किरिंगों पुष्ठिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिररामंथीं लुक्ष्मीं जातंवेदो म् ऋावंह।। (सग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। स्ममृतापिधानमसि कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गराडूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्र्णं कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ (स्मृति संग्रह-देवपूजा)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.



नीराजन (त्रारित)—ॐ ऋर्चत् प्रार्चत् प्रियंमेधा सो ऋर्चत । ऋर्चतु पुत्रुका उत पुरं न धृष्यवर्चत । (ऋग्वेद =.६६.=) अ ध्रुवाद्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगंद् ध्रुवो राजां विशाम्यम्॥ ॐ ध्रुवं ते राजा वर्र्स्त्रगो ध्रुवं देवो बृहम्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्चं राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (सम्बेद १०.१७३.४)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्य—ॐ म्राप्यांयस्व समेतृते विश्वतः सोम्वृष्ययं। भावाजंस्य संगुथे॥ (मग्वेद १.६१.१६) मा.गृ.सूत्रम्

ॐ नाभ्यां त्रासीदुंतरिक्षं शीष्णों द्यौः समंवर्तत। पुद्ध्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथां लोकाँ स्रंकल्पयन्। (सम्वेद-१०.६०.१४)

अ त्राद्रीं युः करिंगीं यष्टिं सुवर्गां हेम्मालिनीम्। सूर्या हिरगमंयीं लुक्ष्मीं जातंवेदो म् त्रावंह॥

(ग्रग्वेद-पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्) सपरिवार श्रीसोमाय नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिरा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रराश्यन्ति प्रदक्षिरा पदे पदे।। (देवपूजा-स्मृति संग्रह)

ॐ सुप्तास्यां सन् परि्धयुस्त्रिः सुप्तसुमिर्धः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वाना ऋबंध्नन् पुरुंषं पृशुं॥ (ऋग्वेद १०.६०.१४)

ॐ तां मु स्रावंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम्।

यस्यां हिरंगयं प्रभूतं गावोंदास्योऽश्वांन् विंदेयं पुरुषानुहम्।। (म्रावेद-पञ्चम मणडलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। प्रदक्षिरा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य — ॐ ऋत्रिपुत्राय विदाहें। ऋमृतोद्भवायं धीमिह। तन्नः सोमः प्रचोदयांत्।। इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल

छोडें।)

द्वितीय दिन

सर्वोपचार पूजनम्—ॐछत्रं समर्पयामि। चामरेशा वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। ग्रांदोळिकामारोहयामि। ग्रश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवास्तानि धर्माशा प्रथमान्यांसन्।

तेह नाकं महिमानं: सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ (मण्वेद १०.६०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयंतो भूत्वा जुहुयांदाज्यमन्वंहम्। सूक्तं पुंचदंशचं च श्रीकामः सत्तं जंपेत्।। (म्रावेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। सवोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—स्रात्रेयं यमुनाप्रभुं ग्रहगरास्याग्नेय भागस्थितं। श्वेतं श्वेतसुगंधमाल्यवसनं श्वेतांबुजोद्यत् करं। श्वेतच्छत्रविभूषरां ध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरे: प्रदक्षिराकरं सेवामहे शीतलम्।

ॐ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायगायेति समर्पयामि॥ (गौराणिकम्) ॐ ब्रह्मार्पगां ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मगा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ (श्री भगवद्गीते)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। स्रनेन पूजनेन सपरिवारः श्री सोमः प्रीयताम्।

पीठ पर नवग्रह पूजन्

प्रमारा— वर्तुलं चतुरस्त्रं च त्रिकोरां बारा एव च। सुदीर्घ चतुरस्त्रं च पञ्चकोरां धनुस्तथा।

CCO. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

2 £ 0



शूर्पाकारं ध्वजाकारं भान्वादीनां तु मगडलम्। मध्ये तु भास्करं विद्यात् शिशानं पर्व दक्षिगो।। दक्षिगो लोहितं विद्यात् बुद्यां पूर्वोत्तरेगा तु। उत्तरेगा गुरं विद्यात् पूर्वेगौव तु भार्गवम्।। पिख्यमे तु शिनं विद्यात् राहुं दिक्षिगा पिश्चिमे। पिश्चमोत्तरतः केतुः स्थापनीयाः प्रयत्नतः॥ (स्कान्दंमूलं प्रयोगरताकर)

नवग्रह मग्रडल वर्तुलाकार पष के जैसे रहता है। उसके ग्राठ दल होते हैं। मध्य भग किर्णाका कहताला है। मध्य किर्णाका वर्तुलाकार मग्रडल में सूर्य को मानना चाहिये। ग्राग्नेय दिशा में चतुरस्र मग्रडल में चन्द्र देवता को मानें। दिक्षिण पषदल के त्रिकोणमग्रडल में ग्रंगारक को मानें। ऐशान्य दिशा में बाण की चिह्न में बुध को मानें। उत्तर दिशा में दीर्घ चतुरस्र मग्रडल में गुरु को मानें। पूर्व दिशा में पञ्चकोण मग्रडल में शुक्र को मानें। पश्चिम दल में धनुष ग्राकार मग्रडल में शिन को मानें। नैऋत्य दिशा में शूर्णाकार मग्रडल में राहु को माने। वायव्य दिशा में ध्वजाकार मग्रडल में केतु को मानें। एवं ग्रहों की इसी क्रम मं स्थापना करें।

सूर्यः सोमो महीपुत्रः सोमपुत्रो बृहस्पतिः। शुक्रः शनैश्चरो राहुः केतुश्चेति ग्रहा स्मृताः॥ उपरोक्त नौ ग्रह कहलाते हैं। ताम्रेशा कारयेद् भानुं रजतेन निशाकरम्। कुजज्ञ जीवरूपाशि सुवर्शो प्रकल्पयेत्॥ रजतेन ततः शुक्रं कृष्णालोहेने सूर्यजम्। सीसेन कारयेत् राहुं केतुं कांस्येन कांरयेत्॥ (ग्रहमस पद्धित)

सूर्य की प्रतिमा ताम्र से, चाँदी से चन्द्र की प्रतिमा को, कुज, बुध एवं गुरु की प्रतिमा को सेने से, शुक्र की प्रतिमा चाँदी से, शिन की प्रतिमा काले लोहे से, राहु की प्रतिमा सीस से एवं केतु की प्रतिमा काञ्च से बनाना चाहिये।

स्वांगुलेनोच्छ्रितास्सर्वे ग्रहाः कार्या विधानतः। स्रथवा स्वर्गामात्रेगा कारयेत् प्रतिमाः सुधीः॥ सर्वे किरीटिनः कार्या ग्रहा लोकहितावहाः॥ (ग्रहमख पद्धति)

द्वितीय दिन

सभी ग्रहों को एक ग्रंगुल (लगभग एक इञ्च) से कम ऊँचे न बनाये। उन लोहों से या साने से शास्त्र विधि के ग्रनुसार बनायें। सभी को किरीट ग्रवश्य रहना चाहिये।

त्रादित्यांगाराकौ रक्तौ बुध जीवौ च पीतकौ। सोमशुक्रौ विदुः श्वेतौ कृष्णौ राहु शरीश्वरौ॥ धूम्रः के तुगराश्चेषां वस्त्रारायाभरगानि च। ग्रहवर्गानि गृऋींयात् गंधं पुष्पं तथैव च॥ (ग्रहमख पद्धित)

सूर्य एवं ग्रंगारक लाल रंग के है। बुध एवं गुरु दोनों पीले रंग के हैं। चन्द्र एवं शुक्र सफेद रंग के हैं। राहु एवं शनी काले रंग के हैं। केतु गणों का रंगा धूम्र है। इनके वस्त्र एवं ग्राभारण, गंध एवं पुष्प भी उनके रंग के समान होने चाहिये।

गोधूमास्तराडुलाश्चेव ह्याढकाः कुद्गकास्तथा। चराकाश्चेव निष्पावाः तिलमाष कुळित्थकाः॥ ग्रहाराां धान्य जातानि कीर्तितानि मनीषिभिः। (स्मृति संग्रह)

सूर्य के लिए गेंहु, चन्द्र के लिए चावल, कुज के लिए ग्ररहर दाल, बुध के लिए साबूत मूँग, गुरु के लिए चना, शुक्र के लिए सफेद राजमा, शिन के लिए तिल, राहु के लिए उडद दाल, केतु के लिए कुळित्थ धान्य।

त्रकः पलाशखिदरावंपामार्गोऽथ पिप्लः। उदुंबरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः स्मृताः॥ (प्रयोगरताकर)

सूर्य के लिए ऋकं सिमत्, चन्द्र के लिए पलाश सिमत्, कुज के लिए खिदर सिमत्, बुध के लिए ऋपामार्ग सिमत्, गृरु के लिए पीपल का सिमत्, शुक्र के लिए ऊदुम्बर सिमत्, शिन के लिए शमी सिमत्, राहु के लिए दूर्वा सिमत्, केतु के लिए कुशा सिमत् हैं।

गुडोदनं पायसात्रं संयावं क्षीरिपकम्। दथ्योदनं घृतात्रं च कृसरं मांसचित्रितम्॥ (स्मृति संग्रह)

सूर्य के लिए गूड का चावल, चन्द्र के लिए खीर, सेवई खीर कुज के लिए, बुध के लिए पेढा, गुरु के लिए दही चावल, शुक्र के लिए घी चावल, शिन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

के लिए दही चावल, राहु के लिए उडद का चावल, केतु के लिए चित्रा (खिचडी) नैत्रद्य है। धेनु: शंख्स्तथाऽनड्वान् हेम वासो हय: क्रकात्। कृष्णागौ रायससीस: एतावै दक्षिण: क्रमात्॥ सूर्य के लिए गोदान, चन्द्र के लिए शख दान, कुज के लिए बैल, बुध के लिए सोना, गुरु के लिए पीला वस्त्र, शुक्र के लिए घोडा, शिन के लिए कायीगाय, राहु के लिए लोहा एवं केतु के लिए सीसा का दान करें।

संकल्य—देशकालौ संकीर्त्य सर्वेषां महाजनानां जन्मनक्षत्रे जन्मादि द्वादश भावेषु ये ये ग्रहाः ऋरिष्टस्थान स्थिताः तेषा ग्रहाणा शुभ एकादशफलावाप्यर्थ दुःस्थान स्थित ग्रहात् सुस्थान फलावाप्यर्थ, सुस्थान स्थित ग्रहात् ऋतिशय शुभफलावाप्यर्थ, महादशा ऋन्तर्दशा ऋन्तरन्तर्दशा सूक्ष्मदशा प्राणदशासु तत्रागत ऋप मृत्यु व्याळमृत्यु घोरमृत्यु क्षुद्र मृत्यु पैशाच मृत्यु समस्त मृत्यु पीडा परिहारार्थं परैः कृत कारियष्यमाण मन्त्र तन्त्र विषचूर्णादि ऋाभिचार कृत्रिमादि सर्वोपद्रव शान्त्यर्थं रुद्र सर्वाद्भुत शान्तियागाङ्गत्वेन ऋदित्यादि नवग्रहाराधनं करिष्ये। (प्रयोगरवकार)

त्दंगत्वेन कलश पूजां करिष्ये। जल पूरित कलश को बायें ग्रोर रख लोवें। कलश को गंध पुष्पादिकों से पूजन करें।

कलशस्य मुखे विष्णुः कग्रठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगगाः स्मृताः॥ कुक्षौ तु सागराः सर्वो सप्तद्वीपा वसुंधरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वगाः॥ ऋग्रैश सहिताः सर्वे कलशं तु समश्रिताः। ऋत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पृष्टिकरी तथा॥ ऋगयान्तु कर्म सिद्धयर्थ दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्रा सरितः तीर्थानि जलदा नदाः॥ गंगे च यमुने चैव गोदाविर सरस्वित। नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सिद्धिं कुरु॥ कलशोदकं गृहीत्वा देवताः प्रोक्ष्य, पूजा द्रव्यािश प्रोक्ष्य, ऋगत्मनं प्रोक्षयेत्। (ब्रह्मकर्म समुच्य-देवपूजा प्रकरण)

ईशान्यं शुक्लतराडुलैः सकर्गिकं ऋष्टदलं ऋंबुजं उल्लिख्य कर्गिकायां दलेषु च वर्तुलादि तत् तत् ग्रहपीठानि कुर्यात् यथा मध्ये रक्ताक्षतैः वर्तुलं ऋदित्याय, ऋगग्नेय दले शुक्लाक्षतैः चतुरस्त्रंसोमाय, दिक्षगादले रक्ताक्षतैः त्रिकोग्गं मंगलाय ईशान दले हरिताक्षतैः बागाकारं बुधाय, उत्तरदले पीताक्षतैः दीर्घ उचुरस्त्रं गुरवे, पूर्व दले शुक्लक्षतैः पञ्चकोग्गं शुक्राय, पश्चिमदलेकृष्णाक्षतैः चापाकारंशनैश्चराय, नैर्ऋत्यदलेकृष्णाक्ष तैः शूर्पाकारं राहवे, वायव्यदले चित्राक्षतैः ध्वजाकारं केतवे इति विलिख्यततः उदीचं रंगवल्लीपद्मे धान्येन कुंभ योग्यं पीठं प्रकल्प्य तत्र नवं औरगां तेजसं मृगमयं वा ऋनुलिप्तं ऋक्षतपुष्पमालाद्यलंकृतं शुभ ऋभिषेक कुंभं स्थापयेत्। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

ईशान्य दिशा में सफेद चावलों से किर्णिका युक्त अष्टदलपद्य को लिखें। उसके किर्णिका (बीच वाला भाग) एवं दलों में उन उन ग्रहों का पीठ बनायें। जैसे कि लाल क्षतों से बीच में सूर्य का पीठ, आग्नेय दल में सफेद चावलों से चौकाकार पीठ चन्द्र के लिए, दिक्षणदल में लाल अक्षतों से मंगल के त्रिकोणाकार पीठ, ईशान्य ल में हरे अक्षतों से बाणाकार पीठ बुध के लिए, उत्तर दल में पीले चावलों से दीर्घ चौकाकार पीठ गुरु के लिए, पूर्वदल में सफेद अक्षताओं से पञ्च कोण पीठ शुक्र के लिए, पश्चिम दल में काले अक्षतों से धनुष के आकार वाला पीठ शनैश्वर के लिए, नैमृत्य दल में काले अक्षतों से शूर्णाकार पीठ राहु के लिए, वायव्य दल में रंगिबरंगे अक्षतों से ध्वजाकार पीठ केतु के लिए बनायें। इस मगडल के उत्तर दिशा में रंगोली से बनाये प... के ऊपर धान्य से कलश रखने योग्य पीठ बनाकर, उस पर नया, शुद्ध, मिट्टी का या धातुओं से निर्मित बिना छिद्र के कलश को गंध पुष्पा-क्षतों से अलंकृत कर उस पिवत्र अभिषेक कलश को रखें।

पीठ पूजन

ॐ महीद्यौः पृथिवी चं न इमंयुज्ञंमिंमिक्षतां। पिपृतांनो भरींमभिः॥ (भगवेद १.२२.१३)

कहकर भूमि की प्रार्थना करें।

म्रोषधय इत्यस्य म्राथर्वगोभिषगोषधयोनुष्टुप् धान्य राशि करगो विनियोग:।

ॐ स्रोषंधयुः संवंदंते सोमेंन सहराज्ञां। यस्मैं कृशोतिं ब्राह्मशास्तं राजन्पारयामिस ॥ (भग्वेद १०.६७.२२)

कहकर वस्त्र बिछाकर उस पर धान की राशि फैलाऐं। त्राकलशेष्वित्यस्य काश्यपो देवलः पवमानः सोमो गायत्री कलश स्थापने विनियोगः।

ॐ त्वेषस्तें धूम ऋंगवित दिवि षंच्छुक्र स्नातंतः।

सूरो न हि द्युतात्वं कृपापांवक् रोचंसे॥ (मण्वेद ६.२.६)

कहकर कलश को उल्टा कर धूप डालें।



ॐ तन्तुं तुन्वन्रजंसो भानुमन्विहि ज्योतिंष्मतः पृथो रंक्षिध्या कृतान्। स्रनुल्बरां वंयत जोगुंवामपो मनुर्भव जनया दैव्यजनंम् ॥ (मार्वेद १०.५३.६)

कहकर कलश को धागों से लपेटें (मौली से)

ॐ त्राकुलशेषु धावति पुवित्रे परिषिच्यते। उक्थैर्युज्ञेषुवर्धते॥ (मग्वेद ६.१४.४)

कहकर धान्य राशि पर कलश को रखें। इमं मे गंगइत्यस्य सिंधुक्षित् प्रैयमेधोनद्यौजगती उदक पूरग्रे विनियोगः।

ॐ इमं में गंगेयम्नेसरस्वतिशृत्द्रिस्तोमं सचतापरुष्या।

त्रुसिक्यामंरुद्धधे वितस्त्याजींकीये शृशाुह्या सुषोमंया ॥ (भग्वेद १०.७५.५)

कहकर कलश को तीर्थजल से भरें।

पञ्चगव्य क्षेप — गायत्र्या विश्वामित्रः सविता गायत्री गोमूत्र प्रक्षेपरो विनियोगः।

ॐ तत्संवितुर्वरेरायं भर्गों देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयांत्। (सग्वेद ३.६२.१०)

कहकर कलश में गोम्त्र डालें।

ॐ गंधंद्वारां दुंराध्वां नित्यपुंष्टां करीिषिशाीम्। ईश्वरीं संर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्।। (म्रावेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

कहकर कलश में गोमय डालें। म्राप्यायस्वेत्यस्य राहूगगोगोतमः सोमो गायत्री पयः क्षेपगो विनियोगः।

ॐ म्राप्यांयस्वसमेंतृते विश्वंतः सोम्वृष्यं। भवावार्जस्य संग्थे। (मानेद १.६१.१६)



कहकर कलश में गाय का दूध डालें। दिधक्राव्या इत्यस्य गोतमो वामदेवो दिधक्रावानष्टुप् दिधक्षेपरो विनियोगः।

ॐ दिध् क्राव्यों स्रकारिषंजिष्योर्श्वस्य वाजिनं:। सुरिभनो मुखांकर्त्प्रग् स्रायूंषितारिषत्।। (ऋग्वेद ४.३£.६)

कहकर कलश में दिह डालें।

शुक्रमंसि ज्योतिरसि तेजोंसि देवोवं: सवितोत्पुनात्व च्छिंद्रेशा प्वित्रेंशा वो: सूर्यंस्य रुश्मिमें:।

(यजुर्वेद-१ काराड-१ प्रश्न-१० म्रनुवाक) कहकर कलश में घी डालें।

कलश में पञ्चामृत निक्षेप—ॐ स्राप्यांयस्व समेंतुते विश्वतः सोम्वृष्यर्य। भवावार्जस्य संगुथे। (ऋग्वेद १.६१.१६)

कहकर कलश में दूध डाले।

ॐ दिध् क्राव्यों स्रकारिषं जिष्योरश्वस्य वाजिनंः। सुरिभ नोमुखां कर्त्प्रगा स्रायूं षितारिषत्।। (म्रावेद ४.३६.६)

कहकर कलश में दिह डालें।

ॐ घृतं मिंमिक्षे घृतमंस्य योनिर्घृते श्रितो घृतंवस्य धामं। ऋनुष्वदमावंह मादयंस्व स्वाहांकृतं वृषभवक्षि हृव्यक्॥

(भग्वेद २.३.११)

कहकर कलश में घी डालें। मधुवाता इति तिसृगां राहूगगो गोतमोविश्वेदेवागायत्री मधुप्रक्षेपगो विनियोगः।

ॐ मधुवातां ऋतायते मधुंक्षरंति सिंधंवः। माध्वींर्नः संत्वोषंधीः॥

मधुनक्तंमुतोषंसो मधुंमृत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरंस्तु नः पिता॥

मधुमान्नो वन्स्पित्मधुमा न्नस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः॥ (ऋग्वेद १.६०.६-७-६)

कहकर कलश में शहद डालें। स्वादु: पवस्व भार्गवोवेन: पवमान: सोमो जग ती शर्करा प्रक्षेपरो विनियोग:।

ॐ स्वादुः पंवस्व द्विव्यायु जन्मंने स्वादुरिद्रांय सुहवींतु नाम्रे। स्वाद्मित्राय वरुगांय वायवे बृहस्पतंये मधुंमाँ ऋदांभ्यः॥ (मण्वेद र. =४.६)

कहकर कलश में शक्कर डालें। हय गज वल्मीक ऋद गोष्ठ राजद्वार चतुष्पद मृदः। (घोडा, हाथी, बल्मीक, खड्डा, गोशला, राजद्वार, चौराहे की मिट्टी) स्योनापृथिवि कारावोमेधातिथिभूमिर्गायत्री मृत्क्षेपरो विनियोग:।

ॐ स्योनापृंथिवि भवानृक्षुरा निवेशनी। यच्छानुः शर्मसुप्रथः॥ (भग्वेद १.२२.१४)

कहकर कलश में मिट्टी डालें। रुवित भीम इत्यस्य वैश्वामित्रोरेगुः पवमान सोमो जगती। त्वक् क्षेपगो विनियोगः।

ॐ रुवितं भीमो वृंष्भस्तं विष्यया श्रृंगेशिशांनो हरिंगीविचक्ष्गाः। स्रायोनिं सोमः सुकृतंनिषींदति गुव्ययी त्वग्भंवतिनिर्शिग्व्ययीं। (स्रावेद £.७०.७)

कहकर वट, पीपल, पलाश, जामून एवं ग्राम के वृक्षों का त्वक् (छिलका) कलश में डालें। या: फलिनीरित्यास्या थर्वगो भिषगोषधयोनुष्टुप् पुष्प

फलक्षेपरो विनियोगः।

ॐ याः फुलिनीर्यात्रंफुला ऋंपुष्पाया श्चंपुष्पिग्गीः। बृहस्पतिं प्रसृतास्तानों मुंचंत्वं हंसः॥ (मवेद १०.६७.१४)

कहकर कलश में पुष्प फल डालें। सिंह रत्नानीत्यस्य श्यावाश्वः सिवता गायत्री रत्नक्षेपग्रो विनियोगः।

ॐ स हि रत्नांनि दाशुषें सुवातिं सविता भर्गः। तं भाग चित्रमीमहे॥ (भग्वेद ५. ६२.३)

कहकर कलश में रत्न डालें। हिरगय रूप इत्यस्य शौनको गृत्समदो पान्पात्त्रिष्टुप् हिरगय क्षेपे विनियोगः।

ॐ हिरंगयरूपः स हिरंगय संदृग्पान्नपात्सेदुहिरंगयवर्गः।

हिर्गययापात् परियोने र्निषद्यांहिरगयदादंदुत्यन्नंमस्मै॥ (म्रावेद २.३४.१०)

कहकर कलश में हिरगय (सिक्का) डालें। या ग्रोषधीरित्यस्या थर्वगोभिषगोषधयोनुष्टुप् ग्रोष्ज्ञिध प्रक्षेपगो विनियोगः।

ॐ याऽस्रोषंधीः पूर्वाजाता देवेभ्यंस्त्रियुगंपुरा। मनैनुब्भूर्गामृहंशृतं धार्मनि सप्तर्च।। (भगवेद १०.६७.१)

कहकर कलश में ग्रौषधि डालें।

ॐ गंधंद्वारां दुंराध्र्षां नित्यपुंष्टांकरीषिर्गीं। ईश्वरीं सर्वंभूतांनां तामिहोपंह्वये श्रियं॥ (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

कहकर कलश में चन्दन डालें।

ॐ काराडांत्काराडात्प्ररोहिन्ति परुषःपरुष्स्परिं। एवानों दूर्वे प्रतंनु सहस्रेरा शृतेनं च।। (यनुर्वेद-महारायशोपनिषद्-श्रारश्यक)

कहकर कलश में दर्वा डालें। प्रवो यज्ञेष्वित्यस्य विसष्ठो विश्वेदेवास्त्रिष्टुप् पल्लव प्रक्षेपगो विनियोगः।

अ प्रवो युज्ञेषुं देवयंतों ऋर्च्न्द्यावानमोभिः पृथिवी इषध्यै।

येषां ब्रह्मारायसंमानि विप्राविष्वग्वियंतिंवनिनो न शाखाः ॥ (भग्वेद ७.४३.१)

कहकर वट, वश्वत्थ, पलाश, जामून एवं ग्राम के वृक्षों के पत्तें से कलश का मुख ढकें। उस पर फल सहित पूर्ण पात्र रखें। युवं वस्त्राणीत्यस्यौचथ्यो दीर्घतमामित्रावरुगौत्रिष्टुप् कुम्मे वस्त्र युग्मविष्टने विनियोग:।

ॐ युंव वस्त्राांशिपीवसावंसाथेयुवोरिच्छंद्रामंन्तंवो हसर्गीः।

ऋवातिरत्मनृतानिविश्वं ऋतेनं मित्रा वरुगा सचेथे॥ (ऋग्वेद १.१४२.१) कहकर कलश को वस्त्रों से लपेटें।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदानदाः। भ्रायांतु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

गंगे च यम्ने चैव गोदाविर सरस्वित। नर्मदे सिंधु कार्वेरि जलेस्मिन्सिन्निधं कुरु॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)

इमं में गंगे इत्यस्य सिंधुक्षित्प्रैयमेधो नद्यो जगित। तीर्थावाहने विनियोगः।

ॐ इमं में गंगे यम्ने सरस्वति श्तुंद्रिस्तोमं सचतापरुष्या।

ऋसिक्न्या मंरुद्धधे वितस्त्याजींकीये श्रृगुह्या सुषोपंया। (मण्वेद १०.७५.५)

कहकर कलश में तीर्थों का ऋवाहन करें। कलश को कुशाओं से छूकर मन्त्र पाठ करें। ऋपोहिष्ठेति तिसृगामांबरीष: सिंधुद्वीप ऋपो गायत्री। निहते

क्षत्रमिति तिसृगामाजीगर्तिःशुनः शेपो वरुगस्त्रिष्टुप्। स्वादिष्ठयेति तिसृगामधुच्छंदाः पावमान सोमो गायत्री सर्वासां जपे विनियोगः।

ॐ ऋषो्हिष्ठा मंयो्भुवःस्तानं ऊर्जे दंधातन। मृहेरगायः चक्षंसे॥

यो वंः शिवतंमोरसस्तस्यं भाजयते ह नंः। उश्तीरिव मातरंः।

तस्मा ऋरंगमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। ऋषों जनयंथा च नः। (ऋष्वेद १०.६.१-२-३)

ॐ नुहितेक्ष्त्रं नसहोनम्न्युं वयंश्चनामीपृतयंत ऋापुः। नेमाऽऋापों ऋनिम्षं चरंतीर्नयेवातंस्य प्रमिनंत्यभवं॥

मुबुघराजावर्रगोवनस्योध्वं स्तूपंददतेपूतदंक्षः। नीचीनाः स्थुरुपरिबुन्धएषाम्समेम्रन्तर्निहिताः केतवः स्युः॥

उहिराजा वर्रगश्चकारु०. सर्वारापंशामन्वेत्वाऽउ । उहिराजा वर्रगश्चकारु०. Maharish Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabal<u>pur, MP Collec</u>tio

ऋपदेपादा प्रतिधा तवेकरुतापंवक्ता हृंदयाविधंश्चित्।। (स्रावेद १.२४.६-७-६) ॐ स्वादिष्ठया मिद्ष्रिया पर्वस्व सोम्धरंया। इन्द्रांय पातंवे सुतः।। रक्षोहा विश्वचंधिरार्भियोनिमयोहतं। हुर्गांस्थस्थ्रमासंदत्।। वृरिवोधातंमो भव्मंहिष्टो वृत्रहंतंमः। पर्षिराधो म्घोनां॥ (स्रावेद ६-१-१-२-३)

इन मंत्रों से कलश का ग्रिममंत्रण करें। ग्रिममंत्रण मन्त्रों का ग्रर्थ मनन करते हुए देवता को छूकर सान्निध्य की कल्पना करने की क्रिया है। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। ग्रावाहयामि। ग्रासनं समर्पयामि। स्वागतम् समर्पयामि। पादारिवंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः ग्रध्यंमध्यं समर्पयामि। पञ्च ममर्पयामि। ग्रामतं समर्पयामि। मंत्रपुष्यं समर्पयामि। प्रदक्षिण नकस्कारन् धूपमाप्रापयामि। सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। ग्रानेन कलशस्थापनेन ग्रादित्यादि नवग्रहाः प्रीयंताम्।

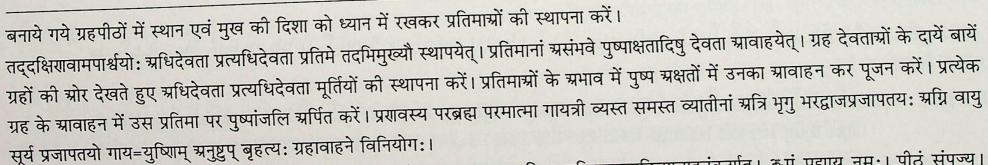
पीठ पर नवग्रहों की स्थापना — गुं गुरुभ्यो नमः। गं गणपतये नमः। ग्राधारशक्त्यै नमः मूल प्रकृत्यै नमः। ग्रादि कूर्माय नमः। ग्रनताय नमः। पृथिव्यै नमः। धर्माय नमः। ज्ञानाय नमः। वैराग्याय नमः। ऐश्वर्याय ग्रधमीय नमः। ग्रज्ञानाय नमः। ग्रवैराग्याय नमः। मं सत्वाय नमः। गं प्रक्षाय नमः। गं प्रमारमने नमः। गं प्रमारमने नमः। गं प्रमारमने नमः। भं प्रमारमने नमः। पीठपूजां समर्पयामि। (अनुष्ठान पद्धित)

नवग्रह प्रतिमात्रों का त्रगन्युत्तारण—त्रिग्न सिप्तिमिति सप्तर्चस्य सूक्तस्य सोचिको वैश्वानर स्त्रिष्टुप्। त्रगन्युत्तारणे विनियोगः। ॐ सिप्तैवाजं भ्रं दंदाति वीरं श्रुत्यं कर्मिनुष्ठां। रोदंसीविचंरत्सम्जन्नारींवीरकुंक्षिं पुंरिधं॥ ॐ ऋपूंसः समिदंस्तु भुद्रामुही रोदंसी ऋविंवेश। एकं चोदयत्स्मत्सुंवृत्राशिंदयते पुरूशिं॥ ॐ हत्यं जरंतः कर्रामावाद्भ्योनिरंदह्जरूथं। स्रुत्रिं घुर्म उरुष्यदंतर्नृर्मेधं प्रजयां सृज्तसं॥ अ दाद्रविंशां वीरपेंशा ऋषिं यः सहस्रां सुनोतिं। द्विवहव्यमातंतान् धामांनि विभृंतापुरुत्रा॥ ॐ उक्थेर्र्यषंयोविह्वंयंते नरोयामंनि बाधितासं:। वयो स्रंतरिक्षे पतंतः सहस्रा परियातिगोनीं॥ अ विश्रंईळते मानुषीर्यामनुषो न हुंषोविजाताः। गांधंवीं पृथ्यांमृतस्य गर्व्यातिर्घृत म्रानिषंत्ता॥ अ ब्रह्मं सुभवंस्ततक्षुर्मुहामंवोचांमासुवृक्ति । प्रावंजरितारंथिवष्ठ महिद्रविंगामायंजस्व ॥ ॐ ऋग्निः सर्प्तिं वाजं भुरं दंदात्युग्नि वीरं श्रुत्यं कर्मानुःष्ठां। ऋग्निरोतंसी विचंरत्सम्जन्नग्निर्नीं वीर कुंक्षिं पुर्रिधं॥ ॐ त्रुग्रेरप्रंसः स्मिदंस्तु भुद्राग्निर्मृहीरोदंसी त्राविवेश। त्रुग्निरेकं चोदयत्समत्व्विग्नवित्राशिंदयतेपुरूशिं॥ ॐ ऋग्निर्हत्यं जरंतः कर्रामावाग्निरद्धज्जर्र्णथं। ऋग्निरत्रं धुर्म उरुष्यदुन्तर्ग्निर्मधं पूजयां सृज्त्सं॥ ॐ ऋग्निर्दाद्रविंगां वीरपेंशा ऋग्निर्द्धियः सहस्रांसनोतिं। ऋग्निर्दिवहव्यमातंतानाग्ने धौमानिविभृंता पुरुत्रा॥ ॐ ऋग्निमुक्थैर्ऋषंयोविह्वंयंतेृग्निं नरोयामंनि बाधितासंः। ऋग्निं वयों ऋंतरिक्षेपतंतोग्निः सहस्रा परियाति गोनीं॥ अ ऋग्निं विशं ईळते मानुंषीयां ऋग्निं मनुंषो नहुंषोविजाताः। ऋग्निगांधवीं पृथ्यामृतस्याग्नेर्गव्यृतिर्घृत ऋनिषंता॥ ॐ ऋगूये ब्रह्मं ऋभवंस्ततक्षुरुग्निं महामंवोचामासुवृक्तिं। ऋग्ने प्रावंजरितारंयविष्ठाग्नेमहिद्रविंग्मायंजस्व॥

(ब्रह्मकर्म समुच्चय-ग्रग्न्युत्तारग विधान,१० मगडल-८० संपूर्ण सूक्त)

इन भग्न्युत्तारण सूक्तों से प्रतिमा पर सतत जल धारा करने से प्रतिमा की शुद्धि होती है। पूर्विनिर्मित पीठेषु यथास्थान मुखै: ग्रहप्रतिमा: स्थापियत्वा पहले

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ



सूर्य देवता स्नावाहन — कर्शिकायां वर्तुल पीठस्थ गोधूम धान्यस्थ स्नादित्य प्रतिमायाञ्चादित्यावाहनंकुर्यात्। ॐपं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य। स्नाकृष्णोनेत्यस्य हिरगयस्तूपः सविता त्रिष्ठुप् सूर्यावाहने विनियोगः।

ॐ म्राकृष्णेन् रजंसावर्तमानोनिवेशयंत्रमृतंमर्त्यं च। हिर्गययेन सविता रथेन देवो यांति भुवंनानिपश्यंन्।। (मावेद १.३५.२)

ॐभूः म्रादित्यग्रहमावाहयामि। ॐभुवः म्रादित्यग्रहमावाहयामि। ॐस्वः म्रादित्य ग्रहमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः म्रादित्यग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। भगवन्नादित्य ग्रहाधिपते काश्यपगोत्रकिलंगदेशेश्वर जपापुष्पोपमांगद्युते द्विभुज पद्माभयहस्त सिंदूरवर्गांबरमाल्यानुलेपन ज्वलन्माग्गिक्यखिचत सर्वा गाम भास्करतेजोनिधे त्रिलोकप्रकाशकित्रदेवतामयमूर्ते नमस्ते सन्द्धारुग ध्वजपताकोप शोभितेन सप्ताश्वरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिग्गीकुर्वन् म्रागच्छ म्रिग्निरहाभ्यां सह पद्म किर्गाकायां ताम्र प्रतिमां प्राडमुर्खीं वर्तुलपीठेऽधितिष्ठपूजार्थं त्वामावा हयामि। कहकर मध्य के किर्गाका में सूर्य देवता का म्रावाहन करें। सूर्य के म्रागे दाहिने म्रोर म्रिग्न का म्रावाहन करें। म्रादित्य म्रिधदेवता म्रगन्यावाहने विनियोगः। म्रिग्नंदूतं मेधातिथिरिग्नर्गायत्री म्रगन्यावाहने विनियोगः।

ॐ ऋग्निंदूतं वृंगीमहे होतांरं विश्ववेंदसं। ऋस्य यज्ञस्यं सुक्रतुं।। (भग्वेद १.१२.१)

ॐभू: ऋधिदेवता ऋग्निं ऋगवाहयामि। ॐभुव: ऋधिदेवता ऋग्निं ऋगवाहयामि। ॐस्व: ऋधिदेवता ऋग्निं ऋगवाहयामि। ॐभूर्भुव: स्व: ऋधिदेवता ऋग्निं ऋगवाहयामि।

स्थापयामि । पूजयामि । पिंगश्मश्रुकेशं पिंगाक्षित्रितयं ग्ररुणवर्गागं छागस्थं साक्षसुत्रं सप्तार्चिषं शक्तिधरवरदहस्तद्वयं ग्रादित्याधिदेवतं ग्राग्नं ग्रावाहयामि । सूर्य के ग्रागे बायें ग्रोर रुद्र का ग्रावाहन करें। त्र्यंबकं मैत्रावरुणिर्वसिष्ठोरुद्रोनुष्ट्रप रुद्रावाहने विनियोगः।

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनं। उर्वा्रुकिमिव् बंधनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥ (म्मवेद ७.४६.१२)

अभूरादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि । अभुवदादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि । अस्वरादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि । अभूर्भुवः स्वरादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि । स्थापयामि । पूजायामि । त्रिलोचनोपेतं पञ्चवक्त्रं वृषारूढं कपालशूल खद्वांगधारिगं चन्द्रमौलिं सदाशिवं म्रादित्यप्रत्यिधदेवं रुद्रमावाहयामि । नवशक्ति पूजा— अदीप्तायै नमः। असूक्ष्मायै नमः। अजयायै नमः। अभद्रायै नमः। अविभूत्यै नमः। अविमलायै नमः। अस्रमोघायै नमः। अविद्युतायै नमः। असर्वतोसुख्ये नमः। अनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय ग्रनंताययोगपीठात्मने नमः। सुवर्ण पीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजंशुद्धं

त्वामद्य ग्रहनायक। ऋरगयामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सिन्निधिं कुरु॥ (ऋनुष्ठान पद्धित) अभां हीं क्रों यर लवशष सहों संहं स: दिवाकरण प्राणा इह प्राणा:। अभां हीं क्रों यर लवशष सहों संहं स: दिवाकर जीव इह स्थित:। अभां

हीं क्रों यर लवशष सहों संहं सः दिवाकरस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्गमनः चक्षुः श्रोत्र घ्राणा प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ ऋसुंनीते पुनंरस्मासु चक्षुः पुनंः प्रा्रामिह नो धेहि हभोगं। ज्योक्पंश्येम् सूर्यमुच्चरंन्त्मनुंमते मृळयांनः स्वस्ति॥

(मृग्वेद १०.५£.६)

ॐ पुनंनों ऋसुं पृथिवी दंदातु पुन्द्यौर्देवी पुनंर्न्त रिक्षम्। पुनंर्नः सोमंस्त्न्वं ददातु पुनंः पूषा पृथ्यां ३ या स्वस्तिः॥

(म्ग्वेद १०. ४£.७)

सशक्ति सांगसायुधसवाहन सपरिवार श्री भास्कर भगवन् ऋत्रैवागच्छागच्छ। ऋवाहियष्ये। ऋवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur, MP Collection

द्वितीय दिन

308





भव। ग्रवगुरिठतो भव। ग्रमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। अप्रभाकराय विद्महे। दिवाकराय धीमहि। तन्न: सूर्य: प्रचोदयात्॥ इसका तीन

वेदगर्भ ऋषिः सिवता देवता गायत्री छन्दः। अन्या कृष्णोन रजसा हृदयाय नमः। अवर्तमानो निवेशयन् शिरसे स्वाहा। अग्रमृतं मर्त्यं च शिखायै वषट्।

अहरराययेन सिवता कवचाय हुम्। अरथेन देवो याति नेत्राभ्यां वौषट्। अभुवनामि पश्यन् ग्रस्त्राय फट्। अभूर्भुव: स्वरोमिति दिग्बन्ध:।

ध्यानम् कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं,। रक्तं रक्तविभूषगाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्।।

सप्ताश्चं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिराकरं सेवामहे भास्करम्॥ '' ऊघृिंगाः सूर्यग्रादित्यः'' इस मूल मंत्र का ग्राठ बार जप करें। ऊलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ऊहं ग्राकाशत्मने पुष्पं कल्पयामि। ऊयं वाय्वात्मने

धूपं कल्पयामि । अरं ग्रग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि । अवं ग्रबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि । अपं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि । प्रार्थना— दिवाकरं दीप्तसहस्त्ररिष्मं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिं। ग्रंशु भानुं सूर्यमाद्यं ग्रहागाां रविंसदा शरगामहं प्रपद्ये॥

(नवग्रह पूजाविधान-सूर्य पूजा प्रकरगाम्)

पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भ समद्युतिः। सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च द्विभुजः 'स्यात् सदा रविः॥ (स्मृति संग्रह)

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिं। ध्वांतारिं सर्वपापद्गं प्रगतोस्मि दिवाकरम्॥

अन्मादित्याय नमः। अन्मिधिदेवता प्रत्यिधदेवता सहित म्रादित्य पूजां समर्पयामि।

चन्द्र देवता स्रावाहन — स्राग्नेय दले चतुरस्रपीठस्य तराडुलधान्योपरि चन्द्र प्रतिमायां चन्द्र देवता स्रावाहनं कुर्यात्। पं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य।

ग्राप्यायस्व गोतमः सोमो गायत्री सोमावाहने विनियोगः।

308

ॐ स्राप्यांयस्व समेंतुते विश्वतंः सोम्वृष्ययं। भावाजंस्य संगुथे॥ (सम्बेद १.६१.१६)

ॐभूः चन्द्राग्रहमावाहयामि। ॐभुवः चन्द्राग्रहमावाहयामि। ॐस्वः चन्द्रग्रहमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः चन्द्र ग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। भगवान् सोम द्विजाधिपते सुधामयशरीर त्रत्रिगोत्र यामुनदेशेश्वर गोक्षीरधवलांगकांते द्विभुजगदावरदानांकितकर शुक्लांबर माल्यानुलेपनसर्वाग मुक्तौमौकिकाभरगा रमगीय समस्तलोकाप्यायनक देवतास्वाद्यमूर्ते नमस्ते सन्नद्धधवलध्वज पताकोपशोभितेन दशश्वेताश्वरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वन्नागच्छाद्भिरुमया च सहपद्माग्नेय दल मध्ये स्फाटिक प्रतिमां प्रत्यङ्मुखीं चतुरस्रपीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि। चन्द्र के त्रागे दाहिने त्रोर ग्रपः का त्रावाहन करें। ग्रप्सुम इत्यस्यांबरीषः सिंधुद्वीप स्रापो गायत्री।

अ सुप्समोसोमों सबवीदुंत विश्वांनि भेष्जा। स्रिग्रं चं विश्वशंभुवं॥ (स्रवेद १.२३.१०)

अभूः सोमाधिदेवता ग्रपः ग्रावाहयामि । अभुवः सोमाधिदेवता ग्रपः ग्रावाहयामि । अस्वः सोमाधिदेवता ग्रपः ग्रावाहयामि । अभूर्भुवः स्वः सोमाधिदेवता ग्रपः ग्रावाहयामि । स्थापयामि । पूजयामि । स्त्रीरूपधारिग्गीः श्वेतवर्गामकरवाहनाः पाशकलश धरिग्गीर्कुक्ताभरगा भूषिताः सोमाधिदेवता ग्रपः ग्रवाहयामि । चन्द्र देवता के ग्रागे बायें ग्रोर गौरी का ग्रावाहन करें । गौरीर्मिमाय दीर्घतमाउमाजगती गौरी ग्रावाहने

ॐ गौरीर्मिमाय सल्लिलान् तक्ष्त्येकंपदीद्विपदी सा चतुंष्पदी। ऋष्टापंदीनवंपदी बभूवुषीं सहस्रांक्षरापर्मे व्योमन्॥ विनियोग:।

(मृग्वेद १.१६४.४१)

ऊभूः सोमप्रत्यिधदेवतां गौरीं ग्रावाहयामि। ऊभुवः सोमप्रत्यिधदेवतां गौरीं ग्रावाहयामि। ऊस्वः सोमप्रत्यिधदेवतां गौरीं ग्रावाहयामि। अभू र्मृवः स्वः CCO. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

(300

सोमप्रत्यधिदेवतां गौरीं ग्रावाहयामि। स्थापयामि। पूजायामि। ग्रक्षसूत्र कमल दर्पण कमगडलुधारिगीं त्रिदशपूजितां सोमप्रत्यिध देवतां गौरीं ग्रावाहयामि। नव शक्ति पूजा

. अनमो भगवते सकलगुर्शात्म शक्तियुक्ताय अनंत योग पीठात्मे नमः। सुवर्श पीठ कल्पयामि। स्वत्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य कुमुदाधिप अरगयामिव हव्याशं

बिम्बेस्मिन् सित्रिधिं कुरु॥ उन्मां हीं क्रों यर लवशष सहों संहं स: चन्द्र प्राणा इह प्राणा:। उन्मां हीं क्रों यर लवशष सहों संहं स: चन्द्र जीव इह स्थित:। उन्मां हीं क्रों यर लवशष सहों संहं स: चन्द्रस्य सर्वेन्द्रियाणि वा्ङ्गमन: चक्षु: श्रोत्रध्राणप्राणा: इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ ऋसुंनीते पुनंरसमासु चक्षुः पुनंः प्रा्गामिह नोंधेहि भोगं।

ज्योक्पंश्येम् सूर्यंमुच्चरंन्तमनुंमते मृळयांनः स्वस्ति॥ ॐ पुनंनों ऋसुं पृथ्विवी दंदातु पुनुद्योर्देवी पुनंर्न्तरिक्षम्।

पुर्नर्नुः सोमंस्तुन्वं ददातु पुर्नः पूषा पृथ्यां ३ उंया स्वस्तः॥ (म्रावेद १०.४६.६-७)

सशक्ति सांगसायुधसवाहन सपिरवार श्री चन्द्र भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ आवाहियष्ये। आवाहितो भव संस्थापितो भव। सिन्निहितो भव। सिन्निहितो भव। सिन्निहितो भव। सिन्निहितो भव। सिन्निहितो भव। सिन्निहितो भव। अपन्ति। अपनिहितो भव। अपनिहितो भव। सिन्निहितो भव। सिन्निहितो भव। अपनिहितो भव। सिन्निहितो सि

गौतम ऋषिः सोमो देवता गायत्री छन्दः। अग्राप्यायस्व हृदयाय नमः। असमेतु ते शिरसे स्वाहा। अविश्वतः शिखायै वषट्। असोमवृष्णियं कवचाय हुम्।

असंगथे ग्रस्त्राय फट्। अभूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानं - स्रात्रेयं यमुनाप्रभुं ग्रहगरास्याग्नेय भागस्थितं। श्वेतं श्वेतसुगंधमाल्यवसनं श्वेतांबुजोद्यत् करं। श्वेतच्छत्रविभूषर्गं ध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरे: प्रदक्षिराकरं सेवामहे शीतलम्।

(नवग्रह पूजाविधान-चन्द्रपूजा प्रकरगाम्)

अचं च्रदाय नमः ''इति मूल मंत्र का ग्राठ बार जप करें। अलं पृथिप्यात्मने गंध कल्पयामि। अहं ग्राकाशत्मने पुष्पं कल्पयामि। अयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि । अरं ग्रग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि । अवं ग्रबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि । अपं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि ।

प्रार्थना— यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यंदेवताः पितरः संपिबन्ति। तं वै वरेग्यं सुरसंघवंद्यं सोमं सदा शरगामहं प्रपद्ये।

श्वेतः श्वेताम्बरधरो दशश्वः श्वेतभूषराः। गदापारिंद्विबाहुश्च स्मर्तव्यो वरदः शशी॥

श्वेतं श्वेतांबरधरं दशाश्वं श्वेतभूषराम्। द्विभंजं साभ्यगद मात्रेयं सामृतं विभुम्॥

दिव्यशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्श्ववसंभवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शंभोर्मुकुटभूषराम्॥

ॐ सोमाय नमः। ऋधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित चन्द्र पूजां समर्पयामि। (नवग्रह पूजाविधान-चन्द्रपूजा प्रकरणम्)

ऋंगारक देवता स्नावाहन—दक्षिगादले त्रिकोगापीठोपरि स्नाढक राशौ रक्त चन्दन प्रतिमायां संगारकावाहनं कुर्यात् अपं पद्माय नमः। पीठं

संपूज्य। ऋग्निर्मूर्धाविरूपोंगारको गायत्री स्रंगारकावाहने विनियोगः।

ॐ ऋग्निर्मूर्धाद्विः क्कुत्पितः पृथिव्या ऋयं। ऋपां रेतांसि जिन्वति। (ऋग्वेद ५.४४.१६)

कभूः ग्रंगारक ग्रहमावाहयामि। कभुवः ग्रंगारक ग्रहमावाहयामि। कस्वः ग्रंगारक ग्रहमावाहयामि। कभूर्भुवः स्वः ग्रंगारकग्रहमावाहयामि। स्थापयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur, MP Collection

भगवत्रंगारक ग्रग्न्याकृते भारद्वाजगोत्र ग्रवंति देशेश्वर ज्वालापुंजोपमांगद्युते चतुर्भुज शक्तिशूलगदाङ्गधारिन् रंक्तांबर माल्यानुलेजोपमांगद्युते चतुर्भुज शक्तिशूलगदाखङ्गधरिन् रंक्तांबर माल्यानुलेपनप्रवालभूषिताभरण सर्वागदुर्धरालोकदीप्तेनमस्ते सन्नद्भरक्त घ्वज पताकोपशोभितेन रक्तमेषरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वन्नगच्छ भूमिस्कंदाभ्यां सहपद्म दक्षिणदलमध्ये रक्तचंदन प्रतिमां दक्षिणामुखीं त्रिकोणपीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वां म्रावाहयामि । म्रंगारक के म्रागे दाहिने ग्रोर भूमि का ग्रावाहन करें। स्योनापृथिवीत्यस्यमेघातिथिर्भूमिर्गायत्री भूम्यावाहने विनियोगः।

ॐ स्योना पृंथिविभवानृक्षुरा निवेशंनी। यच्छांनुः शर्मस्प्रर्थः। (ऋग्वेद १.२२.१४)

अभूरंगारकाधिदेवतांभूमिमावाहामि। अभुवोंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि। अस्वरंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि। अभूर्भुवः स्वरंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि । स्थापयामि । पूजयामि । शुक्लवर्गां दिव्याभरगाभूषितां चतुर्भुजां सौम्य वपुषं चगडांशुसदृशां बरां रत्नात्र सस्यपात्रौषधिपात्रपऋोपेत करां चतुर्दिग्रागपृष्टगतां ग्रंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि । ग्रंगारक के ग्रागे बायें ग्रोर स्कन्द का ग्रावाहन करें । कुमारश्चि दित्यस्य गृत्समदः स्कंदिस्त्रिष्टुप् स्कंदावाहने विनियोग:।

ॐ कुमार श्चित्पितरुंवं देमानं प्रतिनानामरुद्रोपयंतै। भूरैर्दातारुं सत्पंतिं गृशीषेस्तुतस्त्वं भेषुजारांस्यस्मे॥ (ऋखेद २.३३.१२) अभूरंगारकप्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयामि । अभुवोंऽगारक प्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयमि । अस्वरंगारक प्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयामि । भू भुर्वः स्वरंगारक

प्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयामि । स्थापयामि । पूजयामि । षष्मुखं शिखगडक विभूषगां रक्तांबरधरं मयूरयान कुक्कुट घंटा पताका शक्त्युपेतं चक्षुर्मुजं ग्रंगारक

प्रत्यधिदेवं स्कंद मावाहयामि।

नवशक्ति पूजा— अरोहितायै नमः। अञ्चालिन्यै नमः। अरौद्रयै नमः। अतीक्ष्णायै नमः। असूक्ष्मायै नमः। अजयायै नमः। अक्षुधायै नमः।

280

असारायै नमः। अनिर्मलायै नमः। अनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय ग्रनन्ताय योग पीठात्मने नमः। सुवर्ण पीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शद्धं त्वामद्य भूमिनन्दन। ग्ररायामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सिन्निधिं कुरु॥ ॐग्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: ग्रंगारक प्राणा इह प्राणाः। ॐग्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: ग्रंगारक जीव इह स्थित:। अग्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: ग्रंगारकस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मन: चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणा: इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ ग्रमुंनीते पुनंर्स्मासु चक्षुः पुनंः प्रा्गामिह नोधिहि भेगं। ज्योक पंश्येम् सूर्यमुच्यरंन्तमनुंमते मृळयांनः स्वस्ति। ॐ पुनंनों ग्रसुं पृथिवी दंदातु पुन्द्यौर्देवी पुनंर्न्तिसम्। पुनंर्नः सोमंस्त्रन्वं ददातु पुनंः पूषा पृथ्यां ३ या स्वस्तिः॥

(सम्बंद १०.५१.६-७)

सशक्ति सांग सयुध सवाहन सपरिवार श्री ऋंगारक भगवन् ऋत्रैवागच्छागच्छा। ऋवाहियष्ये। ऋवाितो भव। संस्थापितो भव। ऋमृतीकृतो भव। सिन्नरुद्धो भव। ग्रवगुरिठतो भव। ग्रमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। अभूमिपुत्रार्यं विद्यहें भारद्वाजार्यं धीमहि। तन्नं: कुजः प्रचोदयात्। इसको तीन बार जपते हुए ऋर्घ्य देवें। विरूप ऋषि ऋंगारको देवता गायत्री छन्द:। अश्राग्निर्मूर्धा हृदयाय नम:। अदिव: ककुत् शिरसे स्वाहा। अपति पृथिव्या शिखायै वषट्। अयम् कवचाय हुम्। अग्नपां रेतांसि नेत्रत्रयाय वौषट्। अजिन्वति ग्रस्त्राय फट्। अभूर्भुवः स्वरोमिति दिम्बंधः। ध्यानम् विंध्येशं ग्रहदक्षिरागप्रतिमुखं रक्तं त्रिकोराकृतिं। दोभिः स्वीकृत शक्तिशूल सुगदं चारूढमेषाधिपं॥

भारद्वाजमुपेत रक्तवसनं छत्रश्रियाशोभितं। मैरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिराकरं सेवामहे तं कुजम्॥

(नवग्रह पूजाविधान-भ्रंगारक पूजा प्रकरराम्)

ॐ ग्रं ग्रगारकाय नमः। इस मूल मंत्र का ग्राठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐ हं ग्राकाशात्मने पृष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur, MP Collection.

कल्पयामि । अरं ग्रग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि । अवं ग्रबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि । अपं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि । प्रार्थना—महेश्वरस्यानन स्वेदिबन्दोर्भूमौ जातं रक्तमाल्ल्याम्बराड्यं । सुरिशमनं लोहिताङ्ग कुमारं ग्रंगारकं सदा शरणमहं प्रपद्ये ॥ रक्त माल्यांबरधरः शक्तिशूल गदाधर:। चतर्भुजो मेषगमो भारद्वाजो धरासुत:॥ रक्तस्रगंबरालेपं गदाशक्त्यसिशूलिनं। चतुर्भजं मेषगमं भारद्वाजं धरासुतम्॥ धरग्रीगर्भसंभूतं विद्युत्काञ्चनसन्निभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रगामाम्यहम्॥ अग्नंगारकाय नमः। ग्रिधिदेवता प्रत्यिधदेवता सहित ग्रंगारक पूजां समर्पयामि। बुध देवता स्रावाहनम्—ईशान्यदले बागाकार पीठे मुद्गधान्ये बुध प्रतिमायां बुधावाहनं कुर्यात्। ॐपं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य। उह्बध्यध्वं

ॐ उद्बंध्यध्वंसमंनसः सखायः सम्ग्रिमिंध्वं बृहवः सनींळाः। दुधिक्राम्ग्रिमुषसंञ्चदेवीमिन्द्रांवृतो वंसे निह्वंयेवः॥ बुधो बुधस्त्रिष्टुप् बुधग्रहावाहने विनियोगः।

(भग्वेद १०.१०१.१)

ऊभू: बुध ग्रहमावाहयामि। अभुव: बुध ग्रहमावाहयामि। अस्व: बुध ग्रहमावाहयामि। अभूर्भुव: स्व: बुध ग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। भगवन्सौम्यसौम्याकृते सर्वज्ञानमय म्रत्रिगोत्र मगधदेशेश्वर कुंकुमवर्गोपमांगद्युते चतुर्भुज खङ्कखेटकगदावरदानांकित पीतांबरमाल्यानुलेपन मरकताभरगालंकृत सर्वाङ्गविबुधपते नमस्ते सन्नद्ध पीतध्वजपताकोपशोभितेन चतुः सिहस्थवाहनेन मेरुं प्रदक्षिगी कुर्वन्नागच्छ विष्णुपुरुषाभ्यां सहैशान दलमध्ये सुवर्गप्रतिमां उदङ्मुखीं बागाकार पीठेधितिष्ठ पूजार्थ त्वां म्रावाहयामि । बुध के म्रागे दाहिने म्रोर म्रधिदेवता विष्णु का म्रावाहन करें । इदं विष्णुर्मेधातिथि विष्णुर्गायत्री विष्यवावाहने विनियोग:।

ॐ इदं विष्णुर्विचंक्रमेत्रेधानिदंधेपुदं। समूहळमस्य पांसुरे॥ (म्रावेद १.२२.१७)

ङभू: बुध ग्रिधदेवतां विष्णुं ग्रावाहयामि। ङभुवः बुध ग्रिधदेवतां विष्णुं ग्रावाहयामि। ङस्वः बुध ग्रिधदेवतां विष्णुं ग्रावाहयामि। ङभूवः स्वः बुध

२१२

ऋधिदेवतां विष्णुं ऋवाहयामि । स्थापयामि पूजयामि । कौमोदकी पद्मशंख चक्रोपेतं चतुर्भुजं सौम्याधिदेवं विष्णुमावाहयामि । बुध के ऋगे बायें ऋर पुरुष का म्रावाहन करें। सहस्रशीर्षा नारायगाः पुरुषोनुष्टुप् पुरुषावाहने विनियोगः।

ॐ सहस्रं शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। सभूमिं विश्वतोवृत्वात्यंतिष्ठद्दशांगुलम् ॥ (मण्वेद १०.६०.१)

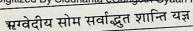
अभूर्बुधप्रत्यधिदेवं पुरुषमावाहयामि । अभुवर्बुधप्रत्यधिदेवं पुरुषमावाहयामि । अभूर्भुवः स्वर्बुधप्रत्यधिदेवं पुरुष्मावाहयामि । स्थापयामि । पूजयामि । कौमोद कीपग्रशंखचक्रोपेतं चतुर्भुजं सौम्यप्रत्यधि देवं पुरुषमावाहयामि।

नवशक्ति पूजा - अचंद्रिकायै नमः। अकौमुद्यै नमः। अज्योत्स्रयै नमः। असंध्यायै नमः। अविद्यायै नमः। असरस्वत्यै नमः। अमेधायै नमः। अप्रज्ञायै नमः। अप्रभायै नमः। अनमो भगवते सकलगुरात्मशक्तियुक्ताय ग्रनंताययोगपीठात्मने नमः। सुवर्गपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्येन्दुसुत्तोत्तम। ग्ररख्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सिन्निधिं कुरु॥ ॐग्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: बुध प्राखाा इह प्राखा:। ॐग्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बुध जीव इह स्थितः। अन्यां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बुधस्य सर्वेन्द्रियाणि वाड्मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राणप्राणाः

ॐ ऋसुंनीते पुरंर्स्मासु चक्षुः पुनंः प्रा्रामिह नों धेहि भोगं। ज्योक्पंश्येम् सूर्यंमुच्चरंन्तमनुंमते मृळयांनः स्वस्ति॥ ॐ पुनंनों ऋसुं पृथिवी दंदातु पुन्द्यौर्देवी पुनंर्न्तिक्षम्। पुनंर्नः सोमंस्त्न्वं ददातु पुनंः पूषा पृथ्यांश्या स्वस्तिः॥ इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

स शक्ति सांग सायुध सवाहनसपरिवार श्री बुध भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ। स्रावाहियष्ये। स्रावाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव । ऋवगुरिठतो भव । ऋमृतीकृतो भव । व्याप्तो भव । सुप्रसन्नो भव । ॐतारासुतायं विद्यहें । सोमपुत्रायं धीमहि । तन्नों बुध: प्रचोदयात् । इसका तीन बार जप

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur, MP Collection.



अउद्बुध्यध्वं हृदयाय नमः। असमनसः सखयः शिरसे स्वाहा। असमग्निमिध्वं बहवः सनीळाः शिखयै वषट्। अदिधक्रामाग्निं कवचाय हुम्। अउषसञ्च करते हुए ग्रर्ध्य देवें। सौम्य ग्रृषि: बुधो देवता त्रिष्टुप छन्द:।

देवीं नेत्राभ्यां वौषट्। अइन्द्रावतो वसे निह्नयेव: ऋस्त्राय फट्। अभूर्भुव: स्वरोमिति दिग्बन्ध:।

ध्यानम् - त्रात्रेयं मगधाधिपं ग्रहगरास्येशानभागस्थितं बारााकारमुदड्मुखं कर लसत् तोराीर बाराासनम्। पीतस्त्रग्वसन द्वयध्वजरथ छत्रश्रिया शोभितं मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिगाकरं सेवामहे तं बुधम्॥

उन्बुं बुधाय नमः। इस मन्त्र का ग्राठ बार जप करें। उन्लं पृथिव्यात्मना गंधं कल्पयामि। उन्त्रं ग्राकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। उन्यं वाय्वात्मना धूपं

कल्पयामि । अरं ग्रग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि । अवं ग्रबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि । अपं परमात्मना पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि । प्रार्थना— विशुद्धबुद्धिं श्रुतिकालबोधं सत्यावाचं सोमवंशप्रदीपम्। सुवर्चसं छन्दसो विश्वरूपं बुधं सदा शरगामहं प्रपद्ये॥

पीतमाल्यांबरधरः कर्शिकार समुद्यतिः। खङ्गचर्म गदापाशिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥

पीतमाल्यांबरधरं कर्शिकार समद्युतिम्। खड्गचर्मगदापाशिमात्रेयं सिंहगं बुधम्॥

प्रियंगुकलिकाभासं रूपेगााप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्युगोपेतं नमानि शशिनन्दनम्।। (नवग्रह पूजाविधान-बुध पूजा प्रकरणम्)

अबुधाय नमः। ऋधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बुध पूजां समर्पयामि।

बृहस्पति देवता स्रावाहन — उत्तरदले दीर्घ चतुरस्रपीठे चराकराशिस्थ बृहस्पति प्रतिमायां बृहस्पत्यावाहनं कुर्यात्। ॐपं पद्माय नमः। पीठं

संपूज्य। बृहस्पते ग्रतीत्यस्य गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिटुप् बृहस्पत्यावाहने विनियोगः। ॐ बृहंस्पते ऋतियद्यों ऋहींद्द्युमद्विभातिक्रतुंम्जनेषु। यद्दीदय्च्छवंसऋतप्रजातृतद्स्मा सुद्रविंगां धेहि चित्रं॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur, MP Collection.



ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

द्वितीय दिन

(भग्वेद २.२३.१४)

ॐभूः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि । ॐभुवः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि । ॐस्वः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि । ॐभूर्भुवः स्वः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि । स्थापयामि । पूजयामि ।

भगवन् बृहस्पे समस्तदेवताचार्य ग्रांगिरस गोत्र सिंधुदेशेश्वर तप्तसुवर्णसदृशांगदीप्ते चतुर्भुज दग्रड कमाग्रडल्वक्षसूत्र वरदानांकित पीतांबर माल्यानुलेपन पुष्परागमयाभरगरमग्रीय सर्वविद्याधिपते नमस्ते सन्द्धपीत ध्वजपताकोपशोभितेन पीताश्वरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिग्रीकुर्वन्नागच्छेन्द्र ब्रह्मध्यां सह पद्मोत्तर दलमध्ये सुवर्गप्रतिमामुदग्रमुखीं दीर्घ चतुरस्र पीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि। बृहस्पित के ग्रागे दाहिने ग्रोर इन्द्र का ग्रावाहन करें। इन्द्र श्रेष्ठानीत्यस् यगृत्समदइन्द्रस्विष्टुप् इंद्रावाहने विनियोगः।

ॐ इन्द्र श्रेष्ठांनिद्रविंगानिधेहि चित्तिं दक्षंस्यसुभगत्वम्समे। पोषंरयीगामरिष्टिं तुनूनां स्वादाानं वाचः सुदिन्त्वमह्नांम्॥

(भृग्वेद २.२१.६)

ॐभूः बृहस्पति ऋधिदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐभुवः बृहस्पति ऋधिदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐस्वः बृहस्पति ऋधिदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः बृहस्पति ऋधिदेवतां इन्द्रं ऋवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। चतुर्दन्तं गजारूढं बज्रांकुशधरं शचीपतिं नानाभ्रगाभूषितं बृहस्पत्यिध देवं इन्दं ऋवाहयामि। बृहस्पति के ऋगो बायें ऋोर ब्रह्मा का आवाहन करें। ब्रह्मणातइत्यस्य विश्वामित्रो ब्रह्मात्रिष्टुप् ब्रह्मावाहने विनियोगः।

ॐ ब्रह्मंशाते ब्रह्मयुजांयुनिन्म् हरीसरवांयासध्मादं ऋाशू। स्थिरंरर्थं सुखिमंन्द्राधितिष्ठंन्प्रजानिन्वद्वाँउपंयाहिसोमं।। (ऋग्वेद ३.३५.४)

नव शक्ति पूजा — अधृत्यै नमः। अकांत्यै नमः। अदयायै नमः। अमेधयै नमः। अप्रज्ञायै नमः। अविद्यायै नमः। अपशस्विन्यै नमः। अस्थरायै

नमः। असुप्रभायै नमः। अनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय ग्रनंताय योग पीठात्मने नमः। सुवर्ण पीठं कल्पयामि।

स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य सुरपूजित। ऋरगयामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरू॥

अग्नां ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: बृहस्पित प्रागा इह प्रागा:। अग्नां ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: बृहस्पित जीव इह स्थित:। अग्नां ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: बृहस्पित: सर्वेन्द्रियागि वाडमन: चक्षु: श्रोत्रध्राग प्रागा: इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ त्रसुंनीते पुनंरस्मासु चक्षुः पुनंः प्रारामिह नोंधेहि भोगं।

ज्योक्पंश्येम् सूर्यमुच्चरंन्तुमनुंमते मृळयांनः स्वस्ति। (मावेद १०.५६.६)

अ पुनंनों ऋसुं पृथिवी दंदातु पुनुद्यौर्देवी पुंनर्न्तरिक्षम्।।

पुनेर्नुः सोमंस्मुन्वं ददातु पुनंः पूषा पुथ्याां ३ या स्वस्तः॥ (मण्वेद १०.४६.७)

सशक्ति साङ्ग सायुधसवाहन सपिरवार श्री बृहस्पित भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ। आवाहियष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सित्रिहितो भव। सित्रिरुद्धो भव। अवगुिरिठतो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। अदेवाचार्याय विद्यहे। वाचस्पत्याय धीमिह। तन्नो गुरु: प्रचोदयात्। इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें। अबृहस्पते अतियत् हृदयाय नमः। अअर्यो अर्हाच्छिरसे स्वाहा। अद्युमिद्वभाति क्रतुमज्जनेषु शिखायै वषट्। अयदियच्छवस सृत कवचाय हुम्। अप्रजात तदस्मासु नेत्राभ्यां वौषट्। अद्रविशं धेहि चित्रं अस्त्राय फट्। अभूर्भुवः सुवरोम् इति दिग्बन्धः।

ध्यानम्—सिंधूनामिधपं ग्रहोत्तरगतं दीर्घं चतुष्कोर्गगम्, प्राप्तं मगडलमङ्गिरान्वयभुवं दगडं दधानं करे। सौवर्गा ध्वजवस्त्र भूषगारथछत्र श्रिया शोभितं, मेरोर्दिव्यगिरे: प्रदक्षिगाकरं सेवामहे वाक्पतिम्॥ अबृं बृहस्पतये नमः। इस मूल मंत्र का ग्राठ बार जप करें। अलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। अहं

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ

द्वितीय दिन

त्राकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। अयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। अरं ग्रग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। अवं ग्रबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। अपं परमात्मने पञ्च ोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— बुध्यासमो यस्य न कश्चिदन्यो मितं देवा उपजीविन्त यस्य। प्रजापतेरात्मजं धर्मिनित्यं गुरुं सदा शरगामहं प्रपद्ये॥ देवदैत्य गुरुश्चैव पीतः साक्षात् चतुर्भुजः। दर्गडी च वरदश्चैव साक्षसूत्रकमगडलुः॥ स्त्राङ्गिरसं देवगुरुं पीतस्त्रगगन्धवस्त्रकम्। दिग्रिडनं वरदं पीतं साक्षसूत्रकमगडलुम्॥ देवानां च ऋषीराां च गुरुं काञ्चनसिन्नभम्। वन्ध्यं च त्रिषु लोकेषु प्रगामािम बृहस्पतिम्॥ (नवग्रह पूजा विधान-बृहस्पति पूजा प्रकरगाम्)

ञ्बृहस्पतये नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बृहस्पति पूजां समर्पयामि।

शुक्र देवता अविहिन — पूर्वदले पञ्चकोरा पीठस्थ निष्पावधान्यस्थ शुक्र प्रतिमायां शुक्रावाहनं कुर्यात्। ॐपं. पद्माय नमः। पीठं संपूज्य। शुक्रंत इत्यस्य भरद्वाजः शुक्रस्त्रिष्टुप् शुक्रावाहने विनियोगः।

ॐ शुक्रंतें ऋन्यद्यंज्तं तें ऋन्यद्विषुंरूपे ऋहंनीद्यौरिवासि। विश्वाहिमाया ऋवंसिस्वधावो भ्द्रातेंपूषन्नि हरातिरंस्तु॥ (ऋग्वेद ६.४=.१)

उभूः शुक्रग्रहमावाहयामि। अभुवः शुक्रग्रहमावाहयामि। अस्वः शुक्रग्रहमावाहयामि। अभूर्भुवः स्वः शुक्रग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भगवन् भार्गव समस्य दैत्यगुरो भार्गव गोत्र भोजकट देशेश्वर रजतोज्ज्वलाङ्गकांते चतुर्भुज दर्गड कमगडल्वक्ष सूत्र वरदानांकित शुक्लांबरमाल्यानुलेपन वज्राभरण भूषित सर्वाङ्गसमस्त नीतिशास्त्र निपुणमते नमस्ते सन्नद्धशुक्लध्वज पताकोपशोभितेन शुक्लाश्व सहितेन रथेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छेन्द्राणींद्राभ्य ं सह पूर्वदलमध्ये रजतप्रतिमां प्राङ्मुखीं पञ्चकोणपीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वां ग्रावाहयामि। कहकर शुक्र का ग्रावाहन करें। शुक्र के ग्रागे दाहिने ग्रोर इंद्राणी



का म्रावाहन करें। इंद्रागीमास्वित्यस्य वृषाकिपरिंद्रागी पंक्तिः इंद्राग्यावाहने विनियोगः।

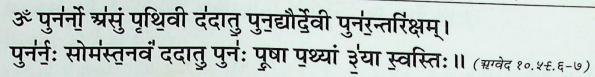
ॐ इंद्राशीमासुनारिषुसुभगांम्हमंश्रवं। नह्यंस्या ऋप्रंचन ज्रसामरंतेपतिर्विश्वंस्मादिंद्र उत्तरः॥ (ऋखेद १०. ५६.११)

ॐभूः शुक्राधिदेवतां इंद्राणीमावाहयामि। ॐभुवः शुक्राधिदेवतां इंद्राणीमावाहयामि। ॐस्वः शुक्रिधदेवतां इंद्राणीमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः शुक्राधिदेवतां इंद्राणीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। ॐसंतानमंजरीवरदानधर द्विभुजांशुक्राधिदेवतां इंद्राणीं ग्रावाहयामि। शुक्र के ग्रागे बायें ग्रोर इन्द्र का ग्रावाहन करें। इंद्रमिद्देवतातय इत्यस्य मेधातिथिरिंद्रोबृहती इंद्रावाहने विनियोगः।

ॐ इंद्रमिद्देवतातय इंद्रं प्रयत्यंध्वरे । इंद्रंसमीकेवृनिनोहवामह इंद्रंधनंस्य सातये । (ऋग्वेद ६.३.४)

ॐभूः शुक्र प्रत्यिधदेवतां इन्द्रं म्रावाहयामि। ॐभुवः शुक्र प्रत्यिधदेवतां इन्द्रं म्रावाहयामि। ॐस्वः शुक्र प्रत्यिधदेवतां इन्द्रं म्रावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः शुक्र प्रत्यिधदेवतां इन्द्रं म्रावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। चतुर्दन्तगजारूढं वज्रांकुशधरं शचीपतिं नानाभरणभूषितं भागंव प्रत्यिधदेवं इन्द्रं म्रावाहयामि। नव शक्ति पूजा — ॐशान्तायै नमः। ॐनन्दायै नमः। ॐस्मृत्यै नमः। ॐकात्यै नमः। ॐलक्ष्म्यै नमः। ॐकलायै नमः। ॐकलायै नमः। ॐमलायै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय म्रनंताययोगपीठात्मने नमः। सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्यासुरपूजित। म्ररण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सिन्निधं कुरु॥ ॐम्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शुक्र प्राणाः। ॐम्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शुक्र जीव इह स्थितः। ॐम्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शुक्रस्य सवेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रध्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ त्रसुंनीते पुनंरस्मासु चक्षुः पुनंः प्रा्गामिह नो धेहि भोगं। ज्योक्पंश्येम् सूर्यंमुच्चरंन्तमनुंमते मृळयानः स्वस्ति।



सशक्ति साङ्ग सायुध सवाहन सपरिवार श्री शुक्र भगवान् स्रत्रैवागच्छागच्छ। स्रावाहियध्ये। स्रावाहितो भव। संस्थापितो भव। सित्रिह्द्वो भव। स्रत्रिह्द्वो भव। स्रवगुरिउतो भव। स्रमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षस्व। ॐदैत्याचार्याय विदाहे विद्यारूपाय धीमिह। तन्न: शुक्र: प्रचोदयात्॥ इसका तीन बार जप कर स्रघ्यं देवें। भारद्वाज सृषि: शुक्रो देवता त्रिष्टुप् छन्दः। ॐशुक्रं ते स्रन्यत् हृदयाय नमः। ॐयजतं ते स्रन्यत् शिरसे स्वाहा। ॐविषुरूपे स्रहनीद्यौरिवासि शिखायै वषट्। ॐविश्वाहि माया कवचाय हुम्। ॐस्रविस स्वधावो भद्राते नेत्राभ्यां वौषट्। ॐपूषित्रह रातिरस्तु स्रस्त्राय फट्। ॐभूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानम्—भोजेशं भृगुगोत्रजं ग्रहगराप्राचीन भागस्थितं, पाञ्च श्रोज्वलमराडलं करयुगे दराडं च सत्कुंडिकाम्।। बिभ्रारां सितवस्त्रभूषरारथच्छत्रश्रिया शोभितं, मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिराकरं सेवामहे भागवम्।।

(नवग्रह पूजा विधान-शुक्र पूजा प्रकरराम्)

ॐ शुं शुक्राय नमः। इस मूलमंत्र का ग्राठ बार जप करें। ॐलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐहं ग्राकाशात्मने पृष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं ग्रग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं ग्रबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि।
प्रार्थना—वर्षप्रदं चिंतितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं विनयोपपन्नम्। तं भार्गवं योग विशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥ शुक्रं शुक्रतनुं श्वेत वस्त्राढ्यं दैत्यमंत्रिणम्। भार्गवं दण्डवरदं कमण्डल्वक्षसूत्रिणम्॥ हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥ ॐशुक्राय नमः ग्रिधदेवता प्रत्यिधदेवता सहित शुक्रपूजां समर्पयामि।



शनैश्चर देवता आवाहनं — मगडलस्य पश्चिम दले धनुराकारपीठे तिलधान्यस्थ शनैश्चर प्रतिमायां शनैश्चरावाहनं कुर्यात्। शिमग्न रिरिबिठिः शनैश्चर उष्णिक् शनैश्चरावाहने विनियोगः। अपं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य।

शम्ग्रिर्ग्निभीः कर्च्छंनंस्तपतु सूर्यः। शंवातोवात्वरुपा ऋपुस्त्रिर्धः। (म्रावेद ८.१८.६)

ङभूः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि। ङभुवः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि। ङस्वः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि। ङभू र्भुवः स्वः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पुजयामि।

भगवन् शनैश्चर भास्कर तनय काश्यप गोत्र सौराष्ट्र देशेश्वर कज्जल समानाङ्ग कांते चतुर्भुज चाप-तूर्णीर-कृपाणाभ्यांकित नीलांबर माल्यानुलेपन नीलरत्न भूषणालंकृतसर्वांग समस्त भुवन भीषणामर्षमूर्ते नमस्ते सन्नद्ध नीलध्वजपताकोपशोभितेन नील गृधरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वन्नागच्छ प्रजापित यमाभ्यां सह पश्चिम दलामध्ये कालायस प्रतिमां प्रत्यङ्मुखीं चापाकर पीठेऽधितिष्ठ पूजार्थ त्वां ग्रावाहयामि। शनैश्चर के ग्रागे दाहिने ग्रोर प्रजापित का ग्रावाहन करें। प्रजापते हिरणयगर्भः प्रजापितिस्त्रिष्ठप् प्रजापत्यावाहने विनियोगः।

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानिपरिता बंभूव। यत्कांमास्ते जहुमस्तन्नों ऋस्तु व्यं स्यांम्पतंयो रयीगाम्॥ (ऋषेद १०.१२१.१०)

ङभूः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापितं ग्रावाहयामि। ङभुवः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापितं ग्रावाहयामि। ङस्वः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापितं ग्रावाहयामि। ङभू भुवः स्वः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापितं ग्रावाहयामि। अभू भुवः स्वः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापितं ग्रावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। यज्ञोपवीतिनं हंसस्थं एकवक्त्रं ग्रक्षमालास्रुव पुस्तक कमग्रडलु सिहतं चतुर्भजं शनैश्चराधिदेवं प्रजापितमावाहयामि। शनैश्चर के ग्रागे बायें ग्रोर यम का ग्रावाहन करें। यमाय सोमित्यस्य समोयमोनुष्टुप् यमावाहने विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमायं जुहुता ह्विः। यमंहं यूज्ञो गंच्छत्यग्निदूतो ऋरंकृतः॥ (ऋग्वेद १०.१४.१३)

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

द्वितीय दिन

ऊभूः शनैश्चर प्रत्यिधदेवतां यमं ग्रावाहयामि। अभुवः शनैश्चर प्रत्यिधदेवतां यमं ग्रावाहयामि। अस्वः शनैश्चर प्रत्यिधदेवतां यमं ग्रावाहयामि। अभू भुवः स्वः शनैश्चर प्रत्यिधदेवतां यमं ग्रावाहयमि। अभू भुवः स्वः शनैश्चर प्रत्यिधदेवतां यमं ग्रावाहयमि, स्थापयामि, पूजयामि। ईशत्पीनं दगडहस्तं रक्त सदृश पाशधरं कृष्णावर्गा महिषारूढं सर्वा भरग भूषितं शनैश्चर प्रत्यिधदेवतां यमं ग्रावाहयामि।

नव शक्तिपूजा — अभद्रायै नमः। अतंद्रायै नमः। अक्षुधायै नमः। अमृत्यवे नमः। अजरायै नमः। अमायायै नमः। अमनोमयै नमः। अकामुकायै नमः। अवरदायै नमः। अनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय ग्रंनंत योगपीठात्मने नमः। सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य रिवनन्दन। ग्ररणयामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सिन्निधिं कुरु॥

अमां हीं क्रों यर लवशष सहों संहं सः शनैश्चर प्राणा इह प्राणाः। अमां हीं क्रों यर लवशष सहों संहं सः शनैश्चर जीव इह स्थितः। अमां हीं क्रों यर लवशष सहो संहं सः शनैश्चरस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ म्रसुंनीते पुनंर्स्मासु चक्षुः पुनंः प्रा्गामिह नोंधेहि भोगं। ज्योक्पंश्येम सुर्यमुच्चरंन्तुमन्मते मूळयांनः स्वस्ति॥

ज्योक्पंश्येम् सूर्यमुच्चरंन्तुमनुंमते मृळयांनः स्वस्ति॥ ॐ पुनंनों ऋसुं पृथिवो दंदातु पुनुद्योर्देवो पुनंर्न्तरिक्षम्।

पुनेर्नुः सोमंस्तुन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां ३ या स्वस्तिः॥ (म्रावेद १०.४६.६-७)

स शक्ति साङ्ग सायुधसवाहन सपिरवार री शनैश्चर भगवन् स्रत्रैवागच्छागच्छ स्रावाहियष्ये। स्रावाहितो भव। संस्थापितो भव। सित्रिहितो भव। सित्रिरूद्धो भव। स्रवगुरिएठतो भव। स्रमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। असूर्यपुत्राय विद्यहे शनैश्चराय धीमिह। तन्नो मंद: प्रचोदयात्॥ इसका तीन बार जप करते हुए स्रघ्यं देवें। शिरिबिठि: ऋषि: शनैश्चरोदेवता उष्णिक् छन्दः। अशमिग्न रिग्निर्मिहदयाय नमः। अकरच्छिरसे स्वाहा। अशनस्तपतु शिखायै



वषट्। असूर्यः कवचाय हुम्। अशं वातो वात्वरपा नेत्राभ्यां वौषट्। अग्नपस्त्रिधः ग्रस्त्राय फट्। अभूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः। ध्यानम् — ग्रान्ध्रेशं ग्रंहपश्चिमं करलसत्तूगीर बागासनं, कोदराडाकृतिमराडलं घननिभं गृध्रासनं काश्यिपम् ॥ नीलच्छत्रविभूषरां ध्वजरथ: छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरे: प्रदक्षिण करं सेवामहे भानुजम्॥

अ शं शनैश्चराय नमः। इस मूल मन्त्र का ग्राठ बार जप करें। अलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। अहं ग्राकाशात्मने पृष्पं कल्पयामि। अयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि । ॐ रं ग्रग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि । ॐ वं ग्रबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि । ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि ।

प्रार्थना— इंद्रदीलद्युतिः शूली सरदो गृथ्रवाहनः। बाराबारा।सनधरः स्मर्तव्योऽर्कसुतः सदा।। इंद्रनीलनिभं मन्दं काश्यपिं चित्रभूषराम्। चापबाराधरं चर्मशूलिनं गृथ्रवाहनम्।। शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैभौगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं मंदं सदा शररामहं प्रपद्ये॥ नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तराड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥ (स्मृति सङ्गह)

उ शनैश्चराय नमः, ऋधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शनैश्चर पूजां समर्पयामि।

राहु देवता स्रावाहनम् — मगडलस्य नैर्ऋत्यदले शूर्पाकार मगडले माष धान्यस्थ राहुप्रतिमायां राहु स्रावाहनं कुर्यात्। पं पद्माय नमः पीठं संपूज्य। कयान इत्यस्य वामदेवो राहुर्गायत्री राहु स्नावाहने विनियोग:।

ॐ कयांनश्चित्र ग्राभुंवदूतीसदावृंघः सरवां। कया शचिष्ठयावृता। (भ्रावेद ४.३१.१)

ऊभूः राहुग्रहमावाहयामि। अभुवः राहुग्रहमावाहयामि। अस्वः राहुग्रहमावाहयामि। अभू भूवः स्वः राहुग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भगवान् राहोरिवसोम मर्दन सिंहिकानंदन पैठीनसगोत्र बर्बर देशेश्वर कालमेघद्युते व्याघ्रवदन चतुर्भुज खड्गचर्म शूल वरदानांकित कृष्णांबर माल्यानुलेपन



ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ

द्वितीय दिन

223

गोमेदकाभरण भूषित सर्वाङ्गशौर्यनिधे नमस्ते सन्नद्ध कृष्णध्वजपताकोप शोभितेन कृष्णसिंहरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन् ग्रागच्छ सर्पकालाभ्यां सह नैर्म्यतदलमध्ये सीसक प्रतिमां दक्षिणामुखीं शूर्पाकार पीठेधितिष्ठ पूजार्थ त्वां ग्रावाहयामि। राहु के ग्रागे दाहिने ग्रोर सर्वो का ग्रावाहन करें। ग्रायङ्गौः सार्पराज्ञीसपीगायत्री सर्पावाहने विनियोगः।

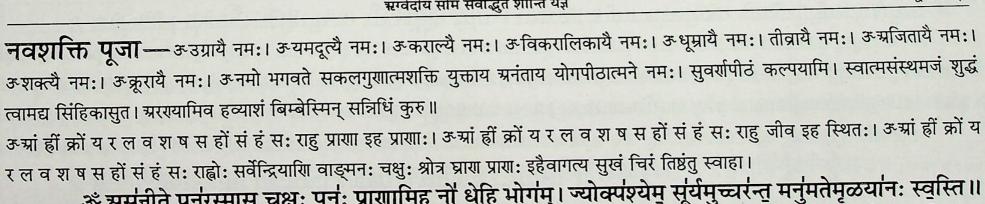
ॐ स्रायङ्गौः पृश्चरंक्रमी दसंदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वंः॥ (सप्वेद १०.१=६.१)

ॐभूः राहु ग्राधिदेवतां सर्पान् ग्रावाहयामि। ॐभुवः राहु ग्राधिदेवतां सर्पान् ग्रावाहयामि। ॐस्वः राहु ग्राधिदेवतां सर्पान् ग्रावाहयामि। ॐभू भुवः स्वः राहु ग्राधिदेवान् सर्पान् ग्रावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। अक्षसूत्र घटान् कुंडलाकार पुच्छयुक्तानेक भोगां स्त्रिभोगान्भीषणान् राह्वधिदेवताम् सर्पान् ग्रावाहयामि। राहु के ग्रागे बायें ग्रोर मृत्यु का ग्रावाहन करें। परमृत्योसंकुसुकः मृत्यु स्त्रिषुप् मृत्यु ग्रावाहने विनियोगः।

ॐ परंमृत्यो ऋनुपरेहिपंथांयस्तेस्वइतंरो देव्यानात्।

चक्षुंष्मते श्रृगवृतेते व्रवीमिमानंः प्रजांरीरिषोमोतवीरान्।। (मण्वेद १०.१ =.१)

ॐभूः राहु प्रत्यिधदेवतां मृत्युं ग्रावाहयामि। ॐभुवः राहु प्रत्यिधदेवतां मृत्युं ग्रावाहयामि। ॐस्वः राहु प्रत्यिधदेवतां मृत्युं ग्रावाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः राहुप्रत्यिधदेवतां मृत्युं ग्रावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। करालवदनं नीलाङ्गं भीषर्णं पाशदराडधरं सर्पवृश्चिक रोमार्णं राहु प्रत्यिधदेवतां मृत्युमावाहयामि।



ॐ ऋसुंनीते पुनंरस्मासु चक्षुः पुनंः प्रा्गामिह नों धेहि भोगंम्। ज्योक्पंश्येम् सूर्यमुच्चरंन्त् मनुंमतेमृळयांनः स्वस्ति॥ ॐ पुर्नर्नो ऋसुँ पृथिवी दंदातु पुन्द्यौर्देवी पुर्नर्न्तिक्षम्। पुर्नर्नः सोमंस्त्न्वं ददातु पुर्नः पूषा पृथ्यां ३ या स्वस्तिः॥

(मृग्वेद १०.४£.६-७)

स शक्ति साङ्ग सायुध सवाहन सपरिवार श्री राहु भगवान् ग्रत्रैवागच्छागच्छ ग्रावाहियष्ये। ग्रावाहितो भव। संस्थापितो भव। सित्रिहितो भव। सित्रिहितो भव। सित्रिहितो भव। सित्रिहितो भव। सित्रिहितो भव। भव । ग्रवगुरिउतो भव । ग्रमृतीकृतो भव । व्याप्तो भव । सुप्रसन्नो भव । क्षमस्व ।

ॐ सैंहिकेयायं विद्यहें। तमो मुयायं धीमहि। तन्नों राहुः प्रचोदयांत्॥

इसका तीन बार जप करते हुए ग्रर्घ्य देवें। कयानोवामदेव ऋषि: राहुर्देवता गायत्री छन्द: उक्यानश्चित्र हृदयाय नम:। उग्राभुविच्छरसे स्वाहा। अऊती शिखायै वषट्। असदावृधः सखा कवचाय हुम्। अकया शचिष्ठया नेत्राभ्यां वौषट्। अवृता ग्रस्त्राय फट्। अभूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः। ध्यानम् - राहुं मध्यमदेशजं च निऋतिस्थाने स्थितं पैठिनं गोत्रं खड्गधरं शूर्प सदृशं शर्दूदरत्नासनम्। नीलच्छत्रविभृषराध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिराकरं सेवामहे तामसम्।। (स्मृति सङ्गह)

अरां राहवे नमः। इस मूल मंत्र का ग्राठ बार जप करें। अलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। अहं ग्राकाशात्मने पृष्पं कल्पयामि। अयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि । अरं ग्रग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि । अवं ग्रबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि । अपं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि । प्रार्थना—यो विष्णुनैवामृतं पीयमानः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्याग्रसते पर्वकाले राहुं सदा शरगामहं प्रपद्ये॥ करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः। नीलसिंहासनस्थश्च ग्रहरतं प्रशस्यते॥ सेंहिकेयं करालास्यं कोरिडनेयं तमोमयम्। खड्गचर्मधरं भोमं नील सिंहासने स्थितम्॥ ऋर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसंभूतं राहु च प्ररामाम्यहम्॥ ॐ राहवे नमः, ऋधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित राहु पूजां समर्पयामि। (ऋग्वेद स्मृति सङ्ग्रह)

केत् देवता स्नावाहनम्—मगडलस्य वायव्यदले ध्वजाकार मगडले कुलित्थराशौ केतु प्रतिमायां केत्वावाहनं कुर्यात्। अपं पद्माय नमः, पीठं संपूज्य। केतुं कृरावन्नित्यस्य मधुच्छंदाः केतुर्गायत्री केत्वावाहने विनियोगः।

ॐ केतुं कृरावन्नंकेतवे पेशों मर्या ऋपेशसें। समुषद्भिरजायथाः॥ (ऋग्वेद १.६.३)

ऊभू: केतु ग्रहमावाहयामि। अभुव: केतु ग्रहमावाहयामि। अस्व: केतु ग्रहमावाहयामि। अभूर्भुव: स्व: केतु ग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भगवन् केतो कामरूप जैमिनि गोत्र मध्यदेशेश्वर धूम्रवर्गाध्वजाकृते द्विभुजगदावरदानांकित चित्रांबरमाल्यानुलेपन वैडूर्यमयाभरगाभूषित सर्वाङ्गचित्रशक्ते नमस्ते सन्नद्ध चित्रध्वजपताकोपशोभितेन चित्रकपोतरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिगीकुर्वन्नागच्छ ब्रह्मचित्रगुप्ताभ्यां सह वायव्यदलमध्ये कांस्यप्रतिमां दक्षिगामुखीं ध्वजाकार पद्मे धितिष्ठपूजार्थं त्वां स्रावाहयामि । केतु के स्रागे दाहिने स्रोर ब्रह्मा जी का स्रावाहन करें । ब्रह्मजज्ञानं वामदेवोब्रह्मात्रिष्टुप् ब्रह्मावाहने विनियोगः । ॐ ब्रह्मंजज्ञानं प्रंथुमंपुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचीवेन स्रांवः। सबुध्यां उपमा स्रंस्यविष्ठाः सृतश्चयोनिमसंतश्चविवः॥

(यजुर्वेद-४ काराड-२ प्रश्ने-८ मनुवाक-४ मन्त्र)

अभूः केत्वधिदेवतां ब्रह्मारामावाहयामि । अभुवः केत्वधिदेवतां ब्रह्मारामावाहयामि । अस्वः केत्वधिदेवतां ब्रह्मारामावाहयामि । अभूर्भुवः स्वः केत्वधिदेवतां ब्रह्मारामावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। पद्मासनस्थं जटिलं चतुर्मुखं ग्रक्षमालास्त्रवपुस्तक कमराडलुधरं कृष्णाजिनवाससं पार्श्वस्थितहंसं केत्विधदेवतां ब्रह्मारामावाहयामि। केतु के ग्रागे बायें ग्रोर चित्रगुप्त का ग्रावाहन करें। सचित्रचित्रमित्यस्य भरद्वाजः चित्रगुप्तस्त्रिष्टुप् चित्रगुप्तावाहने विनियोगः।

ॐ सचित्रचित्रं चित्रयंयम्समे चित्रंक्षत्रचित्रतंमंवयोधां। चंद्रंर्यिंपुंरुवीरंबृहंतं चन्द्रंचंद्राभिंगृंग्तियुंवस्व॥ (स्मवेद ६.६.७)

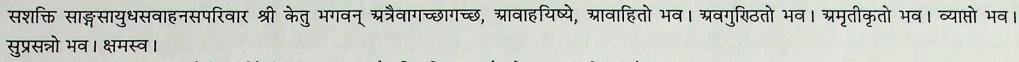
ॐभूः केतु प्रत्यिधदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि। ॐभुवः केतु प्रत्यिधदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि। ॐस्वः केतु प्रत्यिधदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः केतु प्रत्यिधदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। उदीच्यवेषधरं सौम्यदर्शनं लेखनीपत्रोपेतद्विभुजं केतु प्रत्यिधदेवं चित्रगुप्तं स्रावाहयामि। नवशक्ति पूजा—अनिमायै नमः। अग्रभयायै नमः। अप्रकीर्शायै नमः। अलीनायै नमः। अभेदायै नमः: अनटायै नमः। अग्राज्ञयै नमः।

अप्रतिज्ञायै नमः। अमेधायै नमः।

अनमो भगवते सकलगुर्गात्मशक्तियुक्ताय ऋनंताय योगपीठात्मने नमः, सुवर्गपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य विकृतानन। ऋरणयामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सिन्निधिं कुरु। अग्रां हीं क्रों यर लवशष सहों संहंस: केतु प्राणा इह प्राणा:। अग्रां हीं क्रों यर लवशष सहों संहंस: केतु जीव इह स्थित:। अग्रां हीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: केत्वो: सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मन: चक्षु: श्रोत्रघ्राणप्राणा:। इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

अ ऋसुंनीते पुनंरस्मासु चक्षुः पुनंः प्रागामिह नो धेहि भोगं। ज्योक्पंश्येम सूर्यमुच्चरंन्तमनुंमते मृळयांनः स्वस्ति॥ ॐ पुनेनों ऋसुँ पृथिवी ददातु पुनुद्यौदेवी पुनंरन्तरिक्षम्। पुनंनुः सोमंस्तुन्वं ददातु पुनः पूषा पृथ्यां ३ या स्वस्तिः॥

(मृग्वेद १०. ४£.६-७)



अ ब्रह्मपुत्रायं विदाहें विकृतास्यायं धीमहि। तन्नः केतुः प्रचोदयांत्॥

इसका तीन बार जप करते हुए ग्रर्ध्य देवें। मधुच्छन्दा ऋषि: केतुर्वेवता गायत्री छन्दः। ॐकेतुं कृगवन् हृदयाय नमः। ॐग्रकेतवे शिरसे स्वाहा। ॐपेशोमर्या शिखायै वषट्। ॐग्रपेशसे कवचाय हुम्। ॐसमुषद्धिः नेत्राभ्यां वौषट्। ॐग्रजायथाः ग्रस्त्राय फट्। ॐपुर्भूवस्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानम्—केतुं बर्बरदेशजं ध्वजसमाकारं विचित्रायुधं। चित्रं जैमिनिगोत्रजं ग्रहभुवो वायव्यभागस्थितम्। चित्रं स्यंदन भूषगाध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरे: प्रदक्षिगाकरं सेवामहे तं ध्वजम्। अकें केतवे नमः। इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। अलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। अहं स्राकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। अयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। अरं स्रग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। अवं स्रवात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। अपं परमात्मने पञ्च

ोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— ये ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्त्रा ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः।

ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शररामहं प्रपद्ये॥

धूम्राद्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः। गृथ्रासनगताः नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः॥

धूम्रान् द्विबाहून् गदिनो विकृतास्यान् शतात्मकान्। गृथ्रासनगतान् केतून् वरदान् ब्रह्मराः सुतान्।

पालाश धूम्रसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रशामाम्यहम्॥ (स्मृति सङ्गह)

उन्केतवे नमः। ऋधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित केतु पूजां समर्पयामि।



कर्म साद्गुराय देवता स्रावाहन

कर्म के सभी गुर्गों को यजमान को देने वाले देवता। ये कर्म के लोपों को दूरकर पूर्ण फल दिलाते हैं। ये छः है।

शनैवायु प्रदेशे कर्म साद्गुग्य देवतां विनायकं स्रावाहयेत्।

नवग्रह मगडल के वायव्य दिशा में विनायक का ग्रावाहन करें। सभी देवतावाहन मगडल के पश्चिम में करें। ग्रातूनइत्यस्य कागव: कुसीदी विनायको गायत्री क्रत् सादुग्रय देवता विनायकावाहने विनियोगः।

ॐ म्रातूनं इन्द्रक्ष्मंतंचित्रङ्गाभंसङ्कृभाय मुहाहस्ती दक्षिंगोन।। (भवेद =.=१.१)

ॐभू: क्रतु साद्गुग्यदेवतां विनायकं ग्रावाहयामि। ॐभुव: क्रतु साद्गुग्यदेवतां विनायकं ग्रावाहयामि। ॐस्व: क्रतु साद्गुग्यदेवतां विनायकं ग्रावाहयामि। अभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुरायदेवतां विनायकं म्रावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। उनके (विनायक के) दाहिने म्रोर दुर्गा जी का म्रावाहन करें। जातवेद से कश्यपो दुर्गात्रिष्टुप् क्रतुसाद्गुर्य देवता दुर्गामावाहने विनियोग:।

ॐ जातवेदसे सुनवाम् सोमंमरातीययो निदंहाति वेदंः। स नंः पर्षदिति दुर्गाशिविश्वां नावेव सिंधुंदुरितात्युग्निः॥

(मृग्वेद १.££.१)

ऊभुः क्रतु साद्गुरायदेवतां दुर्गामावाहयामि । अभुवः क्रतु साद्गुरायदेवतां दुर्गामावाहयामि । अस्वः क्रतु साद्गुरायदेवतां दुर्गामावाहयामि । अभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुरयदेवतां दुर्गामावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।शक्तिबाराशूलखङ्गचक्र चन्द्रबिम्बखेटकपालपरशु टंकोपेतां दशभुजां सिंहारूढां दुर्गाख्यदैत्यासुहारिर्शी दुर्गामावाहयामि। दुर्गा जी के दाहिने ग्रोर क्षेत्रपाल का ग्रावाहन करें। क्षेत्रस्य पतिना वामदेवः क्षेत्रपालोनुष्टुप् क्रतुसाद्गुरय देवता क्षेत्रपालावाहने विनियोगः।



ॐ क्षेत्रंस्य पतिंना व्यं हितेनेंवजयामिस । गामश्रंपोषियुत्वा सनोंमृळातीदृशें ॥ (ऋषेद ४.४७.१)

ऊभू क्रतु साद्गुग्य देवतां क्षेत्रपालमावाहयामि। अभुवः क्रतु साद्गुग्यदेवतां क्षेत्रपालमावाहयामि। अस्वः क्रतु साद्गुग्यदेवतां क्षेत्रपालमावाहयामि। अभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुग्यदेवतां क्षेत्रपालमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। श्यामवर्णं त्रिलोचनं ऊर्ध्वकेशं सुदंष्ट्रं भुकुटि कुटिलाननां नूपुरालंकृतांघ्रिं सर्पमेखलयायुतं सर्पाङ्गमतिकुद्धं क्षुद्रघटाबद्ध गुल्फावलंबिनि नृकरोटीमाला धारिणं उरगकौपीनं चंद्रमौलिं दक्षिणहस्तैः शूलवेतालखड्गदुंदुभिन्दधानं वामहस्तैः कपाल घंटाचर्म चापान्दधानं भीमं दिग्वाससं ग्रमित द्युतिं क्षेत्रपालमावाहयामि। क्षेत्रपाल के दाहिने ग्रोर वायु का ग्रावाहन करें। क्राणाशिशुरित्य स्यित्रतोवायुरुष्णिक् क्रतुसाद्गुग्यदेवता वाय्वावाहने विनियोगः।

ॐ क्रागाशिशुंर्म्हीनांहिन्वन्नृतस्य दीधितिं। विश्वापरिप्रियामुंवदर्धद्विता॥ (मण्वेद £.१०२.१)

ॐभूः क्रतु साद्गुगयदेवतां वायुमावाहयामि। ॐभुवः क्रतु साद्गुगयदेवतां वायुमावाहयामि। ॐस्वः क्रतु साद्गुगयदेवतां वायुमावाहयामि। ॐभूर्भूवः स्वः क्रतु साद्गुगयदेवतां वायुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। धवद्धरिग्णपृष्ठगतं ध्वजवरदानधारिगं धूम्रवर्गं वायुं ग्रावाहयामि। वायु के दाहिने ग्रोर ग्राकाश का ग्रावाहन करें। ग्रादित्प्रवस्य वत्स ग्राकाशो गायत्री ग्राकाशावाहने विनियोगः।

ॐ म्रादित्प्रतस्येरतंसोज्योतिंष्पश्यंति वास्रं। प्रोयद्ध्यतेंदिवा।। (मग्वेद ६.६.३०)

ऊभूः क्रतु सादगुगयदेवतां स्राकाशं स्रावाहयामि । ऊभुवः क्रतु साद्गुगयदेवतां स्राकाशं स्रावाहयामि । ऊस्वः क्रतु साद्गुगयदेवतां स्राकाशं स्रावाहयामि । ऊभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुगयदेवतां स्राकाशं स्रावाहयामि । स्थापयामि । पूजयामि । नीलोत्पलाभं नीलांबरधारिगं चंद्राकोंपेतं द्विभुजंषंढं स्राकाशमावाहयामि । स्रिश्चनाविति राहूगगो गौतमोश्चिनावुष्णिक् स्रश्व्यावाहने विनियोगः ।

ॐ ऋश्विनावृर्तिरुस्मदागोमंद्दस्त्राहिरंग्यवत्। ऋर्वाग्रथं समनसानियंच्छतम्।। (ऋग्वेद १. £२.१६)

ङभूः क्रतु साद्गुरय देवतां ऋश्वनौ स्रावाहयामि। ङभुवः क्रतु साद्गुरय देवतां ऋश्वनौ स्रावाहयामि। ङस्वः क्रतु साद्गुरय देवतां ऋश्वनौ स्रावाहयामि। अभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुर्य देवतां ऋश्विनौ ऋगवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। प्रत्येकमौषधिपूस्तकोपेत दक्षिरावामहस्तावन्योन्यसंसक्तदेहो एकस्य दक्षिरापार्श्वे ग्रपरस्य वामपार्श्वे रत्नभाराडवर शुक्लांबरधारि नारीयुग्मोपेतो देवभिषजो ग्रिश्वनौ ग्रावाहयामि।

क्रतु संरक्षक देवता — क्रतु संरक्षक देवता ग्राठ हैं। ये यज्ञ का संरक्षण करते हैं। ग्राठ दिशाग्रों के ग्रिधपित ग्रष्टिदिक्पालक क्रतु संरक्षक देवता कहलाते हैं। प्राग्दलाग्रे नवग्रह मराडल के पूर्व दल के ऋग्र भाग में इन्द्र का ऋवाहन करें। इंद्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री इन्द्रावाहने विनियोग:। इन्द्रैवोविश्वत्स्परिहवांमहे जनेंभ्यः। श्रुस्माकंमस्तु केवंलः॥ (ऋग्वेद १.७.१०)

अभू: क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि। अभुवः क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि। अस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि। अभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। स्वर्गावर्गं सहस्राक्षं ऐरावतवाहनं वज्रपागिं शचीप्रियं इन्द्रमावाहयामि। **त्राग्नेय दलाग्ने**—नवग्रह मराडल के त्राग्नेय दल के त्राग्न मां त्रिग्न का त्रावाहन करें। त्रिग्नं दूतिमत्यस्य कारावोमेधातिथिरग्निर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता ग्रग्न्यावाहने विनियोग:।

ॐ ऋग्निं दूतं वृंगीमहे होतांरं विश्ववेंदसम्। ऋस्य युज्ञस्यं सुक्रतुंम्॥ (ऋग्वेद १.१२.१)

अभू: क्रतु संरक्षकदेवतां ऋग्निं ऋगवाहयामि । अभुवः क्रतु संरक्षकदेवतां ऋग्निं ऋगवाहयामि । अस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां ऋग्निं ऋगवाहयामि । अभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां म्रिगं मावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। रक्तवर्णं साक्षसूत्रं सप्तार्चिषं शक्त्यत्रस्तुक्स्तुवतोमरव्यजन घृतपात्राणि दधानं स्वाहाप्रियं मेषवाहनं ऋग्रिं ऋावाहयामि।

याम्यदलाग्रे—नवग्रह मगडल के दक्षिण दल के ऋग्र भाग में यम का ऋवाहन करें। यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता यमावाहने



विनियोग:।

ॐ युमायुसोमंसुनुतयुमायंजुहुता हृवि:। युमंहं युज्ञो गंच्छत्युग्निदूंतो ऋरंकृत:॥ (ऋग्वेद १०.१४.१३)

ऊभूः क्रतु संरक्षकदेवतां यमं ग्रावाहयामि। अभुवः क्रतु संरक्षकदेतवतां यमं ग्रावाहयामि। अस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां यमं ग्रावाहयामि। अभूभुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां यमं ग्रावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। रक्तवर्णं दराडधरं मिहषवाहनं इळाप्रियं यमं ग्रावाहयामि। स्थापयामि, पूजयामि। रक्तवर्णं दराडधरं मिहषवाहनं इळाप्रियं यमं ग्रावाहयामि। नवग्रह मराडल के नैम्नत्य दल के ग्राग्र भाग में निर्मित का ग्रावाहन करें। मोषुराः कारावो निर्मितर्गायत्री क्रतु संरक्षकदेवता निर्मित्यावाहने विनियोगः।

ॐ मोषुगाः परांपरानिर्ऋतिर्दुर्हगांवधीत् । पदीष्ठतृष्णांयास्ह ॥ (भगवेद १.३ =.६)

अभू: क्रतु संरक्षकदेवतां निर्मृतिं ग्रावाहयामि। अभूवः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्मृतिं ग्रावाहयामि। अस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्मृतिं ग्रावाहयामि। अभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्मृतिं ग्रावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। नीलवर्णं खड्गचर्मधरं अर्ध्वकेशं नरवाहनंकालिकाप्रियं निर्मृतिमावाहयामि। पश्चिमदलाग्रे—नवग्रह मगडल के पश्चिम दल के ग्राप्र भाग में वरुणा का ग्रावाहन करें। अतत्वायामीत्यस्य शुनःशेपोवरुणस्त्रिष्टुप् क्रतुसंरक्षकदेवता वरुणावाहने विनियोगः।

ॐ तत्वांयाम् ब्रह्मंगा् वन्दंमान्स्तदाशांस्त्यजंमानोह्विभिः। ऋहंळमानोवरुगो्ह बोध्युर्रुशंस्मान् ऋायुः प्रमोंषीः॥

(भग्वेद १.२४.११)

ॐभूः क्रतु संरक्षकदेवतां वरुगं ग्रावाहयामि । ॐभूवः क्रतु संरक्षकदेवतां वरुगं ग्रावाहयामि । ॐस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्मृतिं ग्रावाहयामि । ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षक देवतां वरुगं ग्रावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि । रक्तवर्गं नागपाशधरं मकरवाहनं पद्मिनीप्रियं सुवर्ग भूषगं वरुगं ग्रावाहयामि । वायव्यदलाग्रे—नवग्रह मगडल के वायव्य दलके ग्रग्र भाग में वायु का ग्रावाहन करें। तववायो व्यश्वो वायुर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता वाय्वावाहने विनियोग:।

ॐ तवं वायवृतस्पतेत्वष्टुंर्जा मातरद्भुत। ऋवांस्यावृंगीमहे। (ऋग्वेद =.२६.२१)

उभू: क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं म्रावाहयामि। अभुवः क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं म्रावाहयामि। अस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं म्रावाहयामि। अभू भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं म्रावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। श्यामवर्ण हेमदराडधरं कृष्णामृगवाहनं जगत्प्रारारूपं मोहिनी प्रियं वायुमावाहयामि। उत्तर दलाग्रे—नवग्रह मराडल के उत्तर दल के म्राग्र भाग में कुबेर को म्रावाहन करें। सोमो धेनुमित्यस्य गौतमः सोमस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता कुबेरावाहने विनियोगः।

ॐ सोमों धेनुं सोमो ऋवींन्तमाशुं सोमों वीरं कर्म्रायं ददाति। सादुन्यं विद्वयं स्भेयं पितृश्रवंशां यो ददांशदस्मै॥

(मृग्वेद १.£१.२०)

ॐभूः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं ग्रावाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं ग्रावाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं ग्रावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं ग्रावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। स्वर्णवर्ण निधीश्वरं कुंतपाणिं ग्राश्ववाहनं चित्रिणीप्रियं कुबेरं ग्रावाहयामि। ऐशान दलाग्रे—नवग्रह मण्डल के ईशत्य दल के ग्रग्र भाग में ईशान का ग्रावाहन करें। तमीशानिमत्यस्य गौतम ईशानो जगती क्रतु संरक्षण देवता ईशानावाहने विनियोगः।

ॐ तमीशांनुं जगंतस्तुस्थुषुस्पतिं धियंजिन्वमवंसेहूमहे व्यम्। पूषा नो यथा वेदंसामसंद्वृधे रंक्षिता पायुरदंब्धः स्वस्तयें॥ (भावेद १. मर्स.४)



ॐभूः क्रतु संरक्षक देवतां ईशानमावाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षक देवतां ईशानमावाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षक देवतां ईशानमावाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां ईशानमावाहयामि । शुद्धस्फटिकवर्रा वरदाभ्य शूलाक्षसूत्रधरं वृषभवाहनं गौरीप्रियं ईशानं स्रावाहयामि । एवं एकपंचत्वारिंशत् देवता

ग्रावाद्य।

इस प्रकार नवग्रह मराडल में ४१ देवताओं का म्रावाहन किया गया ग्रह £+म्रिधदेवता £+प्रत्यिधदेवता £+क्रतु साद्गुरायदेवता ६+क्रतु संरक्षक देवता 🗀 = कुल ४१ देवता। त्रावाहित नवग्रह मगडलस्थ एकचत्वारिंशत् देवताभ्यः यथाशक्ति कल्पोक्त षोडशोपचार पूजां करिष्ये।

नवग्रहषोडशोपचार पूजन

ध्यायामि । ध्यानं समर्पयामि ।

ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतों वृत्वाऽत्यंतिष्ठदशाङ्गुलम्।। (मानेद १०.६०.१) ॐ हिरंगय वर्गाां हरिंगीं सुवर्गीरजतस्रंजाम्। चुन्द्रां हिरगमंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो मु स्ना वंह।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रहमग्रहलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, **ग्रावाहनं समर्पयामि।**

ॐ पुरुष ए्वेदं सर्वं यद्भूतं यंच्य भव्यंम्। उतामृत्तवस्येशांनो यदन्नेनातिरोहंति॥ (मण्वेद १०.६०.२)

ॐ तां मु स्रावंह जातवेदों लुक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंगयं विन्देयं गांमश्रृं पुरुषानुहम्।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ऊ नवग्रहमग्रहलस्थ मावाहित देवताभ्यो नमः, मासनं समर्पयामि।

ॐ एतावांनस्य महिमाऽतो ज्योयाँश्च पूरुंषः। पादोंऽस्य विश्वांभूतानिं त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ (सप्वेद १०.६०.३)

ॐ ऋश्वपूर्वा रथम्ध्यां हस्तिनांद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवी मुपह्नये श्रीमां देवी जुषताम्।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रह मराडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ॐ त्रिपादूर्ध्व उद्देत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः। ततो विष्वं व्यंक्रामत् साशनानश्नने श्रभि।। (मावेद १०.६०.४) ॐ कां सोस्मितां हिरंगय प्राकारामाद्रीं ज्वलंन्तीं तृप्तां तुर्पयंन्तीम्। पुद्येस्थितां पुद्मवंगां तामिहोपंह्वये श्रियम्।

(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रह मराडलस्थ ग्रावाहितदेवताभ्यो नमः, हस्तयोः ग्रर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ तस्मांद् विराळंजायत विराजो ऋधिपूर्रुषः। सजातो ऋत्यंरिच्यत पृश्चाद् भूमिमथों पुरः॥ (मण्वेद १०.६०.४)

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुंष्टामुदाराम्।

तां पुद्मिनीं मीं शरंगामुहं प्रपंद्येऽलुक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृंगो ॥ (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

उनवग्रह मगडलस्थ ऋवाहित देवताम्यो नमः। मुखे ऋचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् पयः (दूध)—ॐ स्राप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतंः सोमुवृष्णियं । भवावार्जस्य सङ्ग्थे । (मावेद १.६१.१६)

उनवग्रह मग्रडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, पयः स्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उद्यन्नद्य मित्रमह ऋारोहन्नुत्तंरां दिवंम्। हृद्रोगं ममं सूर्य हरिमारां च नाशय॥ (ऋग्वेद १.४०.११)

अनवग्रह मगडलस्थ त्रावाहित देवताभ्यो नमः। पयः स्नानांते शूद्धोदकस्नानं समर्पयामि।



दिध (दिह)—ॐ दुधिक्राव्यां स्रकारिषं जिष्यारेश्वंस्य वाजिनं:। सुर्भिनोमुखां कर्तप्रण् स्रायूंषि तारिषत्।। (ऋग्वेद ४.३६.६) ॐनवग्रह मर्गडलस्थ स्रावाहित देवताभ्यो नमः, दिध स्नानं समर्पयामि। दिह स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ शुकेषु मे हरिमार्गां रोप्रााकांसु दध्मसि। ऋथों हारिद्रवेषुं मे हरिमार्गां निदंध्मसि॥ (ऋग्वेद १.४०.१२)

अनवग्रह मंडलस्थ ग्रावाहितदेवताभ्यो नमः, दिध स्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

घृत (घी)—ॐ घृतं मिंमिक्षे घृतमंस्ययोनिंधृंते श्रितो घृतं वंस्य धामं।

त्रुनुष्व्धमावंह माद्यंस्व स्वाहांकृतं वृषभवक्षि हृव्यम् ॥ (मावेद २.३.११)

अनवग्रह मंडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, घृत स्नानं समर्पयामि। घी स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उदंगाद्यमांदित्यो विश्वेन सहंसा सह। द्विषन्तं महां रुन्थयन् मो ऋहं द्विष्ते रंधम्।। (ऋग्वेद १.४०.१२)

अनवग्रह मंडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, घृतस्त्रानांते शुद्धोदक स्त्रानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवातां ऋतायते मधुंक्षरन्ति सिन्धंवः । माध्वीर्नः सुन्त्वोषंधीः ॥

ॐ मधुनक्तंमुतोषंसो मधुंमृत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरंस्तु नः पिता॥

ॐ मधुमात्रों वनुस्पित्मधुमाँ त्रस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावों भवन्तु नः॥ (स्रावेद १.६०.६-७-८)

उनवग्रहमंडलस्थ ग्रावाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानं समर्पयामि।

ॐ चित्रं देवानामुदंगादनींकं चक्षुंर्मित्रस्य वर्रुणस्याग्नेः। स्राप्रा द्यावांपृथिवी स्रन्तरिक्षं सूर्यं स्रात्मा जगंतस्तुस्थुषंश्च॥

(मग्वेद १.११४.१)

अनवग्रह मगडलस्थ म्रावाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शर्करा (शक्कर)—अस्वादुः पंवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्रांय सुहवींतु नाम्ने।

स्वादुर्मित्राय वर्त्तराय वायवे बृहस्पतंये मधुंमाँ ऋदांभ्यः॥ (ऋषेद ६. ६४.६)

अनवग्रह मंडलस्थ म्रावाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्त्रानं समर्पयामि।

ॐ म्राकृष्णोन् रजंसावर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्गययंन सिवता रथेनाऽदेवो यांति भुवंनानि पश्यंन्॥

(सृग्वेद १.३५.२)

उ-नवग्रहमगडलस्थ म्रावाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ याः फ्लिनीर्या ऋंफुला ऋंपुष्पायाश्चं पुष्पिगीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानों मुञ्चन्त्वं हंसः॥ (मग्वेद १०.६७.१४)

अनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, फलस्नानं समर्पयामि।

ॐ त्रापोहिष्ठा मंयोभुवस्तानं ऊर्जे दंधातन। महेरणांय चक्षंसे॥ यो वं: शिवतंमोरसस्तस्यं भाजयते हनं:। उश्तीरिव मातरं:॥

तस्मा ऋरंगमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। ऋषां जुनयंथा च नः॥ (ऋषेद १०.६.१-२-३)

अनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, फल स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ म्रा कृष्णोन् रर्जसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्गययंन सविता रथेनाऽऽदेवो यांति भुवंनानि पश्यंन्॥ ॐ म्राप्यांयस्व समेतु ते विश्वतं: सोम् वृष्णयंम्। भवा वार्जस्य सङ्ग्रथे॥ (म्रावेद १.२१.१६)



ॐ ऋग्निर्मूर्धा द्विवः क्कुत्पतिः पृथिव्या ऋयम्। ऋपां रेतांसि जिन्वति॥ (ऋग्वेद =.४४.१६) ॐ उद्वंध्यध्वं समंनसः सखायः समुग्निमिध्वं बहवः सनीळाः। दुधिक्रामुग्निमुषसं च देवीमिंद्रांवृतोऽवंसे निंह्वये वः॥ (मण्वेद १०.१०१.१) ॐ बृहंस्पते ऋति यद्यों ऋहाँ द्युमद्विभाति क्रतुंम् जनेषु। यदीदयुच्छवंस ऋतप्रजात् तदुस्मासु द्रविंगां धेहि चित्रम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१४) ॐ शुक्रं तें ऋन्यद्यंज्तं तें ऋन्यद्विष्रित्ये ऋहंनीद्यौरिवासि। विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भुद्रा ते पूषन्निहरातिरंस्तु ॥ (भग्वेद ६.४=.१) ॐ शम्ग्रिर्ग्निभीः करुच्छंनंस्तपतु सूर्यीः। शं वातों वात्वरुपा ऋपुस्त्रिधीः॥ (मावेद म.१म.६) ॐ कयांनश्चित्र ऋा भुंवदूती सदावृधः सर्वा। कयाशचिष्ठया वृता।। (सप्वेद ४.३१.१) ॐ केतु क्रावन्नंकेतवे पेशों मर्या ऋपेशसें। समुष द्धिरजायथाः॥ (ऋखेद १.६.३) ॐ तच्छंय्योरावृंशीमहे गातुं युज्ञायं गातुं युज्ञ प्तये। दैवीं स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिमानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेष्जम् शंनों ऋस्तु द्विपदे शं चतुंष्पदे॥ (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्) ॐ यत्पुंरुषेशा ह्विषां देवा युज्ञमतंन्वत। वृस्नन्तो ऋस्यासीदार्ज्यं ग्रीष्म इ्ध्मः श्रारुद्धवि:॥ (ऋखेद १०.६०.६) ॐ माद्रित्यंवर्गो तप्सोऽधिंजातो वन्स्पतिस्तवं वृक्षोऽथं बिल्वः। तस्य फलांनि तप्सा नुंदन्तु मायान्तंरायाश्च बाह्या स्रंलुक्ष्मीः ॥ (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

ॐनवग्रह मग्डलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं सपर्मयामि। शुद्धोदक स्नान मंत्रों के तीन प्रकार प्रचलित है।

प्रथम क्रम में— ई ग्रह- ई ग्रिधदेवता— ई प्रत्यिधदेवता ६ कर्म साद्गुग्य देवता, द्र क्रतु संरक्षक देवता कुल मिलाकर ४१ देवताग्रों का मंत्र पठन करके

शुद्धोदक स्नान करना चाहिये। सभी मंत्र ग्रावाहन में है। नवग्रह यागादियों में इसका प्रयोग होता है। जहाँ कलश पूजन के लिए ही एक पिष्डत नियुक्त
हो वहाँ भी इसे कर सकते हैं।

दितीय क्रम में— £ ग्रह+ £ ऋधिदेवता+ £ प्रत्यिधदेवता कुलिमलाकर २७ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये। तृतीय क्रम में— £ ग्रहों का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

वस्त्रम्— ॐ युवं वस्त्रांशि पीवसावसाथे युवोरिच्छंद्रा मन्तंवो हसर्गाः।

स्रवातिरत्मनृंतानि विश्वंस्तेनं मित्रा वरुगा सचेथे। (स्रावेद १.१४२.१)

ॐ तं युज्ञं बुर्हिषि प्रौक्ष्-न् पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा स्रयजन्त साध्या ऋषंयश्चे ये॥ (सप्वेद १०.६०.७)

ॐ उपैतु मां देवस्खः कीर्तिश्च मिर्गाना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं दुदातुं मे।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्—ॐ यज्ञोपवीतं प्रमं पवित्रं प्रजापते र्यत् सहजं पुरस्तात्। ऋायुष्यम्यूयं प्रतिमुं ऋ शुभ्रं यज्ञोपवीतं बल्मस्तु तेजः॥

ॐ तस्माद् युज्ञात् सर्वृहुतुः संभृतं पृषदाज्यम्। पुशून्स्ताँश्चेक्ने वायुव्यानार्गयान् ग्राम्याश्च ये॥ (भ्रावेद १०.६०.=)

ॐ क्षुत्पिपासामेलां ज्येष्ठामेल्क्ष्मीं नांशायाम्यहंम्। ऋभूतिमसंमृद्धिं च सर्वा न्निर्गुदं मे गृहांत्।। (पञ्चम मरहलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रह मराडलस्थ स्रावाहित देवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, स्राचमनं समर्पयामि।



म्राभरराम्—ॐ हिरंगयरूपः स हिरंगय सन्दृग्पान्नपात् सेदुहिरंगयवर्गः। हिरगुययात् परिर्योनेर्निषद्यां हिरगयदा दंदत्यन्नंमस्मै॥ (ग्रुग्वेद २.३४.१०)

अनवग्रह मराडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, ग्राभरगं समर्पयामि।

गन्धम्—ॐ तस्मांद् युज्ञात् संर्वृहुतुऋचुः सामांनि जिज्ञरे। छंदांसि जिज्ञरे तस्माद् यजुस्तस्मांदजायत॥ (ऋग्वेद १०.६०.६) ॐ गंधंद्वारां दुंराध्रषां नित्यपुंष्टां करीषिशामि । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम् ॥ (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

उन्वग्रहमगडलस्थ न्नावाहित देवताभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

यक्षतम् अ सर्चत् प्रार्चत् प्रियंमेधासो सर्चत । सर्चन्तु पुत्रका उत्प्रेन्न धृष्यवर्चत ॥ (मावेद =.६६.=)

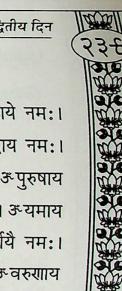
उन्वग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, ग्रक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाशि—ॐ स्रायंने ते प्रायंशे दर्वूरिहन्तु पुष्पिशीः। हृदाश्चं पुगडरीकाशि समुद्रस्यं गृहा इमे।। (ऋग्वेद १०.१४२.=)

ॐ तस्मादश्वां ऋजायन्त ये के चौं भ्यादंतः। गावोहजिज्ञिरे तस्मात् तस्मांज्ञाता ऋंजा वयः॥ (सम्बेद १०.६०.१०)

ॐ मनंसः काम्नाकूंतिं वाचः सत्यमंशीमिह। पृशूनां रूपंमत्रस्य मियु श्रीः श्रंयतां यशः॥ (मग्वेद - पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रह मगडलस्थ म्रावाहित देवताभ्यो नमः, पुष्पागि समर्पयामि।



नाम पूजा

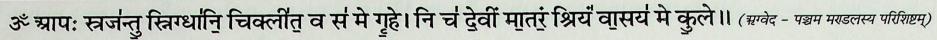
असहस्रकिरणाय नमः। असूर्याय नमः। अतपनाय नमः। असवित्रे नमः। अरवये नमः। अविकर्तनाय नमः। अजगच्यक्षुषे नमः। अधुम्राये नमः। ॐतिग्मदीधितये नमः। ॐत्रयीमूर्तये नमः। ॐद्वादशात्मने नमः। ॐब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय नमः। ॐब्रादित्याय नमः। ॐब्राये नमः। ॐरुद्राय नमः। अचन्द्रमसे नमः। अग्रद्भ्यो नमः। अगीर्ये नमः। अग्रङ्गारकाय नमः। अभूम्यै नमः। अस्कन्दाय नमः। अबुधाय नमः। अविष्णावे नमः। अपुरुषाय नमः। अबृहस्पतये नमः। अइंद्राय नमः। अब्रह्मरो नमः। अशुक्राय नमः। अइंद्रारयै नमः। अइंद्राय नमः। अशनेश्वराय नमः। अप्रजापतये नमः। अयमाय नमः। अराहवे नमः। असर्पेभ्यो नमः। अमृत्यवे नमः। अकेतवे नमः। अब्रह्मर्रो नमः। अचित्रगुप्ताय नमः। अविनायकाय नमः। अदुर्गायै नमः। ॐक्षेत्रपालाय नमः। ॐवायवे नमः। ॐग्राकाशाय नमः। ॐग्रश्विभ्यां नमः। ॐइन्द्राय नमः। ॐग्रग्नये नमः। ॐवनर्याय नमः। ॐनिर्मृतये नमः। ॐवरुगाय नमः। ॐवायवे नमः। ॐसोमाय नमः। ॐईशानाय नमः। ॐनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, नाम पूजां समर्पयामि।

धूपः वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। स्राघ्नेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐ यत्पुर्फष्ं व्यद्धुः कित्धा व्यंकल्पयन्। मुख्ं किमंस्य कौ बाहू का ऊरू पादां उच्येते॥ (मानेद १०.६०.११) ॐ कर्दमेन प्रंजा भूता मृयि संम्भव कर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। (स्रग्वेद - पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

उन्वग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, धूपं ग्राघ्रापयामि।

साज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं विह्नना योजितं मया। गृहारा मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यितिमिरापह॥ ॐ ब्राह्यगोंऽस्य मुर्खमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊर्क्त तस्य यद्वैश्यः पुद्भयां शूद्रो स्रंजायत॥ (मण्वेद १०.६०.१२)

भग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ



उनवग्रह मराडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि । धूपदीपानन्तरं ग्राचमनीयं समर्पयामि ।

नैवेद्यं—नैवेद्य रखने के स्थल पर मगडल बनायें (चतुरस्र) नैवेद्य को मगडल पर रखने के बाद मंत्र पढ़ें। विश्वामित्र ऋषि: देवी गायत्री छन्दः, सविता देवता निवेदने विनियोगः। एक बार नैवेद्य पर गायत्री मंत्र से प्रोक्षण करें। सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि इस मंत्र से दिन में एवं सतं त्वा सत्येन परिषिञ्च । इस मंत्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें।

यथा संभव नैवेद्यं निरीक्षस्व कहकर प्रार्थना कर भ्रमृतोपस्तरगामिस मन्त्र से जल छोड़ें। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं दाहिने हाथ से निम्न मुद्राभ्रों से देवताभ्रों को नैवेद्य भ्रपंग करें। मन में कल्पना करें कि भगवान को खिला रहे हैं। प्रागाय स्वाहा। भ्रपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा। अधिशाः सूर्य भ्रादित्य:-इस मूल मंत्र को भ्राठ बार जप करें।

ॐ स्वादुः पंवस्व दिव्याय् जन्मंने स्वदुरिन्द्रांय सुहवींतु नाम्ने। स्वादुर्मित्राय् वर्रुगाय वायवे बृहस्पतंये मधुंमाँ स्रदांभ्यः॥ (ऋग्वेद स. ४४६)

ॐ चुन्द्रमा मनंसो जातश्रक्षोः सूर्यो म्राजायत। मुखादिन्द्रंश्चाग्निश्चं प्राणाद्वायुरंजायत॥ (मण्वेद १०.६०.१३)

ॐ ऋाद्रां पुष्किरिशीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चुन्द्रां हिररामंथीं लक्ष्मीं जातंवेदो मु ऋावंह।। (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथाः सम्भवं नैवेद्यं निवेदयामि । ग्रमृतापिधानमसि । कहकर उत्तरापोशरा जल दें । उत्तरापोशनार्थं जलं समर्पयामि । हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि । गराङ्कषार्थे जलं समर्पयामि । शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि । करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ।



ताम्बूलम्—पूर्गीफलसमायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्र्गां कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। अनवग्रह मराडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। ताम्बूल के पश्चात् नीराजन करें।

ॐ ग्रर्चेत् प्रार्चेत् प्रियंमेधासो ग्रर्चेत्। ग्रर्चेन्तु पुत्रका उत पुरं न घृष्यवर्चेत ॥ (मावेद =.६६.=)

ॐ श्रिये जातः श्रिय मानिरियाय श्रियं वयो जिर्तृभ्यो दधाति।

श्रियुं वसांना ऋमृत्त्वमायुन् भवंन्ति सृत्या संमिथा मितद्रौ ॥ (मावेद £. £४.४)

अ धुवाद्यौ धुवापृथिवी धुवासः पर्वता इमे। धुवं विश्वमिदं जगंद् धुवो राजां विशामयम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वर्रुगो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्चं राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्।। (ऋग्वेद १०.१७३.४-४)

अनवग्रह मडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, मङ्गल नीराजनं दर्शयामि।

मन्त्र पुष्यः — ॐ ग्रा कृष्णोन् रजसा वर्तमानो निवेशयं नुमृतं मर्त्यं च।

हिर्गययेन सविता रथेनाऽऽदेवो यांति भुवनानि पश्यन् ॥ (मानेद १.३५.२)

ॐ ग्राप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतं: सोम् वृष्ययंम्। भवा वार्जस्य सङ्गर्थे॥ (मावेद १.६१.१६)

ॐ ऋग्निर्मूर्धा द्विः क्कुत्पितः पृथिव्या ऋयम्। ऋपां रेतांसि जिन्वति। (सप्वेद =.४४.१६)

ॐ उद्बंध्यध्वं समंनसः सरवायः सम्ग्रिमिध्वं बहतः सनीळाः।

दुधिक्राम्ग्रिमुषसं च देवीमिन्द्रांवतोऽवंसे निह्वंये वः॥ (म्रावेद १०.१०१.१)



ॐ बृहंस्पते ऋति यद्यों ऋहिंद्युमिद्धभाति क्रतुंम् ज्ञनेषु।
यद्दीदय्च्छवंस ऋतप्रजात तद्दस्मासु द्रविंशां धेहिच्त्रम्॥ (ऋषेद १.२३.१४)
ॐ शुक्रं तें ऋन्यद्यंजतं तें ऋन्यद्विषुंरूपे ऋहंनीद्यौरिवासि।
विश्वा हि माया ऋवंसि स्वधावो भृद्रा तें पूषित्रह रातिरंस्तु॥ (ऋषेद ६.४६.१)
ॐ शम्शिर्गिर्शिभः करच्छनंस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वर्पा ऋपुस्त्रिधः॥ (ऋषेद ६.१६.१)
ॐ कर्यानश्चित्र ऋा भुंवदूती सदावृंधः सखां। कया शचिष्ठया वृता॥ (ऋषेद ४.३१.१)
ॐ केतुं कृशवन्नंकेतवे पेशोंमर्या ऋपेशसे। समुषद्भिरंजाय थाः॥ (ऋषेद १.६३)

उनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिरा नमस्कारः — यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रराश्यन्ति प्रदक्षिरा। पदे पदे॥

ॐ सप्तास्यां सन् परिधयस्त्रिः सप्तस्मिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वाना ऋबंधृन् पुरुषं पृशुम्।। (सप्वेद १०.६०.१४)
ॐ तां मु ऋविह जातवेदो लुक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंगयं प्रभूतं गावों दास्योऽश्वांन् विन्देयं पुरुषान्हम्।

(भृग्वेद-पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमग्रडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, प्रदक्षिगा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घः— अप्रभाकराय विदाहे दिवाकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥ अग्रत्रिपुत्राय विदाहे ग्रमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥

ॐभूमिपुत्राय विद्यहे भारद्वाजाय धीमिहि। तन्नः कुजः प्रचोदयात्॥ ॐतारापुत्राय विद्यहे सोमपुत्राय धीमिहि। तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥ ॐदेवाचार्याय विद्यहे विद्यारूपाय धीमिहि। तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥ ॐसूर्यपुत्राय विद्यहे शनैश्चराय धीमिहि। तन्नो मंदः प्रचोदयात्॥ ॐसूर्यपुत्राय विद्यहे तमोमयाय धीमिहि। तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥ ॐब्रह्मपुत्राय विद्यहे विकृतास्याय धीमिहि। तन्नः केतुः प्रचोदयात्॥ ॐनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि।

सर्वोपचार पूजनम्—ॐछत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। ग्रान्दोळिकामारोहयामि। ग्रश्वमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवास्तानि धर्माशि प्रथमान्यांसन्। तेह नाकं महिमानंः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

(मृग्वेद १०.६०.१६)

ॐ यः शुच्चिः प्रयंतो भूत्वा जुहुयांदाज्यमन्वंहम्। सूक्तं पंचदंशर्चं च श्रीकार्मः सत्तं जंपेत्।। (ऋग्वेद-पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्) अनवग्रह मराडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— ग्रहागामादिरादित्यो लोकरक्षगाकारकः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते रविः॥ रोहिग्गीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते विधुः॥ भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः॥ उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः॥ देवमन्त्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। ग्रनेक शिष्य संपूर्गः पीडां हरतु ते गुरुः॥ दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्रारादश्च महामितः। प्रभुस्ताराग्रहार्गां च पीडां हरतु ते भृगुः॥ सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्म पीडां हरतु ते शिनः॥ महाशिरा महावक्त्रौ दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। ग्रतनुश्लोर्ध्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः॥ ग्रनेक रूपवर्शेश्च शतशोध सहस्त्रशः। उत्पातरूपो जगतः पीडां हरतु ते शिखी॥ (ब्रह्मकर्म समुच्य)

म्रारोग्यं पद्मबन्धुर्वितरतु विपुलां संपदं शीतरिष्मः, भूलाभं भूमिपुत्रः सकलगुरायुतां वाग्विभूतिं च सौम्यः। सौभाग्यं देवमन्त्री रिपुभयशमनं भार्गवः शौर्यमार्किः , दीर्घायुस्सैंहिकेयो विपुलतरयशः केतुराचन्द्रतारम्॥ शान्तिरस्तु। शिवं ते म्रस्तु। ग्रहाः कुर्वन्तु मङ्गलम्। म्रिरिष्टानि प्रराश्यन्तु। दुरितानि भयानि च। अनवग्रहमराडलस्थ देवताभ्यो नमः, प्रार्थनां समर्पयामि। म्रनेन कृत पूजनेन म्रादित्यादि नवग्रहदेवताः प्रीयन्ताम्॥

यहाँ पर नवग्रह पूजन समाप्त हुम्रा। मराडप में कलशों का पूजन भी संपूर्श हुम्रा।

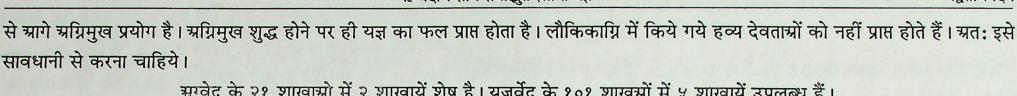
सृष्टि के ग्रारम्भ में ब्रह्मा जी के मुख से ब्राह्मरा एवं ग्राग्नि का प्रादुर्भाव हुग्रा। इसलिए ब्राह्मराों के लिए ग्राग्नि प्रधान देवता है। ग्राग्नि में देने वाले हिवर्भाग समस्त देवताओं को प्राप्त होते हैं। ऋत: ऋग्नि मुख से द्रव्यों का देवताओं को ऋपंश कर ऋपने वांच्छित वस्तुओं को ऋपने लिए एवं राष्ट्र के लिए प्राप्त करते थे। इसलिए ऋग्नि सिद्धि प्राप्त करते थे। इसके लिए सूर्यकान्त मिशा से ऋग्नि को प्रज्वलित करते थे। जिनके पास यह नहीं था वे ऋरशाी मन्थन विधान से पीपल का नीचे वाला ऋाधार, एवं खदिर की मथनी से मथ कर ऋग्नि प्रज्वलित करते थे।

दोनों न होने पर ग्रास-पास के श्रोत्रियों के घर से ग्रग्नि लाकर होम में प्रयुक्त करते थे लौकिक ग्रग्नि का उपयोग प्रयोग में नहीं था श्रोत्रीय ग्रग्नि या सूर्यकान्त मिर्ग का ऋग्नि या ऋरगी मन्थन की ऋग्नि से भी षोडश संस्कार करना चाहिये। बड़े यज्ञों में यही विधान ऋनिवार्य है। यज्ञों के प्रधान देवता के **अ**नुसार वैष्णवाग्नि, शैवाग्नि, गारापत्याग्नि, दुर्गाग्नि, हरिहराग्नि, शास्ताग्नि, स्कन्दाग्नि, नामक सात अग्नियों में अपने कर्म के लिए आवश्यक अग्नि को सृष्टिकर उसमें यागादि करने से यज्ञ का संपूर्ण फल प्राप्त होता है। अन्यथा अत्यल्प फल मिलता है।

त्रग्रौ प्रास्ताहुतिः सम्यक् स्रादित्यं उपतिष्ठते। स्रादित्याज्ञायते वृष्टिः वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः॥ (मनुस्मृति)

विधि पूर्वक किया गया ऋग्नि की ऋाहुतियाँ सूर्य को प्राप्त होते हैं। सूर्य से बारिश होती है। बारिश से ऋत्र (धान्य) एवं उससे प्रजा होते हैं। ऋर्थात् विधिपूर्वक किये गये यज्ञों से समृद्धि होती है। इस विधान में पूर्वाङ्ग ग्रर्थात् प्रधान होम से पहले करने वाला कर्म एवं उत्तराङ्ग ग्रर्थात् प्रधान होम के बाद करने वाले कर्म को पूर्गतया बताने वाला विधान ऋग्निमुख कहलाता है।

प्रत्येक वेद का ग्रलग-ग्रलग विधान है। ग्रग्वेद में बाष्कल शाकल दो शाखायें हैं। ग्रधिकतर शाकल शाखा के विधान का ग्रनुसरण करते हैं। उसी क्रम



भृग्वेद के २१ शाखाम्रों में २ शाखायें शेष है। यजुर्वेद के १०१ शाखम्रों में ५ शाखायें उपलब्ध हैं। सामवेद के १०० शाखम्रों में ३ शाखयें उपलब्ध हैं। म्रथर्ववेद मे ६ शाखम्रों में १ शाखा उपलब्ध है। लौकिके पावको हाग्निः प्रथमः परिकीर्तितः।

लौकिक कार्यों में पावकाग्नि कहलाता है। ऋग्निस्तु मारुतोनाम गर्भाधाने प्रकीर्तित:। गर्भाधान में मारुत नामक ऋग्नि कि प्रतिष्ठा होती है। पुंसवे पवमानस्तु शोभनः शुभकर्मसु।

पुंसवन में पवमान नामक ऋग्नि एवं शुभकार्यों में शोभन नामक ऋग्नि की प्रतिष्ठा होती है। सीमान्ते मंगलोनाम प्रबलो जातकर्मिशा। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

सीमान्त संस्कार में मंगल नामक अग्नि एवं जात कर्म संस्कार में प्रबल नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है। पार्थिवो नामकररो प्राशनित्रस्यवैश्चिः। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

नामकररा संस्कार में पार्थिव ऋग्नि एवं ऋत्र प्राशन में शुचि नामक ऋग्नि कि प्रतिष्ठा होती है।

सभ्यनामातु चूडायां व्रतादेशे समुद्भवः। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

चूडाकर्म संस्कार में सभ्यनाम ऋग्नि उपनयन व्रत में समुद्भव नामक ऋग्नि कि प्रतिष्ठा होती है। गोदाने सूर्यनामास्यद्विवाहे योजकः स्मृतः। (ब्रह्मकर्म समुच्चय) गोदान में सूर्य नामक ऋग्नि एवं विवाह में योजन नामक ऋग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

स्रावसथ्ये द्विजो ज्ञेयो वैश्वदेवेतु रुक्मकः। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

ग्रतिथि सत्कारादि में प्रयुक्त ग्रावसथ्य में द्विज नामक ग्रिग्र एवं वैश्वदेव पाँच महायज्ञों में एक में रुक्पक नामक ग्रिग्र की प्रतिष्ठा होती है। प्रायश्चित्ते विटश्चैव पाकयज्ञेषु पावकः। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

प्रायश्चिताङ्ग होम में विट नामक ग्रिग्न एवं पाकसंस्थ यज्ञों में ग्रसप्त सोमसंस्था, (सप्त हिव: संस्था, सप्त पाकसंस्था) इन २१ यज्ञों में पावक नामक ग्रिग्न की प्रतिष्ठा होती है।

देवानां हव्यवाहश्चिपितृगां कव्यवाहनः। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

सामान्य देवे कार्यो में हव्यवाहन नामक ऋग्नि एवं पितृयज्ञों में कव्यवाहन नामक ऋग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

शान्तिके वरदः प्रोक्तः पौष्टिके बलवर्धनः। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

समस्त शान्तिकर्मी में वरद नामक ऋग्नि एवं समस्त पौष्टिक कर्मी में बलवर्धन नामक ऋग्नि की प्रतिष्ठा होती हैं। पूर्गाहत्यां मृडोनाम क्रोधोग्निश्चाभिचारिके। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

पूर्णाहुति में मृडनाम ऋग्नि एवं ऋभिचार (शत्रु नाशादि) कर्मी में क्रोध नामक ऋग्निकि प्रतिष्ठा होती हैं। वश्यार्थे कामदो नाम वनदाहे तु दूषकः। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

वशीकरण कर्म में कामद नामक ग्रग्नि एवं वनदाह कर्म में (उदाहरण—खागडव दहन) दूषक नामक ग्रग्नि की प्रतिष्ठा होती है।



कुक्षौ तु जाठरो ज्ञेयः क्रव्यादोमृतदाहने। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

पेठ में जाठर नामक ऋग्नि एवं मरे हुए को जलाने में क्रव्याद नामक ऋग्नि की प्रतिष्ठा होती है। विह्निमालक्षहोमे कोटिहोमे हुताशनः। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

जहाँ लक्ष संख्याक होम होता है वहाँ विह्न नामक ऋग्नि, कोटिहोम में हुताशन नामक ऋग्नि की प्रतिष्ठा होती है। वृषोत्सर्गेऽध्वरो नाम शुचये ब्राह्मशाः स्मृतः। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

ऋपर संस्कार में ग्यारवें दिन करने वाला कर्म में, ऋथवा ऋपुत्र व्यक्ति स्वतः जीवित रहते इस कर्म को करते समय ऋध्वर नामक ऋग्नि, एवं शुद्धि के लिए करने वाले कर्म में ब्राह्मण नामक ऋग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

समुद्रे वाडवोह्यग्निः क्षये संवर्तकस्तथा। (ब्रह्मकर्म समुच्य)

समुद्र में वाडव नामक ऋग्नि एवं प्रलय काल में संवर्तक नामक ऋग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

ब्रह्मावैगार्हयत्पश्च ईश्वरो दक्षिगास्तथा। विष्णुराहवनीयः स्यादग्निहोत्रेत्रयोग्नयः॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

अग्निहोत्र में प्रयुक्त तीन अग्नियों में गार्हपत्य अग्नि में ब्रह्मा नामक अग्नि, दक्षिशाग्नि में ईश्वर नामक अग्नि, आहवनीय अग्नि में विष्णु नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है। ज्ञात्वैवमग्निनामानि गृह्यकर्म समारभेत्। (ब्रह्मकर्म समुच्य)

इन ऋग्नियों के नामों को जानकर ही कर्म करना चाहिये।

इमानिसर्वसंस्कारशांतिकपौष्टिकाद्यनुष्ठानोपयुक्तानि तत्र तत्र योज्यान्यग्निनामानि।





ऊपर लिखे अग्नि नामों को जानकर उन्हें प्रयोगकर सभी संस्कार, शान्तिक, पौष्टिक आदि अनुष्ठान करने चाहिये।

वैदिक प्रक्रिया से ऋग्नि प्रज्वलन - तत्र यजमानः कृतनित्यक्रियः शुचिः परिहित धौतवासाः पीठोपविष्टः प्राङ्मुखः वाग्यतो द्विराचम्य दर्भपाशिः प्राशानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ममोपात्त दुरितक्षयद्वारा परमेश्वर प्रीत्यर्थं ऋमुक कर्म करिष्ये।

सामान्य संस्कारों में ऋत्विग्वरण के बाद एवं विशिष्ठ यज्ञों में मधुपर्क के बाद पूर्वाभिमुख बैठकर दो बार ग्राचमन करें, हाथ में कुश लेकर— ग्रप्रिच्छिन्नाग्रो ग्रनन्तर्गर्भे प्रादेशमात्रो कुशो पवित्रम्।

कुश लगभग १२ अंगुल लम्बे हो जिनका अग्र टूटा न हो, एवं दूसरे कुश किले न हो ऐसे दो कुशों से बनाना चाहिये। ग्रन्थीकृत पवित्रेश न भुञ्जीयात् न चाचमेत्। न पिबेत् यदि कृत्वैतान्तदातच्छेशितं भवेत्।।

तस्मादग्रथितेनाम्बु पिबेत् भुझीतचाचमेत्। (मधलायन स्मृति)

ग्रन्थि (गाँठ) युक्त पवित्र पहनकर न खाना चाहिये ग्राचमन भी नहीं करना चाहिये। यदि उसे पहनकर खाने से ग्राचमन करने से वह भेजन एवं जल रक्त समान हो जाता है। इसलिए बिना गाँठ बाँधे हुए कुश से भोजन एवं ग्राचमन करना चाहिये।

हैमेन सर्वदा सर्वान् कुर्यादेवाविचायन्। (अथलायन स्मृति)

सोने के पवित्र बनाकर सभी कर्म कर सकने हैं। कारण यह पवित्र कभी ग्रपवित्र नहीं होता है। ग्रत: संभव हो तो पवित्र उपयोग में ला सकते हैं। कुशाों को हाथ में लेकर प्राणायाम करें प्राणायाम के बाद संकल्प लेवें।

तदंगहोमं कर्तुं स्थंडिलादि कर्म करिष्ये।

द्वितीय दिन

उस उद्देश्य (संकल्प) के ग्रंगभूत होम करने के लिए स्थंडिलादि कर्मो को करूँगा। इनका विवरण ग्रागे है।

स्थंडिलिनर्मारा विधान—इति संकल्प्य गोमयादि लिप्तेशुद्धदेशे शुद्धमृदा ऐशान्यारंभमुदक्संस्थं चतुरंगुलोन्तं ग्रंगुलो न्नतं वा चतुर्दिक्षुमिलित्वा द्विसप्तत्यंगुल परिधिकं फलितमष्टादशांगुल विस्तृतं होमानुसारेश तदिधकं वा न तु ततो न्यूनं मध्योन्नतं स्थंडिलं कुर्यात्। गोमय से लेपित शुद्ध भूमि पर, पवित्र मिट्टी से लेपन करना चाहिये या रेत डालना चाहिये।

ईशान्य से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे चार ऋंगुल ऊँचा या एक ऋंगुल ऊँचा चबूतरा पिवत्र मिट्टी से या रेत से बनाना चाहिये। उस चबूतरे का संपूर्ण विस्तार ७२ ऋंगुल एवं एक-एक दिशा में १८ ऋंगुल होना चाहिये। इससे कम कभी नहीं करना चाहिये। बड़े यागों के ऋनुसार बड़ा सकते हैं। सामान्य होमों में स्थिएडल का प्रयोग करते हैं। बड़े होमों में हवन कुएड बनाते हैं।

स्थरिडल के बीच वाला भाग ऊँचा रहना चाहिये।

ऊँचाई १ ऋंगुल या चार ऋंगुल, लम्बाई एवं चौढ़ाई (बागा प्रमागा हस्त प्रमागा या १८ ऋंगुल)

लिख्यन्तेऽसुरिनर्हत्यै सिकताः सर्वकर्मसु। चतुरस्त्र चतुर्दिक्षु बागामात्रं द्विरावृतम्॥ भूमौ भूपुर मुख्यस्य दिक्ष्वश्रथ्थ दलाकृतैः। नेच्छन्ति मध्यमावेष्टु मसुरा यज्ञहारिगाः॥ (अथलायन स्मृति)

सभी कर्मों में ग्रसुरिनवारण के लिए चौक वाले चार दिशाग्रों में बाण के समान लम्बे (१८") स्थिरिडल में रेत का प्रयोग करें। उसके बाहर सफेद रंगोली से दो

चौक लिखें। चार दिशाओं में ग्रश्वत्थ पत्र लिखें। एवं चार उपदिशाओं में ग्रष्टदल पत्र का निर्माण रंगोली से करें। एवं रंग भरें। इसका चित्र ग्रगले पत्रे में है। यज्ञ को ग्रपहरण करने वाले ग्रसुर मगडल एवं स्थिण्डिल के ग्रन्दर प्रवेश करने में समर्थ नहीं होते हैं। ग्रन्थथा वे ग्रन्दर ग्राकर देवभाग का ग्रपहरण करते हैं। कुरड का विवरण ग्रियमुख के ग्रन्त में होगा।—

स्थिगाडल शुद्धि:— तद् गोमयेन प्रदक्षिगामुपलिप्य दक्षिगो उदीच्यां द्वे, प्रतीच्यां चतुः, प्राच्यामर्धं इत्यंगुलानित्यक्त्वा दक्षिगोपक्रमां उदक्संस्थां प्रादेशमात्रां एकां लेखां तस्या दक्षिगोत्तरयोः प्रागायते पूर्वरेखया त्रसंसृष्टे प्रादेशसंमिते द्वे लेखे लिखित्वा तयोर्मध्ये परस्परं त्रसंसृष्टाः उदक्संस्थाः प्रागायताः प्रादेश संमिताः तिस्रः इति षड्लेखाः यज्ञीय शकलमूलेन दक्षिगा हस्तेन उल्लिख्य लेखासु तच्छकलं उदगग्रं निधाय स्थंडिलं त्रद्धिः त्रप्युक्ष्य शकलं भंक्त्वा त्राग्नेय्यां निरस्य पागिं प्रक्षाल्य वाग्यतः भवेत्।

स्थिएडल को पहले गोमय से लेपना चाहिये। स्थिएडल (वेदी) में दक्षिण में ग्राठ ग्रंगुल, उत्तर में दो ग्रंगुल, पश्चिम में चार ग्रंगुल, पूर्व में ग्राधा ग्रंगुल छोड़कर दक्षिण से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे १२ ग्रंगुल चौक बनाना चाहिये। फिर बीच में दक्षिण से उत्तर एक रेखा खींचना चाहिये। १२ ग्रंगुल फिर दक्षिण से प्रारम्भ कर एक दक्षिण में एवं एक उत्तर में दो रेखायें पश्चिम से पूर्व की ग्रोर खीचें १२ ग्रंगुल की फिर दक्षिण से प्रारम्भकर दक्षिण में समाप्त होने वाले पश्चिम से पूर्व में समाप्त होने वाले तीन रेखायें। (१२ ग्रंगुल) खीचें। (प्रादेश प्रमाण-लगभग १२ ग्रंगुल) (ब) इसे यज्ञ में प्रयुक्त ग्रश्वत्थादि समित् के ग्रग्रभाग से इन लकीरों को खीचना चाहिये। दाहिने हाथ से लिखें। (रेत पर) खीचने वाले समित् को उसके ऊपर उत्तर उत्तराभिमुख रखें। फिर स्थिएडल (stage) को जल से ग्रम्युक्षण करना चाहिये। (ग्रम्युक्षण मतलब मुष्टि में जल लेकर सिञ्चन करना चाहिये।) फिर उस समित् को (लकीर खीचें) तोडकर ग्राग्रेय दिशा में फेंककर हाथ धो लेना चाहिये।



इन रेखाम्रों के देवता, उद्देश्य—तन्मध्ये सिकताकीर्गो लिख्यन्ते यज्ञसिद्धये। यज्ञीय शकलेनैव रेखाः षट् द्वादशांगुलाः॥ (म्रश्वलायन स्मृति)

रेंत से व्याप्त होम वेदी पर यज्ञ सिद्धि के लिए यज्ञ के लिए योग्य सिमत् से बारह ऋंगुल प्रमाण वाले ६ रेखायें खींचना चाहिये।

पूर्वी प्रजापते रूपा लिख्यते चोदगायता। दक्षिशा ताररूपा स्यात् सावित्र्याश्चोत्तरा स्मृता॥ मध्ये तिस्त्रः त्रिवेदानां रूपाः प्रागायता मताः। स्मर्तव्या इति तारेखा वैदिकं कर्म कर्तृभिः॥ प्रजापतेः समुत्पन्ना स्ताराद्याः श्रुतयोखिलाः। तेषां तु कर्मनानात्वात् नानात्विमह संस्मृत्म्॥

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च उमालक्ष्मीसरस्वती। षड्रेखा देवताः प्रोक्ता स्रक्षतांस्तासु निक्षिपेत् ॥ (स्थलायन स्मृति)

सबसे पहले दक्षिण से उत्तर की ग्रोर एक १२ ग्रंगुल की रेखा खीचे। यह प्रजापित का रूप है (ग्रं)। दक्षिण भाग में पश्चिम से पूर्व की ग्रोर जाने वाले एक १२ ग्रंगुल प्रमाण का रेखा खीचे। यह प्रणव स्वरूप है (ब)। उत्तर दिशा में पश्चिम से पूर्व की ग्रोर जाने वाला एक १२ ग्रंङ्गुल प्रमाण का रेखा खीचें। यह सावित्री रूप है (ब)।

इन दोनों के बीच में तीन रेखायें पश्चिम से पूर्व की ग्रोर खीचें। ये भी १२ ग्रङ्गुल प्रमाण के हों। यह तीन वेदो के स्वरुप है। वैदिक कर्म करने वाले इन तीन रेखाग्रों को खीचते समय तीन वेदो का स्मरण करना चाहिये। प्रजापित ब्रह्मा से उत्पन्न प्रणवादि सभी श्रुतियाँ ग्रनेक रूप में हैं। ग्रत: ये रेखयें भी ग्रलग-ग्रलग रहना चाहिये। इनका मिलन नहीं होना चाहिये।

पहले खीचें दक्षिण से उत्तर की ग्रोर की रेखा में ब्रह्मा जी को (ग्र) अब्रह्मणे नमः। दूसरी बार खीचें दक्षिण में स्थित पश्चिम से पूर्व की ग्रोर खीचें रेखा में विष्णु जी को (ब) अविष्णवे नमः। तीसरी बार खींचे उत्तर में स्थित पश्चिम से पूर्व की ग्रोर खींचे रेखा में रुद्र जी को (ब) अरुद्राय नमः एवं बीच के तीन रेखाग्रों में दक्षिण से उत्तर की ग्रोर क्रम से उमा, लक्ष्मी, सरस्वती जी का ग्रावाहन कर पञ्चोपचार या षोडशोपचार से पूजन करना चाहिये।

ॐ उमायै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ सरस्वतत्यै नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणं त्रावाहयामि। ॐ विष्णुवे नमः। विष्णुं त्रावाहयामि। ॐ रुद्राय नमः। रुद्रं त्रावाहयामि। ॐ उमायै नमः। उमां त्रावाहयामि। ॐ लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीं त्रावाहयामि। ॐ सरस्वत्यै नमः। सरस्वतीं त्रावाहयामि। ॐ त्रावाहित देवताभ्यो नमः। ॐ लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐ हं त्राकाशात्मने पृष्णं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं त्रान्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं त्रावात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि। ऋनेन पूजनेन त्रावाहित देवताः प्रीयन्ताम्। त्रिणा विधान प्रतिष्ठा विधान प्रतिष्ठा विधान

ऋषि प्रतिष्ठा विधान—यहाँ तक होम वेदी निर्माण विधि, होम वेदी पर देवताओं का आवाहन पूजन संपन्न हुआ। आगे अग्नि प्रतिष्ठा विधान विर्णित है। ततः तैजसेन असंभवे मृन्मयेन वा पात्रयुग्मेन संपुटीकृत्य सुवासिन्या श्रोत्रियागारात् स्वगृहाद्वा समृद्धं निर्धूमं अग्नि आहतं स्थंडिलात् आग्नेय्यां निधाय। उसके बाद लोहपात्र में (संभव हो तो ताम्र पात्र में) यदि न हो तो मिट्टी के पात्र में श्रोतियों के घर से या अपने घर से लाकर, धुऐं रहित अंगारों को पात्र में रखकर दूसरे पात्र से ढकर लाना चाहिये। लाए हुए अग्निपात्र को स्थिएडल होमवेदी के आग्नेय दिशा में रखना चाहिये।

एह्यग्रेराहूगगोगोतमोग्निस्त्रिष्टुप् ऋग्न्याह्वाने विनियोगः। एह्यंग्नइहहोता निषीदादंब्धः सुपुंर प्ताभंवानः॥ ऋवंतांत्वारोदंसीविश्वमिन्वेयजांमहे सौमनुसायं देवान्। (ऋग्वेद १.७६.२)

ॐ जुष्टोदमूंना्ऋतिथिर्दुरो्गा इमं नों युज्ञमुपंयाहि विद्वान्। विश्वांऋग्ने ऋभियुजों विहत्यां शत्रूयतामाभंराभोजनानि॥

(मृग्वेद ५.४.५)

पहले मन्त्र से ऋग्नि देव को ऋहिन करें। एवं दूसरे मंत्र से नमस्कार करें। ऋगच्छादनं दूरीकृत्य फिर ऊपर ढके पात्र को निकालें। समस्तव्याहृतीनां परमेष्ठीप्रजापतिः प्रजापतिर्बृहृती। ऋग्निप्रतिष्ठापने विनियोगः।



उभूर्भुवः स्वः। इति ग्रात्माभिमुख पाणिभ्यां षट्सुलेखासु ग्रमुक नामानमग्निं प्रतिष्ठापयामि इति ग्रग्निं प्रतिष्ठाप्य। ऊपर के मन्त्र कहकर ग्रग्नियुक्त पात्र को ग्रप्ति सामने हाथों में पकड़कर एक बार पदिक्षण कर जो ६ रेखायें है, उन पर कर्माङ्ग देवता नामक ग्रग्नि को प्रतिष्ठापित कर रहा हूँ कहकर रखना चाहिये। रखते समय हाथ कर्तरी शकल में होना चाहिये। कैची जैसे (cross) ग्रग्न्याहरण पात्रयोः ग्रक्षतैः सह उदकमासिच्य इन्धनंप्रोक्ष्य वेणु धमन्या प्रबोधयेत्। ग्रग्नि लायें दोनों पात्रों में ग्रक्षत डालकर जल सींचकर उसे बाहर कर देवें। फिर लकडियों को जल से प्रोक्षण कर बॉस की या लोहे की धमनी फुकनी से फुंककर ग्रग्नि को प्रज्वलित करें। ग्रग्निनाग्निः कारवोमेधातिथिः ग्रग्निर्गायत्री ग्रग्नि सिमन्धने विनियोगः।

ॐ ग्रुग्निनाग्निः समिध्यते क्विगृहपंतिर्युवां। हृव्यवाङ्जुह्वांस्यः।

इस मन्त्र से लकड़ी डालना चाहिये।

प्रक्षिपेत् तासु रेखासु विह तारमनुस्मरन्। शुद्धं प्रदक्षिशानीत मनलं शुद्धपात्रगम्॥ १॥ प्राग्घोष्यद् देवताः स्मृत्वा होतातत्रात्मविश्रुतान्। तासामिभमुखत्वा स्वाभ्यात्मं निक्षिपेतच्छुचिं॥ २॥ त्रायुर्हरित होतुस्तु निक्षिप्तो ज्वलितोनलः। पुनर्नष्टश्च भूमिस्थो मुखेन च विबोधितः॥ ३॥ शुचित्व प्राप्तये प्रोक्ष्य काष्ठानग्रौ विनिक्षिपेत्। ज्वलियत्वानलं सम्यगन्वाधानं समाचरेत्॥ ४॥ (म्राधलायन समृति)

ये सभी प्रमाण श्लोक है। इनमें प्रयोग के तात्विक विचार है। न कि प्रयोग। प्रणव का स्मरण करते हुए उन छ: रेखा औं पर शुद्ध पात्र में स्थित अग्नि का प्रदक्षिणा क्रम से लाकर रखना चाहिये॥ १॥ फिर यज्ञ करने वाले कर्माङ्ग देवता नामक अग्नि का स्मरण कर अग्नि को अपने अभिमुख करके शुद्ध भाव से छोड़ना चाहिये। अग्नि को जब आगे करते हैं तब अग्नि का दाहिना भाग अपने बायें हाथ की और आता हैं इसके निवरण के लिए हाथ को (cross) कैंची जैसे करके दाहिने हाथ से दाहिना भाग एवं बायें हाथ से वामन भाग को पकड़ते हैं। २॥ प्रतिष्ठापित अग्नि अपने आप ही जले तो, या बुक्त जाये तो, या मुँह



से फूॅक मारकर जलाये तो ऋत्विज का ग्रायु हरण होता है। ग्रत: फूॅक मारकार लजाये तो ऋत्विज का ग्रायु हरण होता है। ग्रत: फूकनी से जलाना चाहिये या हाथ को ग्रागे कर हाथ पर से फूॅक सकते है। मुख की थूक ग्राग्न में नहीं पड़ना चाहिये॥ ३॥ शुचित्व प्राप्ति के लिए काष्ठों को प्रोक्षण कर ग्राग्न में डालना चाहिये। स्वयं ही जलाना चाहिये। ग्राग्न के जलने के बाद ग्रन्वाधान करना चाहिये॥ ४॥ विज्ज्योतिषेति जानो वृषोग्निस्त्रष्ट्रप् ग्राग्न ज्वलने विनियोग:।

ॐ विज्ज्योतिंषा बृहता भांत्यग्निराविर्विश्वांनि कृगाते महित्वा। प्रादेवीर्मायाः संहते दुरेवाः शिशीते शृंगेरक्षंसे विनिक्षे। (मानेद ५.२.६)

इन मन्त्र से ऋग्नि ज्वलन करना चाहिये।

अग्निमृतिंध्यान — चत्वारिश्रृंगागोतमो वामदेवोग्निस्त्रिष्ठप्। अग्निमृतिं ध्याने विनियोग:।

ॐ चृत्वार् शृंगात्रयो ऋस्य पादा द्वे शीषे सप्तहस्तांसो ऋस्य। त्रिधांबृद्धो वृष्पोरोरवीति महोदेवो मर्त्याऽँग्राविवेश।। सप्तहस्तश्चतुः शृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः। त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः।। स्वाहांतुदक्षिरोपार्श्वे देवीं वामेस्वधां तथा। बिभ्रद्दक्षिरा हस्तैस्तु शक्तिमन्नंस्तुचं स्तुवं॥ तोमरंव्यजनंवामैर्घृतपात्रं च धारयन्। मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्शो महौजसः। धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥ ऋत्याभिमुख मासीन एवं रूपो हुताशनः। (ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्रिमुख प्रकररा)

इन मन्त्रों को पढकर ध्यान करें। ग्रग्ने ग्रच्छावदेत्यस्य मन्त्रस्य ग्रग्निस्तापसोग्निरनुष्टुप् ग्रग्नि स्वाभिमुखीकरणे विनियोगः।

ॐ ऋग्ने ऋच्छांवदेहनं: प्रत्यङ्गनं: सुमनां भव। प्रनोयच्छ विशस्पते धन्दा ऋसि न्स्त्वम्॥ (ऋग्वेद १०.१४१.१)



ॐ एष हि देवः प्रदिशो नु सर्वाः पूर्वो हि जातस्य उ गर्भे ऋंतः। स विजायंमानस्य जिन्घ्यमांगाः प्रत्यङ्मुखांस्तिष्ठाति विश्वतोंमुखः॥ (यजुर्वेद-मारायका-महानारायकोपनिषत्)

हे ग्रग्ने शाग्डिल्यगोत्र मेषारूढ वैश्वानर प्राङ्मुखः सन् ममाभिमुखो वरदस्सुप्रसन्नो भव। इतना कहकर ध्यसान से सम्मुख करके ग्रन्वाधान करें। ग्रन्वाधान—ग्रन्वाधानाभिधं कर्म क्रियते सर्वकर्मसु। निमन्त्रगार्थं देवानां होतव्यानां च होतृभिः॥ (ग्राश्चलायन स्मृति)

सभी कर्मों में अन्वाधान कर्म करना चाहिये। ऋत्विज अपने यज्ञ में जिन-जिन देवताओं को आहुतियाँ देते हैं उन्हें पहले बुलाकर सूचित करना चाहिये। यह क्रिया अन्वाधान कहलाता है। आचम्य प्राशानायम्य देशकालौस्मृत्वा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ एतत् कर्म करिष्ये। आचमन कर (यदि बीच में उठ के बार गये हो तो), प्राशायाम करके देशकालसंकीर्तन पूर्वक संकल्प लें। तत्र देवता परिग्रहार्थं अन्वाधानं करिष्ये। सिमत् द्वयं आदाय। (दो सिमतों को हाथ में लेकर) अस्मिन् अन्वाहितेग्रौ जातवेदसमिग्नं इध्मेन प्रजापितं प्रजापितं चाघारदेवते आज्येन अग्नीषोमौचक्षुषी आज्येन। इन अग्नियों में जातवेदािग्न को सिमत् से, आधार देवता प्रजापित एवं प्रजापित को घी से, चक्षुष् अग्नि सोम को घी से होम करना चाहिये। यह पूर्वाङ्ग है। सभी यज्ञों में इतना अन्वाधान होता है। आगे यज्ञों के अनुसार बदलता है।

जैसे सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ — अग्निं वायुं सूर्य प्रजापितं च आज्यद्रव्येश प्रधान देवतां आदित्यं अधिदेवतामग्निं प्रत्यिधदेवतां रुद्रं अर्क सिमत् चर्वाज्य द्रव्यैः प्रधान देवतां सोमं अधिदेवतां अपः प्रत्यिधदेवतां गोरीं, पलाशसिमत् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां अगारकं अधिदेवतां भूमिं, प्रत्यिधदेवतां स्कन्दं खिदरसिमत् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बुधं, अधिदेवतां विष्णुं प्रत्यिधदेवतां पुरुषं अपामार्ग सिमत् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बृहस्पितिं, अधिदेवतां इन्द्रं, प्रत्यिधदेवतां, ब्रह्माणां पिप्पल सिमत् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां शुक्रं, अधिदेवतां इन्द्रं, ग्रीदुम्बर सिमत् चर्वाज्यद्रव्यैः प्रधानदेवतां शिनं अधिदेवतां प्रजापितं प्रत्यिधदेवतां यमं, शमीसिमत् चर्वाज्यद्रव्यैः, प्रधान देवतां राहुं अधिदेवतां सर्पान् प्रत्यिधदेवतां मृत्युं, दूर्वा सिमत्

चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां केतुं, ऋधिदेवतां ब्रह्मागां प्रत्यिधिदेवतां चित्रगुप्तं कुशसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः प्रधान देवताः ऋष्टाविंशति संख्यया ऋधिदेवताः प्रत्यिधिदेवताः दशांशसंख्यया विनायकं दुर्गां क्षेत्रपालं वायुं आकाशं ऋथिनौ क्रतु साद्गुर्ग्य देवताः प्रधान विंशांश संख्यया इन्द्रं ऋग्निं यमं निर्ऋतिं वरुगां वायुं कुबेरं ईशानं एताः क्रतुसंरक्षणदेवताः प्रागुक्त समित् चर्वाज्यद्रव्यैः प्रधान विंशांश संख्याया ऋग्निं वायुं सूर्यं प्रजापितं च ऋाज्यद्रव्येण, रुद्र सर्वाद्भुत शान्ति होमे प्रधान देवतां सूर्यं ऋष्टोत्तर शतसंख्यया चरु द्रव्येण,सूर्यं रुद्रिधपितं रिविकिरणं ईश्वरं सर्वोत्पातशमनं ऋग्निं पृथिवीं महान्तं वायुमन्तिरक्षं महान्तं ऋतित्यं दिवं महान्तं प्रजापितं चन्द्रमसं नक्षत्राणि दिशो महान्तं च एताः देवताः ऋाज्य द्रव्येण एकैक संख्यया चरु शेषेणस्विष्टकृतमिग्नं इध्मसन्नहनेन रुद्रं ऋयासमिग्नं देवान् विष्णुं ऋग्निं, वायुं सूर्यं प्रजापितं च एताः प्रायश्चित्त देवता ऋाज्येन ज्ञाताज्ञात दोष निबर्हणार्थं त्रिवारमिग्नं मरुतश्चाज्येन विश्वान् देवान् संस्नावेण एताः ऋङ्गदेवताः प्रधानदेवताः सर्वाः सिन्निहिताः सन्तु एवं सांगोपाङ्गेन कर्मणा सद्यो यक्ष्ये।

॥ सर्वाद्भुत शान्ति याग का श्रन्वाधान समाप्त॥

शेष यज्ञों के लिए अन्वाधान अन्त में लिखा जायेगा। समस्तव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापितः प्रजापितर्बृहृती अन्वाधान समिद्धोमे विनियोगः। अभूर्भुवः स्वः स्वाहा। प्रजापतय इदं न मम। इतना कहकर हाथ में रखे दो समित् को अग्नि में डालना चाहिये।

म्रन्वाधान का मर्थ—

- १. ग्रिय, वायु, सूर्य, प्रजापितयों को एक-एक घी की ग्राहुतियाँ देने चाहिये। मन्त्रों को ग्रागे प्रयोग में लिखा जायेग।
- २. प्रधान देवता ग्रादित्य को, ग्रधिदेवता ग्रग्नि को, प्रत्यिध देवता रुद्र को ग्रर्क समित्, चरु एवं घी से ग्राहुतियाँ।
- ३. प्रधान देवता चन्द्र को ऋधिदेवता जल, प्रत्यिधदेवता गौरी को पलाश सिमत्, चरु एवं घी से ऋहितियाँ।

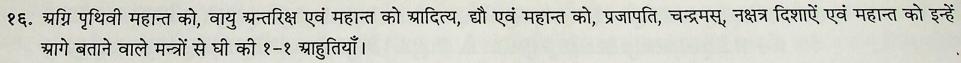


भग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

द्वितीय दिन

- ४. प्रधान देवता ग्रंगारक को, ग्रधिदेवता भूमि को, प्रत्यिध देवता स्कन्द को खिदर सिमत् चरु एवं घी से ग्राहुतियाँ।
- ४. प्रधान देवता बुध को, ऋधिदेवता विष्णु को, प्रत्यिध देवता पुरुष को ऋपीमार्ग समित् चरु एवं घी से ऋहितियाँ।
- ६. प्रधान देवता बृहस्पति को, अधिदेवता इन्द्र को प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा को पिप्पल (अश्वत्थ) समित् चरु एवं घी से आहुतियाँ।
- ७. प्रधान देवता शुक्र को, ऋधिदेवता इन्द्रागों को, प्रत्यधिदेवता इन्द्र को ऋषु म्बर समित् चरु एवं घी से ऋहितयाँ।
- प्रधान देवता शिन को, अधिदेवता प्रजापित को, प्रत्यिधदेवता यम को शमी सिमत् चरु एवं घी से आहुतियाँ।
- £. प्रधान देवता राहु को, ऋधिदेवता सर्पों को प्रत्यिध देतवा मृत्यु को दुर्वा सिमत् चरु एवं घी से ऋहितयाँ,
- १०. प्रधान देवता केतु को ऋधिदेवता ब्रह्मा को प्रत्यिध देवता चित्रगुप्त को कुश सिमत् चरु एवं घी से ऋहितियाँ। प्रधान देवता को २० ऋहितियाँ, ऋधि देवता प्रत्यिधदेवताओं को उसके दशांश यानि ३-३ ऋहितियाँ।
- **११.** विनायक, दुर्गा, क्षेत्रपाल, वायु म्राकाश एवं म्रश्विनी देवताम्रों को जो कि यज्ञ को सद्गुरा प्रधान करने वाले हैं उन्हें विंशांश संख्या (प्रधान का १/२० भाग म्रर्थात् २-२) सिमत् चरु म्राज्य की म्राहुतियाँ।
- **१२.** इन्द्र ग्रिग्न यम निर्मित वरुगा वायु कुबेर (सोम) ईशान इन ग्रष्टिदिक्पालक जो कि यज्ञ के संरक्षक है उन्हें विंशांश संख्या (यानि प्रधान देवता का १/२० भाग ग्रर्थात् २-२) सिमत् चरु ग्राज्य की ग्राहुतियाँ।
- १३. ऋग्नि वायु सूर्य एवं प्रजापित को एक-एक घी की ऋाहुतियाँ।
- १४. सर्वाद्भुत शान्ति याग में प्रधान देवता रुद्र को १०० म्राहुतियाँ चरु द्रव्य से,
- १५. सूर्यं रूद्राधिपतिं , रिविकिरगां, ईश्वर, सर्वोत्पात शमन, इन्हें नाम मन्त्र से एक-एक घी की म्राहुतियाँ।

多数的数据的数据数据的数据数据



- १७. बचे हुए चरु से ग्रल्प प्रमारा में -हमेशा देने वाले प्रमारा से कुछ ग्रधिक ग्रास प्रमारा स्विष्टकृत् ग्रग्नि को ग्राहुति देवे।
- १८. इघ्म १५ सिमतों का एक समूह उसके बन्धन रस्सी को रुद्र को ऋहुति देवे। प्राय: इसे कुश से बाँधते है। ३६ कुश हो उन्हें चोटी जैसे गूँथना चाहिये वे १२ ऋंगुल प्रमाण हो।

इध्य—यज्ञे पञ्चदशेध्मानि तिथि रूपाशि होतृभिः। स्मर्तव्यानि प्रमाशोन चतुर्विशांङ्गुलानि तु॥ (माधलयन स्मृति)

यज्ञ में १५ सिमधों को जो कि २४ ग्रङ्गुल लगभग १२ '' लम्बे हो उनका समूह इध्म कहलाता है। ये १५ तिथियों के प्रतीक है।

रज्ज-शक्तिर्वामकरे पुंसां वसतीन्दुस्वरूपिशी। शिवो विद्वमयश्चापि विप्राशां दक्षिशोकरे॥ १॥ शक्तियेवतु दृढीकारः कृतानां कर्मशां भवेत्। सर्वेषामिति यत्तस्माद्रज्जुं तद्वत् समाचरेत्॥ २॥ दक्षोपिर करं वाम करं कृत्वा कृतैर्बुधः। रज्जुं करोति तावच्च तदालभ्यक्रियाञ्चरेत्॥ ३॥ उपिरिस्थतमाविश्य शक्तिर्वसित शाश्चती। स्त्रियं वा पुरुषं वान्यं विजृंभत्यिप कर्मसु॥ ४॥ कल्याणीति कालेन कालकणीत संस्थान कर्म सिन्दर्शं कालकणीतं ज्यात्॥ ४॥

कलयामीति कालेन कालरूपानि संस्मरेत्। इध्मानि कर्म सिद्ध्यर्थं कालरूपमिदं जगत्॥ ४॥ (आधलायन स्मृति)

मनुष्य के बायें हाथ में चन्द्रकलास्वरूपिणी शक्ति का ग्रावास हैं, ब्राह्मणों के दाहिने हाथ में ग्रिग्नस्वरूप शिव वास करते हैं ॥ १ ॥ किये गये कर्मों का दृढीकरण शिक्त से ही होता है। ग्रत: उसी क्रम से रज्जु (रस्सी बनाना चाहिये) ॥ २ ॥ इध्म शिप रूप, रज्जु शक्ति रूप ग्रत: रज्जु ग्रावश्यक है। दाहिने हाथ पर बायें हाथ रखकर रस्सी बनाना चाहिये। इसी से कर्म प्रारम्भ करना चाहिये॥ ३ ॥ इध्म को बाँधने वाली रज्जु हमेशा ऊपर रहती है। हमेशा शक्ति की

भग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

द्वितीय दिन

ही प्रधानता है। उसी से सभी कर्म प्रकाशित होते हैं॥ ४॥ यह जगत् कालरुप है एवं शक्ति कालरूपी है। उनका स्मरण करते हुए कर्म सिद्धि के लिए इध्म एवं रज्जु का निर्माण करना चिहये॥ ४॥ प्रदेशमात्रं षट्त्रिंशत् दर्भान् त्रिसन्धि। रज्जु में १२ ग्रंगुल लम्बे ३६ कुश लेना चाहिये। ३+३+३ को चोटी बाँधे फिर ३+३+३ जोड़कर चोटी बाँधे फिर ३+३+३ जोड़कर चोटी बाँधे तब रज्जु बना। बिहिष्—ग्राज्य पात्र (घी के पात्र रखने के लिए ग्रासन)

बर्हिषो बन्धनं पूर्वं मुष्टिमात्रस्य हि स्मृतम्। सर्वोषधि स्वरूपस्य देवानां सुप्रियस्य च॥१॥ बहुनां संग्रहार्थाय बर्हिषो बन्धनं भवेत्। भूमौ निहितया रज्वा बन्धनं चोदगग्रया॥ २॥ भूमौ सन्निहितान्येव बध्यन्ते दाद्यसिद्धये। भूमि जातानि सर्वाशि वस्तूनीह विचक्षगौ:॥ ३॥ ऋथ प्रांचंनयेदग्रं रज्वाग्रन्थिमयं तथा। बर्हिर्द्विवारमावृत्या जलंस्पृष्ट्वोदृतं भुवः॥ ४॥ तथा सकृत् समाहृत्य ग्रन्थिं कृत्वेध्ममेव च। निधाय दक्षिरोवह्रेश्रुचावपउपस्मृशेत्॥ ४॥ दुर्गाहत्वाच्च सूक्ष्मत्वात् इध्म ग्रन्थिर्भवेदिह। कालरूपी मनुष्यागा मेकत्वात् सकृदाकृति:॥६॥ स्रोषधीनां बहुत्वे तु बन्धनं स्यात् द्विरावृतिः। त्रिग्रन्थिः पारवश्यत्वात् शुद्धर्थं स्पर्शनंत्वपाम्॥ ७॥ द्विधा स्यात् बन्धनं तेषां पीडादोषापनुत्तये। स्रधः स्पृशेत् च रज्वग्रं स्रधोरेतोमयं नयेत्॥ 🖘॥ निर्वीर्यत्वं भवेत् तेषां समिधां छेदनादिह। बर्हिषां च तदावीर्यं संसजामीत्यधोनयेत्॥ ६॥ संग्रहः सर्ववस्तूनां दक्षिगो प्रविशिष्यते। तस्मात् संगृह्य निर्बध्य बह्नेः दक्षिगातः क्षिपेत्॥ १०॥ (ग्राथलायन स्मृति)

एक मुष्टि मात्र कुश को बर्हिष् के लिए रखना चाहिये। बर्हिष् सर्वोषधि स्वरूप है, यह देवताग्रों को प्रिय है॥ १॥ ग्रनेक कर्मों के ग्राधारमूत होने के

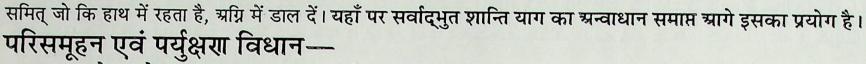
CCO. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.



कारण बर्हिष को बाँधकर रखना चाहिये। भूमि पर उत्तराभिमुख रखे रज्जु से बर्हिष को बाँधना चाहिये॥ २॥ भूमि पर जो भी वस्तुऐ उपलब्ध हैं उन्हें उपयोग के लिए एवं दृढता प्राप्ति के लिए बाँधकर संग्रह करने की परम्परा है॥ ३॥ बाँधने के बाद बंधा हुम्रा बर्हिष् का गाँठ वाला भाग पूर्वाभिमुख होना चाहिये। उसे हाथ में लेकर दोबारा घूमाकर बाँधना चाहिये। बाँधने के बाद हाथ धो ले। इस इसे बगल में रखें (दिक्षण में)॥ ४॥ उसी प्रकार इध्म को भी एक बार रज्जु से बाँधकर उसे म्रिग्न के दिक्षण में शुद्ध भूमि पर रखें। पुन: हाथ धो लें॥ ४॥ इसे पकड़ने में कठिन होने के कारण एवं इस की सूक्ष्मता के कारण इध्म को बाँधना म्रावश्क है। इध्म शिवरुप (कालरूप) होने के कारण एक बार ही इसे बाँधना चाहिये॥ ६॥ इध्म एवं म्रोषध म्राधक होने पर दो बार घूमाकर तीन गाँठ लगाकर बाँधकर रखना चाहिये। इसे भी बाँधने के बाद हाथ धे लेना चाहिये॥ ७॥ इध्यम एवं म्रोषधियों को पीडा (नष्ट) न हो इसलिए दो प्रकार का बन्धन बताये हैं। रज्जु रेतस्वरूप होने के कारण भूमि पर उसका स्पर्श होना चाहिये॥ ६॥ काटने से समित् निर्वियं थे, बर्हिष: भी निर्वीयं थे, रज्जुबन्धन से उनमें वीर्यसञ्चार (शिक्त सञ्चार) होता है। इसिलए रज्जु का भूस्पर्श म्रावश्यक है॥ ६॥ सभी वस्तुम्रों का संग्रह दिक्षण दिशा में करना चाहिये। इसिलये सभी वस्तुम्रों को ठीक तरह से बाँधकर दिक्षण दिशा में रखना चाहिये॥ १०॥ यहाँ तक प्रमाण श्लोक है।

- १६. ऋयसमग्नि को मन्त्रों से एक ऋाहुति घी से प्रायश्चित्त देवता।
- २०. देवान्, विष्णु, ऋग्नि, वायु, सूर्य, प्रजापित इन प्रायश्चित देवताओं को घी से १-१ ऋहित देवें।
- २१. जानते हुए या ग्रनजाने में हुए दोष परिहार के लिए ग्रग्नि को तीन ग्राहुतियाँ, मरुत् को एक ग्राहुति मन्त्रों से घी से ग्राहुति देवें। शेष घी से विश्वेदेवताग्रों को एक ग्राहुति देवें।

इस प्रकार ग्रङ्गदेवता एवं प्रधान देवताऐं सभी पास में ही रहें। इस प्रकार ग्रङ्ग उपाङ्ग सहित कर्म से याग करूँगा ''मन में प्रतिज्ञा करना चाहिये। यह ग्रन्वाधान देवताग्रों को यज्ञ से पहले निमन्त्रण देने जैसी प्रक्रिया है। ताकि ग्रपने यज्ञ भागों को लेने के लिए वे उपस्थित रहें। इतना कहकर ग्रन्वाधान



करेगा तोयमादाय प्रागराभ्य प्रदक्षिगाम्। परितो मार्जनं यत् तत् म्राहुः परिसमूहनम्॥१॥ होता पूर्वीदिदिक्ष्वग्नेः म्राशाः म्रालभते त्रिशः। चतुःकृत्व स्पृशेत् चापः कुर्वन् परिसमूहनम्॥२॥ म्राशादेव्यः स्थ्ता वह्नेर्बहिर्यज्ञस्य पालने। इति स्मृत्वा सुरेभ्यस्तु संमानार्थं त्रिशः स्पृशेत्॥३॥ (म्राश्वलायन स्मृति)

हाथ में जल लेकर पूर्विदशा से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणाकार में चारों ग्रोर मार्जन करने की क्रिया परिसमूहन कहलाता है॥ १॥ हवनकर्ता ग्रिग्न से पूर्विद दिशाग्रों में तीन बार जल युक्त हाथ से स्पर्श करना चाहिये, चार बार हाथ धो लेना चाहिये। यह परिसमूहन है॥ २॥ दिग्देवताऐं ग्रिग्न के बाहर यज्ञ की रक्षा के लिए खड़े हैं समभकर उन देवताग्रों को गौरव देने के लिए तीन बार जलयुक्त हाथ से चारों ग्रोर स्पर्श करना चाहिये॥ ३॥

परिसमुह्य परिस्तृशीयात्। तच्चेत्थम्।—उपरोक्त क्रम से परिसमूहन पर परिस्तरण डालना चाहिये। वह इस प्रकार है। ऋग्न्यायतनाद् ऋष्टांगुल परिमिते देशे ऐशानीं दिशं ऋरभ्य प्रदक्षिणं संमतात् सोदकेन पाणिना त्रिः परिमृज्य दशांगुलिमिते देशे प्राच्यादिषु पूर्वं उपरिनिहितदर्भेः परिस्तृशीयात्।

स्थिगिडले होम वेदी के म्राठ म्रंगुल बाहर ईशान्य दिशा से प्रारम्भकर प्रदक्षिणा क्रम से चारों म्रोर जलयुक्त हाथ से तीन बार परिमार्जन करें। स्थिगिडले होमवेदी के दस म्रंगुली बाहर पूर्व से प्रारम्भकर सभी दिशाम्रों में कुशों को बिछाना चाहिये।

तत्र प्राच्यां प्रतीच्यां च उदगग्रादर्भाः म्रवाच्यामुदीच्यां च प्रागग्राः पूर्वपश्चिमपरिस्तरणमूलयोरुपरि दक्षिणपरिस्तरणं उत्तरपरिस्तरणंतु तदग्रयोरधस्तात्। पूर्व एवं पश्चिम दिशा में कुशाग्र (कुश का म्रागे का भाग) उत्तराभिमुख हो, दक्षिण एवं उत्तर दिशा में कुशाग्र पूर्वाभिमुख होना चाहिये। पूर्व एवं पश्चिम दिशा SESECTION OF SECTION O

C0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection

की कुशों के (परिस्तरण) ऊपर दक्षिण का परिस्तरण, एवं पूर्व पश्चिम कुशों के परिस्तरण के नीचे उत्तर का परिस्तरण होना चाहिये। परिस्तरण कुशों के लिए कोई निश्चित संख्या नहीं हैं। ग्रिधिक उपलब्ध होने पर ग्रिधिक विछावे। कम होने पर चार-चार बिछायें। उतना ही न हो तो तीन-तीन बिछायें।

परिस्तृगात्यासनार्थं स्राशेशानां त्रिभिस्त्रिभिः। कुशैः प्रागादिदिक्ष्वत्र कृत्वा परिसमूहनम्॥ १॥ (म्राश्वलायन स्मृति)

त्राशापालांस्तु शक्रादीनासनेषु समावहेत्। दिक्पालकों के ग्रासन के लिए यह परिस्तरग बिछायें जाते हैं। एक-एक दिशा में तीन कुश डालना चाहिये। उन पर इन्द्रादि दिक्पालकों का ग्रावाहन करना चाहिये।

ततो ऋग्नेर्दक्षिरातो ब्रह्मासनार्थं उत्तरतश्च पात्रासादनार्थं कांश्चित्प्रागग्रान् दर्भानास्तृराीयात्। (ऋषलायन स्मृति)

इसके पश्चात् ऋग्नि के दक्षिण दिशा में ब्रह्मा के ऋगसन के लिए एवं उत्तर में यज्ञपात्रों को रखने के लिए कुछ कुशाओं को पूर्वाभिमुख बिछाना चाहिये। ऋग्नैरैशानतिस्त्ररंभसापरिषिच्य उत्तरास्तीर्शेषु दर्भेषु दिक्षणसव्यपाणिभ्यां क्रमेण चरु स्थाली प्रोक्षणयौ, दर्वी सुवौ, प्रणीताज्यपात्रे, इध्माबर्हिषी इति द्वे द्वे पात्रे उदगपवर्ग प्राक्संस्थंयुब्जान्या सादयेत्। ऋग्नि के चारों ऋगेर फिर से तीन बार ईशान्य से प्रदक्षिणाकार में परिषेचन करें।

परिषेचन का प्रमारा श्लोक — नदीनां पुलिनत्वस्य संसिध्यै यज्ञकर्मगाम्। त्रिशः पर्युक्षगां होता करोत्यद्भः प्रदक्षिगाम्।।

जेसे निदयों को रोकने के लिए तट होता है, उसी प्रकार पिरस्तरण भी तट है, जिससे यज्ञ कर्मों की सिद्धि होती है। उन पिरस्तरण कुशों के ऊपर तीन बार पिरषेचन करें। ईशान्य से ईशान्य प्रदक्षिणाकर में एक बार, पुन: दिशातिक्रमण न करते हुए फिर से दुबारा जल लेकर ईशान्य से ईशान्य तक, तीसरी बार भी ऐसा ही करें।

उत्तर में बिछे कुशाम्रों के ऊपर दाहिने एवं बायें हाथ से कर्तरि हाथ से (cross hand)

१. चरुथ्थाली एवं प्रोक्षगी पात्र २. दर्वी एवं स्नुवा ३. प्रगीता एवं ग्राज्यपात्र ४. इध्म एवं बर्हिष् इन्हें एक-एक बार उठाकर रखना चाहिये।

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

द्वितीय दिन

A B C D E F G H

यदि केवल घी का होम हो ता—१. प्रोक्षणी स्नुव, २. प्रणीता एवं ऋण्यपात्र, ३. इध्म एवं बर्हिष् को एक-एक बार उठाकर रखना याहिये। इन पात्रों को उत्तर दिशा में, पहले दो पात्र पश्चिम में, ऋगला उससे ऋगे पूर्व में इसी क्रम से रखना चाहिये। सभी पात्र उत्तर में ही रखें

H G

FE

DC

BA

कृते पर्युक्षरो तीर्थदेशे पात्रािश सादयेत्। पात्राशां दोषनिर्हत्यै सादनं यज्ञकर्मसु॥ (म्राश्वलायन स्मृति)

पर्युक्षरा के पश्चात् यज्ञ पात्रों के दोष परिहार के लिए तीर्थ देश में उत्तर दिशा में सोम ईशानयोर्मध्ये पात्रों को रखना चाहिये। पहले सभी को उलटा करके रखें।

स्थालींचरोः प्रोक्षराभाजनं च दर्वीस्तुवौ सादयदर्विहोमे। पात्रं प्रशीतार्थ मथाज्यपात्रं इध्मः क्रमेरा क्रमवित् कुशैश्च॥

चरु होम में—चरुस्थाली, प्रोक्षणी पात्र, दर्वी सुव, प्रणीता म्राज्यपात्र इध्म एवं बर्हिष् को रखना चाहिये। केवल घी के होम में—प्रोक्षणी स्तुवमासाद्य चमसं चाज्यभाजनम्। इध्मा बर्हिरयं प्रोक्तं म्राज्यहोमेष्वनुक्रमात्।। (स्मृति संग्रह)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

य दिन २६



घी के होम में प्रोक्षरारी सुवाप्रसीता (चमस) ऋज्य पात्र, इध्म एवं बर्हिष् को रखना चाहिये।

विवररा (पात्रों का)—चरु स्थाली-चावल (होम के लिए) बनाने वाला पात्र, प्रोक्षरा पात्र-जल सेंचने का पात्र, दर्वी पात्र-चरु होम करने वाला कर्ची, स्तुव-घी होम करने वाला कर्ची (छोटा), प्रगीता पात्र-जल पात्र अन्त तक इसमें जल रहना चाहिये। इसका अन्त में प्रोक्षरा में उपयोग होता है।, आज्य पात्र-घी रखने वाला बर्तन, इध्म-समित् का एक बराडल, बिहिष्-एक मुष्टि कुशका बराडल

पात्रों के ऋभिमानी देवताएँ—ऋगदित्यं स्यात् चरोः पात्रं वायव्या प्रोक्षणी मता। पार्थिवं तु जुहूपात्रं स्त्रुवमाग्नेयमुच्यते॥ १॥ वारुणां पूर्णपात्रं स्यात् पावमानं घृतस्य च। ऋग्नग्नेयानीह चेक्ष्मानि सौम्या बर्हिष ईरिताः॥ २॥ ऋधोभागं समाश्रित्य स्थितानां सुरवैरिणाम्। कुर्यान् रिसनार्थाय न्यषमुखानि क्रमाद् भुवि॥ ३॥ त्रिभरिद्धरधोभागं पात्राणां प्राक्ष्यहोमकृत्। कृत्वोन्मुखानि च तथा करोति निरसन्बलात्॥ ४॥ (ऋखलायन स्मृति)

चरु पात्र के ग्रिममानी देवता ग्रादित्य है, प्रोक्षणी पात्र के वायु, दर्वी को भूमि, स्नुवपात्र को ग्रिग्न, प्रणीता पात्र को वरुण, ग्राज्य पात्र को पवमान, इध्म को ग्रिग्न, एवं बर्हिष् को सोम ग्रिममानी देवताऐं हैं॥ १-२॥ पात्रों के नीचे वास करने वाले दैत्यों का निवारण के लिए पहले पात्रों को उलटा करके रखना चाहिये। फिर पात्रों के ग्रधोभाग को तीन बार प्रोक्षण करना चाहिये तािक वे वहाँ से चले जायें तब सीधा करके सभी पात्रों को रखना चाहिये॥ ३-४॥

यहाँ तक पात्र शोधन प्रक्रिया संपन्न हुन्ना

ततः प्रोक्षगीपात्रमुत्तानं कृत्वा तत्र मनन्तर्शर्मित साग्र समस्थूल प्रादेश मात्र कुशद्वयरूपे पिवत्रे निधाय शुद्धाभिरद्भिः तत् पात्रं पूरियत्वा गंधपुष्पादि निक्षिप्य हस्तयोः मङ्गुष्ठोपकनिष्ठिकाभ्यां उत्तानाभ्यां पाणिभ्यां उदगग्रे पृथक् पिवत्रे धृत्वा मपित्ररुत्पूय सर्वाणि पात्राणि प्रोक्ष्य पात्राग्युत्तानानिकृत्वा इध्मं विसृस्य सर्वाणि पात्राणि त्रिः प्रोक्षेत्।



इसके पश्चात् प्रोक्षणीपात्र को सीधा करें। उसमें १२ म्रंङ्गुल प्रमाणवाले दो ग्रग्रयुक्त (नोक) कुशों को जो कि समान म्राकार वाले हो उसका पवित्र उस पर रखें (ग्रर्थात् दो कुश रखें)। शुद्ध जल से उस पात्र को भरना चाहिये। गन्ध पुष्प उसमें डालें। म्राकाश की म्रोर हथेली युक्त दोनों हाथों के म्रंङ्गुष्ठ एवं म्रानामिका म्रङ्गुलियों में कुशों को म्रलग-म्रलग रखकर प्रोक्षणीपात्र के जल को हिलाना चाहिये (शुद्धीकरण के लिए) ऐसे करते समय कुश का म्रग्र उत्तराभिमुख हो तीन बार इसे हिलाना चाहिये। इस जल से सभी पात्रों का एक बार प्रोक्षण करना चाहिये। फिर उन्हें सीधा करके रखें फिर सभी पात्रों को तीन बार प्रोक्षण करें।

प्रमाण श्लोक—पाक् प्रोक्षिरायां जलं स्त्राव्यं स्वाभ्यात्मं शुचिनाऽहृतम्। ग्रन्तर्धाय पवित्रे द्वे प्रागग्रे तच्च शोधयेत्॥ १॥ द्वादशांगुलविस्तारे पवित्रे जल शुद्धये। भवेतां प्रोक्षर्शीपात्रे पात्रवत् संस्कृते पुरा॥ २॥ वारु शास्याभिमुख्यत्व सिद्धयेऽध्यात्मिष्यते। जलस्य स्त्रवरो त्वापो वरु शाभिमुखे स्थिताः॥ ३॥ स पवित्रेश हस्तेश गृह्येत प्रोक्षर्शीजलं। ग्रधोनीत्वा त्रिशस्तस्याः प्रोक्षयेत् जल शुद्धये॥ ४॥ (ग्राधलायन स्मृति)

पहले प्रोक्षगीपात्र में शुद्ध जल को अपने अभिमुख डालना चाहिये। दो कुशों को पूर्वाभिमुख रखकर उस पर से जल छोडें। वे दो कुश १२ अंगुल प्रमाण के होना चाहिये। अपने संमुख करके जल को डालना चाहिये। जल पात्र का मुख डालते हुए अपने ओर होना चाहिये तािक वरुग देव अपने सामने हो। वरुग देव हमेशा पश्चिमाभिमुख रहते हैं। १-२-३॥ पवित्र को हाथ में लेकर बायें हाथ में प्रोक्षगी पात्र को लेकर तीन बार नीचे से ऊपर हाथ घुमाने से जल शुद्ध होता है। (प्रदक्षिगाकार-जल हाथ में लेवे) उसी पात्र के जल को लेकर घुमाकर फिर उसी में तीन बार छोड़ना चाहिये॥ १॥

तज्जलैः साधु संप्रोक्ष्यपात्रारायुक्तेन वर्त्मना। स्रन्तर्धाय पवित्रे द्वे पूर्शापात्रं प्रपूरयेत्॥१॥ स्रमृन्मयं भवेद्यज्ञे पूर्शापात्रमिमि स्थितिः। स्रपार्थिवमकांस्यं चाप्यसीसं चाप्यनायसन्॥२॥ (स्राक्षलायन स्मृति)



उस प्रोक्षणी पात्र के जल से सभी पात्रों का प्रोक्षण करना चाहिये। उन पिवत्रों को पूर्ण पात्र में रखकर जल से भरना चाहिये॥ १॥ पूर्णपात्र—यह पात्र मिट्टी का, कांस्य का एवं लोहे का नहीं होना चाहिये, ऋर्थात् ताम्र, लकड़ी, चाँदी या सोने का हो सकता है। पूर्ण पात्र-प्रणीता पात्र कहलाता है। प्रोक्षणीपात्र से प्रोक्षण करने के बाद, पूर्ण पात्र में कुशों को पिवत्र को रखकर उसमें भी जल भरना चाहिये।

व्रह्मा का वर्गा (ग्रिग्मुखाङ्ग)—ततो यथोक्त लक्षगं ईशानिदग् ग्रवस्थितं ब्राह्मगं ग्रिस्मन् (सर्वाद्भुत शान्ति याग) कर्मिण ब्रह्मागं त्वामहं वृगो इति तत् पागिं पागिना गृहीत्वा वृगुयात्। उसके पश्चात् श्रेष्ठ लक्षगों से युक्त ईशान दिशा में उपविष्ट ब्राह्मण को इस याग कर्म में ग्रापको मैं ब्रह्मा के रूप में वरण करता हूँ। कहकर हाथ पकडकर वरण करें।

ततः ब्रह्मा वृतोस्मि। कर्म करिष्यामि इति उक्त्वा प्राङ्मुखो तीर्थदेशे यज्ञोपवीत्यचाम्य समस्य पार्यङ्गुष्ठो भूत्वा अग्रेगाग्निं दक्षिगपादपुरः सरं परीत्य दिक्षिगतः उदङ्मुखः स्थित्वा ग्रासनार्थ दर्भेषु दिक्षिगपाम्थं एकं दर्भं अङ्गुष्टानामिकाभ्यां गृहीत्वा "निरस्तः परावसः" "इति नैर्ग्नत्यान् निरस्य, अपः स्पृष्टा इदमहम् अर्वावसोः सदने सीदामि" इति उदङ्मुख एवं वामोरोरुपरि दिक्षिगपादं संस्थाप्य उपविश्य यजमानेन गन्धाक्षतादिभिः अर्चितः सन् "ब्रह्मन् ब्रह्मासि नमस्ते ब्रह्मन् ब्रह्माग्ने नमः। ब्रह्माग्रमावाहयामि" यजमानेन आचार्येग वा आवाहितः।

इसके पश्चात् ब्रह्मा मुफे यह स्वीकार है। कहकर पूर्वाभिमुख बैठकर (उत्तर एवं ईशान्य के बीच में) ब्रह्मवस्त्र (उत्तरीय) डालकर, हाथ जोडकर (संकल्प लेते समय जैसे हाथ बंद करते हैं वैसे) ग्रग्नि के ग्रागे प्रदक्षिणाकार में दाहिने पाँव को ग्रागे कर चलकर दक्षिण में उत्तराभिमुख खड़े होकर, ग्रपने ग्रासन के कुशों में दक्षिण की एक कुश को ग्रङ्गुष्ठ एवं ग्रनामिका ग्रङ्गुलियों से खींचकर निरस्त: परावसु:'' कहकर नैमृत्य दिशा में फेंकना चाहिये। फिर हाथ धोलें।''इदमहम् ग्रवांवसों: सदने सीदामि'' मन्त्र कहकर उत्तराभिमुख ही बायें जाँघ पर दाहिने पैर को रखकर बैठना चाहिये। फिर यजमान ''ब्रह्मन् मन्त्र कहकर गन्ध ग्रक्षतों से ब्रह्मा का पूजन करें।

भग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

द्वितीय दिन

अबृहस्पतिर्ब्रह्मा ब्रह्म सदन ग्राशिष्यते बृहस्पते यज्ञं गोपाय सयज्ञंपाहि सयज्ञपतिं पाहि समांपाहीति जिपत्वा सदा यज्ञ मना एव वर्तेत। इसे कहकर ब्रह्म निरन्तर यज्ञ में ही मन लगायें। यहाँ पर ब्रह्मा का वरगादि कार्य संपन्न हुग्रा।

प्रमाग श्लोक—प्रपूर्य पूर्णपात्रं च ब्रह्माग्रामुपवेशयेत्। दक्षिग्रोग्नेः शुभे पीठे सदृशे धर्मवित्तमम्॥१॥ श॥ श्लेष्ठा दिक् दक्षिग्रा प्रोक्ता श्लेष्ठा ब्रह्मा प्रजापितः॥ २॥ श्लेष्ठायां दक्षिग्राशायां प्राकपूर्वोपरयोरिष। पिरस्तरग्रयोरूर्ध्वं वृग्गीत्वैव तु दक्षिग्रा॥ ३॥ सर्वेषां पश्लिमत्वात्तु उदीच्यायास्तु पश्लिमम्। पिरस्तृगात्यधस्ताच्य पिरस्तरग्रामुत्तरम्॥ ४॥ सर्वकर्म विशेषज्ञो ब्रह्मत्वे ब्राह्मग्रो भवेत्। न्यूनातिरिक्तभावस्य साक्षित्वे चापि कर्मग्राः॥ ४॥ श्रक्मितन्त्रविन्मूढो ब्रह्मत्वे स्याद्यदिद्विजः क्षयिष्यित हि तत् कर्म वैदिकं नात्र संशयः॥ ६॥ (ग्राथलायन स्मृति)

ब्रह्मत्वे ब्राह्मशस्तस्मात् होतुरम्यधिको भवेत्। कर्म कारण वित् शुद्धः शान्तः कर्मसु लोलुपः॥ १॥ उपरोक्त श्लोकों में ब्रह्मा के स्थान पर बैठने वाले ब्राह्मश की श्लेष्ठता, योग्यता एवं दक्षिण दिशा की प्रधानता का वर्णन है। ततो यजमानः प्रशीतापात्रमग्नेः प्रत्यङ्निधाय तत्र प्रागग्ने पवित्रे निधायोत्पूताभिरद्भिस्तत्पात्रं पूरियत्वा गन्धपुष्पाक्षतात्रिक्षिप्य सरस्वतीमावाह्म अब्रह्मत्रपः प्रशोष्यामीति पृच्छेत्।

इसके बाद यजमान (म्राचार्य) प्रगीतापात्रको म्रिग्न के पश्चिम में रखें, उसके ऊपर पवित्र को रखें, उस में शुद्ध जल को भरें। उसे गन्धपुष्प म्रक्षताम्रों से पूजन कर सरस्वती का मवाहन करें एवं ''अब्रह्मन्नपः प्रगोष्यामि'' कहकर जल लेने की मनुमित मांगना चाहिये।

ततो ब्रह्मा उपांशुभूर्भुवः स्वः बृहस्पति प्रसूतः। उच्चैः अप्रगय ईत्यनुजानीयात्। कर्ता पूर्णपात्रं मुखसममुदृत्य ग्रग्नेरुत्तरतो दर्भेषु निधाय ते पवित्रे गृहीत्वा ग्रन्थैः दर्भैः ग्राच्छादयेत।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.



भग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

द्वितीय दिन

तब ब्रह्मा जी कहते हैं— अभूर्भुवस्व: बृहस्पित प्रसूत:'' इसे उपांशु स्वर में धीरे से कहकर अप्रशाय इसे जोर से म्रनुमित प्रदान करना चाहिये। तब म्राचार्य प्रशीतापात्र को नाक के बराबर ऊँचाई तक लाकर उसे उत्तर में कुशों पर रखें। प्रशीता पात्र के ऊपर रखें कुश लेकर उसके स्थान पर दूसरे कुशों को रखना चाहिये।

प्रमाग श्लोक—ब्रह्माग्रामुपवेश्यैवं करंगृह्य निमन्त्र्यतु। स्रादरार्थं प्रगीतां तु तीर्थदेशे निधापयेत्॥ १॥ वामपाग्रौ तु तत् कृत्वा दक्षिग्रोन पिधायतु। नासिकामात्रमुद्धत्य कुशोपिर निधापयेत्॥ १॥ सौम्यं पात्रं तु तत् स्मृत्वा जलमाग्नेयमुत्तमम्। सौम्याग्नेयस्वरूपाभ्यां पाग्गिभ्यां तत्समुद्धरेत्॥ ३॥ प्राग्गस्थानं भवेद् घ्राग्गं प्राग् तत् प्राग्गं विना कृतम्। प्राग्गस्य सिन्नधानार्थं मुद्धरत्येव तत्समम्॥ ४॥ प्रदायालोकियत्वा तु गतप्राग्रौर्विनाकृतम्। ततस्तत्पात्र मुद्धृत्य तदुक्तविधिनार्पयेत्॥ १॥ गन्थपुष्पाक्षतैः सम्यगावहेच्चसरस्वतीम्। तीर्थदेशस्य सिद्धयै च ब्रह्मग्रश्चापि तृप्तये॥ ६॥ (म्राथलायन स्मृति)

ब्रह्मा का हाथ पकड़कर वरण देकर उन्हें बैठाऐं प्रणीतापात्र को ग्रादरपूर्वक उत्तर दिशा में रखना चाहियें॥ १॥ बायें हाथ में प्रणीतापात्र को पकडें। दाहिने हाथ से ढकें। एवं नाम के बराबर रखकर फिर उसे नीचे कुशाग्रों पर रखना चाहिये॥ २॥ प्रणीता पात्र सोम देवात्मक एवं उसमें विद्यमान जल ग्रिग्र देवता, बायें हाथ सोम देवात्मक एवं दाहिने हाथ ग्रिग्रदेवतात्मक ग्रतः सोम एवं ग्रिग्र देवात्मक हाथों से उसे उठाना चाहिये॥ ३॥ उसे नाम तक उठाना चाहिये क्योंकि नाक प्राणस्थान है। उस जल में प्राण नहीं है। ग्रतः जल में प्राण का सञ्चार हो इसिलए नाम के बराबर रखना चाहिये॥ ४॥ उसे नाक के बराबर लाकर पात्र को दोखना चाहिये। नाक के बराबर न ले जाने पर उस जल में प्राण नहीं रहता। ग्रतः निरर्थक हो जाता है॥ ४॥ तीर्थ देश उत्तर दिशा की सिद्धि के लिए एवं ब्रह्मा जी की तृप्ति के लिए गन्ध पुष्प एवं ग्रक्षताग्रों से सरस्वती को ग्रावाहन करना चाहिये॥ ६॥

200

ते पवित्रे चरुपात्रे निधाय यज्ञस्य प्रधान देवता मन्त्रेगा प्रोक्ष्य ऋग्नौ ऋधिश्रितय उत्तरे निधाय तत् पवित्रं गृहीत्वा। प्रगीता पात्र से निकाले हुए पवित्र को चरुपात्र के ऊपर रखकर यज्ञ के प्रधान देवता मन्त्र से पोक्षगा कर ऋग्नि के ऊपर दिखाकर उत्तर में रखना चाहिये। फिर उस पवित्र को लेकर,

ततस्ते पवित्रे ऋाज्यपात्रे निधाय तत् पात्रं स्वपुरतः संस्थाप्य तिस्मन् ऋाज्यमासिच्य ऋग्नेरुत्तरतः स्थितांगारान् भस्मना सह ऋग्ने रुद्धक् परिस्तरणात् बिहः निरुद्धा तेषु ऋाज्यपात्रम् ऋधिश्चित्य ज्वलता दर्भोल्मुकेन ऋवज्वल्य ऋङ्गृष्ठ पर्व मात्रं प्रक्षालितं दर्भाग्र द्वयं ऋाज्ये प्रक्षिप्य पुनः ज्वलता तेनैव दर्भोल्मुकेन चरुणा सह ऋाज्यंत्रिः पर्योग्नकृत्वा तदुल्मुकमपास्य ऋपः स्पृष्ट्वा तत्रस्थ मेवाज्यं। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

चरु पात्र से निकाले हुए पिवत्र को ग्राज्यपात्र पर रखें। उस पात्र को ग्रपने सामने रखें। उस में घी डालें। ग्रिग्न के उत्तरपिरस्तरण के बाहर रखें। उस पर घी का पात्र रखें एक कुश को जलते हुए उस पर रखें। एक ग्रंगुल प्रमाण धुले हुए दो कुशाग्रों को घी के पात्र में डालें। जलते हुए कुश से चरु पात्र एवं ग्राज्यपात्र को तीन बार प्रदक्षिण करायें फिर उसे वायव्य दिशा में डाल दें। हाथ धो लें। घी के पात्र को खीचते हुए उसे ग्रौर भी उत्तर में ले जाना चाहिये। ग्रंगारों को वापस होम वेदी में डालें। हाथ धो लें। उस घी को मन्त्रों से उत्पवन करना चाहिये।

उत्पवनं नाम शुद्धीकरराम्। शुद्धीकररा क्रिया को उत्पवन कहते हैं। सवितुष्ट्वाहिररायस्तूपः सवितापुर उष्णिक्। ग्राज्यस्योत्पवने विनियोगः।

ॐ सवितुष्ट्वाप्रसवउत्पुनाच्छिद्रेशा पवित्रेशा वसोः सूर्यस्य रिश्मिभः॥ (यजुर्वेद)

इति मन्त्रेरा एकश्रुत्या उच्चारितेन एकवारं द्विस्तूष्णीं उत्तानपाशिद्वय ग्रङ्गुष्ठ उपकनिष्ठिकाभ्यां उतयोरससृष्ट गृहीताभ्यां उत्तानपाशिद्वय ग्रङ्गुष्ठ उपकनिष्ठिकाभ्यां ग्रंतयोरससृष्ट गृहीताभ्यां उदगग्राभ्यां पवित्राभ्यां प्रागुत्पूय



ते पवित्रे ऋद्भिः प्रोक्ष्य ऋगौ प्रहरेत्। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

इस एक स्वरी मन्त्र को कहते हुए एक बार हथेलियों को उपर किये दोनों हाथों के ग्रंगुष्ठ एवं ग्रनामिका ग्रंगुलियों में पिवत्र के दो कुशों को ग्रलग-ग्रलग (परस्पर न मिलें) ऐसे पकड़ना चाहिये। उनका ग्रग्रभाग उत्तर की ग्रोर होना चाहिये। पहले उन्हें पिश्चम से पूर्व की ग्रोर घी में जाकर ऊपर उठायें। फिर दो बाद इसी क्रिया को बिना मन्त्र कहते हुए दोहरायें। फिर उन पिवत्र कुशों को जल में प्रोक्षण कर ग्रिग्न में डालना चाहिये।

प्रोक्षरा-उत्तानेन तु हस्तेन कर्तव्यं प्रोक्षरां भवेत्। (म्राधलायन स्मृति)

हथेली में जल लेकर उसे सींचना प्रोक्षरा कहलाता है।

त्रवोक्षरां-स्रवाचीनेन हस्तेन कर्तव्यं स्यादवोक्षराम् ॥ (स्राधलायन स्मृति)

जल लेकर हथेली को नीचे करके जल सींचना ऋवोक्षरा कहलता है।

म्रभ्युक्षरा-मुष्टीकृतेन हस्तेन कृतमभ्युक्षरां भवेत्। (म्राधलायन स्मृति)

मुट्ठी में जल भरकर हथेली को नीचे करके जल सीचना ऋभ्युक्षरा कहलाता है।

पर्युक्षरां-तिर्यग्भूतेनहस्तेनकृतंपर्युक्षरां तथा। (माधलायन स्मृति)

हाथ को तिरचा करके चारों ग्रोर सींचना पर्युक्षण कहलाता है। ग्रथाग्नेः पश्चात् परिस्तरणाद् बहिः ग्रात्मनो ग्रग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बर्हिः सन्नहनीं रज्जुं उदगग्रां प्रसार्य तस्यां बर्हिः प्रागग्रमुदगपवर्ग ग्रविरलं ग्रास्तीर्य तिस्मन् ग्राज्यपात्रं निधाय स्रुवादि संमार्जयेत्।

उसके पश्चात् ग्रिग्न के पश्चिम में परिस्तररा के बाहर ग्रपने ग्रागे भूमि की प्रोक्षरा कर वहाँ बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु (रस्सी) को उत्तराभिमुख खोलकर

रखें। उस बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु रस्सी को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष को पूर्वाग्र रखते हुए उत्तर की ग्रोर मोटे-बिछाना चाहिये। (बीच में जगह खाली न रहना चाहिये।) फिर उस बर्हिष पर घी का पात्र रखें।

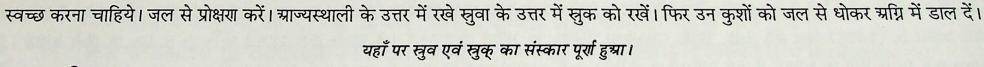
इसके बाद सुवादियों का संस्कार करना चाहिये—दक्षिगोन हस्तेन स्तुक् स्तुवो गृहीत्वा सव्येन कांश्चिद्दर्भानादाय सहैवाग्नौ प्रताप्य सूचं निधाय सूवं वामहस्तेगृहीत्वा दक्षिगाहस्तेन सूवस्य बिलं दर्भाग्रै: प्रादक्षिगयेन प्रागादि प्रागपवर्गं त्रिः संमुज्य ऋधस्ताद्दर्भाग्रैः एव ऋभ्यात्मं बिलपृष्ठं त्रिः संगृज्य ततो दर्भागां मूलैः दंडस्याधस्ताद् बिलपृष्ठादारभ्य यावद्परिष्टाद् बिलं तावत् त्रिः संमृज्य ऋद्भिः प्रोक्ष्य स्त्रव निष्टप्याज्य स्थाल्या उत्तरतः स्त्रुगसंसृष्टं निधाय उदकं स्पृष्टा तैरेव दर्भेः जुहूं च एव मेव संमृज्यद्युत्तरतोश्रुवाधुन्तरो निधाय दर्भानद्भिः क्षालियत्वा स्रग्नौ सन् प्रहरेत्। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

दाहिने हाथ में स्नुक स्नुवो को पकडकर, बाये हाथ में कुछ कुशों को लेकर, दोनों को ग्रिय़ में थोड़ा से गरमायें, स्नुक् को नीचे रखें। स्नुव को बायें हाा में लवें, एवं कुशों को दाहिने हाथ में लेवें। कुशाग्र से सुवा के जो बिल (खड्डा) है उसे पूर्व से प्रदक्षिगाकार में तीन बार घुमाकर स्वच्छ करें। सुव को ऋपने ऋरे कर ख़ुव के निचले भाग को भी तीन बार कुशाग्र से स्वच्छ करें। इसके पश्चात् कुश के निचले भाग से ख़ुव के पीछे बिलपृष्ठ से (गड्डे से) म्रगले भाग (बिल) तक तीन बार घूमाकर स्वच्छ करना चाहिये। जल से प्रोक्षण करें। म्रात्यस्थाली के उत्तर में स्पर्श न हो ऐसे रखें। फिर पानी से हाथ धो लें। फिर उन्हीं कुशों को दाहिने हाथ में लेवें। बाये हाथ में सुक को लें।

कुशाग्र से सुक् के जो बिल (गड्डा) है उसे पूर्व से प्रदक्षिणा कार में तीन बार घुमाकर स्वच्छ करें। सुक् को ग्रपने ग्रोर कर सुक् के निचले भाग को भी तीन बार कुशाग्र से स्वच्छ करें। इसके पश्चात् कुश के निचले भाग से स्नुक के पीछे बिलपृष्ठ से (गड्डे) ग्रगले भाग (बिल) तक तीन बार घुमाकर







चरु शुद्धि—ततः सुशृतं स्नुव गृहीतेनाज्येन ग्रिमघार्य उदगुद्वास्य ग्रगन्याज्ययोर्मध्येन नीत्वा ग्राज्यात् दिक्षिणतो बर्हिषि सोत्तरमासाद्य पुनरप्यिभधार्य नवािमधार्य (पिरधाीन् ऊर्ध्व सिमधौ ग्रग्नौ निधाय।) पक्व चरु पात्र में स्थित चरु को घी से ग्रिमघार्य (सिञ्चन) करके उत्तर में रखना चािहये। ग्रिग्नि एवं घी पात्र के बीच में इसे लाना चािहये। ग्राज्यपात्र के दिक्षण में बर्हिष् पर इसे रखकर घी से ग्रिमघार करना चािहये। न करने पर भी कोई बाधा नहीं है। (पिरिधि को तीन ग्रोर रखकर ऊर्ध्व सिमत् को ग्रिग्न में डालकर।)

प्रमाग श्लोक—रक्षार्थ तन्मुखे दर्भान् निधाय प्राक्स्थिते कृते। पिवत्रे चरुपात्रस्थे करोति सुविचक्षगः॥ १॥ निमन्त्रितानां देवानां प्रागिध्माधानकर्मिगः। निर्वापस्तु बिहष्ठानादन्तराह्वानवद्भवेत्॥ २॥ विसृम्भगार्थकं तेषां भीतानामात्मवैरतः। ऋन्तर्धाय पिवत्रेतु चरोः पात्रे तु निर्वपेत्॥ ३॥ व्रीहीन्वा तगडुलान् वाथ पाकयज्ञेषु मन्त्रकृत्। चतुरश्चतुरो मुष्टीन् निर्वपेत् प्रतिदेवताः॥ ४॥ एका तद्देवतानां स्यात् तत्पत्नीनां परा भवेत्। तत् पुत्राग्रां भवेदेका तद् भृत्यानां तथा परा॥ ४॥ (आश्वलायन स्मृति)

रक्षा के लिए प्रगीता पात्र के ऊपर जो सम्मुख हो उस पर रखें पिवत्र को उठाकर चरु पात्र के ऊपर रखें॥ १॥ इध्माधान (सिमत् के कट्टा को देने से) पहले ग्रावाहन किये गये देवताग्रों को ग्रन्वाधान में पिवत्र रखकर निर्वाप करना चाहिये। बाहर ग्राये देवताग्रों को ग्रन्दर बुलाना चाहिये॥ २॥ ग्रपने शत्रु दैत्यों से भत देवताग्रों के विश्वास के लिए चरुपात्र में पिवत्र रखकर निर्वाप करना चाहिये। दैत्य पिवत्र से डरते हैं एवं कुशों के पास नहीं ग्राते हैं॥ ३॥ चरु यज्ञ में धान या चावल को चार-चार मुष्टि प्रति देवता के हिसाब से डालना चाहिये। (ग्रल्प प्रमाग्रा में होने पर यि विधि है। ग्रिधिक प्रमाग्रा में होने

पर यह ग्रावश्यक नहीं है) ॥ ४ ॥ एक मुष्टि देवता के लिए, एक उनकी पत्नी के लिए, एक पुत्रों के लिए एवं एक एक सेवकों के लिए मिलाकर चार

मुष्टि होती हैं॥ ४॥

चक्त पात्र प्रोक्षरा प्रमारा श्लोक—शुद्ध्यर्थं प्रोक्षयेत् तद्वत् प्राग् प्रसातितिस्थतैर्जलैः। पूर्ववत् सपवित्रेसा दक्षिसोन करेसा तु॥ १॥

चतुर्वारं निर्विजिति तराडुलान् पात्रगान् शुभान्। स्त्राव्यपात्रे तु तत्पात्रमग्नौ चर्वां निधापयेत्॥ २॥ (म्राधलायन स्मृति)

तर्गडुल (चावल) शुद्धि के लिए प्रग्रीता जल से दाहिने हाथ में पिवत्र रखकर चार बार प्रोक्षग्र करना चाहिये। चार बार धोना चाहिये॥ १॥ चरुपात्र में स्थित चावलों को पानी मिलाकर पकने के लिए रखना चाहिये॥ २॥

प्रदेशमात्रमुदित मेक्षरां यज्ञियं भवेत्। रक्षार्थं पाकसिद्धयै च चरोः पात्रे निधापयेत्।। ३॥ (माधलायन स्मृति)

१२ ग्रंगुल लम्बे यज्ञीय वृक्ष के एक सिमत् (उदा.) पीपल को पाक सिद्धि एवं रक्षण के लिए चरुपात्र के ऊपर रखना चाहिये॥ ३॥

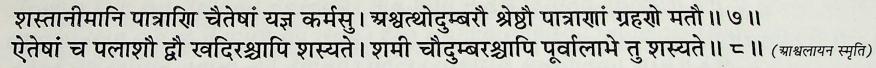
जलं तत् पूर्यापात्रस्थं तीर्थोदत्वात् चरौ क्षिपेत्। यज्ञीयेन पवित्रेशा स्तुगादिभ्यः परेशा तत्॥ ४॥ प्रमाशा लक्षशौर्युक्तं स्तुव ताम्रदिभिस्तु यत्। यदि यज्ञीय वृक्षाशां पर्शानि स्युः स्तुगादिषु॥ ४॥ चत्वारः क्षीरिशो वृक्षाः द्वौ पलाशौ विकंकतः। खदिरश्च शमी बिल्वौ यज्ञीयास्तरवः स्मृताः॥ ६॥ (म्राधलायन स्मृति)

पूर्ण पात्र में विद्यमान जल तीर्थ स्वरूप होने के कारण चरु में उसी को डालें। यज्ञीय वृक्षों से सुक् ग्रदियों को बनाना चाहिये या ताम्र से भी बना सकते

हैं। यज्ञीय वृक्षों के पत्ते से भी स्नुक् सुवादि बना सकते हैं॥ ४-४॥ दो प्रकार के पलाश, विकंकत, खदिर, शमी एवं बेल (बिल्व) ये यज्ञीय वृक्ष

कहलाते हैं। इनमें दूध नहीं होते है। दूध युक्त-पीपल, वट, भौदुम्बर, वट का एक भेद प्लक्ष ये चार दूध युक्त यज्ञीय वृक्ष है॥ ६॥ इन यज्ञीय वृक्षों के पात्र श्रेष्ठ माने जाते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.



यज्ञीय पात्र निर्माण के लिए ग्रश्वत्थ एवं ग्रौदुम्बर की लकड़ी श्रेष्ठ है, दो प्रकार पलाश एवं खदिर भी ठीक है। इनके न मिलने पर शमी एवं ग्रौदुम्बर भी ठीक है।

यस्माच्चरुरसंपातात् न बिहः स्यन्दितुं व्रजेत्। स्यन्दने त्विप संप्रीतिर्नदेवानां भविष्यति॥ ६॥ यदि विष्यन्दते कुर्यात् निष्कृतिं यान्ति ते मुदं। तस्य होमस्य चाद्यन्ते घृतैः स्कन्नाय मन्त्रवत्॥ १०॥ (न्नाश्चलायन स्मृति)

चरु को पकाते समय उबलकर बाहर ग्राकर ग्रिया पर नहीं पड़ना चाहिये। गिरने से देवताग्रों को सन्तोष नहीं होता है। प्रायश्चित्त करने से प्रसन्न होते है। प्रधान ग्राहुति से पहले एवं ग्रन्त में घी की ग्राहुतियाँ देना चाहिये। यदि हुग्रा तो दो बाद घी की ग्राहुति दे देवें॥ £-१०॥ यह स्कन्नाहुति कहलाता है। घी के पात्र के संस्कार का प्रमारा शोक—

शन्ते सशब्दे हिविषि घृतं गोर्वस्त्र गाळितम्। संस्नावयेदाज्यपात्रे सपिवत्रे पुरस्थिते॥ १॥ त्रग्नेः प्रागुत्तरे भागे सांगारं भस्म तत् पृथक्। विभज्य तिस्मन्नंगारे घृतपात्रं विनिक्षिपेत्॥ २॥ पृथक् पाकतव संसिध्यै हिविषोऽस्य घृतस्य च। तदिग्निना तत् क्रियते त्वशांतत्वाय भस्मवत्॥ ३॥ ज्वालामदृष्ट्वा पक्रस्य पाकस्यार्थोर्ध्वगामिनीं। हिविषा नातितृप्तिः स्यात् देवानां होमकर्मिणा॥ ४॥ तस्माच्य रक्षासां हत्यै तत्स्थानां च यदृच्छया। होता प्रज्वालय दर्भाग्र माज्यस्यैव प्रदर्शयेत्॥ ४॥ हतानां स्नाज्य संस्थानां दर्भाग्राग्नेः प्रभावतः। शुद्धते स्वर्शनादग्रे घृते क्षिपित दर्भयोः॥ ६॥ (माधलायन स्मृत)

भ्रग्वेदीय सोम सर्वाद्धुत शान्ति यज्ञ

द्वितीय दिन

चरु बनने के बाद, गाय के घी को वस्त्र से शोधर करना चाहिये, उस घी को पूर्वाग्र कुशा के ऊपर ग्रपने सम्मुख घी के पात्र में डालें॥ १॥ होमाग्नि के ईशान भाग में भस्म सिहत ग्रंगारो को ग्रलग करना चाहिये। उस पर घी के पात्र को रखना चाहिये॥ २॥ हिवस् एवं घी ग्रलग होना चाहिये। चरु निर्माण समय में ग्रिग्न ज्वालाये दिखना चाहिये, न दिखने पर देवता प्रसन्न नहीं होत हैं। ग्रथात् धुऐं में नहीं गरम करना चाहिये॥ ४॥ वहाँ विद्यमान राक्षसों के नाश के लिए कुशाग्नि को घी को दिखाना चाहिये॥ ४॥ कुशाग्नि कि ग्रिग्नि के प्रभाव से नाश हुए राक्षसों के संपर्क से ग्रशुचि घी को पवित्र करने के लिए दो कुशाग्नो को घी में डालना चाहिये॥ ६॥

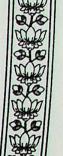
पर्यग्रिकरण प्रमाण श्लोकच्र-दैत्या हिवर्मुखा नाम तदाऽऽयास्यन्ति साहसात्। तेषां निरसनार्थाय पर्यग्रिकरणं त्रिशः॥ ७॥ सपिवत्रं घृतं तीर्थे समुद्वपति तद् बहिः। तदग्निमग्नौ प्रागेतमेकीकुर्यात् सभस्मना॥ ८॥ (माधलायन स्मृति)

हिवर्मुख नामक दैत्य साहस से वहाँ ग्राते हैं। उनके निराकरण के लिए तीन बार पर्यग्निकरण (कुशाग्नि) करना चाहिये॥ ७॥ पवित्र समेत घी के पात्र को तीर्थ देश में रखना चाहिये। भस्मसहित ग्रंगारों को ग्रग्नि में मिलाना चाहिये॥ 🗆॥

घी के उत्पवन (शुद्धिकरण) के प्रमाण श्लोक—

रक्षोहाग्रेस्तु शुद्धयर्थं स्पर्शनात् संस्पृशेदपः। तत उत्पवनं कार्यं घृतस्य प्रत्यगुत्तरे॥१॥ स्रमेध्य भक्षगान्नित्यं गवामाज्येषु यद्भवेत्। तद्दोषपिरहारार्थं सम्यगुत्पवनं चरेत्॥२॥ स्राविशान्त्यिप तावच्य पुनर्देत्या घृतं स्थितं। क्रूरा यज्ञप्रहर्तारश्चेतास्तेन विनिर्गादेत्॥३॥ सुधाहारा सुराः सर्वे सुधातृप्त्ये घृतस्ययत्। सिवतुष्ट्वेति मन्त्रेगा त्रिरुत्पवनिष्यते॥४॥ दर्भाभ्यामुदगग्राभ्यां प्राग्वीर्यं विसृजन्निव। साङ्गुष्ठोपकिनष्ठाभ्यां शनैरुत्पवनं चरेत्॥४॥

२७६



ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ

स्रसंस्पृष्टे यथान्योन्यं तथा ग्राह्ये पिवत्रके। तयोर्मध्यात् सुधायास्तु मथनादिव संभवः॥६॥ स्रपृथक् संगृहीताभ्यां ताभ्यां प्राक् प्रोक्षर्शी जलं गि उत्पुनाति विशुद्ध्यर्थं वीर्योत्सिक्ता भवन्ति हि॥७॥ तेऽग्रावनुप्रहरित पिवत्रे प्रोक्ष्य वारिशा। मथनत्वात् शुचेः शुद्ध्यै दद्यात् चापउपस्पृशेत्॥ ६॥ पृथिव्या स्रपि ते धर्तुमशक्यत्वात् पिवत्रके। स्रग्रौ क्षिपित ते होता प्रागग्रे तु प्रभावतः॥ ६॥ ततो बर्हिस्समाधाय रज्जुं विसृस्य चात्मनः। पुरतः पश्चिमे भागे तूदगग्रांस्तृशात्यधः॥ १०॥ तेषु बर्हिरुदक्संस्थं प्रागग्रं विकिरेत् ततः। बर्हिष्युत्तरतः पात्रमाज्यस्यापि विनिक्षिपेत्॥ ११॥ स्रश्लावन स्रवि। स्रवन्त्येवौघशीर्गावो गव्यस्य च घृतस्य च। एकत्वात् बर्हिषस्तिस्मन् नाज्यपात्रं विनिक्षिपेत्॥ १२॥ (स्रवलायन स्रवि)

राक्षसों से ग्रस्त ग्रिग्न कि शुद्धि के लिए जल को स्पर्श करना चाहिये। ग्रनन्तर नैम्नतय में घी का उत्पवन करना चाहिये (शुद्धीकरण)॥१॥गायें प्रतिदिन ग्रनेक खाने के ग्रयोग्य वस्तुग्रों को खाते है। इस दोष परिहार के लिए घी सही तरीखे से उत्पवन (शुद्धीकरण) करना चाहिये॥२॥ दैत्य पुन: पुन: घी में प्रवेश करते हैं, ये यज्ञ को नाशकरने वाले है एवं क्रूर है इसिलए इनको दूर करना चाहिये॥३॥ देवता ग्रमृत पीने वाले है, ग्रमृत पीने के बाद तृप्ति के लिए घी पीते हैं। इस घी को ग्रमृत बनाने के लिए ''सिवतुष्ट्वा'' इस मन्त्र से तीन बार उत्पवन करना चाहिये॥४॥ उत्तर की ग्रोर ग्रग्रवाले पिवत्र (दो कुशों को) ग्रंगुष्ठ एवं ग्रनामिका ग्रंगुलियों में परस्पर ग्रलग पकडकर पूर्वाभिमुख उन कुशाग्रों से घी में उत्पवन करना चाहिये। घी में शिक्त सञ्चार की कल्पना करनी चाहिये। उनके बीच में मंथन से ग्रदो कुशों से घी को हिलाने से ग्रमृत की उत्पित्त होती है॥ ४–६॥ प्रोक्षणी जल भी इसी प्रकार पिवत्र किया गया है। इस प्रक्रिया से शुद्ध होकर वीर्यवान् बनते हैं॥७॥ जल से प्रोक्षणाकर उन कुशों को (पिवत्र) ग्रिग्न में डालना चाहिये। मंथन करने से जो ग्रशुद्धि हुई उसका परिहार के लिए जल से हाथ धा लें॥ =॥ इतना ग्रधिक पिवत्र (शुद्धीकरण) कार्य करने वाले उन कुशों को (पिवत्र) भूमि भी

सहने में ग्रसमर्थ है। ग्रतः उसे भूर्वाभिमुख कर ग्रग्नि में डालना चाहिये॥ 🗜 ॥ बर्हिष् को हाथ में लेकर उसका रजजू (रस्सी) को उततराभिमुख रखकर खोले। इसे ग्रपने ग्राग्र यानि पश्चिम दिशा में करें। भूमि पर इसे पसारे॥ १०॥ इन बर्हिष् का ग्रग्र पूर्वाभिमुख हो, इसे दक्षिण से उत्तर की ग्रोर पसारें। उस पर उत्तर में घी का पात्र रखें॥ ११॥ गाये ग्रौषिधयों को खाते हैं। उन का ग्राहार बर्हिष् (घास) ग्रत: बर्हिष् एवं घी एक ही परिवार के है। ग्रत: बर्हिष् के ऊपर घी का पात्र रखना चाहिये॥ १२॥

सुक् सुव शृद्धीकरण का प्रमाणशोक-

दर्भास्तु वामहस्तेन स्तुक् स्तुवौ दक्षिरोन तु। गृहीत्वा निष्टपत्यग्रौ युगपत् होमकर्मीरा॥ १॥ तेषां भूमौ स्थितानां प्रागसुरावेशशंकया। दर्भादीनां तु निस्सृत्यै निष्टपत्येव कर्मकृत्॥ २॥ माययान्तः प्रविष्टानां जुह्वास्तस्याः स्त्रुवस्य च। त्रसुरागाां विनाशार्थं कुशमार्जनिमध्यते॥ ३॥ त्रिःपवित्रस्य तस्याग्रं दर्भाग्रैस्तैः प्रदक्षिराम्। दर्भमध्यैर्बिलस्याग्रं मूलाद्यन्तं तदाचरेत्॥ ४॥ दर्भमूलैर्बिलादर्वाक् दराडमूलं तथा त्रिशः। कृत्वा पृष्ठे तदग्रादि मूलान्तं सकृदारभेत्॥ ४॥ दैत्य बाधा समुद्भृत दोष निर्हरणायतु। पुनर्निष्टप्य चाज्येस्मिन् स्तुव होता निधापयेत्॥ ६॥ एवं जुहूँ च संमृज्य यत्स्त्रवेशा ग्रभिघारितम्॥ ७॥ (ग्राथलायन स्मृति)

बायें हाथ में कुशों को पकड़कर दाहिने हाथ में स्नुक्एवं स्नुव को पकडे। एककाल में सभी को ग्रग्नि में तपाना चाहिये॥ १॥ भूमि पर रहने पर ग्रसुरों के प्रवेश भय से हाथ में पकड़ना चाहिये। कुशों से एवं सुक् स्रुव से ऋसुर निवारण के लिए उन्हें ऋग्नि में तपपाना चाहिये॥ २॥ स्रुक एवं स्रुव में माया से प्रवेश करने वाले ऋसुरों का निवारण के लिए कुशों से उन्हें शुद्ध करना चाहिये॥ ३॥ स्नुव के ऋग्र को (बिल) तीन बार कुशों से प्रदक्षिणाकार में शुद्ध





करना चाहिये। कुशों के मध्य से उपरिभाग को स्वच्छ करें। स्रुव के दगड को कुश के मूल से तीन बार स्वच्छ करना चाहिये॥ ४॥ बिल के नीचे से स्रुव के पीछे तक एवं स्रुव के बिल पृष्ट से बिल का ग्रग्रभाग तक तीन बार स्वच्छ करें॥ ४॥ दैत्य बाधा निवारण के लिए पुन: स्रुव को ग्राग्र में सेकना चाहिये। घी के पात्र में उस स्रुव को रखें॥ ६॥ स्रुक् का भी इसी प्रकार शुद्धीकरण करना चाहिये। स्रुव के चरु में ग्रमिधर्य घी डालना चाहिये। स्रुक् को उत्तर में रखना चाहिये॥ ७॥

चरु संस्कार प्रमाग श्लोकः—करोत्यशब्दे हिविषि पक्लोदस्थेऽमृताप्तये। प्राक् कार्यत्वात् स्रुवेगात्र प्राक् संमार्जनिमध्यते॥ १॥ दग्धे मृत्युमपक्के हृद्रोगिमध्यति ते भयम्॥ २॥

विद्वेषं च विषादं च शशब्देत्ववरोपिते। मथनात् कलहं चापि स्वजनेभ्यः समृच्छित॥ ३॥ तीर्थीकरण संसिद्ध्यै तीर्थदेशे निधास्यित। ग्रारोप्य तिस्मन् हिविषि पुनराज्यं प्रसिञ्चिति॥ ४॥ ऊर्ध्वं श्येना यथाकाशे विचरन्त्यामिषेच्छया। तथाऽसुरा दुरात्मानः सञ्चरित जिघृक्षया॥ ४॥ ग्राज्याभिघारणं तस्मात् तीर्थस्थे हिविषि स्मृतम्। ग्राग्रेराज्यस्य मध्येन नयनं च विशिष्यते॥ ६॥ यदा नीत्वाऽसुरभ्यात् पुनराज्येन सिञ्चिति॥ ७॥ (ग्राधलायन स्मृति)

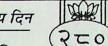
चरु के शब्द (पकने का) बन्द होने के बाद उसे उत्तर में रखना चाहिये। स्रुव का कार्य पहले ग्राने के कारण पहले उसका शुद्धीकरण होता है॥ १॥ चरु जल जाने पर मृत्यु, कच्चे रहने पर हृदय रोग होता है॥ २॥ यदि पकते हुए शब्द करते हुए चरु को उतारने पर विहेष एवं विवाद होता है। चरु मथने पर बन्धुग्रों से कलह होता है। उतारने समय मथन नहीं करना चाहिये॥ ३॥ उतारकर उसे तीर्थदेश में रखना चाहिये। वहाँ रखकर उसमें घी डालना चाहिये॥ ४॥ मांस के लिए जैसे गिद्ध घूमते हैं, सैसे चरु को लेने के लिए राक्षर तैयार रहते हैं। इसलिए तीर्थदेश में स्थित चरु को घी का सिञ्चन करना

चाहिये। ऋग्नि एवं ऋाज्यपात्र के बीच से लाकर दक्षिण में चरु पात्र को रखना चाहिये॥ ४-६॥ पुन: एक बार रखने के बाद ऋसुरों के भय से घी का सिञ्च न करना चाहिये॥ ७॥ इस प्राकर तीन बार घी का ग्रिमघार होता है।

परिधि प्रकरण प्रमाण श्लोक—ऊर्ध्वध्मकानुयाजाश्च त्रयः परिधयः पुरा। इध्मैः सहैव बध्यन्ते प्रागुक्तात्मान एव ते॥ १॥ हतस्य होष्यमारास्य हविषः पालनाय च। परितः परिधीयन्ते त्रयः परिधयस्तथा॥ २॥ पिंव्यमे वसवो रुद्रा दक्षिरो चोत्तरे स्थिता:। म्रादित्यास्तु क्रमात्तेवै निधीयन्ते तथा त्रय:॥ ३॥ रौद्रस्याद्द क्षिरास्तस्मात् पश्चिमोपरि दक्षिराः। करोति मूलं मूलेन चाग्रं मूलोपरि स्थितम्॥ ४॥ त्रादित्यः पश्चिमाग्राधो मूलं प्रागग्रमिष्यते। उत्तरं पश्चिमत्वात्त् तेषु तांश्च समावहेत्॥ ४॥ मनसा कल्पयेत् पूर्वं प्रजापत्यं विचक्षराः। दुर्ग्रहत्वात् तत् क्रियते तत् कोरादिव सिद्धयित॥ ६॥ ऋनुयाजं सरस्वत्यां निधायोध्वेध्माकावुभौ। शृङ्गत्वसिद्धये वहेः क्षिपेदुपरि चोच्छितौ॥ ७॥ प्राग्जातौ दक्षिशौ श्रंगौ पश्चात् जातौ तद्त्तरौ। प्राग्जातोपरि जातत्वात् उत्तरः परिधिः स्मृतः॥ =॥ (ग्राश्वलायन स्मृति)

होमवेदी के चारों ग्रोर बिछाने वाला परिधि कहलाता है। ऊर्ध्व सिमत् दो (ऊपर की ग्रोर उठे हुए) १५ इध्म सिमत्, ग्रनुयाज सिमत् एक, तीन परिधि सिमत्, कुल मिलाकर २१ हुए। इन छ: को १५ इध्म के साथ मिलाकर बाँधना चाहिये॥ १॥ पहले किये कर्मी का एवं ग्रागे होने वाले सभी होम कर्मी की रक्षा के लिए तीन परिधि रखना चाहिये॥ २॥ पश्चिम दिशा के परिधि के वसु देवता, दक्षिरा दिशा के परिधि के रुद्र देवता, उत्तर दिशा के परिधि के म्रादित्य देवता है। इन्हें तीन दिशा में रक्षा के लिए रखते हैं॥ ३॥ पश्चिम दिशा के परिधि के मूल पर दक्षिण दिशा के परिधि का मूल रखना चाहिये। पश्चिम दिशा के परिधि के ग्रग्न को उत्तर दिशा के मूल पर रखना चाहिये॥ ४॥ उत्तर दिशा के परिधि का ग्रग्न पूर्वाभिमुख होना चाहिये क्योंकि यह ग्राखरी

shi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection







है। उन परिधियों पर वसु रुद्र म्रादित्यों को म्रावाहन करना चाहिये॥ ४॥ पूर्व में प्रजापित को मन में कल्पना करनी चाहिये। ब्रह्मा जी का मूर्तिरूप न होने के कारण स्मरण करना चाहिये॥ ६॥ म्रनुयाज सिमत् को सरस्वती के पास रखें। प्रणीता पात्र में सरस्वती का म्रावाहन किये हैं। ऊर्ध्व दो सिमधों को विह्न को शृंगत्व सिद्धि के लिए सींच के रूप में ऊर्ध्वमुख म्रिग्न पर रखना चाहिये॥ ७॥ म्रिग्न के दिक्षण के दो सींग पहले म्राये थे। उत्तर के सींग बाद में म्राये थे। म्राद में पैदा होने के कारण उत्तर की सींच श्रेष्ठ है॥ ८॥

स्रागे प्रयोग विधि है—एकादशाङ्गुलिमिते देशे गंधाक्षतपुष्यै: स्रिगं समन्त्रं स्रर्चयेत्। चत्वारिशृंगा इति मन्त्रेश स्रग्ने शृंङ्ग प्रक्षेपशे विनियोग: स्थिएडल (होम वेदी से) ११ स्रंगुल बाहर गंध स्रक्षत पुष्पों से स्रिग्न को मन्त्रसिहत पूजन करें। चत्वारि शृङ्गा इस मन्त्र से स्रिग्न में शृंग सिमत् को छोडे। विश्वानि न इति तिसृशां स्रात्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वयोरर्चने स्रन्त्याया उपस्थाने विनियोग:।

ॐ विश्वांनि नो दुर्गहां जातवेदः। पूर्व में पूजन करें। ॐ सिंधुननावादुंरितातिंपार्षि॥ स्राग्नेय में पूजन करें। ॐ स्रग्नें स्रितृवन्नमंसागृशानः॥ दक्षिशा में पूजन करें। ॐ स्रस्माकं बोध्यिवृतात्नूनां॥ नैर्ऋत्य में पूजन करें। ॐ यस्त्वांहृदाकीरिशामन्यमानः॥ पश्चिम में पूजन करें। ॐ स्रमंत्यीं मत्यों जोहंवीिम॥ वायव्य में पूजन करें। ॐ जातंवेदो यशों स्रुस्मासुंधेहि॥ उत्तर में पूजन करें। ॐ प्रजािभरग्ने स्रमृत्त्वमंश्यां॥ ईशान में पूजन करें। (स्मेद १.४.१०) ॐ यस्मैत्वं सुकृतें जातवेदउलोकमंग्नेकृशावंस्योनं। स्रिश्चनं स पुत्रिशां वीरवंन्तं गोमंन्तं रियंनंशतेस्वस्ति॥ (सम्वेद १.४.१०)

यह मन्त्र कहकर उपस्थान (प्रार्थना) करें। ॐ ऋग्नये नमः। ॐ जानवेदसे नमः, ॐ हुताशनाय नमः। इन मन्त्रों से ऋग्नि का पूजन करें। ॐ ऋग्नतरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। इन मन्त्रों से ऋग्नतरात्मने नमः। ॐ विसष्ठाय नमः। ॐ त्रयीवद्यात्मने नमः। इन मन्त्रों से ब्रह्मा का पूजन करें।

इध्म बन्धन रज्जुं इध्म स्थाने निधाय पाशिना इध्यममादाय मूलमध्याग्रेषु स्रुवेश त्रिरिमधार्य मूल मध्ययो र्मध्यभागे गृहीत्वा। सरज्जुं ऋनुयाजं प्रशीतायां प्रतिष्ठाप्य इध्म को हाथ में लेवें। उसके रज्जु (रस्सी) को खोलें। रज्जू को ऋनुयाज समित् के साथ प्रगीता पात्र पर रखना चाहिये। हाथ में लिए इध्यम को मूल, मध्य एवं ग्रग्र में मुव से तीन बार घी से ग्रभिधार्य (सिञ्चचन) करके, मूल एवं मध्य के बीच में पकड़कर (दाहिने हाथ में)— ग्रयं ते वामदेवो जातवेदा ग्रग्निस्त्रिष्टुप् इध्म हवने विनियोग:। अग्रयं तइध्म ग्रात्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्वचेद्धवर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनात्र ाद्येन समेधयस्वाहा॥ जातवेदसेग्रये इदं न मम। इन मन्त्रों को कहकर इध्यम को ऋग्नि में डाल देवें। इध्यम मूलं स्पृष्ट्रा ऋपः उपस्पृश्य ऋाघारावाघारयेत्। इध्ममूल को छुकर हाथ धो लें। ग्राघार होम करें।

ऋग्रि ऋलंकार इध्यम हवन के प्रमाराशोक-

ततोग्नेर्गं धपुष्पाद्यैः बहिरर्चा विधियते। स्रमृतत्वस्य संसिद्ध्यै घृतेनेध्माभिघारराम्॥ १॥ समिद्बन्धनरज्जुं च प्रगीतायामुखेक्षिपेत्। होष्यन् सहानुयाजेन क्षिप्तवान्यत्रासुरं भवेत्॥ २॥ प्रसारिताङ्गलिर्वाम ऊर्ध्वाग्रो हृदये करः। भवेद् होतुर्मराडनार्थं होतव्यानां दिवौकसां॥ ३॥ (म्राधलायन स्मृति) ऋयं तं इति मन्त्रेरा मन्त्रार्थं संस्मरन हुनेत्। ऋन्तर्नयेदादरार्थं ऋास्ये गोर्दन्तशष्पवत्॥ ४॥ उच्छिष्टस्पृष्टितः श्द्धये जलं स्पृशति वै तदा ॥ ५॥ (म्राथलायन स्मृत)

फिर ऋग्नि को गन्ध पुष्पादियों से होम वेदी से बाहर पूजन करना चाहिये। ऋमृतत्व प्राप्ति के लिए इध्म सिमत् पर घी से ऋभिघार (सिञ्चन) करना चाहिये॥१॥ समित् बाँधने वाले रज्जु (रस्सी) को ग्रनुयाज समित् के साथ प्रगीता पात्र पर रखना चाहिये। ग्रन्यत्र रखने पर वह ग्रासुर हो जाता है॥ २॥ बायें हाथ के सभी ऋड्सुलियों को ग्रलग-ग्रलग करके हथेली को हृदय भाग पर रखना चाहिये। देवताग्रों के सम्मान के लिए हाथ को ऐसे नमस्कार

रूप में रखते हैं ॥ ३ ॥ ग्रयं त इति मन्त्र के ग्रर्थ को स्मरण करते हुए होम करना चाहिये। गाय के मूँह में जैसे घास देते हैं, वेसै इध्म को हाथ के बीच में रखकर उसे ग्रिग्न में देना चाहिये॥ ४ ॥ इध्म खिलाने पर उच्छिष्ट होने के कारण हाथ को धो लेवें॥ ४ ॥

स्राघार होम

ततः स्रुवेश ग्राज्यं ग्रादाय ग्रग्नेः ग्रायतनस्य वायव्य कोशं ग्रारम्य ग्राग्नेय कोश पर्यन्तं प्रजापतय इति मनसा स्मरन् स्वाहेति उच्चार्य नैरंतर्येश ग्राज्यधारां ग्रग्नो इध्मदारूपिर हुत्वा, पुनराज्यं ग्रादाय ग्रग्नेरायतनस्य नैर्म्नतकोशत ऐशानीपर्यन्तं तथैव हुत्वा त्यक्त्वा च, इध्माहुति के बाद स्रुवा से घी लेकर होम वेदी के कोशा से (परिधि सिन्ध) वायव्य से प्रारंभकर ग्राग्नेय कोशा तक प्रजापित को स्मरण करते हुए स्वाहा शब्द को बोलते हुए निरन्तर घी को ग्रिग्न में इध्म के ऊपर डालना चाहिये। प्रजापतये इदं न मम। कहकर त्याग करना चाहिये। इसी प्रकार नैर्म्नत्य कोशा से (परिधि सिन्ध) ईशान कोशा पर्यन्त निरन्तर घी की धार डालते हुए प्रजापित को मन में स्मरण कर ग्रिग्न में इध्म के ऊपर डालना चाहिये। प्रजापतय इदं न मम। कहकर त्याग करना चाहिये।

म्राघार होम के प्रमाग—प्रागुत्तरस्य मूलात्तु जातः पश्चिम दक्षिगाः। ग्रंशं वित्तस्य हरित पूर्वं ज्येष्ठाद्यथा परः॥१॥ पितुस्तथा भवेत् तूष्णीं होम म्राघारयोःक्रमात्। तावुभौ सहजातत्वात् दक्षिगादिक् प्रकीर्तितः॥२॥ प्राग्दक्षिगास्य मूलात्तु जात उत्तर पश्चिमः। तावुभौ सहजातत्वादुत्तरा दिक् प्रकीर्तिता॥३॥ तस्मात् प्राग्जातयोः पश्चाद् घृतधारा प्रदीयते। शृङ्गयोर्वर्धयेद्वह्निं पूर्वं पश्चात् प्रजातयोः॥४॥

हिवर्मन्त्राच्च यज्ञत्वात् तस्मात् तन्मंत्र इष्यते ॥ ४ ॥ (म्राश्वलायन स्मृति)

उत्तर दिशा के प्रारम्भ से उत्पन्न होने के कारण श्रेष्ठ होता है। पिता के जायदाद में जैसे बड़े बेटे से छोटा भाग लेता है वैसे ही उत्तर के मल श्रेष्ठ है। ग्रर्थात

वायव्य से प्रारम्भ करना चाहिये॥ १॥ प्रथम ग्राघार होम वायव्य से ग्राग्नेय पर्यन्त, दूसरा ग्राघर होम नैर्म्यत्य से ईशान्य पर्यन्त करना चाहिये॥ ३॥ श्रेष्ठ होने के कारण पहली घृत धारा वायव्य से करना चाहिये। नैम्रत्य बडा होने के कारण उसकी घृतधारा बाद में की जाती है॥ ४॥ यज्ञ में मन्त्र ग्रावश्यक होने के कारण मन में प्रजापित का स्मरण कर दो शृङ्गो को बढाने के लिए ग्राघार होम करते हैं॥ ४॥

चक्षुहोम—ततः स्रुवेगाज्यमादाय ऋग्नेय स्वाहा इति ऋग्नेः उत्तर पार्श्वे पूर्व भागे हुत्वा पुनराज्यं सोमय स्वाहा इति ऋग्नि दक्षिगपार्श्वे तत् समप्रदेशे हुत्वा ऋघार होम के पश्चात् स्रुवा से घी लेकर ''ऋसोमाय स्वाहा कहकर ऋग्नि के पूर्वभाग में होम करें। फिर स्रुवा में घी लेकर ''ऋसोमाय स्वाहा कहकर ऋग्नि के दक्षिग दिशा के पूर्वभाग में पहले हवन किये भाग के समानान्तर में होम करें।

यहाँ पर ऋग्निमुख का पूर्वाङ्ग समाप्त

चक्षुहोम के प्रमाण श्लोक—प्रत्यऋमुखोपविष्टस्य यथा स्यातां विलोचने। ततोत्तरं भवेत् चक्षुः ऋग्नेः दक्षिरामुत्तरम्॥१॥ उत्तरं दक्षिरां चापि हूयते प्रोक्त दक्षिराम्। ऋाज्येनैवोत्तरं पश्चात् इति शास्त्रस्य निर्रायः॥२॥ (ऋशलायन स्मृति)

ऋग्नि देव हमारे सम्मुख होने के कारण हमारे विपरीत दिशा में है। उनका दाहिना ऋँख उत्तर में हैं एवं बायां ऋँख दक्षिण में है। ऋत: पहले उत्तर में होम करना चाहिये एवं बाद में दक्षिण में होम करना चाहिये। प्राय: दक्षिण से उत्तर होम होता है। परन्तु यहाँ विपरीत है यह शास्त्र वचन है॥ १-२॥

व्याहृति होमः—समस्त व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापितः प्रजापितर्बृहृती व्याहृतिहोमे विनियोगः। अभूः स्वाहां ऋगनये इदं न मम। अभुवः स्वाहां वायवे इदं न मम। अस्वः स्वाहां सूर्याय इदं न मम। अभूर्भुवः स्वः स्वाहां प्रजापतये इदं न मम।

नवग्रह होमः

प्रधान देवता सूर्य होम: — माकृष्णेनेत्यस्य हिरगयस्तूप: सिवता त्रिष्टुप्, प्रधान देवता म्रादित्य प्रीत्यर्थे मर्कसमित्, माज्य, चरु होमे विनियोग:।

ॐ त्राकृष्णोन् रजंसा् वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्य च।

हिर्राययेन सविता रथेनाऽऽदेवो यांति भुवनानि पश्यन् स्वाहां ॥ (ऋषेद १.३५.२)

म्रादित्यायेदं न मम। २८ बार इस मंत्र से मर्क सहित घी एवं चरु से होम यह संख्या ८ या २८ या १०८ बार कर सकते हैं।

सूर्य ऋधिदेवता ऋग्नि होमः—ऋग्निं दूर्तमित्यस्य कारावो मेधातिथिरग्निर्गायत्री ऋदित्यस्य ऋधिदेवता ऋग्निप्रीत्यर्थे ऋकंसमित् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ऋग्निं दूतं वृंगीमहे होतांरं विश्ववेदसम्। ऋस्य युज्ञस्यं सुक्रतुम् स्वाहां। (ऋग्वेद १.१२.१)

अन्मादित्य ऋधिदेवतायै ऋग्नये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३+३+३=£ ऋाहुति)

सूर्य प्रत्यिधदेवता रुद्र होमः— अकदुद्राय इत्यस्य घोरः कारावो रुद्रो गायत्री ग्रादित्यस्य प्रत्यिधदेवता रुद्र प्रीत्यर्थे ग्रर्कसमित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कद्रुद्रायु प्रचेतसे मीळहुष्ट्रंमाय तव्यंसे। वोचेम् शंतंमं हृदे स्वाहां॥ (मावेद १.४३.१)

म्रादित्य प्रत्यिधदेवता रुद्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३ सिमत् + ३ घी + ३ चरु की म्राहुतियाँ = £ म्राहुतियाँ)

प्रार्थना – दिवाकरं दीप्त सहस्त्ररिश्मं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिम्। ऋंशुं भानुं सूर्यमादिं ग्रहागां दिवाकरं सदा शरगामहं प्रपद्ये॥

म्रादित्याय नमः।

प्रधान देवता सोम होम:—ग्राप्यायस्व गौतम: सोमो गायत्री प्रधान देवता चन्द्रप्रीत्यर्थे पलाश समित्, ग्राज्य, चरु होम विनियोग:।



ॐ स्राप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतंः सोम्वृष्यंयम्। भवा वाजंस्य सङ्ग्थे स्वाहां॥ (मण्वेद १.६१.१६)

सोमाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पलाश सहित घी एवं चरु से होम करें।

सोम ऋधिदेवता ऋप होमः—ऋप्सु मे सिन्धद्वीप ऋषोगायत्री सोमस्य ऋधिदेवता ऋप् प्रीत्यर्थे पलाश सिमत् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ऋप्सु मे सोमों ऋब्रवीदुन्तर्विश्वांनि भेष्जा। ऋग्निं चं विश्वशंभुवं स्वाहां॥ (ऋग्वेद १०.६.६)

सोमाधिदेवतायै ऋद्भ्य इदं न मम। इस मन्त्र से तीन बार होम करें।

सोम प्रत्यधिदेवता गौरी होय—गौरीर्मीमायेत्यस्य ग्रौचत्यपुत्रो दीर्घतमा उमा जगती। सोमस्य प्रत्यधिदेवता गौरी प्रीत्यर्थे पलाशसमित् ग्राज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ गौरीर्मिमाय सिल्लान् तक्षत्येकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। ऋष्टापंदी नवंपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् स्वाहां।

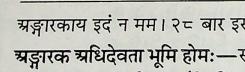
सोम प्रत्यधिदेवता गौर्ये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यं देवताः पितरश्चापिबन्ति तं वै वरेरायं ब्रह्मेन्द्रवन्द्यं चन्द्रं सदा शररामहं प्रपद्ये॥

चन्द्राय नमः।

प्रधान देवता ऋङ्गारक होमः—ऋग्निर्मूर्धा विरूपोङ्गारको गायत्री। प्रधान देवता ऋङ्गारक प्रीत्यर्थे खदिरसमित ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ऋग्निर्मूर्धा दिवः क्कुत्पितः पृथिव्या ऋयम्। ऋपां रेतांसि जिन्वित स्वाहां। (ऋग्वेद =.४४.१६)



म्रङ्गारकाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र में खिदर सिमत्, घी एवं चरु से होम करें।

ग्रङ्गारक ग्रधिदेवता भूमि होमः—स्योना पृथिवीत्यस्य मेधातिथि: पृथिवी गायत्री। ग्रङ्गारकस्य ग्रधिदेवता भूमि प्रीत्यर्थे खदिरसमित् ग्राज्य चरु होमे विनियोग:। ॐ स्योना पृंथिवि भवानृक्ष्रा निवेशनी। यच्छां नुः शर्म सुप्रथः स्वाहां। (ऋग्वेद १.२२.१४)

म्रङ्गारकाधिदेवतायै भूम्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

ग्रङ्गारक प्रत्यधिदेवता स्कन्द होमः—कुमारं माता स्कन्दः स्कन्दस्त्रिष्टुप्। ग्रङ्गारकस्य प्रत्यधिदेवता स्कन्द प्रीत्यर्थे खदिर समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कुमारं माता युवतिः समुंब्धं गुहां विभर्ति न दंदाति पित्रे

ऋनींकमस्य न मिनज्जनांसः पुरः पंश्यन्ति निहिंतमर्तौ स्वाहां। (ऋग्वेद ४.२.१)

म्रङ्गारक प्रत्यधिदेवतायै स्कन्दाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— महेश्वरस्याननस्वेदबिन्दोर्भूमौ जातं रक्तमालांबराढ्यं। सुरिश्मगां लोहिताङ्गं कुमारमङ्गारकं सदा शरगामहं प्रपद्ये॥ ग्रङ्गारकाय नमः।

प्रधान देवता बुध होम:—उद्गुध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बुध प्रीत्यर्थे ग्रपामार्ग समित्, ग्राज्य, चरु होमे विनियोग:।

अ उद्बंध्यध्वं समंनसः सखायः सम्ग्रिमिंध्वं बृहवः सनींळा। दिधुक्रमृग्निमुषसं च देवीमिन्द्रां वृतोऽवंसे निह्वंये वः स्वाहां। (मावेद १०.१०१.१)

बुधाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से ग्रपामार्ग सिमत्, घी एवं चरु से होम करें।

बुध ऋधिदेवता विष्णु होमः—इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री, बुधस्य ऋधिदेवता विष्णु प्रीत्यर्थे ऋपामार्ग समित् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।



ॐ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पुदम्। समूळहमस्य पांसुरे स्वाहां। (ऋग्वेद १.२२.१७)

बुधाधिदेवतायै विष्णावे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष होमः—सहस्रशीर्षा नारायगाः पुरुषोऽनुष्टुप्, बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष प्रीत्यर्थे ऋपामार्ग समित्, ऋाज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम् स्वाहां। (मण्वेद १०.६०.१)

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुषाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रौ महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्यान् पीडां दहतु मे बुधः॥ अबुधाय नमः।

प्रधान देवता बृहस्पति होमः — बृहस्पते गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बृहस्पति प्रीत्यर्थे पिप्ल समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बृहंस्पते ऋति यद्यों ऋहीं द्युमद्विभाति क्रतुंम् ज्ञनेषु।

यद्दीदयुच्छवंस ऋतप्रजात् तदुस्मासु द्रविंशां धेहि चित्रम् स्वाहां ॥ (ऋग्वेद २.२३.१४)

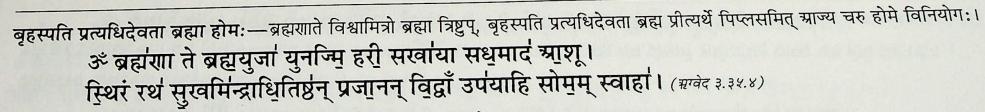
बृहस्पतये इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पिप्ल सिमत्, घी एवं चरु से होम करें।

बृहस्पति ऋधिदेवता इन्द्र होमः—इन्द्र श्रेष्ठानि गृत्समद इन्द्रस्त्रिष्टुप्, बृहस्पतेरिधदेवता इन्द्रप्रीत्यर्थे पिप्पल समित् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्र श्रेष्ठांनि द्रविंगानि धेहि चित्तिं दक्षंस्य सुभग्त्वम्समे।

पोषं रयीगामरिष्टिं तुनूनां स्वाद्मानं वाचः सुंदिन्त्वमह्माम् स्वाहां। (भगवेद २.२१.६)

बृहस्पत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।



बृहस्पति प्रत्यिधदेवतायै ब्रह्मणे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बर होम करें।
प्रार्थना— बुध्यात्मनो यस्य न कश्चिदन्यो मितं देवा उपजीवंति यस्य। प्रजापते रात्मजं धर्मिनिष्ठं गुरुं सदा शरणामहं प्रपद्ये॥
उन्गुरुवे नमः।

प्रधान देवता शुक्र होमः—शुक्रं ते भारद्वाजः शुक्रस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता शुक्र प्रीत्यर्थे ग्रौदुम्बर सिमत्, ग्राज्य चरु होमे विनियोगः। ॐ शुक्रं ते ग्रुन्यद्वंजतं ते ग्रुन्यद्विषुंरूपे ग्रहंनी द्यौरिवासि। विश्वा हि माया ग्रवंसि स्वधावो भुद्रा ते पूषित्रिह रातिरंस्तु स्वाहां। (मावेद ६.४०.१)

शुक्राय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से ग्रौदुम्बर सिमत्, घी एवं चरु से हाम करें।

शुक्र ऋधिदेवता इन्द्राग्गी होमः—इन्द्राग्गी वृषाकिपिरिंद्राग्गी पंक्तिः, शुक्रस्य ऋधिदेवता इन्द्राग्गी प्रीत्यर्थे औदुम्बर सिमत्, ऋण्य, चरु होमे विनियोगः। ॐ इंद्राग्गीमासु नारिषु सुभगांमहमंश्रवम्। नृह्यंस्या ऋप्रं चन जरसा मरते पतिर्विश्वंस्मादिन्द्र उत्तरः स्वाहां।

(मृग्वेद १०. = ६.११)

उ शुक्र ऋधिदेवतायै इन्द्रागयै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।



शुक्र प्रत्यधिदेवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री, शुक्रप्रत्यधिदेवता इन्द्र प्रीन्यर्थे श्रौदुम्बर सिमत्, श्राज्य, चरु होमे विनियोगः। ॐ इंद्रं वो विश्वतस्परि हवांमहे जनेंभ्यः। श्रूस्माकंमस्तु केवंलः स्वाहां॥ (ऋग्वेद १.७.१०)

अशुक्र प्रत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— वर्षप्रदं चिन्तितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं सुनयोमपन्नम्। तं भार्गवं योगविशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शरगामहं प्रपद्ये॥ अशुक्राय नमः।

प्रधान देवता शनैश्चर होमः—शमग्निरित्यस्य इरिंबिठिः शनैश्चर उष्णिक्, प्रधान देवता शनैश्चर प्रीत्यर्थे शमी समित्, ग्राज्य, चरु होमे विनियोगः। ॐ शम्गिर्प्रिभिः कर्च्छंनंस्तपतु सूर्यः। शं वातों वात्वर्पा ग्रप्सिश्चः स्वाहां। (भ्रावेद ८.१८.६)

शनैश्चराय इदं न मम। २० बार इस मंत्र से शमी समित्, घी एवं चरु से होम करें।

शनैश्चर ऋधिदेवता प्रजापित होमः—प्रजापते हिरखयगर्भः प्रजापितस्त्रिष्टुप्, शनैश्चरस्य ऋधिदेवता प्रजापितप्रीत्यर्थे शमी सिमत्, ऋाज्य, चरु होमे विनियोगः।

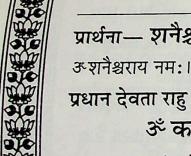
ॐ प्रजांपते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों ऋस्तु वयं स्यांम् पतंयो रयीगाम् स्वाहां॥ (ऋषेद १०.१२१.१०)

शनैश्चरस्य ऋधिदेवता प्रजापतये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

शनैश्चर प्रत्यधिदेवता यम होमः — यमाय हसोमं यमो यमोनुष्टुप्, शनैश्चरस्य प्रत्यधि देवता यम प्रीत्यर्थे शमीसमित् ऋाज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ युमाय सोमं सुनुत युमायं जुहुता हविः। युमं हं युज्ञो गंच्छत्युग्निदूतो ऋरंकृतः स्वाहां। (ऋषेद १०.१४.१३)

शनैश्चर प्रत्यधिदेवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।



प्रार्थना— शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैर्भोगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं शनैश्चरं सदा शररामहं प्रपद्ये॥

प्रधान देवता राहु होम—कयानो वामदेवो राहुर्गायत्री प्रधान देवता राहु प्रीत्यर्थे दूर्वासमित् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कर्यानश्चित्र स्ना भुंवदूती सदावृंधः सरवां। कयाशचिष्ठया वृता स्वाहां राहवे इदं न मम॥ (ऋवेद ४.३१.१)

२ वार इस मंत्र से दूर्वा सिमत्, घी एवं चरु से होम करें।

राहु ऋधिदेवता सर्प होमः — ऋषं गौः सार्पराज्ञीः सर्पा गायत्री। राहु ऋधिदेवता सर्प प्रीत्यर्थे दूर्वा सिमत् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ म्रायं गौ: पृष्टिनंरक्रमीदसंदन्मातरं पुर:। पितरं च प्रयंत्स्वः १ स्वाहां॥ (मानेद १०.१=£.१)

राहु ऋधिदेवतायै सर्पेभ्य: इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु होमः — परं मृत्युः संकुसिको मृत्युस्त्रिष्टुप्। राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो अनुपरेहि पंथां यस्ते स्व इतरो देव यानांत्।

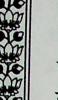
चक्षुंष्मते शृरावृते ते ब्रवीमि मा नं: प्रजां रीरिषो मोत वीरान् स्वाहां। (भगवेद १०.१५.१)

राहु प्रत्यधिदेवतायै मृत्यवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यो विष्णुनैवामृतं भोक्ष्यमाराः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्यौ ग्रसते पर्व काले राहुं सदा शररामहं प्रपद्ये॥

अराहवे नमः।

प्रधान देवता केतु होमः—केतुं कृखवन्नित्यस्य मंत्रस्य मधुच्छन्दाः केतुर्गायत्री प्रधान देवता केतु प्रीत्यर्थे कुश सिमत् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।



ॐ केतुं कृरावन्नंकेतवे पेशों मर्या ऋपेशसें। समुषद्भिरजायथाः स्वाहां।। (ऋखेद १.६.३)

केतवे इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से कुश सिमत्, घी एवं चरु से होम करें।

केतु ऋधिदेवता ब्रह्म होमः—ब्रह्मजज्ञानिमति नकुलो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, केत्वधिदेवता ब्रह्मप्रीत्यर्थे कुश सिमत् ऋाज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ब्रह्मं जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचीवेन ऋविः।

स बुधियां उपमा स्रंस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमसंतश्च विवः स्वाहां॥ (यनुर्वेद-४ काराड-२ प्रश्न-= अनुवाक-४ मन्त्र)

केतु अधिदेवताब्रह्मरो इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्त होम—स चित्र चित्रं भारद्वाजश्चित्रगुप्तस्त्रष्टुप्। केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्तप्रीत्यर्थे कुश समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ स चित्र चित्रं चित्रयंन्तम्समे चित्रंक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्।

चुन्द्रं रुयिं पुंरुवीरं बृहंतं चन्द्रंचन्द्राभिर्गृशाते युंवस्व स्वाहां॥ (मग्वेद ६.६.७)

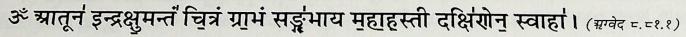
केतु प्रत्यधिदेवतायै चित्रगुप्ताय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना हे ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्ताः ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः।

ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शररामहं प्रपद्ये॥

उन्केतवे नमः। यहाँ पर नवग्रह होम संपन्न हुम्रा। म्रागे छः कर्म साद्गुराय देवता होम होगा।

कर्म साद्गुराय देवता विनायक होमः-१— त्रातून इत्यस्य काराव: कुसीदी विनायको गायत्री क्रतु साद्गुरायदेवता विनायक प्रीत्यर्थे समित् ग्राज्य चरु



कर्म सादगुरायदेवतायै विनायकाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुगयदेवता दुर्गा होम:-२-जातवेद से कश्यपो दुर्गा त्रिष्टुप् क्रतुसाद्गुगयदेवता दुर्गा प्रीत्यर्थे सिमत् ऋाज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ जातवेदसे सुनवाम् सोमंमरातीयतो निदंहाति वेदः।

स नंः पर्षदितिं दुर्गागा विश्वां नावेवसिंधुं दुरितात्यग्निः स्वाहां ॥ (सप्वेद १.६६.१)

क्रतु साद्गुग्य देवतायै दुर्गायै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुगयदेवता क्षेत्रपाल होम:-३-क्षेत्रस्य पतिना वामदेव: क्षेत्रपालोनुष्टुप् चरु होमे विनियोग:।

ॐ क्षेत्रंस्य पतिंना व्यं हितेनेवजयामिस। गामश्चं पोषियुत्न्वा सनोंमृळातीदृशे स्वाहां। (ऋग्वेद ४.५७.१)

क्रतु साद्गुगय देवतायै क्षेत्रपालाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुगय देवता वायु होम:-४—क्रागाशिशुरित्यस्यत्रियोवायुरुष्णिक् क्रतु साद्गुगय देवता वायु प्रीत्यर्थे सिमत् ऋण्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ क्रागाशिशुंर्म्हीनांहिन्वत्रृतस्यदीधितिं। विश्वापरिप्रिया भुंवदर्धद्विता स्वाहां॥ (ऋखेद £.१०२.१)

क्रतु साद्गुराय देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुगय देवता स्राकाश होमः-५— ऋदित्यप्रबस्य वत्स स्राकाशो गायत्री क्रतु साद्गुगय देवता स्राकाश प्रीत्यर्थे समित् स्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ म्रादित् प्रत्नस्य्रेतंस्<u>ो</u> ज्योतिंष्पश्यंति वास्रं। प्रोयदिध्यतेंदिवा स्वाहां॥ (स्पवेद =.६.३०)



क्रतु साद्गुरयदेवतायै त्राकाशाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुगय देवता ऋश्विनी देवता होमः-६—ग्रिश्वनावर्ति राहूगणो गोतमोश्विनावुष्णिक् ग्रिश्व प्रीत्यर्थे सिमत् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः। ॐ ऋश्विनावृर्तिर्स्मदागोर्मद्स्त्राहिरंगयवत्। ऋर्वाग्रथं सर्मनसानियंच्छतं स्वाहां॥ (भग्वेद १.६२.१६)

क्रतु साद्गुराय देवतायै ऋश्विभ्यां इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

कृतु संरक्षक देवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री कृतु संरक्षक देवता इन्द्र प्रीत्यर्थे समित् ऋाज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वत्स्पिर् हवांमहे जनेंभ्यः। श्रूस्माकंमस्तु केवंलः स्वाहां॥ (ऋग्वेद १.७.१०)

क्रतु संरक्षक देवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता अग्नि होमः—अग्निं दूर्तिमत्यस्य कारावो मेधातिथिरग्निर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता अग्नि प्रीत्यर्थे सिमत् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ऋग्निं दूतं वृंगीमहे होतांरं विश्ववेदसम्। ऋस्य युज्ञस्यं सुक्रतुम् स्वाहां॥ (ऋग्वेद १.१२.१)

क्रतु संरक्षक देवतौ अग्रय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता यम होमः — यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता यम प्रीत्यर्थे समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ युमाय सोमं सुनुतय्मायंजुहुता ह्विः। युमंहंयुज्ञो गंच्छत्युग्निद्तो ऋरंकृतः स्वाहां॥ (भग्वेद १०.१४.१३)

क्रतु संरक्षक देवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र को दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता निर्मित होमः—मोषुराः कारावो निर्मितिर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता निर्मित प्रीत्यर्थे समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ मोषुगाः परांपरानिऋतिर्दुर्हगांवधीत्। पृदीष्ट तृष्णांयासृह स्वाहां॥ (ऋषेद १.३ =.६)

7£8



क्रतु संरक्षक देवतायै निर्मृतये इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

कृतु संरक्षक देवता वरुगा होमः—तत्वायामीत्यस्य शुनः शेपोवरुगास्त्रिष्टुप् कृतु संरक्षक देवता वरुगा प्रीत्यर्थे समित् म्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तत्वांयामि ब्रह्मंगा वन्दंमानुस्तदाशांस्तेयजंमानो ह्विभिः।

त्रहेंळमानो वरुग्रोह बोध्युर्रुशंसमान् त्रायुः प्रमोषीः स्वाहां ॥ (मानेद १.२४.११)

क्रतु संरक्षक देवतायै वरुणाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

कृतु संरक्षक देवता वायु होमः—तव वायो व्यश्चोवायुर्गायत्री कृतु संरक्षक देवता वायु प्रीत्यर्थे सिमत् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तवं वायवृतस्पतेत्वष्टुंर्जामातरद्भुत। ऋवांस्यावृंशीमहे स्वाहां॥ (ऋग्वेद ६.२६.२१)

क्रतु संरक्षक देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

कृतु संरक्षक देवता सोम होम—सोमो धेनुमित्यस्य गौतमः सोमस्त्रिष्टुप् कृतु संरक्षक देवता सोम प्रीत्यर्थे समित् ऋाज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ सोमों धेनुं सोमो ऋर्वन्तमाशुं सोमों वीरं कर्म्गर्यं ददाति। सादुन्यं विद्थ्यं सुभेयं पितृश्रवंगां यो ददांशदस्मै स्वाहां॥ (ऋषेद १.६१.२०)

क्रतु संरक्षक देवतायै सोमाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

कृतु संरक्षक देवता ईशान होम:—तमीशानिमत्यस्य गौतम ईशानो जगती कृतु संरक्षक देवता ईशान प्रीत्यर्थे सिमत् ग्राज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ तमीशानं जगंतस्तुस्थुष्स्पतिं धियं जिन्वमवंसे हूमहे व्यम्।

पूषा नो यथा वेदंसामसंदूधे रंक्षिता पायुरदंब्धः स्वस्तये स्वाहां॥ (मावेद १. ६५.४)



बार देवें।

क्रतु संरक्षक देवतायै ईशानाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें। यहाँ पर क्रतु संरक्षक देवता होम संपन्न हुन्ना।

व्याहृति होमः—व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापितः बृहृती व्याहृति होमे विनियोगः। ॐ भूः स्वाहा, ऋग्नये इदं न मम। ॐ भूवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐ स्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। इन मन्नों से एक बार होम करें।

प्रधान देवता सूर्य होमः—बग्महाँ ऋसीत्यस्य सूर्यःप्रगाथो बृहृती सूर्य प्रीत्यर्थे ऋाज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ वर्गमहाँ ऋसि सूर्य वळादित्य मृहाँ ऋसि। मृहस्तें स्तो महिमा पंनस्यते उद्धा देव मृहाँ ऋसि स्वाहां।। (ऋवेद = १०१.११) ऋा.गृ.सूत्रम्

ॐ सूर्याय स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐ रुद्राधिपतये स्वाहा, रुद्राधिपतय इदं न मम। ॐ रिविकरिशाय इदं न मम। ॐ ईश्वराय स्वाहा, ईश्वराय इदं न मम। ॐ सर्वोत्पातशमनाय स्वाहा, सवोत्पातशमनाय इदं न मम। प्रधान देवता के होम के बाद इन पाँच मंत्रों से घी की ऋाहृति एक एक

- ॐ भूरग्रयें च पृथिव्यै चं महते च स्वाहां ऋग्रये पृथिव्यै महते च इदं न मम।
- ॐ भुवों वायवेचान्तरिक्षाय च महते च स्वाहां। वायवेऽन्तरिक्षाय महते च इदं न मम।
- ॐ सुवंरादित्यायं य दिवे चं महते च स्वाहां। स्रादित्याय दिवे महते च इदं न मम।
- ॐ भुर्भूवः सुवंश्चन्द्रमंसे च नक्षंत्रेभ्योद्धिग्भ्यश्चं महते च स्वाहां। (यनुर्वेद-महानारायगोपनिषद्-ग्रारग्यक)

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

द्वितीय दिन

भाग से चरु को निकालकर (हाथ से) दर्वी में रखें। फिर सुवा से उप पर दो बार घी डालें। ग्रागे कहने वाले मंत्र को कहते हुए होम कुराड में ईशान्य दिशा में डालें। यदस्येति हिररायगर्भोग्नि: स्विष्टकृद्घृति: स्विष्टकृत् होमे विनियोग:।

ॐ यदंस्य कर्मगोत्यरींरिचंयद्वान्यूनिमहाकरम्। ऋग्निष्टित्स्वष्टकृद्विद्वान्त्सर्वं स्विष्टंसुहुतं करोतु मे।। ऋग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्थियत्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्थयः स्वाहां॥ (श्रीत मन्त्र)

इन दो मंत्रों को कहकर ऋग्नि के ईशान्य भाग में होम करें। स्विष्टकृतेऽग्नय इदं न मम।

इध्म बंधन रज्नुं विस्नस्य

पहले जिस रस्सी (कुशा निर्मित) से इध्यम बाँधे थे उस रस्सी को खोलकर उसे—अरुद्राय पशुपतये स्वाहा, रुद्राय पशुपतये इदं न मम। कहकर होम करें। प्रायश्चित म्राज्याहुतीः सप्त जुहुयात्। प्रायश्चित सात घी की म्राहुतियाँ देवें। म्रयाश्चेतिविमदोया म्रियः पंक्तिः प्रायश्चित्याज्य होमे विनियोगः। अस्यांश्चाग्नेस्यनंभिश्चस्तीश्चस्त्यमित्वम्या म्रियासावयंसाकतो यासंन्हव्यमूहिषेयानोंधेहि भेषजं स्वाहां।।

(यजुर्वेद-म्रारखयक)

ऋग्नेय इदं न मम। ऋतो देवा: कारावोमेधातिथिर्देवा गायत्री प्रायश्चिताज्यहोमे विनियोग:।

ॐ म्रतोंदेवा म्रंवंतु नो यतोविष्णुंर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धार्मभिः स्वाहां॥ (मण्वेद १.२२.१६)

देवेभ्य इदं न मम। इदं विष्णुः काग्वोमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधानिदंधे पुदं। समूंळहमस्यपांसुरे स्वाहां ॥ (भ्रावेद १.२२.१७)

विष्णावे इदं न मम। व्यस्त समस्त व्याहृतीनां विश्वामित्र जमदिग्नर्भरद्वाज प्रजापतय ऋषयः, ऋग्निवायुसूर्यप्राजापतयो देवताः गाय त्र्युष्णागनुष्टुबृहत्यश्छंदांसि। प्रायिश्चत्ताज्य होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, ऋग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर यजमान के द्वारा करने वाला प्रायिश्चत होम संपन्न हुआ। यज्ञ के पूजन होम में ऋनेक प्रकार के लोप संभव है। ऋतः उनके निवारण के लिए प्रायिश्चत होम ऋगवश्यक है। यजमान के प्रायिश्चत होम से भी बचे हुए लोप दोषों के निवारण के लिए ब्रह्म प्रायिश्चत विधान है। ब्रह्मा के स्थान पर यदि कुश हो तो स्वयं ऋगचार्य ही ब्रह्म प्रायिश्चत होम करें।

ब्रह्म प्रायश्चित्त होमः

ब्रह्मा के स्थान पर बैठे पं. जी के द्वारा यज्ञ में सपन्न लोप दोषों की निवृत्ति के लिए ब्रह्मा जी प्रायश्चित होम करते हैं। ततो ब्रह्मा कर्तारं परीत्याग्नर्वायव्यदेशे तिष्ठन् एता एव सप्त स्नाज्याहुतीर्जुहुयात्।

उसके बाद ब्रह्मा जी यजमान के पीठे से जाकर ऋग्नि के वायव्य दिशा में खड़े होकर पूर्वोक्त सात मंत्रों से ऋहित देवें। ब्रह्म प्रायश्चित्याज्यहोमे विनियोगः। ॐ ऋयाश्चाग्नेस्यनंभिश्कास्तीश्चंसत्यमित्वम्या ऋसि। ऋयांसावयंसाकृतो यासंन्हव्यमूहिषेयानों धेहि भेषुजम् स्वाहां॥ (यजुर्वेद-आरएयक)

अग्रेय इदं न मम। इस पंक्ति को यजमान या अचार्य कहें।

ॐ ऋतों देवा ऋंवंतु नो यतोविष्णुंविंचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामंभिः स्वाहां॥ (ऋग्वेद १.२२.१६)

देवेभ्य इदं न मम (इस पंक्ति को स्राचार्य पढ़ें।)

ॐ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पुदं। समूळहमस्य पांसुरे स्वाहां।। (ऋग्वेद १.२२.१७)

विष्णव इदं न मम। (ग्राचार्य इस पंक्ति को कहें) ॐभू: स्वाहा, ग्रग्नये इदं न मम। ॐभुव: स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्व: स्वाहा, प्रूर्णय इदं न मम। ॐभूर्भुव: स्व: स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। स्वाहा तक ब्रह्मा जी कहते है। इदं न मम वाला भाग यजमान व ग्राचार्य को ही कहना हैं, त्याग को ब्रह्मा नहीं करना चाहिये। इदं न मम त्याग कहलाता है। ततो ब्रह्मा यथा ग्रागतं तथैव स्वस्थाने उपविशेत्। ब्रह्मा जी जिस प्रकार ग्राये थे उसी प्रकार जाकर ग्रपने ग्रासन पर बैठें। ग्रनाज्ञातिमिति मंत्रद्वयस्य हिरएयगर्भोग्निरनुष्टुप्, ज्ञाताज्ञातदोष निबर्हणार्थं प्रायिश्वत्ताज्य होमे विनियोग:।

ॐ ग्रनांज्ञातं यदाज्ञांतं युज्ञस्यं क्रियतेमिथुं। त्रग्रेतदंस्य कल्पयत्वं हिवेत्थंयथात्थं स्वाहां॥ (यजुर्वेद-ग्रारण्यक)

ऋग्नये इदं न मम।

ॐ पुरुषसंमितो युज्ञोयुज्ञः पुरुषसंमितः। ऋग्नेतदंस्य कल्पयृत्वं हिवेत्थंयथात्थं स्वाहां॥ (यजुर्वेद-आरायक)

यत्पाकत्रेत्याप्त्यस्त्रितोग्निस्त्रिष्टुप्। प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

ॐ यत्पांक्त्रामनंसादीनदंक्षानय्ज्ञस्यं मन्वतेमर्त्यासः। ऋग्निष्टृद्धोतां क्रतुविद्विंजानन्यजिष्ठो देवाँऋंतुशोर्यजाति स्वाहां॥ (ऋग्वेद १०.२.४)

ऋग्नय इदं न मम। अयद्वोदेवा ऋभितपामरुत स्त्रिष्टुप्। मंत्र तंत्र विपर्यासादि निमित्तक प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

ॐ यद्वोदेवा ऋतिपातयांनि वाचाच्प्रयुंतीदेवहेळेनं। ऋरायो ऋस्माँ ऋभिदुंच्छुनायतेन्यत्रास्मन्मंरुत्स्तन्निधेतन्स्वाहां॥ (यजुर्वद-श्रारण्यक)

300

मरुद्भ्य इदं न मम। तत: स्कन्न भिन्नाद्यनियत निमित्ते सित वक्ष्यमाण प्रकारेण तत् प्रतिपदोक्त जप होमान् कुर्यात्। इसके बाद गिरने वाले, टूटने वाले सभी दोष जिनका वर्णन संभव नहीं है, उनके प्रायश्चित के लिए ग्रागे कहने वाले जप एवं होम करें।

अभू: स्वाहा, ग्रग्नये इदं न मम। अभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। अस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। अभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर प्रायश्चित होम समाप्त हुग्रा। प्रारम्भ दिन से ग्रन्तिम दिन तक यह होम कार्य एक जैसा है।

सूर्य सर्वाद्भुत होमस्य सर्व फलावाप्यर्थं साङ्गतासिद्ध्यर्थं च यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार पूजां करिष्ये। होम कुराड में म्राचार्य एवं कलश वेदि में प्रधानाचार्य एक साथ पूजन करें। प्रधान देवता सूर्य मंत्रों से।

षोडशोपचार पूजनम् (कुराड में)

ध्यान —कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं,। रक्तं रक्तविभूषराध्वजरथच्छत्रश्रियाशोभितम्।। सप्त्रीयाशे सप्ताश्चं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिराकरं सेवामहे भास्करम्।। अधिराः सूर्यग्रादित्यः। स्रावाहन-असहस्त्रंशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रंपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यं तिष्ठद् दशांगुलम्।। (मावेद १०.६०.१) अहिरंगयवर्गा हरिंगीं सुवर्गीरज्त स्रंजाम्। चुन्द्रां हिररामंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म स्रावंह।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसूर्याय नमः। ग्रावाहयामि। ग्रावाहनं समर्पयामि।

म्रासनम्—ॐ पुरुष प्वेदं सर्वं यद्भूतं यंच्य भव्यम्। उतामृत्त्वस्येशानो यदन्नेना तिरोहं ति॥ (मण्वेद १०.२०.२)



ॐ तां म् स्रावंह जातवेदो लुक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंग्यं विंन्देयं गामशृवं पुरुंषानुहम्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। ग्रासनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ एतावांनस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुंषः। पादोंऽस्य विश्वांभूतानिं त्रिपादंस्यामृतंं दि्वि।। (भगवेद १०.६०.३) ॐ ऋश्वपूर्वा रंथम्ध्यां हस्तिनांद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपंह्वये श्रीर्मा देवी जुंषताम्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय ममः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

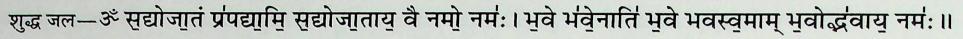
अर्धं अर्ि त्रिपादूर्ध्व उद्देत् पुरुषः पादों ऽस्येहा भंवत्पुनः। ततो विश्वं व्यंक्रामत् साशनानश्नने स्रिभि ॥ (मण्वेद १०.६०.४) अ कां सोस्मितां हिरंगय प्राकारांमाद्रां ज्वलेन्तीं तृप्तां तुर्पयंन्तीम्। पद्मोस्थितां पुद्मवंगां तामिहो पंह्वये श्रियंम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) असपिरवाराय श्रीसूर्याय नमः हस्तयोः स्रर्घ्यमध्यं समर्पयामि।

त्राचमनम्—ॐ तस्मांद्विराळंजायत विराजो ऋधिपूरुंषः। स जातो ऋत्यंरिच्यत पृश्चाद् भूमिमथोंपुरः। (ऋग्वेद १०.६०.५) ॐ चंद्रां प्रंभासां युशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवर्जुष्टा मुदाराम्। तां पद्मिनींमीं शरंगामृहं प्रपंद्येऽलुक्ष्मीर्मेंनश्यतां त्वां वृंगो॥ (पञ्चम मणडलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। मुखे ग्राचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ स्नाप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतः सोम्वृष्णियं । भवावार्जस्य संग्थे । (भावेद १०.६१.१६)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।



(यजुर्वेद-महानारायगोपनिपत् ग्रारगयक)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दिधकाव्यों स्रकारिषं जिष्णोरश्चंस्य वाजिनं:। सुरिभनोमुखां कर्त्प्रग् स्रायूंषितारिषत्।। (म्रावेद ४.३६.६)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। दिध स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामुद्देवाय नमों ज्येष्ठाय नमंश्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमुः कालांय नमुःकलंविकरणाय नमोबलांय नमो बलंप्रमथनाय नम्स्संर्वभूतदमनाय नमों मुनोन्मंनाय नमः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-ग्रारण्यक)

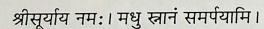
असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

र्घा ॐ घृतं मिंमिक्षे घृतमंस्ययोनिर्घृते श्रितो घृतं वंस्य धामं। अनुष्वधमावंह मादयंस्व स्वाहांकृतं वृषभविक्ष हृव्यम्।। (अन्वेद २.३.११) असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। घृतस्नानं समर्पयामि। शुद्ध जल ॐ स्रुघोरेभ्योऽथ् घोरेभ्यो घोरघोरं तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वृशर्वेभ्यो नमस्ते स्रस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।

(यजुर्वेद-महानारायगोपनिषत्-म्रारगयक)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवार्ता मधुंसरंति सिंधंवः। माध्वींर्नः संत्वोषंधीः॥ मधुनक्तंमुतोषसो मधुंमृत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरंस्तु नः पिता॥ मधुंमान्नो वनस्पित्मधुंमाँ ऋस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः॥ (ऋखेद १.६०.६) असपिरवाराय



शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुंषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयांत्।। (यजुर्वेद-महानारायगोपनिषत्-ग्रारायक)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शकर)—ॐ स्वादुः पंवस्व दिव्याय जन्मंने स्वादुरिद्रांय सुहवींतु नाम्ने । स्वादुर्मित्राय वर्रुगाय वायवे बृहस्पतंये मधुंमाँ स्रदांभ्यः ॥ (ऋखेद ६.५४.६)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वं विद्यानामीश्वरस्सर्वं भूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मगोऽ धिपतिर्ब्रह्मां शिवो में ऋस्तु सदाशिवोऽम्।। (यजुर्वेद-महानारायगोपनिषत्-स्राररयक)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फुलिनी र्या त्रंफुला त्रंपुष्पायाश्चं पुष्पिगीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानों मुञ्चन्त्वं हंसः॥ (भगवेद १०.६७.१४)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ स्रापोिहिष्ठा मंयोभुवस्तानंऊर्जे दंधातन। महेरणांय चक्षंसे॥ यो वं: शिवर्तमोरसस्तस्य भाजयते हर्नः। उशतीरिव मातरं:॥ तस्मा ऋरंगमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। स्रापों जनयंथा च नः। (ऋषेद १०.६.१-२-३) ॐ कहुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टंमाय तव्यंसे। वोचेम् शंतंमं हृदे॥ (ऋषेद १.४३.१)



ॐ यथां नो ऋदिंतिः कर्त्पश्चे नृभ्यो यथा गर्वे। यथां तोकायं रुद्रियंम्।। (भग्वेद १.४३.२)

अ यथां नो मित्रो वर्रुगो यथां रुद्रिश्चितंति। यथा विश्वें सुजोषंसः।

अ गाथपंतिं मेधपंतिं रुद्रं जलांषभेषजम्। तच्छुं योः सुम्रमींमहे॥

अ यः शुक्र इंव सूर्यो हिरंगयमिव रोचंते। श्रेष्ठों देवानां वसुं:।

ॐ शं नं कर्त्यर्व ते सुगं मेषायं मेष्यें। नृभ्यो नारिभ्यो गर्वे॥

ॐ ऋस्मे सोंमु श्रियमध्रि नि धेंहि शृतस्यं नुगाम्। महिश्रवंस्तुविनृम्गाम्।।

अ मार्नः सोमपरिबाधो मारांतयो जुहुरंत। स्रा नं इंदो वाजे भज।।

ॐ यास्ते प्रजा ऋमृतंस्य परंस्मिन्धामंत्रृतस्यं। मूर्धा नाभां सोमवेन ऋा भूषंतीः सोम वेदः।। (ऋग्वेद १.४३.३-४-४-६-७-=-६)

ॐ नमः सोमांय च रुद्रार्यं च नमंस्ताम्रायं चारुगायं च नमंः शंगायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों स्त्रग्रेव्धायं च दूरेव्धायं च नमों हन्त्रे च हनीयसे च नमों वृक्षेभ्यो हिरकेशेभ्यो नमंस्ताराय नमः शंभवें च मयोभवें च नमः शंक्रायं च मयस्क्रायं च नमः शिवायं च शिवतराय च नम् स्तीर्थ्यायच कूल्यांय च नमः पार्यीय चावार्यायं च नमः प्रतरंगाय चोत्तरंगाय च नमं स्रातार्याय चालाद्यांय च नम्शष्याय च फेन्यांय च नमः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय

च। (यजुर्वेद-४ कागड-४ प्रश्ने- च ग्रनुवाक)

ॐ तच्छ्योरावृंगीमहे। गातुं युज्ञायं। गातुं युज्ञ पंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नो त्रस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ (यजुर्वेद-आरस्पक)



ॐ यत्पुर्रु षेशा हविषां देवा युज्ञमतंन्वत । वृस्ंतो ग्रंस्यासीदार्ज्यं ग्रीष्म इध्मः शुरुद्धविः ॥ (ऋग्वेद १०.६०.६)

अ मादित्यवंर्गी तप्सोऽधिंजातो वन्स्पित्स्तवं वृक्षोऽथं बिल्वः।

तस्य फलांनि तपुसा नुंदंतु मायांतंरा याश्चं बाह्या स्रंलक्ष्मीः। (ऋग्वेद पञ्चम मर्गडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— अ युवं वस्त्राशा पीवसावंसाथे युवोरच्छिद्रा मंतंवो हसर्गीः।

स्रवातिरमुमनृतानि विश्वं सृतेनं मित्रा वरुगा सचेथे ॥ (स्रावेद १.१४२.१)

ॐ तं युज्ञं बुर्हिषु प्रौक्ष्न् पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा स्रंयजंत साध्या ऋषंयश्च ये॥ (मानेद १०.६०.७)

ॐ उपैतु मां देवसुखः कीर्तिश्च मिर्गाना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं दुतदातुं मे॥

(मृग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं प्रमं पिवतं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरास्तात्। ऋायुष्यम्ग्रयं प्रतिमुंञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमंस्तु तेजः॥ ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पृशून्ताँ श्लेके वायव्यानार्गयान् ग्राम्याश्च ये॥ (ऋषेद १०.६०.६)

ॐ क्षुत् पिंपासामेलां ज्येष्ठामेलुक्ष्मीं नांशयाम्यहंम्। स्रभूतिमसंम्बिद्धं च सर्वान्निर्गुंद मे गृंहात्।। (पञ्चम मणडलस्य

परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

308

म्राभरगा—ॐ हिरंगयरूपः स हिरंगय संदूगपान्नपात् सेदु हिरंगयवर्गाः । हिर्गययात् परियोनें र्निषद्यां हिरग्यदा दंदत्यन्नंमस्मै ॥

(मृग्वेद २.३४.१०)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। स्राभरगं समर्पयामि।

ॐ गंधं द्वारां दुंराधुर्षा नित्यपुष्टां करीषिशाीम्। ईश्वरीं सर्वीभृतानां तामिहोपंह्वये श्रियम्।। (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्) ॐ तस्मांद्यज्ञात् सर्वृहत् ऋचुः सामांनि जिज्ञरे। छन्दांसि जिज्ञरे तस्माद्य जुस्तस्मांदजायत।। (ऋग्वेद १०.६०.६)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। गन्धं समर्पयामि।

म्रक्षत—ॐ म्रर्चेत् प्रार्चेत् प्रियंमेधासो म्रर्चेत। म्रर्चेन्तु पुत्रका उतपुरंन्न धृष्णवंर्चत।। (मानेद म.६६.म)

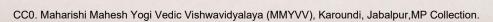
उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। ऋक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ स्रायंने ते प्रायंगों दूर्वारोहंतु पुष्पिगीं:। हृदाश्चं पुगडरींकािंश समुद्रस्यं गृहा इमे ॥ (म्यवेद १०.१४२.=) ॐ तस्मादश्चां स्रजायन्त ये के चों भ्यादंत:। गावोंहजिज्ञिरे तस्मात् तस्मांज्ञाता स्रंजावयं:॥ (म्यवेद १०.६०.१०)

ॐ मनंसः कामुमाकूंतिं वाचः सत्यमंशीमहि। पुशूनां रूपंमन्नस्य मियं श्रीः श्रयतां यशः॥ (भ्रावेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पुष्पाशि समर्पयामि।

प्रथमावररा पूजनम् — अहदयाय नमः। ग्राग्नेय दिशि। अशिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। अशिखायै वषट् नमः। नैर्मृत्यां दिशि। अकवचाय हुम् नमः। वायव्यां दिशि। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् नमः। ऋग्रे ॐ ऋस्त्राय फट् नमः। ऋग्रेयादि कोरोषु पूजयेत् (ऋनुष्ठान पद्धति)। पूजन करे।



800

द्वितीयावरगा पूजनम्— अइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्गाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। अग्रग्रये तेजोधिपतये पिंगलवर्गाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नम:। अयमाय प्रेताधिपतये कृष्णावर्गाय दगड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। अनिर्मृतये रक्षोधिपतये रक्तवर्गाय खङ्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। अवरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूति पार्षदाय नमः। अवायवे प्रागाधिपतये धूम्रवर्णाय ग्रंकुश हस्ताय हरिगावाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नम:। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्गाय गदा हस्ताय ऋश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नम:। ॐ ग्रनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिाकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षद्राय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में ग्रनन्त का पूजन करें। अब्रह्मरो लोकाधिपतये कंजवर्शाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्तिपार्षदाय नम:। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। (अनुष्ठान पद्धित)

तृतीयावररापूजनम्—ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (ग्राग्रेय में) ॐदग्रडाय नमः। (दक्षिण में) ॐखङ्गाय नमः। (नैर्मृत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐग्रंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैर्मृत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) (ग्रनुष्ठान पद्धित)



सूर्य ऋष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐ त्ररुणाय नमः। ॐ शररायाय नमः। ॐ करुणारस सिन्धवे नमः। ॐ त्रसमान बलाय नमः। ॐ त्रार्तरक्षकाय नमः। ॐ त्रादित्याय नमः। ॐ त्रादिभृताय नमः। ॐ ऋखिलागमवेदिनेनमः। ॐ ऋच्युतायनमः। ॐ ऋखिलज्ञायनमः। ॐ ऋनन्तायनमः। ॐ इनायनमः। ॐ विश्वरूपायनमः। ॐ इज्यायनमः। ॐ इन्द्रायनमः। ॐ भानवेनमः। ॐइन्दिरामन्दिरायनमः। ॐ ऋाप्तायनमः। ॐ वन्दनीयायनमः। ॐईशायनमः। ॐ सुप्रसन्नायनमः ॐ सुशीलायनमः ॐ सुवर्चसे नमः अवसुप्रदायनमः । अवसवेनमः। अवासुदेवायनमः। अउज्जवलायनमः। अउग्ररूपायनमः। अऊर्ध्वगायनमः। अविवस्वतेनमः। अउद्यत्किरगाजालयनमः। अहिषकेशायनमः। अऊर्जस्वलायनमः। अवीरायनमः। अनिर्जरायनमः। अजयाय नमः। अ ऊरुद्वभावरूपयुक्तसार्थये नमः। अरुप्यन्त्रे नमः। ॐ ऋक्षचक्रचराय नमः। ॐ ऋजुस्वभावचित्ताय नमः। ॐ नित्यस्तुत्याय नमः। ॐ ऋकारमातृकावर्गारूपाय नमः। ॐ उज्जवलतेजसे नमः। ॐ ऋक्षायधिनाथाय नमः। ॐमित्रायनमः। ॐपुष्काराक्षाय नमः। ॐ लुप्तदन्ताय नमः। ॐशान्ताय नमः। ॐकान्तिदाय नमः। ॐधनाय नमः। ॐकनत्कनकभूषाय नमः। ॐ खद्योताय नमः। ॐलूनिताखिलदैत्याय नमः। ॐसत्यानन्द स्वरूपिरो नमः। ॐग्रपवर्गप्रदाय नमः। ॐग्रार्तशररयाय नमः। ॐएकाकिने नमः। ॐभगवते नमः। ॐ सृष्टिस्थित्यन्तकारिगो नमः। ॐगुगात्मने नमः। ॐघृगािभृते नमः। ॐबृहते नमः। ॐब्रह्मगो नमः। ॐऐश्वर्यदाय नमः। ॐशर्वाय नमः। ॐहरिदश्वाय नमः। अशौरये नमः। अदशदिक्सम्प्रकशाय नमः। अभक्तवश्याय नमः। अस्रोजस्कराय नमः। अजियने नमः। अजगदानन्दहेतवे नमः। अजन्ममृत युजराव्याधिवर्जिताय नमः। ॐ ग्रौन्नत्यापदसञ्चरथस्थाय नमः। ॐ ग्रसुरारये नमः। ॐ कमनीकराय नमः। ॐ ग्रब्जवल्लभाय नमः। ॐ ग्रन्तर्बिहःप्रकाशाय नमः। ॐ त्रचिन्त्याय नमः। ॐ त्रात्मरूपिरो नमः। ॐ त्रच्युताय नमः। ॐ त्रपरेशाय नमः। ॐपरस्मै नमः। ॐ ज्योतिषे नमः। ॐ त्रहस्कराय नमः। ॐ रवये नमः अहरये नमः। अपरमात्मने नमः। अतरुगाय नमः। अवरेगयाय नमः। अग्रहागांपतये नमः। अभास्कराय नमः। अग्रादिमध्यान्तरहिताय नमः। अ सौख्यप्रदायनमः। अ सकलजगतांपतये नमः। असूर्याय नमः। अकवये नमः। अनारायगाय नमः। अपरेशाय नमः। अतेजोरूपाय नमः। अहीं



हिरगयगर्भाय नमः। ॐ ऐं इष्टार्थदाय नमः। ॐग्राशुप्रपन्नाय नमः। ॐश्रीमते नमः। ॐश्रेयसे नमः। ॐभक्तकोटिसौख्यप्रदायिने नमः। ॐनिखिलागमवेद्याय नमः। ॐनित्यानन्दाय नमः। ग्रष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। (श्रनुष्ठान पद्धति)

धूपम् — अवनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। म्राघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुर्फ षुं व्यदंधुः कित्था व्यंकल्पयन्। मुख्ं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादां उच्येते।। (माबेद १०.६०.११)

ॐ कर्दमेन प्रंजा भूता मृिय संभव कर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। (म्रावेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। धूपं ग्राघ्रापयामि।

दीपम् स्राज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं विह्नना योजितं मया। गृहारा मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह ॥ (स्मृति संग्रह)

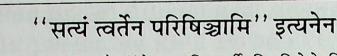
ॐ ब्राह्मगोंऽस्य मुर्खमासी बाहू रांज्न्यः कृतः। ऊरू तदंस्य यद्वैश्यः पुद्भयां शूद्रो श्रंजायत॥ (मावेद १०.६०.१२)

ॐ स्रापः सृजंतु स्त्रिग्धांनि चिक्लीत् वस मे गृहे। नि चं देवीं मातरं श्रियं वासयं में कुले।। (ऋग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं ग्राचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मग्रडलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य ग्रिभिघार्य निर्मलं हिव तदुपिर न्यस्य ग्राज्येन द्रवीभूतं कृत्वा ''ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यात्रं संशोध्य इक्षिगाहस्ते ग्रिग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते ग्रमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हिवराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरिभमुद्रां बध्वा ग्रमृतमयं भावियत्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहगोच्छां कुर्यात्।

(ग्रनुष्टान पद्धति)



परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः ''देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाग्रोदं हिविर्विभो'' इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्शयं दक्षिण हस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। ग्रन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं ग्रबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्। नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य ग्रंलिलमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः विर्धितं देवं हन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मुलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के म्रागे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्र मग्रडल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोड़ा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल हिंबस् (नैबेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हिंबस् को घी से मिगोयें। गायत्री मंत्र से नैबेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं'' इस वायु बीज को जपकर हिंबस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) म्रिप्स बीज को लिखकर उस म्रिप्स से हिंबस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में म्रमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हिंबस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। अपृत्तिः सूर्य म्रादित्यः। इस मन्त्र का म्राठ बार जप करें। हिंबस् को मत्रमय एवं म्रमृतमय होने की कल्पना करें। सुरिंग मुद्रा से म्रमृतमय हुम्रा है मानकर मलांश, धातु म्रंश एवं रसांश को म्रलग-म्रलग करने की कल्पना करें। देवता को नैबेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। "सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीम नैबेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। "निबेदयामि भवते जुषाण हिवर्विभो" कहकर नैबेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्रागाय स्वाहा-ग्रङ्गुष्ठ किनिष्ठिका मिलाकर, ग्रपानाय स्वाहा-ग्रङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, व्यानाय स्वाहा-ग्रङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, उदानाय स्वाहा-ग्रङ्गुष्ठ एवं ग्रनामिका मिलाकर, समानाय स्वाहा। सभी ग्रङ्गुलियों को लिाकर। ग्रन्न से मलांश एवं धातु के ग्रंश को ग्रलग कर केवल रसांश को

368

ग्रर्पित करने की कल्पना करें।

"वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि" कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति अधृिण: सूर्य आदित्य:।" इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादुः पंवस्व दिव्याय् जन्मंने स्वादुरिंद्रांय सुहवींतुनाम्ने। स्वादुर्मित्राय् वर्त्तशाय वायवे बृहस्पतंये मधुंमां ऋदांभ्यः॥ (म्मवेद ६. ६४६) ॐ चन्द्रमा मनंसो जातश्चक्षोः सूर्यों ऋजायत। मुखादिन्द्रंश्चाग्निश्चं प्राशाद्वायुरंजायत॥ (म्मवेद १०.६०.१३) ॐ ऋादां पुष्करिंशीं पुष्ठिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरशमंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् ऋावंह॥

(भ्रग्वेद पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि । **ग्रमृतापिधानमिस** कहकर उत्तरापोशन देवें । हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि । गरडूषार्थे जलं समर्पयामि । शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि । करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ।

ताम्बूल—पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्गं कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। (स्मृति संग्रह-देवपूजा)

असपरिवार श्री सूर्याय नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

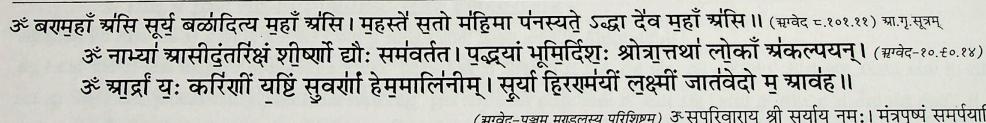
नीराजन (श्रारित)—ॐ स्रर्चित् प्राचित् प्रियंमेधा सो स्रर्चित । स्रंचितु पुत्रका उत पुरं न धृष्यवंचित । (स्रावेद म.६४.म) ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे । ध्रुवं विश्वमिदं जगंद् ध्रुवो राजां विशामयम् ॥

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

ॐ ध्रुवं ते राजा वर्क्तगो ध्रुवं देवो बृहम्पितः। ध्रुवं त इन्द्रंश्चाग्निश्चं राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्।। (मावेद १०.१७३.४)

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्य—ॐ सहस्त्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंभुवम्। विश्वं नारायंगां देवमक्षरं पर्मं पदम्॥ विश्वतः परंमान्नित्यं विश्वं नारायुगां हरिम्। विश्वंमेवेदं पुरुंषुस्तद्विश्व मुपंजीवित।। पतिं विश्स्यात्मेश्वरं .. शार्श्वतं... शिवमंच्युतम्। नारायुगं महाज्ञेयं विश्वात्मानं पुरायंगाम्॥ नारायुगा परोज्योतिरातमा नारायुगाः परः। नारायुगा परं ब्रह्म तृत्वं नारायुगाः परः॥ नारायुगा परो ध्याता ध्यानं नारायुगाः परः। यच्य किंचिज्नंगत्सुर्वे दृश्यते श्र्युतेऽपिं वा॥ अन्तंर्बुहिश्चं तत्सुर्वे व्यांप्य नारायुगास्थितः। अनैतुमव्यंयं क्विं.. संमुद्रेऽन्तं विश्वशंभवम्॥ पुद्मकोश प्रतीकाशं... हृदयं चाप्यधो मुंखम्। ऋधोनिष्ट्या वितस्याते नाभ्यामुंपरि तिष्ठति॥ ज्वालमालाकुंलं भाति विश्वस्यायत्नं महम्। संतंत् .. शिलाभिंस्तु लेबंत्याकोश सन्निंभम्॥ तस्यांते सुषिरं.. सूक्ष्मं तस्मिन्सुर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये मुहानंग्रिविश्वाचिविश्वतो मुखः॥ सोऽग्रंभुग्वि भंजंतिष्ठन्नहारमजुरः कंविः। तिर्युगुर्ध्वमंधश्शायी रुश्मयं स्तस्य संतंता॥ संतापर्यति स्वं देहमापादतलमस्तंकः। तस्य मध्ये विह्निशिखा त्रुगीयोध्वां व्यवस्थितः॥ नीलतोयदंमध्यस्थाद्विद्युल्लेखेव् भास्वंरा। नीवार्शूकंवत्न्वी पीताभांस्वत्यगूपंमा॥ तस्यां शिखाया मध्ये पुरमात्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवःस हिरस्सें द्रस्सोक्षरः पर्मः स्वराट्॥



(मृग्वेद-पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्) ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नम:। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिण नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रग्रश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।। (देवपूजा-स्मृति संग्रह) ॐ सुप्तास्यां सन् परि्धयुस्त्रिः सुप्तस्मिर्धः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वाना ऋबंधन् पुरुंषं पुशुं॥ (ऋखेद १०.६०.१४) ॐ तां म स्रावंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंगयं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वांन् विंदेयं पुरुषान्हम्।। (भ्रायेद-पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

उसपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। प्रदक्षिरा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य — अप्रभाकराय विदाहें दिवाकराय धीमहि। तन्नों सूर्य: प्रचोदयांत्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।) सर्वोपचार पूजनम्—ॐछत्रं समर्पयामि। चामरेगा वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। ग्रांदोळिकामारोहयामि। ग्रश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवास्तानि धर्माशि प्रथमान्यांसन्। तेह नाकं महिमानं: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा: ॥ (म्पवेद १०.६०.१६)

ॐ यः श्चिः प्रयंतो भूत्वा जुहुयांदाँ ज्युमन्वंहम्। सूक्तं पुंचदंशर्चं चु श्रीकामः सत्ततं जपित्।। (भग्वेद-पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। सवोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं,। रक्तं रक्तविभूषगाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्।।
सप्ताश्चं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिगाकरं सेवामहे भास्करम्।।
अ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैवां बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायगायेति समर्पयामि॥ (मेराणिकम्)
अ ब्रह्मार्पगां ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मगा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ (श्री मणवद्गीते)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। ऋनेन पूजनेन सपरिवारः श्री सूर्यः प्रीयताम्।
पूर्णाहिति—प्रतिदिन संक्षेप में पूर्णाहुति करनी चाहिये अन्तिम दिन विशेष रूप से करनी चाहिये।

प्रितिदन वाला पूर्गाहुति—सुचि सुवेग द्वादशवारं ग्राज्यं गृहीत्वा तस्यां सुवं ऊर्ध्विबलं निधाय पुनरधो बिलं निक्षिप्य सुवाग्रे कुसुमाक्षतान् निधाय सव्य पाणिना सुकूसुवमूले धृत्वा दक्षिगणाणिना सुक्सुवं शंखमुद्रया गृहीत्वातिष्ठन् समपाद ऋजुकायः सुवाग्रे न्यास्त दृष्टिः प्रसन्नात्मना। सुवा से सुक में १२ बार घी डाले। सुक् के ऊपर सुवा को ऊपर मुख करके रखें, फिर उसे उल्टा करके सुक् के ऊपर रखें। सुवा के ग्रग्रभाग में पुष्प एवं ग्रक्षतों से पूजन करें। बायें हाथ से सुक् एवं सुवा के मूल को पकडकर, दाहिने हाथ से शंखमुद्रा से सुक एवं सुवा को पकडकर, सीधे खडे रहकर सुवा के ग्रग्रभाग को देखते हुए प्रसन्न मन से पूर्णाहुति होम करें। धामं ते वामदेव ग्रापो जगती पूर्णाहुति होमेविनियोगः।

ॐ धामं ते विश्वं भुवंनम्धिश्चितम्तः संमुद्रे हृद्यं १ तरायुंषि। ऋपाम नी के समिथेयस्राभृत्रतमंश्याम् मधुंमंतंतऊर्मिं स्वाहां॥ (ऋग्वेद ४.५=.११)

द्वितीय दिन

387

कहकर पूर्गाहुति डालें। ग्रद्भ्य इदं न मम। विज्योतिषेत्यस्य जारोवृशोग्निस्त्रिष्टुप्। पूर्गाहुति शेषाज्य होमे विनियोगः।

ॐ विज्योतिषाबृहता भार्त्यग्निराविर्विश्वांनिकृराते महित्वा। प्रादेवीर्मायाः संहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षंसे विनिक्षे स्वाहां॥ (ऋषेद ५.२.६)

इतना कहकर स्नुक् में शेष घी का होम करें। ग्रग्नये इदं न मम। कहकर हाथ जोडें। विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। विश्वेभ्यः देवेभ्य इदं न मम। स्नुक् स्नुवा में शेष बचे घी का भी होम करें। यह संस्नाव कहलता है। ग्रथावभृथस्थानीयं पूर्णपात्रजलेन मार्जनं कुर्यात्। ग्रवभृथस्नान के जगह (बदले) पूर्णपात्र जल से मार्जन करें। पूर्वसादितं पूर्णपात्रं ग्रास्तीर्शे बर्हिष दक्षिरणपािशाना निधाय तत्र गङ्गादि पुर्ययनदीः स्मरन् दक्षिरण पािशाना स्पृशन्। उत्तर में स्थापित प्रशाितापात्र के जल से ग्रवभृथस्नान के बदले में ग्रागे बिछाये बर्हिष (कुशाग्रों) के ऊपर रखकर दािहने हाथ से उसे छूते हुए गङ्गादि पुर्यनिदयों का स्मरण करते हुए मंत्र पाठ करें।

ॐ पूर्गामंसि पूर्गां में भूयाः सुपूर्गामंसि सुपुर्गां में भूयाः सदंसि सन्मेभूयाः सर्वमिसिवं मे भूयाः। ऋक्षितिरिस मामेक्षेष्ठाः॥ (यनुर्वेद)

इति जिपत्वा कुशाग्रै: प्रागादि पञ्चिदक्षुजलं मंत्रै: यथालिङ्गं सिञ्चेत्। ग्रागे कहे जाने वाले मंत्रों से कहे जाने वाले दिशाम्रों में कुश के ग्रग्र भाग से जल प्रोक्षण करें।

प्राच्यां दिशि देवा सृत्विजों मार्जयन्ताम्। दिक्षिंगस्यां दिशि मासाः पितरों मार्जयन्ताम्। अप उपस्पृस। (हाथ धो लें) प्रतींच्यां दिशि गृहाः पृशवों मार्जयन्ताम्। उदींच्यां दिश्याप् स्रोषंधयोवन्स्पतंयो मार्जयन्ताम्। अध्वीयां दिशि युज्ञः संवत्सरः पृजापंतिर्मार्जयताम्। (यज्वेद)

इति एकश्रुत्या पठन् प्रतिदिशं सिक्त्वा कुशाग्रै: स्विशरिस मार्जयेत्। उपरोक्त मंत्रों को कहते हुए उन दिशाग्रों के सिञ्चन के साथ ग्रपने पर भी सिञ्चन करें। ग्रापो ग्रस्मानित्यस्य देवश्रवा ग्रापस्त्रिष्टुप्। मार्जने विनियोग:।

ॐ ऋषों ऋस्मान्मातरः शुंधयंतु घृतेनंनोघृतुष्वंः पुनंतु। विश्वं हिर्प्रिप्र्वहंतिदेवीरुदिदांभ्यः शुचिरापूतएंमि॥

(स्ग्वेद १०.१७.१०)

इदमापः सिंधुद्वीप ग्रापोनुष्टुप्। मार्जने विनियोगः।

ॐ इदमांपुः प्रवंहत्यित्कंञ्चंदुरितं मियं। यद्वाहमंभि दुद्रोह्य द्वांशे पर्तानृतं॥ (सप्वेद १०.र. =)

सुमित्र्यान् ऋष् ऋषेधयः सन्तु। इत्येतैर्मत्रांते मार्जनं कृत्वा। उपरोक्त मंत्रों से मार्जन करें॥

दुर्मित्र्यास्तस्मैसंतु योस्मान्द्वेष्ट्रियं चंव्यं द्विष्मः। (यजुर्वेद-श्रारायक)

इति निर्मृति देशे कुशाग्रै: ग्रप: सिञ्चेत्। उपरोक्त मंत्र को कहकर नैमृत्य में कुशाग्रभाग से जल प्रोक्षण करें। ततो ब्रह्मा यजमान वामपार्श्वेस्थित पत्न्यंजलौ तदभावे पूर्णपात्रस्थं जलं यजमान पव स्व वामपाणावुत्ताने बिहिनिधाय तत्र दिक्षणपाणिना पूर्णपात्रं ग्रादाय जलं प्रत्यडमुखं निषच्य। इसके बाद ब्रह्मा यजमान के बायें पार्श्व में स्थित पत्नी के ग्रंजली में स्थित पूर्णपात्र के जल से दोनों का प्रोक्षण करें। यदि यजमान ग्रकेला हो तो बायें हाथ में बिहिष् (कुशा) रखकर दाहिने हाथ में पूर्णपात्र पकड़कर बायें हाथ में स्थित कुशपर जल छोडें एवं उस जल को पश्चिम की ग्रोर हाथ से गिरायें (स्वािममुख)

ॐ माहंप्रजां परांसिचंयानं: स्यावंरीस्थनं। स्मुद्रेवोंनिनयानिस्वंपाथों ऋषीथ।। (श्रीत मन्त्र)

उपरोक्त मत्र कहते हुए पाप नाश के लिए नीचे गिरे जल को समुद्र में गया मानकर हाथ में बचे शेष जल से ग्रपना प्रोक्षरा करें। तत: कर्ता ग्रग्ने: वायव्ये स्थित: संस्थाजपेन उपतिष्ठेत। इसके बाद यजमान ग्रग्नि के वायव्य दिशा में खड़े होकर संस्था जप जो कि ग्रागे बताया जा रहा है, उससे हाथ जोडकर



त्रिप्राविराट्छंदः। त्रिप

ॐ त्रग्नेत्वंनो त्रंतंमउतत्राता शिवो भंवावरूथ्यः। वसुंरग्निर्वसुंश्रवा ऋच्छांनिक्षद्युमत्तंमर्यिदाः॥ (ऋग्वेद ५.२४.१-२) सनींबोधिश्रुधीहवं मुरुष्याग्गों ऋघायतः संमस्मात्। तंत्वांशोचिष्ठदीदिवः सुम्नायंनूनमींमहेसिर्विभ्यः॥ (ऋग्वेद ५.२४.३-४) ॐ चंमे स्वरंश्च मे युज्ञोपंतेनमंश्च। यत्तेंन्यूनं तस्मैत् उपंयुत्तेतिरिक्तं तस्मैते नमः॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

म्रग्नये नमः। अस्विस्ति। श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियंबलं। म्रायुष्यं तेज म्रारोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ मानस्तोक इत्यस्य कुत्सोरुद्रोजगती। विभूति ग्रहरो विनियोगः।

ॐ मार्नस्तोके तर्नये मार्न ऋयौ मानो गोषुमानो ऋश्वेषुरीरिषः। वीरान्मानोकद्व भामितोवंधीर्ह विष्मंतः सदमित्वां हवामहे॥ (ऋग्वेद १.११४.०)

इति स्रुव बिलपृष्ठेनैशानीगतां विभूतिं गृहीत्वा। उपरोक्त मंत्र पाठ करते हुए स्रुवा के बिल के पिछले हिस्से के ईशान भाग से भस्म (होम करें) को निकालें। ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। (ललाटे में भस्म लगायें) ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति कंठे। (कराठ में भस्म लगायें) ॐ त्रागस्त्यस्य त्र्यायुषं इति नाभौ। (नाभि में भस्म लगायें) ॐ यद्देवानां त्र्यायुषमिति दक्षिर्यास्कंधे (दाहिने भुजा में भस्म) ॐ तन्मे त्रस्तु त्र्यायुषं इति वाम स्कंधे (बाये कंधे पर) ॐ सर्वमस्तु शतायुषं इति शिरिस धारयेत् (सिर से भस्म लगायें) ततः परिस्तरणानि विसृज्य त्रिग्नं परिषयुक्ष्य। त्रिग्नं का परिसमूहन एवं परिषिञ्चन करें। इसके बाद जिस प्रकार से डाले थे उसी प्रकार पूर्व से उन परिस्तरणों को त्रिग्नं में डाल दें (विसर्जन) हाथों में जल लेकर पूर्विदशा से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणाकार में चारों त्रोर मार्जन करने की क्रिया परिसमूहन कहलाता है। पहले हाथ धो लें फिर जलयुक्त हाथ से पूर्वीदि दिशाम्त्रों को स्पर्श करना चाहिये। पुनः हाथ धोकर इसी क्रिया दो बार त्रीर करना चाहिये। यह क्रिया परिसमूहन कहलाता है।

38=

अग्नेरैशानतस्त्रिरंभसा परिषेचनं। हाथ में जल लेकर ईशान्य से ईशान्य तक तीन बर जल से परिषिञ्चन करें। विश्वानिन इति तिसृगामात्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वोरर्चने अंत्यायाउपस्थाने विनियोगः।

ॐ विश्वांनिनो दुर्गहां जातवेदः। (पूर्व में पुष्पाक्षत से अग्निदेव का पूजन करें), ॐ सिन्धुं ननावादुंरितातिंपर्षि। (आग्नेय में पूजन करें), ॐ ऋग्नें अत्रिवन्नमंसागृगानः। (दक्षिण में पूजन करें), ॐ ऋस्माकं बोध्यवितातनूनां। (नैर्म्नत्य में पूजन करें), ॐ यस्त्वांहदाकी रिगामन्यमानः। (पश्चिम में पूजन करें) (ऋग्वेद ४.४.६-१०-११), ॐ अमर्त्यं मर्त्योजोहंवीिम। (वायव्य में पूजन करें), ॐ जातंवेदोयशों ऋस्मासुंधेहि। (उत्तर में पूजन करें), ॐ प्रजाभिरग्ने ऋमृतृत्वमंश्यां। (ईशान्य में पूजन करें), ॐ यस्मैत्वं सुकृतें जातवेद उलोकंम ग्नेकृगावंस्योनं। ऋश्विनं सपुत्रिगांवी्रवंतं गोमंतं र्यिंनशते स्वस्ति॥ (ऋग्वेद ४.४.१०-११) इन मंत्रों को कहकर पूजन एवं नमस्कार करें।

ब्रह्मा को एवं मृत्विजों को दक्षिणा देवें।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो होमक्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महिवः ब्रह्माग्रौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ ग्रनेन सग्रहमख सूर्यः सर्वाद्धुतशान्ति होमकर्मणा सपिरवारः भगवान् सूर्य नारायण प्रीयताम्। यागमध्ये मंत्रतंत्र विपर्यासादि सर्वदोष पिरहारार्थं नामत्रय जपं किरिष्ये। अग्रच्युताय नमः। अग्रनंताय नमः। अगोविन्दाय नमः। अहराय नमः। अगृडाय नमः। अशंभवे नमः। इति जपेत्। कर्म के ग्रन्त में पिवत्र का विसर्जन करके दो बार ग्राचमन करें। अतत् सत्॥ यहाँ पर मध्याह्न तक का कार्यक्रम संपन्न हुग्रा।

मध्याह्न य सांयकाल का कार्यक्रम—यह प्रारम्भ दिन से ग्रन्तिम दिन के पहले दिन तक समान है। जप का विवरण ग्रगले पन्ने (भाग) में है। ग्राचम्य प्राणानायम्य उद्दिष्ट मंत्रजपं कुर्यात्। ग्राचमन करके प्राणायाम करें। फिर उद्देशित मंत्रों का जप संपन्न करें। जप मंत्रों का संपूर्ण विवरण ग्रगले भाग में है।

सर्वाद्भुत शान्ति भाग में — जप के मन्त्र — महाशान्ति सूक्त — शन्नइन्द्राग्नि सूक्त — प्रधान सूर्य मन्त्र जप — नवग्रह जप

द्वितीय दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न



तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन प्रथम प्रहर

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारग्रो विनियोगः।

ॐ येभ्यों मातामधुंमृत् पिन्वंते पर्यः पीयूषं द्यौरदिंतिरद्रिंबर्हाः।

उक्थशुंष्मान् वृषभ्रान्त्स्वप्नंस्ताँ ऋांदित्याँ ऋनुंमदास्वस्तये ॥ (सक्वेद १०.६३.३)

ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णें युज्ञैर्विधेम् नमंसा ह्विभिः।

बृहंस्पते सुप्रजा वी्रवंन्तो व्यं स्यांम् पतंयो रयी्गाम्।। (मक्वेद ४.४०.६)

ऋाचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

म्रथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुरागोभ्यो नमः। म्रग्नये नमः। वायवे नमः। प्रागाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै

नमः। ग्रन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मर्शे नमः। विष्णावे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारराम्—पवित्रन्त इत्यनयोः म्राङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्ररो, धाररो विनियोगः।

ॐ प्वित्रंन्ते वितंतं ब्रह्मगस्यते प्रभुगित्रांशि पर्येषि विश्वतः। त्रतंप्ततनूर्ने तदामो स्रंश्नुतेशृता सुइद्वहंन्तस्तत् समाशत।। (भ्रावेद ६. ६३.१)

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

ॐ तपोष्य्वित्रं वितंतं द्विस्पदे शोचंन्तो ग्रस्य तन्तंवो व्यंस्थिरन्। ग्रवंन्त्यस्य पवीतारं माशवों द्विस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतंसा॥ (भगवेद ६. ६३.२)

कभूभुर्वः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये ग्रासन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राशायाम—प्रशावस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राशायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्संवितुर्वरेरायं भर्गों देवस्यं धीमिह। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ ऋषो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। (ऋषेद ३.६२.१०)

करन्यासः अ म्रङ्गुष्ठाभ्यां नमः। अ तर्जनीभ्यां नमः। अ मध्यमाभ्यां नमः। अ म्रनामिकाभ्यां नमः। अ किनिष्ठिकाभ्यां नमः। अ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः म्रङ्गन्यास-हृदयादिन्यास अ हृदयाय नमः। अ शिरसे स्वाहा । अ शिखायै वषट् । अ कवचाय हुम्। अ नेत्रत्रयाय वौषट्। अ म्रस्त्राय फट् अ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः

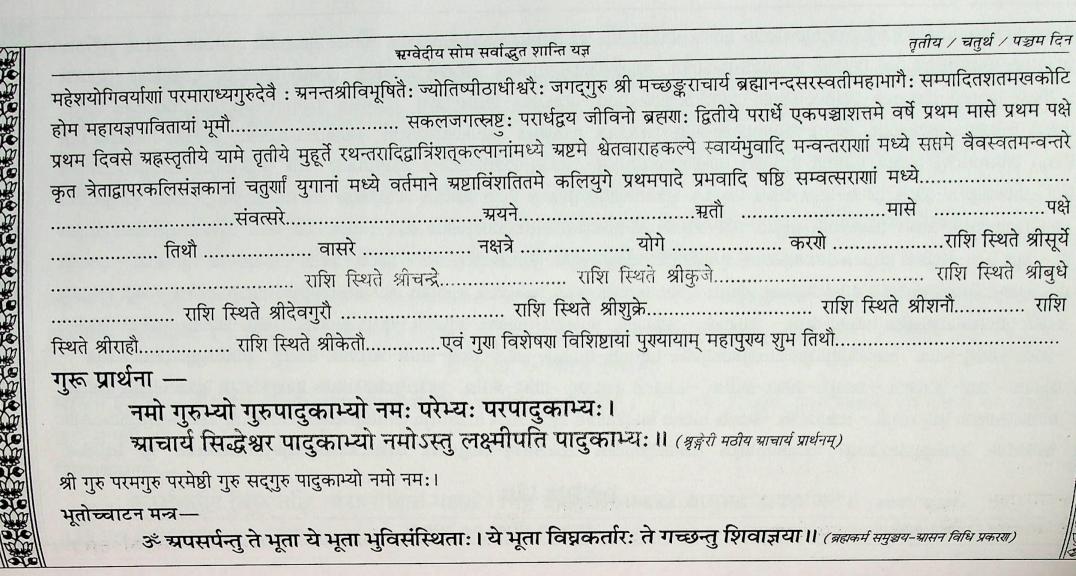
स्रासन शुद्धि—ॐ स्योना पृंथिवि भवानृक्ष्रा निवेशंनी। यच्छां नुः शर्मं सप्रथः।' (१४ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मराडल) इस मन्त्र से जल प्रोक्षरा करने से भूमि शुद्ध होती है।

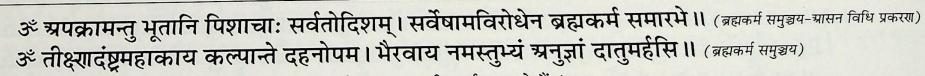
शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोगित भक्षगो। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुगडे ह्यपराजिते॥ (ब्रह्मकर्म समुञ्जय) (इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प

 स्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पित्तिस्थितिलयकारगस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षगस्य प्रगतपारिजातस्य ग्रशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायगस्य ग्रचिन्त्यापरिमितिशक्त्या ध्रियमागाानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् ग्रनेक कोटि ब्रह्मागडानाम् एकतमे ग्रव्यक्त- महादहंकार - पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशाद्याव रगौरावृते ग्रस्मिन् महति ब्रह्माग्डखगडे ग्राधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म - शंखाद्यष्टमहानागैध्रियमारो ऐरावत-पुराडरीक-वामन-कुमुद-ग्रञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् ग्रतल-वितल-सुतल-तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकनामुपरिभागे भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लोक - जनोलोक - तपोलोक - सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लोके चक्रवाल शैल - महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफिशा राजशेषस्य सहस्रफगामिशामगडल मिगडित दिग्दिन्तिश्रगडादगडोद्दिराडतेग्रमरावत्यशोकवती भोगवती - सिद्धवती- गान्धर्ववती - काशी- काञ्ची - ग्रवन्ती ग्रलकावती यशोवतीतिपुगयपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलियते लवगोक्षु- सुरा सिर्प - दि धक्षीरोदकार्रावपरिवृते जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च - शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गन्धर्व-चारराभारतेतिनव-खर्गडमरिंडते सुवर्गीगरिकार्गिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्जाशत् कोटि योजनविस्तीर्गाभूमर्गडले ग्रयोध्या मथुरा-माया-काशी-काञ्जी-ग्रवन्तिकापुरी द्वारा वतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिरो नवसहस्रयोजन विस्तीर्गे मलयाचल-सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्गाप्रस्थ-चगडप्रस्थ-चान्द्र-सूक्तावान्तक-रमराक महारमराक-पाञ्चजन्य-सिंहल लंङ्केति-नवखराडमरिडते गंगा-भागीरथी-गोदावरी- क्षिप्रा-यमुना- सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा-कावेरी-पयोष्णी-कृष्णवेर्गी-भीमरथी-तुंगभद्रा-ताम्रपर्गी- विशालाक्षी- चर्मरावती-वेत्रवती- कौशिकी-गराडकी- विश्वामित्रीसरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुरायनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखराडे जम्बूद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ म्रार्यावर्तान्तरगते ब्रह्मावर्तेकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्गेक्षेत्रे,ज्ञानयुगप्रवर्तकानां महर्षि





इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गरापित प्रार्थना — गरानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गरापितर्देवता। जगती छन्दः। गरापित प्रार्थने विनियोगः।

अ गुगानांन्त्वा गुगापंतिं हवामहे कविं कवीनामुपुमश्रवस्तमं। ज्येष्ठराजं ब्रह्मंगां ब्रह्मगस्पत् स्रानंः शृगवन्नृतिभिः सीदुसादंनम्।। (भग्वेद २.२३.१)

(इन मन्त्रों से गरापित प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

त्रिवाक्येशा पुरायाह वाचन—

अ भुद्रं कर्गोभिःशृगायामदेवा भुद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजत्राः।

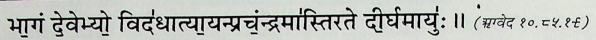
स्थिरेरंगैस्तुष्टुवांसंस्तुनूभिर्व्धिशेमदेविहतं यदायुः। (म्यवेद १. ५ ६. ६) ॐ द्रविगोदा द्रविंगासस्तुरस्यं द्रविगोदाः सनंरस्य प्रयंसत्।

द्विगोदावीरवंतीमिषंनोद्रविगोदारांसतेदीर्घमार्युः॥ (मार्वेद १.६६. =)

ॐ स्वितापृश्चातांत्सवितापुरस्तांत्सवितोत्तरात्तांत्सविता ध्रात्तांत्।

स्वितानं: सुवतु सूर्वतांतिं सवितानोंरासतां दीर्घमायुं: ॥ (ऋग्वेद १०.३६.१४)

ॐ नवों नवो भवति जायंमानोह्नांकेतुरुषसांमेत्यग्रम्।



ॐ उच्चादिवि दक्षिंगावंतो ऋस्थुर्येऋंश्वदाः सहतेसूर्येगा। हिर्गयदा ऋंमृत्त्वं भंजंतेवासोदाः सोम्प्रतिंरन्त ऋायुंः॥

(सृग्वेद ६.६५.६)

ॐ म्रापंउंदंतु जी्व सें दीर्घायुत्वाय वर्चंसे। सस्त्वाहृदा कीरिशामन्यंमानो मंर्त्युं मर्त्योजोहंवीमि॥

(यजुर्वेद १ कागड-२ प्रश्न-१ ग्रनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ जातंवेदोयशों ऋस्मासुं धेहि प्रजाभिरग्ने श्रमृतृत्वर्मश्याम्। यस्मैत्वं सुकृतें जातवेद उलोकर्मग्ने कृरावंस्योनम्। ऋश्विनं सपुत्रिर्गं वीरवंतं गोमंतंरियंनंशते स्वस्ति। संत्वां सिञ्चाम् यजुषा प्रजामायुर्धनं च॥

(यजुर्वेद १ काराड-६ प्रश्न-१ मनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ उद्गतेवंशकुनेसामंगायसि ब्रह्मपुत्र इंव सर्वनेषु शंसिस। वृषेव वाजीशिश्रुंमतीर्पीत्यां सर्वतीनः शकुनेभुद्रमावंद विश्वतीनः शकुनेपुराय मावंद। (म्म्वेद २.४२.२) याज्ययायजितप्रित्तिवैंयाज्यापुरायैवलक्ष्मीः पुरायामेवतल्लक्ष्मीं संभावयित पुरायां लक्ष्मीं संस्कुरुते॥ यत्पुरायं नक्ष्मेतं। तद्भद्रकुंवीं तोपव्युषं। यदावैसूर्यं उदेतिं। ऋथ् नक्षेत्रंनैतिं। यावंति तत्र सूर्यो गच्छेत्। यत्रं जघन्यं पश्येत्। तावंतिकुवीतयत्कारीस्यात्। पुरायाह एव कुंरुते। तानि वा एतानिं यमनक्षत्रार्शि। यान्येव देवनक्षत्रार्शि। तेषुं कुवीत यत्कारीस्यात्। पुरायाह एव कुंरुते। (यज्वेद विष्कारण)

324

सर्वेषां महाजनात्रमस्कुर्वाणाय ग्राशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणासूर्याद्भुतशान्त्याख्यायकर्मणः पुगयाहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिवंदेत्। (यजमान ग्रपने सकुटुम्ब प्रणाम करते हुए ग्राज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुगयाह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मण तीन बार देते हैं।)

१. अपुरायाहं भवन्तो ब्रुवन्तु। अमस्तु पुरायाहम्। २. अपुरायाहं भवन्तो ब्रुवन्तु। अमस्तु पुरायाहम्। ३. अपुरायाहं भवन्तो ब्रुवन्तु। अमस्तु पुरायाहम्। अस्तु स्वस्तये वायुमुपंत्रवामहे सोमं स्वस्तये मुवंनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिः सर्वगरां स्वस्तये स्वस्तये म्राद्वित्या सो भवन्तु नः॥ (मावेद ४.४१.१२)

बृह्स्पात् सवगरा स्युस्तव स्युस्तव स्युस्तव स्युस्तव स्रापुर्यात् । स्युक्ति स्वस्त्य उदयनीयः पथ्यैवेतः स्वस्त्याप्रयंतिपश्यांस्विस्तिमभ्युद्यंतिस्वस्त्येवेतः प्रयंतिस्वस्त्युद्यंति स्वस्त्युद्यंति ॥ (स्मृति संग्रह) ॐ स्वस्तिन् इन्दोंवृद्धश्रंवाःस्वस्ति नंः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्तिन्स्ताक्ष्यों त्र्रिरिष्टनेमिःस्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ।

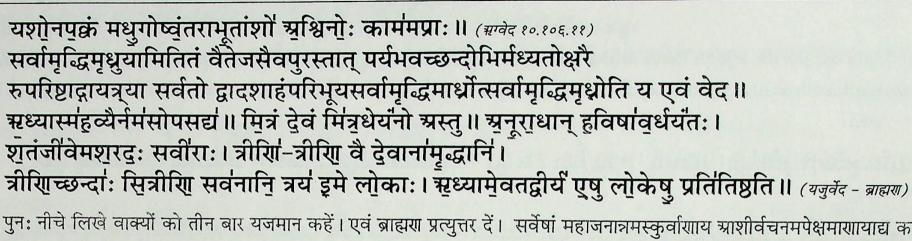
(मृग्वेद १.८८.६)

ॐ म्रुष्टौ देवा वसंवः सोम्यासंः॥ चर्तस्रोदेवीस्म्रजगुश्रविष्ठाः। ते युज्ञं पींतु रजसः पुरस्तात्। संवृत्सुरीर्गमृतँ स्वृस्ति।

(यजुर्वेद - ब्राह्मरा)

इसके बाद नीचे लिखा वाक्य का तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय ग्राशीर्वचनमपेक्षमाणयाद्यकरिष्यमाणास र्याद्भुतशान्त्याख्याय कर्मण: स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—अग्रायुष्मते स्वित्ति। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुन: पहले जैसे उत्तर कलश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा-थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।

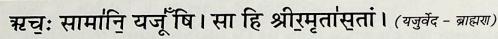
ॐ ऋध्याम्स्तोमं सनुयाम्वाज्मानो मंत्रं स्रथे होपंयांतं।



इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनात्रमस्कुर्वागाय ऋशीर्वचनमपेक्षमागायाद्य करिष्य मारासूर्याद्भृतशान्त्याख्याय ग्रस्य कर्मरा: ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

(ब्राह्मरा कहते हैं)—अमध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद मन्त्र पाठ करते हुए उत्तरकलश से नीचे रखे पात्र में जल छोड़ना चाहिये।

ॐ श्रिये जातः श्रियऽम्रानिरियाय् श्रियंवयोजिर्तृभ्योदधाति। श्रियं वसांना ऋमृत्त्वमांयुन् भवंतिस्त्यासंमिथामितद्रौं ॥ (ऋग्वेद £. £४.४) श्रिय एवैनं तिच्छ्रयामादधाति संततमृचा वषट् कृत्यं संतत्यैसंधीयते प्रजया पश्मिर्यएवं वेद। यस्मिन्ब्रह्माभ्यजंय त्सर्वमेतत्॥ ऋमुञ्चलोकमिद्मूंचसर्वं॥ तन्नो नक्षत्रममिजिद्विजित्यं॥ श्रियं दधात्वहंशीयमानं॥ ऋहं बुधिय मंत्रंमे गोपाय। यमृषंयस्त्रयीविदाविदुः॥



इसके बाद पुन: नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय ऋशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य किरिष्यमाण सूर्याद्भुतशान्त्याख्याय कर्मण: श्रीरिस्त्वित भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐग्रस्तु श्री:। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं पिर पूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मण ऋशीर्वाद देते हैं—सौ साल पूर्ण हो। ऋगप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता ग्राप पर प्रसन्न हो।)

ॐ शुक्रेभिरंगैरजं स्नातत्न्वान् क्रतुं पुनानः क्विभिः प्वित्रैः।

शोचिर्वसानः पर्यायुर्पां श्रियोमिमीते बृह्तीरनूनाः ॥ (मावेद ३.१.४)

तद्प्येषः श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे॥ स्राविक्षितस्य कामप्रेः विश्वेदेवाः सभासद इति॥

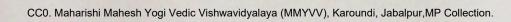
पुरायाह वाचन फल समृद्धिरस्तु—पुरायाहे कर्माङ्ग देवता प्रीयन्ताम्।

मातृका पूजनम्—पान सुपारी दक्षिशा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका ग्रावाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये। नान्दी मगडल के ग्रागे मातृका पूजन करना चाहिये।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णावी तथा। वाराही तथेन्द्राग्गी चामुगडाः सप्तमातरः॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

सात मातृकायें।

गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)



ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

धृतिः पुष्ठिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः (गौर्यादि षोडश मातृकायें)। ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः ग्रावाह्यामि। विनायकं ग्रावाह्यामि। दुर्गा ग्रावाह्यामि। क्षेत्रपालं ग्रावाह्यामि। गरापतिं ग्रावाह्यामि। मातृस्वसारं ग्रावाह्यामि। पितृस्वसारं ग्रावाह्यामि। एताम्यो देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। इनका षोडशोपचार पूजन करना याह्यि। उदाहररा—ग्रावाहित देवताभ्यो नमः। ग्रासनं समर्पयामि ग्रादि। षोडशोपचार पूजन संक्षेप में करें। (गरोश पूजन में है।)

म्रन्त में पुष्पांजिल मन्त्र—ॐ गौरींर्मिमाय सिल्लानितक्ष्तत्येकंपदीद्विपदी सा चतुंष्पदी। मृष्टापंदी नवंपदीबभूवुषीं सहस्त्रांक्षरापरमेव्योंमन्।। (मानेद १.१६४.४१)

अभूभुर्वः स्वः स्रावाहित देवताभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

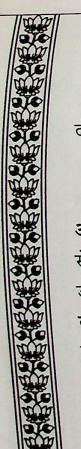
तदंस्तु मित्रावरुगा तदंग्ने शं योर्स्मभ्यंमिदमंस्तुश्स्तं। ऋशीमहिं गाधमुत प्रतिष्ठां नंमोदिवे बृंहते सादंनाय।। (ऋग्वेद ५.४७.७)

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तंतत्प्रतिष्ठि ततमयावाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँल्लभते गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठाप्रतिष्ठा। इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढायें।

मातृका पूजन समाप्तम्

स्रावाहित देवनान्दी पूजन—देवनान्दी में मातृका पूजन स्रावश्यक नहीं है। यज्ञ,(स्रतिरुद्र, सहस्रचर्राडी) रथोत्सव स्रादि सार्वजनिक स्राचरगों में देवनान्दी ही करना चाहिये। कुतुदक्षावुत्सवे तु। इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। स्रमूर्त्य। १. स्रिप्रिष्वात्ता, २. बर्हिषद:, ३. स्राज्यपा:, ४. सोमपा:

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमारा कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मराडल बनायें।



दत्वातराडुलपूर्णपात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः। ताम्बूलादि सुदक्षिरान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्।। (लक्ष्या संहिता)

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, म्रादि दो मगडलों पर रखें।

अ स्रानों भूद्राः क्रतंवो यंतुविश्वतोदंब्धसो स्रपंरीता स उद्धिदंः।

देवानो यथासदमिद्वधे ऋसून्न प्रांयुवोरिक्षतारों दिवे दिवे। (ऋखेद १. = £.१)

ॐ क्रुतुदक्षसंज्ञका विश्वेदेदेवाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वस्वः इयं च वृद्धिः। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। ऋग्निष्वाताः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

बर्हिषदः पितृगर्गाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। ग्राज्यपाः पितृगर्गाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। सोमपाः पितृगर्गाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

ॐ क्रतुदक्ष संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भृवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध ग्रक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ॐ ग्रिप्याचारः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदं ग्रासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भृवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध ग्रक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। विहिषदः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं च वृद्धिः। गन्ध ग्रक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। विहिषदः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ

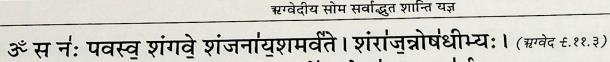


स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध ग्रक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ग्राज्यपाः पितृगरााः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मरायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, ग्रक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। सोमपाः पितृगराः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मरायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भूवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, स्रक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। अभूर्भुव: स्व: सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मगडल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिगादिशा के पात्र को ''इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः'' उत्तरदिशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्यः'' कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मशों को दे देवें।

क्रतुदक्षसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मणा भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। स्रिग्रिष्वा्ताः पितृगरााः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मरा भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये। बर्हिषदः पितृगर्गाः नान्दीमुखाः गुग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। त्राज्यपाः पितृगरााः नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मरा भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिरााकं स्वाहा नमः। भूर्मवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये।

सोमपाः पितृगरााः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मरा भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिराकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिगा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। ग्रागे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

ॐ उपांस्मै गायता नरः पर्वमानायेन्दंवे। स्रुभिदेवाँऽइयंक्षते। (मानेद £.११.१) ॐ ऋभिते मधुना पयोर्थर्वागो ऋशिश्रयुः। देवं देवायं देव्यु। (मनेद ६.११.२)



ॐ बुभ्रवेनु स्वतंवसेरुगायं दिविस्पृशें। सोमांय गाथमंर्चत ॥ (मग्वेद £.११.४)

ॐ हस्तंच्युतेभिरद्रिंभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावाधांवता मधुं॥ (सप्वेद £.११.५)

ॐ ऋक्षुन्नमीं मदन्तुह्यवंप्रिया ऋंधूषत। ऋस्तोंषतु स्वभांनवो विप्रा नविष्ठया मृती यो जान्विन्द्र ते हरीं।। (ऋग्वेद १. ५२.२)

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वांजातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों ऋस्तु वयं स्यांम्पतंयोरयीशाम्॥

(भग्वेद १०.१२१.१०)

कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिशीं दक्षिशां दातुमहमुत्सृये। कहकर हाथ में दक्षिशा लेकर उस पर जल छोडकर

नीचे रख दें।

प्रार्थना—ऋग्निष्वात्वा बर्हिषदः ऋाज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्।। कहकर जल छोड़ें। ऋनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। स्राचम्य—मंगल तिलक रकें। विसर्जन—यज्ञ के स्रन्तिम दिन विसर्जन करें।

ॐ इळांमग्नेपुरुदंसंस्निंगोः शंश्वत्तमं हर्वमानायसाध। स्यान्नः सूनुस्तनंयो विजावाग्ने सातेंसुमृतिर्भूत्वस्मे॥ (ऋषेद ३.१५.७)

ॐ इळामुपह्वयते पशवो वा इळापशूनेवतदुपह्वयते। पशून्यजमानेदधाति दधाति॥ (म्येवेद ब्राह्मण)

यथाचारं हिरगयेन भागडवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घगटा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१— म्राचाय, एक कुगड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिण में १-इतर पूजन, पश्चिम में

१-तर्परा के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मरा-कुल ५ पंरिडत रहने पर

१५ परिडत से संपन्न कर्म में—२-१५ परिडत कर्म में (एक कुराड में), २-१५ परिडत से संपन्न याग में—१ म्राचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्परा पूजन, १-परिचारक ब्राह्मरा, £-ऋत्विज होम के लिए

३-**४५ परिडत से संपन्न याग में**—१- ग्राचार्य (५ कुराड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्परा के लिए, १-परिचारक ब्राह्मरा, ४५-ग्रुत्विज होम के लिए, ४-ग्रुग्रिमुख जानकार उप ग्राचार्य (£×५)

४-१०० परिडत से संपन्न या में—१-ग्राचार्य (£ कुराड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्परा के लिए, ५-परिचारक ब्राह्मरा, ८१-ग्रुत्विज होम के लिए, £-ग्रुग्निमुख जानकार उपग्राचार्य (£×£), इसी ग्रुन्पात में ग्रुधिक संख्या में कर सकते हैं।

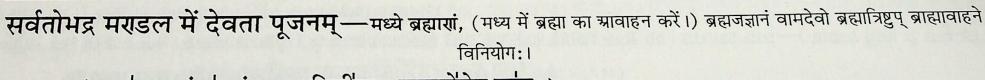
ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मशस्पते देव्यन्त्स्त्वेमहे। उप्प्रयंन्तु म्रुतः सुदानंव् इन्द्रंप्राशूर्भवा सर्चा। (मग्वेद १.४०.१) ॐ श्रुभ्यार्मिद द्रयो निर्षिक्तं पुष्करे मधुं। श्रृव्तस्यं विसर्जने ॥ (मग्वेद २.७२.११) यान्तु देवगशाः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्धयर्थं पुनरागमनाय च॥ (ब्रह्मकर्म समुच्य)

(इन मन्त्रों से ग्रावाहित देवताग्रों को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समाप्त

ब्राह्मरा वन्दन— ॐ नमों मृहद्भ्यो नमों ऋर्भकेभ्यो नमो युर्वभ्यो नमं ऋर्शिनेभ्यः। यजांम देवान् यदि शुक्कवांमुमाज्यायंसः शंसुमा वृक्षि देवाः। सर्वेभ्यो ब्राह्मराभ्यो नमः॥ (ऋग्वेद २७.१३)

इस मन्त्र से ब्राह्मण पूजा करें। ''किरिष्यमाण कर्मणः ग्रारम्भमुहूर्तः सुमुहुर्तो ग्रस्तु इति ग्रनुगृण्हन्तु''। यजमान पूछते है॥ ''सुमुहूर्तमस्तु''।



ॐ ब्रह्मं जज्ञानं प्रंथमं पुरस्ताद्विसींमृतः सुरुचोंवेन ऋावः। सबुध्रियां उपमार्ऋस्यिवृष्ठाः सृतश्चयोनिमसंतश्चिववंः॥ (यजुर्वेद ४ काण्ड-२ प्रश्न-= ऋनुवाक-४ मन्त्र)

कभूर्भुवः स्वः ब्रह्मरो नमः। ब्रह्मारामावाहयामि। भो ब्रह्मन् इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहारा। वरदो भव। उत्तरे सोमं—(उत्तर में सोम का स्रावाहन करें।) स्राप्यायस्व गोतमः सोमोगायत्री सोमावाहने विनियोगः।

ॐ ग्राप्यांयस्व समेंतुते विश्वतं:सोम्वृष्यं। भवावाजंस्यसङ्ग्थे॥ (भावेद १.६१.१६)

ॐभूर्भुवः स्वः सोमय नमः। सोमं ग्रावाहयामि। भो सोम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहारा। वरदो भव। **ईशान्यं ईशानं—(** ईशान्य दिशा में ईशन का ग्रावाहन करें।) ग्रिभत्वा शुनः शेप ईशानो गायत्री ईशानावाहने विनियोगः।

ॐ मुभित्वां देव सवित्रीशांनुं वायींगां। सदांवन्भागमींमहे॥ (म्रावेद १.२४.३)

ङभूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि। भो ईशान इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजा गृहारा वरदो भव। **पूर्वे इन्द्रं—(** पूर्व में इन्द्र का ग्रावाहन करें।) इन्द्र वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री इन्द्रावाहने विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वत्स्पिर् हवांमहे जनेंभ्यः। श्रूस्माकंमस्तु केवंलः॥ (सप्वेद १.७.१०)

अभूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि। भो इन्द्र इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहारण। वरदो भव॥ **ऋ।ग्नेयामग्निं—(** ऋ।ग्ने दिशा में ऋग्नि का ऋ।वाहन

भग्वेदीय सोम सर्वाद्भत शान्ति यज्ञ

करें।) ऋग्निं दूतं मेधातिथिरग्निर्गायत्री ऋग्न्यावाहने विनियोगः।

ॐ ऋग्निं दूतं वृशीमहे होतांरं विश्व वेंदसम्। ऋस्य य ज्ञस्यं सुक्रतुं ॥ (भवेद १.१२.१)

उभूर्भुवः स्वः। अग्नेय नमः। अग्निमावाहयामि। भो अग्ने इहा गच्छ इह तिष्ठ। पूजां गृहारा। वरराो भव। दक्षिरा यमं—(दक्षिरा दिशा में यम का आवाहन करें।) यमाय सोमं यमोयमोनुष्ठुप् यमावाहने विनियोगः।

ॐ युमाय सोमं सुनुत युमायं जुहुता हुवि:। यमंहं युज्ञो गंच्छत्युग्नि दूंतो ऋरंकृत:।। (भावेद १०.१४.१३)

उभूर्भुवः स्वः यमाय नमः। यममावाहयामि। भो यम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहारा। वरदो भव। नैसृत्यां निसृतिं—(नैसृत्य दिशा में निसृति को।)

मोषुराः करावो निम्नतिर्गायत्री निम्नत्या वाहने विनियोगः॥

ॐ मोषुराः परांपरा निर्ऋतिंर्दुर्हगांवधीत्। पदीष्टतृष्णांयास्ह।। (भग्वेद १.३ =.६)

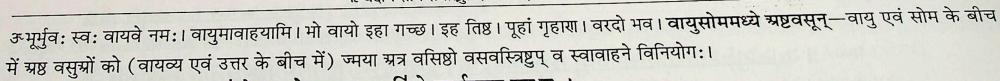
ॐभूर्भुवः स्वः निर्म्यतये नमः। निर्म्यतिमावाहयामि। भो निम्यति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहार्ग। वरदो भव। पश्चिमे वरुरां—(पश्चिम दिशा में वरुरा का स्रावाहन करें।) तत्वायामि शुनःशेपो वरुरास्त्रिष्टुप् वरुरागवाहने विनियोगः।

ॐ तत्वांयामि ब्रह्मंगा वन्दंमान्स्तदा शांस्ते यजंमानो हुविभिः।

ऋहेंळमानो वरुगोह बोध्युर्रुशं समान् ऋायुः प्रमोषीः ॥ (ऋग्वेद १.२४.११)

अभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि। भो वरुण इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। वायव्यां वायुं—(वायव्य दिशा में वायु का स्रावाहन करें।) वायोशतं वामदेवो वायुरनुष्टुप् वाय्वावाहने विनियोगः।

ॐ वायोशतं हरींगां युवस्व पोष्यांगां। उतवांते सहस्त्रिगो रथुत्रायांतुपाजंसा। (मावेद ४.४=.४)



ॐ ज्म्या स्रत्रु वसंवो रन्तदेवाउरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभ्राः। स्रावीक्पथ उंरुजयः कृगुध्वं श्रोतांदूतस्यंज्ग्मुषोंनो स्रस्य॥ (स्रावेद ७.३६.३)

ऊभूर्भुवः स्वः ऋष्टवसुभ्यो नमः। ऋष्टवसून् ऋष्टाह्मान भो ऋष्टवसवः इहा गच्छ। इह तिष्ठतः। पूजां गृहाण। वरदो भवत। सोमेशानयोर्मध्ये एकादशमरुद्रान्—(सोमन एवं ईशान के बीच में एकादश रुद्रों का ऋष्वाहन करें।) (उत्तर एवं ईशान के बीच में) ऋरद्रा सः श्यावाश्व एकादश रुद्रों जगती। एकादशरुद्रावाहने विनियोगः।

ॐ ग्रार्रु द्वास्इन्द्रंवन्तः स्जोषंस्रो हिरंगयरथाः सुवितायंगंतन । इयं वो ग्रुस्मत्प्रतिंहर्यतेमृतितृष्णाजेन दिवउत्सांउदुन्यवे । (भ्रावेद ४.४७.१)

ङभूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः। एकादश रुद्रानावाहयामि। भो एकादशरुद्राः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। **ईशानेन्द्रयोर्मध्ये** द्वादशादित्यान्—(ईशान्य एवं पूर्व के बीच में द्वादशादित्यों का ग्रावाहन करें।) त्यांनुमत्स्योमान्योवा द्वादशादित्यागायत्री द्वादशादित्या–वाहने विनियोगः।

ॐ त्यांनुक्षत्रियाँ ऋवं ऋदित्यान्यांचिषामहे। सुमृळीकाँऋभिष्टंये।। (यजुर्वेन्द-२ काराड-१ प्रश्न-११ अनुवाक-१८ मन्त्र)

ॐभूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः। द्वादशादित्यानावाहयामि। भो द्वादशादित्याः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृऋीत। वरदो भवत। इन्द्राग्निमध्ये ऋश्विनौ—(पूर्वा एवं ऋग्नोय के बीच में ऋश्विनी देवताऋों को ऋगवाहन करें।) ऋश्विनावर्तिर्गीतमोश्विनावुष्णिक् ऋश्व्यावाहने विनियोगः।

ॐ म्रिंवनावृर्तिरुस्मदागोमंद्दस्राहिरंरायवत्। मुर्वाग्रथंसमंनसानियंच्छतं॥ (मण्वेद १.६२.१६)



ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन

ॐभूर्भुवः स्वः ऋश्विभ्यां नमः। ऋश्विनौ ऋञाहयामि। भो ऋश्विनौ इहा गच्छतं। इह तिष्ठतं पूजां गृषीतं। वरदौ भवतं। ऋग्नियम मध्ये विश्वेदेवान् सपैतृकान्—(ऋग्नोय एवं दक्षिण के बीच में पितृसाहित विश्वेदेवों का ऋञाहन करें।) ऋोमासोमधुच्छंदाविश्वेदेवा गायत्री। विश्वेदेवावाहने विनियोगः। ॐ ऋोमांसश्चर्षराधिृतोविश्वेदेवा स् ऋग्नांत। दाश्वांसोदाशुषं: सुतं॥ (ऋग्वेद १.३.७)

अभूर्भुवः स्वः विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः विश्वान् स्रावाहयामि। भो विश्वेदेवाः इहा गच्छत। इह तिष्ठंत पूजां गृऋीत। वरदा भवत। यम निऋतिमध्ये सप्तयक्षान्—(दक्षिण एवं नैऋत्य के बीच में सप्त यक्षों का स्रावाहन करें।) स्राभित्यं वामदेवः सप्तयक्षा स्रष्टी। सप्तयक्षावहने विनियोगः।

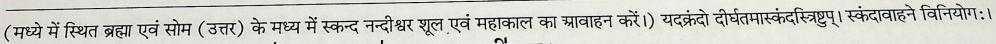
ॐ ऋभित्यं देवं..संवितारंमो्रयोः क्विक्रंतुर्चीम सृत्यंसवस..रत्वधाम्भिप्रियंम्तिमूर्ध्वा यस्यामित्भा ऋदिंद्युत्त्सवीमिन्हिरंरयपारिगरिममीत सुक्रतुः कृपासुवः॥ (यजुर्वेद-१ काराड-२ प्रश्न-६ अनुवाक)

उभ्भूनिः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान् ग्रावाहयामि। भो सप्तयक्षाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृऋीत। वरदा भवत। निर्सति वरुणा मध्ये भूतनागान्—(नैर्ऋत्य एवं पश्चिम के बीच में भुतगणा एवं नागों का ग्रावाहन करें।) ग्रायङ्गो सार्पराज्ञी सर्पा गायत्री। सर्पावाहने विनियोगः। ग्रायं गौः पृश्चिरक्रमीद संदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्तस्वः॥ (ऋग्वेद १०.१ = ६.१)

उन्भूर्मुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः। सर्पान् त्रावाहयामि। भो सर्पाः इहागच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। वरुगावायुमध्ये गंधवीप्सरसः—(पश्चिम एवं वायव्य के बीच में गन्धर्व एवं त्रप्सरात्रों का त्रावाहन करें।) त्रप्सरसामृष्यशृङ्गोगंधर्वाप्सरसोनुष्टुप्। गन्धर्व त्रप्सरावाहने विनियोगः।

ॐ ऋप्सरसीं गन्ध्वीं गां मृगागाां चरंगोचरंन्। केशीकेतंस्य विद्वान्त्सर्वास्वादुर्मेदिन्तंमः॥ (ऋषेद १.१६३.६)

अभूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। गन्धर्वाप्सरस ग्रावाहयामि। भो गन्धवाप्सरसः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। ब्रह्म सोममध्ये स्कन्दं नन्दीश्वरं शूलं महाकालं च



ॐ यदक्रंदः प्रथमं जायंमान उद्यन्संमुद्रादुतवा पुरीषात्। श्येनस्यंपक्षा हिर्गास्यं बाहू उपस्तुत्यं महिजातंते अर्वन्॥ (ऋग्वेद १.१६३.१)

ङभूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः। स्कन्दमावाहयामि। भो स्कन्द इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहारा। वरदो भव। ऋषभमृषभो नन्दीश्वरोनुष्टुप्। नन्दीश्वरावाहने विनियोगः।

ॐ ऋषुभं मांसमानानां सुपत्नांनां विषासृहिं। हुंतारं शत्रूंशां कृधि विराजं गोपंतिं गवां ॥ (ऋग्वेद १०.१६६.१)

ॐभूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वरं म्रावाहयामि। भो नंदीश्वर इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहागा। वरदो भव। कदुद्राय घौरः करावः शूलो गायत्री

शूलावाहने विनियोगः। ॐ कद्रुद्राय् प्रचेतसेमीह्ळुष्टमायृतव्यंसे। वोचेम्शतंमंहुदे॥ (ऋग्वेद १.४३.१)

ङभूर्भुवः स्वः शूलायनमः शूलमावाहयामि । भो शूल इहा गच्छ । इह तिष्ठ पूजां गृहारा। वरदो भव । कुमारं माता कुमारी महाकालस्त्रिष्टुप् । **महाकालावाहने** विनियोगः ।

ॐ कुमारं मातायुंवतिः समुंब्ध्ङक्कृहांबिभर्ति न दंदातिपित्रे। ऋनीकमस्य निमनज्जनांसः पुरः पंश्यंति निहिंतम्रतौ॥ (ऋग्वेद ४.२.१)

उभूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः। महाकालमावाहयामि। भो महाकाल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूहां गृहारा। वरदो भव। **ब्रह्मेशानमध्ये दक्षं**—(बीच में विद्यमान ब्रह्मा एवं ईशान्य दिशा के बीच में दक्ष का ग्रावाहन करें।) ग्रदितर्बृहस्पितर्दक्षोनुष्टुप्। दक्षावाहने विनियोगः।

ॐ म्रदितिह्यजिनिष्टदक्ष्यादुहितातवं। तां देवा म्रन्वंजायन्त भुद्रा म्रुमृतंबंधवः॥ (म्रावेद १०.७२.५)

उभूर्भुवः स्वः दक्षाय नमः। दक्षमावाहयामि। भो दक्ष इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहारा। वरदो भव। ब्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गां विष्णुं च (ब्रह्मा एवं इन्द्र के बीच में ग्रथीत् बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पूर्व के बीच में दुर्गा एवं विष्णु का ग्रावाहन करें।) तामग्निवर्गां सौभरिदुर्गात्रिष्टुप्। दुर्गावाहने विनियोगः।

अ ताम्ग्रिवंशार् तपंसाज्वलंतीं वैरोच्नीं कंर्मफलेषुजुष्टां।

दुर्गां देवीं शरंगामृहंप्रंपद्ये सुतरंसितरसे नमंः॥ (यजुर्वेद-दुर्गासूक)

ॐभूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः। दुर्गां स्रावाहयामि। भो दुर्गे इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहारा। वरदा भव। इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुगायत्री। विष्णवावाहने विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुंर्विचंक्रमेत्रेधानिदंधेपुदं। समूह्णमस्य पांसुरे॥ (ऋखेद १.२२.१७)

ॐभूर्भुवः स्वः विष्णावेनमः। विष्णुं ग्रावाहयामि। भो विष्णो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहागा। वरदो भव। ग्रह्माग्नि मध्ये स्वधां (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं ग्राग्नेय दिशा के बीच में स्वधा को) उदीरतां शंखः स्वधा त्रिष्ठुप्। स्वधावाहने विनियोगः।

ॐ उदीरता मर्वरउत्परांस्उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। ऋसुंय ईयुरंवृकाऽऋंत्ज्ञास्तेनीवंतु पितरो हवेषु॥

(मृग्वेद १०.१५.१)

ङभूर्भुवः वः स्वधायै नमः। स्वधामावाहयामि। भो स्वधे इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहारा। वरदा भव। **ब्रह्म यममध्ये मृत्युरोगान्**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं दक्षिरा दिशा के बीच में मृत्यु एवं रोगों का ग्रावाहन करें।) परं मृत्यो संकुसुकोमृत्युरोगास्त्रिष्टुप्। मृत्युरोगावाहने विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो ऋनुपरेहिपंथांयस्तेस्व इतरोदेवयानांत्। चक्षुंष्मते शृगवतेते ब्रवीमिमानः प्रजारीरिषोमोत वीरान्॥

(मृग्वेद १०.१ =.१)

अभूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः। मृत्यरोगान् ग्रावाहयामि। भो मृत्युरोगाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। ब्रह्म निर्मृतिमध्ये गरापितं (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं नैमृत्य दिशा के बीच में गरापित का ग्रावाहन करें।) गराानान्त्वा शौनकोगृत्समदो गरापितर्जगती। गरापत्या वाहने विनियोगः।

ॐ गुणानांत्वाग्णपंतिं हवामहे कृविं कवीनामुंपमश्रंवस्तमं। ज्येष्ठराजंब्रह्मंगां ब्रह्मगस्पत् स्नानंः शृगवन्नृतिभिः सीदुसादंनं॥ (ऋषेद २.२३.१)

अभूर्भुवः स्वः गरापतये नमः। गरापतिमावाहयामि। भो गरापति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहारा। वरदो भव। **ब्रह्मवरुरामध्ये ऋपः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पश्चिम दिशा के बीच में जल का स्रावाहन करें।) शंनोदेवीः सिंधुद्वीप स्रापो गायत्री। ऋप् स्रावाहने विनियोगः।

ॐ शंनोंदेवीर्भिष्टय स्रापों भवंतु पीतयें। शंयोर्भिस्त्रंवंतु नः ॥ (मावेद १०.६.४)

ॐभूर्भुवः स्वः ग्रद्भयो नमः। ग्रपः ग्रावाहयामि। भो ग्रापः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृग्शीत। वरदा भवत। **ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं वायव्य दिशा के बीच में मरुत् का ग्रावाहन करें।) मरुतोयस्यगोतमो मरुतो गायत्री। मरुदावाहने विनियोगः

ॐ मर्रुतोयस्य हि क्षयेपाथा दिवोविंमहसः। स सुंगोपातंमोजनः (मावेद १. =६.१)

उभूर्भुवः स्वः मरुद्भयो नमः। मरुतः ग्रावाहयामि। भो मरुतः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहरीत। वरदा भवत। ब्रह्मणः पादमूले कर्शिकाधः पृथिवीं (बीच में स्थित ब्रह्मा जी के नीचे पादमूल में पृथिवी का ग्रावाहन करें।) स्योना पृथिवी मेधातिथिर्भूमिर्गायत्री। भूम्यावाहने विनियोगः।

ॐ स्योना पृंथिवि भवानृक्ष्रानिवेशंनी। यच्छानुः शर्मं सप्रर्थः॥ (ऋषेद १.२२.१४)

अभूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः। भूमिं ग्रावाहयामि। भो भूमे इहा गच्छा। इह तिष्ठ। पूजां गृहारा। वरदा भव। तत्रैव गङ्गादिसर्वनद्यः—(उसी स्थान पर ग्रर्थात पृथिवी पर ही गङ्गादि सभी नदियों का ग्रावाहन करें।) इमं मे गङ्गे सिंधुक्षित्प्रैयमेधानद्यो जगती। गङ्गादिनद्यावाहने विनियोगः।



ॐ इमं में गङ्गेयमुनेसरस्वित्शुतुंद्विस्तोमंं सचताप्रुष्या। ऋसिक्यामं रुद्वधेवितस्त्या जींकीयेशृगाुह्या सुषोमंया॥

(मृग्वेद १०.७५.५)

380

ॐभूर्भुवः स्वः गङ्गादि नदीभ्यो नमः। गङ्गादि नदीः स्रावाहयामि। भो गङ्गादिनद्यः इहागच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहर्गीतां। वरदा भवत। तत्रैव सप्तसागराः। (वहीं पर सात सागरों का स्रावाहन करें।) धाम्नो धाम्नो वामदेवः सप्तसागरा स्रष्टी। सप्त सागरावाहने विनियोगः।

ॐ धाम्नों धाम्नो राजन्नितो वंरुगानोमुञ्च। यदापो ऋध्न्या इति वरुगोतिशपामहेततो वरुगानोमुञ्च। मियवापोमोषंधीहिं सीरतों विश्वव्यंचा भूस्त्वेतों वुरुगानो मुञ्च॥ (यजुर्वेद-१ काराड-३ प्रश्न-११ मन्त्र)

उभूर्मुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः। सप्तसागरान् म्रावाहयामि। भो सप्तसागराः इहागच्छत। इह तिष्ठतः। पूहां गृहणीत। वरदा भवत। तदुपिर मेरवे नमः। मेरुं म्रावाहयामि। (उसके ऊपर मेरु पर्वत का म्रावाहन करें।) (भूमि पर) सोमसमीपे गदायै नमः। गदां म्रावाहयामि। (सोम के पास (उत्तर) गदा का म्रावाहन करें।) ईशान समीपेत्रिशूलाय नमः। त्रिशूलं म्रावाहयामि।। (ईशान के पास ईशान में त्रिशूल का म्रावाहन करें।) इन्द्रसमीपे वज्राय नमः। वज्रं म्रावाहयामि। (इन्द्र के पास पूर्व में वज्र का म्रावाहन करें।) म्राग्न समीपे शक्तये नमः। शक्तिं म्रावाहयामि। (म्राग्न के पास म्राग्नेय में शक्ति का म्रावाहन करें।) यम समीपे दराडाय नमः। दराड म्रावाहयामि। (यम के पास दक्षिण में दराड का म्रावाहन करें।) निर्म्नित समीपे खड्गय नमः। खड्गमावाहयामि। (निर्म्नित के पास नैम्नत्य के खड्ग का म्रावाहन करें।) वरुण समीपे पाशाय नमः। पाशं म्रावाहयामि। (वरुण के पास पश्चिम में पाश का म्रावाहन करें।) वरुण समीपे म्रावाहयामि। (वरुण के पास वायव्य दिशा में मंकुश का म्रावाहन करें।) भ्रायावन करें।)

तद्वाहये उत्तरादि क्रमेरा (मराडल के बाहर) गौतमाय नमः। गौतमं ग्रावाहयामि। (उत्तर में गौतम जी का ग्रावाहन करें।) भारद्वाजाय नमः। भरद्वाजं ग्रावाहयामि। (ईशान में भरद्वाज जी का ग्रावाहन करें।) विश्वामित्राय नमः। विश्वामित्रं ग्रावाहयामि। (पूर्व में विश्वामित्र जी का ग्रावाहन करें।) कश्यपाय नमः। कश्यपं ग्रावाहयामि। (ग्राग्नेय में ग्रश्यप जी का ग्रावाहन करें।) जमदग्रये नमः। जमदग्निं ग्रावाहयामि। (दक्षिण में जमदग्निं जी का ग्रावाहन करें।) विसष्ठाय नमः। विसष्ठं ग्रावाहयामि। (नैर्म्रत्य में विसष्ठ जी का ग्रावाहन करें।) ग्रहंधत्ये नमः। ग्रहंधतीं ग्रावाहयामि। (वायव्ये में ग्रहंधित जी का ग्रावाहन करें।) ततः पूर्वादि क्रमेण मातृः। (पूर्वादि क्रम से मण्डल के बाहर मातृगणों का ग्रावाहन करें।) ऐंद्र्ये नमः। ऐन्द्रीं ग्रावाहयामि। (पूर्व में ऐन्द्री का ग्रावाहन करें।) कौमार्ये नमः। कौमारीं ग्रावाहयामि। (ग्राग्नेय में कौमारी का ग्रावाहन करें।) ब्राह्मै नमः। ब्राह्मीं ग्रावाहयामि। (दक्षिण में ब्राह्मी का ग्रावाहन करें।) वेष्णव्ये नमः। वाराहीं ग्रावाहयामि। (वायव्य में वेष्णवी का ग्रावाहन करें।) वैनायक्यै नमः वैनायकीं ग्रावाहयामि। (ईशान्य में वैनायकी का ग्रावाहन करें।) इति सर्वतो मद्र देवताः। (यहाँ पर सर्वतोमद्रमण्डल में विद्यमान सभी देवताग्नों का ग्रावाहन संपन्न हुग्रा।)

ॐ तदंस्तु मित्रावरुगातदंग्रेशंयोरसमभ्यंमिदमंस्तु शास्तं। ऋशीमिहं गाधमुतप्रंतिष्ठां नमों दिवे बृंहते सादंनाय॥

(मृग्वेद ५.४७.७)

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तं तत् प्रतिष्ठिततमया वाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँलभते गृहानेवै नानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा ॥

ॐ नर्यंप्रजां में गोपाय ॥ श्रुमृतुत्वायं जीव सें॥ जातां जीनुष्यमांगां च॥ श्रुमृतें सत्वे प्रतिष्ठितां॥ (यजुर्वेद-ब्राह्मण)

एता: ब्रह्मादि देवता: सुप्रतिष्ठिता: सन्तु। (इन मन्त्रों को कहकर ग्रावाहित ब्रह्मादि देवताग्रों का प्रतिष्ठा करें।)

ॐ ब्रह्मंजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसींमृतः सुरुचींवेन ऋावः। सुबुधियां उपमा ऋस्य विष्ठाः सृतश्च

योनिमसंतश्चिवं: ॥ (यजुर्वेद-४ काराड-२ प्रश्न-= ग्रनुवाक-४ मन्त्र)

म्रनेन मंत्रेश पूजयेत्। (इस मन्त्र से पूजन करें।) अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। म्रावाहयामि। म्रासनं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्वागतं समर्पयामि। पादारिवन्दयोःपाद्यं पाद्यं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। हस्तयोः म्रध्यं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। मुखे म्राचमनीयं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ स्रापोहिष्ठा मयोभुवः तानं ऊर्जे दंधातन। महेरणांय चक्षंसे॥ यो वं: शिवतंमोरस्स्तस्यं भाजयते हनं:। उशातीरिंव मातरं:॥ तस्मा स्रारंगमामवो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। स्रापोजनयंथा च नः॥ (स्रवेद १०.६.१)

स्नानं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्नानाङ्ग स्नाचमनं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ युवं वस्त्रांशि पीवसा वंसाथे युवोरिच्छंद्रामन्तंवोहसर्गीः। त्रवातिरत्मनृंतान् विश्वं ऋतेनं मित्रा वरुशा यचेथे॥

(स्रग्वेद १.१५२.१)

वस्त्रयुग्मं समर्पयामि। वस्त्रान्ते ग्राचमनं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

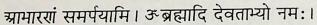
ॐ यज्ञीपवीतं परेमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। ऋायुंष्यम्ग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञीपवीतं बलमंस्तु तेर्जः॥

(भृग्वेद)

यज्ञोपवीतं समर्पयामि । अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ हिरंगयरूपः स हिरंगय संदूगपान्नपात् सेदु हिरंगयवर्गाः। हिरगययात् परियोनेर्निषद्याहिरगय् दादंदुत्यन्नमस्मै॥

(मग्वेद २.३५.१०)



ॐ गन्धं द्वारां दुंराधृषां नित्यपुंष्टां करीषिशांं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

गन्धं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

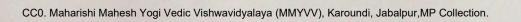
ॐ स्रर्चित् प्रार्चित् प्रियंमेधासो स्रर्चित। स्रर्चेन्तु पुत्रका उतपुंरन्न धृष्णवंर्चत ॥ (स्रवेद म.६६.म)

ग्रक्षतान् समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ स्रायंने ते प्रांयग्रो दूर्वीरोहन्तु पुष्पिग्रीः। हृदाश्चं पुगडरीकाग्रि समुद्रस्य गृहा इमे। पुष्पाग्रि समर्पयामि।

(भृग्वेद १०.१४२.८)

नाम पूजां करिष्ये — अब्रह्मणे नमः। असोमाय नमः। अईशानाय नमः। अइन्द्राय नमः। अग्रप्ये नमः। अयमाय नमः। अनिर्म्यते नमः। अवरुणाय नमः। अवरुणाय नमः। अवरुणाय नमः। अप्रायते नमः।





वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढयः सुमनोहरः। स्राघ्नेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥ धूपं स्राघ्नापयामि। (प्रयोगरताकर)

अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

म्राज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं विह्नना योजितं मया। गृहारा मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह ॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

दीपं दर्शयामि धूपदीपानन्तरं भ्राचमनं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। (नैवेद्य को गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण करें नैवेद्य मगडल पर रखें। सत्यं त्वर्तेन परिषञ्चामि। इस मन्त्र से परिषञ्चन करें।) भ्रमृतोपस्तरणमिस कहकर जल छोड़ें। अप्राणाय स्वाहा (भ्रङ्गुष्ठ एवं किनिष्ठिका मिलाकर) अभ्रपानाय स्वाहा (भ्रङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर) अव्यानाय स्वाहा (भ्रङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर) अउदानाय स्वाहा (भ्रङ्गुष्ठ एवं भ्रनामिका मिलाकर) असमानाय स्वाहा (भ्रभ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर) अदेवेभ्यः स्वाहा नैवेद्यं निवेदयामि। भ्रमृतापिधानमिस कहकर जल छोड़ें। नैवेद्यं विसर्जयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। गगडूषं समर्पयामि। पुनराचमनं समर्पयामि। (कहकर जल छोड़ें) अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

पूगीफल समायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्रा कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यतां। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। (देवपूजा)

अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

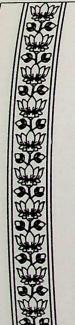
ॐ ग्रर्चीतु प्रार्चीतु प्रियंमेधा सो ग्रर्चीत। ग्रर्चीन्तु पुत्रु का उत पुरं न धृष्यवर्चित। (मावेद =.६£.=)

ॐ ध्रुवाद्यौ र्धुवापृथिवीध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजां विशाम्यम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वर्रुगो ध्रुवं देवो बृंहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्चे राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (मावेद १०.१७३.४)

मङ्गलनीराजनं समर्पयामि । नीराजनान्ते परिमल पत्र पुष्पाणि समर्पयामि । मन्त्रपुष्पं समर्पयामि । प्रदक्षिणं समर्पयामि । नमस्कारान् समर्पयामि ।

देवाराधनमगडलं सुरगगावासं सदामङ्गलं। कुर्तुः दर्शनमात्रतः शुभकरं तत् पञ्च भूतात्मकं॥



त्र्याद्यक्षरसंयुतं भयहरं तद् याग पुरायार्जितं। नानामन्त्रमयं समस्त फलदं ध्यायेन्मनोनन्दनं।। त्र्यति प्रतिष्टानि बहून्यस्मिन् दुष्कृतानि शतानि च। मराडलानि निरीक्षन्ते यथा युद्धेषु कातराः॥ (अनुष्ठान पद्धित)

(युद्ध भूमि में कायर जैसे देखते ही भीत हो जाते हैं, वैसे ही मगडल को देखते ही सभी ऋरिष्ट दूर हो जाते हैं।) ऋनया पूजया ब्रह्मादि मगडल देवताः प्रीयन्तां यहाँ पर सर्वतोभद्र मगडल पूजन संपन्न हुग्रा।

प्रधान देवता सूर्य षोडशोपचार पूजन

ध्यान — कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं,। रक्तं रक्तविभूषगाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्॥ सप्ताश्चं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिगाकरं सेवामहे भास्करम्॥ ॐ घृणिः सूर्यम्मादित्यः। म्रावाहन-ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यं तिष्ठद् दशांगुलम्॥ (भ्राप्वेद १०.६०.१) ॐ हिरंगयवर्गा हिरंगीं सुवर्गीरज्त स्रंजाम्। चुन्द्रां हिरंगमंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म स्रावंह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसूर्याय नमः। ग्रावाहयामि। ग्रावाहनं समर्पयामि।

मासनम् ॐ पुरुष ए्वेदं सर्वं यद्भूतं यंच्य भव्यंम्। उतामृत्त्वस्येशांनो यदन्नेना तिरोहं ति॥ (भग्वेद १०.६०.२)

ॐ तां मु स्रावंह जातवेदो लुक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंगयं विंन्देयं गामश्वं पुरुंषानुहम्।। (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। ग्रासनं समर्पयामि।

पाद्यम् ॐ ए्तावांनस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुंषः। पादोंऽस्य विश्वांभूतानिं त्रिपादंस्यामृतं दि्वि॥ (भगवेद १०.६०.३)

ॐ ऋश्वपूर्वा रंथम्ध्यां हस्तिनांद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपंह्वये श्रीमीं देवी जुंषताम्॥ (पञ्चम मराइलस्य परिशिष्टम्) असपरिवाराय श्रीसूर्याय ममः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। ऋर्धः— ॐ त्रिपादूर्ध्व उद्देत् पुरुषः पादों ऽस्येहा भंवत्पुनः। ततो विश्वं व्यंक्रामत् साशनानशृने ऋभि॥ (ऋग्वेद १०.६०.४

श्रर्धं अ त्रिपादूर्ध्व उद्वैत् पुरुषः पादों ऽस्येहा भंवत्पुनः। ततो विश्वं व्यंक्रामत् साशनानशने श्रिभि।। (मण्वेद १०.६०.४) अ कां सोस्मितां हिरंगय प्राकारांमाद्रां ज्वलेन्तीं तृप्तां तुर्पयंन्तीम्।

पुद्मेस्थितां पुद्मवंगार्गं तामिहो पंह्नये श्रियंम्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्) अस्परिवाराय श्रीसूर्याय नमः हस्तयोः स्रर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

त्राचमनम्—ॐ तस्मांद्विराळंजायत विराजो ऋधिपूरुंषः। स जातो ऋत्यंरिच्यत पृश्चाद् भूमिमथोंपुरः। (ऋषेद १०.६०.४) ॐ चुंद्रां प्रंभासां युशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुंष्टा मुदाराम्।

तां पुद्मिनीं मीं शरंगामुहं प्रपंद्येऽलुक्ष्मीमेंनश्यतां त्वां वृंगो ।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। मुखे ग्राचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ स्राप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतः सोम्वृष्णियं । भवावार्जस्य संग्थे । (म्रावेद १०.६१.१६)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल-ॐ सुद्योजातं प्रंपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भुवे भंवेनाति भुवे भवस्वुमाम् भुवोद्भंवायु नर्मः॥

(यजुर्वेद-महानारायगोपनिपत् ग्रारगयक)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दिह— ॐ दिध्काव्यों ऋकारिषं जिष्योरश्चस्य वाजिनं:। सुरिभनोमुखां कर्त्प्रग् ऋायूंषितारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३६.६)



असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। दिध स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामुद्देवाय नमों ज्येष्ठाय नमंश्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमःकलंविकरणाय नमोबलाय नमो बलंप्रमथनाय नम्स्संर्वभूतदमनाय नमों मुनोन्मंनाय नमेः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-त्राररायक)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृतं मिंमिक्षे घृतमंस्ययोनिर्घृते श्रितो घृतं वंस्य धामं।

ऋनुष्वधमावंह मादयंस्व स्वाहांकृतं वृषभविक्ष हृव्यम्।। (ऋग्वेद २.३.११) ॐसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल-ॐ ऋघोरेंभ्योऽथ घोरेंभ्यो घोरघोरं तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्व्शर्वेभ्यो नमंस्ते ऋस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

(यजुर्वेद-महानारायगोपनिषत्-ग्रारगयक)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवातां ऋतायते मधुंक्षरंति सिंधंवः । माध्वीर्नः संत्वोषंधीः ॥ मधुनक्तंमुतोषसो मधुंमृत् पार्थिवं रजः । मधुद्यौरंस्तु नः पिता ॥ मधुंमान्नो वनस्पतिर्मधुंमाँ ऋस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवंतु नः ॥ (ऋवेद १.६०.६) असपिरवाराय

श्रीसूर्याय नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुंषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयांत्।। (यजुर्वेद-महानारायगोपनिषत्-स्रारणयक)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शकर)—ॐ स्वादुः पंवस्व दिव्याय जन्मंने स्वादुरिंद्रांय सुहवींतु नाम्ने। स्वादुर्मित्राय वर्रुगाय वायवे बृहस्पतंये मधुंमाँ स्रदांभ्यः॥ (स्रावेद स. १४.६)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि। शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वं विद्यानामीश्वरस्सर्वं भूतानां ब्रह्माधिपतिब्रह्मगोऽ धिपतिब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोऽम्॥ (यजुर्वेद-महानारायकोपनिषत्-आरख्यक)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फुलिनी र्या ऋंफुला ऋंपुष्पायाश्चं पुष्पिगाीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानों मुञ्चन्त्वं हंसः॥ (ऋग्वेद १०.६७.१४)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ स्रापोहिष्ठा मंयोभुवस्तानंऊर्जे दंधातन। मृहेरशांय चक्षंसे॥ यो वंः शिवतंमोरस्स्तस्य भाजयते हनंः।

उ्शृतीरिव मातरं: ॥ तस्मा ऋरंगमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ । ऋषों जनयंथा च नः । (ऋखेद १०.६.१-२-३)

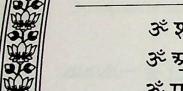
ॐ कदुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्ट्रमाय तव्यंसे। वोचेम् शंतमं हृदे॥ (म्रावेद १.४३.१)

ॐ यथां नो ऋदिंतिः कर्त्पश्चे नृभ्यो यथा गर्वे। यथां तोकायं रुद्रियंम्।। (ऋग्वेद १.४३.२)

ॐ यथां नो मित्रो वर्रुगो यथां रुद्रश्चिकंति। यथा विश्वें स्जोषंसः।

ॐ गाथपंतिं मेधपंतिं रुद्रं जलांषभेषजम्। तच्छं योः सुम्रमींमहे॥

ॐ यः शुक्र इंव सूर्यो हिरंगयमिव रोचंते। श्रेष्ठों देवानां वसुः।



ॐ शं नंः कर्त्यर्वं ते सुगं मेषायं मेष्यें। नृभ्यो नारिभ्यो गर्वे॥

ॐ ग्रुस्मे सोम् श्रियमधि नि धेहि श्तस्यं नृशाम्। महिश्रवंस्तुविनृम्शाम्।।

अ मार्नः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरंत। स्रा न इंदो वार्ज भज।

ॐ यास्ते प्रजा ऋमृतंस्य परंस्मिन्धामंत्रृतस्यं। मूर्धा नाभां सोमवेन ऋा भूषंतीः सोम वेदः॥ (ऋषेद १.४३.३-४-४-६-७-६-५)

ॐ नमः सोमाय च रुद्रायं च नमंस्ताम्रायं चारुणायं च नमंः शुंगायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों स्त्रगेवधायं च दरेवधायं च नमों हन्त्रे च हनीयसे च नमों वृक्षेभ्यो हिरकेशेभ्यो नमंस्ताराय नमः शुंभवें च मयोभवें च नमः शंकरायं च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतराय च नमः स्तिथ्यीयच कूल्यांय च नमः पार्यीय चावार्यायं च नमः प्रतरंणाय चोत्तरंणाय च नमं स्नातार्यीय चालाद्यांय च नम्शष्याय च फेन्यांय च नमः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय

च। (यजुर्वेद-४ कागड-४ प्रश्ने- च मनुवाक)

ॐ तच्छुंयोरावृंगीमहे। गातुं युज्ञायं। गातुं युज्ञ पंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः।

ऊर्ध्वं जिंगातु भेष्जम्। शं नों ऋस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ (यजुर्वेद-आरायक)

ॐ यत्पुर्फषेगा हिवषां देवा युज्ञमतंन्वत । वृसंतो स्रस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शुरद्धविः ॥ (ऋषेद १०.६०.६)

ॐ म्राद्तित्यवंर्गो तप्सोऽधिंजातो वन्स्पित्स्तवं वृक्षोऽथं बिल्वः।

तस्य फलांनि तपसा नुंदंतु मायांतरा याश्चं बाह्या स्रंलक्ष्मीः। (ऋग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

कः सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्त्रानं समर्पयामि।

340

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

वस्त्र— ॐ युवं वस्त्राशि पीवसार्वसाथे युवोरिच्छंद्रा मंतंवो हसर्गीः। ग्रवातिरममनृंतािन विश्वं ऋतेनं मित्रा वरुशा सचेथे॥ (ऋषेद १.१४२.१) ॐ तं युज्ञं बहिष्टि प्रौक्षन् पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा ग्रंयजंत साध्या ऋषंयश्च ये॥ (ऋषेद १०.६०.७) ॐ उपैतु मां देवस्रवः कीर्तिश्च मशिंना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मिं राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं दुतदातुं मे॥

(भृग्वेद पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं —ॐ यज्ञोपवीतं प्रमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरास्तांत्। ऋायुष्यम्ग्रयं प्रतिमुंञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमंस्तु तेर्जः॥ ॐ तस्मांद्यज्ञात् संर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पृशून्ताँश्चेक्रे वायव्यानार्गयान् ग्राम्याश्च ये॥ (मण्वेद १०.६०.६) ॐ क्षुत् पिपासामेलां ज्येष्ठामेलुक्ष्मीं नांशयाम्यहंम्। ऋभृतिमसंम्ब्द्धं च सर्वान्निग्रीद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य

परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। यज्ञोपवीतं सगर्पयामि।

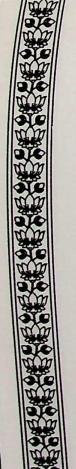
म्राभरशा—ॐ हिरंशयरूपः स हिरंशय संदूगपान्नपात् सेदु हिरंशयवर्शः। हिर्शययात् परियोने र्निषद्यां हिरग्यदा दंदत्यन्नमस्मै॥

(मृग्वेद २.३४.१०)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। ग्राभरगं समर्पयामि।

गन्थ— ॐ गंधं द्वारां दुंराध्र्षां नित्यपुंष्टां करीषिशाीम्। ईश्वरीं सर्वीभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्॥ (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

CC0. Maharishi Mahesh Yoqi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.



ॐ तस्मांद्यज्ञात् सर्वृहुत् ऋचुः सामांनि जिज्ञरे। छन्दंंसि जिज्ञरे तस्माद्य जुस्तस्मांदजायत॥ (भगवेद १०.६०.६) असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। गन्धं समर्पयामि।

म्रक्षत—ॐ मर्चीत् प्रार्चीत् प्रियंमेधासो मर्चीत । मर्चीन्तु पुत्रका उतपुरंन्न धृष्यवर्चत ॥ (मर्वेद =.६£.=)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। ग्रक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ स्रायंने ते प्रायंग्रे दूर्वीरोहंतु पुष्पिग्रीः। हृदाश्चं पुगडरींकाग्गि समुद्रस्यं गृहा इमे ॥ (मावेद १०.१४२.६) ॐ तस्मादश्वां स्रजायन्त ये के चो भ्यादंतः। गावोंहजज्ञिरे तस्मात् तस्मांज्ञाता स्रंजावयः॥ (मावेद १०.६०.१०)

ॐ मनंसुः कामुमाकूंतिं वाचः सत्यमंशीमिह। पृशूनां रूपंमन्नस्य मियु श्रीः श्रंयतां यशः।। (ऋग्वेद पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरग पूजनम्—ॐहृदयाय नमः। ग्राग्नेय दिशि। ॐशिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। ॐशिखायै वषट् नमः। नैर्ग्नत्यां दिशि। ॐकवचाय हुम् नमः। वायव्यां दिशि। अनेत्रत्रयाय वौषट् नमः। ऋग्रे अऋस्त्राय फट् नमः। ऋग्रेयादि कोरोषु पूजयेत् (ऋनुष्ठान पद्धति)। पूजन करे।

द्वितीयावरगा पूजनम्—ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्गाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। अग्रग्रये तेजोधिपतये पिंगलवर्गाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। उत्यमाय प्रेताधिपतये कृष्णावर्णाय दराड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। अनिर्मृतये रक्षोधिपतये रक्तवर्शाय खङ्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। अवरुगाय जलाधितये कुंदवर्गाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूति पार्षदाय नमः। अवायवे

प्रागाधिपतये धूम्रवर्णाय ग्रंकुश हस्ताय हरिगावाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय ग्रश्च वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐग्रनंताय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐग्रनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्मृत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में ग्रनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सूर्यमूर्तिपार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। (ग्रनुष्ठान पद्धित)

तृतीयावररापूजनम्—ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (ग्राग्नेय में) ॐदराडाय नमः। (दिक्षरा में) ॐखड्गाय नमः। (नैर्मृत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐग्रंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैर्मृत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) (ग्रनुष्ठान पद्धित)

सूर्य ऋष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐग्ररुशाय नमः। ॐशररयाय नमः। ॐकरुशारस सिन्धवे नमः। ॐग्रसमान बलाय नमः। ॐग्रारिक्षकाय नमः। ॐग्रादित्याय नमः। ॐग्रादिभूताय नमः। ॐ ग्राविलागमवेदिनेनमः। ॐ ग्रच्यायनमः। ॐ ग्राविलज्ञायनमः। ॐग्रन्द्रायनमः। ॐ इनायनमः। ॐविश्वरूपायनमः। ॐ इज्यायनमः। ॐ इन्द्रायनमः। ॐ मानवेनमः। ॐ इन्द्रिरामिन्द्रायनमः। ॐ ग्राप्तायनमः। ॐ वन्द्रनीयायनमः। ॐईशायनमः। ॐ सुप्रसन्नायनमः ॐ सुशीलायनमः ॐ सुवर्चसे नमः ॐवसुप्रदायनमः। ॐवसवेनमः। ॐवासुदेवायनमः। ॐउज्जवलायनमः। ॐउग्ररूपायनमः। ॐऊर्ध्वगायनमः। ॐविवस्वतेनमः। ॐउद्यत्किरराजालयनमः। ॐकृषिकेशायनमः। ॐऊर्जस्वलायनमः। ॐवीरायनमः। ॐनिर्जरायनमः। ॐजयाय नमः। ॐ ऊरुद्वभावरूपयुक्तसारथये नमः। ॐरुग्धन्त्रे

नमः। ॐ ऋक्षचक्रचराय नमः। ॐ ऋजुस्वभाविचत्ताय नमः। ॐ नित्यस्तुत्याय नमः। ॐ ऋकारमातृकावर्गारूपाय नमः। ॐ उज्जवलतेजसे नमः। ॐ ऋक्षायिधनाथाय नमः। ॐमित्रायनमः। ॐपुष्काराक्षाय नमः। ॐ लुप्तदन्ताय नमः। ॐशान्ताय नमः। ॐकान्तिदाय नमः। ॐधनाय नमः। ॐकनत्कनकभूषाय नमः। ॐ खद्योताय नमः। ॐलूनिताखिलदैत्याय नमः। ॐसत्यानन्द स्वरूपिरो नमः। ॐग्रपवर्गप्रदाय नमः। ॐग्रार्तशर्रयाय नमः। ॐएकाकिने नमः। ॐभगवते नमः। ॐ सृष्टिस्थित्यन्तकारिगो नमः। ॐगुगात्मने नमः। ॐघृिगाभृते नमः। ॐबृहते नमः। ॐब्रह्मगो नमः। ॐऎश्वर्यदाय नमः। ॐशर्वाय नमः। ॐहरिदश्वाय नमः। अशौरये नमः। अदशदिक्सम्प्रकशाय नमः। अभक्तवश्याय नमः। अग्रोजस्कराय नमः। अजियने नमः। अजगदानन्दहेतवे नमः। अजन्ममृत युजराव्याधिवर्जिताय नमः। ॐ ग्रौन्नत्यापदसञ्चरथस्थाय नमः। ॐ ग्रसुरारये नमः। ॐ कमनीकराय नमः। ॐ ग्रब्जवल्लभाय नमः। ॐ ग्रन्तर्बिहःप्रकाशाय नमः। ॐ ग्रचिन्त्याय नमः। ॐग्रात्मरूपिरो नमः। ॐ ग्रच्युताय नमः। ॐ ग्रपरेशाय नमः। ॐपरस्मै नमः। ॐज्योतिषे नमः। ॐग्रहस्कराय नमः। ॐरवये नमः अहरये नमः। अपरमात्मने नमः। अतरुगाय नमः। अवरेगयाय नमः। अग्रहागांपतये नमः। अभास्कराय नमः। अग्रादिमध्यान्तरहिताय नमः। 🌫 सौख्यप्रदायनमः। 🜫 सकलजगतांपतये नमः। ॐसूर्याय नमः। ॐकवये नमः। ॐनारायगाय नमः। ॐपरेशाय नमः। ॐतेजोरूपाय नमः। ॐहीं हिरखयगर्भाय नमः। ॐ ऐं इष्टार्थदाय नमः। ॐग्राशुप्रपन्नाय नमः। ॐश्रीमते नमः। ॐश्रेयसे नमः। ॐभक्तकोटिसौख्यप्रदायिने नमः। ॐनिखिलागमवेद्याय नमः। ॐनित्यानन्दाय नमः। ऋष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। (ऋनुष्ठान पद्धित)

धूपम् — अवनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। त्राघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुर्फष्ं व्यदंधुः कित्धा व्यंकल्पयन्। मुख्ं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादां उच्येते॥ (म्रावेद १०.६०.११) ॐ कर्दमेन प्रंजा भूता मृयि संभंव कर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ (म्रावेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। धूपं ग्राघ्रापयामि।

दीपम् न्याज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं विह्नना योजितं मया। गृहागा मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ (स्मृति संग्रह)
ॐ ब्राह्मगोंऽस्य मुर्खंमासी बाहू रांजन्यः कृतः। ऊरू तदंस्य यद्वैश्यः पुद्भयां शूद्रो श्रंजायत॥ (म्रग्वेद १०.६०.१२)
ॐ स्रापः सृजंतु स्त्रिग्धांनि चिक्लीत् वस मे गृहे। नि चं देवीं मातरं श्रियं वासयं मे कुले॥ (म्रग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
ॐसपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

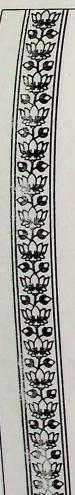
नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मगडलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य ग्रिभिघार्य निर्मलं हिव तदुपिर न्यस्य ग्राज्येन द्रवीभूतं कृत्वा ''ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यात्रं संशोध्य इक्षिगाहस्ते ग्रिग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते ग्रमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हिवराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरिभमुद्रां बध्वा ग्रमृतमयं भावियत्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहगोच्छां कुर्यात्।

''सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि'' इत्यनेन

(अनुष्टान पद्धति)

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः ''देवस्य जिह्नार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषागोदं हिवर्विभो'' इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिण हस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। ऋत्रात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं ऋबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्। नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य ऋंलिलमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः विधितं देवं हन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के ग्रागे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्र मगडल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल



हिवस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हिवस् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं'' इस वायु बीज को जपकर हिवस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) ग्रिग्न बीज को लिखकर उस ग्रिग्न से हिवस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में ग्रमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हिवस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। ॐ घृिणाः सूर्य ग्रादित्यः। इस मन्त्र का ग्राठ बार जप करें। हिवस् को मत्रमय एवं ग्रमृतमय होने की कल्पना करें। सुरिम मुद्रा से ग्रमृतमय हुग्रा है मानकर मलांश, धातु ग्रंश एवं रसांश को ग्रलग–ग्रलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। "सत्यं त्वर्तेन पिरिषञ्चामि" इससे पिरिषञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। "निवेदयामि भवते जुषाण हिविविभो" कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ किनिष्ठिका मिलाकर, ऋपानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, व्यानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, उदानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, समानाय स्वाहा। सभी अङ्गुलियों को लिाकर। अत्र से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को अपित करने की कल्पना करें।

''वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि'' कहकर नैवेद्य मुद्री का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति अधृिशः सूर्य आदित्यः।'' इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादुः पंवस्व दिव्याय जन्मंने स्वादुरिद्रांय सुहवींतुनाम्ने। स्वादुर्मित्राय वर्रुगाय वायवे बृहस्पतंये मधुंमां ऋदांभ्यः॥ (ऋषेद £.=४.६) ॐ चुन्द्रमा मनंसो जातश्चक्षोः सूर्यो ग्रजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्ची प्राणाद्वायुरंजायत।। (मानेद १०.६०.१३) ॐ ग्रादां पुष्करिंगीं पुष्ठिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चुन्द्रां हिरगमंथीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् ग्रावंह।।

(भृग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। **ऋमृतापिधानमसि** कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गराडूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—पूर्गीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्णं कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। (स्मृति संग्रह-देवपूजा)

असपरिवार श्री सूर्याय नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (त्रारित)—ॐ स्रर्चित् प्रार्चित् प्रियंमेधा सो स्रर्चित । स्र्यंतु पुत्रका उत पुरं न धृषावंचित । (स्रवेद =.६६.=) ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे । ध्रुवं विश्वमिदं जर्गद् ध्रुवो राजां विशामयम् ॥ ॐ ध्रुवं ते राजा वर्र्लगो ध्रुवं देवो बृहम्पितिः । ध्रुवं त् इन्द्रश्राग्निश्चं राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम् ॥ (स्रवेद १०.१७३.४)

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ सहस्त्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंभुवम् । विश्वं नारायंग्रं देवमक्षरं पर्मं पदम् ॥ विश्वतः पर्रमान्नित्यं विश्वं नारायग्रं हरिम् । विश्वंमेवेदं पुरुंषुस्तद्विश्व मुपंजीवति ॥ पत्तिं विश्स्यात्मेश्वरं .. शाश्वतं... शिवमंच्युतम् । नारायग्रं महाज्ञेयं विश्वात्मानं प्रायंग्रम् ॥ ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ



नारायुरा परोज्योतिरात्मा नारायुराः परः। नारायुरा परं ब्रुह्य तृत्वं नारायुराः परः॥ नारायुरा परो ध्याता ध्यानं नारायुराः परः। यच्च किंचिज्नंगत्सुर्वे दृश्यतें श्रूयुतेऽपिं वा॥ म्मन्तंब्हिश्चं तत्सुर्वे व्यांप्य नांरायुगास्थितः। मनंतुमव्यंयं कृविं.. संमुद्रेऽन्तं विश्वशंभुवम्॥ पुद्मकोश प्रतीकाशं... हृदयं चाप्यधो मुंखम्। ऋधोनिष्ट्या वितस्यांते नाभ्यामुंपिर तिष्ठंति॥ ज्वालमालाकुं नं भाति विश्वस्यायत्नं महम्। संतंत् .. शिलाभिंस्तु लेबंत्याकोश सित्रंभम्॥ तस्यांते सुषिरं.. सूक्ष्मं तिस्मिन्सुर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये मुहानिग्निविश्वाचिर्विश्वतो मुखः॥ सोऽग्रंभुग्वि भंजंतिष्ठन्नहारमजुरः कंविः। तिर्युगूर्ध्वमंधश्शायी रुश्मयं स्तस्य संतंता॥ सुंतापर्यति स्वं देहमापांदतलुमस्तंकः। तस्य मध्ये विह्निशिखा ऋगीयोध्वां व्यवस्थितः॥ नीलतोयदंमध्यस्थाद्विद्युल्लेखेव् भास्वंरा। नीवार्शूकंवत्न्वी पीताभांस्वत्यगूपंमा॥ तस्यां शिखाया मध्ये पुरमांत्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवःस हिर्स्से द्रस्सोक्षरः पर्मः स्वराट्॥ ॐ बराम्हाँ ग्रीस सूर्य बळीदित्य मृहाँ ग्रीस। मृहस्ते सृतो मिहिमा पंनस्यते ऽद्धा देव मृहाँ ग्रीस।। (ऋषेद ८.१०१.११) ग्रा.गृ.सूत्रम् ॐ नाभ्यां त्रासीदुंतरिक्षं शीष्णों द्यौः समंवर्तत। पुद्धयां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथां लोकाँ त्रंकल्पयन्। (ऋखेद-१०.६०.१४) ॐ त्राद्रौं युः करिंगीं यष्टिं सुवर्गां हेम्मालिनीम्। सूर्या हिरगमंयीं लुक्ष्मीं जातंवेदो म् त्रावंह॥

(ऋग्वेद-पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्) असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिण नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रगश्यिन्त प्रदक्षिण पदे पदे॥ (देवपूजा-स्मृति संग्रह)

ॐ सप्तास्यां सन् परिधयस्त्रिः सप्तस्मिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वाना ऋबंधन् पुर्हणं पृशुं॥ (ऋषेद १०.६०.१४) ॐ तां म् ऋषवंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंगयं प्रभूतं गावोदास्योऽश्चान् विंदेयं पुर्हणान्हम्॥ (ऋषेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

उसपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। प्रदक्षिण नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य— अप्रभाकराय विद्यहें दिवाकराय धीमिह। तन्नों सूर्य: प्रचोदयांत्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।) सर्वोपचार पूजनम्— अछत्रं समर्पयामि। चामरेश वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। ग्रांदोळिकामारोहयामि। ग्रश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवास्तानि धर्माशि प्रथमान्यांसन्। तेह नाकं महिमानंः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ (मण्वेद १०.६०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयंतो भूत्वा जुहुयांदाञ्यमन्वंहम्। सूक्तं पंचदंशर्चं च श्रीकामः सत्ततं जंपेत्।। (भ्रावेद-पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। सवोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं,। रक्तं रक्तविभूषगाध्वजरथच्छत्रश्रियाशोभितम्॥ सप्ताश्चं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरे: प्रदक्षिगाकरं सेवामहे भास्करम्॥ ॐ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायगायेति समर्पयामि॥ (भौगणिकम्)

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

ॐ ब्रह्मार्परां ब्रह्महिवः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मराा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।। (श्री भगवदीते) अ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। स्रनेन पूजनेन सपरिवारः श्री सूर्यः प्रीयताम्।

नवग्रहषोडशोपचार पूजन

ध्यायामि । ध्यानं समर्पयामि ।

ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ (मावेद १०.६०.१)

ॐ हिरंगय वर्गााँ हरिंगीं सुवर्गीरजतस्त्रंजाम्। चन्द्रां हिरगमंयीं लुक्ष्मीं जातंवेदो मु स्रा वंह।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रहमगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, **ग्रावाहनं समर्पयामि**।

ॐ पुरुष ए्वेदं सर्वं यद्भूतं यंच्य भव्यंम्। उतामृंतृत्वस्येशांनो यदन्नेंनातिरोहंति॥ (ऋपवेद १०.६०.२)

ॐ तां मु स्रावंह जातवेदों लुक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंगयं विन्देयं गांमश्रं पुरुषानुहम्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

उनवग्रहमग्डलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, ग्रासनं समर्पयामि।

ॐ ए्तावांनस्य महिमाऽतो ज्योयाँश्च पूर्रुष:। पादोंऽस्य विश्वांभूतानिं त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ (मावेद १०.६०.३)

ॐ ऋश्वपूर्वी रंथमुध्यां हस्तिनांद प्रमोदिंनीम्। श्रियं देवी मुपंह्ये श्रीमिं देवी जुंषताम्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रह मगडलस्थ म्रावाहित देवताभ्यो नमः, पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ॐ त्रिपादूर्ध्व उद्दैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भंवत् पुनः। ततो विष्वं व्यंक्रामत् साशनानश्ने ऋभि॥ (ऋषेद १०.६०.४) ॐ कां सोस्मितां हिरंगय प्राकारांमाद्रीं ज्वलंन्तीं तृप्तां तुर्पयंन्तीम्। पृद्येस्थितां पृद्यवंर्गां तामिहोपंह्वये श्रियम्।

(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहितदेवताभ्यो नमः, हस्तयोः ग्रर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ तस्मांद् विराळंजायत विराजो ऋधिपूर्रुषः । सजातो ऋत्यंरिच्यत पृश्चाद् भूमिमथों पुरः ॥ (ऋग्वेद १०.६०.५)

ॐ चुन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलंन्ती श्रियं लोके देवजुंष्टामुदाराम्।

तां पद्मिनीं भीं शरंगामृहं प्रपंद्येऽलुक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृंगो ॥ (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रह मराडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः। मुखे ग्राचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् पयः (दूध)—ॐ स्राप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतंः सोम्वृष्णियं। भवावार्जस्य सङ्ग्थे। (म्रावेद १.६१.१६)

उनवग्रह मगडलस्थ म्रावाहित देवताभ्यो नमः, पयः स्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उद्यन्नद्य मित्रमह आरोह्नुत्तर्गं दिवंम्। हृद्रोगं ममं सूर्य हरिमारां च नाशय॥ (अपनेद १.४०.११)

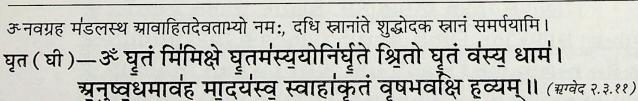
अनवग्रह मगडलस्थ स्रावाहित देवताभ्यो नमः। पयः स्नानांते शूद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दिध (दिह)—ॐ दुधिक्राव्यों स्रकारिषं जिष्णोरश्वंस्य वाजिनं:। सुर्भिनोमुखां कर्त्प्रण् स्रायूंषि तारिषत्।। (ऋषेद ४.३६.६)

उनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, दिध स्नानं समर्पयामि। दिह स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ शुकेषु मे हरिमार्गां रोप्गाकांसु दध्मसि। ऋथों हारिद्ववेषुं मे हरिमार्गां निर्दंथ्मसि॥ (ऋवेद १.५०.१२)

CC0. Maharishi Mahesh Yoqi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.



अनवग्रह मंडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, घृत स्नानं समर्पयामि। घी स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उदंगादुयमांदित्यो विश्वेंन् सहंसा सह। द्विषन्तं मह्यं रुन्थयुन् मो ऋहं द्विष्ते रंथम्।। (ऋग्वेद १.४०.१२)

अनवग्रह मंडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, घृतस्त्रानांते शुद्धोदक स्त्रानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवातां ऋतायते मधुंक्षरन्ति सिन्धंवः । माध्वींनीः सन्त्वोषंधीः ॥

ॐ मधुनक्तमुतोषंसो मधुंमृत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरंस्तु नः पिता॥

ॐ मधुँमान्नो वन्स्पित्मधुंमा न्नास्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद १.६०.६-७-६)

उनवग्रहमंडलस्थ ग्रावाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानं समर्पयामि।

ॐ चित्रं देवानामुदंगादनींकं चक्षुंर्मित्रस्य वर्रगास्याग्रेः। स्राप्रा द्यावांपृथिवी स्नन्तरिक्षं सूर्यं स्रात्मा जगंतस्त्स्थुषंश्च॥

(मग्वेद १.११४.१)

अनवग्रह मग्रडलस्थ ग्रावाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पंवस्व दिव्याय जन्मंने स्वादुरिन्द्रांय सुहवीतु नाम्ने। स्वादुर्मित्राय वर्रुगाय वायवे बृहस्पतंये मधुंमाँ ग्रदांभ्यः॥ (मानेद स. १४.६) उनवग्रह मंडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्त्रानं समर्पयामि।

ॐ स्राकृष्णेन् रजंसा्वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च।

हिर्यययेन सविता रथेनाऽदेवो यांति भुवंनानि पश्यंन्।। (म्पवेद १.३४.२)

उनवग्रहमगडलस्य आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्त्रानान्ते शुद्धोदकस्त्रानं समर्पयामि।

ॐ याः फुलिनीयां स्रंफुला स्रंपुष्पायाश्चं पुष्पिगाीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानों मुञ्चन्त्वं हंसः॥ (भगवेद १०.६७.१४)

अनवग्रह मराडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, फलस्नानं समर्पयामि।

अ त्रापोहिष्ठा मंयोभवस्तानं ऊर्जे दंधातन। मृहेरशांय चक्षंसे॥

यो वं: शिवतंमोरसुस्तस्यं भाजयते हनं:। उशतीरिव मातरं:॥

तस्मा ऋरंगमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। ऋषों जुनयंथा च नः॥ (सम्वेद १०.६.१-२-३)

ॐनवग्रह मग्रडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, फल स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

अ स्रा कृष्णोन् रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्राययंन सविता रथेनाऽऽदेवो यांति भुवंनानि पश्यंन्॥

ॐ म्राप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतंः सोम् वृष्ययंम्। भवा वार्जस्य सङ्गर्थे॥ (भावेद १.६१.१६)

ॐ ऋग्निर्मूर्धा द्विः कुकुत्पतिः पृथिव्या ऋयम्। ऋपां रेतांसि जिन्वति॥ (स्रवेद =.४४.१६)

अ उद्घंध्यं ध्वं समनसः सखायः सम्ग्रिमिध्वं बृहवः सनीळाः।

दुधिकाम्ग्रिमुषसं च देवीमिंद्रांवतोऽवंसे निह्वये वः॥ (भावेद १०.१०१.१)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.



ॐ बृहंस्पते ऋति यद्यों ऋहीं द्युमद्विभाति क्रतुंमुज्जनेषु। यदीदयुच्छवंस ऋतप्रजात् तदुस्मास् द्रविंशां धेहि चित्रम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१४) ॐ शुक्रं तें ग्रुन्यद्यंज्तं तें ग्रुन्यद्विष्र्रूष्णे ग्रहंनीद्यौरिवासि। विश्वा हि माया अवंसि स्वधावो भुद्रा ते पूषन्निहरातिरंस्तु ॥ (मावेद ६.४५.१) ॐ शम्ग्रिर्ग्निभीः कर्च्छनंस्तपतु सूर्यीः। शं वातों वात्वरुपा ऋपुस्त्रिर्धाः॥ (ऋग्वेद म.१म.६) ॐ कर्यानश्चित्र ग्रा भुंवदूती सुदावृधः सर्खा। कयाशचिष्ठया वृता॥ (सप्वेद ४.३१.१) ॐ केतु कुरावन्नकेतवे पेशों मर्या ऋपेशसें। सुमुष द्धिरंजायथाः॥ (सप्वेद १.६.३) ॐ तच्छुंच्योरावृंशीमहे गातुं युज्ञायं गातुं युज्ञ प्तये। दैवीं स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिमानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषुजम् शंनों ऋस्तु द्विपदे शं चतुंष्पदे ॥ (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्) ॐ यत्पुंरुषेशा हिवषां देवा युज्ञमतंन्वत । वुसुन्तो स्रंस्यासीदार्ज्यं ग्रीष्म इध्मः शुरद्धविः ॥ (ऋग्वेद १०.६०.६) अ माद्रित्यंवर्रो तपुसोऽधिजातो वनुस्पतिस्तवं वृक्षोऽथं बिल्वः। तस्य फलांनि तपुसा नुंदन्तु मायान्तंरायाश्च बाह्या त्र्रंलुक्ष्मीः ॥ (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

उनवग्रह मग्रडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्त्रानं सपर्मयामि। शुद्धोदक स्त्रान मंत्रों के तीन प्रकार प्रचलित है।

प्रथम क्रम में—€ ग्रह- € ऋधिदेवता-€ प्रत्यिधदेवता ६ कर्म साद्गुग्य देवता, ⊏ क्रतु संरक्षक देवता कुल मिलाकर ४१ देवताऋों का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान करना चाहिये। सभी मंत्र ऋावाहन में है। नवग्रह यागादियों में इसका प्रयोग होता है। जहाँ कलश पूजन के लिए ही एक पिण्डत नियुक्त

388



हो वहाँ भी इसे कर सकते हैं।

द्वितीय क्रम में— £ ग्रह+ £ ग्रिधदेवता+ £ प्रत्यिधदेवता कुलिमलाकर २७ देवताग्रों का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

तृतीय क्रम में—£ ग्रहों का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

वस्त्रम्— ॐ युवं वस्त्रांशि पीवसावंसाथे युवोरिच्छंद्रा मन्तंवो हसर्गाः।

ऋवांतिरतुमनृंतानि विश्वंऋतेनं मित्रा वरुगा सचेथे। (सप्वेद १.१४२.१)

ॐ तं यूज्ञं बहिष् प्रौक्ष्नन् पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा श्रयजन्त साध्या ऋषंयश्चे ये॥ (मावेद १०.६०.७)

ॐ उपैतु मां देवस्रवः कीर्तिश्च मिर्गाना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं दुदातुं मे।। (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रह मराडलस्थ स्रावाहित देवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्—ॐ यज्ञोपवीतं प्रमं पवित्रं प्रजापते र्यत् सहजं पुरस्तात्। त्र्रायुष्यम्ग्र्यं प्रतिमुंञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बल्मस्तु तेजः॥

ॐ तस्माद् युज्ञात् सर्वृहुतुः संभृतं पृषद्गज्यम्। पुशून्स्ताँश्चक्रे वायुव्यानार्गयान् ग्राम्याश्च ये।। (ऋषेद १०.६०.६)

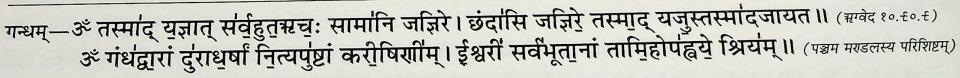
ॐ क्षुत्पिंपासामेलां ज्येष्ठामंलुक्ष्मीं नांशायाम्यहंम्। ऋभूंतिमसंमृद्धिं च सर्वा न्निर्गुद मे गृहांत्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, ग्राचमनं समर्पयामि।

म्राभरराम्—ॐ हिरंगयरूपः स हिरंगय सन्दृग्पान्नपात् सेदुहिरंगयवर्गाः । हिरग्ययात् परिर्योनेर्निषद्यां हिरगयदा दंदत्यन्नंमस्मै ॥

(मृग्वेद २.३४.१०)

उनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, ग्राभरगं समर्पयामि।



अनवग्रहमग्रडलस्थ भ्रावाहित देवताभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

म्रक्षतम् ॐ स्रर्चेत् प्रार्चेत् प्रियंमेधासो स्रर्चेत । स्रर्चेन्तु पुत्रका उतपुंरन्न धृष्यवंर्चत ॥ (स्रावेद म.६६.म)

अनवग्रह मराडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, ग्रक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाशा—ॐ त्रायंने ते प्रायंशो दर्वृशिहन्तु पुष्पिशीः। हृदाश्च पुगडरीकाशा समुद्रस्य गृहा इमे ॥ (भग्वेद १०.१४२.=)

ॐ तस्मादश्वां स्रजायन्त ये के चों भ्यादंतः। गावोंहर्जिज्ञरे तस्मात् तस्मांज्ञाता स्रंजा वर्यः॥ (मावेद १०.६०.१०)

ॐ मनंसः काम्नाकूंतिं वाचः सत्यमंशीमहि। पृशूनां रूपंमन्नस्य मिये श्रीः श्रंयतां यशः।। (भगवेद - पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

उनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, पुष्पागा समर्पयामि।

नाम पूजा

असहस्रकिरणाय नमः। असूर्याय नमः। अतपनाय नमः। असिवत्रे नमः। अरवये नमः। अविकर्तनाय नमः। अजगच्चक्षुषे नमः। अद्युमणये नमः। अतिग्मदीधितये नमः। अत्रयीमूर्तये नमः। अद्युदशात्मने नमः। अत्रद्धाविष्णुशिवात्मकाय नमः। अत्रादित्याय नमः। अत्रय्यये नमः। अत्रद्धाय नमः। अत्रद्ध

नमः। अराहवे नमः। असर्पेभ्यो नमः। अमृत्यवे नमः। अकेतवे नमः। अब्रह्मरो नमः। अचित्रगुप्ताय नमः। अविनायकाय नमः। अदुर्गीये नमः। अक्षेत्रपालाय नमः। अवायवे नमः। अव्याकाशाय नमः। अव्याख्यां नमः। अव्याखयां नमः। अव्य

धूपः— वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। स्राघ्नेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ यत्पुर्फष्ं व्यदंधुः कित्धा व्यंकल्पयन्। मुख्ं किमंस्य कौ बाहू का ऊरू पादां उच्येते॥ (मानेद १०.६०.११) ॐ कर्दमेन प्रंजा भूता मृयि संम्भव कर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ (मानेद - पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रह मराडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, धूपं आघ्रापयामि।

दीपं साज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं विह्नना योजितं यया। गृहारा सङ्गलं दीपं त्रैलोक्यितिमिरापह॥ ॐ ब्राह्यशोऽस्य मुखंमासीद्बाहू रांजुन्यः कृतः। ऊरू तंस्य यद्वैश्यः पुद्भयां शूद्रो ऋंजायत॥ (ऋग्वेद १०.६०.१२) ॐ ऋापः स्त्रजंन्तु स्त्रिग्धांनि चिक्लीत् व सं मे गृहे। नि चं देवीं मात्रं श्रियं वासर्य में कुले॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मणडलस्य परिशिष्टम्)

उनवग्रह मग्रडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। धूपदीपानन्तरं ग्राचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं—नैवेद्य रखने के स्थल पर मगडल बनायें (चतुरस्र) नैवेद्य को मगडल पर रखने के बाद मंत्र पढ़ें। विश्वामित्र ऋषि: देवी गायत्री छन्दः, सविता देवता निवेदने विनियोगः। एक बार नैवेद्य पर गायत्री मंत्र से प्रोक्षण करें। सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि इस मंत्र से दिन में एवं ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्च गिम। इस मंत्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें।

यथा संभव नैवेद्यं निरीक्षस्व कहकर प्रार्थना कर ग्रमृतोपस्तरगामिस मन्त्र से जल छोड़ें। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं

दाहिने हाथ से निम्न मुद्राम्रों से देवताम्रों को नैवेद्य म्रर्पण करें। मन में कल्पना करें कि भगवान को खिला रहे हैं। प्राणाय स्वाहा। म्रपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा। अधृशाः सूर्य ग्रादित्यः-इस मूल मंत्र को ग्राठ बार जप करें।

ॐ स्वादुः पंवस्व दिव्याय् जन्मंने स्वदुरिन्द्रांय सुहवींतु नाम्ने।

स्वादुर्मित्राय वरुंगाय वायवे बृहस्पतंये मधुंमाँ ऋदांभ्यः॥ (ऋग्वेद ६. ८५.६)

ॐ चुन्द्रमा मनंसो जातश्रक्षोः सूर्यो स्राजायत। मुखादिन्द्रंश्चाग्निश्चं प्रागाद्वायुरंजायत॥ (मण्वेद १०.६०.१३)

ॐ त्राद्रां पुष्किरिंगीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिररामंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म त्रावंह।। (मग्वेद - पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

यथा सम्भवं नैवेद्यं निवेदयामि। ग्रमृतापिधानमसि। कहकर उत्तरापोशगा जल दें। उत्तरापोशनार्थं जलं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गराडूषार्थे जलं समर्पयामि । शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि । करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ।

ताम्बूलम् — पूर्गीफलसमायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्गं कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। अनवग्रह मगडलस्थ स्रावाहित देवताभ्यो नमः, क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। ताम्बूल के पश्चात् नीराजन करें।

ॐ म्रर्चेत् प्रार्चेत् प्रियंमेधासो म्रर्चेत। म्रर्चेन्तु पुत्रका उत पुरं न घृष्वर्चित॥ (मानेद =.६६.=)

अ श्रिये जातः श्रिय मानिरियाय श्रियं वयो जरित्भयो दधाति।

श्रियुं वसांना ऋमृतृत्वमायुन् भवंन्ति सृत्या संमिथा मितद्रौं ॥ (ऋग्वेद £. £४.४)

ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवापृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे । ध्रुवं विश्वमिदं जगंद् ध्रुवो राजां विशामयम् ॥ ॐ ध्रुवं ते राजा वर्रुगो ध्रुवं देवो बृहस्पितः । ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्चं राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम् ॥ (ऋग्वेद १०.१७३.४-४)

अनवग्रह मडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, मङ्गल नीराजनं दर्शयामि।

मन्त्र पुष्पः — ॐ स्रा कृष्णोन् रजंसा वर्तमानो निवेशयंन्मृतं मर्त्यं च।

हिरग्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो यांति भुवंनानि पश्यंन्।। (मग्वेद १.३५.२)

ॐ स्राप्यांयस्व समेतु ते विश्वतंः सोम् वृष्ययंम्। भवा वार्जस्य सङ्ग्रथे॥ (मण्वेद १.६१.१६)

ॐ ऋग्निर्मूर्धा द्विवः क्कुत्पितः पृथिव्या ऋयम्। ऋपां रेतांसि जिन्वति। (ऋग्वेद =.४४.१६)

ॐ उद्बंध्यध्वं समंनसः संखायः सम्ग्रिमिध्वं बृहतः सनीळाः।

दुधिक्रामुग्निमुषसं च देवीमिन्द्रांवतोऽवंसे निह्वये वः॥ (भगवेद १०.१०१.१)

ॐ बृहंस्पते ऋति यद्यों ऋहीं द्युमद्विभाति क्रतुंम्जनेषु।

यद्दीदयुच्छवंस ऋतप्रजात् तद्रमासु द्रविंगां धेहिचित्रम्।। (ऋषेद २.२३.१४)

अ शुक्रं ते ऋन्यद्यंज्तं ते ऋन्यद्विर्षुरूपे ऋहंनीद्यौरिवासि।

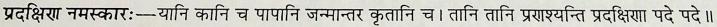
विश्वा हि माया स्रवंसि स्वधावो भूद्रा ते पूषित्रह रातिरंस्तु॥ (भगवेद ६.४६.१)

ॐ शर्माग्रिर्गिभेः करच्छनंस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वर्पा ऋप्स्त्रिधः॥ (भगवेद =.१५.६)

ॐ कयांनश्चित्र ग्रा भुंवदूती सदावृंधः सरवां। कया शचिष्ठया वृता॥ (भग्वेद ४.३१.१)

ॐ केतुं कृरावन्नकेतवे पेशोमर्या ऋपेशसें। समुषद्भिरजाय थाः ॥ (भावेद १.६.३)

उनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, मंत्रपुष्पं समर्पयामि।



ॐ सप्तास्यां सन् परिधयस्त्रिः सप्तस्मिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वाना ऋबंधृन् पुरुषं पृशुम्॥ (मावेद १०.६०.१४) ॐ तां मु ऋविंह जातवेदो लुक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंगयं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानुहम्।

(भृग्वेद-पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रहमगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, प्रदक्षिगा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घः— अप्रभाकराय विदाहे दिवाकराय धीमिह। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥ अमित्रपुत्राय विदाहे म्रमृतोद्भवाय धीमिह। तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥ अभूमिपुत्राय विदाहे भारद्वाजाय धीमिह। तन्नः कुजः प्रचोदयात्॥ अतारापुत्राय विदाहे सोमपुत्राय धीमिह। तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥ अदेवाचार्याय विदाहे वाचस्पतये धीमिह। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥ अदैत्याचार्याय विदाहे विद्यारूपाय धीमिह। तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥ असूर्यपुत्राय विदाहे शनैश्चराय धीमिह। तन्नो मंदः प्रचोदयात्॥ असैहिकेयाय विदाहे तमोमयाय धीमिह। तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥ अब्रह्मपुत्राय विदाहे विकृतास्याय धीमिह। तन्नः केतुः प्रचोदयात्॥ अनवग्रह मगडलस्थ म्रावाहित देवताभ्यो नमः, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि।

सर्वोपचार पूजनम्—ॐछत्रं समर्पयामि । चामरेगा वीजयामि । गीतं गायामि । नाट्यं नटामि । ग्रान्दोळिकामारोहयामि । ग्रश्वमारोहयामि । गजमारोहयामि । समस्त राजोपचार देवोपचारपूजां समर्पयामि ।

ॐ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवास्तानि धर्मांशि प्रथमान्यांसन्। तेह नाकं महिमानंः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

(मृग्वेद १०.६०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयंतो भूत्वा जुहुयांदाज्यमन्वंहम्। सूक्तं पंचदंशर्चं च श्रीकामः सत्ततं जंपेत्।। (मग्वेद-पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)



उनवग्रह मगडलस्थ स्रावाहित देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— ग्रहागामादिरादित्यो लोकरक्षगाकारकः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते रविः।।
रोहिग्गीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते विधः।।
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृदृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः॥
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः॥
देवमन्त्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। स्रनेक शिष्य संपूर्गः पीडां हरतु ते गुरुः॥
देत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राग्यदश्च महामितः। प्रभुस्ताराग्रहागां च पीडां हरतु ते भृगुः॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्म पीडां हरतु ते शिनः॥
महाशिरा महावक्त्रौ दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। स्रतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः॥
स्रनेक रूपवर्गोश्च शतशोथ सहस्रशः। उत्पातरूपो जगतः पीडां हरतु ते शिखी॥ (ब्रह्मकर्म समुच्य)

ग्रारोग्यं पद्मबन्धुर्वितरतु विपुलां संपदं शीतरिश्मः, भूलामं भूमिपुत्रः सकलगुरायुतां वाग्विभूतिं च सौम्यः। सौभाग्यं देवमन्त्री रिपुभयशमनं भार्गवः शौर्यमार्किः , दीर्घायुस्सैंहिकेयो विपुलतरयशः केतुराचन्द्रतारम्॥ शान्तिरस्तु। शिवं ते ग्रस्तु। ग्रहाः कुर्वन्तु मङ्गलम्। ग्रिरिष्टानि प्रराश्यन्तु। दुरितानि भयानि च। अन्वग्रहमराडलस्थ देवताभ्यो नमः, प्रार्थनां समर्पयामि। ग्रमेन कृत पूजनेन ग्रादित्यादि नवग्रहदेवताः प्रीयन्ताम्।।

यहाँ पर नवग्रह पूजन समाप्त हुम्रा। मराडप में कलशों का पूजन भी संपूर्श हुम्रा।

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन द्वितीय प्रहर

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारगो विनियोगः।

अ येभ्यों मातामधुंमृत् पिन्वंते पर्यः पीयूषं द्यौरिदंतिरिद्रंबर्हाः।

उक्थशुंष्मान् वृषभ्रान्त्वप्रंस्ताँ ऋांदित्याँ ऋनुंमदास्वस्तये ॥ (सक्वेद १०.६३.३)

ॐ ए्वापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे युज्ञैर्विधेम् नमंसा हिविर्भिः।

बृहंस्पते सुप्रजा वी्रवंन्तो व्यं स्यांम् पतंयो रयी्गाम्।। (मक्वेद ४.४०.६)

त्राचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

ऋथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुरारोभ्यो नमः। ऋग्नये नमः। वायवे नमः। प्रारााय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै

नमः। ऋन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मरो नमः। विष्णावे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारराम्—पवित्रन्त इत्यनयोः ऋङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्ररो, धाररो विनियोगः।

ॐ प्वित्रंन्ते वितंतं ब्रह्मरास्पते प्रभुगात्रांशि पर्येषि विश्वतं:।

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन

स्रतंप्ततनूर्न तदामो स्रंश्नुतेशृता सइद्वहंन्तस्तत् समांशत ॥ (ऋवेद ६. ६३.१) ॐ तपोष्य्वित्रं वितंतं द्विवस्पदे शोचंन्तो स्रस्य तन्तंवो व्यंस्थिरन्। स्रवंन्त्यस्य पवीतारं माशवो द्विवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतंसा॥ (ऋवेद ६. ६३.२)

अभूभुर्वः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये ग्रासन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।) प्रारागायाम—प्रगावस्य परब्रह्म भृषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्रारागायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्संवितुर्वरेरायं भगों देवस्यं धीमिह। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ ग्रापो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। (मावेद ३.६२.१०)

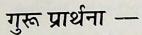
(रेखङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

स्रासन शुद्धि—ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्ष्रा निवेशंनी। यच्छां नः शर्मं सप्रथः।' (१४ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मगडल) इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्--

ऊर्ध्वकेशि विरूपक्षि मांसशोगित भक्षगो। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुगडे ह्यपराजिते॥ (ब्रह्मकर्म समुज्जय) (इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प —.....



नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः। स्राचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ (श्रृङ्गेरी मठीय स्राचार्य प्रार्थनम्)

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः।

हवन कुराड में

स्थंडिल शुद्धिः—तद् गोमयेन प्रदक्षिरामुपलिप्य दिक्षराँ उदीच्यां द्वे, प्रतीच्यां चतुः, प्राच्यामधं इत्यंगुलानित्यक्त्वा दिक्षराोपक्रमां उदक्संस्थां प्रादेशमात्रां एकां लेखां तस्या दिक्षराोत्तरयोः प्रागायते पूर्वरेखया ऋसंसृष्टे प्रादेशसंमिते देश लेखे लिखित्वा तयोर्मध्ये परस्परं ऋसंसृष्टाः उदक्संस्थाः प्रागायताः प्रादेश संमिताः तिस्तः इति षड्लेखाः यज्ञीय शकलमूलेन दिक्षरा हस्तेन उल्लिख्य लेखासु तच्छकलं उदगग्रं निधाय स्तंडिलं ऋद्धिः ऋभ्युक्ष्य शकलं भंक्त्वा ऋग्रोय्यां शक्तम्य पाराां प्रक्षाल्य वाग्यतः भवेत्।

स्थिगिडल को पहले गोमय से लेपना चाहिये। स्थिगिडल (वेदी) में दक्षिण में ग्राठ ग्रंगुल, उत्तर में दो ग्रंगुल, पश्चिम में चार ग्रंगुल, पूर्व में ग्राधा ग्रंगुल छोड़कर दक्षिण से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे १२ ग्रंगुल चौक बनाना चाहिये। फिर बीच में दक्षिण से उत्तर एक रेखा खींचना चाहिये। १२ ग्रंगुल फिर दक्षिण से प्रारम्भ कर एक दक्षिण में एवं एक उत्तर में दो रेखायें पश्चिम से पूर्व की ग्रोर खीचें १२ ग्रंगुल बी फिर दक्षिण से प्रारम्भकर दक्षिण में समाप्त होने वाले पश्चिम से पूर्व में समाप्त होने वाले तीन रेखायें। (१२ ग्रंगुल) खीचें। (प्रादेश प्रमाण-लगभग १२ ग्रंगुल) (ब) इसे यज्ञ में प्रयुक्त ग्रिश्चल्यादि समित् के ग्रग्रभाग से इन लकीरों को खीचना चाहिये। दाहिने हाथ से लिखें। (रेत पर) खीचने वाले समित् को उसके ऊपर उत्तर उत्तराभिमुख

३७४

सम्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

रखें। फिर स्थिरिडल (stage) को जल से ग्रभ्युक्षरा करना चाहिये। (ग्रभ्युक्षरा मतलब मुष्टि में जल लेकर सिञ्चन करना चाहिये।) फिर उस सिमत् को (लकीर खीचें) तोडकर ग्राग्रेय दिशा में फेंककर हाथ धो लेना चाहिये।

ऋग्नि प्रतिष्ठा—यहाँ तक होम वेदी निर्माण विधि, होम वेदी पर देवताओं का आवाहन पूजन संपन्न हुम्रा। म्रागे म्रिग्न प्रतिष्ठा विधान वर्णित है। ततः तैजसेन म्रसंभवे मृन्मयेन वा पात्रयुग्मेन संपुटीकृत्य सुवासिन्या श्रोत्रियागारात् स्वगृहाद्वा समृद्धं निर्धूमं म्रिग्नं म्राग्नं स्थंडिलात् न्याग्नेय्यां निधाय। उसके बाद लोहपात्र में (संभव हो तो ताम्र पात्र में) यदि न हो तो मिट्टी के पात्र में श्रोतियों के घर से या म्रपने घर से लाकर, धुऐं रहित म्रंगारों को पात्र में रखकर दूसरे पात्र से ढकर लाना चाहिये। लाए हुए म्रिग्नपात्र को स्थिगडिल होमवेदी के म्राग्नेय दिशा में रखना चाहिये।

एह्यग्नेराहूगगोगोतमोग्निस्त्रिष्टुप् स्रग्न्याह्वाने विनियोगः। एह्यंग्रइहहोता निषीदादंब्धः सुपुर एतामंवानः॥ स्रवंतांत्वारोदंसीविश्विमुन्वेयजांमुहे सौमन्सायं देवान्। (स्रवेद १.७६.२)

जुष्टोदम्ना म्रात्रेयोवसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् म्रिग्निमस्कारे विनियोगः॥

ॐ जुष्टोदमूनाऋतिंथिर्दुरोगा इमं नों युज्ञमुपंयाहि विद्वान्। विश्वांऋग्ने ऋभियुजों विहत्यां शत्रूयतामार्भराभोजनानि॥

(भृग्वेद ५.४.५)

पहले मन्त्र से अग्नि देव को आह्वन करें। एवं दूसरे मंत्र से नमस्कार करें। आच्छादनं दूरीकृत्य फिर ऊपर ढके पात्र को निकालें। समस्तव्याहृतीनां परमेष्ठीप्रजापितः प्रजापितर्बृहृती। अग्निप्रप्रितिष्ठापने विनियोगः।

उभूर्भुवः स्वः। इति ग्रात्माभिमुख पाशिभ्यां षट्सुलेखासु ग्रमुक नामानमग्निं प्रतिष्ठापयामि इति ग्रग्निं प्रतिष्ठाप्य। ऊपर के मन्त्र कहकर ग्रग्नियुक्त पात्र को ग्राप्ति सामने हाथों में पकडकर एक बार पदिक्षरा कर जो ६ रेखायें है, उन पर कर्माङ्ग देवता नामक ग्रग्नि को प्रतिष्ठापित कर रहा हूँ कहकर रखना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन

चाहिये। रखते समय हाथ कर्तरी शकल में होना चाहिये। कैची जैसे (cross) ग्रग्न्याहरण पात्रयो: ग्रक्षतै: सह उदकमासिच्य इन्धनंप्रोक्ष्य वेणु धमन्या प्रबोधयेत्। ग्रग्नि लायें दोनों पात्रों में ग्रक्षत डालकर जल सींचकर उसे बाहर कर देवें। फिर लकडियों को जल से प्रोक्षण कर बॉस की या लोहे की धमनी फूकनी से फूंककर ग्रिग्न को प्रज्वलित करें। ग्रिग्निगाग्नि: कारावोमेधातिथि: ग्रिग्निगियत्री ग्रिग्निस्थने विनियोग:।

ॐ ऋग्निनाग्निः सिमंध्यते कृविर्गृहपंतिर्युवां। हृव्यवाड्जुह्वांस्यः।

विज्ज्योतिषेति जानो वृषोग्निस्त्रष्टुप् ग्रग्नि ज्वलने विनियोग:।

ॐ विज्योतिषा बृहता भांत्यग्रिग्विर्विश्वांनि कृगाते महित्वा। प्रादेवीर्मायाः संहते दुरेवाः शिशींते शृंगे्रक्षंसे विनिक्षें। (मण्वेद ४.२.६)

इन मन्त्र से ग्रग्रि ज्वलन करना चाहिये।

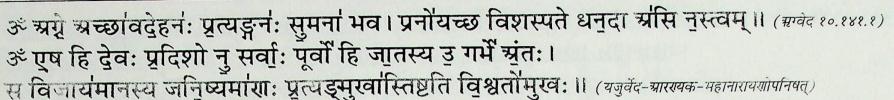
त्रियान — चत्वारिश्रृंगागोतमो वामदेवोग्निस्त्रिष्ठप्। त्रिग्निमूर्ति ध्याने विनियोग:।

ॐ चृत्वारि शृंगात्रयों ऋस्य पादा द्वे शीषेँ स्प्तहस्तांसो ऋस्य। त्रिधांबृद्धो वृंष्भोरोरवीति मृहोदेवो मर्त्याऽँऋविवेश।। सप्तहस्तश्चतुः शृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः। त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः सुचिस्मितः।। स्वाहांतुदक्षिरोपार्श्वे देवीं वामेस्वधां तथा। बिभ्रदक्षिरा हस्तैस्तु शक्तिमन्नंस्तुचं स्तुवं॥ तोमरंव्यजनंवामैर्घृतपात्रं च धारयन्। मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्शो महौज्सः।

धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥ त्रात्माभिमुख मासीन एवं रूपो हुताशनः। (ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्रिमुख प्रकरण)

इन मन्त्रों को पढकर ध्यान करें। ग्रग्ने ग्रच्छावदेत्यस्य मन्त्रस्य ग्रग्निस्तापसोग्निरनुष्टुप् ग्रग्नि स्वाभिमुखीकरग्रो विनियोग:।

308



हे अग्ने शागिडल्यगोत्र मेषारूढ वैश्वानर प्राङ्मुखः सन् ममाभिमुखो वरदस्सुप्रसन्नो भव। इतना कहकर ध्यसान से सम्मुख करके अन्वाधान करें।

ग्रन्वाधान—ग्रन्वाधानाभिधं कर्म क्रियते सर्वकर्मसु। निमन्त्रगार्थं देवानां होतव्यानां च होतृभिः॥ (म्राधलायन स्मृति)

सभी कर्मों में अन्वाधान कर्म करना चाहिये। ऋत्विज अपने यज्ञ में जिन-जिन देवताओं को आहुतियाँ देते हैं उन्हें पहले बुलाकर स्चित करना चाहिये। यह क्रिया अन्वाधान कहलाता है। आचम्य प्राणानायम्य देशकालौरमृत्वा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ एतत् कर्म करिष्ये। आचमन कर (यदि बीच में उठ के बार गये हो तो), प्राणायाम करके देशकालसंकीर्तन पूर्वक संकल्प लें। तत्र देवता परिग्रहार्थ अन्वाधानं करिष्ये। समित् द्वयं आदाय। (दो समितों को हाथ में लेकर) अस्मिन् अन्वाहितेग्री जातवेदसमग्निं इध्मेन प्रजापितं प्रजापितं चाघारदेवते आज्येन अग्नीषोमौचक्षुषी आज्येन। इन अग्नियों में जातवेदाग्नि को सिमत् से, आधार देवता प्रजापित एवं प्रजापित को घी से, चक्षुष् अग्नि सोम को घी से होम करना चाहिये। यह पूर्वाङ्ग है। सभी यज्ञों में इतना अन्वाधान होता है। आगे यज्ञों के अनुसार बदलता है।

जैसे सर्वाद्भुत शान्ति याग—ग्रिग्नं वायुं सूर्य प्रजापितं च ग्राज्यद्रव्येग प्रधान देवतां ग्रादित्यं ग्रिधदेवतामग्निं प्रत्यिधदेवतां रुद्रं ग्रर्क सिमत् चर्वाज्य द्रव्यै: प्रधान देवतां सोमं ग्रिधदेवतां ग्रप: प्रत्यिधदेवतां गोरीं, पलाशसिमत् चर्वाज्य द्रव्यै:, प्रधान देवतां ग्रेगारकं ग्रिधदेवतां भूमिं, प्रत्यिधदेवतां स्कन्दं खिद्रसमित् चर्वाज्य द्रव्यै:, प्रधान देवतां बुधं, ग्रिधदेवतां विष्णुं प्रत्यिधदेवतां पुरुषं ग्रपामार्ग सिमत् चर्वाज्य द्रव्यै:, प्रधान देवतां बृहस्पितं, ग्रिधदेवतां इन्द्रं, प्रत्यिधदेवतां, ब्रह्माग्रां पिप्पल सिमत् चर्वाज्य द्रव्यै:, प्रधान देवतां शुक्रं, ग्रिधदेवतां इन्द्राग्रीं प्रत्यिधदेवतां इन्द्रं, ग्रीदुम्बर सिमत् चर्वाज्यद्रव्यै:

प्रधानदेवतां शनिं ऋधिदेवतां प्रजापतिं प्रत्यधिदेवतां यमं, शमीसमित् चर्वाज्यद्रव्यैः, प्रधान देवतां राहुं ऋधिदेवतां सर्पान् प्रत्यधिदेवतां मृत्युं, दूर्वा सिमत् चर्वाज्य द्रव्यै:, प्रधान देवतां केतुं, ग्रधिदेवतां ब्रह्मागां प्रत्यिधदेवतां चित्रगुप्तं कुशसिमत् चर्वाज्य द्रव्यै: प्रधान देवता: ग्रष्टाविंशति संख्यया ग्रधिदेवता: प्रत्यधिदेवताः दशांशसंख्यया विनायकं दुर्गां क्षेत्रपालं वायुं ग्राकाशं ग्रिश्वनौ क्रतु साद्गुग्य देवताः प्रधान विंशांश संख्यया इन्द्रं ग्रीग्नं यमं निर्मृतिं वरुगां वायुं कुबेरं ईशानं एता: क्रतुसंरक्षरादेवता: प्रागुक्त समित् चर्वाज्यद्रव्यै: प्रधान विंशांश संख्याया ऋग्निं वायुं सूर्यं प्रजापितं च ऋाज्यद्रव्येरा, सर्वाद्भुत शान्ति होमे प्रधान देवतां सूर्यं ऋष्टोत्तर शतसंख्यया चरु द्रव्येगा, सूर्यं रुद्राधिपतिं रविकिरगां ईश्वरं सर्वोत्पातशमनं ऋग्निं पृथिवीं महान्तं वायुमन्तरिक्षं महान्तं ऋदित्यं दिवं महान्तं प्रजापतिं चन्द्रमसं नक्षत्राणि दिशो महान्तं च एता: देवता: ग्राज्य द्रव्येण एकैक संख्यया चरु शेषेणस्विष्टकृतमग्रिं इध्मसन्नहनेन रुद्रं ग्रयासमग्रिं देवान् विष्णुं ऋग्निं, वायुं सूर्यं प्रजापतिं च एता: प्रायश्चित्त देवता ऋाज्येन ज्ञाताज्ञात दोष निबर्हगार्थं त्रिवारमग्निं मरुतश्चाज्येन विश्वान् देवान् संस्रावेग एता: मङ्गदेवताः प्रधानदेवताः सर्वाः सिन्निहिताः सन्तु एवं सांगोपाङ्गेन कर्मगा सद्यो यक्ष्ये। ॥ सर्वाद्भृत शान्ति याग का ग्रन्वाधान समाप्त॥

परिसम्हन एवं पर्युक्षरा — उपरोक्त क्रम से परिसमूहन पर परिस्तरण डालना चाहिये। वह इस प्रकार है। अग्न्यायतनाद् अष्टांगुल परिमिते देशे ऐशानीं दिशं त्रारम्य प्रदक्षिणं संमतात् सोदकेन पाणिना त्रिः परिमुज्य दशांगुलिमते देशे प्राच्यादिषु पूर्वं उपरिनिहितदर्भैः परिस्तृणीयात्। स्थिंग होम वेदी के ग्राठ ग्रंगुल बाहर ईशान्य दिशा से प्रारम्भकर प्रदक्षिशा क्रम से चारों ग्रोर जलयुक्त हाथ से तीन बार परिमार्जन करें। स्थिंगडले होमवेदी के दस ग्रंगुली बाहर पूर्व से प्रारम्भकर सभी दिशाग्रों में कुशों को बिछाना चाहिये। तत्र प्राच्यां प्रतीच्यां च उदगग्रादर्भाः स्रवाच्यामुदीच्यां च प्रागग्राः पूर्वपश्चिमपरिस्तरग्रमूलयोरुपरि दक्षिग्रपरिस्तरग्रां उत्तरपरिस्तरगंतु तदग्रयोरधस्तात्। पूर्व

एवं पश्चिम दिशा में कुशाग्र (कुश का म्रागे का भाग) उत्तराभिमुख हो, दक्षिरा एवं उत्तर दिशा में कुशाग्र पूर्वाभिमुख होना चाहिये। पूर्व एवं पश्चिम दिशा

300

की कुशों के (परिस्तरण) ऊपर दक्षिण का परिस्तरण, एवं पूर्व पश्चिम कुशों के परिस्तरण के नीचे उत्तर का परिस्तरण होना चाहिये। परिस्तरण कुशों के लिए कोई निश्चित संख्या नहीं हैं। म्रधिक उपलब्ध होने पर म्रधिक विछावे। कम होने पर चार-चार बिछायें। उतना ही न हो तो तीन-तीन बिछायें।

परिस्तृगात्यासनार्थं त्राशेशानां त्रिभिस्त्रिभिः। कुशैः प्रागादिदिक्ष्वत्र कृत्वा परिसमूहनम्।। १।। (माधलायन स्मृति)

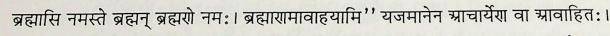
ग्राशापालांस्तु शक्रादीनासनेषु समावहेत्। दिक्पालकों के ग्रासन के लिए यह परिस्तरण बिछायें जाते हैं। एक-एक दिशा में तीन कुश डालना चाहिये। उन पर इन्द्रादि दिक्पालकों का ग्रावाहन करना चाहिये।

ततो ऋग्नेर्दक्षिरातो ब्रह्मासनार्थं उत्तरतश्च पात्रासादनार्थं कांश्चित्प्रागग्रान् दर्भानास्तृराीयात्। (ऋषलायन स्मृति)

इसके पश्चात् ऋग्नि के दक्षिण दिशा में ब्रह्मा के ऋगसन के लिए एवं उत्तर में यज्ञपात्रों को रखने के लिए कुछ कुशाओं को पूर्वाभिमुख बिछाना चाहिये। ऋग्नेरैशानतिस्त्ररंभसापिरिषिच्य उत्तरास्तीर्शेषु दर्भेषु दिक्षणसव्यपाणिभ्यां क्रमेण चरु स्थाली प्रोक्षणयौ, दर्वी सुवौ, प्रणीताज्यपात्रे, इध्माबर्हिषी इति द्वे द्वे पात्रे उदगपवर्ग प्राक्संस्थंयुब्जान्या सादयेत्। ऋग्नि के चारों ऋगेर फिर से तीन बार ईशान्य से प्रदक्षिणाकार में परिषेचन करें।

व्रह्मा का स्रावाहन् (स्रिग्निम्खाङ्ग)—ततो यथोक्त लक्षणं ईशानिदग् स्रवस्थितं ब्राह्मणं स्रिमन् (सर्वाद्भृत शान्ति याग) कर्मणि ब्रह्माणं त्वामहं वृशो इति तत् पाणिं पाणिना गृहीत्वा वृणुयात्। उसके पश्चात् श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त ईशान दिशा में उपविष्ट ब्राह्मण को इस याग कर्म में स्रापको मैं ब्रह्मा के रूप में वरण करता हूँ। कहकर हाथ पकडकर वरण करें।

ततः ब्रह्मा वृतोस्मि। कर्म करिष्यामि इति उक्त्वा प्राङ्मुखो तीर्थदेशे यज्ञोपवीत्यचाम्य समस्य पागयङ्गुष्ठो भूत्वा अग्नेगाग्निं दक्षिणपादपुरः सरं परीत्य दक्षिणतः उदङ्मुखः स्थित्वा आसनार्थ दर्भेषु दक्षिणभागस्थं एकं दर्भं अङ्गुष्टानामिकाभ्यां गृहीत्वा "निरस्तः परावसुः" "इति नैर्म्नत्यान् निरस्य, अपः स्पृष्ट्वा इदमहम् अर्वावसोः सदने सीदामि" इति उदङ्मुख एवं वामोरोरुपिर दक्षिणपादं संस्थाप्य उपविश्य यजमानेन गन्धाक्षतादिभिः अर्चितः सन् "ब्रह्मन्



इसके पश्चात् ब्रह्मा मुफे यह स्वीकार है। कहकर पूर्वािममुख बैठकर (उत्तर एवं ईशान्य के बीच में) ब्रह्मवस्त्र (उत्तरीय) डालकर, हाथ जोडकर (संकल्प लेते समय जैसे हाथ बंद करते हैं वैसे) ग्रिंग्स के ग्रागे प्रदक्षिणाकार में दाहिने पाँव को ग्रागे कर चलकर दक्षिण में उत्तरािममुख खड़े होकर, ग्रिपने ग्रासन के कुशों में दक्षिण की एक कुश को ग्रङ्गुष्ठ एवं ग्रनािमका ग्रङ्गुलियों से खींचकर निरस्तः परावसुः'' कहकर नैमृत्य दिशा में फेंकना चाहिये। फिर हाथ धोलें। ''इदमहम् ग्रवांवसोः सदने सीदािम'' मन्त्र कहकर उत्तरािममुख ही बायें जाँघ पर दािहने पैर को रखकर बैठना चािहये। फिर यजमान ''ब्रह्मन् मन्त्र कहकर गन्ध ग्रक्षतों से ब्रह्मा का पूजन करें।

ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मा ब्रह्म सदन ग्राशिष्यते बृहस्पते यज्ञं गोपाय सयज्ञंपाहि सयज्ञपतिं पाहि समांपाहीति जिपत्वा सदा यज्ञ मना एव वर्तेत। इसे कहकर ब्रह्म निरन्तर यज्ञ में ही मन लगायें। यहाँ पर ब्रह्मा का वरणादि कार्य संपन्न हुग्रा।

उत्पवनं नाम शुद्धीकरगाम्— शुद्धीकरगा क्रिया को उत्पवन कहते हैं। सवितुष्ट्वाहिरगयस्तूपः सवितापुर उष्णिक्। म्राज्यस्योत्पवने विनियोगः।

ॐ सवितुष्ट्वाप्रसवउत्पुनाच्छिद्रेशा पवित्रेशा वसोः सूर्यस्य रिष्मिभः॥ (यजुर्वेद)

इति मन्त्रेगा एकश्रुत्या उच्चारितेन एकवारं द्विस्तूष्णीं उत्तानपागिद्वय ऋङ्गृष्ठ उपकिनष्ठिकाभ्यां उतयोरससृष्ट गृहीताभ्यां उत्तानपागिद्वय ऋङ्गृष्ठ उपकिनिष्ठिकाभ्यां ऋंतयोरससृष्ट गृहीताभ्यां उदगग्राभ्यां पवित्राभ्यां प्रागुत्पूय ते पवित्रे ऋद्भिः प्रोक्ष्य ऋग्नौ प्रहरेत्। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

इस एक स्वरी मन्त्र को कहते हुए एक बार हथेलियों को उपर किये दोनों हाथों के ग्रंगुष्ठ एवं ग्रनामिका ग्रंगुलियों में पवित्र के दो कुशों को ग्रलग-ग्रलग

(परस्पर न मिलें) ऐसे पकड़ना चाहिये। उनका ऋग्रभाग उत्तर की ऋोर होना चाहिये। पहले उन्हें पश्चिम से पूर्व की ऋोर घी में जाकर ऊपर उठायें। फिर दो बाद इसी क्रिया को बिना मन्त्र कहते हुए दोहरायें। फिर उन पवित्र कुशों को जल में प्रोक्षण कर ऋग्नि में डालना चाहिये।

ऋथाग्ने: पश्चात् परिस्तरणाद् बहि: आत्मनो ऋग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बर्हि: सत्रहनीं रज्जुं उदगग्रां प्रसार्य तस्यां बर्हि: प्रागग्रमुदगपवर्ग ऋविरलं आस्तीर्य तस्मिन् ऋगज्यपात्रं निधाय स्नुवादि संमार्जयेत्।

उसके पश्चात् ऋग्नि के पश्चिम में परिस्तरण के बाहर ऋपने ऋगो भूमि की प्रोक्षण कर वहाँ बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु (रस्सी) को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष् को पूर्वाग्न रखते हुए उत्तर की ऋगेर मोटे-विछाना चाहिये। (बीच में जगह खाली न रहना चाहिये।) फिर उस बर्हिष् पर घी का पात्र रखें।

स्तुवादि संस्कार—दक्षिगोन हस्तेन स्तुक् स्तुवो गृहीत्वा सव्येन कांश्चिद्दर्भानादाय सहैवाग्रौ प्रताप्य स्तुवं निधाय स्तुवं वामहस्तेगृहीत्वा दक्षिगाहस्तेन स्तुवस्य बिलं दर्भाग्रैः प्रादक्षिग्रयेन प्रागादि प्रागपवर्गं त्रिः संमृज्य ग्रधस्ताद्दर्भाग्रैः एव ग्रभ्यात्मं बिलपृष्ठं त्रिः संगृज्य ततो दर्भागां मूलैः दंडस्याधस्ताद् बिलपृष्ठादारभ्य यावदुपरिष्ठाद् बिलं तावत् एव ग्रभ्यात्मं बिलपृष्ठं त्रिः संगृज्य ततो दर्भागां मूलैः दंडस्याधस्ताद् बिलपृष्ठादारभ्य यावदुपरिष्ठाद् बिलं तावत् त्रिः संमृज्य ग्रद्धिः प्रोक्ष्य स्त्रुव निष्ठप्याज्य स्थाल्या उत्तरतः स्त्रुगसंसृष्ठं निधाय उदकं स्पृष्टा तैरेव दर्भैः जुद्दं च एव मेव संमृज्यद्युत्तरतोश्रुवाधुन्तरो निधाय दर्भानद्धिः क्षालियत्वा ग्रग्गौ ग्रनु प्रहरेत्। (ब्रह्मकर्म समुच्य) पर्यक्षगां-तिर्यग्भूतेनहस्तेनकृतंपर्यक्षगां तथा। (ग्राधलायन स्मृति)

हाथ को तिरचा करके चारों स्रोर सींचना पर्युक्षण कहलाता है। स्रथाग्रे: पश्चात् परिस्तरणाद् बहि: स्रात्मनो स्रग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बर्हि: सत्रहनीं रर्जुं

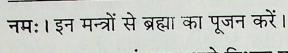


उदगग्रां प्रसार्य तस्यां बर्हि: प्रागग्रमुदगपवर्ग ग्रविरलं ग्रास्तीर्य तिस्मिन् ग्राज्यपात्रं निधाय स्नुवादि संमार्जयेत्। उसके पश्चात् ग्राग्नि के पश्चिम में परिस्तरण के बाहर ग्रपने ग्रागे भूमि की प्रोक्षण कर वहाँ बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु (रस्सी) को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष् को पूर्वाग्र रखते हुए उत्तर की ग्रोर मोटे-बिछाना चाहिये। (बीच में जगह खाली न रहना चाहिये।) फिर उस बर्हिष पर घी का पात्र रखें।

चरु शुद्धि—ततः सुशृतं स्नुव गृहीतेनाज्येन ग्रिमघार्य उदगुद्वास्य ग्रगन्याज्ययोर्मध्येन नीत्वा ग्राज्यात् दिक्षिणतो बर्हिषि सोत्तरमासाद्य पुनरप्यिमधार्य नवािमधार्य (पिरधाीन् ऊर्ध्व सिमधौ ग्रग्रौ निधाय।) पक्व चरु पात्र में स्थित चरु को घी से ग्रिमघार्य (सिञ्चन) करके उत्तर में रखना चािहये। ग्रिग्री एवं घी पात्र के बीच में इसे लाना चािहये। ग्राज्यपात्र के दिक्षिण में बर्हिष् पर इसे रखकर घी से ग्रिमघार करना चािहये। न करने पर भी कोई बाधा नहीं है। ग्रिग्री उपस्थानम्—विश्वानि न इति तिसृणां ग्रात्रेयो वसुश्रुतोग्रिस्त्रिष्टुप् द्वयोरर्चने ग्रन्त्याया उपस्थाने विनियोगः।

ॐ विश्वांनि नो दुर्गहां जातवेदः। पूर्व में पूजन करें। ॐ सिंधुननावादंिरतातिंपिषि।। त्राग्नेय में पूजन करें। ॐ त्राग्ने त्रित्रातिंपिषि।। त्राग्नेय में पूजन करें। ॐ त्राग्ने त्रित्रात्ते वोध्यवितात्नूनां।। नैर्म्नत्य में पूजन करें। ॐ यस्त्वांहदाकीरिशामन्यमानः।। पश्चिम में पूजन करें। ॐ त्रातंवेदो यशों त्र्रमासुंधेहि।। उत्तर में पूजन करें। ॐ प्रजाभिरग्ने त्रमृत्त्वमंश्यां।। ईशान में पूजन करें। (मानेद ४.४.१०) ॐ यस्मैत्वं सुकृतें जातवेदउलोकमंग्नेकृशावंस्योनं। त्रुश्चिनं स पुत्रिशं वीरवंन्तं गोमन्तं र्यिनंशतेस्वस्ति।। (मानेद ४.४.१०)

यह मन्त्र कहकर उपस्थान (प्रार्थना) करें। अ स्रग्नये नमः। अ जानवेदसे नमः, अ हुताशनाय नमः। इन मन्त्रों से स्रग्नि का पूजन करें। अ स्रात्मने नमः, अ स्रन्तरात्मने नमः, अ परमात्मने नमः। इन मन्त्रों से स्रात्मा का पूजन करें। हाथ धो लें। अ ब्रह्मशो नमः। अ विसष्ठाय नमः। अ त्रयीवद्यात्मने



इध्म बन्धन रज्जुं इध्म स्थाने निधाय पाणिना इध्यममादाय मूलमध्याग्रेषु स्रुवेण त्रिरिमधार्य मूल मध्ययो र्मध्यमागे गृहीत्वा। सरज्जुं ग्रनुयाजं प्रणीतायां प्रतिष्ठाप्य इध्म को हाथ में लेवें। उसके रज्जु (रस्सी) को खोलें। रज्जू को ग्रनुयाज सिमत् के साथ प्रणीता पात्र पर रखना चाहिये। हाथ में लिए इध्यम को मूल, मध्य एवं ग्रग्र में सुव से तीन बार घी से ग्रिमधार्य (सिञ्चचन) करके, मूल एवं मध्य के बीच में पकड़कर (दाहिने हाथ में)—

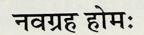
ऋयं ते वामदेवो जातवेदा ऋग्निस्त्रिष्टुप् इश्म हवने विनियोगः। ॐ ऋयं तइध्म ऋगत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्वचेद्धवर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधयस्वाहा॥ जातवेदसेग्नये इदं न मम। इन मन्त्रों को

कहकर इध्यम को अग्नि में डाल देवें। इध्म मूलं स्पृष्ट्वा ऋपः उपस्पृश्य ऋघारावाघारयेत्। इध्ममूल को छूकर हाथ धो लें। ऋघार होम करें।

स्राघार होम

वायव्य कोरादारभ्य ग्राग्नेय कोरा पर्यन्तं प्रजापतये स्वाहां। (मनसा स्मरन्) नैर्ग्नत्यकोरादारभ्य ऐशानी कोरापर्यन्तं प्रजापतये स्वाहां। प्रजापतय इदं न मम ग्राग्नेरुत्तरत: ग्राग्नये स्वाहां। ग्राग्नय इदं न मम। दक्षिरात: सोमाय स्वाहां। सोमाय इदं न मम।

व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापितः प्रजापितर्बृहृती व्याहृतिहोमे विनियोगः। अभूः स्वाहां ग्रग्नये इदं न मम। अभुवः स्वाहां वायवे इदं न मम। अभूर्भवः स्वः स्वाहां प्रजापतये इदं न मम।



प्रधान देवता सूर्य होमः— त्राकृष्णेनेत्यस्य हिरएयस्तूपः सविता त्रिष्टुप्, प्रधान देवता त्रादित्य प्रीत्यर्थे स्रर्कसमित्, स्राज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ ग्राकृष्णोन् रजस्मा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्य च।

हिरगययेंन सविता रथेनाऽऽदेवो यांति भुवनानि पश्यन् स्वाहां ॥ (म्पवेद १.३५.२)

म्रादित्यायेदं न मम। २८ बार इस मंत्र से म्रर्क सिंहत घी एवं चरु से होम यह संख्या ८ या २८ या १०८ बार कर सकते हैं।

सूर्य ऋधिदेवता ऋग्निः होमः — ऋग्निं दूर्तमित्यस्य कारावो मेधातिथिरग्निर्गायत्री ऋदित्यस्य ऋधिदेवता ऋग्निप्रीत्यर्थे ऋकंसमित् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ऋग्निं दूतं वृंगीमहे होतांरं विश्ववेदसम्। ऋस्य युज्ञस्यं सुक्रतुम् स्वाहां। (ऋग्वेद १.१२.१)

अन्त्रादित्य ऋधिदेवतायै ऋगूये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३+३+३=६ ऋाहुति)

सूर्य प्रत्यधिदेवता रुद्र होमः— ॐ कद्रुद्राय इत्यस्य घोर: कारावो रुद्रो गायत्री ग्रादित्यस्य प्रत्यधिदेवता रुद्र प्रीत्यर्थे ग्रर्कसमित् ग्राज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ कद्रुद्रायु प्रचेतसे मीळहुष्टंमाय तव्यंसे। वोचेम् शंतंमं हृदे स्वाहां॥ (ऋषेद १.४३.१)

ग्रादित्य प्रत्यिधदेवता रुद्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३ सिमत् + ३ घी + ३ चरु की श्राहुतियाँ = £ श्राहुतियाँ)

प्रार्थना - दिवाकरं दीप्त सहस्ररिश्मं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिम्। ऋंशुं भानुं सूर्यमादिं ग्रहागां दिवाकरं सदा शरगमहं प्रपद्ये॥

ऋादित्याय नमः।

प्रधान देवता सोम होम:—ग्राप्यायस्व गौतम: सोमो गायत्री प्रधान देवता चन्द्रप्रीत्यर्थे पलाश समित्, ग्राज्य, चरु होम विनियोग:।

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन

ॐ ग्राप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतंः सोम्वृष्यंयम्। भवा वार्जस्य सङ्गर्थे स्वाहां।। (मण्वेद १.६१.१६)

सोमाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पलाश सिहत घी एवं चरु से होम करें।

सोम ऋधिदेवता ऋप होमः — ऋप्सु मे सिन्धद्वीप ऋषोगायत्री सोमस्य ऋधिदेवता ऋष् प्रीत्यर्थे पलाश सिमत् ऋष्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ऋप्सु मे सोमों ऋब्रवीदुन्तर्विश्वांनि भेषुजा। ऋग्निं चं विश्वशंभुवं स्वाहां॥ (ऋग्वेद १०.स.६)

सोमाधिदेवतायै ऋद्भ्य इदं न मम। इस मन्त्र से तीन बार होम करें।

सोम प्रत्यधिदेवता गौरी होम—गौरीर्मीमायेत्यस्य सौचत्यपुत्रो दीर्घतभा उमा जगती। सोमस्य प्रत्यधिदेवता गौरी प्रीत्यर्थे पलाशसिमत् स्नाज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ गौरीर्मिमाय सल्लानि तक्षत्येकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। ऋष्टापंदी नवंपदी बभूवुषीं सहस्राक्षरा पर्मे व्योम्न् स्वाहां।

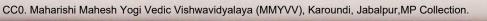
सोम प्रत्यधिदेवता गौर्ये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यं देवताः पितरश्चापिर्वन्ति तं वै वरेरायं ब्रह्मेन्द्रवन्द्यं चन्द्रं सदा शररामहं प्रपद्ये॥

चन्द्राय नमः।

प्रधान देवता ऋङ्गारक होमः—ऋग्निर्मूर्धा विरूपोङ्गारको गायत्री। प्रधान देवता ऋङ्गारक प्रीत्यर्थे खदिरसमित ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ऋग्निर्मूर्धा द्विः कुकुत्पितः पृथिव्या ऋयम्। ऋपां रेतांसि जिन्वित् स्वाहां। (ऋग्वेद =.४४.१६)





म्रङ्गारकाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र में खिदर सिमत्, घी एवं चरु से होम करें।

ग्रङ्गारक ग्रधिदेवता भूमि होमः—स्योना पृथिवीत्यस्य मेधातिथिः पृथिवी गायत्री। ग्रङ्गारकस्य ग्रधिदेवता भूमि प्रीत्यर्थे खदिरसमित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स्योना पृंथिवि भवानृक्ष्रा निवेशनी। यच्छां नः शर्मं सप्रथः स्वाहां। (सप्वेद १.२२.१४)

ऋङ्गारकाधिदेवतायै भूम्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

ग्रङ्गारक प्रत्यधिदेवता स्कन्द होम:—कुमारं माता स्कन्द: स्कन्दिस्त्रष्टुप्। ग्रङ्गारकस्य प्रत्यधिदेवता स्कन्द प्रीत्यर्थे खदिर समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ कुमारं माता युंवतिः समुंब्धं गुहां बिभर्ति न दंदाति पित्रे

म्रनीकमस्य न मिनज्जनांसः पुरः पंश्यन्ति निर्हितमर्तौ स्वाहां। (म्रावेद ४.२.१)

ग्रङ्गारक प्रत्यधिदेवतायै स्कन्दाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— महेश्वरस्याननस्वेदिबन्दोर्भूमौ जातं रक्तमालांबराद्यं। सुरिश्मगां लोहिताङ्गं कुमारमङ्गारकं सदा शरगामहं प्रपद्ये॥ मङ्गारकाय नमः।

प्रधान देवता बुध होम: — उद्घध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बुध प्रीत्यर्थे ग्रपामार्ग समित्, ग्राज्य, चरु होमे विनियोग:।

ॐ उद्बंध्यध्वं समंनसः सरवायः सम्ग्रिमिंध्वं बहुवः सनींळा। दिधुक्रमृग्निमुषसं च देवीमिन्द्रां वृतोऽवंसे निह्वंये वः स्वाहां। (ऋग्वेद १०.१०१.१)

बुधाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से ऋपामार्ग सिमत्, घी एवं चरु से होम करें।

बुध ऋधिदेवता विष्णु होमः—इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री, बुधस्य ऋधिदेवता विष्णु प्रीत्यर्थे ऋपामार्ग समित् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भत शान्ति यज्ञ

ॐ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पुदम्। समूळहमस्य पांसुरे स्वाहां। (ऋग्वेद १.२२.१७)

बुधाधिदेवतायै विष्णावे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष होमः—सहस्रशीर्षा नारायगः पुरुषोऽनुष्टुप्, बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष प्रीत्यर्थे ऋपामार्ग समित्, ऋण्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतों वृत्वात्वितष्ठद्दशाङ्गुलम् स्वाहां। (मावेद १०.५०.१)

बुध प्रत्यिधदेवता पुरुषाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रौ महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्यान् पीडां दहतु मे बुधः॥ अबुधाय नमः।

प्रधान देवता बृहस्पति होमः — बृहस्पते गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बृहस्पति प्रीत्यर्थे पिप्ल समित् ऋाज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बृहंस्पते ऋति यद्यों ऋहीं द्युमद्विभाति क्रतुंम् जनेषु।

यद्दीदयुच्छवंस ऋतप्रजात् तदुस्मासु द्रविंशां धेहि चित्रम् स्वाहां॥ (भग्वेद २.२३.१४)

बृहस्पतये इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पिप्ल सिमत्, घी एवं चरु से होम करें।

बृहस्पति ऋधिदेवता इन्द्र होमः—इन्द्र श्रेष्ठानि गृत्समद इन्द्रस्त्रिष्टुप्, बृहस्पतेरिधदेवता इन्द्रप्रीत्यर्थे पिप्पल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्र श्रेष्ठांनि द्रविंगानि धेहि चित्तिं दक्षंस्य सुभग्त्वम्समे।

पोषं रयीगामरिष्टिं तुनूनां स्वाद्मानं वाचः सुंदिन्त्वमह्याम् स्वाहां। (मण्वेद २.२१.६)

बृहस्पत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

बृहस्पित प्रत्यिधदेवता ब्रह्मा होमः—ब्रह्मणाते विश्वामित्रो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, बृहस्पित प्रत्यिधदेवता ब्रह्म प्रीत्यर्थे पिप्लसमित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः। ॐ ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजां युनज्मि हरी सरवांचा सधमादं ग्राशू। स्थिरं रथं सुरविमंन्द्राधितिष्ठंन् प्रजानन् विद्वाँ उपंचाहि सोमुम् स्वाहां। (भग्वेद ३.३४.४)

बृहस्पति प्रत्यधिदेवतायै ब्रह्मगो इदं न मम। इस मंत्र से तीन बर होम करें।

प्रार्थना— बुध्यात्मनो यस्य न कश्चिदन्यो मितं देवा उपजीवंति यस्य। प्रजापते रात्मजं धर्मिनिष्ठं गुरुं सदा शरगामहं प्रपद्ये॥ अगुरुवे नमः।

प्रधान देवता शुक्र होमः—शुक्रं ते भारद्वाजः शुक्रस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता शुक्र प्रीत्यर्थे ग्रौदुम्बर सिमत्, ग्राज्य चरु होमे विनियोगः। ॐ शुक्रं ते ग्रुन्यद्यंज्तं ते ग्रुन्यद्विषुंरूपे ग्रहंनी द्यौरिवासि।

विश्वा हि माया अवंसि स्वधावो भुद्रा ते पूषित्रह रातिरंस्तु स्वाहां। (मावेद ६.४=.१)

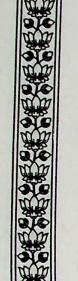
शुक्राय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से भ्रौदुम्बर सिमत्, घी एवं चरु से हाम करें।

शुक्र ऋधिदेवता इन्द्रागी होमः—इन्द्रागी वृषाकिपिरिंद्रागी पंक्तिः, शुक्रस्य ऋधिदेवता इन्द्रागी प्रीत्यर्थे औदुम्बर सिमत्, ऋण्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ इंद्राग्रीमा्सु नारिषु सुभगांम्हमंश्रवम्। नृह्यंस्या ऋप्रं चन ज्रसा मरते पतिर्विश्चंस्मादिन्द्र उत्तरः स्वाहां।

(स्ग्वेद १०. ⊏६.११)

ङशुक्र म्रिधदेवतायै इन्द्रारयै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। शुक्र प्रत्यिधदेवता इन्द्र होम:—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री, शुक्रप्रत्यिधदेवता इन्द्र प्रीन्यर्थे ग्रौदुम्बर समित्, ग्राज्य, चरु होमे विनियोग:।



ॐ इंद्रं वो विश्वत्स्परि हर्वामहे जर्नेभ्यः। श्रूस्मार्कमस्तु केवंलः स्वाहां॥ (भगवेद १.७.१०)

अशुक्र प्रत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— वर्षप्रदं चिन्तितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं सुनयोमपन्नम्। तं भार्गवं योगविशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शरगामहं प्रपद्ये॥ अशुक्राय नमः।

प्रधान देवता शनैश्चर होमः—शमग्निरित्यस्य इरिंबिठिः शनैश्चर उष्णिक्, प्रधान देवता शनैश्चर प्रीत्यर्थे शमी समित्, म्राज्य, चरु होमे विनियोगः। ॐ शम्यग्निर्युप्तिर्याः कर्च्छनंस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरुपा म्रपुस्त्रिधः स्वाहां। (भ्रावेद ४.१४.६)

शनैश्चराय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से शमी समित्, घी एवं चरु से होम करें।

शनैश्चर ऋधिदेवता प्रजापित होमः—प्रजापते हिरखगर्भः प्रजापितस्त्रिष्टुप्, शनैश्चरस्य ऋधिदेवता प्रजापितप्रीत्यर्थे शमी सिमत्, ऋाज्य, चरु होमे विनियोगः।

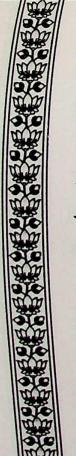
ॐ प्रजांपते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों ऋस्तु व्यं स्यांम् पतंयो रयीगाम् स्वाहां॥ (ऋग्वेद १०.१२१.१०)

शनैश्चरस्य ऋधिदेवता प्रजापतये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

शनैश्चर प्रत्यधिदेवता यम होमः—यमाय हसोमं यमो यमोनुष्टुप्, शनैश्चरस्य प्रत्यधि देवता यम प्रीत्यर्थे शमीसमित् म्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ युमाय सोमं सुनुत युमायं जुहुता हृविः। युमं हं युज्ञो गंच्छत्युग्निदूतो ऋरंकृतः स्वाहां। (भग्वेद १०.१४.१३)

शनैश्चर प्रत्यधिदेवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।



प्रार्थना— शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैभींगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं शनैश्चरं सदा शररामहं प्रपद्ये॥ अशनैश्चराय नमः।

प्रधान देवता राहु होम — कयानो वामदेवो राहुर्गायत्री प्रधान देवता राहु प्रीत्यर्थे दूर्वासमित् ग्राज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ कयांनश्चित्र ग्रा भुंवदूती सदावृंधः सरवां। कयाशचिष्ठया वृता स्वाहां राहवे इदं न मम॥ (स्रवेद ४.३१.१)

२८ बार इस मंत्र से दूर्वा सिमत्, घी एवं चरु से होम करें।

राहु ऋधिदेवता सर्प होमः—ग्रायं गौः सार्पराज्ञीः सर्पा गायत्री। राहु ऋधिदेवता सर्प प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स्रायं गौः पृश्निरक्रमीदसंदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयंत्स्वः १ स्वाहां॥ (ऋग्वेद १०.१=£.१)

राहु ऋधिदेवतायै सर्पेभ्यः इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु होमः—परं मृत्युः संकुसिको मृत्युस्त्रिष्टुप्। राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो ऋनुपरेहि पंथां यस्ते स्व इतरो देव यानात्। चक्षुंष्मते शृरावृते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान् स्वाहां। (ऋखेद १०.१ =.१)

राहु प्रत्यधिदेवतायै मृत्यवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यो विष्णुनैवामृतं भोक्ष्यमागाः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्यौ ग्रसते पर्व काले राहुं सदा शरगमहं प्रपद्ये॥

अराहवे नमः।

प्रधान देवता केतु होमः—केतुं कृखत्रतियस्य मंत्रस्य मधुच्छन्दाः केतुर्गायत्री प्रधान देवता केतु प्रीत्यर्थे कुश समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः। ॐ केतुं कृखवन्नकेतवे पेशों मर्या ग्रपेशसें। समुषद्धिरजायथाः स्वाहां॥ (मण्वेद १.६.३)

केतवे इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से कुश सिमत्, घी एवं चरु से होम करें। केतु अधिदेवता ब्रह्म होम:—ब्रह्मजज्ञानिमिति नकुलो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, केत्वधिदेवता ब्रह्मप्रीत्यर्थे कुश सिमत् ग्राज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ ब्रह्मं जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचीवेन स्रावः। स बुधियां उपमा स्रंस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमसंतश्च विवः स्वाहां॥ (यजुर्वेद-४ काराड-२ प्रश्न-= स्रनुवाक-४ मन्त्र)

केतु ऋधिदेवताब्रह्मणे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्त होम—स चित्र चित्रं भारद्वाजश्चित्रगुप्तस्त्रिष्टुप्। केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्तप्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स चित्र चित्रं चितयंन्तम्समे चित्रंक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्। चन्द्रं र्यिं पुंरुवीरं बृहंतं चन्द्रंचन्द्राभिंगृंगाते युंवस्व स्वाहां॥ (मण्वेद ६.६.७)

केतु प्रत्यधिदेवतायै चित्रगुप्ताय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना—हे ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्ताः ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः। ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शररामहं प्रपद्ये॥

उन्केतवे नमः। यहाँ पर नवग्रह होम संपन्न हुम्रा। म्रागे छः कर्म साद्गुराय देवता होम होगा।



कर्म साद्गुराय देवता होमः

कर्म साद्गुरथ देवता विनायक होम:-१—ग्रातून इत्यस्य कारवः कुसीदी विनायको गायत्री क्रतु साद्गुरथदेवता विनायक प्रीत्यर्थे सिमत् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ त्रातूनं इन्द्रक्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सङ्गंभाय महाहस्ती दक्षिंगोन् स्वाहां। (मावेद =.=१.१)

कर्म सादगुरायदेवतायै विनायकाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुरायदेवता दुर्गा होमः-२—जातवेद से कश्यपो दुर्गा त्रिष्टुप् क्रतुसाद्गुरायदेवता दुर्गा प्रीत्यर्थे सिमत् म्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ जातवेंदसे सुनवाम् सोमंमरातीयतो निदंहाति वेदः। स नः पर्षदिति दुर्गाशि विश्वां नावेवसिंधुं दुरितात्यग्निः स्वाहां॥ (म्यवेद १.६६.१)

क्रतु साद्गुगय देवतायै दुर्गायै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

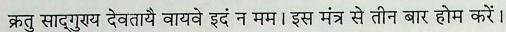
कर्म साद्गुरायदेवता क्षेत्रपाल होम:-३—क्षेत्रस्य पतिना वामदेव: क्षेत्रपालोनुष्टुप् चरु होमे विनियोग:।

ॐ क्षेत्रंस्य पतिंना व्यं हितेनेवजयामिस। गामश्चं पोषियुत्वा सनोंमृळातीदृशे स्वाहां। (भावेद ४.४७.१)

क्रतु साद्गुगय देवतायै क्षेत्रपालाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुरय देवता वायु होम:-४ — क्रासाशिशुरित्यस्यत्रियोवायुरुष्णिक् क्रतु साद्गुराय देवता वायु प्रीत्यर्थे सिमत् ग्राज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ क्रागाशिशुंर्महीनांहिन्वत्रृतस्यदीधितिं। विश्वापरिंप्रिया भुंवदर्धद्विता स्वाहां॥ (भग्वेद £.१०२.१)



कर्म साद्गुराय देवता त्राकाश होमः-५—ग्रादित्यप्रतस्य वत्स ग्राकाशो गायत्री क्रतु साद्गुराय देवता ग्राकाश प्रीत्यर्थे सिमत् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः। ॐ ग्रादित् प्रतस्युरेतंसो ज्योतिंष्पश्यंति वास्रं। पुरोयद्विध्यतेंद्विवा स्वाहां॥ (भ्रावेद =.६.३०)

क्रतु साद्गुरायदेवतायै स्नाकाशाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुराय देवता ऋश्विनी देवता होमः-६—ऋश्विनावर्ति राहूगणो गोतमोश्विनावुष्णिक् ऋश्वि प्रीत्यर्थे सिमत् ऋण्य चरु होमे विनियोगः। ॐ ऋश्विनावृर्तिर्समदागोमंद्दस्त्राहिरंगयवत्। ऋवीग्रथं समनसानियंच्छतं स्वाहां।। (ऋग्वेद १.६२.१६)

क्रतु साद्गुगय देवतायै ऋश्विभ्यां इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता होमः

कतु संरक्षक देवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र प्रीत्यर्थे सिमत् म्राज्य चरु होमे विनियोगः। ॐ इन्द्रं वो विश्वतस्पिर् हर्वांमहे जनेंभ्यः। श्रुस्मार्कमस्तु केर्वलः स्वाहां॥ (ऋवेद १.७.१०)

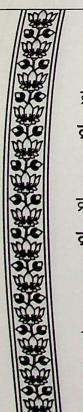
क्रतु संरक्षक देवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता ऋग्नि होमः—ऋग्निं दूर्तामत्यस्य कारावो मेधातिथिरग्निर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता ऋग्नि प्रीत्यर्थे समित् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ऋग्निं दूतं वृंगीमहे होतांरं विश्ववेदसम्। ऋस्य युज्ञस्यं सुक्रतुम् स्वाहां॥ (ऋग्वेद १.१२.१)

क्रतु संरक्षक देवतौ अग्रय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता यम होम: —यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता यम प्रीत्यर्थे समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोग:।



ॐ युमाय सोमं सुनुतयमायंजुहुता हृविः। युमंहंयुज्ञो गंच्छत्युग्निदूंत्रो ऋरंकृतः स्वाहां॥ (ऋग्वेद १०.१४.१३)

क्रतु संरक्षक देवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र को दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता निर्स्रति होमः—मोषुराः कारावो निर्स्रतिर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता निर्स्रति प्रीत्यर्थे समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ मोषुगाः परांपरानिर्सितिर्दुर्हगांवधीत्। पदीष्ट तृष्णांयास्ह स्वाहां॥ (भग्वेद १.३८.६)

क्रतु संरक्षक देवतायै निर्ऋतये इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वरुगा होमः—तत्वायामीत्यस्य शुनः शेपोवरुगास्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता वरुगा प्रीत्यर्थे समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तत्वांयाम् ब्रह्मंगा वन्दंमानुस्तदाशांस्तेयजंमानो ह्विभिः।

ऋहेळमानो वरुगोह बोध्युर्रुशंसमान् ऋायुः प्रमोषीः स्वाहां ॥ (ऋग्वेद १.२४.११)

क्रतु संरक्षक देवतायै वरुगाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वायु होमः—तव वायो व्यश्वोवायुर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तवं वायवृतस्पतेत्वष्टुंर्जामातरद्भुत। स्रवांस्यावृंशीमहे स्वाहां ॥ (भ्रावेद =.२६.२१)

क्रतु संरक्षक देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता सोम होम—सोमो धेनुमित्यस्य गौतमः सोमस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता सोम प्रीत्यर्थे समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ सोमों धेनुं सोमो ऋवींन्तमाशुं सोमों वीरं कर्म्ययं ददाति।

सादुन्यं विदुथ्यं सुभेयं पितृश्रवंशां यो ददांशदस्मै स्वाहां ॥ (म्रावेद १.६१.२०)

क्रतु संरक्षक देवतायै सोमाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

कतु संरक्षक देवता ईशान होमः—तमीशानिमत्यस्य गौतम ईशानो जगती क्रतु संरक्षक देवता ईशान प्रीत्यर्थे सिमत् आज्य चरु होमे विनियोगः।

अ तमीशांनुं जगंतस्त्स्थूष्स्पतिं धियं जिन्वमवंसे हुमहे व्यम्।

पूषा नो यथा वेदंसामसंदृधे रंक्षिता पायुरदंब्धः स्वस्तये स्वाहां॥ (मग्वेद १. ६-६.४)

क्रतु संरक्षक देवतायै ईशानाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें। यहाँ पर क्रतु संरक्षक देवता होम संपन्न हुमा।

व्याहृति होमः—व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापितः बृहती व्याहृति होमे विनियोगः। ऊभूः स्वाहा, ऋगूये इदं न मम। ऊभुवः स्वाहा,वायवे इदं न मम। ऊस्वः

स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। अभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। इन मत्रों से एक बार होम करें।

प्रधान देवता सूर्य होमः

प्रधान देवता सूर्य होम: - बगमहाँ ग्रसीत्यस्य सूर्यःप्रगाथो बृहती सूर्य प्रीत्यर्थे ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बराम्हाँ ग्रंसि सूर्य बळांदित्य मृहाँ ग्रंसि। मृहस्तें सृतो मंहिमा पंनस्यते उद्धा देव मृहाँ ग्रंसि स्वाहां॥ (ऋग्वेद ८.१०१.११) ग्रा.गृ.सूत्रम्

अ सूर्याय स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। अरुद्राधिपतये स्वाहा, रुद्राधिपतय इदं न मम। अरिव किरणाय स्वाहा, रिविकिरणाय इदं न मम। अर् ईश्वराय स्वाहा, ईश्वराय इदं न मम। उस्वित्पातशमनाय स्वाहा, सर्वोत्पातशमनाय इदं न मम। प्रधान देवता के होम के बाद इन पाँच मंत्रों से घी की म्राहृति एक-एक बार देवें।



ॐ भूरग्रयें च पृथिव्यै चं महते च स्वाहां ऋग्नये पृथिव्यै महते च इदं न मम।
ॐ भुवों वायवेंचान्तरिक्षाय च महते च स्वाहां। वायवेऽन्तरिक्षाय महते च इदं न मम।
ॐ सुवंरादित्यायं य दिवे चं महते च स्वाहां। ऋादित्याय दिवे महते च इदं न मम।
ॐ भूभूवः सुवंश्चन्द्रमंसे च नक्षंत्रेभ्योदिग्भ्यश्चं महते च स्वाहां। (यजुर्वेद-महानारायशोपनिषद्-आरश्यक)

चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महते च इदं न मम। इन चार मंत्रों से भी घी की म्राहुतियाँ एक-एक बार देवें। ॐ भू: स्वाहा, ऋग्नये इदं न मम। ॐ भुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐ स्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐ भूभुंवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम।

स्विष्टकृत् होमः—दर्व्यामुपस्तीर्य हिवर्भागस्योत्तरार्धतः सकृत् ग्रवदाय ग्रवत्तंतु द्विः ग्रिभघार्य। स्रुवा से दर्वी में (स्रुक्) घी डालकर, चरु के उत्तर भाग से चरु को निकालकर (हाथ से) दर्वी में रखें। फिर स्रुवा से उप पर दो बार घी डालें। ग्रागे कहने वाले मंत्र को कहते हुए होम कुगड में ईशान्य दिशा में डालें। यदस्येति हिरगयगर्भीग्निः स्विष्टकृद्घृतिः स्विष्टकृत् होमे विनियोगः।

ॐ यदंस्य कर्मगोत्यरीरिचंयद्वान्यूनिमहाकरम्। ऋग्निष्टित्स्वष्टकृद्विद्वान्त्सर्वं स्विष्टंसुहुतं करोतु मे॥ ऋग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्थयः स्वाहां॥ (श्रीत मन्त्र)

इन दो मंत्रों को कहकर ऋग्नि के ईशान्य भाग में होम करें। स्विष्टकृतेऽग्नय इदं न मम।

इध्म बंधन रज्जुं विस्त्रस्य

पहले जिस रस्सी (कुशा निर्मित) से इध्यम बाँधे थे उस रस्सी को खोलकर उसे—ॐरुद्राय पशुपतये स्वाहा, रुद्राय पशुपतये इदं न मम। कहकर होम करें। प्रायश्चित ग्राज्याहुती: सप्त जुहुयात्। प्रायश्चित सात घी की ग्राहुतियाँ देवें। ग्रयाश्चेतिविमदोया ग्रिगः पंक्ति: प्रायश्चित्याज्य होमे विनियोगः। सम्वेदीय सोम सर्वाद्भृत शान्ति यज्ञ

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन

ॐ ग्रयांश्चाग्नेस्यनंभिश्चस्तीश्चसृत्यमित्वम्या ग्रंसि। ग्रयासावयंसाकतो यासंन्हव्यमूंहिषेयानोंधेहि भेषजं स्वाहां॥ (यजुर्वेद-ग्रारायक)

अग्नेय इदं न मम। अतो देवाः कारवोमेधातिथिर्देवा गायत्री प्रायश्चिताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ म्रतोंदेवा म्रंवंतु नो यतोविष्णुंविंचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धार्मामुः स्वाहां॥ (भग्वेद १.२२.१६)

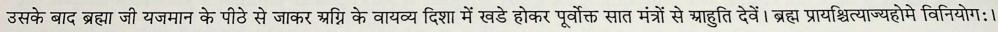
देवेभ्य इदं न मम। इदं विष्णुः कारावोमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधानिदंधे पृदं। समूळहमस्यपांसुरे स्वाहां॥ (ऋग्वेद १.२२.१७)

विष्णावे इदं न मम। व्यस्त समस्त व्याहृतीनां विश्वामित्र जमदिग्र्भरद्वाज प्रजापतय ऋषयः, ऋग्निवायुसूर्यप्राजापतयो देवताः गाय त्र्युष्णिगनुष्टुबृहृत्यश्छंदांसि। प्रायिश्वत्ताज्य होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, ऋग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर यजमान के द्वारा करने वाला प्रायिश्वत होम संपन्न हुम्ना। यज्ञ के पूजन होम में ऋनेक प्रकार के लोप संभव है। ऋतः उनके निवारण के लिए प्रायिश्वत होम ऋवश्यक है। यजमान के प्रायिश्वत होम से भी बचे हुए लोप दोषों के निवारण के लिए ब्रह्म प्रायिश्वत विधान है। ब्रह्मा के स्थान पर यदि कुश हो तो स्वयं ऋचार्य ही ब्रह्म प्रायिश्वत होम करें।

ब्रह्म प्रायश्चित्त होमः

ब्रह्मा के स्थान पर बैठे पं. जी के द्वारा यज्ञ में सपन्न लोप दोषों की निवृत्ति के लिए ब्रह्मा जी प्रायश्चित होम करते हैं। ततो ब्रह्मा कर्तारं परीत्याग्नर्वायव्यदेशे तिष्ठन् एता एव सप्त स्नाज्याहुतीर्जुहुयात्।



ॐ ऋ्रयाश्चाग्नेस्यनंभिश्स्तीश्चंस्त्यमिंत्वम्या ऋ्रंसि। ऋर्यासावयंसाकृतो यासंन्हव्यमूंहिषेयानों धेहि भेषजम् स्वाहां॥ (यजुर्वेद-आरायक)

अग्नेय इदं न मम। इस पंक्ति को यजमान या अचार्य कहें।

ॐ त्रतों देवा त्र्वंतु नो यतोविष्णुंर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धार्मभिः स्वाहां।। (मावेद १.२२.१६)

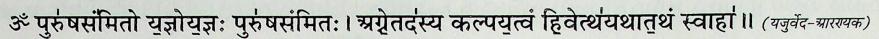
देवेभ्य इदं न मम (इस पंक्ति को ग्राचार्य पढ़ें।)

ॐ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे प्दं। समूंळहमस्य पांसुरे स्वाहां॥ (ऋखेद १.२२.१७)

विष्णव इदं न मम। (ग्राचार्य इस पंक्ति को कहें) ॐ भू: स्वाहा, ग्रग्रये इदं न मम। ॐ भुव: स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐ स्व: स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐ भूर्भुव: स्व: स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। स्वाहा तक ब्रह्मा जी कहते है। इदं न मम वाला भाग यजमान व ग्राचार्य को ही कहना हैं, त्याग को ब्रह्मा नहीं करना चाहिये। इदं न मम त्याग कहलाता है। ततो ब्रह्मा यथा ग्रागतं तथैव स्वस्थाने उपविशेत्। ब्रह्मा जी जिस प्रकार ग्राये थे उसी प्रकार जाकर ग्रपने ग्रासन पर बैठें। ग्रनाज्ञातिमिति मंत्रद्वयस्य हिर्ग्यगर्भोग्निरनुष्टुप्, ज्ञाताज्ञातदोष निबर्हगार्थं प्रायश्चित्ताज्य होमे विनियोग:।

ॐ म्रनांज्ञातं यदाज्ञांतं य्ज्ञस्यं क्रियतेमिथुं। ऋग्रेतदंस्य कल्पयत्वं हिवेत्थंयथात्थं स्वाहां॥ (यजुर्वेद-मारस्यक)

ऋग्रये इदं न मम।



यत्पाकत्रेत्याप्त्यस्त्रितोग्निस्त्रष्टुप्। प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

ॐ यत्पांकृत्रामनंसादीनदंक्षानय्ज्ञस्यं मन्वतेमर्त्यासः। ऋग्निष्टृद्धोतां क्रतुविद्विंजानन्यजिष्ठो देवाँऋतुशोर्यजाति स्वाहां॥ (ऋग्वेद १०.२.४)

त्रग्रय इदं न मम। अयद्वोदेवा ग्रभितपामरुत स्त्रिष्टुप्। मंत्र तंत्र विपर्यासादि निमित्तक प्रायश्चिताज्य होमे विनियोग:।

ॐ यद्वोदेवा ऋतिपातयांनि वाचाचप्रयुंतीदेवहेळंनं। ऋरायो ऋस्माँ ऋभिदुंच्छुनायतेन्यत्रास्मन्मंरुतस्तन्निधेतनुस्वाहां॥ (यजुर्वेद-आरख्यक)

मरुद्भ्य इदं न मम। ततः स्कन्न भिन्नाद्यनियत निमित्ते सित वक्ष्यमाण प्रकारेण तत् प्रतिपदोक्त जप होमान् कुर्यात्। इसके बाद गिरने वाले, टूटने वाले सभी दोष जिनका वर्णन संभव नहीं है, उनके प्रायश्चित के लिए ग्रागे कहने वाले जप एवं होम करें।

अभू: स्वाहा, अग्रये इदं न मम। अभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। अस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। अभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर प्रायश्चित होम समाप्त हुआ। प्रारम्भ दिन से अन्तिम दिन तक यह होम कार्य एक जैसा है।

सूर्य सर्वाद्भुत होमस्य सर्वं फलावाप्त्यर्थं साङ्गतासिद्ध्यर्थं च यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार पूजां करिष्ये। होम कुगड में ग्राचार्य एवं कलश वेदि में प्रधानाचार्य एक साथ पूजन करें। प्रधान देवता सूर्य मंत्रों से।



षोडशोपचार पूजनम् (कुराड में)

यान —कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं,। रक्तं रक्तविभूषराध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्॥ सप्ताश्चं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिगाकरं सेवामहे भास्करम्॥ ॐ घृगाः सूर्यमादित्यः। म्रावाहन-ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यं तिष्ठद् दशांगुलम्॥ (भगवेद १०.६०.१) ॐ हिरंगयवर्गा हिरंगीं सुवर्गीरज्त स्रंजाम्। चन्द्रां हिरंगमंयीं लुक्ष्मीं जातंवेदो मु स्रावंह।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसूर्याय नमः। ग्रावाहयामि। ग्रावाहनं समर्पयामि।

त्रासनम्—ॐ पुरुष ए्वेदं सर्वं यद्भूतं यंच्य भव्यंम्। उतामृंतृत्वस्येशांनो यदन्नेना तिरोहं ति॥ (मावेद १०.६०.२)

ॐ तां मु स्रावंह जातवेदों लुक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंगयं विंन्देयं गामश्वं पुरुंषान्हम्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। ग्रासनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ ए्तावांनस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुंषः। पादोंऽस्य विश्वांभूतानिं त्रिपादंस्यामृतं दि्वि॥ (मानेद १०.६०.३) ॐ ऋश्वपूर्वा रंथम्थ्यां हस्तिनांद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपंह्वये श्रीमी देवी जुंषताम्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय ममः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

म्रर्घं — ॐ त्रिपादूर्ध्व उद्दैत् पुरुंषुः पादों ऽस्येहा भंवत्पुनंः। ततो विश्वं व्यंक्रामत् साशनानश्नने म्रभि॥ (मावेद १०.६०.४) ॐ कां सोसिमतां हिरेराय प्राकारांमार्द्रां ज्वलेन्तीं तृप्तां तुर्पयंन्तीम्।

पुद्मेस्थितां पुद्मवंगां तामिहो पंह्वये श्रियंम्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्) असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः हस्तयोः ऋर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

म्राचमनम्—ॐ तस्मांद्विराळंजायत विराजो ऋधिपूर्रुषः। स जातो ऋत्यंरिच्यत पृश्चाद् भूमिमथोंपुरः। (मानेद १०.६०.५) ॐ चंद्रां प्रभासां युशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुंष्टा मुदाराम्। तां पृद्मिनींमीं शरंशामृहं प्रपंदोऽलुक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृंशो॥ (पञ्चम मणडलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ ग्राप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतंः सोम्वृष्णियं। भवावार्जस्य संग्थे। (मण्वेद १०.६१.१६)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल-ॐ सुद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनाति भवे भवस्वमाम् भवोद्धवाय नमः॥

(यजुर्वेद-महानारायगोपनिपत् स्नारगयकः)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दिधकाव्यों ऋकारिषं जिष्योरश्चंस्य वाजिनंः। सुरिभनोमुखां कर्त्प्रगा ऋग्यंषितारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३६.६)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। दिध स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामुद्देवाय नमीं ज्येष्ठाय नमंश्रेष्ठाय नमीं रुद्राय नमः कालाय नमः कलिवकरगाय नमोबलाय नमो बलंप्रमथनाय नम्स्सर्वभूतदमनाय नमीं मुनोन्मनाय नमः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-ग्रारायक)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

वी— ॐ घृतं मिंमिक्षे घृतमंस्ययोनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धामं।

808

शुद्ध जल—ॐ स्रुघोरेंभ्योऽथ् घोरेंभ्यो घोरुघोरं तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वृशर्वेभ्यो नर्मस्ते स्रस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

(यजुर्वेद-महानारायगोपनिषत्-म्रारगयक)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवातां ऋतायते मधुंक्षरंति सिंधंवः । माध्वीर्नः स्ंत्वोषंधीः ॥ मधुनक्तं मुतोषसो मधुंमृत् पार्थिवं रजः । मधुद्यौरंस्तु नः पिता ॥ मधुंमान्नो वनस्पतिर्मधुंमाँ ऋस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावों भवंतु नः ॥ (ऋषेद १.६०.६) ॐसपरिवाराय

श्रीसूर्याय नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुंषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयांत्।। (यजुर्वेद-महानारायगोपनिषत्-ग्रारायक)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पंवस्व दिव्याय जन्मंने स्वादुरिद्रांय सुहवींतु नाम्ने। स्वादुर्मित्राय वर्त्तरााय वायवे बृहस्पतंये मधुंमा स्रदांभ्यः॥ (ऋखेद स. १५)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वं विद्यानामीश्वरस्सर्वं भूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मगोऽ धिपतिर्ब्रह्मां शिवो में ग्रस्तु सदाशिवोऽम्॥ (यजुर्वेद-महानारायगोपनिषत्-ग्रारणयक)



असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फुलिनी र्या ऋंफुला ऋंपुष्पायाश्चं पुष्पिग्गीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानों मुञ्चन्त्वं हंसः॥ (ऋग्वेद १०.६७.१४)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ त्रापोहिष्ठा मंद्योभुवस्तानंऊर्जे दंधातन। महेरणांय चक्षंसे॥ यो वंः शिवतंमोरस्स्तस्य भाजयते हर्नः। उश्तीरिव मातरंः॥ तस्मा ऋरंगमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। ऋषों जुनयंथा च नः। (ऋखेद १०.६.१-२-३)

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टंमाय तव्यंसे। वोचेम् शंतंमं हृदे॥ (मग्वेद १.४३.१)

ॐ यथां नो ऋदितिः करत्पश्चे नृभ्यो यथा गवें। यथां तोकायं रुद्रियंम्॥ (म्रावेद १.४३.२)

ॐ यथां नो मित्रो वर्रुगो यथां रुद्रश्चिकंति। यथा विश्वें सुजोषंसः।

ॐ गाथपंतिं मेधपंतिं रुद्रं जलांषभेषजम्। तच्छं योः सुम्रमींमहे॥

ॐ यः शुक्र इंव सूर्यो हिरंगयिमव रोचंते। श्रेष्ठों देवानां वसुं:।

ॐ शं नंः कर्त्यर्वे ते सुगं मेषायं मेष्ये। नृभ्यो नारिभ्यो गर्वे॥

ॐ ग्रुस्मे सोम् श्रियमध्य नि धेहि श्तस्यं नुगाम्। महिश्रवंस्तुविनृम्गाम्॥

ॐ मार्नः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरंत। स्रा नं इंदो वाजें भज।।

ॐ यास्ते प्रजा ऋमृतंस्य परंस्मिन्धामंत्रृतस्यं। मूर्धा नाभां सोमवेन ऋ। भूषंतीः सोम वेदः॥ (ऋग्वेद १.४३.३-४-४-६-७-४-१)

ॐ नमुः सोमाय च रुद्रायं च नमंस्ताम्रायं चारुगायं च नमंः शुंगायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों

स्रग्रेवधायं च दूरेवधायं च नमीं हन्त्रे च हनीयसे च नमीं वृक्षेभ्यो हिरकेशेभ्यो नमस्ताराय नमीः श्रांभवें च मयोभवें च नमीः शंकरायं च मयस्क्रायं च नमीः शिवायं च शिवतराय च नम स्तीर्थ्यायच कूल्याय च नमीः पार्यीय चावार्यायं च नमीः प्रतरंशाय चोत्तरंशाय च नमी स्नातार्यीय चालाद्याय च नम्शष्याय च फेन्याय च नमीः सिक्त्याय च प्रवाह्याय

च। (यजुर्वेद-४ काराड-४ प्रश्ने- = ग्रनुवाक)

ॐ तच्छंयोरावृंशीमहे। गातुं युज्ञायं। गातुं युज्ञ पंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेष्जम्। शं नो ऋस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ (यजुर्वेद-आररपक) ॐ यत्पुरुंषेशा हिवषां देवा युज्ञमतंन्वत। वसंतो ऋस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः श्राद्धिवः॥ (ऋग्वेद १०.६०.६) ॐ ऋादित्यवंशों तपसोऽधिजातो वनस्पित्सतवं वृक्षोऽथं बिल्वः। तस्य फलांनि तपसा नुंदंतु मायांतरा याश्चं बाह्या ऋंलक्ष्मीः। (ऋग्वेद पञ्चम मर्गडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ युवं वस्त्राणि पीव्सावंसाथे युवोरिच्छंद्रा मंतंवो हसर्गीः। अवितरम्मनृंतानि विश्वं ऋतेनं मित्रा वरुणा सचेथे॥ (ऋवेद १.१४२.१)
ॐ तं युज्ञं बर्हिषि प्रौक्ष्न् पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा श्रंयजंत साध्या ऋषंयश्च ये॥ (ऋवेद १०.६०.७)
ॐ उपैतु मां देवस्खः कीर्तिश्च मिणांना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मिं राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं दुतदातुं मे॥

(मृग्वेद पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

808



उस्परिवाराय श्रीसूर्याय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं —ॐ यज्ञोपवीतं प्रमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरास्तात्। ऋायुष्यम्ग्रयं प्रतिमुं ऋशुभं यज्ञोपवीतं बलमंस्तु तेर्जः॥

ॐ तस्मांद्यज्ञात् संर्वृहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पुशून्ताँश्चंके वाय्व्यांनार्ययान् ग्राम्याश्च ये।। (भवद १०.६०.६)

ॐ क्षुत् पिंपासामेलां ज्येष्ठामंल्क्ष्मीं नांशयाम्यहंम्। अर्भृतिमसंम्िदं च सर्वान्निर्शुंद मे गृहात्॥ (पश्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

म्राभरगा—ॐ हिरंगयरूपः स हिरंगय संदृगपान्नपात् सेदु हिरंगयवर्गाः। हिर्गययात् परियोनें र्निषद्यां हिरगयदा दंदत्यन्नंमस्मै॥

(ग्रग्वेद २.३४.१०)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। स्राभरगं समर्पयामि।

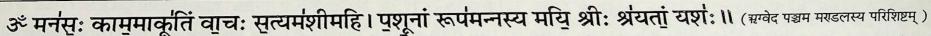
गन्थ— ॐ गंधं द्वारां दुंराध्रषां नित्यपुंष्टां करीषिशाींम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्) ॐ तस्मांद्यज्ञात् सर्वहुत् ऋचुः सामांनि जिज्ञरे। छन्दांसि जिज्ञरे तस्माद्य जुस्तस्मांदजायत।। (ऋग्वेद १०.६०.६)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। गन्धं समर्पयामि।

मक्षत—ॐ स्रचैत प्राचैत प्रियंमेधासो स्रचैत। स्रचैन्तु पुत्रका उतपुरंन्न धृष्यवंचित॥ (स्रवेद =.६£.=)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। ग्रक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाशा—ॐ स्रायंने ते प्रायंशो दूर्वीरोहंतु पुष्पिशाीं:। हृदाश्चं पुगडरींकाशि समुद्रस्यं गृहा इमे ॥ (ऋषेद १०.१४२.=) ॐ तस्मादश्वां स्रजायन्त ये के चों भ्यादंतः। गावोंहजज्ञिरे तस्मात् तस्मांज्ञाता स्रंजावयं:॥ (ऋषेद १०.६०.१०)



असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पुष्पाशि समर्पयामि।

प्रथमावररा पूजनम्—ॐहृदयाय नमः। म्राग्नेय दिशि। ॐशिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। ॐशिखायै वषट् नमः। नैर्मृत्यां दिशि। ॐकवचाय हुम् नमः। वायव्यां दिशि। ॐनेत्रत्रयाय वौषट् नमः। ऋग्रे ॐऋस्त्राय फट् नमः। ऋग्रेयादि कोगोषु पूजयेत् (ऋनुष्ठान पद्धति)। पूजन करे।

द्वितीयावरगा पूजनम्—ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्गाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। अग्रग्रये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। अयमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दराड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ निर्म्यतये रक्षोधिपतये रक्तवर्शाय खङ्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐवरुगाय जलाधितये कुंदवर्गाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐवायवे प्रागाधिपतये धूम्रवर्गाय म्रंकुश हस्ताय हरिगावाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नम:। असोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय ऋश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्गाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। अग्रनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्शाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में ग्रनन्त का पूजन करें। अब्रह्मरो लोकाधिपतये कंजवर्शाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्तिपार्षदाय नम:। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। (अनुष्ठान पद्धित)

308



तृतीयावररापूजनम्— अवज्ञाय नमः। (पूर्व में) अशक्त्यै नमः। (ग्राग्नेय में) अदराडाय नमः। (दिक्षिरा में) अखड्गाय नमः। (नैर्म्यत्य) अपाशाय नमः। (पश्चिम में) अग्रंकुशाय नमः। (वायव्य में) अगदायै नमः। (उत्तर में) अत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) अचक्राय न मः। (पश्चिम नैर्म्यत्य के बीच में) अपदाय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) (अनुष्ठान पद्धति)

सूर्य ऋष्टोत्तर शतनाम पूजा

अग्नरुशाय नमः। अशरुगयाय नमः। अकरुशारस सिन्धवे नमः। अग्नसमान बलाय नमः। अग्नार्तरक्षकाय नमः। अग्नादित्याय नमः। अग्नादिभूताय नमः। ॐ ऋखिलागमवेदिनेनमः। ॐ ऋच्युतायनमः। ॐ ऋखिलज्ञायनमः। ॐ ऋनन्तायनमः। ॐ इनायनमः। ॐ विश्वरूपायनमः। ॐ इन्यायनमः। ॐ इन्द्रायनमः। ॐ भानवेनमः। ॐ इन्दिरामन्दिरायनमः। ॐ ऋाप्तायनमः। ॐ वन्दनीयायनमः। ॐ ईशायनमः। ॐ सुप्रसन्नायनमः ॐ सुशीलायनमः ॐ सुवर्चसे नमः अवसुप्रदायनमः । अवसवेनमः। अवासुदेवायनमः। अउज्जवलायनमः। अउग्ररूपायनमः। अअर्ध्वगायनमः। अविवस्वतेनमः। अउद्यत्किरगाजालयनमः। अहिषकेशायनमः। अऊर्जस्वलायनमः। अवीरायनमः। अनिर्जरायनमः। अजयाय नमः। अ ऊरुद्वभावरूपयुक्तसारथये नमः। अरुग्धन्त्रे नमः। अग्नृक्षचक्रचराय नमः। अग्नृज्स्वभाविचत्ताय नमः। अनित्यस्तुत्याय नमः। अग्नृकावर्गारूपाय नमः। अउज्जवलतेजसे नमः। अग्नृक्षायधिनाथाय नमः। अभित्रायनमः। अपुष्काराक्षाय नमः। अलुप्तदन्ताय नमः। अशान्ताय नमः। अकान्तिदाय नमः। अधनाय नमः। अकनत्कनकभूषाय नमः। अ खद्योताय नमः। अलूनिताखिलदैत्याय नमः। असत्यानन्द स्वरूपिरो नमः। अग्नपवर्गप्रदाय नमः। अग्नार्तशररयाय नमः। अएकाकिने नमः। अभगवते नमः। असृष्टिस्थित्यन्तकारिरो नमः। अगुशात्मने नमः। अघृशिभृते नमः। अबृहते नमः। अब्रह्मरो नमः। अपैश्वर्यदाय नमः। अशर्वाय नमः। अहिरदश्चाय नमः। अशौरये नमः। अदशदिक्सम्प्रकशाय नमः। अभक्तवश्याय नमः। अग्रोजस्कराय नमः। अजियने नमः। अजगदानन्दहेतवे नमः। अजन्ममृत युजराव्याधिवर्जिताय नमः। अग्रौत्रत्यापदसञ्चरथस्थाय नमः। अग्रसुरारये नमः। अकमनीकराय नमः। अग्रब्जवल्लभाय नमः। अग्रन्तर्बिहःप्रकाशाय

800

नमः। ॐ ग्रचिन्त्याय नमः। ॐग्रात्मरूपिणे नमः। ॐ ग्रच्युताय नमः। ॐ ग्रपरेशाय नमः। ॐपरस्मै नमः। ॐज्योतिषे नमः। ॐग्रहस्कराय नमः। ॐरवये नमः ॐहरये नमः। ॐपरमात्मने नमः। ॐतरुणाय नमः। ॐवरेणयाय नमः। ॐग्रहाणांपतये नमः। ॐभास्कराय नमः। ॐग्रादिमध्यान्तरिहताय नमः। ॐ सौख्यप्रदायनमः। ॐ सकलजगतांपतये नमः। ॐसूर्याय नमः। ॐकवये नमः। ॐनारायणाय नमः। ॐपरेशाय नमः। ॐतेजोरूपाय नमः। ॐहीं हिरणयगर्भाय नमः। ॐ ऐं इष्टार्थदाय नमः। ॐग्राशुप्रपन्नाय नमः। ॐश्रीमते नमः। ॐश्रेयसे नमः। ॐभक्तकोटिसौख्यप्रदायिने नमः। ॐनिखिलागमवेद्याय नमः। ॐनित्यानन्दाय नमः। ग्रष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। (ग्रनुष्ठान पद्धति)

धूपम्—ॐवनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्य: सुमनोहर:। स्राघ्नेय: सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुर्रुष् व्यद्धुः कित्धा व्यंकल्पयन्। मुख्ं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादां उच्येते।। (म्रावेद १०.६०.११) ॐ कर्दमेन प्रंजा भूता मृयि संभंव कर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। (म्रावेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। धूपं ग्राघ्रापयामि।

दीपम् आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं विह्नना योजितं मया। गृहागा मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह।। (स्मृति संग्रह) ॐ ब्राह्मगोंऽस्य मुर्खमासी बाहू रांजुन्यः कृतः। ऊरू तदंस्य यद्वैश्यः पुद्धयां शूद्रो स्रंजायत।। (म्रावेद १०.६०.१२) ॐ स्रापः सृजंतु स्त्रिग्धांनि चिक्लीत् वस मे गृहे। नि चं देवीं मातरं श्रियं वासयं मे कुले।। (म्रावेद पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं ग्राचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मगडलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य ग्रिभिघार्य निर्मलं हिव तदुपिर न्यस्य ग्राज्येन द्रवीभूतं कृत्वा ''ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यात्रं संशोध्य इक्षिगाहस्ते



त्रग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते त्रमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हिवराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरभिमुद्रां बध्वा त्रमृतमयं भावियत्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहगोच्छां कुर्यात्।

(ग्रनुष्ठान पद्धति)

''सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि'' इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः ''देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषार्रोदं हिविर्विभो'' इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्शयं दक्षिर्गा हस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। ऋत्रात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं ऋबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्। नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य ऋंलिलमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः विर्धतं देवं हन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के त्रागे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्र मग्रडल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल हिवस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हिवस् को घी से िमगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं यं इस वायु बीज को जपकर हिवस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) त्राग्न बीज को लिखकर उस त्राग्न से हिवस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में त्रमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हिवस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। अधितार सूर्य त्रादित्य:। इस मन्त्र का त्राठ बार जप करें। हिवस् को मत्रमय एवं त्रमृतमय होने की कल्पना करें। सुरिम मुद्रा से त्रमृतमय हुन्ना है मानकर मलांश, धातु ग्रंश एवं रसांश को त्रलग-ग्रलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। "सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पृष्य लेकर देवता का जीम नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। "निवेदयामि भवते जुषाण हिविविमो" कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा

(जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्रांशाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ किनिष्ठिका मिलाकर, स्रपानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, व्यानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, उदानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, समानाय स्वाहा। सभी अङ्गुलियों को लािकर। अत्र से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को अपित करने की कल्पना करें।

"वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि" कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति अधृिशः सूर्य आदित्यः।" इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादुः पंवस्व दिव्याय जन्मंने स्वादुरिंद्रांय सुहवींतुनाम्ने। स्वादुर्मित्राय वर्षणाय वायवे बृहस्पतंये मधुंमां ग्रदांभ्यः॥ (म्लेद १. १४६) ॐ चन्द्रमा मनंसो जातश्चक्षोः सूर्यो ग्रजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरंजायत॥ (म्लेद १०.१०.१३) ॐ ग्रादां पुष्करिंगीं पुष्ठिं पुंगलां पद्ममालिंनीम्। चन्द्रां हिरगमंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म ग्रावंह॥

(भृग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि । **ऋमृतापिधानमिस** कहकर उत्तरापोशन देवें । हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि । गगडूषार्थे जलं समर्पयामि । शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि । करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ।

ताम्बूल—पूर्गीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्गं कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। (स्मृति संग्रह-देवपूजा)

उसपरिवार श्री सूर्याय नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (स्रारित)—ॐ स्रर्चित् प्रार्चित् प्रियंमेधा सो स्रर्चित । स्रर्चित पुत्रका उत पुरं न धृष्यवर्चित । (स्रवेद = ६६. =) ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे । ध्रुवं विश्वमिदं जगंद् ध्रुवो राजां विशामयम् ॥ ॐ ध्रुवं ते राजा वर्र्त्रशो ध्रुवं देवो बृहम्पतिः । ध्रुवं त इन्द्रशाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम् ॥ (स्रवेद १०.१७३.४)

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्य— असहस्त्रशीर्ष देवं विश्वाक्षं विश्वशंभुवम्। विश्वं नारायंगां देवमक्षरं पर्मं पदम्॥ विश्वतः परंमान्नित्यं विश्वं नाराय्गां हरिम्। विश्वंमेवेदं पुरुंष्रस्तिद्वश्व मुपंजीवित॥ पितं विश्रंस्यात्मेश्वरं .. शाशंवतं... शिवमंच्युतम्। नाराय्गां मंहान्नेयं विश्वातंमानं प्रायंग्राम्॥ नाराय्गा परोज्योतिरात्मा नाराय्गाः परः। नाराय्गा परं ब्रह्म तृत्वं नाराय्गाः परः॥ नाराय्गा परो ध्याता ध्यानं नाराय्गाः परः। यच्च किंचिक्जंगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा॥ मन्तंबंहिश्चं तत्सर्वं व्याप्य नाराय्ग्रास्थितः। म्रनंतमव्यंयं कविं.. संमुद्रेऽन्तं विश्वशंभुवम्॥ प्रमुकोश प्रतीकाशं... हृदयं चाप्यधो मुंखम्। म्रधोनिष्ट्या वितस्याते नाभ्यामुंपिर् तिष्ठति॥ ज्वाल्मालाकुंलं भाति विश्वस्यायत्नं महम्। संतंत् .. शिलाभिस्तु लेबत्याकोश सिन्नंभम्॥ तस्याते सुषिरं.. सूक्ष्मं तिस्मंन्सर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महानंग्निर्विश्वाचिर्विश्वतो मुखः॥ सोऽग्रंभुिव भंजतिष्ठन्नहारमजुरः कविः। तिर्युगूर्ध्वमंधश्शायी रश्मयं स्तस्य संतंता॥



संतापर्यित स्वं देहमापांदतल्मस्तंकः। तस्य मध्ये विह्निशिखा ग्रुगीयोध्वां व्यवस्थितः॥
नीलतोयदंमध्यस्थाद्विद्युल्लेखेव भास्वंग। नीवार्शूकंवत्न्वी पीताभांस्वत्यगूपंमा॥
तस्यां शिखाया मध्ये प्रमांत्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवःस हिर्म्से द्रस्सोक्षरः पर्मः स्वराट्॥
अ वगम्हाँ ग्रंसि सूर्य बळांदित्य महाँ ग्रंसि। महस्तें सतो महिमा पंनस्यते उद्धा देव महाँ ग्रंसि॥ (म्वेद = १०११) ग्राग् सूत्रम्
अ नाभ्यां ग्रासीदंतिरक्षं शीष्णों द्यौः समंवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथां लोकाँ ग्रंकल्पयन्। (म्वेद-१०.१४)
अ ग्राद्रां यः किर्गाों यृष्टिं सुवर्गां हेम्मालिनीम्। सूर्या हिरगमंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् ग्रावंह॥

(स्म्वेद-पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्) उस्परिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिण नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥ (देवपूजा-स्मृति संग्रह) अ स्प्तास्यां सन् परिधयुस्त्रिः स्प्तस्मिर्धः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वाना स्रबंधन् पुरुषं पृशुं॥ (म्मवेद १०.६०.१४) अ तां म् स्रावंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंगयं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वांन् विंदेयं पुरुषान्हम्॥ (म्मवेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। प्रदक्षिण नमस्कारान् समर्पयामि।
प्रसन्नार्घ्य—अप्रमाकराय विद्महें दिवाकराय धीमहि। तत्रों सूर्यः प्रचोदयात्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।)
सर्वोपचार पूजनम्—अछत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। ग्रांदोळिकामारोहयामि। ग्राश्वमारोहयामि।
समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवास्तानि धर्माशि प्रथमान्यांसन्। तेह नाकं महिमानंः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ (मानेद १०.१०.१६)

ॐ यः शुच्चिः प्रयंतो भूत्वा जुहुयांदाज्यमन्वंहम्। सूक्तं पंचदंशचं च श्रीकामः सत्तं जीपेत्।। (ऋग्वेद-पञ्चन मण्डलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। सवीपचार पूजां समर्पयामि।

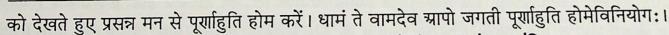
प्रार्थना— कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं,। रक्तं रक्तविभूषग्रध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्।। सप्ताश्चं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरे: प्रदक्षिग्राकरं सेवामहे भास्करम्।। ॐ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृते: स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायगायेति समर्पयामि॥ (भौराणिकम्)

ॐ ब्रह्मार्परां ब्रह्महिवः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मराा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।। (श्री भगवद्रीते)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। म्रनेन पूजनेन सपरिवारः श्री सूर्यः प्रीयताम्।

पूर्गाहुति — प्रतिदिन संक्षेप में पूर्गाहुति करनी चाहिये ग्रन्तिम दिन विशेष रूप से करनी चाहिये।

प्रतिदिन वाला पूर्णहिति—सुचि सुवेगा द्वादशवारं ग्राज्यं गृहीत्वा तस्यां सुवं ऊर्ध्विबलं निधाय पुनरधो बिलं निक्षिप्य सुवाग्रे कुसुमाक्षतान् निधाय सव्य पािंगा सुकूसुवमूले धृत्वा दिक्षगणािंगा सुक्सुवं शंखमुद्रया गृहीत्वाितष्ठन् समपाद ग्रजुकायः सुवाग्रे न्यास्त दृष्टिः प्रसन्नात्मना। सुवा से सुक में १२ बार घी डाले। सुक् के ऊपर सुवा को ऊपर मुख करके रखें, फिर उसे उल्टा करके सुक् के ऊपर रखें। सुवा के ग्रग्रमाग में पुष्प एवं ग्रक्षतों से पूजन करें। बायें हाथ से सुक् एवं सुवा के मूल को पकडकर, दाहिने हाथ से शंखमुद्रा से सुक एवं सुवा को पकडकर, सीधे खडे रहकर सुवा के ग्रग्रमाग



ॐ धामं ते विश्वं भुवंनम्धिश्चितम्तः संमुद्रे हृद्यंश्रेतरायुंषि। त्रुपाम नी के समिथेयत्राभृतरतमंश्याम् मधुंमंतंतऊर्मि स्वाहां॥ (ऋग्वेद ४.४०.११)

कहकर पूर्गाहुति डालें। ग्रद्भ्य इदं न मम। विज्योतिषेत्यस्य जारोवृशोग्निस्त्रिष्टुप्। पूर्गाहुति शेषाज्य होमे विनियोगः।

ॐ विज्योतिषाबृहता भार्त्यग्निराविर्विश्वांनिकृशाते महित्वा। प्रादेवीर्मायाः संहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षंसे विनिक्षे स्वाहां॥ (ऋषेद ५.२.६)

इतना कहकर सुक् में शेष घी का होम करें। ग्रग्नये इदं न मम। कहकर हाथ जोडें। विश्वेभ्यो देवेभ्य: स्वाहा। विश्वेभ्य: देवेभ्य इदं न मम। सुक् सुवा में शेष बचे घी का भी होम करें। यह संस्राव कहलता है। ग्रथावभृथस्थानीयं पूर्णपात्रजलेन मार्जनं कुर्यात्। ग्रवभृथस्त्रानं के जगह (बदले) पूर्णपात्र जल से मार्जन करें। पूर्वसादितं पूर्णपात्रं ग्रास्तीर्थे बर्हिषि दक्षिणपािशाना निधाय तत्र गङ्गादि पुग्यनदी: स्मरन् दक्षिण पािशाना स्पृशन्। उत्तर में स्थापित प्रणीतापात्र के जल से ग्रवभृथस्त्रानं के बदले में ग्रागे बिछाये बर्हिष (कुशाग्रों) के ऊपर रखकर दाहिने हाथ से उसे छूते हुए गङ्गादि पुग्यनदियों का स्मरण करते हुए मंत्र पाठ करें।

ॐ पूर्गामंसि पूर्गां में भूयाः सुपूर्गामंसि सुपुर्गां में भूयाः सदंसि सन्मेंभूयाः सर्वमिसर्वं मे भूयाः। ऋक्षितिरसि मामेक्षेष्ठाः॥ (यनुर्वेद)

इति जिपत्वा कुशाग्रै: प्रागादि पञ्चिदिक्षुजलं मंत्रै: यथालिङ्गं सिञ्चेत्। ग्रागे कहे जाने वाले मंत्रों से कहे जाने वाले दिशाग्रों में कुश के ग्रग्र भाग से जल प्रोक्षरा करें। प्राच्यां दिशि देवा सृत्विजों मार्जयन्ताम्। दक्षिंगास्यां दिशि मासाः पितरों मार्जयन्ताम्। अप उपस्पृस। (हाथ धो लें) प्रतीच्यां दिशि गृहाः पृशवों मार्जयन्ताम्। उदींच्यां दिश्याप् स्रोषंधयोवन्स्पतंयो मार्जयन्ताम्। अर्थविद्यां दिशि युज्ञः संवत्सरः प्रजापंतिर्मार्जयताम्। (यज्वेद)

इति एकश्रुत्या पठन् प्रतिदिशं सिक्त्वा कुशाग्रैः स्विशरिस मार्जयेत्। उपरोक्त मंत्रों को कहते हुए उन दिशाग्रों के सिञ्चन के साथ अपने पर भी सिञ्चन करें। ग्रापो ग्रस्मानित्यस्य देवश्रवा ग्रापस्त्रिष्टुप्। मार्जने विनियोगः।

ॐ ग्रापों ग्रस्मान्मातरंः शुंधयंतु घृतेनंनोघृत्प्वंः पुनंतु । विश्वं हिर्प्रिप्रवहीतदेवीरुदिदांभ्यः शुचिरापूतएंमि ॥

(स्रग्वेद १०.१७.१०)

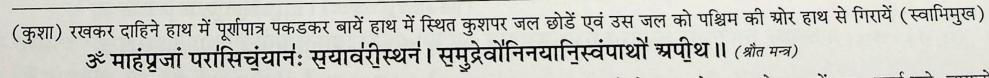
इदमापः सिंधुद्वीप आपोनुष्टुप्। मार्जने विनियोगः।

ॐ इदमांपुः प्रवंहत्यत्किञ्चंदुरितं मियं। यद्वाहमंभि दुद्रोह्य द्वांशे पउतानृतं॥ (ऋग्वेद १०.स. =)

सुमित्र्यान् ऋष् ऋषेधयः सन्तु। इत्येतैर्मत्रांते मार्जनं कृत्वा। उपरोक्त मंत्रों से मार्जन करें॥

दुर्मित्र्यास्तस्मैसंतु योस्मान्द्वेष्ट्रियं चंव्यं द्विष्मः। (यजुर्वेद-आरएयक)

इति निर्मृति देशे कुशाग्रै: ग्रप: सिञ्चेत्। उपरोक्त मंत्र को कहकर नैमृत्य में कुशाग्रभाग से जल प्रोक्षण करें। ततो ब्रह्मा यजमान वामपार्श्वेस्थित पत्न्यंजलौ तदभावे पूर्णपात्रस्थं जलं यजमान पव स्व वामपाणावुत्ताने बर्हिनिधाय तत्र दिक्षणपाणिना पूर्णपात्रं ग्रादाय जलं प्रत्यड़मुखं निषिच्य। इसके बाद ब्रह्मा यजमान के बायें पार्श्व में स्थित पत्नी के ग्रंजली में स्थित पूर्णपात्र के जल से दोनों का प्रोक्षण करें। यदि यजमान ग्रकेला हो तो बायें हाथ में बर्हिष्



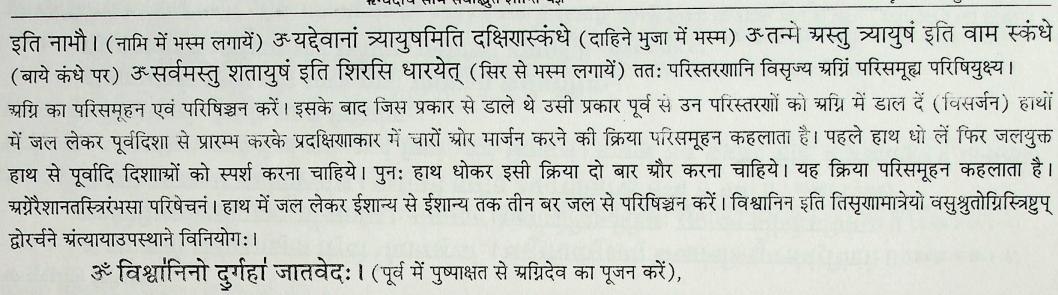
उपरोक्त मत्र कहते हुए पाप नाश के लिए नीचे गिरे जल को समुद्र में गया मानकर हाथ में बचे शेष जल से ग्रपना प्रोक्षण करें। तत: कर्ता ग्रग्ने: वायव्ये स्थित: संस्थाजपेन उपितष्ठेत। इसके बाद यजमान ग्रिग्न के वायव्य दिशा में खड़े होकर संस्था जप जो कि ग्रागे बताया जा रहा है, उससे हाथ जोडकर ग्रिग्न की प्रार्थना करें। ग्रग्नेत्वं न इति चतसृणां गौपायना लौपायनावाबंधु: सुबंधु: श्रुतबंधुर्विप्रबंधुश्च एकैकर्चा ग्रष्टिय:। ग्रिग्निवताट्छंद:। ग्रिग्निवतायोग:।

ॐ ऋग्नेत्वंनो ऋंतंमउतत्राता शिवो भंवावरूथ्यः। वस्ंरग्निर्वस्ंश्रवा ऋच्छांनिक्षद्युमत्तंमंर्यिदाः॥ (ऋग्वेद ४.२४.१-२) सनीबोधिश्रुधीहवं मुरुष्याग्रों ऋघायतः संमस्मात्। तंत्वांशोचिष्ठदीदिवः सुम्नायंनूनमींमहेसिर्विभ्यः॥ (ऋग्वेद ४.२४.३-४) ॐ चंमे स्वरंश्च मे युज्ञोपंतेनमंश्च। यत्तेंन्यूनं तस्मैत् उपंयुत्तेतिरिक्तं तस्मै ते नमः॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

म्रग्नये नमः। अस्वस्ति। श्रद्धां मेथां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियंबलं। म्रायुष्यं तेज म्रारोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ मानस्तोक इत्यस्य कुत्सोरुद्रोजगती। विभूति ग्रहरो विनियोगः।

ॐ मार्नस्तोके तर्नये मार्न ग्रायौ मानो गोषुमानो ग्रश्वेषुरीरिषः। वीरान्मानोरुद्व भामितोवंधीर्ह विष्मतः सदुमित्वां हवामहे॥ (ऋषेद १.११४.=)

इति स्नुव बिलपृष्ठेनैशानीगतां विभूतिं गृहीत्वा। उपरोक्त मंत्र पाठ करते हुए स्नुवा के बिल के पिछले हिस्से के ईशान भाग से भस्म (होम करें) को निकालें। अन्त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। (ललाटे में भस्म लगायें) अकश्यपस्य त्र्यायुषं इति कंठे। (कराठ में भस्म लगायें) अन्त्र्यस्य त्र्यायुषं



ॐ सिन्धुं ननावादुंरितातिंपर्षि। (ऋग्रेय में पूजन करें),

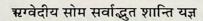
ॐ ऋग्ने ऋत्रिवन्नमंसागृशानः। (दक्षिरा में पूजन करें),

ॐ श्रूस्माकं बोध्यवितात्नृनां। (नैर्श्वत्य में पूजन करें),

ॐ यस्त्वांहृदाकोरिराामन्यंमानः। (पश्चिम में पूजन करें) (म्रावेद ४.४.६-१०-११),

अ ग्रमंत्युं मर्त्योजोहंवीमि। (वायव्य में पूजन करें),

ॐ जातंवेदोयशों ऋस्मासुंधेहि। (उत्तर में पूजन करें),



तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन

ॐ प्रजाभिरग्ने ऋमृत्त्वमंश्यां। (ईशान्य में पूजन करें),

ॐ यस्मैत्वं सुकृतें जातवेद उलोकंमग्नेकृरावंस्योनं। ऋश्विनं सपुत्रिरांवीरवंतं गोमंतं र्यिनंशते स्वस्ति॥ (ऋखेद ५.४.१०-११) इन मंत्रों को कहकर पूजन एवं नमस्कार करें।

ब्रह्मा को एवं ऋत्विजों को दक्षिणा देवें। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो होमिक्रयादिषु। न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ ब्रह्मापंगं ब्रह्महिव: ब्रह्माग्रो ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ अनेन सग्रहमख सूर्य: सर्वाद्धुतशान्ति होमकर्मणा सपिरवार: भगवान् सूर्य नारायण प्रीयताम्। यागमध्ये मंत्रतंत्र विपर्यासादि सर्वदोष पिरहारार्थं नामत्रय जपं किरिष्ये। अग्रच्युताय नमः। अग्रनंताय नमः। अगोविन्दाय नमः। अग्रवाय नमः। अग्यवय नमः। अग्रवाय नमः।

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न

षष्ठ दिन प्रथम प्रहर

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारगो विनियोगः।

ॐ येभ्यों मातामधुंमृत् पिन्वंते पर्यः पीयूषं द्यौरदिंतिरद्रिंबर्हाः।

उक्थशुंष्मान् वृषभ्रान्त्वप्रंस्ताँ म्रादित्याँ मर्नुमदास्वस्तये ॥ (सक्वेद १०.६३.३)

ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे युजैर्विधेम् नमंसा हिविभिः।

बृहंस्पते सुप्रजा वीरवंन्तो वयं स्यांम् पतंयो रयीगाम्॥ (सक्वेद ४.५०.६)

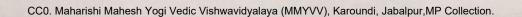
स्राचमन मन्त्र—स्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

म्रथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुरारोभ्यो नमः। म्रग्नये नमः। वायवे नमः। प्राराय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै

नमः। ऋन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मग्रो नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारराम्—पवित्रन्त इत्यनयोः म्राङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्ररो, धाररो विनियोगः।

ॐ प्वित्रंन्ते वितंतं ब्रह्मगस्पते प्रभुगित्रांिश् पर्येषि विश्वतः। ऋतंप्ततनूर्ने तदामो ऋंश्नुतेशृता सइद्वहंन्तस्तत् समांशत॥ (ऋवेद स. =३.१)





ॐ तपोष्प्वित्रं वितंतं द्विस्पृदे शोचंन्तो ग्रस्य तन्तंवो व्यंस्थिरन्। ग्रवंन्त्यस्य पवीतारं माशवों द्विस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतंसा॥ (मावेद स. =३.२)

अभूभुर्वः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये ग्रासन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।) प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म भृषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सिवृतुर्वरेगयं भर्गों देवस्यं धीमिह। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ ग्रापो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। (भग्वेद ३.६२.१०)

करन्यासः। ॐ त्रङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ग्रनामिकाभ्यां नमः। ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ग्रङ्गन्यास-हृदयादिन्यासः। ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट्। ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ग्रस्त्राय फट् ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्थः।

स्रासन शुद्धि—ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्ष्रा निवेशनी। यच्छां नः शर्मं सप्रथः।' (१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मराडल) इस मन्त्र से जल प्रोक्षरा करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोगित भक्षगो। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुगडे ह्यपराजिते॥ (ब्रह्मकर्म समुञ्जय) (इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प

अस्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारगस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षगस्य प्रगतपारिजातस्य ऋशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायगस्य अचित्यापरिमितिशक्त्या ध्रियमाशानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् अनेक कोटि ब्रह्माराडानाम् एकतमे अव्यक्त- महादहंकार - पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशाद्याव रशैरावृते ग्रस्मिन् महति ब्रह्माग्डखग्डे ग्राधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म शंखाद्यष्टमहानागैध्रियमारो ऐरावत-पुराडरीक-वामन-कुमुद-ग्रञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-सुप्रतीकाष्ट्रदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् ग्रतल-वितल-सुतल-तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकनामुपरिभागे भुवर्लीक-स्वर्लीक-महर्लीक -जनोलोक - तपोलोक - सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लीके चक्रवाल शैल - महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफर्शा राजशेषस्य सहस्रफगामिशामग्रडल मग्डिते दिग्दिन्तशुग्रडादगाडोद्दग्रिडतेग्रमरावत्यशोकवती भोगवती - सिद्धवती- गान्धर्ववती - काशी- काञ्ची - अवन्ती अलकावती यशोवतीतिपुरायपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलियते लवगोक्षु- सुरा सिर्प - दि धक्षीरोदकार्रावपरिवृते जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च - शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गन्धर्व-चारग्राभारतेतिनव-खरडमरिडते सुवर्गिगिरिकार्गिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्जाशत् कोटि योजनविस्तीर्गाभूमर डले ऋयोध्या मथुरा-माया-काशी-काञ्जी-स्रवन्तिकापुरी द्वारा वतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्थ्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिरो नवसहस्रयोजन विस्तीर्रो मलयाचल-सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्गाप्रस्थ-चगडप्रस्थ-चान्द्र-सूक्तावान्तक-रमग्रक महारमग्रक-पाञ्चजन्य-सिंहल लंङ्केति-नवखराडमरिरडते गंगा-भागीरथी-गोदावरी- क्षिप्रा-यमुना- सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा-कावेरी-पयोष्णी-कृष्णवेशी-भीमरथी-तुंगभद्रा-ताम्रपर्गी- विशालाक्षी- चर्मरावती-वेत्रवती- कौशिकी-गराडकी- विश्वामित्रीसरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुरायनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखराडे जम्बृद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ ऋार्यावर्तान्तरगते ब्रह्मावर्तेकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्गोक्षेत्रे,ज्ञानयुगप्रवर्तकानां महर्षि

षष्ठ दिः

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः। म्राचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ (श्रृङ्गेरी मठीय म्राचार्य प्रार्थनम्)

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नम:। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ ऋपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।। (ब्रह्मकर्म समुञ्चय-ग्रासन विधि प्रकरण)

ॐ ऋपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्मं समारभे॥ (ब्रह्मकर्म समुञ्चय-ग्रासन विधि प्रकरण)

ॐ तीक्ष्यादंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं ऋनुज्ञां दातुमईसि॥ (ब्रह्मकर्म समुज्ञय)

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गरापित प्रार्थना — गरानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषि:। गरापितर्देवता। जगती छन्दः। गरापित प्रार्थने विनियोगः।

अ ग्राानांन्त्वा ग्रापितं हवामहे कृविं कंवीनाम्पूपमश्रवस्तमं। ज्येष्ठराजं ब्रह्मंशां ब्रह्मशास्पत् मानंः शृरावन्नतिभिः सीदुसादंनम्॥ (भग्वेद २.२३.१)

(इन मन्त्रों से गरापित प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

त्रिवाक्येशा पुरायाह वाचन—

ॐ भुद्रं कर्गोभिः शृगायामदेवा भुद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजत्राः।

स्थिरेरंगैस्तुष्ट्रवांसंस्तुन्भिर्व्यशेमद्वेवहिंतुं यदायुंः। (मण्वेद १. = £. =)

ॐ द्रविगोदाँ द्रविंगासस्तुरस्यं द्रविगोदाः सन्रस्य प्रयंसत्।

द्वविशोदावीरवंतीमिषंनोद्रविशोदारांसतेदीर्घमायुः॥ (मार्वेद १. ६६. =)

ॐ सवितापश्चातांत्सवितापुरस्तांत्सवितोत्तरात्तांत्सविता धरात्तांत्। सवितानः सुवतु सर्वतांतिं सवितानोरासतां दीर्घमार्यः॥ (भावेद १०.३६.१४)



ॐ नवों नवो भवति जायंमानोह्नांकेतुरुषसांमेत्यग्रम्। भागं देवेभ्यो विदंधात्यायन्प्रचंन्द्रमांस्तिरते दीर्घमार्युः॥ (ऋषेद १०. ६५.१६)

ॐ उच्चाद्विव दक्षिंगावंतो ऋस्थुर्येऋंश्वदाः स्हतेसूर्येगा। हिर्गयुदा ऋंमृतृत्वं भंजंतेवासोदाः सोम्प्रतिंरन्त ऋायुंः॥

(मृग्वेद ६.६५.६)

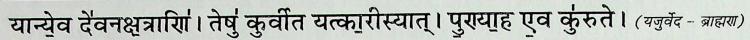
ॐ म्रापंउंदंतु जीव सें दीर्घायुत्वाय् वर्चंसे। सस्त्वाहृदा कीरिशामन्यमानो मंत्युं मर्त्योजोहंवीमि॥

(यजुर्वेद १ काराड-२ प्रश्न-१ ग्रनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ जातंवेदोयशो ग्रस्मासुं धेहि प्रजाभिरग्ने ग्रमृत्त्वमंश्याम्। यस्मैत्वं सुकृते जातवेद उलोकमंग्ने कृरावंस्योनम्। ग्रुश्चिनुं सपुत्रिर्गां वी्रवंतुं गोमंतंर्यिनंशते स्वस्ति। संत्वां सिञ्चाम् यजुषा प्रजामायुर्धनं च॥

(यजुर्वेद १ काराड-६ प्रश्न-१ ग्रनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ उद्गतिवंशकुनेसामंगायसि ब्रह्मपुत्र इंव् सवंनेषु शंसिस। वृषेव वाजीशिशुंमतीरपीत्यां सर्वतीनः शकुनेभ्द्रमावंद विश्वतीनः शकुनेपुर्य मावंद। (स्मेवद २.४२.२) याज्ययायजितप्रत्तिवेयाज्यापुरायैवलक्ष्मीः पुरायामेवतल्लक्ष्मीं संभावयित पुरायां लक्ष्मीं संस्कुरुते। यत्पुरायं नक्ष्मं । तद्वट्कुंवीं तोपव्युषं। यदावसूर्यं उदेतिं। ऋथ् नक्ष्मंत्रंनैतिं। यावंति तत्र सूर्यो गच्छेत्। यत्रं जघुन्यं पश्येत्। तावंतिकुवींतयत्कारीस्यात्। पुरायाह एव कुंरुते। तानि वा एतानिं यमनक्षत्रार्शि।



सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय ग्राशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणासूर्याद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः पुणयाहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिवंदेत्। (यजमान ग्रपने सकुटुम्ब प्रणाम करते हुए ग्राज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुणयाह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मण तीन बार देते हैं।)

१. अपुरायाहं भवन्तो ब्रुवन्तु। अग्रस्तु पुरायाहम्। २. अपुरायाहं भवन्तो ब्रुवन्तु। अग्रस्तु पुरायाहम्। ३. अपुरायाहं भवन्तो ब्रुवन्तु। अग्रस्तु पुरायाहम्। अस्तु पुरायाहम्याहम्। अस्तु पुरायाहम्। अस्तु पुरायाहम्याहम्। अस्तु पुरायाहम्। अस्तु पुरायाहम्याहम्। अस्तु पुरायाहम्। अस्तु पुरायाहम्। अस्तु पुरायाहम्। अस्तु प

बृहस्पतिं सर्वगरां स्वस्तये स्वस्तयं आदित्या सो भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद ४.४१.१२)

स्रादित्य उदयनीयः पथ्यैवेतः स्वस्त्याप्रयंतिपश्यांस्वस्तिमभ्युद्यंतिस्वस्त्येवेतः प्रयंतिस्वस्त्युद्यंति स्वस्त्युद्यंति ॥ (स्रात संग्रह)

ॐ स्वुस्तिन् इन्दोंवृद्धश्रंवाःस्वुस्ति नंः पूषा विश्ववेदाः। स्वुस्तिन्स्ताक्ष्यीं ऋरिष्टनेमिःस्वुस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।

(मृग्वेद १.८८.६)

ॐ ऋष्टौ देवा वसंवः सोम्यासंः ॥ चतंस्रोदेवीरम्रजराश्रविष्ठाः । ते युज्ञं पांतु रर्जसः पुरस्तात्। संवृतस्रीराम्मृतँ स्वृस्ति।

(यजुर्वेद - ब्राह्मरा)

इसके बाद नीचे लिखा वाक्य का तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय ग्राशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणासू र्याद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐग्रायुष्मते स्वित्ति। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुनः पहले जैसे उत्तर कलश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा–थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।



ॐ ऋध्याम्स्तोमं सनुयाम्वाज्मानो मंत्रं स्रथे होपंयांतं।
यशोनपृक्कं मधुगोष्वंतराभूतांशों ऋश्विनोः कामंमप्राः॥ (ऋवेद १०.१०६.११)
सर्वामृद्धिमृधुयामितितं वैतेजसैवपुरस्तात् पर्यभवच्छन्दोभिर्मध्यतोक्षरै
रुपरिष्टाद्गायत्र्या सर्वतो द्वादशाहंपरिभूयसर्वामृद्धिमार्धोत्सर्वामृद्धिमृधोति य एवं वेद॥
ऋध्यास्महिव्यैर्नमंसोपसद्यं॥ मित्रं देवं मित्र्धेयंनो ऋस्तु॥ ऋनूराधान् हिवषांवर्धयंतः।
श्तंजीवेमश्रदः सर्वीराः। त्रीर्शि-त्रीशि वे देवानांमृद्धानिं।
त्रीशिच्छन्दाः सित्रीशि सर्वनानि त्रयं इमे लोकाः। ऋध्यामेवतद्वीर्यं एषु लोकेषु प्रतितिष्ठति॥ (यनुर्वेद - ब्राह्मण)

इसके बाद पुन: नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनात्रमस्कुर्वाणाय ग्राशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्य माणसूर्याद्भुतशान्त्याख्याय कर्मण: ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

(ब्राह्मग्रा कहते हैं)—3-ऋध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद मन्त्र पाठ करते हुए उत्तरकलश से नीचे रखे पात्र में जल छोड़ना चाहिये।

ॐ श्रिये जातः श्रियऽग्रानिरियाय् श्रियंवयों जरितृभ्यों दधाति। श्रियं वसाना ग्रमृत्त्वमायन् भवंतिस्त्यासंमिथामितद्रौ ॥ (मानेद १.१४.४) श्रिय एवैनं तिच्छ्रयामादधाति संततमृचा वषट् कृत्यं संतत्यैसंधीयते प्रजया पशुभिर्यएवं वेद। यस्मिन्ब्रह्माभ्यजयु त्सर्वमेतत्॥ श्रमुञ्जलोकमिद्मूं चसंवें॥ तन्नो नक्षंत्रमिमिजिद्विजित्यं॥ श्रियं दधात्वहंगीयमानं ॥ ऋहें बुध्निय मंत्रंमे गोपाय। यमृषंयस्त्रयीविदाविदुः॥ ऋचुः सामानि यजूं षि। सा हि श्रीरमृतांसतां। (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

इसके बाद पुन: नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनात्रमस्कुर्वाणाय ग्राशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण सूर्याद्मुतशान्त्याख्याय कर्मण: श्रीरिस्त्वित भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐग्रस्तु श्री:। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं परि पूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मण ग्राशीर्वाद देते हैं—सौ साल पूर्ण हो। ग्राप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता ग्राप पर प्रसन्न हो।)

ॐ शुक्रेभिरंगैरजं स्नातत्न्वान् क्रतुं पुनानः क्विभिः प्वित्रैः।

शोचिर्वसानः पर्यायुर्पां श्रियोंमिमीते बृहुतीरनूनाः॥ (भ्रावेद ३.१.४)

तदप्येषः श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे ॥ स्नाविक्षितस्य कामप्रेः विश्वेदेवाः सभासद् इति॥

पुरायाह वाचन फल समृद्धिरस्तु—पुरायाहे कर्माङ्ग देवता प्रीयन्ताम्।

मातृका पूजनम् — पान सुपारी दक्षिणा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका आवाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये। नान्दी मणडल के आगे मातृका पूजन करना चाहिये।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णावी तथा। वाराही तथेन्द्राग्गी चामुगडाः सप्तमातरः॥ (ब्रह्मकर्म समुच्य)

सात मातृकायें।



गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

धृतिः पुष्ठिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः (गौर्यादि षोडश मातृकार्ये)। ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः ग्रावाह्यामि। विनायकं ग्रावाह्यामि। दुर्गा ग्रावाह्यामि। क्षेत्रपालं ग्रावाह्यामि। ग्रापतिं ग्रावाह्यामि। मातृस्वसारं ग्रावाह्यामि। पितृस्वसारं ग्रावाह्यामि। एताभ्यो देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। इनका षोडशोपचार पूजन करना याह्ये। उदाहरगा—ग्रावाहित देवताभ्यो नमः। ग्रासनं समर्पयामि ग्रादि। षोडशोपचार पूजन संक्षेप में करें। (गगोश पूजन में है।)

म्रन्त में पुष्पांजिल मन्त्र—ॐ गौरींर्मिमाय सल्लिलानितक्षत्येकंपदीद्विपदी सा चतुंष्पदी। मृष्टापंदी नवंपदीबभूवुषीं सहस्त्रांक्षराप्रमेव्योंमन्।। (मानेद १.१६४.४१)

अभूभुर्वः स्वः त्रावाहित देवताभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

तदंस्तु मित्रावरुगा तदंग्ने शं योरूसमर्धिमुदमंस्तुशुस्तं। ऋशीमहिं गाधमुत प्रतिष्ठां नंमोदिवे बृंहते सादंनाय।। (ऋखेद ४.४७.७)

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तंतत्प्रतिष्ठि ततमयावाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पश्ँ्ह्रभते गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठाप्रतिष्ठा। इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढायें।

मातृका पूजन समाप्तम्

म्रावाहित देवनान्दी पूजन — देवनान्दी में मातृका पूजन म्रावश्यक नहीं है। यज्ञ,(म्रतिरुद्र, सहस्रचर्रेडी) रथोत्सव म्रादि सार्वजनिक म्राचरर्शों में देवनान्दी ही करना चाहिये। कुतुदक्षावुत्सवे तु। इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। म्रमूर्त्य। १. म्रिग्रिष्वात्ता, २. बर्हिषदः, ३. म्राज्यपाः, ४. सोमपाः

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाग्रा कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मगडल बनायें। दत्वातगडुलपूर्गापात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः। ताम्बूलादि सुदक्षिगान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्।। (लक्षण संहिता)

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, मादि दो मरहलों पर रखें।

ॐ त्रानों भुद्राः क्रतंवो यंतुविश्वतोदंब्थसो त्रपंरीता स उद्धिदंः। देवानो यथासदमिद्वधे त्रसन्न प्रांयुवोरक्षितारों दिवे दिवे। (मानेद १.=£.१)

ॐ क्रुतुदक्षसंज्ञवा विश्वेदेदेवाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वस्वः इयं च वृद्धिः। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। ऋग्निष्वाताः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

बिहिषदः पितृगरााः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मशाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। स्राज्यपाः पितृगरााः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मशाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। सोमपाः पितृगरााः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मशाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

ॐ क्रतुद्क्ष संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्मुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध म्रक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।ॐ ऋग्निष्वात्ताः पितृगगाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदं म्रासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्मुवः स्वः इयं



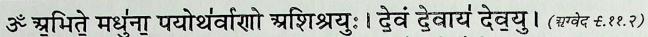
च वृद्धिः। गन्ध ग्रक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। बिहिषदः पितृगरााः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मरायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध ग्रक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ग्राज्यपाः पितृगरााः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मरायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, ग्रक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।

सोमपाः पितृगराः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मण्योः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्मूवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, ग्रक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथं में लेकर उस पर जल छोडें। अभूर्भुवः स्वः सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मगडल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिणादिशा के पात्र को ''इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः'' उत्तरिदशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्यः'' कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मणों को दे देवें।

क्रतुदक्षसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदिक्षणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दिक्षणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। अग्निष्वाः पितृगणाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदिक्षणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दिक्षणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। बिह्मिषदः पितृगणाः नान्दीमुखाः गुग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदिक्षणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दिक्षणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। आज्यपाः पितृगणाः नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदिक्षणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दिक्षणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये।

सोमपाः पितृगरााः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मरा भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिराकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिरा। पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। ग्रागे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

ॐ उपांस्मै गायता न्रः पर्वमानायेन्दंवे। ऋभिदेवाँऽइयंक्षते। (ऋग्वेद £.११.१)



ॐ स नंः पवस्व शंगवे शंजनांयुशमर्वते। शंरांजुन्नोषंधीभ्यः। (मग्वेद स.११.३)

अ बम्बेन् स्वतंवसेक् गायं दिविस्पृशें। सोमांय गाथमंचीत ॥ (गावेद £.११.४)

ॐ हस्तंच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावाधांवता मधुं॥ (शावेद ६.११.४)

ॐ ऋक्षुन्नेमी मदन्तृह्यवंप्रिया ऋंधूषत । ऋस्तोंषत् स्वभांनवो विप्रा नविष्ठया मृती यो जान्विन्द्र ते हरीं ॥ (ऋग्वेद १. =२.२)

अ प्रजापुतेनत्वदेतान्युन्यो विश्वांजातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों ऋस्तु वयं स्यांम्पतंयोरयी्गाम्॥

(मृग्वेद १०.१२१.१०)

कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलिसद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिगीं दक्षिगां दातुमहमुत्सृये। कहकर हाथ में दक्षिगा लेकर उस पर जल छोडकर नीचे रख दें।

प्रार्थना—ग्रिप्रिष्वात्वा बर्हिषदः ग्राज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्।। कहकर जल छोड़ें। ग्रनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। ग्राचम्य—मंगल तिलक रकें। विसर्जन—यज्ञ के ग्रन्तिम दिन विसर्जन करें।

ॐ इळांमग्नेपुरुदंसंस्निंगोः शंश्वत्तमं हवंमानायसाध। स्यान्नः सूनुस्तनंयो विजावाग्ने सातेंसुमृतिभूत्वस्मे॥ (भण्वेद ३.१५.७)

ॐ इळामुपह्वयते पशवो वा इळापशूनेवतदुपह्वयते। पशून्यजमानेदधाति दधाति॥ (ऋग्वेद ब्राह्मण)

यथाचारं हिररायेन भाराडवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घरटा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१ — ग्राचाय, एक कुगड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिण में १-इतर पूजन, पश्चिम में



१-तर्पण के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मण-कुल ५ पंगिडत रहने पर **१५ पग्डित से संपन्न कर्म में**—२-१५ प्रिडत कर्म में (एक कुग्रड में), २-१५ प्रिडत से संपन्न याग में—१ म्राचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण पूजन, १-परिचारक ब्राह्मण, £-मृत्विज होम के लिए

३-५५ परिडत से संपन्न याग में—१- ग्राचार्य (५ कुराड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्परा के लिए, १-परिचारक ब्राह्मरा, ४५-मृत्विज होम के लिए, ४-ग्रिग्नुख जानकार उप ग्राचार्य (£×५)

४-१०० परिडत से संपन्न या में—१-ग्राचार्य (६ कुराड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्परा के लिए, ४-परिचारक ब्राह्मरा, ८१-मृत्विज होम के लिए, ६-ग्रिगुख जानकार उपग्राचार्य (६×६), इसी ग्रनुपात में ग्रिधक संख्या में कर सकते हैं।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मशास्पते देव्यन्त्स्त्वेमहे। उप्प्रयंन्तु मुरुतः सुदानंव इन्द्रंप्राशूर्भवा सर्चा॥ (मानेद १.४०.१) ॐ ऋभ्यार्मिद द्रंयो निषिक्तं पुष्केरे मधुं। ऋवृतस्यं विसर्जने॥ (मानेद =.७२.११) यान्तु देवगशाः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्धयर्थं पुनरागमनाय च॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

(इन मन्त्रों से ग्रावाहित देवताग्रों को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समाप्त

ब्राह्मगा वन्दन— ॐ नमों मृहद्भ्यो नमों ऋर्भकेभ्यो नमो युर्वभ्यो नमं ऋशिनेभ्यः। यजाम देवान् यदि शक्कवाममाज्यायंसः शंसमा वृक्षि देवाः। सर्वभ्यो ब्राह्मगोभ्यो नमः॥ (ऋषेद २७.१३)

इस मन्त्र से ब्राह्मरा पूजा करें। ''करिष्यमारा कर्मरा: ग्रारम्भमुहूर्त: सुमुहुर्तो ग्रस्तु इति ग्रनुगृग्हन्तु''। यजमान पूछते है॥ ''सुमुहूर्तमस्तु''।

सर्वतोभद्र मराडल में देवता पूजनम्—मध्ये ब्रह्मारां, (मध्य में ब्रह्मा का ग्रावाहन करें।) ब्रह्मजज्ञानं वामदेवो ब्रह्मात्रिष्टुप् ब्राह्मावाहने विनियोगः।

ॐ ब्रह्मं जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचीवेन स्रांवः। सबुध्नियां उपमार्श्वस्यविष्ठाः सृतश्चयोन्मिसंतश्चविवः॥ (यजुर्वेद ४ कागड-२ प्रश्न-४ प्रमुवाक-४ पन्त्र)

ङभूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि। भो ब्रह्मन् इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। उत्तरे सोमं—(उत्तर में सोम का स्रावाहन करें।) स्राप्यायस्व गोतमः सोमोगायत्री सोमावाहने विनियोगः।

ॐ स्राप्यांयस्व समेंतुते विश्वतंःसोम्वृष्यं। भवावार्जस्यसङ्गुथे॥ (ऋग्वेद १.६१.१६)

अभूर्भुवः स्वः सोमय नमः। सोमं ग्रावाहयामि। भो सोम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहागा। वरदो भव। **ईशान्यं ईशानं—(** ईशान्य दिशा में ईशन का ग्रावाहन करें।) ग्राभित्वा शुनः शेप ईशानो गायत्री ईशानावाहने विनियोगः।

ॐ ऋभित्वां देव सवित्रीशांनुं वायींगां। सदांवन्भागमीमहे॥ (मग्वेद १.२४.३)

ङभूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि। भो ईशान इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजा गृहारण वरदो भव। **पूर्वे इन्द्रं—(** पूर्व में इन्द्र का स्नावाहन करें।) इन्द्र वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री इन्द्रावाहने विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वत्स्परि हवांमहे जनेंभ्यः। त्रुस्माकंमस्तु केवंलः॥ (सम्वेद १.७.१०)

ॐभूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि। भो इन्द्र इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहारा। वरदो भव॥ **ऋगग्नेयामग्निः—(** ऋगग्ने दिशा में ऋग्नि का ऋगवाहन



करें।) ऋग्निं दूतं मेधातिथिरग्निर्गायत्री ऋग्न्यावाहने विनियोगः।

ॐ ऋग्निं दूतं वृशीमहे होतांरं विश्व वेंदसम्। ऋस्य य ज्ञस्यं सुक्रतुंं॥ (ऋग्वेद १.१२.१)

ङभूर्भुवः स्वः। ऋग्नेय नमः। ऋग्निमावाहयामि। भो ऋग्ने इहा गच्छ इह तिष्ठ। पूजां गृहागा। वरगो भव। दक्षिगो यमं—(दक्षिगा दिशा में यम का ऋवाहन करें।) यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् यमावाहने विनियोगः।

ॐ युमायु सोमं सुनुत युमायं जुहुता हुवि:। यमंहं युज्ञो गंच्छत्युग्नि दूंतो ऋरंकृत:॥ (ऋप्वेद १०.१४.१३)

ङभूर्भुवः स्वः यमाय नमः। यममावाहयामि। भो यम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहारा। वरदो भव (नैऋत्य दिशा में निर्ऋति को।) मोषुराः करावो निर्ऋतिर्गायत्री निर्ऋत्या वाहने विनियोगः॥

ॐ मोषुगाः परांपरा निर्मृतिंर्दुर्हगांवधीत्। पदीष्टतृष्णांयासह।। (भाषेद १.३८.६)

ङभूर्भुवः स्वः निर्म्यतये नमः। निर्म्यतिमावाहयामि। भो निम्यति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहारा। वरदो भव। पश्चिमे वरुरां—(पश्चिम दिशा में वरुरा का स्रावाहन करें।) तत्वायामि शुनःशेपो वरुरास्त्रिष्टुप् वरुरावाहने विनियोगः।

ॐ तत्वांयामि ब्रह्मंगा वन्दंमान्स्तदा शांस्ते यर्जमानो ह्विभिः। ऋहेळमानो वरुगोह बोध्युर्रुशं सुमान् श्रायुः प्रमोषीः॥ (ऋग्वेद १.२४.११)

उभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि। भो वरुण इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। वायव्यां वायुं—(वायव्य दिशा में वायु का ग्रावाहन करें।) वायोशतं वामदेवो वायुरनुष्टुप् वाय्वावाहने विनियोगः।

ॐ वायोशृतं हरींगां युवस्व पोष्यांगां। उतवांते सहस्त्रिगो रथुत्रायांतुपाजंसा। (मानेद ४.४=.४)

उभूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुमावाहयामि। भो वायो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहागा। वरदो भव। वायुसोममध्ये अष्टवसून्—वायु एवं सोम के बीच में अष्ठ वसुओं को (वायव्य एवं उत्तर के बीच में) ज्मया अत्र विसष्ठों वसवस्त्रिष्टुप् व स्वावाहने विनियोगः।

ॐ ज्य्या ऋत्र् वसंवो रन्तदेवाउरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभाः। स्रावीक्षथ उंरुजयः कृगुध्वं श्रोतांदूतस्यंज्ग्मुधीनो ऋस्य॥ (शाबेद ७.३६.३)

उभूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः। अष्टवसून् आवाहयामि। भो अष्टवसवः इहा गच्छ। इह तिष्ठतः। पूजां गृहाण। वरदो भवत। सोमेशानयोर्मध्ये एकादशमरुद्रान्—(सोमन एवं ईशान के बीच में एकादश रुद्रों का आवाहन करें।) (उत्तर एवं ईशान के बीच में) आरुद्रा सः श्यावाश्व एकादश रुद्रों जगती। एकादशरुद्रावाहने विनियोगः।

ॐ श्रार्त्रदास्इन्द्रंवन्तः सृजोषंस्रो हिरंगयरथाः सुवितायंगंतन। इयं वो श्रुस्मत्प्रतिंहर्यतेमृतितृष्णाजेन दिवउत्सांउदुन्यवें। (भावेद ५.५७.१)

उभूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः। एकादश रुद्रानावाहयामि। भो एकादशरुद्राः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। ईशानेन्द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान्—(ईशान्य एवं पूर्व के बीच में द्वादशादित्यों का म्रावाहन करें।) त्यांनुमत्स्योमान्योवा द्वादशादित्यागायत्री द्वादशादित्या-वाहने विनियोगः।

ॐ त्यांनुक्षित्रियाँ स्रवं स्नादित्यान्यांचिषामहे। सुमूळीकाँस्रभिष्टंये॥ (यनुवेद-२ काराड-१ प्रश्न-११ सनुवाक-१८ पत्र)

उभूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः। द्वादशादित्यानावाहयामि। भो द्वादशादित्याः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृऋीत। वरदो भवत। इन्द्राग्निमध्ये ऋश्विनौ—(पूर्वा एवं ऋग्निय के बीच में ऋश्विनी देवताऋगें को ऋगवाहन करें।) ऋश्विनावर्तिगीतमोश्विनावृष्णिक् ऋश्व्यावाहने विनियोगः। ॐ ऋश्विनावृर्तिरुस्मदागोमेद्दस्त्राहिरंगयवत्। ऋवीग्नश्चंसमंनसानियंच्छतं॥ (ऋग्वेद १.६२.१६)

षष्ठ दिन

ङभूर्मुवः स्वः ग्रिथिम्यां नमः। ग्रिथिनौ ग्रावाहयामि। भो ग्रिथिनौ इहा गच्छतं। इह तिष्ठतं पूजां गृषीतं। वरदौ भवतं। ग्रिग्नियम मध्ये विश्वेदेवान् सपैतृकान्—(ग्राग्नेय एवं दक्षिण के बीच में पितृसाहित विश्वेदेवों का ग्रावाहन करें।) ग्रोमासोमधुच्छंदाविश्वेदेवा गायत्री। विश्वेदेवावाहने विनियोगः। ॐ ग्रोमांसश्चर्षगीधृतोविश्वेदेवा सुग्रागंत। दाश्वांसोदाशुषं: सुतं॥ (भ्रावेद १.३.७)

ङभूर्भुवः स्वः विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः विश्वान् देवान् म्रावाहयामि। भो विश्वेदेवाः इहा गच्छत। इह तिष्ठंत पूजां गृग्शीत। वरदा भवत। यम निग्नितिमध्ये सप्तयक्षान्—(दक्षिण एवं नैमृत्य के बीच में सप्त यक्षों का म्रावाहन करें।) म्रिभित्यं वामदेवः सप्तयक्षा म्रष्टी। सप्तयक्षावहने विनियोगः।

ॐ ग्रुभित्यं देवं..संवितारंमो्गयोः क्विक्रंतुर्चीम सृत्यंसवस..रत्नुधाम्भिप्रियंम्तिमूर्ध्वा यस्यामित्भा ग्रदिंद्युत्त्सवींमिन्हिरंगयपागिरिममीत सुक्रतुः कृपासुवः॥ (यनुर्वेद-१ कागड-२ प्रश्न-६ ग्रनुवाक)

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान् म्रावाहयामि। भो सप्तयक्षाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृग्गीत। वरदा भवत। निर्मात वरुणा मध्ये भूतनागान्—(नैर्मात्य एवं पश्चिम के बीच में भुतगण एवं नागों का म्रावाहन करें।) म्रायङ्गो सार्पराज्ञी सर्पा गायत्री। सर्पावाहने विनियोगः। म्रायं गौः पृश्चिरक्रमीद संदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्तस्वः॥ (भ्रायेद १०.१ ६-६.१)

ङभूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः। सर्पान् ग्रावाहयामि। भो सर्पाः इहागच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। वरुणवायुमध्ये गंधवीप्सरसः—(पश्चिम एवं वायव्य के बीच में गन्धर्व एवं ग्रप्सराग्रों का ग्रावाहन करें।) ग्रप्सरसामृष्यशृङ्गोगंधर्वाप्सरसोनुष्टुप्। गन्धर्व ग्रप्सरावाहने विनियोगः।

ॐ म्रुप्सरसीं गन्धर्वांशां मृगाशां चरंशोचरंन्। केशीकेतंस्य विद्वान्त्सर्वास्वादुर्मेदिन्तंमः॥ (मण्वेद १.१६३.६)

ङभूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। गन्धर्वाप्सरस स्रावाहयामि। भो गन्धवाप्सरसः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत।

ब्रह्म सोममध्ये स्कन्दं नन्दीश्वरं शूलं महाकालं च

(मध्ये में स्थित ब्रह्मा एवं सोम (उत्तर) के मध्य में स्कन्द नन्दीश्वर शूल एवं महाकाल का स्नावाहन करें।) यदक्रंदो दीर्घतमास्कंदिस्त्रष्टुप्। स्कंदावाहने विनियोगः। ॐ यदक्रंदः प्रथमं जायंमान उद्यन्समंमुद्रादुतवा पुरीषात्। इयेनस्यंपक्षा हिरिशास्यं बाह् उपस्तृत्यं महिजातंतं स्रर्वन्।। (श्लवेद १.१६३.१)

ङभूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः। स्कन्दमावाहयामि। भो स्कन्द इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहारा। वरदो भव। ऋषभमृषमो नन्दीश्वरोनुष्टुप्। नन्दीश्वरावाहने विनियोगः।

ॐ ऋषुभं मांसमानानां सपत्नांनां विषासृहिं। हुंतारं शत्रूंशां कृधि विराजं गोपंतिं गवां।। (ऋग्वेद १०.१६६.१)

ङभूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वरं त्रावाहयामि। भो नंदीश्वर इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहारा। वरदो भव। कद्रुद्राय घौरः करवः शूलो गायत्री शूलावाहने विनियोगः।

ॐ कहुद्राय प्रचेतसेमीहळुष्टमायतव्यंसे। वोचेमुशतंमंहदे॥ (मानेद १.४३.१)

उभूर्भुवः स्वः शूलायनमः शूलमावाहयामि । भो शूल इहा गच्छ । इह तिष्ठ पूजां गृहारा । वरदो भव । कुमारं माता कुमारी महाकालस्त्रिष्टुप् । महाकालावाहने विनियोगः ।

ॐ कुमारं मातायुंवृतिः समुंब्ध्ङ्कृहांबिभर्ति न दंदातिपित्रे। ऋनीकमस्य निम्नजनांसः पुरः पंश्यंति निहितम्रतौ॥ (सम्बेद ४.२.१)

उभूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः। महाकालमावाहयामि। भो महाकाल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूहां गृहाण। वरदो भव। ब्रह्मेशानमध्ये दक्षं—(बीच में विद्यमान ब्रह्मा एवं ईशान्य दिशा के बीच में दक्ष का स्रावाहन करें।) स्रदिति ब्रह्मित विद्यमान ब्रह्मा एवं ईशान्य दिशा के बीच में दक्ष का स्रावाहन करें।) स्रदिति ब्रह्मित विद्या स्वावाहन वित्योगः।

अस्रिति विद्यानिष्टदक्षयाद्वितातवं। तां देवा स्वन्वंजायन्त भद्रा स्वमृतंबंधवः॥ (स्रवेद १०.७२.४)



षष्ठ दिन

उभूर्भुवः स्वः दक्षाय नमः। दक्षमावाहयामि। भो दक्ष इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहारा। वरदो भव। ब्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गां विष्णुं च (ब्रह्मा एवं इन्द्र के बीच में ग्रथीत् बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पूर्व के बीच में दुर्गा एवं विष्णु का ग्रावाहन करें।) तामग्रिवर्गां सौभरिदुर्गात्रिष्टुप्। दुर्गावाहने विनियोगः।

ॐ ताम्ग्रिवंरार्षं तपंसाज्वलंतीं वैरोचनीं कंर्मफलेषुजुष्टां। दुर्गां देवीं शरंरामृहंप्रंपद्ये सुतरंसितरसे नर्मः॥ (यजुर्वेद-दुर्गासूक)

ॐ पूर्मुवः स्वः दुर्गायै नमः। दुर्गां स्रावाहयामि। भो दुर्गे इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहारा। वरदा भव। इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुगायत्री। विष्णवावाहने विनियोगः। ॐ इदं विष्णुं विचंक्रमेत्रेधानिदंधेपुदं। समूह्लमस्य पांसुरे॥ (ऋग्वेद १.२२.१७)

उभूर्भुवः स्वः विष्णवेनमः। विष्णुं ग्रावाहयामि। भो विष्णो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहागा। वरदो भव। ग्रह्माग्नि मध्ये स्वधां (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं ग्राग्नेय दिशा के बीच में स्वधा को) उदीरतां शंखः स्वधा त्रिष्टुप्। स्वधावाहने विनियोगः।

ॐ उदीरता मर्वरउत्परांस्उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। ऋसुंय ईयुरंवृकाऽऋंत्ज्ञास्तेनीवंतु पितरो हवेषु॥

(मृग्वेद १०.१५.१)

उभूर्भुवः वः स्वधायै नमः। स्वधामावाहयामि। भो स्वधे इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहागा। वरदा भव। **ब्रह्म यममध्ये मृत्युरोगान्**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं दक्षिगा दिशा के बीच में मृत्यु एवं रोगों का ग्रावाहन करें।) परं मृत्यो संकुसुकोमृत्युरोगास्त्रिष्टुप्। मृत्युरोगावाहने विनियोगः।

अ परं मृत्यो ऋनुपरेहिपंथांयस्तेस्व इतरोदेवयानांत्। चक्षुंष्मते शृरावतेते ब्रवीमिमानः प्रजारीरिषोमोत वीरान्।।

(मृग्वेद १०.१ ⊏.१)

अभूर्भवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः। मृत्यरोगान् स्रावाहयामि। भो मृत्युरोगाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। ब्रह्म निर्मृतिमध्ये गरापतिं (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं नैसृत्य दिशा के बीच में गरापित का स्रावाहन करें।) गरामान्त्वा शौनकोगृत्समदो गरापितर्जगती। गरापत्या वाहने विनियोगः। अध्यानात्वागुरापितं हवामहे कविं कवीनार्युपमश्रावस्तर्म।

ज्येष्ठराजंबहांगां ब्रह्मगास्पत् मानंः शृगवज्ञतिभिः सीद्सादंनं ॥ (भगवेद २.२३.१)

ङभूर्भुवः स्वः गरापतये नमः। गरापतिमावाहयामि। भो गरापति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहारा। वरदो भव। **ब्रह्मवरुरामध्ये ऋपः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पश्चिम दिशा के बीच में जल का स्नावाहन करें।) शंनोदेवीः सिंधुद्वीप स्नापो गायत्री। स्नप् स्नावाहने विनियोगः।

ॐ शंनोंदेवीर्मिष्टय स्रापों भवंतु पीतयें। शंयोर्भिस्त्रवतु नः ॥ (मावेद १०.६.४)

उभूर्भुवः स्वः ऋद्भयो नमः। ऋषः ऋवाहयामि। भो ऋषः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृऋीत। वरदा भवत। **ब्रह्मवायु**मध्ये **मरुतः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं वायव्य दिशा के बीच में मरुत् का ऋवाहन करें।) मरुतोयस्यगोतमो मरुतो गायत्री। मरुदावाहने विनियोगः

अ मर्ततोयस्य हि क्षयेपाथा दिवोविंमहसः। स सुंगोपातंमोजनः (मण्वेद १. =६.१)

उभूर्भुवः स्वः मरुद्धयो नमः। मरुतः ग्रावाहयामि। भो मरुतः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहगीत। वरदा भवत। ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः पृथिवीं (बीच में स्थित ब्रह्मा जी के नीचे पादमूल में पृथिवी का ग्रावाहन करें।) स्योना पृथिवी मेधातिथिर्भूमिर्गायत्री। भूम्यावाहने विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षुरानिवेशंनी। यच्छानः शर्मं सुप्रर्थः॥ (मावेद १.२२.१४)

उभूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः। भूमिं ग्रावाहयामि। भो भूमे इहा गच्छा। इह तिष्ठ। पूजां गृहाग्रा। वरदा भव। **तत्रैव गङ्गादिसर्वनद्यः**—(उसी स्थान पर ग्रर्थात पृथिवी पर ही गङ्गादि सभी नदियों का ग्रावाहन करें।) इमं मे गङ्गे सिंधुक्षित्प्रैयमेधानद्यो जगती। गङ्गादिनद्यावाहने विनियोगः।

षष्ठ दिन

ॐ इमं में गङ्गेयमुनेसरस्वित्शुतुंद्विस्तोमं सचताप्रुष्या। ऋसिक्यामं रुद्वधेवितस्त्या जींकीयेशृशाुह्या सुषोमंया॥

(मृग्वेद १०.७५.५)

अभूर्भुवः स्वः गङ्गादि नदीभ्यो नमः। गङ्गादि नदीः स्रावाहयामि। भो गङ्गादिनद्यः इहागच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहगीतां। वरदा भवत। तत्रैव सप्तसागराः। (वहीं पर सात सागरों का स्रावाहन करें।) धाम्रो धाम्रो वामदेवः सप्तसागरा स्रष्टी। सप्त सागरावाहने विनियोगः।

ॐ धाम्नों धाम्नो राजन्नितो वंरुगानोमुञ्च। यदापो ऋध्न्या इति वरुगोतिशपामहेततो वरुगानोमुञ्च। मियवापोमोषधीहिं सीरतों विश्वव्यंचा भूस्त्वेतों वरुगानो मुञ्च॥ (यनुर्वेद-१ काण्ड-३ प्रश्न-११ मन्त्र)

उभूर्मुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः। सप्तसागरान् ग्रावाहयामि। भो सप्तसागराः इहागच्छत। इह तिष्ठतः। पूहां गृहग्रीत। वरदा भवत। तदुपिर मेरवे नमः। मेरं ग्रावाहयामि। (उसके ऊपर मेरु पर्वत का ग्रावाहन करें।) (भूमि पर) सोमसमीपे गदायै नमः। गदां ग्रावाहयामि। (सोम के पास (उत्तर) गदा का ग्रावाहन करें।) ईशान समीपेत्रिशूलाय नमः। त्रिशूलं ग्रावाहयामि।। (ईशान के पास ईशान में त्रिशूल का ग्रावाहन करें।) इन्द्रसमीपे वज्राय नमः। वज्रं ग्रावाहयामि। (इन्द्र के पास पूर्व में वज्र का ग्रावाहन करें।) ग्रिप्र समीपे शक्तये नमः। शिक्तं ग्रावाहयामि। (ग्रिप्र के पास ग्राग्रेय में शिक्त का ग्रावाहन करें।) यम समीपे दराडाय नमः। दराड ग्रावाहयामि। (यम के पास दक्षिण में दराड का ग्रावाहन करें।) निर्मृति समीपे खड्गय नमः। खड्गमावाहयामि। (निर्मृति के पास नैमृत्य के खड्ग का ग्रावाहन करें।) वरुण समीपे पाशाय नमः। पाशं ग्रावाहयामि। (वरुण के पास पश्चिम में पाश का ग्रावाहन करें।) वायु समीपे ग्रंकुशाय नमः। ग्रंकुशं ग्रावाहयामि। (वायु के पास वायव्य दिशा में ग्रंकुश का ग्रावाहन करें।)

तद्वाहये उत्तरादि क्रमेरा (मराइल के बाहर) गौतमाय नमः। गौतमं म्रावाहयामि। (उत्तर में गौतम जी का म्रावाहन करें।) भारद्वाजाय नमः। भरद्वाजं म्रावाहयामि। (ईशान में भरद्वाज जी का म्रावाहन करें।) विश्वामित्राय नमः। विश्वामित्रं म्रावाहयामि। (पूर्व में विश्वामित्र जी का म्रावाहन करें।) कश्यपाय

षष्ट्र दिन

नमः। कश्यपं ऋवाहयामि। (ऋग्रोय में ऋश्यप जी का ऋवाहन करें।) जमदग्रये नमः। जमदग्रिं ऋवाहयामि। (दक्षिरा में जमदग्रि जी का ऋवाहन करें।) वसिष्ठाय नमः। वसिष्ठं ग्रावाह्यामि। (नैर्ग्यत्य में वसिष्ठ जी का ग्रावाहन करें।) ग्रत्रये नमः। ग्रत्रिं ग्रावाह्यामि। (पश्चिम में ग्रत्रि जी का ग्रावाहन करें।) ग्ररुंधत्यै नमः। ग्ररुंधतीं ग्रावाहवामि। (वायव्ये में ग्ररुंधति जी का जावाहन करें।) ततः पूर्वीद क्रमेश मातृः। (पूर्वीद क्रम से मराडल के बाहर मातृगर्शों का स्रावाहन करें।) ऐंद्र्ये नमः। ऐन्द्रीं स्रावाहयामि। (पूर्व में ऐन्द्री का स्रावाहन करें।) कौमार्ये नमः। कौमारी स्रावाहयामि। (स्राग्नेय में कौमारी का ग्रावाहन करें।) ब्राह्यै नमः। ब्राह्मीं ग्रावाहयामि। (दिक्षिरा में ब्राह्मी का ग्रावाहन करें।) वाराह्यै नमः। वाराहीं ग्रावाहयामि। (नैर्ग्यत्य में वाराही का म्रावाहन करें।) चामुगडायै नम:। चामुगडां म्रावाहयामि। (पश्चिम में चामुगडा का म्रावाहन करें।) वैष्णव्यै नम: वैष्णवीं म्रावाहयामि। (वायव्य में वैष्णवी का मावाहन करें।) वैनायक्ये नमः वैनायकीं मावाहयामि। (ईशान्य में वैनायकी का मावाहन करें।) इति सर्वतो मद्र देवता:। (यहाँ पर सर्वतो मद्रमण्डल में विद्यमान सभी देवताओं का ऋवाहन संपन्न हुआ।)

ॐ तदंस्तु मित्रावरुशातदंग्रेशंयोर्स्मभ्यंमिदमंस्तु शुस्तं। खुशीमहिं गाधमुतप्रतिष्ठां नमों दिवे बृंहते सादंनाय॥

(मृग्वेद ५.४७.७)

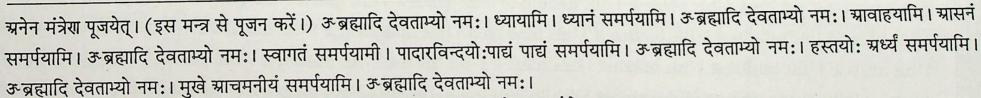
गृहावै प्रतिष्ठासूक्तं तत् प्रतिष्ठिततमया वाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँलभते गृहानेवै नानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा॥ ॐ नर्यप्रजां में गोपाय ।। श्रुमृत्त्वायं जीव सें ।। जातां जीनुष्यमांगां च ।। श्रुमृतें सृत्वे प्रतिष्ठितां ।। (यनुर्वेद-ब्राह्मग)

एता: ब्रह्मादि देवता: सुप्रतिष्ठिता: सन्तु। (इन मन्त्रों को कहकर म्रावाहित ब्रह्मादि देवताम्रों का प्रतिष्ठा करें।)

ॐ ब्रह्मंजज्ञानं प्रंथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचीवेन स्रावः। सुबुधियां उपमा स्रंस्य विष्ठाः सृतश्च

योनिमसंतश्चिवंः॥ (यजुर्वेद-४ काराड-२ प्रश्न- मनुवाक-४ मन्त्र)

षष्ठ दिन



ॐ ग्रापोिहिष्ठा मयोभुवः तानं ऊर्जे दंधातन। महेरगांय चक्षंसे॥ यो वं: शिवतंमोरस्स्तस्यं भाजयते हनं:। उशातीरिंव मातरं:॥ तस्मा ग्ररंगमामवो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। ग्रापोंजनयंथा च नः॥ (मार्वेद १०.ई.१)

स्नानं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्नानाङ्ग स्नाचमनं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। अयुवं वस्त्रांशि पीवसा वंसाथे युवोरिच्छंद्रामन्तंवोहुसर्गाः। स्रवातिरत्मनृतान् विश्वं सृतेनं मित्रा वरुगा यचेथे॥

(मग्वेद १.१५२.१)

वस्त्रयुग्मं समर्पयामि। वस्त्रान्ते ग्राचमनं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

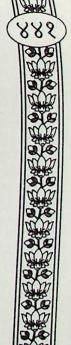
ॐ यज्ञीपवीतं परंमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। ऋायुंष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमंस्तु तेर्जः॥

(भृग्वेद)

यज्ञोपवीतं समर्पयामि । अन्ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ हिरंगयरूपः स हिरंगय संदृग्पान्नपात् सेदु हिरंगयवर्गाः । हिरगययात् परियोनेनिषद्यांहिरगय् दादंदुत्यन्नंमस्मै ॥

(मृग्वेद २.३४.१०)



ग्राभारगं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ गन्धं द्वारां दुंराध्रषां नित्यपुंष्टां करीषिशीं। ईश्वरीं सर्वीभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

गन्धं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ सर्चत् प्रार्चत् प्रियंमेधासो सर्चत । सर्चन्तु पुत्रका उतपुरः धृष्यवंर्चत ॥ (सप्तेद ६.६६. =)

ग्रक्षतान् समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ स्रायंने ते प्रांयरो दूर्वीरोहन्तु पुष्पिरगीः। हृदाश्चं पुराडरींकारिंग समुद्रस्य गृहा इमे। पुष्पारिंग समर्पयामि।

(सम्वेद १०,१४२. =)

नाम पूजां करिष्ये — ॐब्रह्मणे नमः। ॐसोमाय नमः। ॐईशानाय नमः। ॐइन्द्राय नमः। ॐम्रश्नेय नमः। ॐयमाय नमः। ॐनिर्म्यते नमः। ॐयसाय नमः। ॐविश्वेग्यो नेमः। ॐसप्तयक्षेग्यो नमः। ॐस्त्रयक्षेग्यो नमः। ॐस्त्रयक्षेग्यो नमः। ॐम्रतागेग्यो नमः। ॐगंधर्वाप्सरोग्यो नमः। ॐस्कन्दाय नमः। ॐनन्दीश्वराय नमः। ॐशूलाय नमः। ॐमहाकालाय नमः। ॐदुर्गाये नमः। ॐविष्णावे नमः। ॐस्वधाये नमः। ॐमृत्युरोगेग्यो नमः। ॐगणपतये नमः। ॐम्रद्भयो नमः। ॐम्रह्भये नमः। ॐगङ्गदि सर्वनदीग्यो नमः। ॐसप्त सागरेग्यो नमः। ॐमरेवे नमः। ॐगदाये नमः। ॐप्रशूलाय नमः। ॐवज्ञाय नमः। ॐशक्तये नमः। ॐद्रण्डाय नमः। ॐव्यङ्गाय नमः। ॐपाशाय नमः। ॐम्रंकुशाय नमः। ॐगौतमाय नमः। ॐभरद्वाजाय नमः। ॐविश्वामित्राय नमः। ॐक्रश्यपाय नमः। ॐजमदग्नये नमः। ॐविस्रष्टाय नमः। ॐम्रत्नये नमः। ॐविस्राय नमः। ॐम्रत्नये नमः। ॐविस्राय नमः। ॐच्रत्नये नमः। ॐविस्राय नमः। ॐच्रत्नये नमः। ॐविस्राय नमः। ॐच्रत्नये नमः। ॐविस्राय नमः।



षष्ठ दिन

वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढयः सुमनोहरः। स्राघ्नेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्।। धूपं स्राघ्नापयामि। (प्रयोगरताकर)

अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

त्राज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं विह्नना योजितं मया। गृहारा मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह।। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

दीपं दर्शयामि धूपदीपानन्तरं ग्राचमनं समर्पयामि। अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। (नैवेद्य को गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण करें नैवेद्य मण्डल पर रखें। सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि। इस मन्त्र से परिषिञ्चन करें।) ग्रमृतोपस्तरणमिस कहकर जल छोड़ें। अप्राणाय स्वाहा (ग्रङ्गुष्ठ एवं किनिष्ठिका मिलाकर) अग्रपानाय स्वाहा (ग्रङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर) अव्यानाय स्वाहा (ग्रङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर) अउदानाय स्वाहा (ग्रङ्गुष्ठ एवं ग्रनामिका मिलाकर) असमानाय स्वाहा (ग्रङ्गुष्ठ एवं निवेद्यामि। ग्रमृतापिधानमिस कहकर जल छोड़ें। नैवेद्यं विसर्जयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। ग्राइषं समर्पयामि। पुनराचमनं समर्पयामि। (कहकर जल छोड़ें) अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

पूगीफल समायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्रा कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यतां। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि।

(देवपूजा)

अब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ स्रर्चेत् प्रार्चेत् प्रियंमेधा सो स्रर्चेत्। स्रर्चेन्तु पुत्र का उत पुरं न धृष्णवर्चित। (स्रिवेद म.६६.म)
ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवापृथिवीध्रुवासः पर्वेता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजां विशामयम्।।
ॐ ध्रुवं ते राजा वर्रगो ध्रुवं देवो बृंहस्पितिः। ध्रुवं त् इन्द्रश्चाग्निश्चं राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्।। (स्रिवेद १०.१७३.४)

मङ्गलनीराजनं समर्पयामि। नीराजनान्ते परिमल पत्र पुष्पाणि समर्पयामि। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणं समर्पयामि। नमस्कारान् समर्पयामि। देवाराधनमराडलं सुरगणावासं सदामङ्गलं। कुर्तुः दर्शनमात्रतः शुभकरं तत् पञ्च भूतात्मकं॥ श्वर्णाद्यक्षरसंयुतं भवहरं तद् याग पुरायार्जितं। नानामन्त्रमयं समस्त फलदं ध्यायेन्मनोनन्दनं॥ श्वरिष्टानि बहून्यस्मिन् दुष्कृतानि शतानि च। भराडलानि निरीक्षन्ते यथा युद्धेषु कातराः॥ (मनुष्टान पद्धित)

(युद्ध भूमि में कायर जैसे देखते ही भीत हो जाते हैं, वैसे ही मगडल को देखते ही सभी ऋरिष्ट दूर हो जाते हैं।) ऋनया पूजया ब्रह्मादि मगडल देवता: प्रीयन्तां यहाँ पर सर्वतोभद्र मगडल पूजन संपन्न हुआ।

प्रधान देवता सूर्य षोडशोपचार पूजन

ध्यान — कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं,। रक्तं रक्तविभूषगाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्।। सप्ताश्चं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिगाकरं सेवामहे भास्करम्।। अ वृश्यः सूर्यम्रादित्यः। म्रावाहन-अ सहस्र्रंशीर्षा पुरुषः सहस्र्राक्षः सहस्र्रंपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यं तिष्ठद् दशांगुलम्।। (मानेद १०.६०.१) अ हिरंगयवर्गा हिरंगीं सुवर्गीरज्ञत स्रंजाम्। चन्द्रां हिरंगपंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो मु म्रावंह।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसूर्याय नमः। ग्रावाहयामि। ग्रावाहनं समर्पयामि।

म्रासनम्—ॐ पुरुष ए्वेदं सर्वं यद्भूतं यंच्य भव्यंम्। उतामृतत्वस्येशांनो यदन्नेना तिरोहं ति॥ (मावेद १०.६०.२) ॐ तां म् म्रावंह जातवेदो लुक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंग्यं विंन्देयं गामशृवं पुरुषान्हम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। ग्रासनं समर्पयामि।

पाद्यम् ॐ ए्तावांनस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुंषः। पादोंऽस्य विश्वांभूतानिं त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ (मावेद १०.६०.३) ॐ ऋश्वपूर्वा रंथम्ध्यां हस्तिनांद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपंहर्ये श्रीर्मी देवी जुंषताम्।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय ममः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ऋर्यं— ॐ त्रिपाद्र्ध्व उद्देत् पुरुष: पादों ऽस्येहा भंवत्पुनं:। ततो विश्वं व्यंक्रामत् साशनानश्ने ऋभि॥ (सप्वेद १०.६०.४) अ कां सोस्मितां हिर्रेगय प्राकारांमार्द्रां ज्वलेन्तीं तृप्तां तुर्पयंन्तीम्।

पद्मेस्थितां पद्मवंगां तामिहो पंह्नये श्रियंम्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्) असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः हस्तयोः ऋर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

म्राचमनम्—ॐ तस्मांद्विराळंजायत वि्राजो म्रधिपूरुंषः। स जातो म्रत्यंरिच्यत पृश्चाद् भूमिमथोंपुरः। (मानेद १०.६०.४) ॐ चुंद्रां प्रंभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुंष्टा मुदाराम्।

तां पुद्मिनीं शरंगामुहं प्रपंद्येऽलुक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृंगो ॥ (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। मुखे ग्राचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ स्राप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतं: सोम्वृष्णियं। भवावाजंस्य संगुथे। (सम्वेद १०.£१.१६)

उस्परिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पयः स्त्रानं समर्पयामि।

श्द्ध जल-ॐ सद्योजातं प्रंपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनाति भवे भवस्वमाम् भवोद्धवाय नमः॥

(यजुर्वेद-महानारायगोपनिपत् ग्रारायक)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दिध्काव्यों स्रकारिषं जिष्योरश्चंस्य वाजिनं:। सुरिभनोमुखां कर्त्प्रग् स्रायूंषितारिषत्॥ (मण्वेद ४.३६.६)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। दिध स्त्रानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वाम्देवाय नमों ज्येष्ठाय नमंश्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलंविकरणाय नमो बलंप्रमथनाय नम्सर्वभूतदमनाय नमों मुनोन्मनाय नमेः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-श्रारण्यक)

कः सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

धी— ॐ घृतं मिंमिक्षे घृतमंस्ययोनिंधृते श्रितो घृतं वंस्य धामं। ग्रुनुष्वधमावंह मादयंस्व स्वाहांकृतं वृषभवक्षि हृव्यम्।। (मण्वेद २.३.११) असपरिवाराय श्रीसूर्याय नयः। घृतस्तानं समर्पयामि।

शुद्ध जल-ॐ ऋघोरंभ्योऽथ् घोरंभ्यो घोर्घोरं तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्व्शर्वेभ्यो नर्मस्ते ऋस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

(यजुर्वेद-महानारायगोपनिषत्-ग्रारगयक)

उ-सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवातां ऋतायते मधुंक्षरंति सिंधंवः । माध्वींनीः संत्वोषंधीः ॥ मधुनक्तंमुतोषसो मधुंमृत् पार्थिवं रजीः । मधुद्यौरंस्तु नः पिता ॥ मधुंमान्नो वनस्पित्मधुंमाँ ऋस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवंतु नः ॥ (ऋम्बेद १.६०.६) असपरिवाराय

श्रीसूर्याय नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

षष्ठ दिन



शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुंषाय विदाहें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयांत्।। (यजुर्वेद-महानारायगोपनिषत्-मारायक)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पंवस्व दिव्याय जन्मंने स्वादुरिंद्रांय सुहवींतु नाम्ने । स्वादुर्मित्राय वर्रुं साय वायवे बृहस्पतंये मधुंमाँ स्रदांभ्यः ॥ (सप्वेद स. नर्रः ह)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वं विद्यानामीश्वरस्सर्वं भूतानां ब्रह्माधिंपतिर्ब्रह्मगोऽ धिंपतिर्ब्रह्मां शिवो में ऋस्तु सदाशिवोऽम्॥ (यजुर्वेद-महानारायगोपनिषत्-स्नारायक)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फुलिनी यां ऋंफुला ऋंपुष्पायाश्चं पुष्पिगीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानों मुञ्चन्त्वं हंसः॥ (मानेद १०.६७.१४)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ ग्रापोहिष्ठा मंयोभुवस्तानंऊर्जे दंधातन। मृहेरगांय चक्षंसे॥ यो वंः शिवतंमोरस्स्तस्य भाजयते हनंः।

उशातीरिव मातरं: ।। तस्मा ऋरंगमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ । ऋषों जुनयंथा च नः । (ऋखेद १०.ई.१-२-३)

ॐ कद्रुद्रायु प्रचेतसे मीळहुष्टंमायु तव्यंसे। वोचेम् शंतंमं हृदे॥ (ऋग्वेद १.४३.१)

ॐ यथां नो ऋदिंतिः कर्त्पश्चे नृभ्यो यथा गवें। यथां तोकायं रुद्रियंम्।। (भगवेद १.४३.२)

अ यथां नो मित्रो वर्रुगो यथां रुद्रश्चिकंति। यथा विश्वें स्जोषंसः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection



अ गाथपंतिं मेथपंतिं रुद्रं जलांषभेषजम्। तच्छुं योः सुम्रमींमहे॥

अ यः शुक्र इंव सूर्यो हिरंगयिमव रोचंते। श्रेष्ठों देवानां वसुंः।

अ शं नं कर्त्यर्व ते सुगं मेषायं मेष्ये। नृभ्यो नारिभ्यो गर्वे॥

ॐ ग्रुस्मे सोंम् श्रियमिध् नि धेहि श्तस्यं नृगाम्। महिश्रवंस्तुविनृम्गाम्।।

ॐ मार्नः सोमपरिबाधो मारांतयो जुहुरंत। स्रा नं इंदो वाजें भज।।

ॐ यास्ते प्रजा ऋमृतंस्य परंस्मिन्धार्मत्रृतस्यं। मूर्धा नाभां सोमवेन ऋा भूषंतीः सोम वेदः।। (ऋग्वेद १.४३.३-४-४-६-७----६)

ॐ नमः सोमाय च रुद्रायं च नमंस्ताम्रायं चारुगायं च नमः शंगायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों स्त्रग्रेव्धायं च दूरेव्धायं च नमों हन्त्रे च हनींयसे च नमों वृक्षेभ्यो हिरकेशेभ्यो नमंस्ताराय नमः शंभवें च मयोभवें च नमेः शंक्रायं च मयस्क्रायं च नमेः शिवायं च शिवतंराय च नम् स्तीर्थ्यायच कूल्यांय च नमेः पार्याय चावार्यायं च नमेः प्रतरंगाय चोत्तरंगाय च नमं स्नातार्याय चालाद्यांय च नम्शष्याय च फेन्यांय च नमेः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय

च । (यजुर्वेद-४ कागड-४ प्रश्ने- = अनुवाक)

ॐ तच्छ्योरावृंशीमहे। गातुं युज्ञायं। गातुं युज्ञ पंतये। दैवीं: स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नों ऋस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ (यनुर्वेद-आरश्यक) ॐ यत्पुरुषेशा हिवषां देवा युज्ञमतंन्वत। वृस्तितो ऋंस्यासीदार्ज्यं ग्रीष्म इध्मः शुरद्धिविः॥ (ऋवेद १०.६०,६) ॐ ऋदित्यवंशों तपुसोऽधिंजातो वनुस्पित्सतवं वृक्षोऽधं बिल्वः।

षष्ठ दिन

तस्य फलांनि तप्सा नुंदंतु मायांतरा याश्चं बाह्या श्रंलुक्ष्मीः। (स्रावेद पञ्चम मर्गडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ युवं वस्त्राशि पीवसार्वसाथे युवोरिच्छंद्रा मंतंवो हसर्गीः। त्रवातिरम्मनृतानि विश्वं ऋतेनं मित्रा वरुशा सचेथे॥ (ऋषेद १.१४२.१)

ॐ तं युज्ञं बुर्हिष् प्रौक्ष्मन् पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा ऋयजंत साध्या ऋषंयश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.६०.७)

ॐ उपैतु मां देवस्खः कोर्तिश्च मिर्गाना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं दतदातुं मे॥

(ऋग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं —ॐ यज्ञोपवीतं प्रमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरास्तात्। ऋायुष्यम्ग्रयं प्रतिमुञ्जशुभं यज्ञोपवीतं बलमंस्तु तेजः॥ ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पृशून्ताँ श्रुके वायुव्यानार्गयान् ग्राम्याश्च ये॥ (ऋषेद १०.६०.६)

ॐ क्षुत् पिपासामेलां ज्येष्ठामेल्क्ष्मीं नांशयाम्यहंम्। स्रभूतिमसंम्बिद्धं च सर्वान्निर्शुंद मे गृंहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

म्राभरगा—ॐ हिरंगयरूपः स हिरंगय संदृगपान्नपात् सेदु हिरंगयवर्गाः। हिर्गययात् परियोने र्निषद्यां हिरग्यदा दंदत्यन्नमस्मै॥

(मग्वेद २.३४.१०)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। ग्राभरगं समर्पयामि।

गन्ध— ॐ गंधं द्वारां दुंराध्वां नित्यपुंष्टां करीषिशींम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वेहुत् ऋचः सामानि जिज्ञरे। छन्दांसि जिज्ञरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत॥ (ऋग्वेद १०.६०.६) असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। गन्धं समर्पयामि।

यक्षत—ॐ स्रर्चत् प्रार्चत् प्रियंमेधासो स्रर्चत। स्रर्चन्तु पुत्रका उतपुरंत्र धृष्यवंर्चत ॥ (मण्वेद =.६६.=)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। ऋक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाशि—ॐ स्रायंने ते पुरायंशे दूर्वारोहंतु पुष्पिशीः। हृदाश्चं पुराडरींकाशि समुद्रस्यं गृहा इमे ॥ (ऋग्वेद १०.१४२.=)

ॐ तस्मादश्चां स्रजायन्तु ये के चों भ्यादंतः। गावोहजित्तिरे तस्मात् तस्माजाता स्रंजावयं:॥ (मावेद १०.६०.१०)

ॐ मनंसुः कामुमाकूंतिं वाचः सत्यमंशीमहि। पृशूनां रूपंमन्नस्य मियु श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

उस्परिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पुष्पारिष समर्पयामि।

प्रथमावररा पूजनम्— अहृदयाय नमः। ग्राग्नेय दिशि। अशिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। अशिखायै वषट् नमः। नैर्मृत्यां दिशि। अववचाय हुम् नमः। वायव्यां दिशि। अनेत्रत्रयाय वौषट् नमः। ग्रग्ने अग्रस्त्राय फट् नमः। ग्राग्नेयादि कोगोषु पूजयेत् (ग्रनुष्ठान पद्धति)। पूजन करे।

द्वितीयावरगा पूजनम्—ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐग्रग्रये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐयमाय प्रेताधिपतये कृष्णावर्णाय दगड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति

षष्ठ दिन

पार्षदाय नमः। ॐ निर्म्रतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खङ्ग हस्ताय नरवाहनाय सशिक्तकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सूर्यमूित पार्षदाय नमः। ॐ वरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशिक्तकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय सूर्यमूित पार्षदाय नमः। ॐ वायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय ग्रंकुश हस्ताय हिरणवाहनाय सशिक्त काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सूर्यमूित पार्षदाय नमः। ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय ग्रश्च वाहनाय सशिक्तकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सूर्यमूित पार्षदाय नमः। ॐ ईशानाय विद्याधिपतये स्फिटकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषम वाहनाय सशिक्तकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सूर्यमूित पार्षदाय नमः। ॐ ग्रनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शिक्ताकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सूर्यमूित पार्षदाय नमः। नैर्म्यत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में ग्रनन्त का पूजन करें। ॐ ब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पाशहस्ताय हं सवाहनाय सशिक्तकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपिरवाराय श्री सूर्यमूित पार्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। (अनुष्ठान पद्धित)

तृतीयावररापूजनम्— अवज्ञाय नमः। (पूर्व में) अशक्त्यै नमः। (ग्राग्नेय में) अदराडाय नमः। (दक्षिरा में) अखड्गाय नमः। (नैर्मृत्य) अपाशाय नमः। (पश्चिम में) अग्रंकुशाय नमः। (वायव्य में) अगदायै नमः। (उत्तर में) अत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) अचक्राय न मः। (पश्चिम नैर्मृत्य के बीच में) अपदाय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) (म्रुष्टान पद्धित)

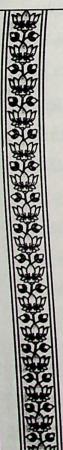
सूर्य ऋष्टोत्तर शतनाम पूजा

अन्नरुशाय नमः। अन्नरुशाय नमः। अन्नरुशायस सिन्धवे नमः। अन्नसमान बलाय नमः। अन्नार्तरक्षकाय नमः। अन्नादित्याय नमः। अन्नादित्याय नमः। अन्नादित्याय नमः। अन्नादित्याय नमः। अन्नादित्याय नमः। अन्नायनमः। अन्नायमः। अन्यमः। अन्नायमः। अन्यमः। अन्यमः। अन्यमः।

ॐवसुप्रदायनमः । ॐवसवेनमः। ॐवासुदेवायनमः। ॐउज्जवलायनमः। ॐउग्ररूपायनमः। ॐऊर्ध्वगायनमः। ॐविवस्वतेनमः। ॐउद्यत्किरराजालयनमः। ॐ हृषिकेशायनमः। ॐ ऊर्जस्वलायनमः। ॐ वीरायनमः। ॐ निर्जरायनमः। ॐ जयाय नमः। ॐ ऊरुद्वभावरूपयुक्तसारथये नमः। ॐ रुग्धन्त्रे नमः। ङग्नक्षचक्रचराय नमः। ङग्नजुस्वभावचित्ताय नमः। ङनित्यस्तुत्याय नमः। ङग्नकारमातृकावर्गारूपाय नमः। ङउज्जवलतेजसे नमः। ङग्नक्षायधिनाथाय नमः। ङभित्रायनमः। अपुष्काराक्षाय नमः। अ लुप्तदन्ताय नमः। अशान्ताय नमः। अकान्तिदाय नमः। अधनाय नमः। अकनत्कनकभूषाय नमः। अ खद्योताय नमः। अलूनिताखिलदैत्याय नमः। असत्यानन्द स्वरूपिरो नमः। अग्नपवर्गप्रदाय नमः। अग्नार्तशररयाय नमः। अएकाकिने नमः। अभगवते नमः। ॐ सृष्टिस्थित्यन्तकारिगो नमः। ॐगुगात्मने नमः। ॐघृगिभृते नमः। ॐबृहते नमः। ॐब्रह्मगो नमः। ॐऐश्वर्यदाय नमः। ॐशर्वाय नमः। ॐहरिदश्वाय नमः। उप्शीरये नमः। उप्रादिक्सम्प्रकशाय नमः। उपक्रवश्याय नमः। अग्रोजस्कराय नमः। अजयिने नमः। अजगदानन्दहेतवे नमः। अजन्ममृत युजराव्याधिवर्जिताय नमः। अग्रीन्नत्यापदसञ्चरथस्थाय नमः। अग्रसुरारये नमः। अकमनीकराय नमः। अग्रब्जवल्लभाय नमः। अग्रन्तर्बिहःप्रकाशाय नमः। ॐ ऋचिन्त्याय नमः। ॐऋात्मरूपिगो नमः। ॐ ऋच्युताय नमः। ॐ ऋपरेशाय नमः। ॐपरस्मै नमः। ॐज्योतिषे नमः। ॐऋहस्कराय नमः। ॐरवये नमः ॐहरये नमः। ॐपरमात्मने नमः। ॐतरुगाय नमः। ॐवरेगयाय नमः। ॐग्रहागांपतये नमः। ॐभास्कराय नमः। ॐग्रादिमध्यान्तरहिताय नमः। अ सौख्यप्रदायनमः। अ सकलजगतांपतये नमः। असूर्याय नमः। अकवये नमः। अनारायगाय नमः। अपरेशाय नमः। अतेजोरूपाय नमः। अहीं हिरखयगर्भाय नमः। अ ऐं इष्टार्थदाय नमः। अभाशुप्रपन्नाय नमः। अश्रीमते नमः। अश्रेयसे नमः। अभक्तकोटिसौख्यप्रदायिने नमः। अनिखिलागमवेद्याय नमः। ॐनित्यानन्दाय नमः। ऋष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। (अनुष्ठान पद्धति)

धूपम्— अवनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। म्राघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुर्फषुं व्यदंधुः कति्धा व्यंकल्पयन्। मुख्ं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादां उच्येते॥ (अपनेद १०.६०.११)



ॐ कर्दमेन प्रंजा भूता मृिय संभंव कर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ (सग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

उसपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। धूपं म्राघ्रापयामि।

ॐ ब्राह्मशोंऽस्य मुर्खमासी बाहू रांज्न्यः कृतः। ऊरू तदंस्य यद्वैश्यः पुद्धयां शूद्रो ऋंजायत॥ (भगवेद १०.६०.१२)

ॐ ग्रापः सृजंतु स्निग्धांनि चिक्लीत् वस मे गृहे। नि चं देवीं मातरं श्रियं वासयं में कुले॥ (भग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं स्राचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मगडलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य श्रीभघार्य निर्मलं हिव तदुपिर न्यस्य श्राज्येन द्रवीभूतं कृत्वा ''ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य इक्षिगाहस्ते श्रीग्रबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदद्यवामहस्ते श्रमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हिवराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरिभमुद्रां बध्वा श्रमृतमयं भावियत्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहगोच्छां कुर्यात्।

(ग्रनुष्टान पद्धति)

''सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि'' इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पै: ''देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषागोदं हिविविभो'' इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिण हस्तेन प्राणादि मुद्रा: प्रदर्शयेत्। ग्रन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं ग्रबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्। नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य ग्रंलिनुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुन: पुन: विधितं देवं हन्मूर्ति देवं ध्यायन्

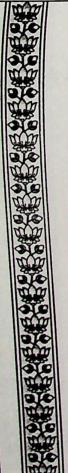
भग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ

स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्न मगडल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोड़ा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल हिक्स् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हिक्स् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं'' इस वायु बीज को जपकर हिक्स् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हिक्स् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हिक्स् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। अधित प्रादित्य:। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हिवस् को मत्रमय एवं अमृतमय होने की कल्पना करें। सुरिम मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु अंश एवं रसांश को अलग-अलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। ''सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि'' इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीम नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। ''निवेदयामि भवते जुषाण हिविविंभो'' कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्रांशाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ किनिष्ठिका मिलाकर, स्रापानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, व्यानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, उदानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं स्रनामिका मिलाकर, समानाय स्वाहा। सभी अङ्गुलियों को लिाकर। स्रन्न से मलांश एवं धातु के अंश को स्रलग कर केवल रसांश को स्रिपंत करने की कल्पना करें।

''वं म्रबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि'' कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। ग्रंगुष्ट एवं म्रनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार म्रमृत का जो म्रंश है उसे देवता को समींपित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार म्रमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति अपृत्रिः सूर्य मादित्यः।'' इस मूल मंत्र का जप करें।



ॐ स्वादुः पंवस्व द्वियाय् जन्मंने स्वादुरिंद्रांय सुहवींतुनाम्ने। स्वादुर्मित्राय् वर्रुगाय वायवे बृहस्पतंये मधुंमां ऋदांभ्यः॥ (म्म्बेद स. = १.६) ॐ चन्द्रमा मनंसो जातश्चक्षोः सूर्यो ऋजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्चं प्रा्गाद्वायुरंजायत॥ (म्म्बेद १०.६०.१३) ॐ ऋादीं पुष्करिंगीं पुष्ठिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरग्रमंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् ऋावंह॥

(ऋग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि । **त्रमृतापिधानमसि** कहकर उत्तरापोशन देवें । हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि । गगडूषार्थे जलं समर्पयामि । शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि । करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ।

ताम्बूल—पूर्गीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्गं कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ (स्मृति संग्रह-देवपूजा)

असपरिवार श्री सूर्याय नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (जारित) — ॐ अर्चित् प्राचित् प्रियंमेधा सो अर्चित। श्रंचितु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चित। (सम्वेद = ६६. =) ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जर्गद् ध्रुवो राजां विशाम्यम्।। ॐ ध्रुवं ते राजा वर्रूणो ध्रुवं देवो बृहम्पतिः। ध्रुवं तु इन्द्रश्राग्निश्चं राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (सम्वेद १०.१७३.४)

उस्परिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्य—ॐ सहस्त्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंभुवम्। विश्वं नारायंगं देवमक्षरं पर्मं प्दम्॥

विश्वतः परमात्रित्यं विश्वं नाराय्गां हरिम्। विश्वंमेवेदं पुरुष्मतिद्वश्च मुपंजीवित॥ पतिं विश्स्यात्मेश्वरं .. शार्शवतं... शिवमंच्युतम्। नाराय्गां महाज्ञेयं विश्वात्मानं पुरायंगाम्।। नारायुगा परोज्योतिरात्मा नारायुगाः परः। नारायुगा परं बृह्य तृत्वं नारायुगाः परः॥ नारायुगा परो ध्याता ध्यानं नारायुगाः परः। यच्य दि चिर्जागत्मर्व दृश्यते श्यतेऽपि वा॥ अन्तंबृहिश्चं तत्सर्व् व्यांप्य नांराय्रशास्थितः। अनंतुमव्यंयं क्विं.. संमुद्रेऽन्तं विश्वशंभुवम्।। पुनुकोश प्रंतीकाशं... हृदयं चाण्यथो मुख्यम्। अधौनिष्ट्या वितस्याते नाम्यामुपरि तिष्ठति।। ज्वाल्मालाकुलं भाति विश्वस्वायत्नं महम्। संतत् । शिलाभिस्तु लंबत्याकोश् सतिभम्। तस्यांते सुधिरं.. सूक्ष्मं तस्मिन्सर्व प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महानिभिविधाचिविधतो मुखः॥ सोऽग्रंभुग्वि भंजंतिष्ठन्नहारमजुरः कंविः। तिर्वुगुर्ध्वमंधरशायी रूश्मयं स्तस्य संतंता॥ संतापयंति स्वं देहमापांदतलुमस्तंकः। तस्य मध्ये विह्निशिखा भ्रगीयोध्वां व्यवस्थितः॥ नीलतोंयदंमध्यस्थाद्विद्युल्लेखेव भास्वरा। नीवारुशूकंवतुन्वी पीताभास्वत्यगूपंमा॥ तस्यां शिखाया मध्ये प्रमांत्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवःस हरिस्से द्वस्सोक्षरः प्रयः स्वराट्॥ ॐ बराम्हाँ ग्रंसि सूर्यु बळादित्य मुहाँ ग्रंसि। मृहस्ते स्तो मंहिमा पंनस्यते उद्धा देव मृहाँ ग्रंसि॥ (ऋवेद =.१०१.११) ग्रा.गृ.सूत्रम् ॐ नाभ्यां स्नासीदुंतरिक्षं शोृष्णों द्यौः समंवर्तत। पुद्ध्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथां लोकाँ स्रंकल्पयन्। (ऋवेद-१०.६०.१४) अ ऋार्द्रां युः करिंशीं यष्टिं सुवर्गां हेम्मालिनीम्। सूर्या हिररामयीं लक्ष्मीं जातवेदो मु ऋावेह।।

षष्ठ दिन

(मृग्वेद-पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्) ॐसपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिशा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रशाश्यन्ति प्रदक्षिशा पदे पदे॥ (देवपूजा-स्मृति संग्रह) ॐ स्प्तास्यां सन् परिधयुस्त्रिः स्प्तस्मिर्धः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वाना ऋबंधून् पुरुषं पृशुं॥ (ऋग्वेद १०.६०.१४) ॐ तां म् ऋगवंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनींम्।

यस्यां हिरंगयं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वांन् विंदेयं पुरुषान्हम्।। (म्रावेद-पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। प्रदक्षिरा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य— अप्रभाकराय विदाहें दिवाकराय धीमहि। तन्नों सूर्यः प्रचोदयात्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।

सर्वोपचार पूजनम्—ॐछत्रं समर्पयामि। चामरेग्रा वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। ग्रांदोळिकामारोहयामि। ग्रश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवास्तानि धर्माशि प्रथमान्यांसन्।

तेह नाकं महिमानं: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा: ॥ (मण्वेद १०.६०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयंतो भूत्वा जुहुयांदाज्यमन्वंहम्। सूक्तं पंचदंशर्चं च श्रीकामः सत्ततं जंपेत्।। (भ्रावेद-पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। सवोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं,। रक्तं रक्तविभूषराध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्॥



सप्ताश्चं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिगाकरं सेवामहे भास्करम्।। ॐ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।

करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायगायिति समर्पयामि ॥ (गौराणिकम्)

ॐ ब्रह्मार्परां ब्रह्महिवः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मराा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ॥ (क्री मणवदीते)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। ग्रनेन पूजनेन सपरिवारः श्री सूर्यः प्रीयताम्।

नवग्रहषोडशोपचार पूजन

ध्यायामि । ध्यानं समर्पयामि ।

ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतों वृत्वाऽत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।। (मण्वेद १०.६०.१) ॐ हिरंगय वर्गाां हरिंगीं सुवर्गारज्तस्रंजाम्। चुन्द्रां हिरगमंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो मु स्ना वंह।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

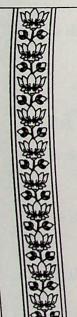
अनवग्रहमग्रहलस्थ म्रावाहित देवताभ्यो नमः, **म्रावाहनं समर्पया**मि।

ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यंच्य भव्यंम्। उतामृत्तवस्येशांनो यदन्नेनातिरोहंति॥ (मावेद १०.६०.२)

ॐ तां म स्रावंह जातवेदों लुक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंगयं विन्देयं गांमश्रृं पुरुषानुहम्।। (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमग्रडलस्थ मावाहित देवताभ्यो नमः, मासनं समर्पयामि।

षष्ठ दिन



ॐ प्तावांनस्य महिमाऽतो ज्योयाँश्च पूर्रुषः। पादोऽस्य विश्वांभूतानि त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ (म्रग्वेद १०.६०.३) ॐ म्रश्चपूर्वा रंथम्ध्यां हस्तिनांद प्रमोदिंनीम्। श्रियं देवी मुपंह्वये श्रीमी देवी जुंषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रह मगडलस्थ त्रावाहित देवताभ्यो नमः, पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयािम।

ॐ त्रिपादृर्ध्व उद्देत् पुर्रुषः पादोऽस्येहा भंवत् पुर्नः। ततो विष्वं व्यंक्रामत् साशनानश्ने ऋभि॥ (ऋखेद १०.६०.४) ॐ कां सोस्मितां हिरंगय प्राकारांमाद्रीं ज्वलंन्तीं तृप्तां तुर्पयंन्तीम्। पुद्मेस्थितां पुद्मवंगाां तामिहोपंह्वये श्रियम्।

(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहितदेवताभ्यो नमः, हस्तयोः ग्रर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ तस्मांद् विराळं जायत विराजो ऋधिपूर्रुष:। सजातो ऋत्यंरिच्यत पृश्चाद् भूमिमथों पुर:॥ (ऋग्वेद १०.६०.४)

ॐ चुन्द्रां प्रेभासां यशसा ज्वलंनी श्रियं लोके देवजुंष्टामुदाराम्।

तां पुद्मिनीं भीं शरंगामुहं प्रपंद्येऽलुक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृंगो ।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

उनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः। मुखे ग्राचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् पयः (दूध)—ॐ स्राप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतः सोम्वृष्णियं। भवावार्जस्य सङ्ग्रथे। (मानेद १.६१.१६)

उनवग्रह मगडलस्थ म्रावाहित देवताभ्यो नमः, पयः स्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उद्यन्नद्य मित्रमह ऋारोहन्नुत्तरंगं दिवंम्। हृद्रोगं ममं सूर्य हिर्मारां च नाशय।। (ऋग्वेद १.४०.११)



अनवग्रह मगडलस्थ म्रावाहित देवताभ्यो नमः। पयः स्नानांते शूद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दिध (दिह)—ॐ दुधिक्राव्यों स्रकारिषं जिष्योरश्वंस्य वाजिनंः। सुर्भिनोमुखां कर्तप्रण स्रायूँषि तारिषत्।। (ऋखेद ४.३६.६)

अनवग्रह मराडलस्थ त्रावाहित देवताभ्यो नमः, दिध स्नानं समर्पयामि। दिह स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ शुकेषु मे हरिमार्गां रोप्शाकांसु दध्मसि। श्रथों हारिद्रवेषुं मे हरिमार्गां निदंध्मसि॥ (मण्वेद १.४०.१२)

उनवग्रह मंडलस्थ ग्रावाहितदेवताभ्यो नमः, दिध स्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

घृत (घी)—ॐ घृतं मिंमिक्षे घृतमंस्ययोनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धामं।

त्रुनुष्वधमावंह मादयंस्व स्वाहांकृतं वृषभवक्षि हृव्यम् ॥ (भगवेद २.३.११)

अनवग्रह मंडलस्थ त्रावाहित देवताभ्यो नमः, घृत स्नानं समर्पयामि। घी स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उदंगादुयमांदित्यो विश्वेन सहंसा सह। द्विषन्तं महां रुधयुन् मो ऋहं द्विष्ते रंधम्॥ (ऋवेद १.४०.१२)

अनवग्रह मंडलस्थ ऋावाहित देवताभ्यो नमः, घृतस्त्रानांते शुद्धोदक स्त्रानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवातां ऋतायते मधुंक्षरन्ति सिन्धंवः । माध्वींनीः सुन्त्वोषंधीः॥

अ मधुनक्तम्तोषंसो मधुमृत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरंस्तु नः पिता॥

ॐ मधुमान्नो वन्स्पित्रमधुमाँ ग्रस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद १.६०.६-७-६)

अनवग्रहमंडलस्थ स्रावाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानं समर्पयामि।

ॐ चित्रं देवानामुदंगादनीकं चक्षुंमित्रस्य वर्रुगास्याग्नेः। त्राप्रा द्यावापृथिवी स्रन्तरिक्षं सूर्यं स्रात्मा जगंतस्तुस्थुषंश्च॥

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन

70141

(भृग्वेद १.११४.१)

ॐनवग्रह मर्गडलस्थ ग्रावाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पंवस्व दिव्याय जन्मंने स्वादुरिन्द्रांय सुहवींतु नाम्ने। स्वादुर्मित्राय वर्रुगाय वायवे बृहस्पतंये मध्मा ग्रदांभ्यः॥ (भ्रावेद ६.५४.६)

अनवग्रह मंडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्त्रानं समर्पयामि।

ॐ म्राकृष्णेन् रजसा्वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्राययंन सविता रथेनाऽदेवो यांति भुवंनानि पश्यंन्॥

(मृग्वेद १.३५.२)

अनवग्रहमग्रडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ याः फुलिनीर्या त्रंफुला ऋंपुष्पायाश्चं पुष्पिगीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानों मुञ्चन्त्वं हंसः॥ (सप्वेद १०.६७.१४)

अनवग्रह मराडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, फलस्त्रानं समर्पयामि।

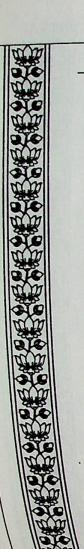
ॐ ऋषो्हिष्ठा मंयो्भुवस्तानं ऊर्जे दंधातन। महेरणांय चक्षंसे॥

यो वंः शिवतंमोरसस्तस्यं भाजयते हनंः। उशातीरिव मातरंः॥

तस्मा ऋरंगमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। ऋषों जुनयंथा च नः॥ (ऋषेद १०.६.१-२-३)

उप्नवग्रह मगडलस्थ त्रावाहित देवताभ्यो नमः, फल स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

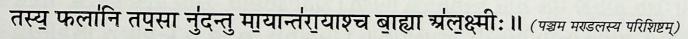
ॐ ग्रा कृष्णोन् रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्गययेन सविता रथेनाऽऽदेवो यांति भुवंनानि पश्यंन्॥



ॐ स्राप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतं: सोम् वृष्ययंम्। भवा वार्जस्य सङ्ग्रथे॥ (सप्वेद १.६१.१६) ॐ ऋग्निर्मूर्धा द्विवः कुकुत्पतिः पृथिव्या ऋयम्। ऋपां रेतांसि जिन्वति॥ (ऋग्वेद ८.४४.१६) ॐ उद्वंध्यध्वं समंनसः सखायः सम्ग्रिमिंध्वं बहवः सनीळाः। दुधिक्राम्ग्रिमुषसं च देवीमिंद्रांवृतोऽवंसे निह्नये वः॥ (भग्वेद १०.१०१.१) ॐ बृहंस्पते ऋति यद्यों ऋहीं द्युमद्विभाति क्रतुंम्जनेषु। यदीदय्च्छवंस ऋतप्रजात् तदुस्मासु द्रविंगां धेहि चित्रम्॥ (सप्वेद २.२३.१४) अ शुक्रं ते ग्रुन्यद्यंज्तं ते ग्रुन्यद्विष्किपे ग्रहंनीद्यौरिवासि। विश्वा हि माया स्रवंसि स्वधावो भुद्रा तें पूषित्रहरातिरंस्तु ॥ (भ्रावेद ६.४=.१) ॐ शम्ग्रिर्ग्निभी: कर्च्छंनंस्तपत् सूर्यी:। शं वातों वात्वरपा ऋप्स्तिर्धः॥ (भगवेद म.१म.६) ॐ कयांनश्चित्र स्ना भुंवद्ती सदावृंधः सखां। कयाशचिंष्ठया वृता॥ (मण्वेद ४.३१.१) ॐ केत् क्रावन्नंकेतवे पेशों मर्या ऋपेशसें। सुमुष द्धिरंजायथाः॥ (ऋषेद १.६.३) ॐ तच्छुंय्योरावृंगीमहे गातुं युज्ञायं गातुं युज्ञ प्तये। दैवीं स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिमानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगात् भेषुजम् शंनों ऋस्तु द्विपदे शं चतुंष्यदे ॥ (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्) ॐ यत्पुंरुषेशा हिवषां देवा युज्ञमतंन्वत। वृस्नतो श्रंस्यासीदार्ज्यं ग्रीष्म इध्मः श्राद्धविः॥ (भ्रावेद १०.६०.६) अ मादित्यंवर्गो तप्सोऽधिंजातो वन्स्पित्सतवं वृक्षोऽथं बिल्वः।

सम्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन



अनवग्रह मगडलस्थ मावाहित देवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं सपर्मयामि। शुद्धोदक स्नान मंत्रों के तीन प्रकार प्रचलित है।

प्रथम क्रम में— ६ ग्रह- ६ ग्रिधदेवता- ६ प्रत्यिधदेवता ६ कर्म साद्गुरय देवता, प्रकृत संरक्षक देवता कुल मिलाकर ४१ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्त्रान करना चाहिये। सभी मंत्र ग्रावाहन में है। नवग्रह यागादियों में इसका प्रयोग होता है। जहाँ कलश पूजन के लिए ही एक परिडत नियुक्त हो वहाँ भी इसे कर सकते हैं।

द्वितीय क्रम में—£ ग्रह+£ ऋधिदेवता+£ प्रत्यिधदेवता कुलिमलाकर २७ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।
तृतीय क्रम में—£ ग्रहों का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

वस्त्रम्— ॐ युवं वस्त्रांशि पीवसावंसाथे युवोरिच्छंद्रा मन्तंवो हसर्गाः।

स्रवातिरतमनृंतानि विश्वंस्रतेनं मित्रा वरुगा सचेथे। (मानेद १.१४२.१)

ॐ तं युज्ञं बुर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा स्रयजन्त साध्या ऋषंयश्चे ये॥ (ऋषेद १०.६०.७)

ॐ उपैतु मां देवस्यवः कोर्तिश्च मिर्गाना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कोर्तिमृद्धिं दुदातुं मे।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

उ-नवग्रह मराडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्—ॐ यज्ञोपवीतं प्रमं पवित्रं प्रजापते र्यत् सहजं पुरस्तात्। ऋायुष्यम्ग्र्यं प्रतिमुं अशुभ्रं यज्ञोपवीतं बल्मंस्तु तेजः॥

ॐ तस्माद् युज्ञात् सर्वृहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पृशून्स्ताँश्चेक्रे वायुव्यानार्गयान् ग्राम्याश्च ये॥ (भावेद १०.६०.=)

ॐ क्षुत्पिंपासामेलां ज्येष्ठामेलुक्ष्मीं नांशायाम्यहंम्। ऋभूतिमसंमृद्धिं च सर्वा न्निर्गीद मे गृहात्।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, ग्राचमनं समर्पयामि।

म्राभरराम्—ॐ हिरंरायरूपुः स हिरंराय सन्दूगुपान्नपात् सेदुहिरंरायवर्गाः। हिरराययात् परिर्योनेर्निषद्यां हिररायदा दंदत्यन्नमस्मै॥

(मृग्वेद २.३४.१०)

उन्वग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, ग्राभरगं समर्पयामि।

गन्धम्—ॐ तस्माद् युज्ञात् संर्वृहुतुऋचुः सामानि जिज्ञिरे। छंदांसि जिज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत॥ (ऋग्वेद १०.६०.६) ॐ गंधंद्वारां दुराधुर्षां नित्यपुष्टां करीषिशाीम्। ईश्वरीं सर्वीभृतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्॥ (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम)

अनवग्रहमराडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

मक्षतम्—ॐ मर्चत् प्रार्चत् प्रियंमेधासो मर्चत । मर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्न धृषावंर्चत ॥ (मानेद =.६६.=)

अनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, ग्रक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाशा—ॐ स्रायंने ते प्रायंशो दवूरिहेन्तु पुष्पिशोः। हृदाश्च पुगडरीकाशि समुद्रस्य गृहा इमे ॥ (म्रावेद १०.१४२.=)

ॐ तस्मादश्वां ऋजायन्त ये के चों भ्यादंतः। गावोंहजिज्ञरे तस्मात् तस्मांज्ञाता ऋंजा वर्यः॥ (ऋग्वेद १०.६०.१०)

ॐ मनेसः काम्नाकूंतिं वाचः सत्यमंशीमिह। पुश्रूनां रूपंमन्नस्य मिय श्रीः श्रयतां यशः॥ (मग्वेद - पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

उनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, पुष्पागि समर्पयामि।

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

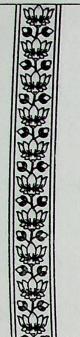
नाम पूजा

असहस्रकिरणाय नमः। असूर्याय नमः। अतपनाय नमः। असवित्रे नमः। अरवये नमः। अविकर्तनाय नमः। अजगच्चक्षुषे नमः। अद्युमणये नमः। अतिरमदीधितये नमः। अत्रयीमूर्तये नमः। अद्युदशात्मने नमः। अब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय नमः। अत्रादित्याय नमः। अत्रयये नमः। अरुद्राय नमः। अव्युद्राय नमः। अत्रद्र्यो नमः। अत्रद्र्याय नमः। अव्युद्र्याय नमः। अव्ययवे वयः। अव्ययव

धूपः— वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। स्राघ्नेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐ यत्पुर्फषुं व्यदंधुः कित्धा व्यकल्पयन्। मुख्ं किमंस्य कौ बाहू का ऊरू पादां उच्येते॥ (म्रावेद १०.६०.११) ॐ कर्दमेन प्रंजा भूता मृयि संम्भव् कर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममार्लिनीम्॥ (म्रावेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम)

अनवग्रह मगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, धूपं ग्राघ्रापयामि।

दीपं साज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं विह्नना योजितं मया। गृहारा मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यितिमिरापह।। ॐ ब्राह्मराोऽस्य मुर्खमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तस्य यद्वैश्यः पुद्भयां श्रूद्रो ऋंजायत।। (सम्बेद १०.६०.१२)



ॐ ग्रापः स्त्रजंन्तु स्त्रिग्धांनि चिक्लीत् व सं मे गृहे। नि चं देवीं मात्रं श्रियं वासयं मे कुले।। (म्रावेद - पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

अनवग्रह मगडलस्थ स्रावाहित देवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। धूपदीपानन्तरं स्राचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं—नैवेद्य रखने के स्थल पर मगडल बनायें (चतुरस्र) नैवेद्य को मगडल पर रखने के बाद मंत्र पढ़ें। विश्वामित्र ऋषि: देवी गायत्री छन्दः, सिवता देवता निवेदने विनियोगः। एक बार नैवेद्य पर गायत्री मंत्र से प्रोक्षण करें। सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि इस मंत्र से दिन में एवं ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्च । इस मंत्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें।

यथा संभव नैवेद्यं निरीक्षस्व कहकर प्रार्थना कर अमृतोपस्तरगमिस मन्त्र से जल छोड़ें। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं दाहिने हाथ से निम्न मुद्राओं से देवताओं को नैवेद्य अपीण करें। मन में कल्पना करें कि भगवान को खिला रहे हैं। प्राणाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा। अधिकार सूर्य आदित्य:-इस मूल मंत्र को आठ बार जप करें।

अ स्वादुः पंवस्व द्वियाय जन्मंने स्वदुरिन्द्रांय सुहवींतु नाम्ने।

स्वादुर्मित्राय वर्रुगाय वायवे बृहस्पतिये मधुमाँ ऋदाभ्यः॥ (मग्वेद ६. ६५.६)

ॐ चन्द्रमा मनंसो जातश्रक्षोः सूर्यो स्राजायत। मुखादिन्द्रश्राग्निश्चं प्राणाद्वायुरंजायत॥ (मग्वेद १०.६०.१३)

ॐ ऋाद्रां पुष्किरिशों पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिररामंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो मु ऋावंह ॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

यथा सम्भवं नैवेद्यं निवेदयामि। ऋमृतापिधानमिस। कहकर उत्तरापोशरा जल दें। उत्तरापोशनार्थं जलं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गर्याद्वार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूलम्—पूर्गीफलसमायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्गां कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ अनवग्रह मगडलस्थ आवाहित

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन

देवताभ्यो नमः, क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। ताम्बूल के पश्चात् नीराजन करें।

ॐ स्रर्चित् प्रार्चित् प्रियंमेधासो स्रर्चित। स्रर्चेन्तु पुत्रुका उत पुरं न घृष्यवर्चित॥ (स्रिवेद म.६६.म)

ॐ श्रिये जातः श्रिय मानिरियाय श्रियं वयों जरितृभ्यों दधाति।

श्रियं वसांना ऋमृत्त्वमांयुन् भवंन्ति स्त्या संमिथा मितद्रौं॥ (ऋग्वेद £. £४.४)

ॐ धुवाद्यौ धुवापृथिवी धुवासः पर्वता इमे। धुवं विश्वमिदं जगद् धुवो राजां विशामयम्॥

ॐ धुवं ते राजा वर्रुगो धुवं देवो बृहस्पतिः। धुवं त इन्द्रश्चाग्निश्चे राष्ट्रं धारयतां धुवम्।। (मग्वेद १०.१७३.४-५)

उनवग्रह मडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, मङ्गल नीराजनं दर्शयामि।

मन्त्र पुष्पः — ॐ ग्रा कृष्णोन् रजसा वर्तमानो निवेशयंन्मृतं मर्त्यं च।

हिर्राययेन सिवता रथेनाऽऽदेवो यांति भुवनानि पश्यंन्।। (मानेद १.३५.२)

ॐ म्राप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतंः सोम् वृष्ययंम्। भवा वार्जस्य सङ्ग्रथे॥ (मानेद १.६१.१६)

ॐ ऋग्निर्मूर्धा दिवः क्कुत्पतिः पृथिव्या ऋयम्। ऋपां रेतांसि जिन्वति। (सप्वेद =.४४.१६)

ॐ उद्बंध्यध्वं समनसः सरवायः सम्ग्रिमिध्वं बृहतः सनीळाः।

दुधिकाम्ग्रिमुषसं च देवीमिन्द्रांवतोऽवंसे निह्वये वः॥ (सप्वेद १०.१०१.१)

ॐ बृहंस्पते ऋति यद्यों ऋहांद्युमद्विभाति क्रतुंम्जनेंषु।

यद्दीदयुच्छवंस ऋतप्रजात् तद्दस्मासु द्रविंगां धेहिचित्रम्॥ (ऋषेद २.२३.१४)



ॐ शुक्रं तें श्र्न्यद्यंज्तं तें श्र्न्यद्विषुंरूपे श्रहंनीद्यौरिवासि। विश्वा हि माया श्रवंसि स्वधावो भुद्रा तें पूषित्रह रातिरंस्तु॥ (म्मवेद ६.४६.१) ॐ शम्श्रिरिग्निभेः करच्छनंस्तपतु सूर्यः। शं वातों वात्वर्पा श्रप्रिश्यः॥ (म्मवेद ६.११.६) ॐ कयांनिश्चित्र श्रा भुंवदूती सदावृंधः सखां। कया शिचिष्ठया वृता॥ (ममवेद ४.३१.१) ॐ केतुं कृरावन्नंकेतवे पेशोंमर्या श्रपेशसें। सुमुषद्धिरजाय थाः॥ (ममवेद १.६.३)

अनवग्रह मगडलस्थ त्रावाहित देवताभ्यो नमः, मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिरा नमस्कारः — यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रशश्यन्ति प्रदक्षिरा। पदे पदे॥

ॐ सप्तास्यां सन् परिधयस्त्रः सप्तस्मिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वाना ऋबंधृन् पुरुषं पृशुम्॥ (मण्वेद १०.२०.१४) ॐ तां मु ऋविह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंगयं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानुहम्।

(मृग्वेद-पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

उ-नवग्रहमगडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, प्रदक्षिगा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घः — अप्रमाकराय विदाहे दिवाकराय धीमिह। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥ अमृतिपुत्राय विदाहे म्रमृतोद्भवाय धीमिह। तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥ अभूमिपुत्राय विदाहे भारद्वाजाय धीमिह। तन्नः कुजः प्रचोदयात्॥ अतारापुत्राय विदाहे सोमपुत्राय धीमिह। तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥ अदेवाचार्याय विदाहे वाचस्पतये धीमिह। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥ अदैत्याचार्याय विदाहे विद्यारूपाय धीमिह। तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥ असूर्यपुत्राय विदाहे शनैश्चराय धीमिह। तन्नो मंदः प्रचोदयात्॥ असैहिकेयाय विदाहे तमोमयाय धीमिह। तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥ अब्रह्मपुत्राय विदाहे विकृतास्याय धीमिह। तन्नः केतुः प्रचोदयात्॥

सम्वेदीय सोम सर्वाद्धुत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन

अनवग्रह मग्रडलस्थ ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि। सर्वोपचार पूजनम्—अछत्रं समर्पयामि। चामरेग्रा वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। ग्रान्दोळिकामारोहयामि। ग्रश्चमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवास्तानि धर्मांशि प्रथमान्यांसन्। तेह नाकं मिहमानंः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

(मृग्वेद १०.६०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयंतो भूत्वा जुहुयांदाज्यमन्वंहम्। सूक्तं पंचदंशर्चं च श्रीकामः सत्तं जंपेत्।। (म्रग्वेद-पञ्चम मर्राडलस्य परिशिष्टम्) अनवग्रह मर्राडलस्य ग्रावाहित देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— ग्रहाशामादिरादित्यो लोकरक्षशाकारकः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते रविः॥ रोहिशीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते विधुः॥ भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद्दृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः॥ उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः॥ देवमन्त्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। ग्रनेक शिष्य संपूर्शः पीडां हरतु ते गुरुः॥ दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राशादश्च महामितः। प्रभुस्ताराग्रहाशां च पीडां हरतु ते भृगुः॥ सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्म पीडां हरतु ते शनिः॥ महाशिरा महावक्त्रौ दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। ग्रतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः॥





त्रनेक रूपवर्गीश्च शतशोथ सहस्त्रशः। उत्पातरूपो जगतः पीडां हरतु ते शिखी॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

म्रारोग्यं पद्मबन्धुर्वितरतु विपुलां संपदं शीतरिश्मः, र्भूलाभं भूमिपुत्रः सकलगुरायुतां वाग्विभूतिं च सौम्यः। सौभाग्यं देवमन्त्री रिपुभयशमनं भार्गवः शौर्यमार्किः , दीर्घायुस्सैंहिकेयो विपुलतरयशः केतुराचन्द्रतारम्॥ शान्तिरस्तु। शिवं ते ऋस्तु। ग्रहाः कुर्वन्तु मङ्गलम्। ऋरिष्टानि प्रराश्यन्तु। दुरितानि भयानि च। अनवग्रहमराडलस्थ देवताम्यो नमः, प्रार्थनां समर्पयामि। अनेन कृत पूजनेन म्रादित्यादि नवग्रहदेवताः प्रीयन्ताम्॥

यहाँ पर नवग्रह पूजन समाप्त हुन्ना। मराडप में कलशों का पूजन भी संपूर्ण हुन्ना।

षष्ठ दिन द्वितीय प्रहर

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यों मातामधुंमृत् पिन्वंते पर्यः पीयूषं द्यौरिदंतिरिद्रंबर्हाः।

उक्थशुंष्मान् वृषभ्रान्तवप्रंस्ताँ ग्रांदित्याँ ग्रनुंमदास्वस्तयें॥ (मक्वेद १०.६३.३)

अ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे युज्ञैर्विधेम् नमंसा हविर्भिः।

बृहंस्पते सुप्रजा वीरवंन्तो व्यं स्यांम् पतंयो रयीगाम्।। (मक्वेद ४.५०.६)

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ **ग्राचमन मन्त्र**—ग्रग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

म्रथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुरारोभ्यो नमः। म्रग्नये नमः। वायवे नमः। प्राराय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। ग्रन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मग्रो नमः। विष्णावे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारराम्—पवित्रन्त इत्यनयोः म्राङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्ररो, धाररो विनियोगः। ॐ पुवित्रंन्ते वितंतं ब्रह्मशस्पते प्रभुगित्रांशि पर्येषि विश्वतः।

ऋतंप्ततनूर्न तदामो ऋंश्नुतेशृता सुइद्वहंन्तुस्तत् समांशत ॥ (मावेद £. =३.१)

ॐ तपोष्प्रवित्रुं वितंतं द्विवस्पुदे शोचन्तो ग्रस्य तन्तवो व्यंस्थिरन्।

स्रवंन्त्यस्य पवीतारं माशवों दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतंसा ॥ (मण्वेद £. =३.२)

उभूभुर्व: स्व: कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये ग्रासन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।) प्रागायाम—प्रगावस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्रागायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्संवितुर्वरेरंग्युं भर्गों देवस्यं धीमहि। धियों यो नं: प्रचोदयात्। ॐ ग्रापो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भवस्वरोम्। (मावेद ३.६२.१०)

(रेखङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

म्रासन शृद्धि—ॐ स्योना पृंथिवि भवानृक्षुरा निवेशंनी। यच्छां नुः शर्मं सुप्रथः।' (१४ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मगडल) इस मन्त्र से जल प्रोक्षगा करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपक्षि मांसशोगित भक्षगो। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुगडे ह्यपराजिते॥ (ब्रह्मकर्म समुञ्जय)

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प —.....

गुरू प्रार्थना —

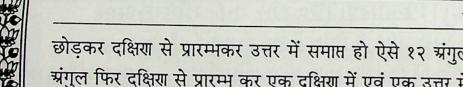
नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः। स्राचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ (शृङ्गेरी मठीय स्राचार्य प्रार्थनम्)

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः।

हवन कुराड में

स्थंडिल शुद्धिः—तद् गोमयेन प्रदक्षिरामुपलिप्य दक्षिरो उदीच्यां द्वे, प्रतीच्यां चतुः, प्राच्यामर्धं इत्यंगुलानित्यक्त्वा दिक्षिराोपक्रमां उदक्संस्थां प्रादेशमात्रां एकां लेखां तस्या दिक्षिराोत्तरयोः प्रागायते पूर्वरेखया ग्रसंसृष्टे प्रादेशसंमिते द्वे लेखे लिखित्वा तयोर्मध्ये परस्परं ग्रसंसृष्टाः उदक्संस्थाः प्रागायताः प्रादेश संमिताः तिस्तः इति षड्लेखाः यज्ञीय शकलमूलेन दिक्षिरा हस्तेन उिल्लेखासु तच्छकलं उदगग्रं निधाय स्तंडिलं ग्रद्धिः ग्रभ्युक्ष्य शकलं भंक्त्वा ग्राग्नेय्यां निरस्य पारिशं प्रक्षाल्य वाग्यतः भवेत्।

स्थिगिडल को पहले गोमय से लेपना चाहिये। स्थिगिडल (वेदी) में दक्षिण में ग्राठ ग्रंगुल, उत्तर में दो ग्रंगुल, पश्चिम में चार ग्रंगुल, पूर्व में ग्राधा ग्रंगुल



ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भृत शान्ति यज्ञ

छोड़कर दक्षिण से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे १२ ऋंगुल चौक बनाना चाहिये। फिर बीच में दक्षिण से उत्तर एक रेखा खींचना चाहिये। १२ ऋंगुल फिर दक्षिण से प्रारम्भ कर एक दक्षिण में एवं एक उत्तर में दो रेखायें पश्चिम से पूर्व की ऋोर खीचें १२ ऋंगुल बी फिर दक्षिण से प्रारम्भकर दक्षिण में समाप्त होने वाले पश्चिम से पूर्व में समाप्त होने वाले तीन रेखायें। (१२ ग्रंगुल) खीचें। (प्रादेश प्रमागा-लगभग १२ ग्रंगुल) (ब) इसे यज्ञ में प्रयुक्त ऋश्वत्थादि सिमत् के ऋग्रभाग से इन लकीरों को खीचना चाहिये। दाहिने हाथ से लिखें। (रेत पर) खीचने वाले सिमत् को उसके ऊपर उत्तर उत्तराभिमुख रखें। फिर स्थिरिडल (stage) को जल से ऋभ्युक्षरा करना चाहिये। (ऋभ्युक्षरा मतलब मुष्टि में जल लेकर सिञ्चन करना चाहिये।) फिर उस सिमत् को (लकीर खीचें) तोडकर ग्राग्नेय दिशा में फेंककर हाथ धो लेना चाहिये।

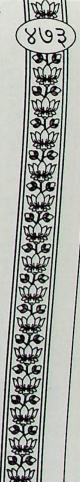
ऋग्नि प्रतिष्ठा—यहाँ तक होम वेदी निर्माण विधि, होम वेदी पर देवताम्रों का म्रावाहन पूजन संपन्न हुम्रा। म्रागे म्रग्नि प्रतिष्ठा विधान वर्णित है। ततः तैजसेन ग्रसंभवे मृन्मयेन वा पात्रयुग्मेन संपुटीकृत्य सुवासिन्या श्रोत्रियागारात् स्वगृहाद्वा समृद्धं निर्धूमं ग्रिग्नं ग्राहृतं स्थंडिलात् ग्राग्नेय्यां निधाय। उसके बाद लोहपात्र में (संभव हो तो ताम्र पात्र में) यदि न हो तो मिट्टी के पात्र में श्रोतियों के घर से या ऋपने घर से लाकर, धुऐं रहित ऋंगारों को पात्र में रखकर दूसरे पात्र से ढक्कर लाना चाहिये। लाए हुए ग्रग्निपात्र को स्थिरिडल होमवेदी के ग्राग्नेय दिशा में रखना चाहिये।

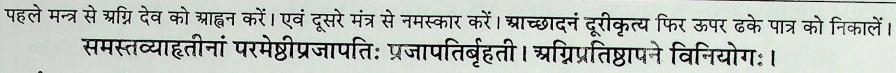
एह्यग्रेराहुगर्गोगोतमोग्निस्त्रिष्टुप् ऋग्न्याह्वाने विनियोगः। एह्यंग्रङ्गहोता निषीदादंब्धः सूपुर एताभंवानः॥ स्रवंतांत्वारोदंसीविश्वमिन्वेयजांमुहे सौंमनुसायं देवान्। (मानेद १.७६.२)

जुष्टोदमूना ऋात्रेयोवसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् ऋग्निनमस्कारे विनियोगः॥

ॐ जुष्ट्रोदमूना्ऋतिंथिर्दुरो्राः इमं नों युज्ञमुपंयाहि विद्वान्। विश्वांऋग्ने ऋभियुजों विहत्यां शत्रूयतामाभंराभोजनानि॥

(मृग्वेद ४.४.४)





ॐभूर्भुवः स्वः। इति श्रात्माभिमुख पाणिभ्यां षट्सुलेखासु अमुक नामानमग्निं प्रतिष्ठापयामि इति अग्निं प्रतिष्ठाप्य। ऊपर के मन्त्र कहकर श्रिग्नियुक्त पात्र को अपने सामने हाथों में पकडकर एक बार पदिस्या कर जो ६ रेखायें है, उन पर कर्माङ्ग देवता नामक अग्नि को प्रतिष्ठापित कर रहा हूँ कहकर रखना चाहिये। रखते समय हाथ कर्तरी शकल में होना चाहिये। कैची जैसे (cross) अग्न्याहरण पात्रयोः अक्षतैः सह उदकमासिच्य इन्धनंप्रोक्ष्य वेगु धमन्या प्रबोधयेत्। अग्नि लायें दोनों पात्रों में अक्षत डालकर जल सींचकर उसे बाहर कर देवें। फिर लकडियों को जल से प्रोक्षण कर बॉस की या लोहे की धमनी फूकनी से फूंककर अग्नि को प्रज्वित करें। अग्निनाग्निः काण्वोमेधातिथिः अग्निर्यायत्री अग्नि समिन्धने विनियोगः।

ॐ ऋग्निनाग्निः सिमंध्यते क्विर्गृहपंतिर्युवां। हृव्यवाड्जुह्वांस्यः।

विज्ज्योतिषेति जानो वृषोग्निस्त्रिष्टुप् ऋग्नि ज्वलने विनियोगः।

ॐ विज्ज्योतिषा बृहता भांत्यग्रिराविविश्वांनि कृराते महित्वा। प्रादेवीर्मायाः संहते दुरेवाः शिशीते शृंगेरक्षंसे विनिक्षे। (मण्वेद ४.२.६)

इन मन्त्र से अग्नि ज्वलन करना चाहिये।

ऋग्निमूर्तिध्यान — चत्वारिश्रृंगागोतमो वामदेवोग्निस्त्रिष्टुप्। ऋग्निमूर्ति ध्याने विनियोगः।

ॐ चृत्वारि शृंगात्रयो ग्रस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तांसो ग्रस्य। त्रिधांबृद्धो वृंष्प्रभोरोरवीति मृहोदेवो मर्त्याऽँग्राविवेश॥ सप्तहस्तश्चतुः शृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः। त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः सुचिस्मितः॥



स्वाहांतुदक्षिरोपार्श्वे देवीं वामेस्वधां तथा। बिभ्रद्दक्षिरा हस्तैस्तु शक्तिमन्नंस्तुचं स्त्रुवं।। तोमरंव्यजनंवामैर्घृतपात्रं च धारयन्। मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्गो महौजसः। धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥ स्नात्माभिमुख मासीन एवं रूपो हुताशनः। (ब्रह्मकर्म समुच्चय-स्राग्नुख प्रकरण)

इन मन्त्रों को पढकर ध्यान करें। ऋग्ने ऋच्छावदेत्यस्य मन्त्रस्य ऋग्निस्तापसोग्निरनुष्टुप् ऋग्नि स्वाभिमुखीकरणे विनियोग:।

ॐ ऋग्ने ऋच्छांवदेहनं: पृत्यङ्गनं: सुमनां भव। प्रनोंयच्छ विशस्पते धन्दा ऋसि न्स्त्वम्॥ (सप्वेद १०.१४१.१)

ॐ एष हि देव: प्रदिशो नु सर्वा: पूर्वी हि जातस्य उ गर्भे मृंत:।

स विजायंमानस्य जिन् प्यमांगाः प्रत्यङ्मुखांस्तिष्टति विश्वतों मुखः ॥ (यजुर्वेद-मारस्यक-महानारायसोपनिषत्)

हे ग्रग्ने शागिडल्यगोत्र मेषारूढ वैश्वानर प्राङ्मुखः सन् ममाभिमुखो वरदस्सुप्रसत्रो भव। इतना कहकर ध्यसान से सम्मुख करके ग्रन्वाधान करें। ग्रन्वाधान—ग्रन्वाधानाभिधं कर्म क्रियते सर्वकर्मसु। निमन्त्रगार्थं देवानां होतव्यानां च होतृभिः॥ (ग्राश्वलायन स्मृति)

सभी कर्मों में अन्वाधान कर्म करना चाहिये। ऋत्विज अपने यज्ञ में जिन-जिन देवताओं को आहुतियाँ देते हैं उन्हें पहले बुलाकर सूचित करना चाहिये। यह क्रिया अन्वाधान कहलाता है। आचम्य प्राणानायम्य देशकालौस्मृत्वा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ एतत् कर्म करिष्ये। आचमन कर (यदि बीच में उठ के बार गये हो तो), प्राणायाम करके देशकालसंकीर्तन पूर्वक संकल्प लें। तत्र देवता परिग्रहार्थं अन्वाधानं करिष्ये। सिमत् द्वयं आदाय। (दो सिमतों को हाथ में लेकर) अस्मिन् अन्वाहितेग्री जातवेदसमिग्नं इध्मेन प्रजापितं प्रजापितं चाघारदेवते आज्येन अग्नीषोमौचक्षुषी आज्येन। इन अग्नियों में जातवेदािग्न को सिमत् से, आधार देवता प्रजापित एवं प्रजापित को घी से, चक्षुष् अग्नि सोम को घी से होम करना चाहिये। यह पूर्वाङ्ग है। सभी यज्ञों में इतना अन्वाधान होता है। आगे यज्ञों के अनुसार बदलता है।

जैसे सर्वाद्भुत शान्ति याग—ग्रग्निं वायुं सूर्य प्रजापितं च ग्राज्यद्रव्येगा प्रधान देवतां ग्रादित्यं ग्रधिदेवतामिन्नं प्रत्यधिदेवतां रुद्रं ग्रकं सिमत् चर्वाज्य द्रव्यै: प्रधान देवतां सोमं ग्रधिदेवतां ग्रपः प्रत्यधिदेवतां गोरीं, पलाशसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां ग्रंगारकं ग्रधिदेवतां भूमिं, प्रत्यधिदेवतां स्कन्दं खदिरसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बुधं, ऋधिदेवतां विष्णुं प्रत्यिधदेवतां पुरुषं अपामार्ग समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बृहस्पितिं, ऋधिदेवतां इन्द्रं, प्रत्यधिदेवतां, ब्रह्मागं पिप्पल समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां शुक्रं, मधिदेवतां इन्द्रागीं प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं, गौदुम्बर समित् चर्वाज्यद्रव्यैः प्रधानदेवतां शनिं ऋधिदेवतां प्रजापतिं प्रत्यिधदेवतां यमं, शमीसमित् चर्वाज्यद्रव्यैः, प्रधान देवतां राहुं ऋधिदेवतां सर्पान् प्रत्यिधदेवतां मृत्युं, दूर्वा समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां केतुं, ऋधिदेवतां ब्रह्मागां प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तं कुशसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः प्रधान देवताः ऋष्टाविंशति संख्यया ऋधिदेवताः प्रत्यधिदेवताः दशांशसंख्यया विनायकं दुर्गां क्षेत्रपालं वायुं ऋकाशं ऋश्विनौ ऋतु साद्गुरय देवताः प्रधान विंशांश संख्यया इन्द्रं ऋग्निं यमं निर्ऋतिं वरुगां वायुं कुबेरं ईशानं एता: क्रतुसंरक्षरादेवता: प्रागुक्त सिमत् चर्वाज्यद्रव्यै: प्रधान विंशांश संख्याया अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं च आज्यद्रव्येश, सर्वाद्भुत शान्ति होमे प्रधान देवतां सूर्यं ऋष्टोत्तर शतसंख्यया चरु द्रव्येगा, सूर्यं रुद्राधिपतिं रिविकिरगं ईश्वरं सर्वोत्पातशमनं ऋग्निं पृथिवीं महान्तं वायुमन्तरिक्षं महान्तं आदित्यं दिवं महान्तं प्रजापितं चन्द्रमसं नक्षत्रािशा दिशो महान्तं च एता: देवता: ग्राज्य द्रव्येश एकैक संख्यया चरु शेषेशस्विष्टकृतमिग्नं इध्मसन्नहनेन रुद्रं ग्रयासमिग्नं देवान् विष्णुं ऋग्निं, वायुं सूर्यं प्रजापितं च एताः प्रायश्चित्त देवता ऋाज्येन ज्ञाताज्ञात दोष निबर्हगार्थं त्रिवारमित्रं मरुतश्चाज्येन विश्वान् देवान् संस्रावेगा एताः मुङ्गदेवताः प्रधानदेवताः सर्वाः सिन्निहिताः सन्तु एवं सांगोपाङ्गेन कर्मगा सद्यो यक्ष्ये।

॥ सर्वाद्भुत शान्ति याग का ग्रन्वाधान समाप्त॥

परिसमूहन एवं पर्युक्षरा — उपरोक्त क्रम से परिसमूहन पर परिस्तरण डालना चाहिये। वह इस प्रकार है। अग्न्यायतनाद् अष्टांगुल परिमिते देशे ऐशानी दिशं आरभ्य प्रदक्षिणं संमतात् सोदकेन पाणिना त्रिः परिमृज्य दशांगुलिमते देशे प्राच्यादिषु पूर्वं उपरिनिहितदर्भैः परिस्तृणीयात्।

७७४

स्थिरिडले होम वेदी के म्राठ म्रंगुल बाहर ईशान्य दिशा से प्रारम्भकर प्रदक्षिणा क्रम से चारों म्रोर जलयुक्त हाथ से तीन बार परिमार्जन करें। स्थिरिडले होमवेदी के दस म्रंगुली बाहर पूर्व से प्रारम्भकर सभी दिशाम्रों में कुशों को बिछाना चाहिये।

तत्र प्राच्यां प्रतीच्यां च उदगग्रादर्भा: ग्रवाच्यामुदीच्यां च प्रागग्रा: पूर्वपश्चिमपरिस्तरग्रमूलयोरुपरि दक्षिग्रपरिस्तरग्रां उत्तरपरिस्तरग्रांतु तदग्रयोरधस्तात्। पूर्व एवं पश्चिम दिशा में कुशाग्र (कुश का ग्रागे का भाग) उत्तराभिमुख हो, दक्षिग्र एवं उत्तर दिशा में कुशाग्र पूर्वाभिमुख होना चाहिये। पूर्व एवं पश्चिम दिशा की कुशों के (परिस्तरग्र) ऊपर दक्षिग्र का परिस्तरग्र, एवं पूर्व पश्चिम कुशों के परिस्तरग्र के नीचे उत्तर का परिस्तरग्र होना चाहिये। परिस्तरग्र कुशों के लिए कोई निश्चित संख्या नहीं हैं। ग्रधिक उपलब्ध होने पर ग्रधिक विछावे। कम होने पर चार-चार बिछायें। उतना ही न हो तो तीन-तीन बिछायें।

परिस्तृगात्यासनार्थं ग्राशेशानां त्रिभिस्त्रिभिः। कुशैः प्रागादिदिक्ष्वत्र कृत्वा परिसमूहनम्।। १।। (ग्राथलायन स्मृति)

ग्राशापालांस्तु शक्रादीनासनेषु समावहेत्। दिक्पालकों के ग्रासन के लिए यह परिस्तरण बिछायें जाते हैं। एक-एक दिशा में तीन कुश डालना चाहिये। उन पर इन्द्रादि दिक्पालकों का ग्रावाहन करना चाहिये।

ततो ऋग्नेर्दक्षिरातो ब्रह्मासनार्थं उत्तरतश्च पात्रासादनार्थं कांश्चित्प्रागग्रान् दर्भानास्तृराीयात्। (ऋषलायन स्मृति)

इसके पश्चात् ग्रिग्न के दक्षिण दिशा में ब्रह्मा के ग्रासन के लिए एवं उत्तर में यज्ञपात्रों को रखने के लिए कुछ कुशाओं को पूर्वाभिमुख बिछाना चाहिये। ग्रिग्नेरशानतिस्त्ररंभसापरिषिच्य उत्तरास्तीर्शेषु दिश्वणसव्यपाणिभ्यां क्रमेण चरु स्थाली प्रोक्षणयौ, दवीं सुवौ, प्रणीताज्यपात्रे, इध्माबिहिषी इति द्वे द्वे पात्रे उदगपवर्ग प्राक्संस्थंयुब्जान्या सादयेत्। ग्रिग्न के चारों ग्रोर फिर से तीन बार ईशान्य से प्रदक्षिणाकार में परिषेचन करें।

वहा का मावाहन् (मिप्सिप्सिप्ताङ्क)— ततो यथोक्त लक्षगां ईशानिदग् मवस्थितं ब्राह्मगां मस्मिन् (सर्वाद्भुत शान्ति याग) कर्मिण ब्रह्मागां त्वामहं वृगो इति तत् पाणिं पाणिना गृहीत्वा वृगुयात्। उसके पश्चात् श्रेष्ठ लक्षगों से युक्त ईशान दिशा में उपविष्ठ ब्राह्मण को इस याग कर्म में म्रापको मैं

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

ब्रह्मा के रूप में वरण करता हूँ। कहकर हाथ पकडकर वरण करें।

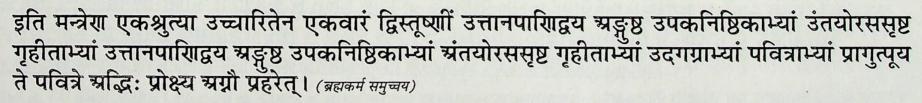
ततः ब्रह्मा वृतोस्मि। कर्म करिष्यामि इति उक्त्वा प्राङ्गुखो तीर्थदेशे यज्ञोपवीत्यचाम्य समस्य पाग्यङ्गुष्ठो भूत्वा स्रग्नेगाग्निं दक्षिणपादपुरः सरं परीत्य दिक्षिणतः उदङ्मुखः स्थित्वा स्रासनार्थ दर्भेषु दक्षिणभागस्थं एकं दर्भ स्रङ्गुष्टानामिकाभ्यां गृहीत्वा ''निरस्तः परावसुः'' ''इति नैर्स्नत्यान् निरस्य, स्रपः स्पृष्टा इदमहम् स्रवावसोः सदने सीदामि'' इति उदङ्भुख एवं वामोरोरुपिर दिक्षिणपादं संस्थाप्य उपविश्य यजमानेन गन्धाक्षतादिभिः स्रचितः सन् ''ब्रह्मन् ब्रह्मासि नमस्ते ब्रह्मन् ब्रह्मग् नमः। ब्रह्माणमावाहयामि'' यजमानेन स्राचार्येण वा स्रावाहितः।

इसके पश्चात् ब्रह्मा मुके यह स्वीकार है। कहकर पूर्वाभिमुख बैठकर (उत्तर एवं ईशान्य के बीच में) ब्रह्मवस्त्र (उत्तरीय) डालकर, हाथ जोडकर (संकल्प लेते समय जैसे हाथ बंद करते हैं वैसे) ऋग्नि के ऋगे प्रदक्षिणाकार में दाहिने पाँव को ऋगे कर चलकर दक्षिण में उत्तराभिमुख खड़े होकर, ऋपने ऋग्नाम के कुशों में दक्षिण की एक कुश को ऋङ्गुष्ठ एवं ऋगमिका ऋङ्गुलियों से खींचकर निरस्तः परावसः'' कहकर नैऋत्य दिशा में फेंकना चाहिये। फिर हाथ धोलें। ''इदमहम् ऋर्वावसोः सदने सीदामि'' मन्त्र कहकर उत्तराभिमुख ही बायें जाँघ पर दाहिने पैर को रखकर बैठना चाहिये। फिर यजमान ''ब्रह्मन् मन्त्र कहकर गन्ध ऋक्षतों से ब्रह्मा का पूजन करें।

उन्बृहस्पतिर्ब्रह्मा ब्रह्म सदन ग्राशिष्यते बृहस्पते यज्ञं गोपाय सयज्ञंपाहि सयज्ञपतिं पाहि समांपाहीति जिपत्वा सदा यज्ञ मना एव वर्तेत। इसे कहकर ब्रह्म निरन्तर यज्ञ में ही मन लगायें। यहाँ पर ब्रह्मा का वरणादि कार्य संपन्न हुग्ना।

उत्पवनं नाम शुद्धीकरराम्— शुद्धीकररा क्रिया को उत्पवन कहते हैं। सवितुष्ट्वाहिररयस्तूपः सवितापुर उष्णिक्। ग्राज्यस्योत्पवने विनियोगः।

ॐ सवितुष्ट्वाप्रसवउत्पुनाच्छिद्रेशा पवित्रेशा वसोः सूर्यस्य रिष्मिभिः॥ (यजुर्वेद)



इस एक स्वरी मन्त्र को कहते हुए एक बार हथेलियों को उपर किये दोनों हाथों के ऋंगुष्ठ एवं ऋनामिका ऋंगुलियों में पिवत्र के दो कुशों को ऋलग-ऋलग (परस्पर न मिलें) ऐसे पकड़ना चाहिये। उनका ऋग्रभाग उत्तर की ऋोर होना चाहिये। पहले उन्हें पिश्चम से पूर्व की ऋोर घी में जाकर ऊपर उठायें। फिर दो बाद इसी क्रिया को बिना मन्त्र कहते हुए दोहरायें। फिर उन पिवत्र कुशों को जल में प्रोक्षण कर ऋग्नि में डालना चाहिये।

ऋथाग्नेः पश्चात् परिस्तरगाद् बिहः म्रात्मनो ऋग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बिहिः सन्नहनीं रज्जुं उदगग्रां प्रसार्य तस्यां बिहिः प्रागग्रमुदगपवर्ग ऋविरलं ऋस्तीर्य तिस्मन् ऋज्यपात्रं निधाय सुवादि संमार्जयेत्।

उसके पश्चात् ग्रिय के पश्चिम में परिस्तरण के बाहर ग्रपने ग्रागे भूमि की प्रोक्षण कर वहाँ बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु (रस्सी) को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष् को पूर्वाग्र रखते हुए उत्तर की ग्रोर मोटे-बिछाना चाहिये। (बीच में जगह खाली न रहना चाहिये।) फिर उस बर्हिष् पर घी का पात्र रखें।

स्तुवादि संस्कार—दक्षिगोन हस्तेन स्तुक् स्तुवो गृहीत्वा सव्येन कांश्चिद्दर्भानादाय सहैवाग्नौ प्रताप्य स्तुचं निधाय स्तुवं वामहस्तेगृहीत्वा दक्षिगाहस्तेन स्तुवस्य बिलं दर्भाग्नैः प्रादक्षिगयेन प्रागादि प्रागपवर्गं त्रिः संमृज्य ऋधस्ताद्दर्भाग्नैः एव ऋभ्यात्मं बिलपृष्ठं त्रिः संगृज्य ततो दर्भागां मूलैः दंडस्याधस्ताद् बिलपृष्ठादारभ्य यावदुपरिष्ठाद् बिलं तावत्



भग्वेदीय सोम सर्वाद्धुत शान्ति यज्ञ

त्रिः संमृज्य मद्भिः प्रोक्ष्य स्रुव निष्टप्याज्य स्थाल्या उत्तरतः स्रुगसंसृष्टं निधाय उदकं स्पृष्टा तैरेव दर्भैः जुहूं च एव मेव संमृज्यद्युत्तरतोश्रुवाधुन्तरो निधाय दर्भानद्भिः क्षालियत्वा म्रग्नौ मनु प्रहरेत्। (ब्रह्मकर्म समुच्चय) पर्युक्षगां-तिर्यग्भूतेनहस्तेनकृतंपर्युक्षगां तथा। (माधलायन स्मृति)

हाथ को तिरचा करके चारों म्रोर सींचना पर्युक्षरा कहलाता है। म्रथाग्नेः पश्चात् परिस्तरसाद् बहिः म्रात्मनो म्रग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बहिः सन्नहनीं रज्जुं उदगग्रां प्रसार्य तस्यां बहिः प्रागग्रमुदगपवर्ग म्रविरलं म्रास्तीर्य तस्मिन् म्राज्यपात्रं निधाय स्रुवादि संमार्जयेत्।

उसके पश्चात् ऋग्नि के पश्चिम में परिस्तरण के बाहर ऋपने ऋगो भूमि की प्रोक्षण कर वहाँ बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु (रस्सी) को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष् को पूर्वाग्न रखते हुए उत्तर की ऋगेर मोटे-बिछाना चाहिये। (बीच में जगह खाली न रहना चाहिये।) फिर उस बर्हिष पर घी का पात्र रखें।

चरु शुद्धि—ततः सुशृतं स्तुव गृहीतेनाज्येन ग्रिमघार्य उदगुद्वास्य ग्रगन्याज्ययोर्मध्येन नीत्वा ग्राज्यात् दक्षिणतो बर्हिषि सोत्तरमासाद्य पुनरप्यिभधार्य नवाभिधार्य (पिरधानि ऊर्ध्व सिमधौ ग्रग्नौ निधाय।) पक्व चरु पात्र में स्थित चरु को घी से ग्रिमघार्य (सिञ्चन) करके उत्तर में रखना चाहिये। ग्रिग्नि एवं घी पात्र के बीच में इसे लाना चाहिये। ग्राज्यपात्र के दक्षिण में बर्हिष् पर इसे रखकर घी से ग्रिमघार करना चाहिये। न करने पर भी कोई बाधा नहीं है। ग्रिग्नि उपस्थानम् विश्वानि न इति तिसृणां ग्रात्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वयोरचने ग्रन्त्याया उपस्थाने विनियोगः।

ॐ विश्वािन नो दुर्गहां जातवेदः। पूर्व में पूजन करें। ॐ सिंधुननावादुंरितातिपर्षि॥ स्राग्नेय में पूजन करें। ॐ स्रग्ने स्रित्रवन्नमंसागृगाानः॥ दक्षिगा में पूजन करें। ॐ स्रस्माकं बोध्यवितातनूनां॥ नैर्म्यत्य में पूजन करें। (ऋखेद ४४.६) ॐ यस्त्वाहृदाकीरिगाामन्यमानः॥ पश्चिम में पूजन करें। ॐ स्रमित्युं मत्यों जोहंवीमि॥ वायव्य में पूजन करें।

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन

ॐ जातंवेदो यशों ऋस्मासुंधेहि।। उत्तर में पूजन करें। ॐ प्रजाभिरग्ने ऋमृतृत्वमंश्यां।। ईशान में पूजन करें। (ऋषेद ४.४.१०) ॐ यस्मैत्वं सुकृतें जातवेदउलोकमंग्नेकृरावंस्योनं। ऋश्विनं स पुत्रिरां वीरवंन्तं गोमंन्तं र्यिनंशतेस्वस्ति।। (ऋषेद ४.४.११)

यह मन्त्र कहकर उपस्थान (प्रार्थना) करें। ॐ ग्रग्नये नमः। ॐ जानवेदसे नमः, ॐ हुताशनाय नमः। इन मन्त्रों से ग्रग्नि का पूजन करें। ॐ ग्रात्मने नमः, ॐ ग्रन्तरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। इन मन्त्रों से ग्रात्मा का पूजन करें। हाथ धो लें। ॐ ब्रह्मग्रों नमः। ॐ विसष्ठाय नमः। ॐ त्रयीवद्यात्मने नमः। इन मन्त्रों से ब्रह्मा का पूजन करें।

इध्म बन्धन रज्जुं इध्म स्थाने निधाय पाशिना इध्यममादाय मूलमध्याग्रेषु स्रुवेश त्रिरिमधार्य मूल मध्ययो र्मध्यभागे गृहीत्वा। सरज्जुं अनुयाजं प्रशीतायां प्रतिष्ठाप्य इध्म को हाथ में लेवें। उसके रज्जु (रस्सी) को खोलें। रज्जू को अनुयाज सिमत् के साथ प्रशीता पात्र पर रखना चाहिये। हाथ में लिए इध्यम को मूल, मध्य एवं अग्र में सुव से तीन बार घी से अभिधार्य (सिञ्चचन) करके, मूल एवं मध्य के बीच में पकड़कर (दाहिने हाथ में)— अयं ते वामदेवो जातवेदा अग्रिस्त्रिष्ठुप् इश्म हवने विनियोग:। अअयं तइध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्वचेद्धवर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनाः ।। वातवेदसेग्रये इदं न मम। इन मन्त्रों को कहकर इध्यम को अग्रि में डाल देवें। इध्म मूलं स्पृष्ट्वा अप: उपस्पृश्य आधारावाधारयेत्। इध्ममूल को छूकर हाथ धो लें। आधार होम करें।

स्राघार होम

वायव्य कोरादारभ्य ग्राग्नेय कोरा पर्यन्तं प्रजापतये स्वाहां। (मनसा स्मरन्) नैर्मृत्यकोरादारभ्य ऐशानी कोरापर्यन्तं प्रजापतये स्वाहां। प्रजापतय इदं न मम ग्रग्नेरुत्तरतः ग्रग्नये स्वाहां। ग्रग्नय इदं न मम। दक्षिरातः सोमाय स्वाहां। सोमाय इदं न मम।



व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहृती व्याहृतिहोमे विनियोगः। अभूः स्वाहां ऋग्नये इदं न मम। अभुवः स्वाहां वायवे इदं न मम। अस्वः स्वाहां सूर्याय इदं न मम। अभूर्भवः स्वः स्वाहां प्रजापतये इदं न मम।

नवग्रह होमः

प्रधान देवता सूर्य होमः—ग्राकृष्णोनेत्यस्य हिरायस्तूपः सिवता त्रिष्टुप्, प्रधान देवता ग्रादित्य प्रीत्यर्थे ग्रर्कसिमत्, ग्राज्य, चरु होमे विनियोगः। अ ग्राकृष्णोन् रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्य च। हिरुगययेन सिवता रथेनाऽऽदेवो यांति भुवनानि पश्यन् स्वाहां।। (मावेद १.३५.२)

म्प्रादित्यायेदं न मम। २८ बार इस मंत्र से मर्क सहित घी एवं चरु से होम यह संख्या ८ या २८ या १०८ बार कर सकते हैं।

सूर्य मधिदेवता म्रिग्न होम:—म्रिग्नं दूर्तिमत्यस्य कारावो मेधातिथिरिग्नर्गायत्री मादित्यस्य मधिदेवता मिग्नप्रिग्नियर्थे मर्कसमित् माज्य चरु होमे विनियोगः।

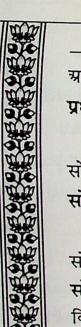
अस्य मुक्तिन्यं स्वाहां। (मावेद १.१२.१)

अभादित्य मधिदेवतायै म्रग्नये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३+३+३=£ म्राहुति)

सूर्यं प्रत्यधिदेवता रुद्र होमः— ॐ कद्रुद्राय इत्यस्य घोरः कारवो रुद्रो गायत्री ऋदित्यस्य प्रत्यधिदेवता रुद्र प्रीत्यर्थे ऋकसिमत् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कदुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टंमाय तव्यंसे। वोचेम् शंतंमं हृदे स्वाहां॥ (ऋखेद १.४३.१)

म्रादित्य प्रत्यिधदेवता रुद्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३ सिमत् + ३ घी + ३ चरु की म्राहुतियाँ = £ म्राहुतियाँ) प्रार्थना – दिवाकरं दीप्त सहस्त्ररिष्मं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिम्। म्रंशुं भानुं सूर्यमादिं ग्रहागां दिवाकरं सदा शरगमहं प्रपद्ये।।



ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन

स्रादित्याय नमः।

प्रधान देवता सोम होमः—ग्राप्यायस्व गौतमः सोमो गायत्री प्रधान देवता चन्द्रप्रीत्यर्थे पलाश सिमत्, ग्राज्य, चरु होम विनियोगः। ॐ ग्राप्यांयस्व समेतु ते विश्वतः सोम्वृष्यंयम्। भवा वार्जस्य सङ्ग्थे स्वाहां॥ (भ्रावेद १.६१.१६)

सोमाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पलाश सहित घी एवं चरु से होम करें।

सोम ऋधिदेवता ऋप होमः — ऋप्सु मे सिन्धद्वीप ऋषोगायत्री सोमस्य ऋधिदेवता ऋप् प्रीत्यर्थे पलाश सिमत् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ग्रुप्सु में सोमों ग्रब्रवीदुन्तर्विश्वांनि भेषुजा। ग्रुग्निं चं विश्वशंभुवं स्वाहां॥ (मानेद १०.स.६)

सोमाधिदेवतायै ऋद्भ्य इदं न मम। इस मन्त्र से तीन बार होम करें। सोम प्रत्यधिदेवता गौरी होम—गौरीर्मीमायेत्यस्य ग्रौचत्यपुत्रो दीर्घतमा उमा जगती। सोमस्य प्रत्यधिदेवता गौरी प्रीत्यर्थे पलाशसमित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ गौरीर्मिमाय सिल्लानि तक्षत्येकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। ऋष्टापंदी नवंपदी बभूवुषीं सहस्राक्षरा परमे व्योमन् स्वाहां।

सोम प्रत्यिधदेवता गौर्यें इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यं देवताः पितरश्चापिबन्ति तं वै वरेगयं ब्रह्मेन्द्रवन्द्यं चन्द्रं सदा शरगामहं प्रपद्ये॥ चन्द्राय नमः।

प्रधान देवता ग्रङ्गारक होमः—ग्रग्निर्मूर्धा विरूपोङ्गारको गायत्री। प्रधान देवता ग्रङ्गारक प्रीत्यर्थे खदिरसमित ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।



ॐ ऋग्निर्मूर्धा द्विः क्कुत्पतिः पृथिव्या ऋयम्। ऋपां रेतांसि जिन्वति स्वाहां। (ऋग्वेद =.४४.१६)

म्रङ्गारकाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र में खदिर सिमत्, घी एवं चरु से होम करें।

ग्रङ्गारक ग्रधिदेवता भूमि होम:—स्योना पृथिवीत्यस्य मेधातिथि: पृथिवी गायत्री। ग्रङ्गारकस्य ग्रधिदेवता भूमि प्रीत्यर्थे खदिरसमित् ग्राज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षुरा निवेशंनी। यच्छां नः शर्मं सुप्रथः स्वाहां। (मावेद १.२२.१४)

म्रङ्गारकाधिदेवतायै भूम्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

ग्रङ्गारक प्रत्यधिदेवता स्कन्द होमः —कुमारं माता स्कन्दः स्कन्दिस्त्रष्टुप्। ग्रङ्गारकस्य प्रत्यधिदेवता स्कन्द प्रीत्यर्थे खदिर समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कुमारं माता युंवतिः समुंब्धं गुहां बिभर्ति न दंदाति पित्रे

ऋनींकमस्य न मिनज्जनांसः पुरः पंश्यन्ति निहितमर्तौ स्वाहां। (ऋषेद ४.२.१)

ग्रङ्गारक प्रत्यधिदेवतायै स्कन्दाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— महेश्वरस्थाननस्वेदिबन्दोर्भूमौ जातं रक्तमालांबराद्यं। सुरिश्मगां लोहिताङ्गं कुमारमङ्गारकं सदा शरगामहं प्रपद्ये॥ मङ्गारकाय नमः।

प्रधान देवता बुध होम:—उद्बुध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बुध प्रीत्यर्थे ग्रपामार्ग समित्, ग्राज्य, चरु होमे विनियोग:।

ॐ उद्घंध्यध्वं समनसः सखायः सम्ग्रिमिंध्वं बृहवः सनीळा।

दिध्क्रम्ग्रिमुषसं च देवीमिन्द्रां वृतोऽवंसे निह्वंये वः स्वाहां। (मावेद १०.१०१.१)

बुध म्रिधदेवता विष्णु होमः—इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री, बुधस्य म्रिधदेवता विष्णु प्रीत्यर्थे म्रपामार्ग सिमत् म्राज्य चरु होमे विनियोगः। ॐ इदं विषाविचंक्रमे त्रेधा निदंधे पुदम्। समूळहमस्य पांसुरे स्वाहां। (मानेद १.२२.१७)

बुधाधिदेवतायै विष्णावे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष होम:—सहस्रशीर्षा नारायगा: पुरुषोऽनुष्टुप्, बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष प्रीत्यर्थे ग्रपामार्ग समित्, ग्राज्य, चरु होमे विनियोग:।

ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यंतिष्ठदृशाङ्गलम् स्वाहां। (सप्वेद १०.६०.१)

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुषाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रौ महाद्युति:। सूर्य प्रियकरो विद्यान् पीडां दहतु मे बुध:।। अबुधाय नमः। प्रधान देवता बृहस्पति होमः — बृहस्पते गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बृहस्पति प्रीत्यर्थे पिप्ल समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बृहंस्पते ऋति यदुर्यो ऋहीं द्युमद्विभाति क्रतुंमुज्जनेषु। यद्दीदय्च्छवंस ऋतप्रजात् तदुस्मासु द्रविंशां धेहि चित्रम् स्वाहां ॥ (ऋग्वेद २.२३.१४)

बृहस्पतये इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पिप्ल सिमत्, घी एवं चरु से होम करें।

बृहस्पति ऋधिदेवता इन्द्र होमः — इन्द्र श्रेष्ठानि गृत्समद इन्द्रस्त्रिष्टुप्, बृहस्पतेरिधदेवता इन्द्रप्रीत्यर्थे पिप्पल समित् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्र श्रेष्ठांनि द्रविंगानि धेहि चित्तिं दक्षंस्य सुभगुत्वम्समे।

पोषं रयीगामरिष्टिं तुनूनां स्वाद्मानं वाचः सुंदिन्त्वमह्याम् स्वाहां। (सप्वेद २.२१.६)

बृहस्पत्यिधदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

बृहस्पति प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा होमः—ब्रह्मणाते विश्वामित्रो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, बृहस्पति प्रत्यधिदेवता ब्रह्म प्रीत्यर्थे पिप्लसमित् स्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ब्रह्मंगा ते ब्रह्मयुजां युनिन्म हरी सरवांया सध्मादं ऋाशू।

स्थिरं रथं सुखिमन्द्राधितिष्ठंन् प्रजानन् विद्वाँ उपयाहि सोम्म् स्वाहां। (भग्वेद ३.३४.४)

बृहस्पति प्रत्यधिदेवतायै ब्रह्मगो इदं न मम। इस मंत्र से तीन बर होम करें।

प्रार्थना— बुध्यात्मनो यस्य न कश्चिदन्यो मितं देवा उपजीवंति यस्य। प्रजापते रात्मजं धर्मनिष्ठं गुरुं सदा शरगामहं प्रपद्ये॥

अगुरुवे नमः।

प्रधान देवता शुक्र होय:—शुक्रं ते भारद्वाजः शुक्रस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता शुक्र प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ शुक्रं तें ऋन्यद्यंज्तं तें ऋन्यद्विषुंरूपे ऋहंनी द्यौरिवासि।

विश्वा हि माया अवंसि स्वधावो भुद्रा तें पूषित्रह रातिरंस्तु स्वाहां। (मावेद ६.४=.१)

शुक्राय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से भौदुम्बर समित्, घी एवं चरु से हाम करें।

शुक्र ऋधिदेवता इन्द्राग्गी होमः—इन्द्राग्गी वृषाकिपरिंद्राग्गी पंक्तिः, शुक्रस्य ऋधिदेवता इन्द्राग्गी प्रीत्यर्थे ऋदुम्बर सिमत्, ऋण्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ इंद्रागीमासु नारिषु सुभगांम्हमंश्रवम्। नृह्यंस्या ऋप्रं चन ज्रसा मरते पतिर्विश्वंस्मादिन्द्र उत्तरः स्वाहां।

(सग्वेद १०. ८६. ११)

उ शुक्र अधिदेवतायै इन्द्रार्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।



ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन

शुक्र प्रत्यिधदेवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री, शुक्रप्रत्यिधदेवता इन्द्रं प्रीन्यर्थे ग्रौदुम्बर सिमत्, ग्राज्य, चरु होमे विनियोगः। ॐ इंद्रं वो विश्वतस्परि हर्वामहे जनेंभ्यः। ग्रुस्माकंमस्तु केर्वलः स्वाहां।। (ग्रावेद १.७.१०)

अशुक्र प्रत्यिधदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। प्रार्थना— वर्षप्रदं चिन्तितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं सुनयोमपन्नम्। तं भार्गवं योगविशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शररामहं प्रपद्ये॥ अशुक्राय नमः।

प्रधान देवता शनैश्चर होमः—शमग्निरित्यस्य इरिबिठिः शनैश्चर उष्णिक्, प्रधान देवता शनैश्चर प्रीत्यर्थे शमी समित्, ग्राज्य, चरु होमे विनियोगः। ॐ शम्गिग्रुरिग्निभिः कर्च्छंनंस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरुपा ग्रपुस्त्रिधः स्वाहां। (ग्रावेद ८.१८.६)

शनैश्चराय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से शमी समित्, घी एवं चरु से होम करें।

शनैश्चर मधिदेवता प्रजापित होमः—प्रजापते हिररयगर्भः प्रजापितिस्त्रिष्टुप्, शनैश्चरस्य मधिदेवता प्रजापितप्रीत्यर्थे शमी समित्, म्राज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ प्रजांपते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों ऋस्तु वृयं स्यांम् पतंयो रयीगाम् स्वाहां॥ (ऋखेद १०.१२१.१०)

शनैश्चरस्य ऋधिदेवता प्रजापतये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

शनैश्चर प्रत्यधिदेवता यम होम:—यमाय हसोमं यमो यमोनुष्टुप्, शनैश्चरस्य प्रत्यधि देवता यम प्रीत्यर्थे शमीसमित् ग्राज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ युमाय सोमं सुनुत युमायं जुहुता हविः। युमं हं युज्ञो गंच्छत्युग्निदूंतो ऋरंकृतः स्वाहां। (मण्वेद १०.१४.१३)

शनैश्चर प्रत्यधिदेवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैभोंगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं शनैश्चरं सदा शरगामहं प्रपद्ये॥ अशनैश्चराय नमः।

प्रधान देवता राहु होम—कयानो वामदेवो राहुर्गायत्री प्रधान देवता राहु प्रीत्यर्थे दूर्वासमित् ग्राज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ कर्यानश्चित्र ग्रा भुंवदूती सदावृंधः सरवां। कयाशचिष्ठया वृता स्वाहां राहवे इदं न मम॥ (मावेद ४.३१.१)

२ = बार इस मंत्र से दूर्वा सिमत्, घी एवं चरु से होम करें।

राहु ऋधिदेवता सर्प होमः—ग्रायं गौ: सार्पराज्ञी: सर्पा गायत्री। राहु ऋधिदेवता सर्प प्रीत्यर्थे दूर्वा सिमत् ग्राज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ स्रायं गौ: पृश्निरक्रमीदसंदन्मातरं पुर:। पितरं च प्रयंत्स्वः १ स्वाहां।। (मावेद १०.१=£.१)

राहु ऋधिदेवतायै सर्पेभ्य: इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु होमः—परं मृत्युः संकुसिको मृत्युस्त्रिष्टुप्। राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो ऋनुपरेहि पंथां यस्ते स्व इतंरो देव यानांत्। चक्षुंष्मते शृरावृते तें ब्रवीमि मा नं: प्रजां रीरिषो मोत वीरान् स्वाहां। (ऋग्वेद १०.१=.१)

राहु प्रत्यधिदेवतायै मृत्यवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यो विष्णुनैवामृतं भोक्ष्यमाराः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्यौ ग्रसते पर्व काले राहुं सदा शररामहं प्रपद्ये॥

अराहवे नमः।

षष्ठ दिन

प्रधान देवता केतु होमः—केतुं कृरावन्नत्यस्य मंत्रस्य मधुच्छन्दाः केतुर्गायत्री प्रधान देवता केतु प्रीत्यर्थे कुश सिमत् ऋण्य चरु होमे विनियोगः। ॐ केतुं कृरावन्नकेतवे पेशों मर्या ऋपेशसें। समुषद्भिरजायथाः स्वाहां।। (ऋण्वेद १.६.३)

केतवे इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से कुश सिमत्, घी एवं चरु से होम करें।

केतु ऋधिदेवता ब्रह्म होमः — ब्रह्मजज्ञानिमिति नकुलो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, केत्वधिदेवता ब्रह्मप्रीत्यर्थे कुश सिमत् ऋाज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ब्रह्मं जज्ञानं प्रंथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचीवेन स्रांवः। स ब्रिथ्यां उपमा संस्य विष्यः स्वर्थ सोनियांत्रः जिल्

स बुधियां उपमा ऋंस्य विष्ठाः स्तश्च योनिमसंतश्च विवः स्वाहां॥ (यजुर्वेद-४ काराड-२ प्रश्न- म्याज्ञ)

केतु ऋधिदेवताब्रह्मरो इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

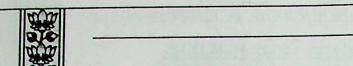
केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्त होम—स चित्र चित्रं भारद्वाजश्चित्रगुप्तस्त्रष्टुप्। केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्तप्रीत्यर्थे कुश समित् ऋाज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स चित्र चित्रं चितर्यन्तम्समे चित्रंक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्। चन्द्रं रुयिं पुंरुवीरं बृहंतं चन्द्रंचन्द्राभिर्गृगाते युवस्व स्वाहां॥ (मावेद ६.६.७)

केतु प्रत्यधिदेवतायै चित्रगुप्ताय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना—हे ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्ताः ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः। ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शरगमहं प्रपद्ये॥

उन्केतवे नमः। यहाँ पर नवग्रह होम संपन्न हुम्रा। म्रागे छः कर्म साद्गुराय देवता होम होगा।



कर्म साद्गुराय देवता होमः

कर्म साद्गुरथ देवता विनायक होम:-१—म्रातून इत्यस्य कारवः कुसीदी विनायको गायत्री क्रतु साद्गुरथदेवता विनायक प्रीत्यर्थे सिमत् म्राज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ स्नातून इन्द्रक्षुमन्तं चित्रं ग्रामं सङ्कंभाय म<u>हाहस्ती दक्षिंगोन</u> स्वाहां। (मावेद =.=१.१)

कर्म सादगुरायदेवतायै विनायकाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुगयदेवता दुर्गा होम:-२—जातवेद से कश्यपो दुर्गा त्रिष्टुप् क्रतुसाद्गुगयदेवता दुर्गा प्रीत्यर्थे सिमत् आज्य चरु होमे विनियोग:।

ॐ जातवेंदसे सुनवाम् सोमंमरातीयतो निदंहाति वेदः।

स नं: पर्षदितं दुर्गािशा विश्वां नावेवसिंधं दुरितात्यृग्निः स्वाहां ॥ (मावेद १. ६६.१)

क्रतु साद्गुराय देवतायै दुर्गायै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुरायदेवता क्षेत्रपाल होम:-३-क्षेत्रस्य पतिना वामदेव: क्षेत्रपालोनुष्टुप् चरु होमे विनियोग:।

ॐ क्षेत्रंस्य पतिंना व्यं हितेनेवजयामिस। गामश्चं पोषियुत्वा सनोमृळातीदृशे स्वाहां। (भगवेद ४.४७.१)

क्रतु साद्गुग्य देवतायै क्षेत्रपालाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुरय देवता वायु होमः-४ — क्रांशाशिशुरित्यस्यित्रयोवायुरुष्शिक् क्रतु साद्गुरय देवता वायु प्रीत्यर्थे सिमत् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ क्राुगाशिशुंर्म्हीनांहिन्वत्रृतस्यदीधितिं। विश्वापरिप्रिया भुवदधिद्वता स्वाहां ॥ (मावेद £.१०२.१)



षष्ठ दिन

क्रतु साद्गुरय देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुराय देवता त्राकाश होमः-५—ग्रादित्यप्रबस्य वत्स ग्राकाशो गायत्री क्रतु साद्गुराय देवता ग्राकाश प्रीत्यर्थे सिमत् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ म्रादित् प्रुत्नस्युरेतंसो ज्योतिंष्पश्यंति वासुरं। पुरोयद्विध्यतेंद्विवा स्वाहां॥ (ऋखेद =.६.३०)

क्रतु साद्गुरयदेवतायै ग्राकाशाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुराय देवता ऋश्विनी देवता होमः-६ — ऋश्विनावर्ति राहूगरा। गोतमोश्विनावुष्णिक् ऋश्वि प्रीत्यर्थे समित् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ऋश्विंनावृर्तिरुस्मदागोमंद्दस्राहिरंगयवत्। ऋर्वाग्रथं समंनसानियंच्छतं स्वाहां॥ (ऋग्वेद १.६२.१६)

क्रतु साद्गुगय देवतायै ऋश्विभ्यां इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता होमः

कृतु संरक्षक देवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री कृतु संरक्षक देवता इन्द्र प्रीत्यर्थे समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वत्स्पिर् हवांमहे जनेंभ्यः। श्रुस्माकंमस्तु केवंलः स्वाहां॥ (अपवेद १.७.१०)

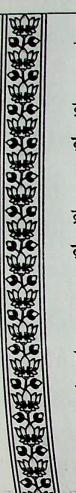
क्रतु संरक्षक देवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

कृतु संरक्षक देवता ऋग्नि होमः — ऋग्नि दूर्तिमत्यस्य कारावो मेधातिथिरग्निर्गायत्री कृतु संरक्षक देवता ऋग्नि प्रीत्यर्थे सिमत् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ऋग्निं दूतं वृंगीमहे होतांरं विश्ववेंदसम्। ऋस्य युज्ञस्यं सुक्रतुम् स्वाहां॥ (ऋग्वेद १.१२.१)

क्रतु संरक्षक देवतौ ग्रग्नय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

कृतु संरक्षक देवता यम होमः—यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता यम प्रीत्यर्थे सिमत् ऋाज्य चरु होमे विनियोगः।



अ युमायु सोमं सुनुतयमायंजुहुता हृविः। युमंहंयुज्ञो गंच्छत्युग्निदूत्तो ऋरंकृतः स्वाहां॥ (ऋषेद १०.१४.१३)

क्रतु संरक्षक देवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र को दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता निर्मित होम:—मोषुगाः कागवो निर्मितिर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता निर्मित प्रीत्यर्थे सिमत् ऋाज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ मोषुराः परांपरानिऋीतर्दुर्हशांवधीत्। पदीष्ट तृष्णांयास्ह स्वाहां।। (मानेद १.३=.६)

क्रतु संरक्षक देवतायै निर्ऋतये इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

कतु संरक्षक देवता वरुगा होमः—तत्वायामीत्यस्य शुनः शेपोवरुगस्त्रष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता वरुगा प्रीत्यर्थे समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तत्वांयाम् ब्रह्मंशा वन्दंमान्स्तदाशांस्तेयजंमानो ह्विभिः।

ऋहेंळमानो वरुगोह बोध्युरुंशंसुमानु आयुः प्रमीषीः स्वाहां॥ (सम्वेद १.२४.११)

क्रतु संरक्षक देवतायै वरुशाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वायु होमः—तव वायो व्यश्वोवायुर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् ऋण्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तवं वायवृतस्पतेत्वष्टंर्जामातरद्भुत। ऋवांस्यावृंशीमहे स्वाहां॥ (स्रवेद =.२६.२१)

क्रतु संरक्षक देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता सोम होम—सोमो धेनुमित्यस्य गौतमः सोमस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता सोम प्रीत्यर्थे समित् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ सोमों धेनुं सोमो ऋवींन्तमाशुं सोमों वीरं कंर्म्ययं ददाति।



षष्ठ दिन

सादुन्यं विद्थ्यं स्भेयं पितृश्रवंशां यो ददांशदस्मै स्वाहां॥ (मण्वेद १.६१.२०)

क्रतु संरक्षक देवतायै सोमाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता ईशान होमः—तमीशानिमत्यस्य गौतम ईशानो जगती क्रतु संरक्षक देवता ईशान प्रीत्यर्थे सिमत् ग्राज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तमीशांनं जगंतस्त्स्थुष्स्पितं धियं जिन्वमवंसे हूमहे व्यम्। पूषा नो यथा वेदंसामसंदृधे रंक्षिता पायुरदंब्धः स्वस्तये स्वाहां॥ (ऋखेद १. = £.४)

क्रतु संरक्षक देवतायै ईशानाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें। यहाँ पर क्रतु संरक्षक देवता होम संपन्न हुग्रा। व्याहृति होम:—व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापित: बृहृती व्याहृति होमे विनियोग:। ॐभू: स्वाहा, ग्रग्नये इदं न मम। ॐभुव: स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्व: स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुव: स्व: स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। इन मत्रों से एक बार होम करें।

प्रधान देवता सूर्य होमः

प्रधान देवता सूर्य होम: — बर्ग्महाँ ग्रसीत्यस्य सूर्यःप्रगाथो बृहती सूर्य प्रीत्यर्थे ग्राज्य चरु होमे विनियोगः। ॐ बर्ग्महाँ ग्रंसि सूर्य बळादित्य मृहाँ ग्रंसि। मृहस्ते स्तो मंहिमा पंनस्यते ऽद्धा देव मृहाँ ग्रंसि स्वाहां।। (ग्रावेद = १०१.११) ग्रा.गृ.सूत्रम् ॐ सूर्याय स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐ रुद्राधिपतये स्वाहा, रुद्राधिपतय इदं न मम। ॐ रिविकरसाय इदं न मम। ॐ ईश्वराय स्वाहा, ईश्वराय स्वाहा, सर्वोत्पातशमनाय स्वाहा, सर्वोत्पातशमनाय इदं न मम। प्रधान देवता के होम के बाद इन पाँच मंत्रों से घी की ग्राहृति एक-एक बार देवें॥

ॐ भूर्ग्रयें च पृथिव्यै चं महते च स्वाहां ऋग्रये पृथिव्यै महते च इदं न मम।





अ भुवों वायवेंचान्तिं क्षाय च महते च स्वाहां। वायवेऽन्तिरक्षाय महते च इदं न मम। अ सुवंरादित्यायं य दिवे चं महते च स्वाहां। ऋदित्याय दिवे महते च इदं न मम।

ॐ भुर्भूवः सुवंश्चन्द्रमंसे च नक्षंत्रेभ्योद्धिम्यश्चं महते च स्वाहां। (यनुर्वेद-महानारायगोपनिषद्-मारायक)

चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महते च इदं न मम। इन चार मंत्रों से भी घी की आहुतियाँ एक-एक बार देवें। ॐ भू: स्वाहा, ऋग्नये इदं न मम। ॐ भुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐ स्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। स्विष्टकृत् होमः—दर्व्यामुपस्तीर्य हिवर्भागस्योत्तरार्धतः सकृत् अवदाय अवतंतु द्विः अभिघार्य। स्रुवा से दर्वी में (स्रुक्) घी डालकर, चरु के उत्तर भाग से चरु को निकालकर (हाथ से) दर्वी में रखें। फिर स्रुवा से उप पर दो बार घी डालें। आगे कहने वाले मंत्र को कहते हुए होम कुराड में ईशान्य दिशा में डालें। यदस्येति हिररायगर्भोग्निः स्विष्टकृत् होमे विनियोगः।

ॐ यदंस्य कर्मगोत्यरीरिचंयद्वान्यूनिमहाकरम्। ऋग्निष्टित्स्वष्टकृद्विद्वान्सर्वं स्विष्टंसुहुतं करोतु मे॥ ऋग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्थियत्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्थयः स्वाहां॥ (श्रीत मन्त्र)

इन दो मंत्रों को कहकर ऋग्नि के ईशान्य भाग में होम करें। स्विष्टकृतेऽग्नय इदं न मम।

इध्म बंधन रज्जुं विस्तस्य

पहले जिस रस्सी (कुशा निर्मित) से इध्यम बाँधे थे उस रस्सी को खोलकर उसे—अरुद्राय पशुपतये स्वाहा, रुद्राय पशुपतये इदं न मम। कहकर होम करें। प्रायश्चित ग्राज्याहुती: सप्त जुहुयात्। प्रायश्चित सात घी की ग्राहुतियाँ देवें। ग्रयश्चितिवमदोया ग्रग्नि: प्रायश्चित्याज्य होमे विनियोग:।



षष्ठ दिन

ॐ स्रयांश्चाग्नेस्यनंभिश्चस्तीश्चस्त्यमित्वम्या स्रीस स्रियासावयंसाकतो यासंन्हव्यमूहिषेयानोंधेहि भेषज्ं स्वाहां॥ (यजुर्वेद-स्रारण्यक) स्रियोय इदं न मम। स्रतो देवा: कारावोमेधातिथिर्देवा गायत्री प्रायश्चिताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ त्रतोंदेवा त्र्रवंतु नो यतोविष्णुंर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धार्मामः स्वाहां।। (भगवेद १.२२.१६)

देवेभ्य इदं न मम। इदं विष्णुः कारावोमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधानिदंधे प्दं। समूंळहमस्यपांसुरे स्वाहां॥ (ऋग्वेद १.२२.१७)

विष्णवे इदं न मम। व्यस्त समस्त व्याहतीनां विश्वामित्र जमदिग्निरिद्धाज प्रजापतय ऋषयः, ऋग्निवायुसूर्यप्राजापतयो देवताः गाय त्र्युष्णिगनुष्टुबृहत्यश्छंदांसि। प्रायश्चित्ताज्य होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, ऋग्नये इदं न मम। ॐभूवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्पवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर यजमान के द्वारा करने वाला प्रायश्चित होम संपन्न हुआ। यज्ञ के पूजन होम में ऋनेक प्रकार के लोप संभव है। ऋतः उनके निवारण के लिए प्रायश्चित होम ऋगवश्यक है। यजमान के प्रायश्चित होम से भी बचे हुए लोप दोषों के निवारण के लिए ब्रह्म प्रायश्चित विधान है। ब्रह्मा के स्थान पर यदि कुश हो तो स्वयं ऋगचार्य ही ब्रह्म प्रायश्चित होम करें।

ब्रह्म प्रायश्चित्त होमः

ब्रह्मा के स्थान पर बैठे पं. जी के द्वारा यज्ञ में सपन्न लोप दोषों की निवृत्ति के लिए ब्रह्मा जी प्रायश्चित होम करते हैं। ततो ब्रह्मा कर्तारं परीत्याग्नर्वायव्यदेशे तिष्ठन् एता एव सप्त स्नाज्याहुतीर्जुहुयात्।

उसके बाद ब्रह्मा जी यजमान के पीठे से जाकर ऋग्नि के वायव्य दिशा में खडे होकर पूर्वोक्त सात मंत्रों से ऋाहुति देवें। ब्रह्म प्रायश्चित्याज्यहोमे विनियोग:।

ॐ ऋ्याश्चाग्नेस्यनंभिश्कास्तीश्चंसत्यमिंत्वम्या ऋंसि। ऋयांसावयंसाकृतो यासंन्हव्यमूंहिषेयानौं धेहि भेषुजम् स्वाहां॥ (यजुर्वेद-आरायक)

अप्रोय इदं न मम। इस पंक्ति को यजमान या अचार्य कहें।

ॐ स्रतों देवा स्रवंतु नो यतोविष्णुंविचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धार्मीमः स्वाहां।। (मावेद १.२२.१६)

देवेभ्य इदं न मम (इस पंक्ति को ऋाचार्य पढ़ें।)

ॐ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पुदं। समूळहमस्य पांसुरे स्वाहां।। (ऋग्वेद १.२२.१७)

विष्णव इदं न मम। (ग्राचार्य इस पंक्ति को कहें) अभूः स्वाहा, ग्रग्नये इदं न मम। अभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। अस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। अभूवः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। स्वाहा तक ब्रह्मा जी कहते है। इदं न मम वाला भाग यजमान व ग्राचार्य को ही कहना हैं, त्याग को ब्रह्मा नहीं करना चाहिये। इदं न मम त्याग कहलाता है। ततो ब्रह्मा यथा ग्रागतं तथैव स्वस्थाने उपविशेत्। ब्रह्मा जी जिस प्रकार ग्राये थे उसी प्रकार जाकर ग्रपने ग्रासन पर बैठें। ग्रनाज्ञातमिति मंत्रद्वयस्य हिरगयगर्भोग्निरनुष्टुप्, ज्ञाताज्ञातदोष निबर्हगार्थं प्रायिश्वत्ताज्य होमे विनियोगः।

ॐ म्रनांज्ञातं यदाज्ञांतं युज्ञस्यं क्रियतेमिथुं। ऋग्रेतदंस्य कल्पयत्वं हिवेत्थंयथात्थं स्वाहां॥ (यजुर्वेद-मारायक)

ग्रग्रये इदं न मम।

ॐ पुरुषसंमितो युज्ञोयुज्ञः पुरुषसंमितः। ऋग्नेतदंस्य कल्पयृत्वं हिवेत्थयथात्थं स्वाहां॥ (यजुर्वेद-श्रारण्यक्) यत्पाकत्रेत्याप्त्यस्त्रितोग्निस्त्रिष्ट्रप्। प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।



षष्ठ दिन

ॐ यत्पांकृत्रामनंसादीनदंक्षानयज्ञस्यं मन्वतेमर्त्यासः। ऋग्निष्टृद्धोतां क्रतुविद्विंजानन्यजिष्ठो देवाँऋंतुशोयंजाति स्वाहां॥ (ऋग्वेद १०.२.४)

अग्रय इदं न मम। अयद्वोदेवा अभितपामरुत स्त्रिष्टुप्। मंत्र तंत्र विपर्यासादि निमित्तक प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

ॐ यद्वोदेवा ऋतिपातयांनि वाचाच्रप्रयुंतीदेव्हेळंनं। ऋरायो ऋस्माँ ऋभिदुंच्छुनायतेन्यत्रास्मन्मंरुत्स्तन्निधेतन्स्वाहां॥ (यजुर्वेद-आरस्यक)

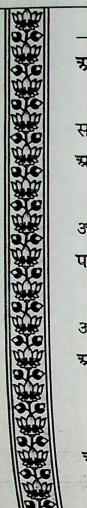
मरुद्भ्य इदं न मम। तत: स्कन्न भिन्नाद्यनियत निमित्ते सित वक्ष्यमाण प्रकारेण तत् प्रतिपदोक्त जप होमान् कुर्यात्। इसके बाद गिरने वाले, टूटने वाले सभी दोष जिनका वर्णन संभव नहीं है, उनके प्रायश्चित के लिए ग्रागे कहने वाले जप एवं होम करें।

अभू: स्वाहा, अग्नये इदं न मम। अभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। अस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। अभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर प्रायश्चित होम समाप्त हुआ। प्रारम्भ दिन से अन्तिम दिन तक यह होम कार्य एक जैसा है।

रुद्र सर्वाद्भुत होमस्या सर्वं फलावाप्त्यर्थं साङ्गतासिद्ध्यर्थं च यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार पूजां करिष्ये। होम कुरुड में ग्राचार्य एवं कलश वेदि में प्रधानाचार्य एक साथ पूजन करें। प्रधान देवता रुद्र मंत्रों से।

षोडशोपचार पूजनम् (कुराड में)

यान —कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं,।रक्तं रक्तविभूषगाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्॥ सप्ताश्चं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं।मेरोर्दिव्य गिरे: प्रदक्षिगाकरं सेवामहे भास्करम्॥ अधृिणः सूर्यग्रादित्यः।



स्रावाहन-ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यं तिष्ठद् दशांगुलम्।। (मग्वेद १०.६०.१) ॐ हिरंशयवर्शाा हरिंशीं सुवर्शीरज्त स्रंजाम्। चुन्द्रां हिर्शमंयीं लुक्ष्मीं जातंवेदो म् स्रावंह।। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसूर्याय नमः। ग्रावाहयामि। ग्रावाहनं समर्पयामि।

म्रासनम्—ॐ पुरुष ए्वेदं सर्वं यद्भूतं यंच्य भव्यंम्। उतामृंत्तत्वस्येशांनो यदन्नेना तिरोहं ति॥ (मावेद १०.६०.२)

ॐ तां मु स्रावंह जातवेदोे लक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंगयं विंन्देयं गामशृवं पुरुंषान्हम्॥ (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। ग्रासनं समर्पयामि।

पाद्यम् ॐ एतावांनस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुंषः। पादोऽस्य विश्वांभूतानि त्रिपादंस्यामृतं द्वि।। (भगवेद १०.६०.३)

ॐ ऋश्वपूर्वा रंथम्ध्यां हस्तिनांद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपंह्वर्ये श्रीमी देवी जुंषताम्।। (पञ्चम मणडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय ममः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ऋर्यं— ॐ त्रिपादूर्ध्व उद्देत् पुरुंषः पादों उस्येहा भंवत्पुनंः। ततो विश्वं व्यंक्रामत् साशनानश्नने ऋभि॥ (मण्वेद १०.६०.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरंगय प्राकारांमार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तुर्पयन्तीम्।

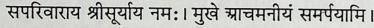
पुद्मेस्थितां पुद्मवंरार्ग् तामिहो पंह्नये श्रियंम्।। (पञ्चम मर्गडलस्य परिशिष्टम्) असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः हस्तयोः ऋर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

म्राचमनम् ॐ तस्मांद्विराळंजायत विराजो म्रधिपूरुंषः। स जातो म्रत्यंरिच्यत पृश्चाद् भूमिमथोंपुरः। (म्रावेद १०.६०.५)

ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुंष्टा मुदाराम्।

तां पुद्मिनींमीं शरंगामृहं प्रपंद्येऽलुक्ष्मीर्मेंनश्यतां त्वां वृंगो ।। (पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

षष्ठ दिन



पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ स्राप्यांयस्व समेंतु ते विश्वतः सोमुवृष्यियं। भवावार्जस्य संगुधे। (मण्वेद १०.६१.१६)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल-ॐ सद्योजातं प्रंपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नर्मः। भुवे भंवेनाति भुवे भवस्वमाम् भुवोद्धवाय नर्मः॥

(यजुर्वेद-महानारायसोपनिपत् स्रारस्यक्)

उ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दिध्काव्यों स्रकारिषं जिष्योरश्चंस्य वाजिनं:। सुरिभनोमुखां कर्त्प्रग् स्नायूंषितारिषत्।। (स्प्वेद ४.३६.६)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। दिध स्नानं समर्पयामि।

श्द्ध जल—ॐ वाम्द्रेवाय नमों ज्येष्ठाय नमंश्रेष्ठाय नमों रुद्राय नम्ः कालांय नम्ःकलंविकरशाय नमोबलांय नमो बलंप्रमथनाय नम्स्सर्वभूतदमनाय नमो म्नोन्मंनाय नमेः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-श्रारायक)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

ॐ घृतं मिंमिक्षे घृतमंस्ययोनिंधृते श्रितो घृतं वंस्य धामं। स्रुनुष्वधमार्वहं माद्यस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हृव्यम्।। (मण्वेद २.३.११) असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल-ॐ ऋघोरेंभ्योऽथ् घोरेंभ्यो घोरघोरं तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्व्शर्वेभ्यो नमंस्ते ऋस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥



(यजुर्वेद-महानारायशोपनिषत्-म्रारश्यक)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवातां ऋतायते मधुंक्षरंति सिंधंवः । माध्वींर्नः संत्वोषंधीः ॥ मृधुनक्तंमुतोषसो मधुंमृत् पार्थिंवं रजंः । मधुद्यौरंस्तु नः पिता ॥ मधुंमान्नो वनस्पतिर्मधुंमाँ ऋस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावी भवंतु नः ॥ (शावेद १.६०.६) असपिरवाराय

श्रीसूर्याय नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

श्द्ध जल—ॐ तत्पुर्रुषाय विद्यहें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयांत्।। (यजुर्वेद-महानारायशोपनिषत्-ग्रारशयक)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर) - ॐ स्वादुः पंवस्व द्वियाय जन्मंने स्वाद्रिंद्रांय सुहवीतु नाम्ने। स्वाद्मित्राय वर्रुंगाय वायवे बृहस्पतंये मधुंमाँ ऋदांभ्यः॥ (मण्वेद ६. = ५.६)

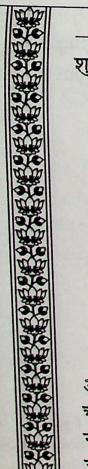
असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शर्करा स्त्रानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वं विद्यानामीश्वरस्सर्वं भूतानां ब्रह्माधिंपतिर्ब्रह्मगोऽ धिंपतिर्ब्रह्मां शिवो में ऋस्तु सदाशिवोऽम्॥ (यजुर्वेद-महानारायगोपनिषत्-आरण्यक)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फुलिनी र्या स्रंफुला स्रंपुष्पायाश्चं पुष्पिगीः। बृहस्पितं प्रसूतास्तानीं मुञ्चन्वं हंसः॥ (मावेद १०.६७.१४)

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। फल स्त्रानं समर्पयामि।



षष्ठ दिन

शुद्धोदक—ॐ त्रापोहिष्ठा मंयोभुवस्तानंऊर्जे दंधातन। महेरगाांय चक्षंसे॥ यो वं: शिवतंमोरस्स्तस्य भाजयते हनं:। उश्तीरिव मातरं:॥ तस्मा ऋरंगमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। त्रापों जनयंथा च नः। (भावेद १०.६.१-२-३)

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्ट्रंमाय तव्यसे। वोचेम् शंतमं हृदे॥ (मण्वेद १.४३.१)

ॐ यथां नो ऋदिंतिः कर्त्पश्चे नृभ्यो यथा गर्वे। यथां तोकायं रुद्रियंम्॥ (मानेद १.४३.२)

ॐ यथां नो मित्रो वर्रगो यथां रुद्रश्चिकंति। यथा विश्वें सुजोषंसः।

ॐ गाथपंतिं मेधपंतिं रुद्रं जलांषभेषजम्। तच्छं योः सुम्रमींमहे॥

ॐ यः शुक्र इंव सूर्यो हिरंगयमिव रोचंते। श्रेष्ठी देवानां वसुः।

ॐ शं नंः कर्त्यर्वे ते सुगं मेषायं मेष्ये। नृभ्यो नारिभ्यो गर्वे॥

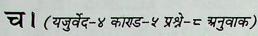
ॐ ग्रुस्मे सोम् श्रियमिष्ट्रं नि धेहि श्तस्यं नुगाम्। महिश्रवंस्तुविनृम्गाम्।।

ॐ मार्नः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरंत। स्ना नं इंदो वाजें भज।।

ॐ यास्ते प्रजा ऋमृतंस्य परंस्मिन्धामंत्रृतस्यं। मूर्धा नाभां सोमवेन ऋा भूषंतीः सोम वेदः॥ (ऋग्वेद १.४३.३-४-४-६-७-৮-६)

ॐ नमः सोमांय च रुद्रायं च नमंस्ताम्रायं चारुगायं च नमंः श्रांगायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों त्र्र्येव्धायं च दूरेव्धायं च नमों हन्त्रे च हनीयसे च नमों वृक्षेभ्यो हिरकेशेभ्यो नमंस्ताराय नमः श्रांभवें च मयोभवें च नमः शंक्रायं च मयस्क्रायं च नमः शिवायं च शिवतंराय च नम स्तीर्थ्यायच कूल्यांय च नमः पार्याय चावार्यायं च नमः प्रतरंगाय चोत्तरंगाय च नमं स्नातार्याय चालाद्यांय च नम्शर्ष्याय च फेन्यांय च नमः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय





ॐ तच्छंयोरावृंगीमहे। गातुं युज्ञायं। गातुं युज्ञ पंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। कुर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नो त्रस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः। (यज्वंद-आरणक) ॐ यत्पुर्रुषेगा हिवषां देवा युज्ञमतंन्वत। वृस्तो त्रंस्यासीदार्ज्यं ग्रीष्म इध्मः श्रारुद्धिवः॥ (भ्रायेद १०.६०.६) ॐ त्रादित्यवंग्रीं तप्सोऽधिजातो वन्स्पित्सत्वं वृक्षोऽर्थं बिल्वः। तस्य फलांनि तपुसा नुंदंतु मायांतंग् याश्चं बाह्या त्रंलक्ष्मीः। (भ्रायेद पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ युवं वर्त्त्राशि पीवसार्वसाथे युवोरिच्छंद्रा मंतंवो हसर्गीः।
ग्रवातिरममनृंतानि विश्वं ग्रतेनं मित्रा वरुशा सचेथे॥ (ग्रवेद १.१४२.१)
ॐ तं युज्ञं बर्हिष् प्रौक्ष्न् पुर्रुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा ग्रंयजंत साध्या ग्रषंयश्च ये॥ (ग्रवेद १०.६०.७)
ॐ उपैतु मां देवस्यः कीर्तिश्च मिशांना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं दुतदातुं मे॥

(सृग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

उस्परिवाराय श्रीसूर्याय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं प्रमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरास्तात्। ऋायुष्यम्ग्रयं प्रतिमुंञ्चशुप्रं यज्ञोपवीतं बलमंस्तु तेजः॥ ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पुशून्ताँ श्रेक्रे वायव्यानार्गयान् ग्राम्याश्च ये॥ (मावेद १०.६०.६)

परिशिष्टम्)

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन

903

ॐ क्षुत् पिंपासामेलां ज्येष्ठामेल्क्ष्मीं नांशयाम्यहंम्। ऋभूतिमसंम्बिद्धं च सर्वान्निर्गीुद मे गृंहात्॥ (पञ्चम मणडलस्य

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

त्राभरगा—ॐ हिर्रगयरूपः स हिर्रगय संदृग्पान्नपात् सेदु हिर्रगयवर्गाः। हिर्गययात् परियोने र्निषद्यां हिरग्यदा दंदत्यन्नंमस्मै॥

(सम्वेद २.३५.१०)

उत्सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। ग्राभरगं समर्पयामि।

गन्थ— ॐ गंधं द्वारां दुंराध्रषां नित्यपुंष्टां करीषिशाींम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्॥ (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्) ॐ तस्मांद्यज्ञात् सर्वेहुत् ऋचः सामांनि जिज्ञरे। छन्दांसि जिज्ञरे तस्माद्य जुस्तस्मांदजायत॥ (ऋग्वेद १०.६०.६) असपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। गन्धं समर्पयामि।

चक्षत—ॐ ऋर्चेत् प्रार्चेत् प्रियंमेधासो ऋर्चेत। ऋर्चेन्तु पुत्रका उतपुरंत्र धृष्यवर्चत।। (ऋर्वेद =. ६ £. =)

उत्सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। त्रक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाशा—ॐ त्रार्यने ते प्रार्यशो दूर्वीरोहंतु पुष्पिशाः। हृदाश्चं पुगडरीकाशि समुद्रस्यं गृहा इमे।। (स्मिनेद १०.१४२. म्) ॐ तस्मादश्चां त्रजायन्त ये के चो भ्यादंतः। गावोहजज्ञिरे तस्मात् तस्मांज्ञाता ऋंजावर्यः॥ (समिनेद १०.६०.१०) ॐ मनसः काममाकूर्तिं वाचः सत्यमंशीमहि। पुशूनां रूपंमन्नस्य मिय् श्रीः श्रंयतां यशः॥ (समिनेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)



408

उसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पुष्पाशि समर्पयामि।

प्रथमावरगा पूजनम्—ॐहृदयाय नमः। ग्राग्नेय दिशि। ॐशिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। ॐशिखायै वषट् नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐकवचाय हुम् नमः। वायव्यां दिशि। ॐनेत्रत्रयाय वौषट् नमः। ग्राग्ने ॐग्रस्त्राय फट् नमः। ग्राग्नेयादि कोगोषु पूजयेत् (ग्रनुष्ठान पद्धित)। पूजन करे।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। अग्रग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्शाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। अयमाय प्रेताधिपतये कृष्णावर्णाय दराड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमृति पार्षदाय नमः। अनिर्मृतये रक्षोधिपतये रक्तवर्शाय खङ्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमृति पार्षदाय नमः। अवरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमृति पार्षदाय नमः। अवायवे प्रागाधिपतये धूम्रवर्णाय ऋंकुश हस्ताय हरिगावाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नम:। असोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्शाय गदा हस्ताय ऋश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्शाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। अग्रनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्गाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिाकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नम:। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में ग्रनन्त का पूजन करें। अब्रह्मरो लोकाधिपतये कंजवर्शाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्तिपार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। (अनुष्ठान पद्धित)

तृतीयावररापूजनम् — ॐ वज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (म्राग्नेय में) ॐदराडाय नमः। (दक्षिरा में) ॐखड्गाय नमः। (नैर्मृत्य) ॐपाशाय

षष्ठ दिन

207

नमः। (पश्चिम में) अन्नंकुशाय नमः। (वायव्य में) अगदायै नमः। (उत्तर में) अत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) अचक्राय न मः। (पश्चिम नैर्मृत्य के बीच में) अपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) (मनुष्टान पद्भृति)

सूर्य ऋष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐग्ररुणाय नमः। ॐशर्गयाय नमः। ॐकरुणारस सिन्धवे नमः। ॐग्रसमान बलाय नमः। ॐग्रार्तरक्षकाय नमः। ॐग्रादित्याय नमः। ॐग्रादिभूताय नमः। ॐ ग्रिखिलागमवेदिनेनमः। ॐ ग्रच्युतायनमः। ॐ ग्रिखिलज्ञायनमः। ॐग्रनतायनमः। ॐइनायनमः। ॐविश्वरूपायनमः। ॐइन्द्रायनमः। ॐ भानवेनमः। अइन्दिरामन्दिरायनमः। अ स्राप्तायनमः। अ वन्दनीयायनमः। अईशायनमः। अ सुप्रसन्नायनमः अ सुशीलायनमः अ सुवर्चसे नमः ॐवसुप्रदायनमः। ॐवसवेनमः। ॐवासुदेवायनमः। ॐउज्जवलायनमः। ॐउग्ररूपायनमः। ॐऊर्ध्वगायनमः। ॐविवस्वतेनमः। ॐउद्यत्किरणजालयनमः। अहिषकेशायनमः। अर्जिस्वलायनमः। अवीरायनमः। अनिर्जरायनमः। अजयाय नमः। अर्जे करद्ववभावरूपयुक्तसारथये नमः। अरुग्धन्त्रे नमः। ॐ मृक्षचक्रचराय नमः। ॐ मृजुस्वभाविचत्ताय नमः। ॐ नित्यस्तुत्याय नमः। ॐ मृकारमातृकावर्रारूपाय नमः। ॐ उज्जवलतेजसे नमः। ॐ मृक्षायिधनाथाय नमः। ऊमित्रायनमः। ऊपुष्काराक्षाय नमः। ऊ लुप्तदन्ताय नमः। ऊशान्ताय नमः। ऊकान्तिदाय नमः। ऊधनाय नमः। ऊकनत्कनकभूषाय नमः। ऊ खद्योताय नमः। ॐलूनिताखिलदैत्याय नमः। ॐसत्यानन्द स्वरूपिरो नमः। ॐग्रपवर्गप्रदाय नमः। ॐग्रार्तशररयाय नमः। ॐएकाकिने नमः। ॐभगवते नमः। असृष्टिस्थित्यन्तकारियो नमः। अगुसात्मने नमः। अधृसिभृते नमः। अबृहते नमः। अबृह्ययो नमः। अपृक्षर्यदाय नमः। अशर्वाय नमः। अहरिदश्वाय नमः। अशौरये नमः। अदशदिक्सम्प्रकशाय नमः। अभक्तवश्याय नमः। अग्रोजस्कराय नमः। अजियने नमः। अजियने नमः। अजियमि युजराव्याधिवर्जिताय नमः। अग्रौत्रत्यापदसञ्चरथस्थाय नमः। अग्रसुरारये नमः। अकमनीकराय नमः। अग्रब्जवल्लभाय नमः। अग्रन्तर्बिहःप्रकाशाय नमः। ॐ ग्रचिन्त्याय नमः। ॐग्रात्मरूपिरो नमः। ॐ ग्रच्युताय नमः। ॐ ग्रपरेशाय नमः। ॐपरस्मै नमः। ॐज्योतिषे नमः। ॐग्रहस्कराय नमः। ॐरवये





नमः अहरये नमः। अपरमात्मने नमः। अतरुगाय नमः। अवरेगयाय नमः। अग्रहाणांपतये नमः। अभास्कराय नमः। अग्रादिमध्यान्तरिहताय नमः। असेख्यप्रदायनमः। असेकलजगतांपतये नमः। असूर्याय नमः। अकवये नमः। अनारायणाय नमः। अपरेशाय नमः। अतेजोरूपाय नमः। अहीं हिरगयगर्भाय नमः। अपे इष्टार्थदाय नमः। अग्राशुप्रपन्नाय नमः। अश्रीमते नमः। अश्रेयसे नमः। अभक्तकोटिसौख्यप्रदायिने नमः। अनिखलागमवेद्याय नमः। अनित्यानन्दाय नमः। अश्रितर्यानन्दाय नमः। अश्रितर शतनाम पूजां समर्पयामि। (ग्रनुष्ठान पद्धति)

धूपम् — अवनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। स्राघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुर्तः षुं व्यदंधुः कित्धा व्यंकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादां उच्येते।। (मानेद १०.६०.११) ॐ कर्दमैन प्रंजा भूता मृिय संभंव कर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। (मानेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

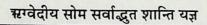
उसपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। धूपं त्राघ्रापयामि।

दीपम् ग्राज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं विह्नना योजितं मया। गृहारा मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह।। (स्मृति संग्रह) अ ब्राह्मरागोऽस्य मुखंमासी बाहू रांजुन्यः कृतः। ऊरू तदंस्य यद्वैश्यः पुद्ध्यां शूद्रो ग्रंजायत।। (म्रावेद १०.६०.१२) अ ग्रापः सृजंतु स्त्रिग्धांनि चिक्लीत् वस मे गृहे। नि चं देवीं मातरं श्रियं वासयं मे कुले।। (म्रावेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

उसपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं ग्राचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मराडलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य ग्रिभघार्य निर्मलं हिव तदुपिर न्यस्य ग्राज्येन द्रवीभूतं कृत्वा ''ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्वा निवेद्यान्नं संशोध्य इक्षिराहस्ते ग्रिग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्मवामहस्ते ग्रमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हिवराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य





षष्ठ दिन

4019

मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरभिमुद्रां बध्वा स्रमृतमयं भावियत्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहरोच्छां कुर्यात्।

''सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि'' इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पै: ''देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषारोदं हिविविभो'' इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिर्ण हस्तेन प्रार्णादि मुद्रा: प्रदर्शयेत्। ऋत्रात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं ऋबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्। नैवेद्य सारं रससमर्पर्णात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य ऋंलिलमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुन: पुन: विधितं देवं हन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के म्रागे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्र मगडल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल हिवस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हिवस् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं" इस वायु बीज को जपकर हिवस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) म्राग्न बीज को लिखकर उस म्राग्न से हिवस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में म्रमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हिवस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। उप्यूणि: सूर्य म्रादित्य:। इस मन्त्र का म्राठ बार जप करें। हिवस् को मत्रमय एवं म्रमृतमय होने की कल्पना करें। सुरिभ मुद्रा से म्रमृतमय हुम्ना है मानकर मलांश, धातु मंश एवं रसांश को म्रलग—म्रलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। "सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इससे परिषञ्चन करें। दोनों हाथों में पृष्य लेकर देवता का जीम नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। "निवेदयामि भवते जुषाण हिविविभो" कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—





प्रागाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर, ग्रपानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, व्यानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, उदानाय स्वाहा-ग्रङ्गष्ठ एवं ग्रनामिका मिलाकर, समानाय स्वाहा। सभी ग्रङ्गलियों को लािकर। ग्रन्न से मलांश एवं धातु के ग्रंश को ग्रलग कर केवल रसांश को ग्रर्पित करने की कल्पना करें।

''वं ग्रबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि'' कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। ग्रंगुष्ट एवं ग्रनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार ग्रमृत का जो ग्रंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार ग्रमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय मैं स्थित मानकर यथाशक्ति अधृशाः सूर्य ग्रादित्यः।'' इस मूल मंत्र का जप करें।

अ स्वादुः पंवस्व द्वियाय् जनमंने स्वादुरिद्राय सुहवीतुनाम्ने। स्वाद्मित्राय वर्रगाय वायवे बृहस्पतंये मधुमां ऋदांभ्यः॥ (मण्वेद ६. ५४.६) ॐ चुन्द्रमा मनंसो जातश्चक्षोः सूर्यो त्रजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्रिश्च प्रा्गाद्वायुरंजायत॥ (मावेद १०.६०.१३) अ श्रादां पुष्करिंशों पुष्ठिं पुंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिररामंथीं लुक्ष्मीं जातंवेदो मु श्रावंह।।

(मृग्वेद पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि । स्रमृतापिधानमिस कहकर उत्तरापोशन देवें । हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि । गगड्षार्थे जलं समर्पयामि । शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि । करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ।

ताम्बूल-पूर्गीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्गं कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ (स्मृति संग्रह-देवपूजा)

उसपरिवार श्री सूर्याय नमः। क्रमुक तांबुलं समर्पयामि।

षष्ठ दिन

नीराजन (त्रारित)—ॐ ऋर्चेत् प्रार्चेत् प्रियंमेधा सो ऋर्चेत । ऋर्चेत् पुत्रका उत पुरं न धृष्यवंचित । (स्पनेद = .६६. =)
ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वेता इमे । ध्रुवं विश्वमिदं जगंद् ध्रुवो राजां विशामयम् ॥
ॐ ध्रुवं ते राजा वर्रूगो ध्रुवं देवो बृहम्पितः । ध्रुवं त् इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम् ॥ (सपनेद १०.१७३.४)

असपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्य— ॐ सहस्त्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंभुवम्। विश्वं नारायंगां देवम्क्षरं पर्मं पदम्॥ विश्वतः परंमान्नित्यं विश्वं नाराय्गां हरिम्। विश्वं मेवदं पुरुष्तस्तिद्वश्च मुपंजीवित॥ पितं विश्रंस्यात्मेश्वरं .. शाश्वतं... शिवमंच्युतम्। नाराय्गां मंहाज्ञेयं विश्वातंमानं प्रायंग्रम्॥ नाराय्गा परोज्योतिरात्मा नाराय्गाः परः। नाराय्गा परं ब्रह्म तत्वं नाराय्गाः परः॥ नाराय्गा परो ध्याता ध्यानं नाराय्गाः परः। यच्य किंचिज्ञंगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा॥ मन्तर्वेहिश्चं तत्सर्वं व्यांप्य नाराय्गास्थितः। मन्तर्वमव्यं कृविं.. संमुद्रेऽन्तं विश्वशंभुवम्॥ प्रयुक्तोश प्रतीकाशं... हृदयं चाप्यधो मुंखम्। म्रधोनिष्ट्या वितस्याते नाभ्यामुपिर् तिष्ठति॥ ज्वालुमालाकुंलं भाति विश्वस्यायत्नं महम्। संतत् .. शिलाभिस्तु लेबत्याकोश सिन्निभम्॥ तस्याते सुषिरं.. सूक्ष्मं तिस्मन्सर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महानिप्रिर्विश्वाचिर्विश्वतो मुखः॥ सोऽग्रंभुग्व भंजंतिष्ठन्नहारमज्रः कविः। तिर्युगूर्ध्वमधश्रायी रुश्मयं स्तस्य संतता॥ संतापर्यति स्वं देहमापादतल्मस्तंकः। तस्य मध्ये विह्विशिखा म्रग्रीयोध्वां व्यवस्थितः॥ संतापर्यति स्वं देहमापादतल्मस्तंकः। तस्य मध्ये विद्विश्वात्यात्रायीयांध्वां व्यवस्थितः॥



नीलतोयदंमध्यस्थाद्विद्युल्लेखेव भास्वरा। नीवार्शूकंवत्नवी पीताभास्वत्यगूपंमा॥
तस्यां शिखाया मध्ये प्रमांत्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्य स शिवःस हिर्स्से द्रस्सोक्षरः पर्मः स्वराट्॥
अवगम्हाँ श्रीस सूर्य बळादित्य महाँ श्रीस। महस्ते स्तो महिमा पंनस्यते उद्धा देव महाँ श्रीस॥ (मानेद = १०१.११) मा.गृ.स्त्रम्
अनाभ्यां श्रासीदुंतरिक्षं शीष्णों द्यौः समंवर्तत। पुद्ध्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथां लोकाँ श्रंकल्पयन्। (मानेद-१०.६०.१४)
अश्राद्वां यः करिंगीं यष्टिं सुवर्गां हेम्मालिनीम्। सूर्या हिरग्रमंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् स्रावंह॥

(मृग्वेद-पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्) उप्सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिशा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रशाश्यन्ति प्रदक्षिशा पदे पदे॥ (देवपूजा-स्मृति संग्रह) अस्तास्यां सन् परिधयुस्त्रिः सृप्तस्मिर्धः कृताः। देवा यद्यः तंन्वाना ऋबंधन् पुरुषं पृशुं॥ (मन्वेद १०.६०.१४) अतां म् आवंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंशयं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानुहम्॥ (मन्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

उसपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। प्रदक्षिशा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य— अप्रभाकराय विदाहें दिवाकराय धीमिह । तन्नों सूर्य: प्रचोदयांत् ॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें ।) सर्वोपचार पूजनम्— अछत्रं समर्पयामि । चामरेशा वीजयामि । गीतं गायामि । नाट्यं नटामि । ग्रांदोळिकामारोहयामि । ग्रश्वमारोहयामि । गजमारोहयामि ।

समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवास्तानि धर्माशि प्रथमान्यांसन्।



षष्ठ दिन

तेह नार्कं महिमार्नः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ (ऋग्वेद १०.६०.१६) ॐ यः शुच्चिः प्रयंतो भूत्वा जुहुयांदाज्यमन्वंहम्। सूक्तं पंचदंशर्चं च श्रीकामः सत्तं जंपेत्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्) असपरिवाराय श्री सर्याय नमः। सर्वोपचार पजां समर्पयामि।

प्रार्थना— कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं,। रक्तं रक्तविभूषगाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्।। सप्ताश्चं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिगाकरं सेवामहे भास्करम्।। ॐ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायगायेति समर्पयामि॥ (पौराणिकम्)

ॐ ब्रह्मार्पगां ब्रह्महिविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मगा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।। (श्री भगवद्गीते) ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। ऋनेन पजनेन सपरिवारः श्री सर्यः प्रीयताम।

खिल प्रदान विधान—पूजन के बाद बिल प्रदान करें। यजमानः प्रतिबिलं संकल्प्य साक्षतजलं त्यजेत्। यजमान प्रत्येकबिल का संकल्प कहकर ग्रक्षत सिहत जल छोडें। ग्रग्न्यायतनस्य समंतात् दिक्षु माषभक्त कृष्माराड बिलीन् दिक् पालेभ्यो दद्यात्। यज्ञ शाला के चारों ग्रडद चावल कहू के बिल को दिक् पालकों को देना चाहिये। प्रत्येक बिल में दीप लजायें। १. पूर्व में चन्द्र को बिल प्रदान करें। त्रातारिमन्द्रङ्गर्गइन्द्रस्त्रिष्टुप् इन्द्रप्रीत्यर्थे बिलिदाने विनियोगः।

ॐ त्रातार्मिन्द्रंमिवतार्मिन्द्रंहवें हवे सुहवं शूरिमिन्दं। ह्यांमि शक्तं पुंरुहृतिमन्द्रं स्वस्ति नों मुधवां धात्विन्द्रं:॥ (म्रावेद ६.४७.११)



इंद्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्तकूष्माग्रड बलिर्नमम। भो इन्द्र दिशं रक्ष बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकटुंबस्य ग्रायु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। ग्रनेनबलिदानेनइन्द्र:प्रीयताम्। इति पृष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ग्रक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। २. ग्राग्नेय दिश में ग्राग्न को बलिप्रदान करें। ग्राग्नेद्तंमेधातिथिरग्निगौयत्री ग्राग्निप्रीत्यर्थे बलिप्रदाने विनियोग:।

अ सृगिं दूतं वृंगीमहे होतांरं विश्ववेदसम्। स्रस्य युज्ञस्यं सुक्रतुंम्॥ (भावेद १.१२.१)

ऋग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माग्रड बिलर्नमम। भो ऋग्ने दिशं रक्ष बिलं क्षुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ऋगुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। ऋनेनबिलदानेनऋग्निःप्रीयताम इति पृष्पाक्षतजलानि ऋग्नेयाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ऋक्षत जल को ऋग्नेयाभिमुख छोडना चाहिये।

३. दक्षरा दिशा में यम को बलिप्रदान करें। यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् यमप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ युमायु सोमं सुनुत युमायं जुहुता हविः। युमंहंयुज्ञो गंच्छत्युग्निदूतो अर्वकृतः॥ (ऋषेद १०.१४.१३)

यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्ति काय एष माषभक्तकूष्मागड बलिर्नमम। भो यम दिशं रक्ष बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ऋषु: कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। ऋनेनबलिदानेनयमःप्रीयताम। इति पुष्पाक्षतजलानि दक्षिगाभिमुखस्त्जेत्। इतना कहकर फूल ऋक्षत जल को दिक्षगाभिमुख छोडना चाहिये। ४. नैऋत्य दिशा में निऋति को बलिप्रदान करें। मोषुगाः कगवो निर्ऋतिर्गायत्री निर्ऋतिप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ मोषुराः परांपरानिर्ऋतिदुर्हगांवधीत्। प्दीष्टतृष्णांया सह।। (भग्वेद १.३ ८.६)

निर्मृतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्मागड बलिर्नमम। भो निमृते दिशां रक्ष बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ग्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। ग्रनेनबलिदानेननिर्मृतिःप्रीयताम। इति पुष्पाक्षत जलानि नैमृत्याभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ग्रक्षत

षष्ठ दिन

जल नैमृत्याभिमुख छोडना चाहिये। ४. पश्चिम दिशा में वरुण को बलिप्रदान करें। तत्वायामि शुनः शेपो वरुणस्त्रिष्टुप् वरुणप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः। ॐ तत्वांयाम् ब्रह्मंगा्वन्दंमान्स्तदाशांस्ते यजंमानोहिविभिः। स्रहेळमानो वरुगोहवोध्युरुंशंस्मान् स्रायुः प्रमोषीः॥

(भग्वेद १.२४.११)

वरुगाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माग्रड बिलर्नमम। मो वरुगा दिशं रक्ष बिलं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ग्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। ग्रनेनबलिदानेनवरूगःप्रीयताम। इति पृष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ग्रक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये। ६. वायव्य दिशा में वायु को बिलप्रदान करें। तववायोव्यश्चोवायुर्गायत्री वायुप्रीत्यर्थे बिलप्रदाने विनियोगः।

ॐ तवंवायवृतस्पतेत्वष्टुंर्जामातरद्भत। ग्रवांस्या वृंगीमहे॥ (म्रावेद ६.२६.२१)

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माग्रड बलिर्नमम। मो वायो दिशं रक्ष बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। ऋनेनबलिदानेनवायुःप्रीयताम। इति पृष्पाक्षतजलानि वायव्याभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ऋक्षत जल को वायव्याभिमुख छोडना चाहिये। ७. उत्तर दिशा में सोम को बलिप्रदान करें। सोमोधेनुं गोतमः सोमस्त्रिष्टुप् सोमप्रीत्यर्थे बलिप्रदाने विनियोगः।

ॐ सोमों धेनुं सोमो ऋवींन्तमा्शुं सोमों वी्रं कंर्म्ययं ददाति। सादुन्यं विद्थ्यं सुभेयं पितृश्रवरां यो ददांशदस्मै॥ (ऋखेद १.६१.२०)

सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माराड बलिर्नमम। मो सोम दिशं रक्ष बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ग्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। ग्रनेवलिदानेनसोम:प्रीयताम। इति पृष्पाक्षतजलानि उत्तराभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ग्रक्षत जल को उत्तराभिमुख छोडना चाहिये। ६. ईशान्य दिशा में ईशान को बलिप्रदान करें। तमीशानिमत्यस्य गौतम ईशानो जगती ईशान प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोग:।



ॐ तमीशानुं जगंतस्तुस्थुषुस्पतिं धियं जिन्वमंवसेहूमहे व्यम्। पूषा नो यथा वेदसामसंद्वधे रक्षिता पायुरदंब्धः स्वस्तये ॥ (मण्वेद १. = £. ४)

ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्मागड बलिर्नमम। भो ईशान दिशं रक्ष बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य त्रायुः कर्ता क्षेकर्ता शंतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। ऋनेनबलिदानेनइशानःप्रीयताम इति पुष्पाक्षतजलानि ऐशान्यभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ऋक्षत जे ईशान्याभिमुख छोडना चाहिये। ६. इन्द्रेशानयोर्मध्ये ब्रह्म बलिदान पूर्व एवं ईशान्य दिशा के बीच में ब्रह्मा का बलिदान करें। ब्रह्मजज्ञानं नकुलो ब्रह्मा त्रिष्टुप् ब्रह्मप्रीत्यर्थेबलिदाने विनियोगः।

अ ब्रह्मंजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचौ वेनम्रांवः। स बुध्यां उपमा संस्यविष्ठाः सृतश्चयोनिमसंतश्चिववंः॥ (यजुर्वेद-४ काराड-२ प्रश्न-= अनुवाक-४ मन्त्र)

ब्रह्मरो साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्मारड बलिर्नमम। भो ब्रह्मान् दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ग्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ग्रक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये। १०. पश्चिम एवं नैमृत्य के बीच में ग्रनन्त को बलिप्रदान करें। ग्रायङ्गौः सार्पराज्ञी ग्रनन्तो गायत्री ग्रनन्त प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ स्रायं गौ: पृश्चिरक्रमीदसंदन्मातरं पुर:। पितरं च प्रयन्त्स्वं:॥ (भग्वेद १०.१=६.१)

ग्रनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्मारङ बलिर्नमम। भो ग्रनन्त दिशं रक्ष बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ग्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वीभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल स्रक्षत जल को पूर्वीभिमुख होकर छोडना चाहिये।

षष्ठ दिन

नवग्रह बिलि—१. पूर्व में ग्रिधदेवता प्रत्यिधदेवता सिंहत सूर्य को बिलदान करें। ग्राकृष्णेन हिरगयस्तूप: सिवता त्रिष्टुप् ग्रिधदेवता प्रत्यिधदेवता सिंहत ग्रादित्य प्रीत्यर्थे बिलदाने विनियोग:।

ॐ स्राकृष्णोन् रजंसा् वर्तमानो निवृशयंत्रमृतं मन्यैच। हिर्गययेंन सिवृता रथेना देवो यांति भुवंनानि पश्यंन्॥ (सप्वेद १.३५.२)

मादित्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मधिदेवता मित्र प्रत्यिधेदेवता रुद्रसिहताय इमं सदीपमाष्मक्तकूष्माराडबिलं समर्पयामि। इदं न मम। भो म्रादित्य बिलं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य म्रायुः कर्ता क्षेतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। इति पृष्पाक्षतजनानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल मक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। २. म्राग्नेय में मधिदेवता प्रत्यिधदेवता सिहत सोम को बिलदान करें। म्राप्यायस्व गोतमः सोमो गायत्री मधिदेवता प्रत्यिधदेवता प्रत्यिधदेवता सिहत सोम को बिलदान करें। म्राप्यायस्व गोतमः सोमो गायत्री

ॐ स्राप्यांयस्व समेतु ते विश्वतः सोम्वृष्ययं। भवावार्जस्य सङ्ग्थे। (सप्वेद १.६१.१६)

सोमाय साङ्गाय स्परिवाराय सायधाय सशक्तिकाय ग्रिधदेवता ग्रेप प्रत्यिधदेवता गौरीसिहताय इमं सदीपमाषभक्त्कूष्पाराडबिलं समर्पयामि। इदं न मम। भो सोम बिलं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ग्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। इति पृष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ग्रक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ३. दक्षिरा में ग्रिधदेवता प्रत्यिधदेवता सिहत ग्रङ्गारक को बिलदान करें। ग्रिग्रिमूर्धाविरूपोंगारको गायत्री ग्रिधदेवता प्रत्यिधदेवता सिहत ग्रङ्गारक प्रीत्यर्थे बिलदाने विनियोगः।

ॐ ऋग्निमूर्धाद्विवः क्कुत्पितः पृथिव्या ऋयं। ऋपां रेतांसि जिन्वति॥ (ऋग्वेद =.४४.१६)





अङ्गारकाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता भूमि प्रत्यिधदेवतात स्कन्दसिहताइमंसदीपमाषभक्तकूष्मागड बिलंसमर्पयामि। इदं न मम। भो अङ्गारक बिलं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। इति पृष्पाक्षतजलानि उत्तराभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को उत्तराभिमुख छोडना चाहिये। ४. ईशान्य में अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सिहत बुध को बिलदान करें। उद्बुध्यध्वंबुधोबुधिस्त्रष्टुप् अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सिहत बुध प्रीत्यर्थे बिलदाने विनियोगः।

ॐ उद्बुधध्वंसमंनसः सखायः सम्ग्रिमिंध्वं बृहवः सनीळाः। दुधिक्रामृग्निमुषसं च देवी मिन्द्रांवृतो वंसे निह्वयेवः॥ (मण्वेद १०.१०१.१)

बुधाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ग्रिधदेवता विष्णु प्रत्यिधदेवता पुरुष सिहताय इमं सदीपमाषमक्तकूष्मारडबलिं समर्पयामि। इदं न मम। मो बुध बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ग्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। इति पृष्पाक्षतजलानि दक्षिगामिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ग्रक्षत जल को दक्षिगामिमुख छोडना चाहिये। ५. उत्तर में ग्रिधदेवता प्रत्यिधदेवता सिहत बृहस्पति को बलिदान करें ७ बृहस्पते ग्रित्यस्य गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप् ग्रिधदेवता प्रत्यिधदेवता सिहत बृहस्पति प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ बृहंस्पते ऋतियद्यों ऋहींदद्युमिद्ध भाति क्रतुंम्जनेषु। यदीदय्च्छवंस ऋत प्रजातृतदुस्मा सुद्रविंशां धेहि चित्रं॥ (ऋग्वेद २.२३.१४)

बृहस्पते साङ्गाय सपरिवारीय सायुधाय सशक्तिकाय ग्रिधदेवता इन्द्र प्रत्यिधदेवता ब्रह्मसिहताय इमं सदीपमाष्मक्तकूष्माराडबिलं समर्पयामि । इदं न मम । भो बृहस्पते बिलं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ग्रायुः कर्ता क्षेमकार्त शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव । इति पृष्पाक्षतजलानि दक्षिगामिमुखस्त्यजेत् । इतना कहकर फूल ग्रक्षत जल को दक्षिगाभिमुख छोडना चाहिये । ६. पूर्व में ग्रिधदेवता प्रत्यिधदेवता सिहत शुक्र को बिलदान करें । शुक्रत इत्यस्य भरद्वाजः

षष्र दिन

शुक्रस्त्रिष्टुप् ऋधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शुक्र प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोग:।

ॐ शुक्रंतें ऋन्यद्यंज्तंतें ऋन्यद्विपुंरूपे ऋहंनीद्यौरिवासि। विश्वाहिमाया स्रवंसिस्वधावो भुद्रातेंपूषन्निहरातिरंस्तु ॥ (म्रावेद ६.४ म.१)

शुक्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ऋधिदेवता इन्द्राणी प्रत्यिधदेवता इन्द्र सहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्मागडबलिं समर्पयामि । इदं न मम । भो शुक्र बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य म्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ग्रक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये। ७. पश्चिम में ग्रिधिदेवता प्रियिधिदेवता सिंहत शनैश्चर को बलिदान करें। शमग्निरिरिबिठिः शनैश्चर उष्णिक् ऋधिदेवता प्रत्यधिदेवता सिहत शनैश्चर प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोग:।

ॐ शम्ग्रिरिग्निभिः कर्च्छन्नंस्तपतु सूर्यः। शंवातोवात्वरुपा ऋपुस्त्रिर्धः॥ (ऋग्वेद =.१=.£)

शनैश्चराय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ग्रिधदेवता प्रजापति प्रत्यिधदेवता यमसहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माराडबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो शनैश्चर बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य क्सकुटुंबस्य ऋायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ग्रक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। 🕒 नैर्मृत्य दिशा में ग्रिधिदेवता प्रत्यिधदेवता सिहत राहु को बलिदान करें। कयान इत्यस्य वामदेवोराहुर्गायत्री ऋधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित राहु प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोग:।

ॐ कयांन्श्चित्र म्राभुंवदूती स्दावृंधः सखां। कया शचिंष्ठयावृता॥ (सप्वेद ४.३१.१)

राहवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ऋधिदेवता सर्प प्रत्यधिदेवता मृत्यु सहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माराडबलिं समर्पयामि । इदं न मम । भो राहो बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ऋायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना



कहकर फूल ग्रक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये। £. वायव्य दिशा में ग्रधीदेवता प्रत्यिधदेवता सिहत केतु को बलिदान करें। केतुं कृरवित्रत्यस्य मधुच्छन्दा: केतुर्गायत्री ग्रधिदेवता प्रत्यिधदेवता सिहत केतु प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोग:।

ॐ केतुं कृरावन्नंकेतवे पेशोंमर्या ऋपेशसें। समुषद्भिराजायथाः॥ (ऋषेद १.६.३)

केतवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ग्रिधदेवता ब्रह्म प्रत्यिधदेवता चित्रगुप्त सिहताय इमं सदीपमाष्यक कूष्मागडबिलं समर्पयामि। इदं न मम। भो केतो बिलं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ग्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। इति पृष्पाक्षतजलानि उत्तराभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ग्रक्षत जल को उत्तराभिमुख छोडना चाहिये।

कर्म साद्गुराय देवता बिलदान - १. पश्चिम दिशा में गरापित को बिलदान करें। स्रातून इत्यस्य कारावः कुसीदी विनायको गायत्री गरापित प्रीत्यर्थे बिलदाने विनियोगः।

ॐ स्रातू नं इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्रामं सं गृंभाय। मृहाहस्ती दक्षिंरोन॥ (मण्वेद =. =१.१)

विनायकाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्मागडबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो विनायक साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्मागडबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो विनायक बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ग्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। इति पृष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ग्रक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। २. पश्चिम दिशा में दुर्गा को बलिदान करें। जातवेदसे कश्यपो दुर्गासित्रष्टुप् दुर्गाप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोमंमरायितो निदंहाति वेदंः। स नंः पर्षदिति दुर्गाशिविश्वां नावेव सिंधु दुरितात्यग्निः॥

(मृग्वेद १. £ £. १)



दुर्गायै साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपमाषभक्तकूष्माग्डबलिं समर्पयामि। इदं न ममम। भो दुर्गे बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य त्रायुः कर्त्री क्षेमकर्त्री शांतिकपृष्टिकर्त्री वरदा भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल त्रक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ६ कर्म साद्गुराय देवतास्रों का बलिदान पश्चिम दिशा में करना चाहिये। उत्तर से दिक्षरा की स्रोर बडना चाहिये। ३. पश्चिम दिश में क्षेत्रपाल को बलिदान करें। क्षेत्रस्य वामदेवः क्षेत्रपालोनुष्टुप् क्षेत्रपालप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ क्षेत्रंस्य पतिंना व्यं हितेनेवजयामसि। गामश्वं पोषियुत्वा सनोंमृळातीदृशें॥ (ऋग्वेद ४.४७.१)

क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माग्डबलिं समर्पयामि । इदं न मम । भो क्षेत्रपाल बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ग्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजनानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ग्रक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ४. पश्चिम दिशा में वायु को बलिदान करें। क्राणा शिशुरित्यस्य त्रितोवायुरुष्णिक् वायुप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोग:।

ॐ क्रा्गा शिशुंर्म्हीनां हिन्वनृतस्य दीधिंतिम्। विश्वा परिंप्रिया भुवदधंद्विता॥ (ऋग्वेद £.१०२.१)

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माग्रडबलिं समर्पयामि । इदं न मम । भो वायो बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य म्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल म्रक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ५. पश्चिम दिशा में म्राकाश को बलिदान करें। म्रादित्य प्रतस्यवत्स म्राकाशो गायत्री म्राकाश प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोग:।

ॐ त्रादित्य प्रत्नस्यरेतंसोज्योतिंष्पश्यंति वास्रं। प्रोयद्धियतें दिवा॥ (ऋखेद =.६.३०)

त्र्याकाशाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माग्रङबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो त्र्याकाश बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ग्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल ग्रक्षत जल को पूर्वाभिमुख



म्झी क्षम

सग्वेदीय सीम सविद्धत शासि यह

ाः। किनी हे, पश्चिम दिशा में अश्विन देवताओं को बलिदान करें। अश्विनाविति राहुगणो गोतमोधिनावृष्णिक् अश्व्यावाहने विनियोगः।

ॐ ऋश्चिनेनावृतिरुस्मदागोमंहस्या हिर्गयवत्। भ्रवीग्रथं समनस्य नियंच्छतं॥ (भ्रत्द १. ६२.१६)

मम इंध निक्ष भित्र । सा मा इंद्र । साक्षिम केवाय केवाय केवाय मा इंद्र । साक्षिम केवाय केवा

अक्षत जल का पूर्वामिस छोड़ ना कि जाहे में के प्रतास के

१, उर ह्याधिपतो ना : । स्वाधिपति इम् माय माय माय माय माय । इं । माय माय । इं । माय माय माय माय माय माय है । स्व भाय : । स्वाधिपति क्षेत्र माय हो । स्वाधिपत्र माय । इं । माय माय हो । माय माय हो । स्वाधि माय स्वाधि । स्वाधि माय स्वाधि । स्वाधि स्वाधि । स्वधि । स्वाधि । स्वधि । स्वाधि । स्वधि । स्वाधि । स्व

नाहिये। ३, उन्होिकरणाय नमः। रविकिरणाय इमं सदीप माथ भक्त कृष्यायडबिलं समपैयामि। इदं न मम। मी रविकरण बिलं मुंख्व मम यजमानस्य सकुडुंबस्य मिन्छे कुमिमीकु कि लेह हें कि कि के कुष्यायाय । इतं मिन्छे सिन्छे । इतं न सम। मी रविकरण विक्रा हो। स्वाप्त कि में

नाहिय। ३. उन्हेशएय नमः। ईशएव इमं सदीप माष भक् कृष्मायडबित समपेथामि। इदं न मम। यो ईशर बिलं मुंश्व मम यजमानस्य सकुडंबस्य आयुः कती श्लेमकतो शांतिकतो पृथिकतो वरदो भव। इति पृष्माक्षतजलान पूर्वाममुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पृष्म अक्षत एवं जल को पूर्वाममुख छोडना चाहिये। ४. उन्होसे पित्रातशमन विलं मुंश्वे मम यजमाय इसं सदीपमाषभक्षणायड बिलं समपेयामि। इदं न मम। मे सर्वेतातशमन बिलं मुंश्वे मम यजमानस्य

षष्ठ दिन

सकुटुंबस्य ग्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। इति पृष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पृष्पा ग्रक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ५. बर्गमहाँ ग्रसीत्यस्य सूर्यःप्रगाथो बृहती सूर्य प्रीत्यर्थे बलि प्रदाने विनियोगः।

ॐ वरामृहाँ श्रींस सूर्य बळादित्य मृहाँ श्रींस। मृहस्तें सृतो मिहुमा पंनस्यते ऽद्धा देव मृहाँ श्रींस।। (अवेद ८.१०१.११) आ.गृ.सूत्रम् असूर्याय नमः। सूर्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप माष भक्त कूष्माराडबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो सूर्य इमं बिलं मुंक्ष्व मम् यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। इति पृष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पृष्प अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

कूष्माराड बलिदान

यज्ञशालात् बिहः ऐशान्यिदग्भागे कूष्माग्रेडे सूर्यं क्षेत्रपालं च म्रावाहयेत्। पञ्चोपचार पूजां च कुर्यात्। यज्ञ शाला के बाहर ईशान्य दिशा में कहू में सूर्य एवं क्षेत्रपाल का म्रावाहन कर पूजन करें। उन्लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। उन्हं म्राकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। उन्यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। उन्यं म्रान्यात्मने दीपं कल्पयामि। उन्वं म्रावात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। उन्यं परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि। उन्सूर्याय नमः। उन्क्षेत्रपालाय नमः। सूर्याय साङ्गाय सप्रिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप कूष्माग्रेड बिलं समर्पयामि। क्षेत्रपालाय साङ्गाय सप्रिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप कूष्माग्रेड बिलं समर्पयामि।

भो सूर्य बलिं मुंक्ष्व ममयजमानस्य सकुटुम्बस्य ग्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। भो क्षेत्रपाल बलिं मुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य ग्रायुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिमर्ता पृष्टिकर्ता वरदो भव। अधृराःसूर्य ग्रादित्यः हुं फट् कहकर कूष्माग्रड को प्रदक्षिगाकार में घुमाकर पटक देवें। उस बलि को इतरों के द्वारा स्वच्छ करने के बार "शांता पृथिवी शिवमन्तिरक्षं द्यौर्नोदेव्यभयंनो ग्रस्तु।





शिवादिशः प्रदिशउद्दिशोन स्रापो विद्युतः परिपांतु सर्वतः शांति शांति शांति । (स्रवेद १० मगडलस्यान्ते)

इस मंत्र से भूमि प्रोक्षण कर यजमान एवं ग्राचार्य हाथ पैर धोकर ग्राचमन कर लेवें।

पूर्णाहुति होम से पहले पूर्ण फल होम —याः फलिनीरित्यस्य माथर्वगो भिषगोषधयः मनुष्टुप् पूर्णफल होमे विनियोगः।

ॐ याः फुलिनीर्या श्रंफुला श्रंपुष्पायाश्चं पुष्पिशाः। वृहस्पतिं प्रसूतास्तानीं मुंचन्त्वं हंसः स्वाहा।। (भगवेद १०.६७.१४)

स्रोषधिभ्यः इदं न मम। कहकर पूर्णफल का होम करें। इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेद् जन्मनि जन्मनि। एतद् होम संपूर्ण फलावाप्त्यर्थ महाव्याहृति भिर्होष्ये।

अ भूरग्रये च पृथिव्ये चं महते च स्वाहां। अग्रये पृथिव्ये महते च इदं न मम।

अ भुवों वायवें चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहां। वायवेऽन्तरिक्षाय महते च इदं न मम।

अ सुवंरादित्यायं च दिवे चं महते च स्वाहां। म्रादित्याय दिवे महते च इदं न मम।

अ भूभ्ववः स्वश्चन्द्रमंसे च नक्षत्रेभ्योद्रिग्ध्यश्चं महृते च स्वाहां। चन्द्रम से नक्षत्रेभ्यो दिग्ध्यो महते च इदं न मम।

(यजुर्वेद-महानारायगोपनिषद्)

इन चार मंत्रों से घी की ग्राहुतियाँ देवें। अभूः स्वाहा। ग्रग्नये इदं न मम। अभुवः स्वाहा। वायव इदं न मम। अस्वः स्वाहा। सूर्याय इदं न मम। अभूर्भुवः स्वः स्वाहा। प्रजापतये इदं न मम।

पूर्णाहुति होम संकल्प—हाथ में पुष्पाक्षत जल लेकर संकल्प करें। सर्वकर्म प्रपूरशीं भद्र द्रव्यदां पूर्णाहुति होष्ये। सुचि द्वादशगृहीतमाण्यं तस्यां गंधपुष्पाक्षतालंकृताग्रं सुवं ऋधो बिलं निधाय सुक् सुवं शंखमुद्राय गृहीत्वा ऊर्ध्वस्तिष्ठन्। सुवा से सुक् में १२ बार घी डालकर उस पर नीचे बिल वाला



षष्ठ दिन

गंधपुष्प एवं ग्रक्षता से लङ्गृत स्नुव को रखें। दोनों को शंखमुद्रा से पकडकर खडे होंवे। मंत्र पाठ करें। घी की धारा गिरते रहना चाहिये। मूर्धानं भरद्वाजो ग्रिवैश्वानरस्त्रिष्टुप् पूर्गाहुतौ विनियोग:।

ॐ मूर्धीनंदिवो स्रंरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत स्राजातमृग्निम्। कृविं सुम्राजमितिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहां॥ (मावेद ६.७.१)

त्रग्रये वैश्वानराय इदंनमम। पुनस्त्वाग्निर्वसुरुद्रादित्यास्त्रिष्टुप् पूर्णाहुतौ विनियोग:।

ॐ पुनंस्त्वादित्यारुद्रावसंवः सर्मिधतां पुनंर्ब्रह्माराों वसुनीथ् युज्ञैः।

घृतेन त्वंत्न्वो वर्धयस्वस्त्याः संतु यर्जमानस्य कामाः स्वाहां॥ (यजुर्वेद- ४ काराड-२ प्रश्न-३ यनुवाक)

वसुरुद्रादित्येभ्यः इदं न मम। पूर्णदर्वि विश्वेदेवाः शतक्रतुरनुष्टुप् पूर्णाहुतौ विनियोगः।

ॐ पूर्गा दिवि परापत सुपूर्णा पुन्रापत। वस्त्रेविवक्रीरंगावहा इष्मूर्जशतक्रतो स्वाहां॥ (यजुर्वेद- १ काएड- = प्रश्न-४ अनुवाक-२ मन्त्र) शतक्रतव इदं न मम। सप्तते अग्रीसप्तवानग्रिर्जगती पर्णाहतौ विनियोगः।

ॐ सप्तते त्रग्रेस्मिधः सप्तजिह्वाः स्प्तम् षंयः सप्तधामंप्रियाशि।

सप्तहोत्राः सप्तधात्वां यजंति सप्तयोनीरापृंशास्वाघृतेन् स्वाहां॥ (यजुर्वेद- १ कागड-५ प्रश्न-२ अनुवाक)

सप्तवतेग्रय इदं न मम। समुद्रा दूर्मिरिति एकादशर्चस्य गौतमो वामदेव स्नापस्त्रिष्टुप् स्नन्त्या जगती पूर्णाहुतौ विनियोगः। ॐ समद्राटर्मि र्मर्थाण्य सम्बन्धाः

ॐ समुद्रादूर्मि मेंधुंमाँ उदार्दुपांशुना समंमृत्त्वमांनट्। घृतस्य नाम् गुह्यं यदस्तिं जिह्वा देवानांमुमृतस्य नाभिः॥ व्यं नाम् प्रब्रंवामाघृतस्याऽस्मिन् युज्ञे धांरयामानमोंभिः। उपंब्रह्मा शृंगावच्छस्यमानं चतुः शृङ्गोऽव्मीद् गौर प्तत्॥



च्त्वारि शृङ्गा त्रयो त्रस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तांसो ऋस्य। त्रिधां बृद्धो वृष्मो रीरवीति महो देवो मत्याँ ऋविवेश।। त्रिधां हितं प्रिणिभिगुह्यमांनं गविं देवासों घृतमन्वं विन्दन्। इन्द्र एकं सूर्य एकं जजान वेनादेकं स्वधया निष्टंतक्षुः॥ प्रता ऋषिन्ति हृद्यांत् समुद्राच्छ्तव्रंजा रिपुणा नाव्चक्षे। घृतस्य धारां ऋभिचांकशीमि हिर्णययो वेत्सो मध्यं आसाम्॥

सम्यक् स्रंवित स्रितो न धेनां स्रन्तर्हदा मनंसा पूयमांनाः। एते स्रंषिन्यूर्मयो घृतस्यं मृगा इव क्षिप्रगोरीषंमागाः।। सिन्धोरिव प्राध्वने शूघुनासो वातंप्रमियः पतयन्ति युह्वाः।

घृतस्य धारां अरुषो न वाजी काष्ठां भिन्दन्न्मिभुः पिन्वंमानः॥

श्रुभिप्रंवन्त समनेव योषां: कल्या्रय १ समेय मानासो श्रुग्निम्।

घृतस्य धाराः समिधों नसन्त ता जुंषागो हंर्यति जातवेंदाः॥

क्नियां इव वहतुमेत्वा उं ऋञ्चयंञ्जाना ऋभिचांकशीमि ।यत्र सोमंः सूयते यत्रं यत्रो घृतस्य धारां ऋभितत् पंवन्ते ॥ ऋभ्यंर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासुं भुद्रा द्रविंगानि धनत । इमं युज्ञं नयत देवतां नो घृतस्य धारा मधुंमत् पवन्ते ॥ धामंन् ते विश्वं भुवंन्मधिं श्रितमुन्तः संमुद्रे हृद्यर्शन्तरायुंषि ।

स्पामनीक समिथे य स्राभृत्स्तमंश्याममधुमन्तं त ऊर्मिम् स्वाहां। (स्रावेद ४.४= सम्पूर्ण सूक) सद्भयः इदं न मम्।

ॐ स्वाहाग्रये वर्रुगाय स्वाहेन्द्रांय मुरुद्धयः। स्वाहां देवेभ्यों हृविः॥ (म्पेद १.१११)

मायांहाग्ने समिधानो मुर्वाङ्निसेरा देवैः स्रथं तुरेभिः। बहिर्न मास्तामदितिः सुपुत्रा स्वाहां देवा म्रुमृतां मादयन्ताम्।

सम्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन

(सृग्वेद ३.४.११)

इति पठन् यवपरिमितां धारां संततां सुगग्रेग सशेषं हुत्वा। उपरोक्त मंत्रों को कहते हुए धान के बराबर मोटे घी की धारा से निरन्तर सुक् के ऋग्रभाग से होम करें। थोडा सा सुक् में बचे रहे।

पूर्णाहुति शेष होम — विज्योतिषेत्यस्य जारोवृशोग्निस्त्रिष्टुप् पूर्णहुति शेषाज्य होमे विनियोगः।

ॐ विज्योतिषा बृहताभांत्यग्निराविर्विश्वांनिकृशाते महित्वा। प्रादेवीर्मायाः संहते दुरेवाः शिशींते शृङ्गेरक्षंसे विनिक्षे स्वाहां॥ (ऋग्वेद ४.२.६)

त्रग्रय इदं न मम। कहकर त्याग करें। अविश्वेभ्यो देवेभ्य: स्वाहा। विश्वेभ्यो देवेभ्य इदं न मम। कहकर संस्राव (शेष बचे घी का) होम कर त्याग करें। वसोधीरा—बडे यज्ञों में वसोधीरा करना चाहिये। परिशिष्ट प्रकरण में इसे विस्तार से लिखा जायेगा। निरन्तर घी की धारा गिरते रहना चाहिये। इसमें प्रयुक्त मंत्रों का क्रम निम्नलिखित है।

१. चमकानुवाक—११ ऋनुवाक (मंत्र), २. ऋग्निवोळ—६ ऋक् (मंत्र), ३. विष्णोर्नुकं—६ ऋक् (मंत्र), ४. ऋग्तेपित:—१५ ऋक् (मंत्र), ५. स्वाधिष्ठया—१० ऋक् (मंत्र), ६. वसोधीरा अनुवाक—१ ऋनुवाक (ऋग्नाधा पेज का मंत्र)

यहाँ पर होम का पूर्णहुति मार्जन विधान प्रकरण संपन्न हुम्रा। म्रथावभृथ स्थानीयं पूर्णपात्र जलेन मार्जनं कुर्यात। इसके बाद म्रवभृथ स्नान के स्थल पर पूर्ण पात्र जल से मार्जन करना चाहिये। पूर्वासादितं पूर्णपात्रं म्रास्तीर्णे दक्षिण पाणिना निधाय तत्रगङ्गादि पुर्गयनी: स्मरन् दक्षिणपाणिना स्पृशन्। पहले स्थापित पूर्णपात्र को बिछाये गये बर्हिष् (कुशों) के ऊपर दाहिने हाथ से रखें दाहिने हाथ से छूकर वहाँ पर गङ्गादि पूर्गयनिदयों का स्मरण करें। पूर्णमिसपूर्णं मे भूया: सुपूर्णमिस सुपूर्ण मे भूया:। सदिससन्मेभूया: सर्वमिस सर्व में भूया:॥ म्रक्षितिरिसमामेक्षेष्ठा:।

उपरोक्त मंत्रों को पूर्णपात्र छूकर पाठ करं। कुशाग्रै: प्रागादि पञ्चदिक्षुजलं मंत्रै: यथालिङ्गं सिञ्चेत्। कुशा के ऋग्र भाग से पूर्वादि पाञ्च दिशास्रों में प्रोक्षरा करें। (पूर्व में) प्राच्यां दिशि देवा ऋत्विजो मार्जयन्ताम्। दक्षिगस्यां दिशि मासाः पितरो मार्जयन्ताम्। ऋप उपस्पृश्य। हाथ धो लेवें। (पश्चिम में) प्रतीच्यां दिशि ग्रहाः पशवो मार्जयन्तां। (उत्तर में) उदीच्यां दिशि ग्राप ग्रोषधिवनस्पतयो मार्जयन्ताय। (ऊपर में) ऊर्ध्वायां दिशि ज्ञः संवत्सरः प्रजापतिर्मार्जयताम्। ब्रह्मा चार्य या यजमान के द्वारा मार्जन—ग्रापो ग्रस्मानित्यस्य देवश्रवा ग्रापस्त्रिष्ण् मार्जने विनियोगः।

ॐ स्रापों स्रस्मान्मातरः शुंधयंतुंघृतेनंनोघृतप्वः पुनंतु। विश्वं हिर्प्रिप्यवहंति देवीरुदिदांभ्यः शुचिरापूतएंमि॥

(स्ग्वेद १०.१७.१०)

इदमापः सिंधुद्वीप ऋषोनुष्ट्रप् मार्जने विनियोगः।

ॐ इदमांपः प्रवंहत्यित्कंचंदुरितं मियं। चद्वाहमंभिदुद्रोह्यद्वांशेपउतानृतं। (मण्वेद १०.६.=)

सुमित्र्यान ग्राप ग्रोषधयः सन्तु। इतना कहकर मार्जन करें।

दुर्मित्र्यास्तस्मै संतु योस्मान्द्वेष्ट्रियञ्चव्यंद्विष्मः। (यजुर्वेद-यारायक)

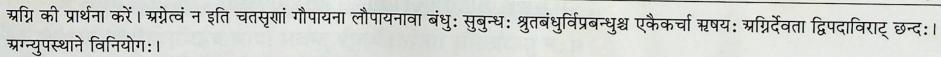
इतना कहकर नैर्मृत्य देश में कुशाग्र से जल छोडें। ततो ब्रह्मा यजमान वामपार्श्वे स्थित जत्न्यंजलौ तदभावे यजमानस्य म्रंजलौ पूर्णपात्रस्थं जलं म्रादाय जलं प्रत्यडमुखं निषिच्य । इसके बाद ब्रह्मा यजमान के ग्रंजली में स्थित पूर्णपात्र के जल से प्रोक्षरा करें।

ॐ माहं पूजां परांसिञ्चयानं: स्यावंरीस्थनं। स्मुद्रेवों निनयानि स्वंपार्थे ऋपीथ। (श्रोत मन्त्र).

उंत्र को कहते हुए पापनाश के लिए नीचे गिरें जल को समुद्र में गया मानकर हाथ में बचे शेष जल से ग्रपना प्रोक्षण करें। ततः कर्ता ग्रग्नेः वायव्ये स्थित: संस्थाजपेन उपतिष्ठते। इसके बाद यजमान ऋग्नि के वायव्य दिशा में खडे होकर संस्था जप जो कि ऋगो बताया जा रहा है उसके हाथ जोडकर

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन



ॐ त्रग्रेत्वं नो त्रंतंमउतत्राता शिवोभंवावरूथ्यः। वस्रुंरग्निर्वस्रुंश्रवा त्रच्छांनक्षिद्यमत्तंमंर्यिदाः॥ सनों बोधिश्रुधीहवं मरुष्यागों ऋघयतः समस्मात्। तंत्वां शोचिष्ठदीदिवः सुम्नायंनूनमीं महेसरिवंभ्यः॥

(म्रावेद ५.२४.१-२-३-४)

ॐ चंमे स्वरंश्च मे युज्ञोपचतेनमंश्च। यत्तेन्यूनं तस्मैत् उपयत्तेतिरिक्तं तस्मै ते नमं:। ऋग्नये नम:। ॐ स्वस्ति। (ऋग्निप्तः)

श्रद्धां मेधां यश: प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलं। ग्रायुष्यं तेज ग्रारोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ श्री यज्ञेश्वराय नम:।

कलश जल मार्जन विधान—कलश जलेन मार्जनं करिष्ये। तदङ्गत्वेन पुनः पूजां करिष्ये। म्रावाहित देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। त्रावाहयामि। त्रासनं समर्पयामि। स्वागतम्। पादारिवन्दयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः त्रर्घ्यं त्रर्घ्यं समर्पयामि। मुखे त्राचमनीयं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि । वस्त्रं समर्पयामि । उपवीतं समर्पयामि । ग्राभरणं समर्पयामि । गन्धं समर्पयामि । ग्रक्षतान् समर्पयामि । पुष्पाणि समर्पयामि । धूपमाघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि। त्रमृतोपहारं निवेदयामि। क्रमुकताम्बुलं समर्पयामि। नीरजनं समर्पयामि। मंत्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिरा नमस्कारान् समर्पयामि। प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि । सर्वोपचारपूजां समर्पयामि । कलशों का पूजन करें ।

उत्तिष्ठ ब्रह्मगास्पते देव्यन्तंस्त्वेमहे। उपुप्रयंन्तु मुरुतः सुदानंव इन्द्रं प्राशूर्भवा सचां॥ (भग्वेद १.४०.१) स्राप्यार मिदद्रयो निषिक्तं पुष्करे मधुं। स्रवतस्यं विसंजैने। (स्रवेद =.७२.११)

ग्रावाहित देवताभ्यो नमः। यथा स्नानं उद्वासयामि। कहकर ग्रावाहितदेवताग्रों का ग्रक्षत डालकर विसर्जन करें।

४२७



स्रथ मगड प ईशाने ग्रहवेद्याः प्रागुदीच्यां शुचौ देशे संमृष्टे पञ्चरंगैः स्वस्तिकं कृत्वा चतुष्पदं दीर्घचतुरस्त्रं सोत्तरच्छदं पीठं निधाय तत्र उदगग्रान् स्नामूलान् हरितदर्भानास्वीर्य तत्र यजमानं परिहित नववस्त्रं पाडमुखमुपवेश्च स्नाचार्यः स्वत्विग्धः सह मङ्गलवाद्यैः स्निषेक कुम्भोदकं पात्रान्तरे स्नादाय प्रत्यडमुखः तिष्ठन् स पलाशया स्नौदुंबर्यार्द्रशाख्या सहिरगय पवित्रया स कुश दूर्वा पल्लवया हस्तमन्तर्धाय उदक पृषद्भिरिब्लङ्गाभिः वारुगीभिः पावमानीभिः स्रन्यामिः च शान्ति पवित्र लिङ्गिभिः ग्रहाभिषेकमन्त्रैः (सुरास्त्वा मिति) इमा स्नापः शिवतमा इति त्रि स्रचेन देवस्त्वेति च यजुषा भूर्भुवः स्वः इति व्याहृतिभिः। स्निभिषञ्चेत्। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

मगड़प के ईशान्य में ग्रहवेदी के ईशान्य में पिवत देश में शुद्धीकृत भूमि पर पाँच रंगों से स्वस्तिक लिखें। चार पाँव वाला चौकार पीठ पर ऊपर वस्त्र बिछाकर उस पर हरे कुशाओं को उत्तर की ओर अग्र हो ऐसे बिछाना चाहिये। यजमान नवीन वस्त्रों को पहनकर उस पर पूर्वाभिमुख होकर बैठें। ऋत्विजों के साथ आचार्य मङ्गलवाद्यों को सुनते हुए कलशों के जल को एक अलग पात्र में निकाल लेवें। फिर पिश्चमाभिमुख खड़े होकर पलाश, उदुम्बर, हिरग्यपिवत्र कुश दूर्वा पल्लव इन सब का एक गुच्छे को हाथ में पकड़कर जल के बिन्दुओं को जो कि वरुग देवता के प्रतीक है उन्हें वरुगा देवताक मन्त्रों से, पवमान मन्त्रों से, इतर शान्ति मत्रन, पिवत्र मन्त्र, ग्रह मंत्र इमा आप: आदि तीन मंत्र देवस्यत्वा इस यजुर्वेद मंत्र से एवं व्याहित मंत्रों का पाठ करते हुए अभिषेक (प्रोक्षगण) करना चाहिये। आपोहिष्ठेति नवर्चस्य सूक्तस्य आम्बरीष सिन्धु द्वीप आपो गायत्री पञ्चमी वर्धमान सप्तमी प्रतिष्ठा अन्त्ये द्वे अनुष्ठुबौ मार्जने विनियोग:।

ॐ म्रापो हिष्ठा मंयो भुवस्तानं ऊर्जे दंधातन। मुहेरणांय चक्षंसे॥ यो वं: शिवतंमो रसस्तस्यं भाजयते हनं: उश्तीरिव मातरं:॥

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन

तस्मा ऋरंगमामवो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। ऋषों जुनयंथा च नः॥
शं नों देवीर्भिष्टंय ऋषों भवन्तु पीतयें। शं यो र्भिस्नंवन्तु नः॥
ईशांना वार्यांशां क्षयंन्तीश्चर्षशीनाम्। ऋषो यांचामि भेषजम्॥
ऋप्सु मे सोमों ऋबवीदन्तर्विश्वांनि भेषजा। ऋग्निं चं विश्वशंभुवम्॥
ऋषापः पृशीत भेषजं वर्र्तथं तुन्वेश्ममं। ज्योकच सूर्य दृशे॥
इदमांपः प्रंवहत् यत् किं चं दुरितं मियं। यद्वाहमंभि दुद्रोह यद्वां शेप उतानृतम्॥
ऋषां ऋषान्वंचारिषं रसेंन् समंगस्मिह। पर्यस्वानग्न ऋगं गहि तं मा संसृज् वर्चसा॥ (ऋषेद १०.६.१ से ६ तक)

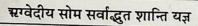
तत्वायामीति तिसृगां ग्राजीगर्तिः शुनः शेपः सकृत्रिको वैश्वामित्रो देवरातो वरुग स्त्रिष्टुप् मार्जने विनियोगः।

ॐ तत्वांयामि ब्रह्मंशा वंदंमान्स्त दाशांस्त्रेयजंमानो हृविभिः। ऋहेंळमानो वरुगोह बोध्युर्रुशंस्मान् ऋायुः प्रमोषीः॥ तदिन्न्तं तिद्वामह्यंमाहु स्तद्यंकेतो हृद ऋविचंष्टे। शुनुःशेपो यमह्वंदृ भीतिस्त्रिष्वांदित्यन्द्रंपदेषुंवृद्धः। ऋवैनं राजावर्रुशाः ससृज्याद्विद्वाँ ऋदंब्थो विमुं मोक्तु पाशांन्। (ऋवेद १.२४.११-१२-१३)

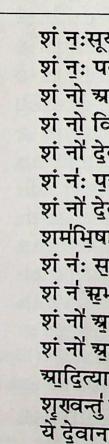
स्वाधिष्ठ येतितिसृगां वैश्वामित्रोमधुच्छन्दाः पवमान सोमो गायत्री मार्जने विनियोगः।

ॐ स्वादिष्ठया मिदष्ठया पर्वस्व सोम् धार्रया। इन्द्राय पार्तवे सुतः॥ रुक्षोहा विश्वचंषिरारिम योनिमयोहतम्। हुर्गा स्थस्थ मासंदत्॥ वृरि वोधातमो भव मंहिष्ठो वृत्रहन्तमः। पर्षि राधो मृघोनाम्॥ (भग्वेद ६.१.१-२-३) शं न इन्द्राग्नीति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य मैत्रा वरुणिर्वसिष्ठः वामदेवः त्रिष्टुप् मार्जने विनियोगः।

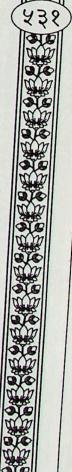
अ शं नं इन्द्राग्नी भंवतामवोभिः शं न इन्द्रा वरुंगा रातहंव्या। शमिन्द्रासो मां सुविताय शं योः शं न इन्द्रां पूषशा वार्जसातौ॥ शं नो भगः शर्मु नः शंसो अस्तु शं नः पुरिधः शर्मु सन्तु रार्यः। शं नंः सत्यस्यं सुयमस्य शं सः शं नो अर्युमा पुरुजातो अस्तु॥ शं नों धाता शर्मुधूर्ता नों ऋस्तु शं नं उरूची भंवतु स्वधाभिः। शं रोदंसी बृहती शं नो ऋदिः शं नो देवानां सुहवांनि सन्तु॥ शं नौं सुग्निज्योतिंरनीको सस्तु शं नों मित्रावर्रुगा वृश्विना शम्। शं नं: सुकृतीं सुकृतानिं सन्तु शं नं इषिरो ऋभिं वांतु वातः॥ शं नो द्यावां पृथिवी पूर्वहूंतौ शम्नतिरक्षं दृशयें नो ऋस्तु। शं नु स्रोषंधीर्वुनिनों भवन्तुं शं नो रजसस्प्रतिरस्तु जिष्णुः॥ शं न इन्द्रो वसुंभिर्देवो ऋस्तु शमांदित्येभिर्वरुगाः सुशंसः। शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नुस्त्वष्टा ग्राभिरिह शृंगोतु॥ शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावांगः शमुंसन्तु युज्ञाः। शं नः स्वर्र्त्रगां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वर्ःशम्वंस्तु वेदिः॥



षष्ठ दिन



शं नुःसूर्यं उरुचक्षाउदेतु शं नुश्चतंस्त्रः पृदिशों भवन्तु। शं नुः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नुः सिन्धंवः शमुं सुन्त्वापः॥ शं नो ऋदिंति भैवतु वृतेभिः शं नो भवन्तु मुरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमुंपूषा नो ऋस्तु शं नो भ्वित्रं शम्बंस्तु वायुः॥ शं नों देवः संविता त्रायंमागाः शं नों भवन्तूषसों विभातीः। शं नं: पूर्जन्यों भवतु प्रजायः शं नः क्षेत्रंस्य पतिरस्तु शंभुः॥ शं नों देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरंस्वती सह धीभिरंस्तु। शर्माभुषाचः शर्मु रातिषाचेः शं नो दिव्याः पार्थीवाः शं नो ग्रप्याः॥ शं नं: सत्यस्य पतंयो भवन्तु शं नो ऋवेंन्तः शमुं सन्तु गार्वः। शं नं ऋभवं: सुकृतं: सुहस्ताः शं नों भवन्तु पितरो हवेषु॥ शं नों ऋज एक पाद् देवो ऋंस्तु शं नोऽहिं बुँध्यः १ंशं संमुद्रः। शं नों ऋपां नपांत् पेरुरंस्तु शं नुः पृश्चिंभुवतु देवगोंपा॥ त्र्यादित्या रुद्रा वसंवो जुषन्तेदं ब्रह्मं क्रियमांग् नवीयः। शृगवन्तुं नो दिव्याः पार्थिवासो गोजांता उत ये युज्ञियांसः॥ ये देवानां युज्ञियां युज्ञियांनां मनोर्यजंत्रा स्रमृतां सत्जाः।



त नो रासन्तामुरुगायमुद्य यूयं पांत स्वस्तिभिः सदां नः॥ (सप्वेद ७.३४.१ से १४)

सर्वादभुत् शान्तियाग में इस शमग्नि सूक्त का ऋधिक महत्व है। ऋत:। १५ मंत्रों से मार्जन करना चाहिए। शेष योगों में ३ या १५ मंत्रों से समयानुसार करनाा चाहिए। पवित्रंत इति तिसृगामाङ्गीरसः पवित्रः पवमान सोमो जगती मार्जने विनियोगः।

ॐ पुवित्रन्ते वित्तं ब्रह्मरास्पते प्रभुगित्रांशिपर्येषि विश्वतः। अतंप्ततनूर्नतदामो अंश्रुतेशृतास्इद्व हंतुस्तत्समांशत॥ तपौष्यवित्रंवितंतं द्विस्पदेशोचंतो स्रस्यतंतंवोव्यं स्थिरन्। अवंत्यस्य पवीतारंमाशवोदिवस्पृष्ठ मधितिंष्ठति चेतंसा॥ अर्र्करुचदुषसः पृश्चिरिगृय उक्षा विभिर्ति भुवनानि वाज्यः। माया विनोमिमरे स्रस्यमाययांनृचक्षंसः पितरोगर्भमादंधुः॥ (स्रावेद £. = ३.१-२-३)

ऋथ ग्रहमंत्राः—

ॐ स्राकृष्णेनु रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च।

हिर्गययैंन सिवता रथेनाऽऽदेवोयांति भुवनानि पश्यंन्॥ (मानेद १.३५.२)

ॐ म्राप्यांयस्व समेतु ते विश्वतंः सोम्वृष्ययंम्। भवा वार्जस्य सङ्गर्थे॥ (मण्वेद १.६१.१६)

ॐ म्रुग्निमूर्धा द्विः क्कुत्पतिः पृथिव्या म्रुयम्। म्रुपां रेतांसि जिन्वति॥ (मानेद =.४४.१६)

ॐ उद्बंध्यघ्वं समनसः सखायः सम्ग्रिमिध्वं बहवः सनीळाः।

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन

५३३

दुधिक्राम्ग्रिमुषसं च देवीमिन्द्रांवृतोऽवंसे निह्वंये वः॥ (सप्वेद १०.१०१.१) ॐ बृहंस्पते ऋति यद्यों ऋहाँद्युमद्विभाति क्रतुं म्जनेषु। यद्दीदयुच्छवंस ऋत प्रजात् तदुस्मासु द्रविंगां धेहि चित्रम्॥ (स्रावेद २.२३.१४) ॐ शुक्रं तें ऋन्यद्यंज्तं तें ऋन्यद्विषुंक्षपे ऋहंनी द्यौरिवासि। विश्वा हि माया स्रवंसि स्वधावो भुद्रा ते पूषन्निहरातिरंस्तु॥ (सप्वेद ६.४ ६.१) ॐ शम्ग्रिर्ग्निभिः कर्च्छंनंस्तपतु सूर्यः। शं वातों वात्वरुपा ऋपुस्त्रिधः।। (म्रावेद म.१म.र) ॐ कयांनश्चित्र त्रा भुंवदूती सदावृंधःसखां। कयाशचिष्ठया वृता॥ (ऋखेद ४.३१.१) ॐ केतुं कृरावत्रं केतवे पेशोंमर्या ऋषेशसें। समुषद्भिरजायथाः॥ (ऋग्वेद १.६.३) ॐ ग्रहागामादिरादित्यो लोकरक्षगाकारकः। विषमस्थान संभूतां पीडां हरतु ते रविः॥ रोहिगािशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थान संभूतां पीडां हरतु ते विधुः॥ भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः॥ उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः॥ देवमंत्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। स्रनेक शिष्यसंपूर्गः पीडां हरतु ते गुरुः॥ दैत्यमंत्री गुरुस्तेषां प्रारादश्चमहामितः। प्रभुस्ताराग्रहाराां च पीडां हरतु ते भृगुः॥ सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्मना पीडां हरतु ते शनिः॥

(४३४

महाशिरामहावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः ऋतनुश्चोर्घ्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः॥ ऋनेक रूप वर्गोश्च श्ताशोथ सहस्त्रक्षः। उत्पातरूपो जगतः पीडां हरतु ते शिखी॥ (स्मृति सङ्ग्रह)

यहाँ पर नवग्रह मार्जन मन्त्र पूर्ण हुए। ग्रब देव मंत्रों से मार्जन करें।

सुरास्त्वामिभिषञ्चन्तु ब्रह्म विष्णु महेश्वराः। वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षगणो विभुः॥ प्रद्युम्रश्चानिरुद्धश्च भवंतु विजयायते। त्राखगडलोग्नि भंगवान् यमोवैनिर्म्धतिस्तथा॥ वरुगाः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः। ब्रह्मणा सिहताः सर्वे दिक्पालाः पांतु ते सदा॥ कीर्तिलक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पृष्टिः श्रद्धा क्रियामितः। ब्रद्धिर्लज्ञावपुःशान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥ एतास्त्वामिभिषञ्चन्तु देवपत्त्यः समागताः। त्रादित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीव सितार्कजाः॥ ग्रहास्त्वामिभिषञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः। देवदानवगंधर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः॥ त्रष्ययो मनवो गावो देवमातर एव च। देवपत्त्यो द्रुमानागादैत्याश्चाप्सरसां ग्रााः॥ त्रस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च। त्रौषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये॥ सिद्धये॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

श्री सूक्त से मार्जन करें। हिरगयावर्गामिति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य ग्रानन्द कर्दम चिक्लीतेंदिरासुता ग्रूषयः श्रीरग्नि श्वेत्युमे देवते ग्राद्यास्तिस्रो ग्रुनुष्टुमः चतुर्थी प्रस्तार पंक्तिः पञ्चमी षष्ठयौ त्रिष्टुमौ ततोष्टावनुष्टुमोंत्या प्रस्तार पंक्तिः मार्जने विनियोगः।

ॐ हिरंगयवर्गां हरिंगीं सुवर्गीरज्तस्त्रंजाम्। चुन्द्रां हिररामंयीं लुक्ष्मीं जातंवेदो मु स्ना वंह॥

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन

तां म् त्रा वंह जातवेदो लुक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंग्यं विन्देयं गामश्चं पुरुषानुहम्॥ ऋश्वपूर्वा रथम्थ्यां हस्तिनांदप्रमोदिंनीम्। श्रियं देवीमुपंह्यये श्री मां देवी जुंषताम्॥ कां सोस्मितां हिरंगय प्राकारांमाुर्द्रा ज्वलंन्तीं तृप्तां तुर्पयंन्तीम्। पुद्मेस्थितां पुद्मवंगाः तामिहोपंह्वये श्रियंम्॥ चुन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्ट्रामुदाराम्। तां पुदानीमीं शरंगांऽ प्रपंदोऽलक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृंगो।। मादित्यवंर्गो तप्सोऽधिंजातो वंनस्पित्सतवं वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलांनि तपसा नुंदन्तु मा या अन्तरा याश्चं बाह्या अंलक्ष्मीः॥ उपैतु मां देवस्याः कीर्तिश्च मिर्गाना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं दुदातुं मे॥ क्षुत्पिपासामंलां ज्येष्ठामंलुक्ष्मीं नांशयाम्यहंम्। स्र्भूतिमसंमृद्धिं च सर्वाः न्निर्गीद मे गृहात्॥ गन्धंद्वारां दुंराध्रषां नित्यपुष्टां करीषिशांम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्। मनंसः काम्मामूर्तिं वाचः सत्यमंशीमिह। पुशूनां रूपंमन्स्य मिय श्रीः श्रयतां यशः॥ कर्दमेन प्रजा भूता मृपि संभव कर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। म्रापः सृजंन्तु स्त्रिग्धांनि चिक्लींत वसं मे गृहे। नि चं देवीं मातरं श्रियं वासयं मे कुले॥ त्रार्द्रा पुष्करिंशीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिररामंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् त्रा वह।। त्रार्द्रा यः करिशों यष्टिं सुवर्शा हेममालिनीम्। सूर्या हिररामयीं लक्ष्मीं जातंवेदो मुत्रा वह।। तां मु स्रा वंह जातवेदो लुक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिररांयं प्रभूतं गावों दास्योऽश्वांन् विन्देयं पुरुंषान्हम्॥

(मृग्वेद पञ्चम मगडलस्य परिशिष्टम्)

इमा ग्राप इति तिसृगां ऐतरेय ग्रापो ग्रनुष्टुप् जगत्यनुष्टुभः मार्जने विनियोगः।

इमा ऋषांः शिवतंमा इमाः सर्वस्य भेषजीः। इमा राष्ट्रस्य वर्धंनीरिमाराष्ट्रभृतोमृतांः॥ याभिरिन्द्रंमुभ्य षिञ्चत्प्रजापंतिः सोम् राजांनुं वर्रुगां यम् मन्। ताभिरुद्धिरुभिषिञ्चामित्वामृहं राज्ञां त्वमंधि राजों भवेह। महांतं त्वामुहीनां सुम्राजंचर्षरागुनां देवी जिनंत्र्यजीजनद्भुद्राजिनंत्र्यजीजनत्।। (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

ग्ररिष्टनेमि: तार्क्य: तार्क्य: त्रिष्टुप् मार्जने विनियोग:।

अ त्यमूषु वाजिनं देवजूतं सहावानं तरुतारुं रथानाम्। ऋरिष्टनेमिं पृत्नाजमाशुं स्वस्तये तार्क्ष्यिम्हा हुवे॥ इन्द्रंस्येव रातिमाजोहंवानाः स्वस्तये नार्वमिवा रुहेम। उर्वी न पृथ्वी बहुंले गभीरे मावामेतौ मा परेतौ रिषाम॥ सद्यश्चिद्यः शवंसा पञ्चं कृष्टीः सूर्यं इव ज्योतिषापस्तृतानं। सृहुस्त्रशाः शतुसा स्रंस्य रंहिर्नस्मां वरन्ते युवृतिं न शर्याम्।।

(स्ग्वेद १०.१७=.१-२-३)

देवस्यत्वेत्यस्यै तरेयः सविताश्विनो पूषाच यजुः मार्जने विनियोगः।

ॐ देवस्यंत्वा सवितुः प्रस्वेंऽश्विनों र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्तांभ्यामुग्ने स्तेजंसा सूर्यस्य वर्चसेंन्द्रस्यें द्रियेगाभि षिञ्चामि। बलाय श्रियै यशसे न्नाद्याय भूभृवः स्वः। त्रमृताभिषेकोस्तु शांतिः पृष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। (यजुर्वेद-१ कारांड-१ प्रश्न-४ प्रनुवाक) ॐ तच्छंयोरावृंशीमहे गातुं युज्ञायं गातुं युज्ञपंतये। दैवीं स्वस्तिरंस्तु नः स्वस्तिमी नुषेभ्यः।

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन

४३७

ऊर्ध्व जिंगातु भेषुजं शं नों ऋस्तु द्विपदेशं चतुंष्पदे॥ (ऋग्वेद दशममराडलस्य परिशिष्टम्) उत्शान्तिः शान्तिः

मार्जन विधान संपूर्ण—ततो यमजान: ग्रिमिषेक वस्त्रं ग्राचार्याय दत्वा श्वेताम्बरं श्वेतचन्दनं श्वेतपुष्पाणि च धृत्वा ग्रिमिषेक शालातो ग्रिग्न समीपं ग्रागत्य ग्राचम्य तीर्थ प्राशनं कुर्यात्। इसके पश्चात् ग्रिमिषेक के वस्त्र को ग्राचार्य को देकर नूतन सफेद वस्त्र, सफेद चन्दन एवं सफेद फूलमाला धारण कर ग्रिमिषेक स्थल से ग्रिग्न के पास जाकर ग्राचमन करें एवं तीर्थ प्राशन करें।

न्नाप् इद्वार्ड भेषुजीरापों न्नमीवृचार्तनीः। न्नापः सर्वस्य भेषुजी स्तास्ते कृरावन्तु भेषुजम्॥ (मार्वेद १०.१३७.६) न्नापो वै भेषुजं भेषुजमेवास्मै करोति। सर्वमायुरेति॥ (श्रुतिः)

कहकर तीर्थ प्राशन करें। पुनः ग्राचमन करें। प्रधान कलश एवं उपकलश, नवग्रह धान्य एवं ग्रन्य वस्तुग्रों का दान, गोदान प्रधान कलश दान—सवस्त्र प्रतिमं कुम्भं प्राप्तारिष्टनिवृत्तये। तुभ्यं दास्यामि विप्रेन्द्र यथोक्तफलदोभव॥ (स्मृति सङ्ग्रह) सदिक्षिणाकं सवस्त्र प्रधान कलश दानं सूर्य प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम। उप कलशदान—सवस्त्र प्रतिमं कुम्भं प्राप्तारिष्ट निवृत्तये। तुभ्यं दास्यामि विप्रेन्द्र यथोक्त फलदोभव॥ (स्मृति सङ्ग्रह) सदिक्षिणाकं सवस्त्र उपकलशदानं ग्रावाहित देवता प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं प्रददे। दत्तं न मम न मम। सूर्य प्रीत्यर्थे गोधूम धान्य दान—गोधूमाः सर्वजन्तूनां बलपुष्टिविवर्धकाः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे सूर्यः प्रसीदतु॥ (स्मृति सङ्ग्रह) स दिक्षिणाकं गोधूम दानं ग्रादित्य प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं स्रप्रददे। दत्तं न मम न मम।

चन्द्र प्रीतये तराडुल दानम्—तराडुलं वैश्वदेवत्यं पाकेनान्नं प्रयच्छति। यस्मादस्य प्रदानेन स मे चन्द्रः प्रसीदतु॥ (स्मृति सङ्ग्रह)

स दक्षिणाकं तराडुलदानं चन्द्र प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

म्रङ्गारक प्रीतये गुडाढक दानम्—म्राढकाः सर्वजन्तूनां बलपुष्टिविवर्धकाः। यस्मोदेश्षां प्रदानेन स मे भौमः प्रसीदतु॥ (स्मृति

सङ्गह) स दक्षिशकं गुडाढक दानं ग्रङ्गारक प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न। बुध प्रीतये मुद्गदानम्—मुद्गबीजानि वै यस्मात् प्रियाशि परमेष्ठिनः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे सौम्यः प्रसीदत्।। (स्मृति सङ्गह)

स दक्षिणाकं मुद्रदानं बुध प्रीतिं कागयमानः तुभ्यमहं संप्रददे दत्तं न मम न मम।

बृहस्पति प्रीतये चराकदानम्—गोवर्धनाचलोद्धार समये हरिभक्षिताः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे जीवः प्रसीदतु॥ (स्मृति सङ्गह)स

दक्षिराचराकदानं बृहस्पति प्रीतिं कामयमानः तुम्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

शुक्र प्रीतये निष्पावदानम् —विष्पावाः सर्वजन्तूनां बल पुष्टिविवर्धकाः। यस्मादेषां प्रदानने स मे शुक्रः प्रसीदतु॥ (स्मृति सङ्गह)

स दक्षिणाकं निष्पावदानं शुक्र प्रीतिं कामयामानः तुभ्यमहंसंप्रददते। दत्त न मम न मम।

शनैश्चर प्रीतये तिलदानम्—तिलाः कश्यपसंभूताः तिलाः पापहराः शुभाः। तिलदान प्रदानेन स मे मन्दः प्रसीदतु॥ (स्मृति

सङ्गह)

स दक्षिणाकं तिलदानं शनैश्चर प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

राहु प्रीतये माषदानम् - यस्मान्मधुवधे काले विष्णोर्देहसमुद्भवाः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे राहुः प्रसीदतु॥ (स्मृति सङ्गह)

स दक्ष्णाकं माषदानं राहु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दततं न म्म न मम।

केतु प्रीतये कुलित्थ दानम्—ऋग्निगर्भोद्भवाः सौम्याः केतु प्रियकराः सदा। कुलित्थाः सर्व पापघाः ऋतः शान्तिं प्रयच्छ

मे॥

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भत शान्ति यज्ञ

(स्मृति सङ्ग्रह)

स दक्षिणाकं कुलित्थदानं केतु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम। गोदान—गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश। यस्मादस्याः प्रदानेन स म देवः प्रसीदतु॥ (स्मृति सङ्ग्रह) स दक्षिणाकं गोदानं प्रधान देवता रुद्र: प्रीतिं कामयमान: तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम हिरराय दान—(ग्रावाहित सभी देवताग्रों के प्रसन्नाता के लिए)

हिरराय गर्भ गर्भस्थं हेम बीजं विभावसो:। ग्रनन्त पुराय फलदं ग्रतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ (स्मृति सङ्ग्रह) स दक्षिणाकं हिरगयदानं ग्रावाहितानां देवानां प्रीतिं कामयमान: तुभ्यमहं संप्रददे दत्तं न मम न मम। ग्रागे लिखने वाले दान एैच्छिक है। सूर्य के लिए—यज्ञस्य प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थ श्रीसूर्य प्रीत्यर्थ इमां किपलां ग्रमुकगोत्राय ग्रमुकशर्मगो ग्राचार्याय सदक्षिगां संप्रददे। कपिले सर्वदेवानां पूजनीयासिरोहिशी। तीर्थ देवमयी यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय) दत्तं न मम न

सोमाय शङ्खम्—पुरायस्त्वं शंख पुरायानां मंगलानां च मगलम्। विष्णुनाविधृतोनित्यमतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय) सदक्षिणाकं शंखदानं सोमप्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

भौमाय वृषम्—धर्मस्त्वं वृषरूपेगा जगदानन्दकारकः। स्रष्टमूर्ते रिधष्ठान मतः पाहि सनातन॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय) स दिख्याकं वृषदानं भौमप्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

बुधाय हिररायम्—हिररायगर्भ गर्भस्थं हेमबीजंविभावसोः। ग्रनन्तपुरायफलदं ग्रतः शान्तिं प्रयच्छमे।। (ब्रह्मकर्म समुच्चय) स दक्षिगाकं हिरगयदानं बुध प्रीतिं कामयमानः तुश्यमहं संप्रददे। दततं न मम न मम। गुरवे पीतवस्त्रम्—पीतवस्त्रयुगं यस्मा द्वासुदेवस्यवल्लाभं। प्रदानस्तस्य वै विष्णोस्ततः शान्तिं प्रयच्छमे।। (ब्रह्मकर्म समुच्यय) स दक्षिणाकं पीतवस्त्रदानं बृहस्पति प्रीतिं कामयमानः तूभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम। श्क्राय त्रश्चम्—विष्णुस्त्वमश्चरूपेगा यस्मादमृतसंभवः। चन्द्रार्क वाहनं नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छमे।। (ब्रह्मकर्म समुच्चय) स दक्षिणाकं ऋथदानं शुक्र प्रीतिं कामयमानं: तुभ्यमहं स्त्रप्रददे। दन्तं न मम न मम। शनये कृष्णां गाम्—यस्मात्वं पृथिवी कृष्णा धेनुः केशव संनिभा। सर्वपापहरानित्यं स्रतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय) स दक्षिगाकं कृष्णां गां शनैश्चर प्रीतिं कामय मानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम। राहवे लोहम्—यस्मादायसकर्माशि त्वदधीनानि सर्वदा। लाङ्गलान्यायुधादीनि तस्माच्छन्तिं प्रयच्छमे।। (ब्रह्मकर्म समुच्चय) स दक्षिराकं लोह दानं राहु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम। केतवे छाङ्गम्—यस्मात्वं छागयज्ञानां ऋङ्गत्वेन व्यवस्थितः। यानं विभवसोर्नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय) स दक्षिणाकं छाग दानं केतु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम। ततः कर्ता ऋग्नेः वायव्ये स्थितः। संस्थाजपेन उपतिष्ठेत। इसके बाद यजमान ऋग्नि के वायव्य दिशा में खड़ें होकर संस्था जप जो बताया जा रहा है उससे हाथ जोडकर ऋग्नि की प्रार्थना करें। ऋग्नेत्वं न इति चतसृगां गौपायना लौपायना वा बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबंधु विप्रबन्धुश्च एकैकर्चा ऋषयः। ऋग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः। ऋग्न्युपस्थाने विनियोगः। ॐ ऋग्रेत्वंनो ऋंतंमउतत्राता शिवोभंवावरूथ्यः। वस्रुरिग्निर्वस्थ्रवा ऋच्छानिक्षिद्यमत्तंमंरियंदाः॥

भ्रग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन

सनों बोधिश्रुधीहर्वमुरुष्यागों ऋघायतः संमस्मात्। तंत्वांशोचिष्ठदीतिदवः सुम्नायनूनमीं महेसिरविंभ्यः॥ ॐ चंमे स्वर्रश्चमे युज्ञोपंचतेनमंश्च। यन्तेंन्यूनं तस्मैत् उपंयत्तेतिरिक्तं तस्मैं ते नमः॥ (ऋषेद ४.२४.१-२-३-४)

त्र्यये नमः। अस्विसत। श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलं। त्रायुष्यं तेज त्रारोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ मानस्तोक इत्यस्य कुत्सोरुद्रोजगती। विभूति ग्रहरो विनियोगः।

ॐ मार्नस्तोके तनये मार्न ऋायौ मानो गोषुमानो ऋश्वेषुरीरिषः। वीरान्मानोकद्रभामितो वंधीर्ह विष्मन्तः सदमित्वां हवामहे॥ (ऋग्वेद १.११४. =)

इति स्रुव बिलपृष्ठैनैशानीगतां विभूतिं गृहीत्वा। उपरोक्त मंत्र का पाठ करेत हुए स्रुवा के बिल के पिछले हिस्से के ईशान भाग से भस्म (होम का) को निकालें। ॐ त्रायुषं जमदग्नेरिति ललाटे (ललाट में भस्म लगायें) ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति कराठे में भस्म लगायें) ॐ कश्रगस्त्यस्य त्र्यायुषं इति नाभौ (नाभि में भस्म लगायें) ॐ यद्देवानां त्र्यायुषमिति दक्षिशास्कन्धे (दाहिने भुजा में भस्म लगायें) ॐ तन्मे ग्रस्तु त्र्यायुषं इति वामस्कन्धे (बायें भुजा पर भस्म लगायें) (यजुर्वेद ब्राह्मण) ततः अग्निं परिसमुह्म पर्युक्ष्य परिस्तरशानि विसृज्य।

त्रिया प्रिसमूहन एवं पर्युक्षण करें। इसके बाद जिस प्रकार से डाले थे उसी प्रकार पूर्व से उन परिस्तरणी को त्रिया में डाल दें (विर्जन)। हाथों में जल लेकर पूर्विदश से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणाकार में चारों त्रोर मार्जन करने की क्रिया परिसमूहन कहलाता है। पहले हाथ धो लें फिर जलयुक्त हाथ से पूर्विद परिषेचनं। हाथ में जल लेकर ईशान्य से ईशान्य तक तीन बार जल से परिषिञ्चन करें।

अग्नि पूजन—विश्वामित्र इति तिसृगामात्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वयोरर्चने अन्त्याया उपस्थाने विनियोगः।

都是特別

ॐ विश्वांनो दुर्गहा जातवेदः। (पूर्व में पुष्पाक्षत से अग्निदेव का पूजन करें) ॐ सिन्धुंनना्वादुंरितातिंपर्षि। (आग्नेय में पूजन करें) ॐ अग्ने अग्निवन्नमंसागृगाानः। (दिक्षण में पूजन करें) ॐ अग्नेत्यं बोध्यवितात्नूनां। (नैर्म्नत्य पूजन करें) ॐ यस्त्वांहृदाकीरिरा ग्मन्यमानः। (पश्चिम में पूजन करें) ॐ अमिर्त्यं मर्त्यों जोहंवीिम। (वायव्य में पूजन करें) ॐ जातंवेदोयशों अस्मासुंधेहि (उत्तर में पूजन करें) ॐ प्रजाभिरग्ने अमृत्त्वमंश्यां। (ईशान्य में पूजन करें) ॐ यस्मैत्वं सुकृतें जातवेद उलोकमंग्नेकृरावंस्योनं। अश्विनं सपुत्रिरां वीरवंन्तं गोमतं रुयिंनंशते स्वस्ति॥ (मावेद ४.४.६.१०.११)

इन मंत्रों को कहकर पूजन एवं नमस्कार करें। (घी में छाया देखकर दान देने का मंत्र)

रूपं रूपं प्रतिंक्षपो बभूव तदंस्य रूपं प्रतिचक्षंगाय। इन्द्रों मायाभिः पुरुक्षपं ईयते युक्ता ह्यंस्य हरंयः शतादशं। (मनेद ६.४७.१=)

कामधेनु समुद्भृतं सर्वक्रतुषुसं स्थितं। देवानामाज्यमाहारः ग्रतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ सदक्षिणाकं ग्राज्यदानं सूर्यः प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संपददे। दत्तं न मम न मम। ग्रनेन ग्रवेक्ष्याज्य दानेन सूर्यः सुप्रीतो ग्रस्तु इति ग्रनु गृह्णन्तु। तथास्तु। ग्राचिति याग संपूर्ण फलावाप्तिरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु। तथास्तु। पुनः पूजां करिष्ये। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। ग्रावाहयामि। ग्रासनं समर्पयामि। स्वागतम् समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः ग्रध्यं ग्रध्यं समर्पयामि। मुखे ग्राचमनं समर्पयामि। स्त्रानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि।

उपवीतं समर्पयामि । ग्राभ्रगं समर्पयामि । गंधं समर्पयामि । ग्रक्षतान् समर्पयामि । पुष्पाणि समर्पयामि । धूपमाघ्रा पयामि । दीपं दर्शयामि । हुतशिष्ट ग्राज्योपहारं निवेदयामि । क्रमुकताम्बूलं समर्पयामि । मङ्गल नीराजनं समर्पयामि । मंत्रपुष्पं समर्पयामि । प्रदक्षिण नमस्कारान् समर्पयामि । प्रत्नार्घ्यं समर्पयामि । सवोपचारपूजां समर्पयामि । ब्रह्मा ग्राचार्य एवं ऋत्विजों को दक्षिणा देवें ।

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्धत शान्ति यज्ञ

षष्ठ दिन

हिरराय गर्भ गर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः। ग्रनन्त पुराय फलदं ग्रतः श्रान्तिं प्रयच्छमे।। (स्मृति सङ्ग्रह)॥ ग्राचरित याग संपूर्ण फलावाप्त्यर्थं यथांशं दक्षिणां प्रतिपादयामि। संपूर्ण फलावाप्तिरस्तु।

त्रित्र विसर्जन—गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर। यत्र ब्रह्मदयो देवाः तत्र गच्छ हुताशन ॥ (उद्घासनं सङ्गह)

कहकर पुष्पाक्षत डालकर ऋग्नि का विर्सजन करें। ग्रहपीठ सहित शेष सामग्रियों को ऋचार्य को दान दे देवें।

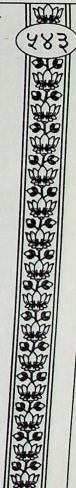
ब्रह्मार्पण विधान—यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो होम क्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्।। (सङ्ग्रह) ब्रह्मार्पणं ब्रह्महवि: ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।। (भगवद्गीता)

म्रनेन सग्रहमख सूर्य सर्वाद्धत शान्ति होम कर्मणा सपिरवारः भगवान् सूर्यः नारायण प्रीयताम्। यागमध्ये मंत्रतन्त्रविपर्यासादि सर्वदोष पिरहारार्थं नामत्रय जपं किरिष्ये। अम्रच्युताय नमः। अमृनताय नमः। अगोविन्दाय नमः। अहराय नमः। अगृडाय नमः। अशंभवे नमः। इति जपेत्। कर्म के म्रन्तें पिवत्र का विर्जन करके दो बार माचमन करें। अति सत्। यथाशिक ब्राह्मण सुवासिनी भोजन करवायें।

सूर्य सर्वाद्भुत शान्तियाग संपन्न हुन्ना।

षष्ठ दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न







सूर्य सर्वाद्भुत शान्ति याग के भेद-शास्त्रों में अनेक प्रकार के सर्वाद्भुत वर्णित है। कुछ आचार्यों ने उन्हें ⊏ वर्गों में विभक्त किया है। प्रत्येक वर्ग में उत्पात या ऋदुतों का वर्रान हैं। उनके देवताओं का वर्रान भी है। वर्तमान में ४२ पृष्ठों का जो सर्वाद्भुत शान्ति याग का प्रयोग प्रेषित है, वह इन 🗷 में एक है। सभी में प्रयोग विधन यही रहेगा। प्रधान देवता एवं उनके नाम बदलते हैं।

१-प्रथम प्रकार (राजकीय उत्पात शमन)-

पुरुषः पुत्रदारं वा धनधान्यमथापि वा। निमित्तैर्यैर्विनश्येत शांन्तिं तत्र निबोधत॥ १॥ इन्द्रायुधं भवेद्रात्रौ दृश्यते यस्य कस्यचित्। दवीं करे वा भिद्येत मिशाः कुम्भस्तथैव च॥ २॥ छत्रं शय्यासनं चैव अन्यद्वापि स्वयं क्वचित्। स्त्री हन्याच्च स्त्रियं वापि गौरवघ्रेद्लूखलम्॥ ३॥ श्वा बिद्गामनड्वाहं किलः संपद्यते कुले। गजवाजिनो प्रियन्ते विवादो राजकीयकः॥ ४॥ कुटुम्बमशुभं सर्वमैन्द्ररायेतानि निर्दिशेत्। शाम्यन्ति येन सर्वारिण निर्वपेत् पयया चरुम्॥ ४॥ समावाय घृतं तत्र त्राहुतिं पृहुयादिम्। इन्द्रभिद्देवतातये स्थालीपाकस्य होमयेत्॥ ६॥ इन्द्रः शचीपतिः शक्नो वज्रपाशिः सुरेश्वरः। सर्वाद्भुतानां शमनो महाव्याहृतयस्तथा॥ ७॥ हुत स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ६॥

नोट:-परिशिष्ट पूरा सर्वाद्भुत सार सङ्ग्रह से लिया गया है।

परिशिष्ट

विभिन्न कारगों से जब कोई व्यक्ति पुत्र, पत्नी, धन, धान्य म्रादि वस्तुम्रों को खो देता है॥१॥ जब रात्रि में इन्द्रधनुष दिखाई दें, होम करने वाले स्नुक् एवं स्नुव भिन्न हो तो, रत्न एवं पूजा के कलश भग्न हो तब॥२॥ राजछत्र, सोने वाला पलङ्ग, बैछने वाला म्रासन म्रादि म्रकारगा यदि टूट जाय, स्त्री द्वारा स्त्री की हत्या होने पर, गाय घर के मन्दर माकर उलूखल को सूंघे तो॥३॥ कुत्तों के द्वारा साग्रंड के भत होने पर, वंश में भगड़ा होने पर, विना कारगा हाथी एवं घोडें मृत हो, राजकीय विवाद हो॥४॥ कुटुम्ब में म्रशुभ हो उपरोक्त सभी उपद्रवों के शमनकर्ता इन्द्र हैं। उसके लिए दूध से बनाया गया चरु से होम करना चाहिये। उससे उपरोक्त उपद्रवों की शान्ति होती है। ५५॥ दूध में बने चरु में घी डालें। ''इन्द्र भिद्देवतातये'' इस मंत्र से होम करं॥६॥ यह याग विशेषतः राजकीय घर्षगा, एवं विवाद से जब देश को कष्ट हो तब करना चाहिये। विधान सभी पूर्वोक्त ही हैं। वहाँ पर प्रधान देवता रुद्र: है यहाँ पर प्रधान देवता इन्द्र है। मत्यल्य परिवर्तनों के साथ इस याग को संपन्न कर सकते हैं। जिस प्रकार रुद्र: के पाँच नाम मंत्र थे। उसी प्रकार इस विधान में, शचीपित, शक्र, वन्नपाणि एवं सुरेश्वेर नाम मंत्र है। इसके साथ सर्वाद्भुत शमन नाम मंत्र भी लेवें। महाव्याहितयों से म्राज्य होम करें॥७॥ स्विष्टकृत् होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे उत्पात दोष निवारगा होकर प्रजा १०० साल तक जीवित रहते हैं।

२-द्वितीय प्रकार (जल सम्बन्धी उत्पात शमन)—

उद्दीपिका गृहे यस्य वल्मीका मधु जालकम्। ग्रब्जानां मिशाके शब्दे तैलं स्थीयत एव वा॥१॥ ग्रशुभा विकृतिर्दक्षां दुग्धानां वा यदा भवेत्। ग्रकस्माच्च प्ररोहेयुर्बीजानि कृमयस्तथा॥२॥ कार्यो वरुगायागस्तु वारुगीविधिपूर्वकाः। उदुत्तमं प्रधानं स्यात्पञ्चाज्याहुतयस्तथा॥३॥ वरुगाः पाशपागिश्च यादसां पितरेव च।शेषं तु पूर्ववच्चैव चरुतन्त्रं समापयेत्॥४॥ हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥४॥

घरों में ग्रनावश्यक उद्दीपन हो, घर में वल्मीक बनें तो, घर में शहद की मक्खी छत्ता बनाये तो, शंख ग्रपने ग्राप शब्द करें तो, तेल न बहे तो॥१॥ ग्रकारण दूध एवं दिह में विकार उत्पन्न हो तो, ग्रकाल में ग्रपने ग्राप बीजों से ग्रंकुर निकले तो, घर मे कृमियों का उत्पत्ति हो तो॥२॥ ये सब वरुण सम्बन्धी उत्पातों के पूर्व सूचनायें हैं। ऐसे स्थिति में वरुण याग को विधिपूर्वक संपन्न करें। "उदुत्तमं" मंत्र से चरु होम करें। पाँचच ग्राज्याहुतियाँ नाम मंत्र से देवें॥३॥ पाँच नाम मंत्र वरुण, पाशपाणि, यादसांपित, प्रचेता, सर्वाद्भुतशमन है। प्रयोग विधान पूर्ववत् है। चरु होम करें॥४॥ इस याग से उत्पातों का शमन होकर सौ साल तक जीवित रहते हैं॥४॥

३-तृतीय विधान (मृत्यु सम्बन्धी उत्पात निवाररा) —

गृहे यस्य पतेद्गृध्न उलेको वा कथञ्चन। कपोतः प्रविशेच्चैव जीवा वारगयसंभवाः॥१॥ धुर्यौ च पततो युक्तौ गोस्त्रीजन्म च वैकृतम्। जायन्ते यमलान्येव घोरः स्वप्नश्च दृश्यते॥२॥ स्रमिद्रवन्ति रक्षांसि यत्र चैव कुमारकान्। उन्निद्रकोतिनिद्रो वा स्रत्यल्पमितभोजनम्॥३॥ स्रालस्यं चैव मेतेषां देवता यम उच्यते। नाके सुपर्गं इत्येतत्स्थालीपाकस्य होमयेत्॥४॥ यमः प्रतपितश्चैव दगडपागिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा॥४॥ हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तेत्पात दोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥६॥

घर में गीध, उल्लू, कबूतर, एवं जङ्गली जानवर ग्रायें तो॥ १॥ गाडी में बंधे दोनों बैल एक साथ गिरें तो, विकार गाय एवं स्त्री पैदा हो तो, बार-बार जुडवें पैदा हो तो, बुरे स्पप्न ग्रायें तो॥ २॥ बच्चे भयभीत हो तो (बालग्रहादि से),वेग विना नींद के या ग्रत्यधिक नींद से युक्त हो, ग्रत्यल्प भोजन या ग्रत्यधिक भोजन करें तो॥ ३॥ ग्रथकता हो तो, उपरोक्त सभी उत्पात मृत्यु संबन्धी हैं, ग्रत: इनके प्रधान देवता यम है। नाके सुपर्श इस मंत्र से चरु होम

करें। विधान पूर्ववत् है॥ ४॥ पाँच नाम मंत्र यम, प्रतपित, दराडपारिण ईश्वर एवं सर्वाद्भुत शमन है। महा व्याहृतियों से ग्राज्य होम करें॥ ४॥ स्विष्टकृत् होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे उत्नात शमन होकर सौ साल तक जीवित रहते हैं। ४-चतुर्थ प्रकार (ग्रिग्न संबंधी उत्पात निवारण)—

स्रनिग्निरुत्थितो यस्य धूमो वापि गृहे क्वचित्। स्रामं वा ज्वलते मांसं भवेयुर्विस्फुलिङ्गकाः॥ १॥ छत्रध्वजपताकाश्च ज्वलन्ते तोरग्गानि च। स्रासनं चैव शय्या च वस्त्राग्गि कुसुमानि च॥ २॥ हस्त्यश्चानां च पुच्छानि वर्षत्यङ्गारवर्षग्गम्। स्रकाले च दिशं दाहमोषधीनां च पाचनम्॥ ३॥ हस्तिन्यश्चैव माद्यन्ते स्रिग्निरूपं तद्द्भुतम्। स्रिग्नं दूतं वृग्गीमहे स्थालीपाकस्य होमयेत्॥ ४॥ स्रिग्निर्ग्यपतिश्च स्रचिष्पागिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भभुतानाम् महाव्याहृतयस्तथा॥ ४॥ हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम् ॥ ६॥

ग्रिंग के विना हि जब घर में घुग्नाँ उठें, बिना पकाये ही कच्चा मांस पक जाय, ग्रिंग में ग्रिधक चिञ्चारियाँ निकालें॥ १॥ छत्र, ध्वज, पताका, तोरगा, बैठने वाला ग्रासन, बिस्तर, वस्त्र एवं फूल ग्रंपने ग्राप जल जायें तो॥ २॥ हाथी एवं घाडां के पूँछ जल उटें, ग्राकाश सं ग्रङ्गारों की वर्षा हो, ग्रकाल में दिशाओं में ज्वालायें उत्पन्न हो, ग्रीघिध सस्य समय से पहले पक जायें तो॥ ३॥ हिथिनियों को मदजल स्नाव हो, ये सब ग्रिंग के ग्रद्भुत रूप हैं। ग्रिंग दूतं वृग्गीमहे इस मंत्र से चरु होम करें। विधान पूर्ववत् है॥ ४॥ पाँच नाम मंत्र ग्रिंग, हिरग्यपित, ग्रिचिष्पािग, ईश्वर एवं सर्वाद्भुतशमन है। महाव्या से ग्राज्य होम करें॥ ४॥ स्वष्ट होम करके या को पूर्ण करना च इससे ग्रिंग सम्बन्धी उत्पाश्त शमन होकर प्रजा सौ साल तक जीवित रहते हैं। ४-पञ्चम प्रकार (ग्रार्थि उत्पात शम)—(इस संपूर्ण ग्रन्थ में इसी प्रकार का प्रयोग है)

सुवर्गं रजतं वज्रं वैडूर्यं मौक्तिकानि च। प्रवालवस्त्रनाशश्च भिक्षागां च विपर्ययः॥ १॥

त्र्यारम्भाश्च विपद्यन्ते न सिद्धिः कर्मगामपि। चरुवेश्रवगस्तत्र स्निभत्यं देवमृक्स्मृता॥२॥ वैश्रवणो यक्षपतिरर्थपाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा॥ ३॥ हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ४॥

जब ग्रार्थिक समृद्धि के संकेत सोना, चाँदी, वज्र, वैडूर्य, मोती, प्रवाल एवं वस्त्रों का नाश होता है। दुर्भिक्ष (ग्रकाल) हो जाता है॥ १॥ प्रारम्भ किये गये कर्म विपत्ति में फंस जाते हैं, किये गये कर्मों का फल नहीं मिलता है ऐसी स्थिति में अभित्यं देव इस मंत्र से वैश्रवरा प्रीति के लिए चरु होम करना चाहिये॥ २॥ पाँच नाम मंत्र वैश्रवर्गा, सक्षपति (यक्षाधिपति), ऋर्थंपागि (हिर्गयपागि) ईश्वर एवं सर्वाद्भुत शमन हैं। महाव्याहृतियों से ऋाज्य होम करें॥ ३॥ स्विष्ट होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे कुबेर देवता प्रसन्न होकर ऋर्थविषयक उत्पातों का निवारण कर प्रजा सौ साल तक जीवित रहते हैं। ६-छटा प्रकार (युद्ध विषयक उत्पात निवाररा)—

त्रथ यस्य स्वनक्षत्रे उल्का निर्घात एव वा। राहुर्ग्रसित चन्द्राकौं कबन्धं दर्परो भवेत्।। १।। पतेत्स्वयं वा मुसलं देवता वा कथञ्चन। उन्मीलते चैव यदा तथा चापि निमीलते॥ २॥ प्रिक्टिंग च यदि वा तथा वापि प्रकम्पते। प्रयातो वापि दृश्येत प्रतिस्रोतो नदी वहेत्॥ ३॥ विमले नैवार्कछाया प्रतीपा वापि दृश्यते। परिवेषस्त्वनभ्रेषु दृश्यते चन्द्र सूर्ययोः॥ ४॥ कोशात्वङ्गा निर्गिरन्ते तूगाच्चैव तुं सायकाः। स्रनाहतानि वाद्यन्ते नदन्ते शब्दमातुरम्॥ ५॥ चरुगा वैषावेनैषां यागः कर्तव्य एव तु। इदं विष्णुः प्रधान स्यात्पञ्चाज्याहृतयस्तथा॥ ६॥ सर्वभूतपतिर्विष्णुश्चक्रपागिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा॥ ७॥ हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ८॥

परिशिष्ट

जिनके जन्म नक्षत्र में उल्कापात हो, राहुग्रस्त सूर्य ग्रहरा या चन्द्रग्रहरा हो, दर्परा में देखने पर सि न दिखें॥ १॥ दिवार ऋदि के सहारे खड़े किये मूसल स्वयं गिरे, देवता प्रतिमा स्वयं गिरे, देखने पर भ्राँख खोलते हुए या बंद करते जैसे भास हो॥ २॥ देवता प्रतिमा का कोई भाग भ्रपने भ्राप खिराडत हो जाय या काँपने लगे, प्रतिमा चलायमान दिखे, नदी ऊपर की म्रोर (उल्टी) बहने लगे॥ ३॥ म्राकाश निर्मल रहने पर भी सूर्य की छाया न दिखें, या विपरीत दिखाई दें, बादल के बिना भी सूर्य एवं चन्द्र की मराडल दिखाई पडें॥ ४॥ म्यान से तलवार ऋपने ऋप बाहर निकले, तुर्गीर से बारा ऋपने ऋप बाहर ं, वाद्य बिना बजायें ही शब्द करने लगे, मन को ग्रातंकित करने वाले शब्द सुनाई पडें॥ ४॥ ऐसी स्थितियाँ शुद्ध निमित्तका कहलाते हैं। ऐसी स्थिति में चरु होम से विष्णुयाग संपन्न करना चाहिये। इदं विष्णु इस मंत्र से प्रधान चरु होम करें। पाँच ग्राज्याहुतियाँ देवें॥ ६॥ पाँच नाम मंत्र सर्वभूतपित, विष्णु, चक्रपाशि, ईश्वर, सर्वाद्भुत शमन है। महाव्याहृतियों से ग्राज्य होम करें॥ ७॥ स्विष्टकृत् होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे भगवान् विष्णु प्रसन् होकर उत्पातों का निवारण कर प्रजा सौ साल तक जीवित रहते हैं।

७-सप्तम प्रकार (वायु सम्बन्धी उत्पात निवारण)—

त्रतिवातो यत्र भवेद्रूपं वा यत्र वैकृतम्। खरकरभमहिषा वराहा व्याघ्रसिंहकाः॥ गृथाश्च तथा योमायुः कृकलासा वदन्ति च। मांसं पेशं च रुधिरं पांसुवृष्टिस्तथैव च॥ वायुरूपिमदं सर्वमद्भुतंपिरकीर्तितम्। वात स्रा वातु भेषजं वायवा यहि दर्शतेति स्थाली पाकस्य होमयेत्॥ वायुर्महान्नभपतिर्वज्रपाशिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा॥ हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥

जब ग्राँधी ग्राये, प्रजा जनों का मुख विकृत हो जाय, गधा, हाथी, बैंस, सुग्रर, बाघ, शेर, गीध, सियार जङ्गली चिपकली ग्रादि चिल्लाने लगे तो, ग्राकाश से मांस रक्त एवं धूली की वर्षा हो॥ १-२॥ यह सब वायु सम्बन्धी उत्पात कहताले हैं, युद्ध के पूर्व में भी यह उत्पात दिखाईं पडते हैं। इनके निवारण के

मपति, वज्रपारिंग

लिए वात ग्रा वातु भेषजं एवं वायवा याहि दर्शत इन मंत्रों से चरु होम करें। पाँच ग्राजयाहुतियाँ देवें॥ ३॥ पाँच नाम मंत्र वायु महान्, नभपित, वज्रपािर्शि ईश्वर एवं सर्वाद्भुत शमन है। महाव्याहितयों से ग्राज्य होम करें॥ ४॥ स्विष्टकृत होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे भगवान् वायु प्रसन्न हाकर उत्पातों का निवारण कर तक जीवित रहते हैं।

८-ऋष्टम प्रकार—

त्रथ चेदन्यशाखासु कर्ताभवित वेदवित्। पज्वा स ऋग्यजुः साम्नां शतमात्रं समाहितः॥
गायत्र्यष्टशतं जप्वा यजमानः समाहितः। वाचयेत्तमुपाध्यायं वस्त्रेग कनकेन वा॥
दृष्टं चैवाद्भृतं यस्मिन् तच्चापि प्रतिपादयेत्। एतास्तु दक्षिगाः सर्वाः शक्तियुक्तो न हापयेत्॥
यजमानस्तत् सुतो वा यः स्वयं कर्तुमर्हति। ब्राह्मगाय विशेषेग दद्यात्तां दक्षिगां शुभाम्॥
जप्वाधविशिरश्चेव ब्राह्मगान् स्वस्ति वाचयेत्। शक्त्याथ भोजनं चैव कुर्याद्विप्रेषु पूजनम्॥
एतदेवं समाख्यातं त्रद्भुतानां विशोधनम्। चतुर्गामिप वर्गानां यः कुर्याच्छ्द्धयान्वितः॥
मरगां न भवेत्तस्य न दुःखं न दिरद्रता। सिद्धयन्ति सर्वकार्यागि धर्मे चास्य मितभवेत्॥
एतत्पुग्यं पवित्रं च देवतायागपूजनम्। सर्वशान्तिकरं चैव प्रतिपुरुषं निबोधत॥

यह सामान्य व्यक्तियों के द्वारा करने वाला उत्पात निवारण विधान एवं फलश्रुति है। उपरोक्त यागों को व्यक्ति के लिए, परिवार के लिए, राज्य के लिए, राष्ट्र के लिए एवं समस्त विश्व के लिए भी कर सकते हैं।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः





MAHARISHI MAHESH YOGI VEDIC VISHWAVIDYALYA

Karaundi, Umariapan, Distt-Katni (M.P.)

CENTRAL LIBRARY

ω N -	0		
Please return this book by the last date stamped above over due charges will be payable beyond the date. Please check to see this book is not damaged before you borrow it. Con you may be asked to pay for books returned in a damaged condition.	Call No		Acc.No.
			Due Date
			Acc. No.
	Acc Notarishi M	ahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.	Due Date

